

श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथबालकांडं लिख्यते.

श्लोकः.

वर्णानामर्थसंधानां रसानां छंदसामपि ॥ मंगलानां च
कर्तारौ वंदे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशं करौ वंदे भ्र
द्वाविश्वासरूपिणौ ॥ आभ्यां विनानपश्यंतिसिद्धाः स्वां
तस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपि
णम् ॥ यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥ सी
तारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदे विशद्वि
ज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारकारि
णौ क्लेशहारिणीम् ॥ सर्वत्रेयस्करौ सीतां नतौऽहं रामच
न्द्रभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदे
वाः सुरायत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथा हेर्ममः
॥ यत्पादपूवसेवनेन हि भवां बोधे स्तितीर्षावतां वंदेऽहं-
तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुरा
णनिगमागमसंमतं यद्वासायणे निगदितं कचिदन्यतोऽ
पि ॥ स्वांतःसरवायतुलसीरघुनाथगाथाग्राधानिवंध-
मतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ जेहि सु
मिरत सिधि होइ ॥ गणनायकरिवरबदन ॥ करी अनुग्र
ह सोइ ॥ बुद्धिराशिशुभशुणसदन ॥ १ ॥ मूक होइ वाचा
ल ॥ पंगु चटै गिरिबरगहन ॥ जासु कृपासुदयालु ॥ द्वौ
सकल कलिमलदहन ॥ २ ॥ नीलसरोरुहश्याम ॥ तरुण

अरुणवारिजनयन ॥ करो सोममउरधाम ॥ सदाक्षीरसा
 गरशयन ॥ ३॥ कुंदइंदुसमदेह ॥ उमोरमणकरुणायत
 न ॥ जाहिर्दानपरनेह ॥ करो कृपामर्दनमयन ॥ ४॥ वंदौगु
 रूपदकंज ॥ कृपासिंधुनररूपहरि ॥ महामोहतमपुंज ॥
 जासुवचनरविकरनिकर ॥ ५॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 वंदौगुरुपदपदुमपरागा ॥ करुचिस्ववाससरसअनुरा
 गा ॥ अमियमूरिमयचूरणचारु ॥ शमनसकलभवरुज
 परिवारु ॥ सकलशंभुतनविमलविभूती ॥ मंजुलमंगल
 मोदप्रसूती ॥ जनमनमंजुमुकुरमलहरणी ॥ कियेनिल
 कगुणगणवशकरणी ॥ श्रीगुरुपदनरवमणिगणज्यो-
 ती ॥ स्तुतिरतदिव्यदृष्टिहियहोती ॥ दलनमोहतमहंस
 प्रकाश ॥ वडंभाग्यउरआवहिंजाभू ॥ उधरहिंविमल
 विलोचनहियके ॥ मिटहिंदोपदुरवभवरजनीके ॥ सूरु
 हिंरामचरितमणिमाणिक ॥ गुसप्रगटजहांजोजेहिरवा
 निक ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यथास्मत्प्रंजनआजिहृग ॥
 साधकासहस्रजान ॥ कौतुकदेखहिंशैलवन ॥ भूतलभू
 रिनिधान ॥ ६॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गुरुपदरजमृदुमं
 जुलप्रंजन ॥ नयनअमियदृगदोषविभंजन ॥ तेहिकरि
 दिगन्तविचंकाविलोचन ॥ वराणांगमचरितभवमोचन
 ॥ वंदौमथमदीसरचरण ॥ मोहजनितसंशयसबहर-
 णा ॥ सज्जनभमाजसकलयुगवानी ॥ करीमणामसमे
 नकथागी ॥ नाधुचरितभुभसरिसकपास ॥ निरसवि
 ददयुगमयफलजास ॥ सोसहिदुखपरलिद्रदुगया ॥
 नदनीयजेहिंजगयगपादा ॥ मुदमंगलमयसंनममा-
 ॥ ॥ दोहा ॥ जगजगपतपथगत् ॥ रामभक्तिजहंकरेगति

धारा॥ सरस्वतीब्रह्मविचारप्रचारा॥ विधिनिषेधमयक
लिमलहरणी॥ कर्मकथारविनंदिनीवरणी॥ हरिहरक
थाविराजतीबेनी॥ स्तनतसकलसुदमंगलदेनी॥ वटवि
श्वासअचलनिजधर्मी॥ तीरथराजसमाजसुधर्मी॥ स
बहिसलभसबदिनसबदेशा॥ सेवतसादरशमनकले
शा॥ अकथअलौकिकतीरथराऊ॥ देइसद्यफलप्रग
टप्रभाऊ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्तनिसमुज्जहिजनसुदित
मन॥ मज्जहिअतिअनुराग॥ लहहिचारिफलअचत
तनु॥ साधुसमाजप्रयाग॥ ७॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
मज्जनफलदेखियततकाला॥ काकहोहिंपिकबकहि-
मराला॥ स्तनआश्चर्यकरहिंजनि कोई॥ सतसंगतिम-
हिमानहिगोई॥ बालमीकनारदघटयोनी॥ निजनिज
सुरवनिकहीनिजहोनी॥ जलचरथलचरनभचरनाना॥
जेजडचेतनजीवजहाना॥ मतिकीरतिगतिभूतिभलाई
॥ जबजेहियतनजहांजेहिपाई॥ सोजानबसतसंगप्रभा
ऊ॥ लोकहुंवेदनआनउपाऊ॥ बिनुसतसंगविवेकन
होई॥ रामरूपाबिनुसलभनसोई॥ सतसंगतिसुदमं
गलमूला॥ सोइफलसिधिसबसाधनफूला॥ शठसु
धरहिंसतसंगतिपाई॥ पारसपरशिकुधातुसोहाई॥
विधिबशसुजनकुसंगतिपरहीं॥ फणिमणिसमनिज
गुणअनुसरही॥ विधिहरिहरकविकोविंदवाणी॥ क
हतसाधुमहिमासकुचाणी॥ सोमोहिसनकहिजात
नकैसें॥ शाकवणिकमणिगुणगणजैसें॥ ॥ दोहा ॥
वंदौसंतसमानचित॥ हितअनहितनहिकोउ॥ अंज
लिगतशुभसमनजिमि॥ समसुगंधकरदोऊ॥ ८॥ सं

नसरलचित्तजगतहित ॥ जानि सुभावसनेहु ॥ बालवि
 नयसुनिकरि कृपा ॥ रासचरणरतिदेहु ॥ ६ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ बहुरि बंदिरवल गणसतिभाए ॥ जेविनुकाज-
 दाहिनेवाए ॥ परहितहानिलाभजिन्हकरै ॥ उजरेहर्षवि
 पाददसंरै ॥ हरिहरयशशकेशराहुसे ॥ परअकाजभट
 सहसवाहुसे ॥ जेपरदोषलखहिंसतसारवी ॥ परहित
 घृतजिनकंसनमारवी ॥ तेजकृशानुरोषमहिशेषा ॥ अ
 पअदगुणधनधनिकधनेशा ॥ उदयकेतुसमहितसब
 हाके ॥ कुंभकरणसमसोवतनीके ॥ परअकाजलगित
 नुपरिहरहीं ॥ जिगिहिमउपलकृपीदलगरहीं ॥ बंदो
 खलजसशेषसरोपा ॥ सहसवदनवरणेपरदोषा ॥ पु
 निमणवोंपृथुराजसमाना ॥ परअद्यसुनेसहसदसका
 ना ॥ बहुरिशक्रसमचिनवोंतेंही ॥ संततस्तरानीकहित
 जही ॥ बचनबज्जजेहिंसदापियारा ॥ सहसनयनपरदो
 षनिहारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उदासीनअरिमित्र ॥ सुन
 नजरहिंखलरीनि ॥ जानियाणियुगजोरिकरि ॥ चिन
 नाकर्णसमीति ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मैआपनदि
 शिनीन्दनिहोग ॥ निननिजय्योरनलाउवभोग ॥ वायस
 पालियअतिअनुगारा ॥ होईनिसामियकबहुकिकगा ॥
 बंदोसंतअसज्जननवणा ॥ दुखप्रदउभयबीचकुछुव
 रणा ॥ बिछुंनगकभागदरिलेहीं ॥ मिन्ननगकदारुण
 दुखदेहीं ॥ उपजहिणकजंगलमार्हीं ॥ जलजजोंकजि
 मिगुगपिन्नगहीं ॥ कथासगमसमाधुअमाधु ॥ जन
 कानकजगजन्मधिअगाधु ॥ भलअनभलनिजनिजक
 रणी ॥ लहतनयजअपलोकविभृती ॥ कथासथा

करसुरसरिसाधु ॥ गरलअनलकलिमलसरिव्याधु ॥ गु
 णअवगुणजानतसबकोई ॥ जोजेहिभावनीकतेहिसो
 ई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भलोभलाईपैलहहिं ॥ लहहींनिचा
 ईनीच ॥ सुधासराहीअमरता ॥ गरलसराहीमीच ॥ ११ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ खलगहअगुणसाधुगुणमाहा ॥ उभय
 अपारउदधिअवगाहा ॥ तेहिंतेकलुगुणदोषबरवाने ॥
 संगहत्यागनबिनुपहिचाने ॥ भलेउपोचसबबिधिउप-
 जाए ॥ गणिगुणदोषबेदबिलगाए ॥ कहहिबेदइसिहा
 सपुराणा ॥ विधिप्रपंचगुणअवगुणसाना ॥ दुरवसुख
 पापपुण्यदिनराती ॥ साधुअसाधुसुजातिकुजाती ॥ दा
 नवदेवउंचअरुनीचू ॥ अभियसजीवनमाहुसमीचू ॥ मा
 याब्रह्मजीवजगदीशा ॥ लक्षअलक्षरंकअवनीशा ॥ का
 सीमगहसरसरीकर्मनाशा ॥ मरुमारवमहिदेवगवासा
 ॥ स्वर्गनरकअनुरागबिरागा ॥ निगमागमगुणदोषवि-
 भागा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जडचेतनगुणदोषतय ॥ बिभ
 कीन्हकरतार ॥ संतहंसगुणगहहिंपय ॥ परिहरिवारिवि
 कार ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ असविवेकजोदेहीवि
 धाता ॥ तबतजिदोषगुणहिंमनराता ॥ कालसुभावकर्म
 बरिआई ॥ भलेउप्रकृतिबंशचूकभलाई ॥ सोसुधारि
 हरिजनजिमलैंहीं ॥ दलिदुरवदोषबिमलयशदेहीं ॥ ख
 लहुंकरहिंभलपाइससंगू ॥ मिटाहिंनमलिनसुभाषअ
 भंगू ॥ करिसुवेषजगबंचकजेऊ ॥ वेषप्रतापपूजियतते
 ऊ ॥ उधरहिंअंतनहोहिंनिबाहु ॥ कालनेमिजिमिरावण
 राहु ॥ कियेंसुवेषसाधुसनमानू ॥ जिमिजगजांबवतह-
 नुमानू ॥ हानिकुसंगसुसंगतिलाहू ॥ लोकहुबेदबिदिव

सबकाहू॥ गगनचदेरजपवनप्रसंगा॥ कोचइमिलइनीचज
 लसंगा॥ साधुअसाधुसदनशुकसारी॥ सुमिरहिंरामदेहिं
 एगारी॥ धूमकुसंगतिकारीखहोई॥ लिरिवयपुराणमंजुम-
 सिमोई॥ सोइजलअनलअनिलसंघाता॥ होइजलदजग
 जीवनदाता॥ ॥ दोहा॥ ॥ ग्रहभेषजजलपवनपट॥ पा
 इकुयोगसुयोग॥ होइकुवस्तुसुवस्तुजग॥ लखहिंसुल
 क्षणलोग॥ १३॥ समप्रकाशतमपारखदुहु॥ नामभेदविधि-
 कान्ह॥ शशिपोषकशोषकससुजि॥ जमयशअपयशदीन्ह
 ॥ १४॥ जडचेतनजगजीवजं॥ सकलराममयजानि॥ वंदौं
 सबकंपदकमल॥ सदाजोरियुगपाणि॥ १५॥ देवदलुजनर
 नागरवग॥ मेतपितरगंधर्व॥ वंदौंकिन्नररजनिचर॥ रुपा
 करहुअवसर्व॥ १६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ आकरचारिला-
 खचौरासी॥ जानिजीवनभजलथलवासी॥ श्रियराममय
 सबजगजानी॥ करोंप्रणामजोरियुगपाणी॥ जानिरुपाक
 रिकंकरमोहु॥ सबमिलिकरहुछाडिछलछोहु॥ निजबल
 बुद्धिभरंसमोहिनाही॥ तातेचिनयकरहुसबपाही॥ कर
 गचहोरमुपनिगुणगाहा॥ लघुमनिमोरिचरितअवगाहा
 ॥ सुगनगकीअंगउपाऊ॥ मममतिरंकमनोरथराऊ॥ मति
 अतिनीचउंचरुचिआछी॥ चाहयेअमियजगजुरेनछाछी
 ॥ दायिदहिंसज्जनमोरिदिछाई॥ सुनिहहिंवालवचनमन
 नाई॥ जौवानककहंतोनरिवाता॥ सुनिहिसुदितमनपितु-
 अरुमाना॥ दमिदहिंकुंरकुदिलकुचिचारी॥ जेपरदृष्टग
 भ्रमणधारी॥ निजकविनकीदलागननाका॥ सरसहोउ-
 अयथाअतिपीका॥ जेपरभणितसुनतहरयाही॥ नेवरपु
 न्यचहूनजगनाही॥ जगवहुसरसरितसमभाई॥ जेनिज

बाटिबदहिंजलपाई ॥ सज्जनसुकतसिंधुसमकोई ॥ दे
 खिपूर्णविधुबादहिंजोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भागबो
 दभ्रभिलाषबड ॥ करउएकविश्वास ॥ पैहहिंसखसु
 निसज्जनजन ॥ खलकरिहैंउपहास ॥ १७ ॥ ॥ चौ-
 पाई ॥ ॥ खलपरिहासहोइहितमोरा ॥ काककहंहिं
 कलकंठकठोरा ॥ हंसहिबकदादुरचातकी ॥ हंसहिं
 मलिनखलबिमलबातकी ॥ कवितरसिकनरामपद
 नेहु ॥ तिन्हकहुसरखदहास्यरसएहु ॥ भाषाभणित
 मोरिमतिथोरी ॥ हंसिबेद्योगहसौनहिरवोरी ॥ प्रभुप
 दप्रतिजोसमुझीनीकी ॥ तिन्हहिकथासुनिलागिन-
 फीकी ॥ हरिपदरतमनमतिनकुतरकी ॥ तिन्हकहंम
 धुरकथारघुबरकी ॥ रामभक्तिभूषितजियजानी ॥
 नहहिंसज्जनसराहिसखाणी ॥ कबिनहोउंनहिब
 चनप्रवीणा ॥ सकलकलासबविद्याहीना ॥ आखर
 ॥ छंदप्रबंधअनेकविधाना ॥ भा
 वभेदरसभेदअपारा ॥ कवितदोषगुणविविधप्रका-
 रा ॥ कवितबिबेकएकनहिमोरे ॥ सत्यकहोलिरिका
 गदकोरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भणितमोरिसबगुणरहि
 त ॥ विश्वविदितगुणएक ॥ सोबिचारिसुनिहहिंसुम
 ॥ जिन्हकेबिमलबिबेक ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥
 एहिमहंरघुपतिनामउदास ॥ अतिपावनपुराणश्रुति
 सारा ॥ मंगलभवनअमंगलहारी ॥ उमासहितजेहि-
 जपुत्रिपुरारी ॥ भणितविचित्रसुकविहृतजोऊ ॥ रा
 मनामबिलुसोहबसोऊ ॥ विधुबदनीसबभांतिसंवा
 ॥ सोहनबसनविनावरनारी ॥ सबगुणरहितकु

चिह्ननवाणी ॥ रामनामजसच्यं कितजानी ॥ सादरक
 हहिं सनहि बुधताही ॥ मधुकरसरिससंतगुणग्राही ॥
 ॥ यदपिकविनरसएकीनाहीं ॥ रामप्रतापप्रगटयहिमा
 ही ॥ सोडभरोसमोरेमनुआवा ॥ केहिनससंगबडपू
 पनपावा ॥ धूमहुंनजोसहजकरुआई ॥ अगारप्रसंग
 सगंधबसाई ॥ भणितभदेसवरुनभलिवरणी ॥ राम
 कथाजगमंगलकरणी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ मंगलकर-
 णिकलिलमलहरणितुलसीकथारघुनाथकी ॥ गतिकू
 रकविनासरितकीज्यौसरितपावनपाथकी ॥ मधुसुय
 शसंगतिभणितभलिहोइहिंसजनमनभावनी ॥ भव
 अंगभूतिमसानकीसुमिरतसहावनपावनी ॥ १ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ प्रियलागहिअनिसवन्हिमम ॥ भणित
 रामयशसंग ॥ दारुविचारुकिकरडकोउ ॥ वंदियमल
 यप्रसंग ॥ १२ ॥ ज्यामसरभिपयविशदअति ॥ गुणद
 करहिंसनपान ॥ गिरासाम्यसियरामयश ॥ गावहिंसु
 नहिंसजान ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ माणिमाणिकमु
 नालविजैमी ॥ अहिगिरिगजशिरसोहुननैसी ॥ नृप
 किरीटनरुणीननुपाई ॥ लहहिंसकलशोभाअधिका
 ई ॥ नैमेसकविकविनबुधकहहीं ॥ उपजहिअनन
 अनतलधिलहहीं ॥ भक्तिहेनुविधिभवनविहाई ॥
 सुमिरनशारदयावनिधाई ॥ रामचरितसरविनुअ
 न्दवाये ॥ सोभमजाइनकोटिउपाये ॥ कविकोविदअ
 सनदेविचारी ॥ गावहिंदरिगुणकलिलमलहारी ॥ कीन्ह
 साकनजनगुणनाना ॥ शिरधुनिगिरालागिपलिताना
 ॥ इदवानिधुमनिमोपसमाना ॥ स्तानिशारदाकदहिसु

जाना ॥ जौबरषे बरवारिबिचारू ॥ होहिं कवितमुक्ता
मणिचारू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ युक्तिवेधिपुनिपोहहिं ॥
रामचरितबरताग ॥ पहिरहिं सज्जनबिमलउर ॥ शोभा
अतिअनुराग ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जेजनमेकलि
कालकराला ॥ करतबबायसवेषमराला ॥ चलतकुपंथ
बेदमगछांडे ॥ कपटकलेवरकलिमलभांडे ॥ बंचकभ
क्तकहाइरामके ॥ किंकरकंचनकेहिकामके ॥ तिनम
हंप्रथमरेरवजगमोरी ॥ धिकधरमध्वजधंधुकघोरी ॥
जौंअपनेअवगुणसबकहऊं ॥ बाटैकथापारनहिलह
ऊं ॥ तातेमैअतिअलपबरवाने ॥ थोरेमहंजानिहहिंस
याने ॥ समुजिविविधिविधिविनतीमोरी ॥ कोउनकथा
सुनिदैइहिरवोरी ॥ एतेहुपरकरिहहिंजेशंका ॥ मोहनै
अधिकतेजडमतिरंका ॥ कबिनहोऊनहिचतुरकहा-
ऊं ॥ अतिअनुरूपरामगुणगाऊं ॥ कहरघुपतिकेचरि
तअपारा ॥ कहमतिमोरिनिरतसंसार ॥ जेहिमारुन
गिरिमेरुउडाहीं ॥ कहहूतूलकेहिलेखेमाही ॥ समुज
तअमितरामप्रभुताई ॥ करतकथामनअतिकदराई
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शारदशेषमहेशविधि ॥ आगम-
॥ नेतिनेतिकहिजांसगुण ॥ करहिंनिरंत
॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सबजानतप्रभुप्रभु-
तासीई ॥ तदपिकहेबिचुरहानकोई ॥ तहांबेदअसका
॥ भजनप्रभावभांतिबहुभाषा ॥ एकअनीह
अजसच्चिदानंदपरधामा ॥ व्यापक
॥ तिहिधरिदेहचरितकृतनाना ॥
सोकेवलभक्तनहितलागी ॥ परमहृपालुप्रणतअनु-

रिगोरिपसाउ ॥ तौ फुरहोउ जो कहउं सब ॥ भाषा भणि
 न प्रभाउ ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वंदों अवधपुरी अ
 ति पावनि ॥ सरजु सरिकलिल कलुषन सावनि ॥ प्रणवों
 पुरनरनारिचहोरी ॥ ममता जिन पर प्रभु हिन थोरी ॥ सि
 यनिंदक अघ अघन शाए ॥ लोक विशोक बनाइ बसा
 ए ॥ वंदों कौशल्यादिदिशिमाची ॥ कीरति जासुं सकल
 जग मांची ॥ प्रगटेउ जहं रघुपति शशि चारू ॥ विश्वस्त
 रवदरवल कमल तुषारू ॥ दशरथ राउ सहित सवरांनी
 ॥ सकल सुभंगल सुरति मानी ॥ करों प्रणाम करम मन
 वाणी ॥ करहु कृपा सन संवक जानी ॥ जिनहि विरचिव
 ड भयउ विधाता ॥ महिमा अघधिराम पितु माता ॥
 ॥ मोरटा ॥ ॥ वंदों अवधभुआल ॥ सत्यमेव जे हिरा
 म पद ॥ विचुरन दीन दयाल ॥ प्रियननुतृण इव परिहरे
 उ ॥ ३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रणवों परिजन सहित वि
 देह ॥ जाहि राम पद गूढ सनेह ॥ योगभोग महं राखेउ गो
 ई ॥ राम धिलो धन प्रगटेउ सोई ॥ प्रणवों प्रथम भरत के
 चरण ॥ जासने मम त जाडन चरणा ॥ रामचरण पंकज
 मन जानू ॥ लुअम धुप डवन जैन पासू ॥ वंदों लक्ष्मण पद
 जल जाता ॥ शीतल रुक्मिणी भक्त स्वरदाता ॥ रघुपति
 कीरति विमल पकाका ॥ देउ समान भएउ यश जाका ॥
 गोपसद सशील जगकारण ॥ जो अवतरेउ भूमि मयटा
 ना ॥ अदा सो मानु कूल रह मो पर ॥ कृपा सिंधु सो भिषि
 गागा कर ॥ रिप नृदन पद कमल न मारी ॥ मूरक शील
 भरत अनुगामी ॥ महाधीर दिन वीरनु माना ॥ रामजा
 कय शप्राप्ति रधाना ॥ ॥ मोरटा ॥ ॥ वंदों पवन

कुमार ॥ रवलबलपावकज्ञानघन ॥ जासुहृदयआगा
 र ॥ बसहिरामसरचापधर ॥ ३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 कपिपतिऋक्षनिशाचरराजा ॥ अंगदादिजेकीशसमा
 जा ॥ वंदोंसबकेंचरणसहाये ॥ अधमशरीररामज-
 ॥ रघुपतिचरणउपासकजेते ॥ रवगमृगस्करन
 रअसुरसमेते ॥ वंदीपदसरोजऋषिकेरे ॥ जेबिनुका
 जरामकेचेरे ॥ शक्तसनकादिव्यासमुनिनारद ॥ जेसु
 निवरज्ञानविशारद ॥ प्रणवोंसबहिंधरणीधरिशी-
 शा ॥ करहुकृपाजनजानिसुनीशा ॥ जनकसुताजगज
 ननीजानकी ॥ अतिशयप्रियकरुणानिधानकी ॥ ता
 केयुगपदकमलमनाऊं ॥ जासुकृपानिरमलमतिपाऊं
 ॥ पुनिमनबचनकर्मरघुनायक ॥ चरणकमलवंदोंस
 ॥ राजिवनयनधरेंधनुसायक ॥ भक्तविपत्ति
 भजनकरवदायक ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गिराअर्थजल
 वीचिसम ॥ कहियतभिन्नहिभिन्न ॥ वंदोंसीतारामप
 द ॥ जिनहिंपरमपदरिवन्न ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ हेतुकृशानुमानुहिमकरकौ
 विधिहरिहरमयबेदमाएसो ॥ अगुणअनूपमगु-
 नधानसो ॥ महामंत्रजोइजपतमहेशू ॥ काशीसुक्ति
 ॥ महिमाजासुजानगएराऊं ॥ प्रथमपू-
 जयतनामप्रभाऊं ॥ जानआदिकबिनामप्रतापू ॥ भ
 यउसिद्धकरिउलटाजापू ॥ सहस्रनामसमस्तनिशिव
 वाणी ॥ जपिजेबीजसुसंगभवानी ॥ हरबेहेतुहरिह
 रहीकौ ॥ कियभूषणनियभूषणतीकौ ॥ नामप्रभाउजा
 नशिवनीकौ ॥ कालकूटफलदीन्हअमीकौ ॥ ॥ दोहा

॥ वरषाञ्जलुरधुपतिभगति ॥ तुलसीशालिसदास ॥ रा
 मनामवरवरणयुग ॥ श्रावणभादौमास ॥ ३५ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ आरवरमधुरमनोहरदोऊ ॥ वरणाबिलोचन
 जनजियजोऊ ॥ सुमिरतसुलभसरवदसबकाहू ॥ लो
 कलाहुपरलोकनिवाहू ॥ कहतसुनतसुमिरतसुठि
 नीके ॥ रामलखनसमप्रियतुलसीके ॥ वरणतवरण
 प्रीतिबिलगानी ॥ ब्रह्मजीवसमसहजसंधाती ॥ नरना
 रायणसरिससुभाता ॥ जगपालकविशेषिजनआता ॥
 भक्तिसुनियकलकरणाविभूषण ॥ जगहितहेतुविमल
 विधुभूषण ॥ स्वादुतोषसमसुगनिसुधाके ॥ कमठशेष
 समधरवसुधाके ॥ जनमनमंजुकंजमधुकरसे ॥ जीह
 जशोमनिहरिहलधरसे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकछत्रए-
 कमुकुटमणि ॥ सबवरणनिपरजोउ ॥ तुलसीरधुवर-
 नामके ॥ वरणाविराजतदोउ ॥ ३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 समुज्जतसरसनामअरुनामी ॥ मतिपरस्परप्रभुअनुगा
 मी ॥ नामरूपद्वैतपाधी ॥ अकथअनादिंससमुज्ज
 समधी ॥ कोवडछोटकहनअपराध ॥ सुनिगुणभेद
 समुक्तिहेसाधु ॥ देखियरूपनामआधीना ॥ रूपज्ञान-
 नहिनामविहीना ॥ रूपविशेषनामविनुयाने ॥ करनलग
 तनपरहिंपहिचाने ॥ सुमिरियनामरूपविनुदेखे ॥ आ
 वतददयमनेहविशेष ॥ नामरूपगतिअकथकहानी ॥
 समुज्जतसरवदनपरनिखरवानी ॥ अगुणसगुणविच-
 नागसत्सारवी ॥ उभयप्रबोधकचतुरदुभारवी ॥ ॥
 दोहा ॥ ॥ नामनाममणिदापधर ॥ जीहदेहरीहार ॥ तु
 लसीभातरयादिरौ ॥ लीलाहसिजजियार ॥ ३७ ॥ ॥

चौपाई ॥ ॥ नामजीहजपिजागहिंयोगी ॥ बिरतिबि
चारप्रपंचवियोगी ॥ ब्रह्मस्वरवहिं अनुभवहिं अनूपा ॥
अकथअनामयनामनीरूपा ॥ जानाचहहिंगूढगतिजे
ऊ ॥ नामजीहजपिजानहिंतेऊ ॥ साधकनामजपहिलय
लाये ॥ हौं हिसिद्धअणिमादिकपाये ॥ जपहिं नामजन
आरतभारी ॥ मिटहिकुसंकटहोहिं स्वरवारी ॥ रामभ
क्तजगचारिप्रकारा ॥ सकृत्तिचारिउअनघउदारा ॥ च
हुंचतुनकहं नामअधारा ॥ ज्ञानिप्रभुहिबिशेषिपिया
रा ॥ चहुंयुगचहुंश्रुतिनामप्रभाऊ ॥ कलिविशेषनहि
आनउपाऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सकलकामनाहीनजो ॥
रामभक्तिरसलीन ॥ नामप्रेमपियूषहृद ॥ तिनहुं किये
मनमीन ॥ ३८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अगुणसगुणद्वौब्र
ह्मसरूपा ॥ अकथअगाधअनादिअनूपा ॥ मोरेमत
वडनामदुहुतैं ॥ कीयेजेहियुगनिजबसबूतैं ॥ प्रीदसु
जनजनजानहिजनकी ॥ कहउं प्रतीतिप्रीतिरुचिमन
की ॥ एकदारुगतिदेखियएकु ॥ पावकसमयुगब्रह्म
विवेकु ॥ उभयअगमयुगसगमनामतैं ॥ कहउनामबद
ब्रह्मरामतैं ॥ व्यापकएकब्रह्मअविनाशी ॥ सतचेतन
घनआनंदराशी ॥ असप्रभुहृदयअच्छतअविकारी
सकलजीवजगदीनदुरवारी ॥ रामनिरुपमनामयतन
तैं ॥ सोप्रगटतजिमिमौलरतनतैं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
निर्गुणतेइहिंभांतिवड ॥ नामप्रभावअपार ॥ कहउं
नामवडरामतैं ॥ निजबिचारअनुसार ॥ ३९ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ रामभक्तहितनरननुधारी ॥ सहिसंकटकि
यसाधुसकारि ॥ नामसप्रेमजपंतअनयासा ॥ भक्तहो

हिंसुदमंगलवासा ॥ रामएकतापसतियतारी ॥ नामको
 टिरवलकुमतिस्सुधारी ॥ ऋषिहितरामसुकुकेतुसुताकी
 ॥ सहितसेनसुतकीन्हविवाकी ॥ सहितदोषदुरवदास
 दुराशा ॥ दलइनामजिमिरबिनिशिनाशा ॥ भंजैउराम-
 आपुभवचापु ॥ भवभयभंजननामप्रतापू ॥ दंडकवनप्र
 भुकीन्हसहावन ॥ जनमनअमितनामकियपावन ॥
 निशिचरनिकरदलेरघुनंदन ॥ नामसकलकलिकलुष
 निकंदन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शिवरीगिहसुसेवकनि ॥
 सुगतिदीन्हरघुनाथ ॥ नामउधारेअमितखल ॥ वेदवि
 दितगुणगाथ ॥ ४० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामसुकंठवि
 भीषणदोऊ ॥ शरवैशरणजानसबकोऊ ॥ नामअनेक
 गर्शवनिवाजै ॥ लोकवेदवरविरदविराजै ॥ रामभालु-
 कपिकटकवदोरा ॥ सेतुहंतुअमकीन्हनथोरा ॥ नामले
 तभवसिंधुसुखवाही ॥ करहुविचारसुजनमनमाही ॥
 रामसकलरणरावणमारा ॥ सीयसहितनिजपुरपगु
 धारा ॥ राजारामअवधरजधानी ॥ गावनगुणसुखमु-
 निचरवाणी ॥ सेवकसुखिरननामसप्रती ॥ विनुअम-
 मवलगोददलजीती ॥ फेरतसनेहमगनसुखअपने
 ॥ नामसादशोचनदिसपने ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मरा
 मनेनामचड ॥ वरदायकवरदानि ॥ रामचरितगतको
 दिगदं ॥ लियमहेजाजियजानि ॥ ४१ ॥ ॥ चौपाई ॥
 नामप्रसादगंभुअविनाशी ॥ साजअमंगलमंगलराशी
 ॥ गनजनकादिनाधुमुनियोगी ॥ नामप्रसादब्रह्मसु-
 खभोगी ॥ नारदजानेउनामप्रतापु ॥ जगधियपरिहर
 हरिप्रियआपु ॥ नामजगतप्रभुकिन्हप्रसादू ॥ भक्तशि-

रोमणि भै प्रह्लादू ॥ ध्रुवसगलानि जपे उहरिनामू ॥

ये उच्यन्ते च लघुपमठामू ।

मू ॥ अपने बश करि राखे उरामू ॥ अपर अजामिल गज
गणिकाऊ ॥ भए भक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥ कहउं कहाला
नाम बडाई ॥ रामन शकहि नाम गुण गाई ॥ ॥ दोहा ॥

नाम राम को कल्पतरु ॥ कलिकल्याण निवास ॥ जो सुमि
रत भयो भांगतें ॥ तुलसी तुलसी दास ॥ ४२ ॥ ॥ चौपाई ॥

॥ चहुं युगतीनि कालतिहुं लोका ॥ भए नाम जपि जीव बि
शोका ॥ वेद पुराण संत मन एहु ॥ सकल सकल फल राम
सनेहु ॥ ध्यान प्रथम युग मरव विधि दुजे ॥ द्वापर परितोष

त प्रभु पूजे ॥ कलिकेवल मल मूल मलीना ॥ पाप पयोनि
धि जन मन मीना ॥ नाम काम तरु काल कराला ॥ सुमिर-
त शमन सकल जंजाला ॥ राम नाम कलि अभिमत दाता

॥ हिन परलोक लोक पितु माता ॥ नहि कलिकर्म न योग वि
वेकु ॥ राम नाम अवलंबन एकु ॥ काल नेमि कलिक पटनि
धानू ॥ नाम समति समग्र थहनु मानू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

राम नाम नर केसरि ॥ कनक कशिपु कलिकाल ॥ जाप क
जन प्रह्लाद जिमि ॥ पालहिंदलि सुरशाल ॥ ४३ ॥ ॥

चौपाई ॥ ॥ माय कुमाय अनरव आलसहुं ॥ नाम जप
त मंगल दिशि दशहुं ॥ सुमिरि सो नाम राम गुण गाथा ॥ क
रोना इरघुनाथ हिंसाथा ॥ मोरि सुधारहि सो सब भांती

जा सकल पानहि हृष्या अघाती ॥ राम सुस्वामि कुसेवक मो
सौ ॥ निज दिशि देखि दयानिधि पोसौ ॥ लोकहुं वेद स-
सोहे बरीती ॥ विनय सनत पहिचानत पीती ॥ गनी गरी
बग्राम नर नागर ॥ पंडित मूढ मलीन उजागर ॥ सकवि

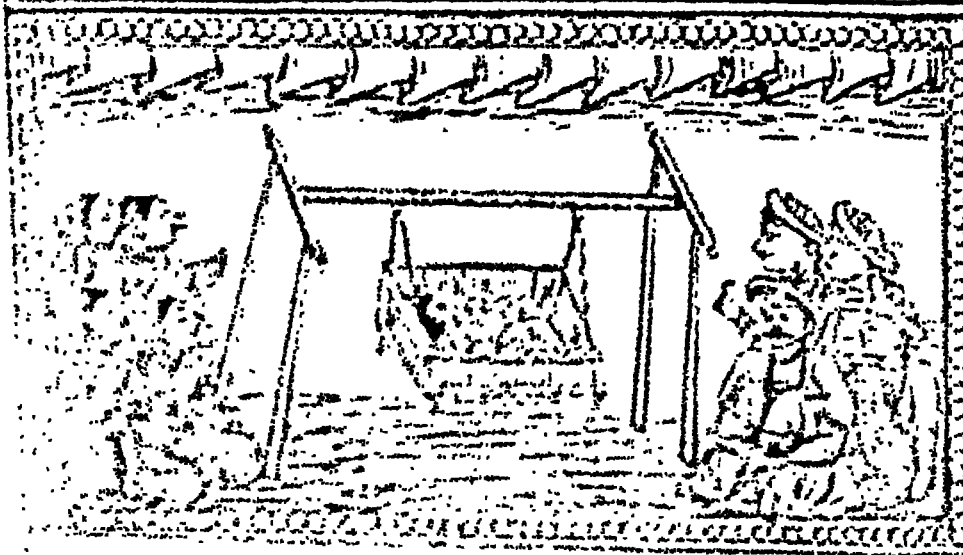
कुकविनिजमतिअनुहारी॥ नृपहिंसराहतसवनरनारी॥
 साधुस्तजानस्तशीलनृपाला॥ ईशअंशभवपरमकृपाला॥
 ॥स्तनिसनमानहिंतवहिसुबाणी॥ भनितभक्तिमतिगति
 पहिचानी॥ यहभाक्तमहिपालस्तभाऊ॥ जानिशिरोम
 णिकोशलराऊ॥ रीऊतरामसनेहनिसोतैं॥ कोजगमंदम
 लिनमतिमोतैं॥ ॥दोहा॥ ॥शतसेदककीमीतिरुचि
 ॥रखिहहिंरामकृपालु॥ उपलकियेजलजानजेहि॥ सचि
 वस्तभटकपिभालु॥ ४४॥ होहुंकहावतसबकहत॥ राम
 सहनउपहास॥ साहेवसीतानाथसे॥ सेवकतुलसीदास
 ॥४५॥ ॥चौपाई॥ ॥अतिवडिमोरिटिठाईरवोरी॥
 स्तनिअघनरकुहुंनाससकोरी॥ समुजिसहमिमोहिअ
 पडरअपनैं॥ साधुधिरामकीन्हनहिसपनैं॥ स्तनिअब
 लोकस्तचितचखचाही॥ भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही
 ॥कहतनशाइहोईहियनीकी॥ रीऊतरामजानिजनजी
 की॥ रहतिनप्रभुचितचुकाकियेकी॥ करतसरतिमयवा
 रहियेकी॥ जेहिअग्रसेउज्याधजिमिवाली॥ फिरसुकं
 टसोडकीन्हकुचाली॥ सोडकरनूतिविभीषणकेरी॥ स
 पनेहुगोनरामहियहेरी॥ तंभरतहिंमंदतसनमाने॥ रा
 जसभारधुबोरवरवाने॥ ॥दोहा॥ ॥प्रभुतरुतरक-
 णिडारपर॥ कियेतेआपुसमान॥ तुलसीकहुनरामसे॥
 साहेवजीलनिधान॥ ४६॥ रामनिकाईरावरी॥ हेसबहो
 कोनाक॥ जोयहसानीहेसदा॥ तीनीकोतुलसीका॥
 ४७॥ यदिविधिनिजगुणदोषकहि॥ सबहिंद्यदुहारिगर
 ना॥ दरणीरघुवरविशदजग॥ स्तनिकलिकलुपनशा
 ४८॥ ॥चौपाई॥ ॥जाजयनिकजोकथासुहाई॥

भरद्वाजमुनिवरहिसुनाई ॥ कहिहौंसोइसंवादबरवानी
 ॥ सुनहुंसकलसज्जनसरवमानी ॥ शंभुकीन्हयहचरित
 सहवावा ॥ बहुरिकृपाकरिउमोहिंसुनावा ॥ सोइशिवका-
 भुशुंडहिंदोन्हा ॥ रामभक्तिअधिकारीचीन्हा ॥ तैहिसन
 लकपुनिपावा ॥ तिन्हपुनिभरद्वाजप्रतिगावा ॥ तै
 श्रोताबक्तासमशीला ॥ समदरशीजानहिंहरिलीला ॥ जा
 नहिंतीनिकालनिजजाना ॥ करतलगतआमलकसमा
 ना ॥ ओरोजेहरिभक्तसुजाना ॥ कहहिंसुनहिंसमुजहिंवि
 धिनाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैपुनिनिजगुरुसनसुनि ॥ क
 थारुचिरकुरुवेत ॥ समुजनहीतसुबालपन ॥ तबअति
 रहेउअचेत ॥ ४६ ॥ श्रोताबक्ताज्ञाननिधि ॥ कथारामकी
 गूढ ॥ किमिसमूर्जोमैजीवजड ॥ कलिमलगसितविमूढ
 ॥ ५० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तदपिकहिगुरुबारहिंबारा ॥
 समुजिपरीकहुगतिअनुसारा ॥ भाषाबंधकरबमैसोई ॥ मो
 रेमनप्रबोधजेहिहोई ॥ जशकहुबुधिविवेकबलमोरे ॥ तस
 कहिहोइयहरिकेप्रेरे ॥ निजसंदेहमोहभ्रमहरणी ॥ करो
 कथाभवसरितातरणी ॥ बुधविश्रामसकलजनरंजनी ॥ रा
 मकथाकलिकलुषविभंजनी ॥ रामकथाकलिपन्नगभरणी पुनि
 अबिबेकपावककहअरणी ॥ रामकथाकलिकामद-
 गाई ॥ सज्जनसजीवनसुरिसुहाई ॥ सोइवसुधातल
 सुधातरंगिणी ॥ भवभंजनिभ्रमभेकभुअंगिणी ॥ अ
 सरसेनसमनरकमिकंदिनी ॥ सुधाविबुधकुलहित
 गिरिनंदिनी ॥ संतसमाजपयोधिरमासी ॥ विश्वभार
 धरअचलक्षमासी ॥ यमगुणसुहमसिजगजमुनासी
 ॥ जीवनमुक्तहेतुजनुकाशी ॥ रामहिप्रियपावनितुल

सीसी॥ तुलसीदासहितहियहुलसीसी॥ शिवप्रिय
 मेकलशैलसुतासी॥ सकलसिद्धिप्रदसमपतिरासी
 ॥ सदगुणस्मरणश्रवणदितिसी॥ रघुवरभक्तिप्रे
 मपरमितिसी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामकथामंदाकिनी
 चित्रकूटचितचारु॥ तुलसीसुभगसनेहवन॥ सियर
 घुबीरविहारु॥ ५१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामचरितचिं
 तामणिचारु॥ संतसुमनितियसुभगशिंंगारु॥ जगमं
 गलगुणग्रामरामके॥ दानिसुक्तिधनधर्मधामके॥ स
 दगुरुज्ञानविरागयोगके॥ विबुधवैद्यभवभीमरोगके
 ॥ जननिजनकसियरामप्रेमके॥ बीजसकलवनधरम
 नेमके॥ शामनपापसंतापशोकके॥ प्रियपालकपरलो
 कलोकके॥ सचिवसुभटभूपतिविचारके॥ कुंभजलो
 भउदधिअपारके॥ कामकोहकालिमलकरिगणके॥
 केहरिशायकजनमनवनके॥ अतिथिपूज्यप्रियतम
 पुरारिके॥ कामदधनदारिद्रदवारिके॥ मंचमहामणि
 विषयअलके॥ मंदनकठिननकुअंकभालके॥ हरण
 मोहतमदिनकरकरसे॥ सेवकशालिपालजलधरसे॥
 अभिमनदानिदेवनरुवरसे॥ संवतसुलभस्वरवदह-
 रिहरसे॥ सुकाविशरदनभयनउडुगणसे॥ रामभक्त
 जनजावनधनसे॥ सकलसुखनफलभूरिभोगसे॥ ज
 गहितनिरुपधिसाधुलंगसे॥ सेवकमनमानसमरा-
 लके॥ पावनगंगनरंगमानसे॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुपय
 कुतकेतुआलिकालि॥ कपटदंभपापंड॥ दहनरामगु-
 णग्रामनिमि॥ इंधनअनलप्रचंड॥ ५२॥ रामचरितरा
 नेशकर॥ सरससुखदसबकाहु॥ सज्जनकुमुदचको

रचित ॥ हितविशेष बडलाहु ॥ ५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 कीन्ह प्रभजेहि भांति भवानी ॥ जेहि बिधि शंकर कहाव
 रवानी ॥ सो सब हेत कहवमें गाई ॥ कथा प्रबंध विचित्र
 बनाई ॥ जिन्ह यह कथा सुनी नहि होई ॥ जिनि आश्व
 र्य करौं सुनि सोई ॥ कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी ॥
 नहिं आश्वर्य करहिं अस जानी ॥ राम कथा कीमत जग
 नाही ॥ अस प्रतीति जिन के मन माहीं ॥ नाना भांति राम
 अवतारा ॥ रामायण शत कोटि अपारा ॥ कल्प भेद हे
 रीचरित सुहाए ॥ भांति अनेक सुनी शनगाए ॥ करिय
 न संशय अस उर आनी ॥ सुनिय कथा सादर रति मा-
 नी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम अनंत अनंत गुण ॥ अमित क
 था बिस्तार ॥ सुनि आश्वर्य न मानि नहिं ॥ जिन के बिम
 ल बिचार ॥ ५४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इहि बिधि सब सं
 शय करि दूरि ॥ शिर धरि गुरु पद पंकज धूरि ॥ पुनि स
 बही बिन वौं कर जोरि ॥ करत कथा जे हिला गन रवोरी ॥
 सादर शिवहिं नाई अंब माथा ॥ बरणीं विशद राम गुण
 गाथा ॥ संवत सो रह सै एक तीशा ॥ करौं कथा हरि पद ध
 रि शीशा ॥ नौ मि भौम वार मधु मासा ॥ अबध पुरी यह
 चरित प्रकाशा ॥ जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावहिं ॥ ती
 रथ सकल तहां चलि आवहीं ॥ असुर नागर वगनर
 सुनि देवा ॥ आय करहिं रघुनाथ क सेवा ॥ जन्म महोत्स
 व रचहिं सुजाना ॥ करहिं राम कल कीरति गाना ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सज्जहिं सज्जन वृंद बहु ॥ पावन सरजू ती
 र ॥ जपहिं राम धरि ध्यान उर ॥ सुंदर श्याम शरीर ॥ ५५
 ॥ चौपाई ॥ ॥ दरश परस मज्जन अरु पाना ॥ हरै पाप

कहवेदपुराणा ॥ नदीपुनीतअभितमहिमाअति ॥ क-
 हिनशकैशारदाविमलमति ॥ रामधामदापुरीसुहावनि
 ॥ लोकसमस्तविदितजगपावनि ॥ चारिरवानिजगजी
 वअपारा ॥ अवधतजैतनुनहिंसंसार ॥ सबविधिपुरी
 मनोहरजानी ॥ सकलसिद्धिप्रदमंगलरवानी ॥ विमल
 कथाकरकीन्हअरंभा ॥ सुनतनशाहिकाममददंभा ॥
 रामचरितमानसयहनामा ॥ सुनतअवणपाइयविश्वा
 मा ॥ मनकरिविषयअनलबनजरही ॥ होइसरवीज्यौ
 यहिसरपरही ॥ रामचरितमानसमुनिभावन ॥ बिर-
 चैउशंभुसुहावनपावन ॥ त्रिविधदोषदुरवदारिददा
 वनि ॥ कलिकुचालिकलिकलुषनशावनि ॥ रचिमहेश
 निजमानसरारवा ॥ पाइसुसमयशिवासनभारवा ॥ ता-
 तेंरामचरितमानसवर ॥ धरेउनामहियहेरिहरपिहर ॥
 करेंकथासोइसरवदसुहाई ॥ सादरसुनहुसुजनम
 नलाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जसमानसजेहिविधिभयेउ
 ॥ जगप्रचारजेहिहेतु ॥ अचसोइकहोंप्रसंगसब ॥ सु

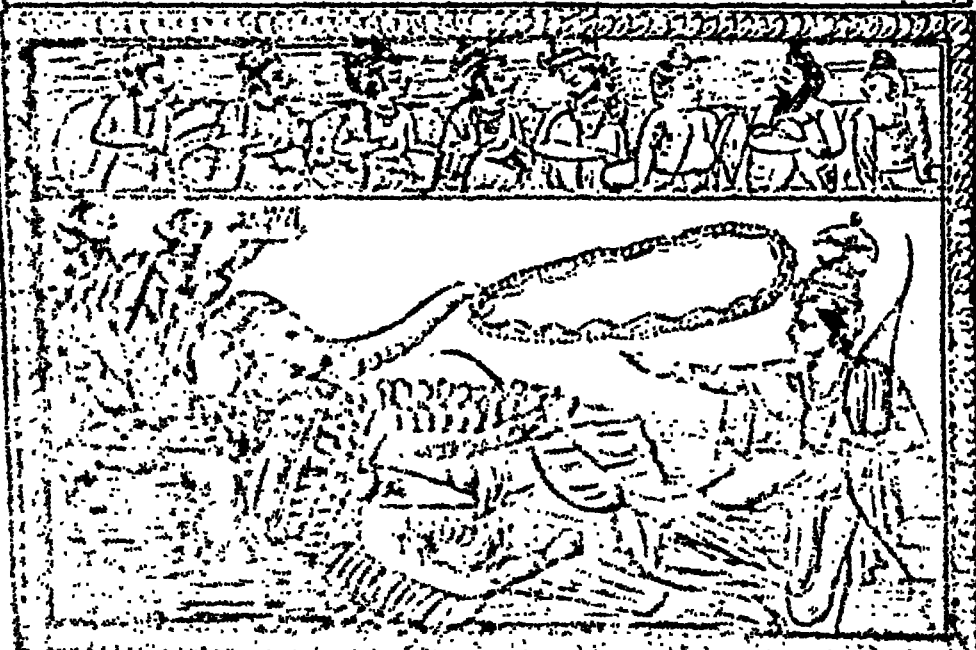


मिरिउमावृषकेतु॥५६॥ ॥चौपाई॥ ॥शंभुप्रसा
दसुमतिहियहुलसी॥रामचरितमानसकवितुलसी
॥करईमनोहरमतिअनुहारी॥सुजनसुचितसुनिले
हुसुधारी॥सुमतिभूमिथलहृदयअगाधु॥वेदपुराण
उदधिघनसाधु॥वरषहिरामसुयशबरवारी॥मधुर
मनोहरमंगलकारी॥लीलासगुणजोकहंहिबरवानी॥
सोइसाक्षातकरैमलहानी॥प्रेमभक्तिसोबरणिनजा
इ॥सोइमधुरतासुशीतलताई॥सोजलसुकुतशालि
हितसोई॥रामभक्तजनजीवनसोई॥मेधामहिगतसी
जलपावन॥सिमिरिअवणमगुचलेउसुहावन॥भ
रेउसुमानसथलहिधिराना॥सरवदशीतरुचिचारु
चिराना॥ ॥दोहा॥ ॥सुठिसुंदरसंवादवर॥बि
रचेउबुद्धिबिचारि॥तेयहपावनसुभगसर॥घाटम
नोहरचारि॥५७॥ ॥चौपाई॥ ॥ससप्रबंधसु
भगसोपाना॥ज्ञाननयननिररवतमनमाना॥रघुप
तिमहिमाअनुगअबाधा॥वरणबसोईवरवारिअ
गाधा॥रामशीयशसलिलसुधासम॥उपमाबीचि
बिलासमनोरम॥पुरइनिसघनचारुचौपाई॥शुक्ति
मंजुमणिसोपसुहाई॥छंदसोरदासुंदरदोहा॥सोइ
बहुरंगकमलकुलसोहा॥अरथअमूपसुभावसु-
भासा॥सोइपरागमकरंदसुवासा॥सुकुतपुंजमंजु
लअलिमाला॥ज्ञानबिरागबिचारमराला॥धनिअब
रौकवित्तगुणजाती॥मीनमनोहरतेबहुभांती॥अर्थ
धर्मकामादिकचारी॥कहबज्ञानविज्ञानबिचारी॥न
चरसजपतपयोगबिरागा॥तेसबजलचरुतडागा॥

सहतीसाधुनामगुणंगाना ॥ तेविचित्रजलविहंगसमा
 ना ॥ संतसभाचहुदिशिअंबरई ॥ श्रद्धाकृतुबरंतसम
 गाई ॥ भक्तिनिरूपणदिविविधिविधाना ॥ क्षमादयाद्रुमल
 ताचिंताना ॥ संयमनियमफूलफलज्ञाना ॥ हरिपदरति
 रसवेदवरवाना ॥ श्रीरौंकथाअनेकप्रसंगा ॥ तेईशक
 पिकचहुवरणविहंगा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुहुपवाटिका
 वागवन ॥ सरवस्तविहंगविहारु ॥ मालीसमनसनेह
 जल ॥ सींचतलोचनचारु ॥ ५८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 जेगावहियहचरितसंभारे ॥ तेयहिनालचतुरसरवा
 रे ॥ सदासनहि सादरनगनारी ॥ तेइसरवरमानसअ
 धिकारी ॥ अतिरवलजेविषयीचककागा ॥ यहिसर
 निकटनजाहिअभागा ॥ शंबुकभेकसियारसमाना ॥
 इहांनविषयकथारसनाना ॥ तेहिकारणआवतहिय
 हारी ॥ कामीकाकबलाकाविचारी ॥ आवतएहिसरअ
 निकटिनाई ॥ रामकृपाविनुआइनजाई ॥ काठिनकुसं
 गकृपेअकरान्ता ॥ तिन्हकेचचनव्याघहरिव्याला ॥ गृ
 हकारननानाजंजान्ता ॥ तेइअतिदुर्गमशैलविशाला
 ॥ वनवहुविषयगोहमदयाना ॥ नदीकुतर्कभयंकरना
 ना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जंश्रद्धाजदबलरहिन ॥ नहिसंत
 नकरसाथ ॥ तिनकहंमानसअगमअति ॥ जिनहिन
 भिवरगुनाथ ॥ ५९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जाकारिकष्ट
 जाइपुनिकोई ॥ जानाहिनांदजुडाईदोई ॥ जडताजाइ
 विषमइरन्तागा ॥ गयहुनमज्जनपानअभागा ॥ करिन
 नायसरमज्जनपाना ॥ फिारिआवेसभेनअभिमाना ॥
 तीवदोभितोउपुठनआवा ॥ सरनिंदाकरिनादिबुझ

वा॥सकलविधनव्यापहिनहितेही॥रामकृपाकरिचि
तवहिंजेही॥जोइसादरसरमज्जनकरहीं॥म
यतापनजरहीं॥तेनरयहसरतजरहिंनकाऊ॥जिनके
रामचरनभलभाऊ॥जोनहोइचहयहिसरुभाई॥
तसंगकरोमनलाई॥असमानसमानसचरवचाहीं॥
भईकविबुद्धिविमलअवगाहीं॥भयउहदयआनंद
छाहू॥उगमेउप्रेमप्रमोदप्रवाहू॥चलीसुभगकविता
सरितासों॥रामविमलयशजलभरितासों॥सरजूना
मसुमंगलमूला॥लोकवेदमतमंजुलकूला॥
तसमानसनंदिनी॥कलमलतटतरुमूलनिकंदिनी॥
॥दोहा॥ ॥श्रोतात्रिविधिसमाजयुर॥ग्रामनगरदुहुं
कूल॥संतसभाअनुपमअवध॥सकलसुमंगलमूल
॥६०॥ ॥चौपाई॥ ॥रामभक्तिसरसरितेंहिंजाई
॥मिलीसुकीरतिसरजुसहाई॥सानुजरामसमरय-
शपावन॥मिलेउमहानदशोणसहावन॥
देबधुनिधारा॥सोहनिसहितसुबिरतिविचारा॥त्रि
विधतायत्रासकत्रिमुहानी॥रामस्वरूपसिंधुसमजा-
नी॥गानसंमूलमिलीसरसरिहीं॥सुनतसुजनमन-
पावनकरिहीं॥बिचबिचकथाविचित्रविभागा॥जनुसरिती
रतीरवनवागा॥उमामहेशबिबाहवराती॥तेजलचर
अगणितबहुभांती॥रघुबरजन्मआनंदबधाई॥भव
रतरंगमनोहरताई॥ ॥दोहा॥ ॥बालचरितचहुं
बंधुके॥वनजबिपुलबहुरंग॥भूपरानीपरिजनसुकु-
न॥मधुकरबारिबिहंग॥६१॥ ॥चौपाई॥ ॥सी
यस्त्रयंवरकथासहाई॥सरितसहावनिसोलबिछा

ई ॥ नदीनावपदुप्रश्ननेका ॥ कैबटकुशलउत्तरसवि
 बेका ॥ स्तनिअनुकथनपरस्परहोई ॥ पश्चिकसमाजसो
 हसरिसोई ॥ घोरधारभृगुनाथरिसानी ॥ घाटसुबंधरा
 मवरवानी ॥ सानुजरामविबाहउछाहू ॥ सोशुभउमग
 सरवदसवकाहू ॥ कहतस्तनतहरषहिंपुलकाहीं ॥ तेसु
 कृतीमनमुदितनहाहीं ॥ रामतिलकहितमंगलसाजा ॥
 पर्वयोगजनुजुरेउसमाजा ॥ काइकुमतिकैकयीकैरी ॥
 फिरीजासफलविपत्तीघनेरी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शमन
 अमितउतपातसब ॥ भरतचरितजपजाग ॥ कलिअ
 घरखलअवगुणकथन ॥ तेजलमलबककागं ॥ ६२ ॥ ॥



॥ औपाई ॥ ॥ कीरतिसरितछहुंकनुरुश ॥ समवस्तुहा
 यनिपार्जनभरी ॥ हिमाहमशीलसताशिवव्याह ॥ शिशि
 नुरवदमभुजन्मउछाह ॥ चरणधरामविबाहसमाजू ॥
 नोमुदमंगलवयकतुगज ॥ औपमदः सहरामवनगमनु

॥ पंथकथारवरआतपपवनु ॥ वर्षाघोरनिशाचरराशे ॥
 सरकुलशालिसमंगलकारी ॥ रामराजसरवबिनयब
 डाई ॥ विशदसरवदसोइशरदसहाई ॥ सतीशिरोम-
 एसियगुणगाथा ॥ सोइगुणअमलअनुपमपाथा ॥
 भरतसुभावसुशीतलताई ॥ सदाएकरसबरणिनजाई
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबलोकनिबोलनिमिलनि ॥ प्रीतिप-
 रस्परहास ॥ भायपभलिचहुबंधुकी ॥ जलमाधुरीनिवा
 स ॥ ६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आरतिबिनयदीनतामोरी
 ॥ लघुताललितसुवारिनथोरी ॥ अदभुतसलिलसुन
 तगुणकारी ॥ आशपिआशमनोमलहारी ॥ रामसुप्रेम
 हिपोवतपानी ॥ सकलकलिमलकलुषगलानी ॥ भवअ
 मशोषकतांषकतोषा ॥ शमनदुरितदुरवदारिदोषा ॥
 कामक्रोधमदमोहनशावनि ॥ बिमलबिबेकबिसगबटा
 वनि ॥ सादरमज्जनपानकियेतें ॥ मिटहिपापपरिताप
 हियेतें ॥ जिनएहिंबारिनमानसधोए ॥ तेकायरकलिक
 लबिगोए ॥ तृषितनिररिवरविकरभववारी ॥ फिरहिंमृ
 गाजिभिजीवदुरवारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मतिअनुहा
 रसुवारिगुण ॥ गणमणिमनअन्हवाई ॥ सुमिरिभ
 वानिशकरहिं ॥ कहकबिकथासहाइ ॥ ६४ ॥ ॥ अबरघु
 पतिपदपंकरुह ॥ हियधरिपाइप्रसाद ॥ कहौयुगलसु
 निवर्यकर ॥ मिलनसुभगसंवाद ॥ ६५ ॥ ॥ ॥ भरद्वाज-
 जिभिप्रअकिय ॥ याज्ञबलिकसुनिपाइ ॥ प्रथमसुरख
 संवादसोइ ॥ कहिहौंहेतुबुजाइ ॥ यहदोहाक्षेपक ॥ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ भरद्वाजसुनिबसहिंप्रयागा ॥ तिनहि
 रामपदअतिअनुरागा ॥ तापसशमदमदयानिधाना ॥

परमारथपरमसुजाना ॥ माधमकरमनरविजबहोई ॥
 तीरथपतिहि आवसबकोई ॥ देवदनुजकिन्नरनरभै-
 णी ॥ सादरमज्जहिंसकलत्रिवेणी ॥ पूजहिं माधवपद
 जलजाना ॥ परसि अक्षयवटहर्षितगाता ॥ भरद्वाजआ
 अम्रअतिपावन ॥ परमरम्यअतीमुनिवरभावन ॥ तहां
 होइ मुनि ऋषयसमाजा ॥ जाहिंजे मज्जनतीरथराजा ॥
 मज्जहिं प्रातसमेत उछाहा ॥ कहहिं परस्पर हरिगुणगा
 हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मनिरूपणधर्मविधि ॥ वरणाहिं
 तत्वविभाग ॥ कहहिं भक्तिभगवंतकी ॥ संयुतज्ञानवि-
 राग ॥ ६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एहि प्रकार भरिमकरन
 हाही ॥ पुनिसवनिजनिज आश्रमजाहीं ॥ प्रतिसंवतअ
 तिहोई अनंदा ॥ मकरमज्जिगवनहिं मुनिचंदा ॥ एकवा
 रभरियकरनहाए ॥ सबमुनीश आश्रमनिसिधाए ॥
 जानबालिकमुनिपरमविवेकी ॥ भरद्वाजराखे पददेकी
 ॥ सादरचरणसरोजपरवारें ॥ अतिपुनीत आसनबैठा
 रे ॥ करि पूजामुनिरक्तजयवरवानी ॥ बोले अतिपुनीत
 पृदुवाणी ॥ नाथ एक संशयबड मोरे ॥ करतलवेदतत्व
 सबतोरे ॥ कहन मोहि लागत भयलाजा ॥ जान कहों बड
 होइ अकाजा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संत कहिं असनीतिप
 भु ॥ अतिपुण्य मुनिगाव ॥ होइ न विमल विवेकउर ॥ गु
 नसना कर्यें दुगव ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ ॥ असविचारिप्र
 गदों न जयाइ ॥ हरहुनायक रजनपर छोइ ॥ रामनाम
 नम्रमि नमभावा ॥ संतपुण्य उपनिषदगावा ॥ संगन
 गपन संभु अतिनाश ॥ शिवधगवान ज्ञानगुणराशी ॥
 आकरचारि जायत ग अहो ॥ काशी परतपगमपदन्द

सोपिराममहिमा सुनिराधा ॥ शिवउपदेशकरत करिदा
या ॥ रामकवनप्रभु पूछों तों ही ॥ कहिय बुझाइ कृपानि-
धि मोही ॥ एक राम अब धेशकुमारा ॥ निनकर चरित वि-
दित संसारा ॥ नारि बिरह दुख लहेउ अपारा ॥ भएउ रोष
रण रावण मारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभु सोइ राम कि अव-
र कोउ ॥ जाहि जपत त्रिपुरारि ॥ सत्य धाम सर्वज्ञ तुम ॥
कहुहु बिबेक विचारि ॥ ६८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जैसें
मिटै मोर भ्रम भारी ॥ कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ॥ जा-
ज्ञ बलिक बोले मुसकवाई ॥ तुमहि बिदित रघुपति प्रभु-
ताई ॥ राम भक्त तुम कर्म मन बाणी ॥ चतुरा इतुम्हारि में
जानी ॥ चाहहु सुनै राम गुण गूढा ॥ कीन्हें उग्र भ्रम नहु अ-
ति मूढा ॥ तात सुनहु सादर मन लाई ॥ कहहु राम की क-
था सुहाही ॥ महामोह महि शेष विशाला ॥ राम कथा क-
लिकाल कराला ॥ राम कथा शशिकिरण समाना ॥ संत-
चकोर करि हिंजेहि पाना ॥ ऐसें संशय कीन्ह भवानी ॥
महादेव तब कहा बरवानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहौ सोमति
अनुहारि अब ॥ उमा शंभु संवाद ॥ भयउ समय जेहि हे-
तु जिहिं ॥ सुनु सुनिमिद हिं विषाद ॥ ६९ ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ एकवार चेत्युग माहीं ॥ शंभु गये कुंभज ऋषि पाहीं
॥ संग सती जग जननि भवानी ॥ पूजे ऋषि अरि वलेश्वर
जानी ॥ राम कथा सुनि वर्ध बरवानी ॥ सुनी महेश परम
सरवमानी ॥ ऋषि पूछी हरि भक्ति सुहाई ॥ कही शंभु
अधिकारी पाई ॥ कहत सुनत रघुपति गुण गाथा ॥ क-
हु दिन तहां रहै गिरिनाथा ॥ सुनि सन विदामांगि त्रिपु-
रारी ॥ चले भवन संग दक्ष कुमारी ॥ तेहि अवसर भजन

महिभारा ॥ हरिरघुवंशलीन्ह्रवतारा ॥ पितावचनत
 जिराजउदासी ॥ दंडकबनविचरतअविनाशी ॥ ॥
 दोहा ॥ ॥ हृदयविचारतजातहर ॥ केहिविधिदरश
 नहोई ॥ गुप्तरूपअवतरेउप्रभु ॥ गयेंजानसबकोई ॥ ७०
 ॥ चौपाई ॥ ॥ रावणमरणमनुजकरजाचा ॥ प्रभुवि-
 धिवचनकीनचहसांचा ॥ जौनहिंजाउंरहैपछितावा ॥
 करतविचारनबनतबनावा ॥ एहिविधिभएशोचबश
 इंशा ॥ ताहिसमयजाइदशशीसा ॥ लीननीचमारीचहि
 संग ॥ भयउत्तुरतसोइकपटकुरंगा ॥ करिछलमूढह
 रीचेंदेही ॥ प्रभुप्रतापउरबिदितनतेही ॥ मृगविधिबंधु
 सहितहरिआए ॥ आअमदेरिवनयनजलछाए ॥ वि-
 रहविकलनरइचरघुराई ॥ रवोजतविपिनफिरतदोभा
 ई ॥ कचहुयोगबियोजनजाके ॥ देरवाभगटधिरहदुरव
 ताके ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अतिविचित्ररघुपतिचरित ॥
 जानहिंपरमसुजान ॥ जेमतिमंदविमोहवश ॥ हृदय-
 धरहिकछुआन ॥ ७१ ॥ ॥ सौरठा ॥ शंकरउरअतिक्षो-
 भ ॥ सतीनजानहिंमर्मसोई ॥ तुलसीदरशनलोभ ॥ म-
 नउरलोचनलालची ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शंभुसमयतो
 हिंरामहिंदेखा ॥ उपजादियअतिहर्षविशेषा ॥ भरिलो-
 चनछविशिंपुनिहारी ॥ कुसमयजानिनकीन्ह्रचिन्हा-
 री ॥ जयसच्चिदानंदजगपावन ॥ असकाहिलेउमनो-
 जनशावन ॥ चलेजातशिवसतीसमेता ॥ पुनिपुनिपुल-
 किनरुपानिकेता ॥ सतीसोदशाशंभुकीदंरवी ॥ उरउप-
 जासंदेहाविशेषा ॥ शंकरजगनबंधजगदीशा ॥ सरन
 रमुनिरसबतावनशीसा ॥ तिनंदनूपसुतहिंकीन्ह्रमणा-

मा ॥ कहिसचिदानंदपरधामा ॥ भयेमगनछवितासुवि
लोकी ॥ अजहुं प्रीतिउररहतिनरोकी ॥ ॥ दोहा ॥
ब्रह्मजो व्यापकविरज अज ॥ अकल अनाह अमेद ॥
सोंकिदेह धरि होइनर ॥ जाहिन जानति बेद ॥ ७२ ॥
चौपाई ॥ ॥ विष्णुजो स्मरहित नरतनुधारी ॥ जोउसर्व
ज्ञयथात्रिपुरारी ॥ रवोजतशोक अशइबबारी ॥ ज्ञान-
धाम श्रीपति अस्मरारी ॥ शंभुगिरा पुनि वृथानहीई ॥ शि
वसर्वज्ञ जानसबकोई ॥ असंशयमनभयउअपारा ॥
होइनरुदयप्रबंधमचारा ॥ यद्यपिप्रगटनकहेउभवा
नी ॥ हरअंतरजामी सबजुनी ॥ स्मनहुंसतीनबनारि
सुभाउ ॥ संशयअसन धरियउरकाउ ॥ जासकथाकुं
भक्तपिगाई ॥ भक्तिजासुमै मुनिहिस्मनाई ॥ सोमम-
इष्टदेवरघुबीरा ॥ सेवतजाहि सदा मुनिधीरा ॥ ॥
॥ छंद ॥ ॥ मुनिधीरयोगीसिद्ध संततबिमलमनजेहि
ध्यावहिं ॥ कहिनैतिनिगमपुराण आगम जासुकीर-
तिगावहिं ॥ सोइरामव्यापक ब्रह्मभुवननिकायपति-
मायाधनी ॥ अवतरेउअपने भक्तहितनिजतंत्रनित्य
रघुकुलमणी ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ लागनउरउपदेश ॥
यदपिकहेउशिवबारबहु ॥ बोलेबिहंसिमहेश ॥ हरि
मायाबलजानिजिय ॥ ७३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोतुम
रेमनअतिसंदेह ॥ तोकिनजाइपरिक्षालेह ॥ तबलगि
बैठिरहोंबरछाही ॥ जबलगितुमरेहुहु मोहिपाही ॥ जे
संजाइमोहभ्रमभारी ॥ करेहुसोयतनविवेकविचारी ॥
चलीसतीशिवआयसुपाई ॥ करहिबिचारकरोंकहा
माई ॥ उहांशंभुअसमनअनुमाना ॥ दक्षसुताकहनहि

कल्याणा ॥ मोरे हुंकहेन संशय जाहीं ॥ विधिविपरीत
 भलाई नाही ॥ होइ हि सो जो राम रचिराखा ॥ कोकरितके
 वटावहिं शारवा ॥ असकहिलगे जपन हरिनामा ॥ गयी
 सती जहं प्रभु सरवधामा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुनि पुनि ह
 दय विचार करि ॥ धरि सीता कर रूप ॥ आगे होइ चली
 पंथतिहिं ॥ जेहि आवत नर भूष ॥ ७४ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ लक्ष्मण दीखउ मा कृतवेषा ॥ चकित हृदय भ्रम भयउ
 विशेषा ॥ कहिन सकन कछु अति गंभीरा ॥ प्रभु प्रभाव
 जानत मति धीरा ॥ सती कपट जानेउ सरस्वामी ॥ सम
 दरशी सब अंतर जामी ॥ सुभिरत जाहि मिटै अज्ञाना ॥
 सोई सर्वज्ञ राम भगवाना ॥ सती कीन्ह चहै ताहि दुराऊ
 ॥ देखहु नारिकु भाव प्रभाऊ ॥ निज माया बल हृदय ब
 रवाना ॥ योले विहंसि राम मृदु वानी ॥ जोरि पाणि प्रभु
 कीन्ह प्रणामू ॥ पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥ कहे उब
 होरि कहां वृष केतू ॥ विपिन अकेलि फिरहि केहि हेतू ॥
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम बचन मृदु गूढ सुनि ॥ उपजा अति
 संकोच ॥ सती स भीत महेश पहं ॥ चली हृदय बड शोच
 ॥ ७५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मै शंकर कर कहान हीना ॥ नि
 ज अज्ञान राम परवाना ॥ जाइ उत्तर अब देहों कहा ॥ उर
 उपजा अति दारुण दाहा ॥ जाना राम सती दुरवपावा ॥
 निज मनाव कछु मगटि जनावा ॥ सती दीखवतु कम
 जाना ॥ आगे राम सहित आभाना ॥ फिरि चित पावा छै
 प्रभु देया ॥ सदिन बंधु मिय संदर वेषा ॥ जहं चित वनित
 हं प्रभु आना ॥ सेवाहिं सिद्ध मुनी जगदीश ॥ देखे जि
 बां धां वधु अनेका ॥ अमित मभाव एक ते गका ॥ वंद

तचरणकरतमभुसेवा ॥ दिविधवेषदेखे सबदेवा ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सतीविधात्रीइंदिरा ॥ देखीअमितअनूप
 जेहिजेहिवेषआजादिसर ॥ तेहितेहितनुअनुरूप ॥
 ॥ ७६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखेंजहंतहंरघुपतिजेते ॥ श
 क्तिनसहितसकलसरतेते ॥ जीवचराचरजेसंसार ॥
 देखेसकलअनेकप्रकार ॥ पूजहिंप्रभुहिंदेवबहुवेषा
 ॥ रामरूपदूसरनहिंदेषा ॥ अवलोकेरघुपतिबहुतेरे ॥
 सीतासहितसकवेषघनेरे ॥ सोइरघुबरसोइलक्ष्मण-
 सीता ॥ देखिसतीअतिभयीसभीता ॥ हृदयकंपतनु
 स्रधिकछुनाहीं ॥ नयनमून्दिबैठीमगमाहीं ॥ बहुरि
 बिलोकेउनयनउघारी ॥ कछुनदीखतहंदक्षकुमारी ॥
 पुनिपुनिनाइरामपदशोसा ॥ चलीतहांजहंरहेगिरी
 शा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गयीसमीपमहेशतहं ॥ हसिपू-
 छीकुशलात ॥ लीन्हपरीक्षाकवनविधि ॥ कहहुसत्य
 सबबात ॥ ७७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सतीसमुजिरघु
 वीरप्रभाऊ ॥ भयवशशिवसनकीन्हदुराऊ ॥ कछुनप
 रीक्षालीन्हगोशाई ॥ कीन्हप्रणामतुहारिहिंनई ॥
 जोतुमकहासोमृषानहोई ॥ मोरेमनप्रीतिअतिसोई ॥
 तबशंकरदेखेउधरिध्याना ॥ सतीजोकीन्हचरितस-
 बजाना ॥ बहुरिराममायहिंशिरनावा ॥ प्रेरीसतिहिं-
 जेहिज्जुकहावा ॥ हरिइच्छाभावीबलवाना ॥ हृदय
 विचारतशंभुसजाना ॥ सतीकीन्हसीताकरवेषा ॥
 वशेषा ॥ जौअबकरींसतीसनप्री
 ती ॥ मिदैभक्तिपथहोइअनीती ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प
 किचयेसबडपाप ॥ प्रगटनक

हतमहेशकलु ॥ हृदय अधिक संताप ॥ ७८ ॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ तब शंभु प्रभु पद शिर नाचा ॥ सुमिर तराम हृदय अ
 श आचा ॥ एहित नु सति हि भेंट मोहि नाहीं ॥ शिव संक-
 ल्य कीन्ह मन माहीं ॥ अस विचारि शंकर मति धीरा ॥ च-
 ले भवन सुमिर नर घुबीरा ॥ चलत गगन भेंगिरा सुहाई
 ॥ जय महेश भलि भक्ति ददाई ॥ अस प्रणतु म विनु करै
 को ग्राना ॥ राम भक्त समरथ भगवाना ॥ सुनि नभ गिरा
 सनी उर शोचा ॥ पूछा शिव हिंस मेत संकोचा ॥ कीन्ह कव-
 न प्रण कहहु कृपाला ॥ सत्य धाम प्रभु दीन दयाला ॥ यद-
 पि सति पूछा वहु भोती ॥ तदपिन कहे उत्रि पुर आराती ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सती हृदय अनुमान किय ॥ सब जाने उ-
 सर्व ज्ञ ॥ कीन्ह कपट में शंभु सन ॥ नारि सहज जड अज्ञ ॥
 ॥ ७९ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ जल पय सरिस बिकाइ ॥ देर बहु
 प्रीति वीर गर्त भन्ता ॥ बिलग होइ रस जाइ ॥ कपट रवटाई
 परत हीं ॥ ८० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हृदय शोच स मुज्जनि
 जंकरणी ॥ चिंता अमित जाइन हि वरणी ॥ कृपा सिंधु शि-
 व परम अगाधा ॥ प्रगटन कहे उमोर अपराधा ॥ शंकर रू-
 प अचलो नि भवाना ॥ प्रभु मोहित जे उ हृदय अ कुलानी
 ॥ निज अघ स मुज्जिन कलु कहि जाई ॥ तपैत वाइ वर उर
 अघिकाई ॥ सती शोच जानि वप कनू ॥ कहा कथा सेंदर
 करु दहे ॥ वरान पंथा निविधि इति हासा ॥ विश्व नाथ
 पहुं चैं को लाना ॥ तहें प्रनिशंभु समुजि प्रण आपन ॥ वेढे
 वेढे तन करि कम नारा न ॥ शंकर सहजरूप संगारा ॥ लागि
 न माधि अरु न द अगारा ॥ ८१ ॥ यह चौपाई आदि वेद दुइय
 दह पद ॥ ८२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सती चराहि चैं ला सवत ॥

अधिक शोच मन मां हि ॥ मर्म न कोऊ जान कछु ॥ युग सम
दिवस सिराहिं ॥ ८१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नित नव शोच सनी
उर भारा ॥ कब जै हौं दुरव सागर पारा ॥ मै जो कीन्ह रघुपति
अपमाना ॥ पुनि पति बचन वृषा करि जाना ॥ सो फलु मोहि
विधाता दीन्हा ॥ जो कछु उचित रहा सो कीन्हा ॥ अब बिधि
अस वृजिय नहि तोही ॥ शंकर बिमुख जि आवहु मोही ॥ क
हिन जाइ कछु हृदय गलानी ॥ मन महं रामहिं समिरि शया
नी ॥ जौ प्रभु दीन दया लु कहावा ॥ आरति हर ए बेदय शग
वा ॥ तौ मै बिनय करौं कर जोरी ॥ छूटो बेगि देह मेरी ॥ जौ मो
रेशिव चरण सनेहु ॥ मन क्रम बचन सत्य व्रत एहु ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ नौ सम दरशि सनिध प्रभु ॥ करौं सो बेगि उपाइ ॥
होइ मरण जेहि विनहि अम ॥ दुः सह बिपति बिहाइ ॥ ८२
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इहि बिधि दुग्वित प्रजेश कुमारी ॥ अ
कथनीय दारुण दुरव भारी ॥ बीते संवत सहस्र सताशी ॥
तजी समाधि शंभु अविनाशी ॥ राम नाम शिव साधिर ए
लागे ॥ जानेउ सती जगत पति जागे ॥ जाइ शंभु पद वंदन
कीन्हा ॥ स मुख शंकर आसन दीन्हा ॥ लगे कहन हरिक
थार साला ॥ दक्ष प्रजेश भये नहि काला ॥ देखा बिधि बि
चारि सब लायक ॥ दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥ बड अ
धिकार दक्ष ज बपावा ॥ अति अभिमान हृदय तब आवा
॥ नहि कोउ अस जन भाज गमाइ ॥ प्रभु ता पाई जाहि म द
नाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दक्ष लिये सुनि बोलि सब ॥ कर ए
लगे बड याग ॥ नेव ते सादर सकल सुर ॥ जे पावत मख-
भाग ॥ ८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ किन्नर नाम सिद्ध गंधर्वा ॥
बंधन समेत चले सर सर्वा ॥ विष्णु विरंचि महेश बिहाई

चले सकल सरयान बनाई ॥ सती बिलोके गगन विमाना ॥
 जात चले संदर विधिनाना ॥ सर संदरी करहिं कल गाना ॥
 स्तनन श्रवण छूटहिं सुनिध्याना ॥ पूछे उत बशिव कहे उबरवा
 नी ॥ पितायज्ञ स्तनिक छुहरषानी ॥ जो महेश मोहि आयसु
 देहां ॥ कछु दिन जाय र हो मिसिएहीं ॥ पति परित्याग हृदय
 दुरवभारी ॥ कहें न निज अपराध विचारी ॥ बोली सती मनो
 हरवानी ॥ सभय सकोच प्रेम रस सानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 पिता वचन उत्सव परस ॥ जो मभु आयसु होई ॥ तौ मै जाउं
 कृपायतन ॥ सादर देखन सोई ॥ ८४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 कहे उनी क मोरेहु मन भावा ॥ यह अनुचित नहिं नेवत पठा
 वा ॥ दक्ष सकल निज स्तना बुलाई ॥ हमरे वयर तुम्हें बिस
 राई ॥ ब्रह्म सभा हमसन दुरवमाना ॥ तेहिने अजहु करहि
 अपमाना ॥ जो विनु बोलेहु जाहु भवानी ॥ रहै न शील स
 नेहन कानी ॥ यदापि मित्र प्रभु पितु गुरु गोहा ॥ जाइय विनु
 बोलेहु न संदेहा ॥ तदापि विरोध मान जहं कोई ॥ तहां गये
 कल्याण होई ॥ भाति अनेक शंभु समुजावा ॥ भावी व
 जन ज्ञान उर आवा ॥ कह मभु जाहु जो विनहि बुलाए ॥ न
 हि भलिवात हमारे भाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहि देखे हरय
 तन बह ॥ रहै न दक्ष कुमारि ॥ दिये मुरख्य गण संगत व ॥
 विदा कान्हि विपु रारि ॥ ८५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पिता भव
 न जव गयी भवानी ॥ दक्ष आसन काहुसन मानी ॥ सादर
 भर्ता दाम्नी एक माना ॥ भगिनी मिली बहुत सुक काना
 ॥ दक्षन कछु पली कुशलाता ॥ सती हिं बिलोकि जरे सुव
 गाता ॥ सती जाई देखे उत बजागा ॥ कतहुं न दोरव शंभु क
 रसागा ॥ तयचित चंदे नों गंकर कहें ॥ प्रभु अपमान

समुज्जितरुद्रहेऊ ॥ पाछिलदुःखहृदयअसव्यापा ॥ जस
यहभयउमहापरितापा ॥ यद्यपिजगदारुणदुरवनाना ॥
सबतैंकठिनजातिअपमाना ॥ समुजिसतीहीभयउअ
तिक्रोधा ॥ बहुविधिजननीकीन्हप्रबोधा ॥ ॥ दोहा ॥
शिवअपमाननहिजाइसहि ॥ हृदयनहोइप्रबोध ॥ स
कलसभहिं हठि हठ कितब ॥ बोलीबचनसक्रोध ॥ ८६ ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ सुतहुसभासदसकलमुनिंदा ॥ कही
सुनीजीन्हसंकरनींदा ॥ सोफलतुरतलहवसबकाहू ॥ भ
लीभांतिपछितावपिताहू ॥ संतशंभुश्रीपतिअपवादा ॥
सुनियजहांतहेंअसमर्थादा ॥ काटियतासुजीभजोव
साई ॥ अवणसुंदिनहिचलीयपराई ॥ जगदात्मासहे-
शत्रिपुरारी ॥ जगतजनकसबकेहितकारी ॥ पितामंद
मतिनिंदततेही ॥ दक्षशक्रसंभवयहदेही ॥ तजिहौंतुर
तदेहतेहिहेतु ॥ उरधरिचंद्रमौलिदृषकेतु ॥ असकहि
योगअग्नितनुजारा ॥ भयउसकलमसहाहाकारा ॥
॥ दोहा ॥ ॥ सतीमरणसुनिशंभुगण ॥ लगेकरणमख
खीस ॥ यज्ञविध्वंसबिलोकिभृगु ॥ रक्षाकीन्हसुनीश ॥
॥ ८७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ समाचारसबशंकरपाये ॥ वीरभ
द्रकरिकोपपठाये ॥ यज्ञविध्वंसजाइतिन्हकीन्हा ॥ स
कलसरन्हविधिवतफलदी ॥ १ ॥ जगविदितदक्षग
तसोई ॥ जसकलुशंभुविमुखकैहोई ॥ सहइतिहास-
सकलजगजाना ॥ तातैंमैंसक्षेपबरवाना ॥ सतीमरतह
॥ जन्मजन्मशिवपदअचुरागा ॥ तेहि-
कारणहिमगिरिगृहजाई ॥ जनमीपारवतीतनुपाई ॥
जबतैंउमाशैलगृहजाई ॥ सकलसिद्धिसमपतितहें

छाई ॥ जहंत हं मुनिन सक आश्रम कीन्है ॥ उचित बासहि म
भूधर दीन्है ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सदा सुमन फल सहित सब
॥ द्रुमवन नाना जाति ॥ प्रगटी सुंदर शैल पर ॥ मणि आका
र बहु भांति ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सरिता सब पुनीत
जल वहई ॥ स्वगमृग मधुप सरवी सब रहई ॥ सहज बय
र सब जीवन त्यागा ॥ गिरि पर सकल करहि अनुरागा ॥
मोह शैल गिरि जागृह आये ॥ जिमि जन रास भक्तिके पा
ये ॥ नित नूतन मंगल गृह तासू ॥ ब्रह्मादि कगा वहिं च श
जासू ॥ नारद समाचार सब पाये ॥ कौतुक हौ गिरि गेह सि
धाए ॥ शैल राज बड आदर कीन्हा ॥ पद परवारि वर आ
सन दीन्हा ॥ नारी सहित मुनि पद शिर नावा ॥ चरण सलि
ल सब भवन सिचावा ॥ निज सौभाग्य बहुत गिरि वरणां
॥ सुता दौलि मेली मुनि चरणा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ त्रिका
ल ज सबे ज तुम ॥ गति सर्वत्र तुम्हारि ॥ कहहु सुता के
दोष गुण ॥ मुनि वर ददय विचारि ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
कहा मुनि विहंसि गूढ मृदु वाणी ॥ सुता तुम्हारि सकल
गुण रानी ॥ सुंदरी सहज सुशैल सयानी ॥ नाम उमा अ
थि का भवानी ॥ सब लक्षण संपन्न कुमारी ॥ होइ हिंसंत
त पित्र हिंसा री ॥ सदा अचल एहि कर अहि बाता ॥ ए
हिनें यश पै हं दीपतु गुता ॥ होइ हिं प्रज्य सकल जग सा
ही ॥ एहि सेवन कहु दुलभ नाही ॥ एहि कर नाम स्तुति
संन्यास ॥ अथ चर्चा दक्षिण वन आसि धारा ॥ शैल सुन्द
र गिरि सुता तुम्हारी ॥ कनहु जे अच गुण हैं दुइ चारी ॥
अथ गुण अमान मार्ग पितु दीना ॥ उदासीन सब संशय क्षी
ना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ योगी जी दल अकाप मन ॥ नगन अ

मंगलवेष ॥ असस्वामियहिकहंमिलिहि ॥ परीहस्तश्च
सरेरव ॥ ६० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिमुनिगिरासत्य



जियजानी ॥ दुखदंपतिहिउमाहरषानी ॥ नारदहंयहभे
दनजाना ॥ पुलकशरीरभरेजलनयना ॥ दशाएकसमुज
तविलगाना ॥ सकलसरवीगिरिजागिरिमयना ॥ होइन
मृषादेवऋषिभाषा ॥ उमासोबचनहृदयधरिसरवा ॥
उपजेउशिवपदकमलसनेहू ॥ मिलनकठिनमनभासंदे
हू ॥ जानिकुअवसरप्रीतिदुराई ॥ सरवीउचंगबैठीपुनि
जाई ॥ ऋठिनहोइदेवऋषिवानी ॥ शोचहिंदंपतिसरवी
सयानी ॥ उरधरिधीरकहेगिरिराऊ ॥ कहहुनाथकाक
रियउपाऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहमुनीशहिमवंतसनु
॥ जोबिधिलिरवालिलार ॥ देवदनुजनरनागमुनि ॥ को
उनमेदनहार ॥ ६१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तदपि एकमे
कहोउपाई ॥ होइकरैजोदेवसुहाई ॥ जसवरमैवरण

उतुमपाहीं ॥ मिलिहिउमहिकलुसंशयनाहीं ॥ जेजेवर
 कंदोषवरवाने ॥ तेसबशिवपहमैअनुमाने ॥ जौविबाह
 शंकरसनहोई ॥ दोषौगुणसमकहसबकोई ॥ जौअहि
 मेजशयनहरिकरहीं ॥ बुधकलुतिन्हकरदोषनधरहीं
 ॥ भानुकुशानुसर्वेसरवाहीं ॥ तिनकहंमंदकहतकोऊ
 नाहीं ॥ शुभअरुअशुभसलिलसबवहई ॥ सरसरि
 कोऊअपुनीतनकहई ॥ समरथकहंनहिंदोषगुसाई ॥
 रादिपावकसरसरिकीनाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसेहिंशि
 यकरहिंनर ॥ जडविवेकअभिमान ॥ परहिंकल्पभरि
 नरकमहं ॥ जीवकिईशसमान ॥ ॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुरसरि
 जलकृतवासनजाना ॥ कवहुंनसंतकरैतिहिपाना ॥ सरस
 रिमिलेंसोपावनजैसैं ॥ ईशअनीशहिंअंतरतैसैं ॥ शंभुसह
 जसमरथभगवाना ॥ एहिबिबाहसबविधिकल्याणा ॥ दुश
 मअपैअहहिमहेभू ॥ आसुतोषपुनिकीयेकलेशू ॥ जौ
 नगकरैकुमारितुहारी ॥ भावीउमेंटिशकैत्रिपुरारी ॥
 यद्यपिवरअनेकजगमाहीं ॥ याहिकहंतजिशिवदूस
 रनाहीं ॥ वरदायकप्रणतारतिभंजन ॥ कृपासिंधुसे
 वकमनरंजन ॥ इच्छितफलावनुशिवआराधें ॥ लह
 इनकोटियोगजपसार्धें ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असकहि
 नारदकर्गारिहरि ॥ गिरिजहिंदीन्हअशीश ॥ हांडहिं
 चहकल्याणमय ॥ संशयतजहुगिरीश ॥ ॥ २३ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ कहिअगवदभवनमुनिगयेक ॥ आ
 गिनचरितसलहुजशभयेक ॥ पतिहिंएकानपायकह
 मयना ॥ नाथनमैसमुंउंमुनिययना ॥ जौयरवरकुछ
 दोदअनुपा ॥ करिगुविबाहसनाअनुकृपा ॥ ननुकन्य

वरुहो कुमारी ॥ कांत उमा मम प्राणपियारी ॥ जौनमि-
लहिवरगिरिजहि योगू ॥ गिरिजडसहज कहहिं सब लो-
गू ॥ सो विचारि पति करहु बिबाहू ॥ जेहि नव होरि होइ उ-
र दाहू ॥ अस कहि परी चरण धरि शीशा ॥ बोले सहित स-
नेह गिरीशा ॥ बरुपावक प्रगट शशि मांहीं ॥ नारद बच-
न अन्यथानाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रिया शोच परिहरहु
सब ॥ सुमिरहु श्री भगवान ॥ पारवती जिन निर्मय उ ॥
सोइ करि रहि कल्याण ॥ ६४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अ-
जौ तुमहि सुता परने हू ॥ तौ अस जाहि शिरवावन देहू ॥
करै सो तप जेहि मिलहिं महेशू ॥ आन उपाय न मिटहि क-
लेषू ॥ नारद बचन सत्य सब हैतू ॥ सुंदर स-
दृष केतू ॥ अस विचारितु मत जु सब शंका ॥ सबहि भां-
शंकर अकलंका ॥ सुनि पति बचन हर्षि मन मांहीं ॥ ग-
ई तुरित उठि गिरिजा पाहीं ॥ उमहि विलोकिन यन भरि
वारी ॥ सहित सनेह गोद बैठारी ॥ बारहिं बार लेति उर
ई ॥ गद्गद कंठन कलुकहि न जाई ॥ जगत मातु सर्वज्ञ भ-
वानी ॥ मातु सरवद बोली मृदु बानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
सुनहु मातु मै दीख अस ॥ स्वप्न सुनाऊं तोहि ॥ सुंदर-
गौर सुविप्रवर ॥ अस उपदेशे उमोहि ॥ ६५ ॥ ॥ चौपा-
ई ॥ ॥ करहु जाई तप शैल कुमारी ॥ नारद कहा सो स-
त्य विचारी ॥ मातु पितहिं पुनिय हमत भावा ॥ तप सरव-
प्रद दुख दोष नशावा ॥ तप बल रचै प्रपंच विधाता ॥ तप ब-
ल विष्णु सकल जस पाता ॥ तप बल शंभु करहिं संघारा
॥ तप बल शेष धरहिं महि भारा ॥ तप आधार सब सृष्टि
भवानी ॥ करहु जाई तप अस जिय जानी ॥ सुनत बच-

नविस्मितमहतारी॥ स्वप्नसूनायेउगिरिहिहंकारी॥ मा
 तुपितहिंबहुविधिसमुजाई॥ चलीउमातपहितहरषा
 ई॥ प्रियपरिवारपिताअरुमाता॥ भयेविकलमुखआ
 वनबाता॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बेदशिरामुनिआइतब॥ स
 वहिकहासमुजाइ॥ पारवतीमहिमासुनत॥ रहैंप्रबो
 धहिपाइ॥ २६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ उरधरिउमाप्राणप
 तिचरणा॥ जाइविपिनलागीतपकरणा॥ अतिसुकु
 मारिनतनुतपयोगू॥ पतिपदसुमिरितजेउसबभो
 गू॥ नितनवचरणउपजअनुरागा॥ विसरीदेहतपहिं
 मनलागा॥ संवतसहसमूलफलखाये॥ शाकरवाइशा
 नवर्यंगवाये॥ कलुदिनभोजनवारिवनासा॥ कियेक
 दिनकलुदिनउषवासा॥ बेलघातमहिपरेउसरवाई॥
 तीनिसहससंवतसोरवाई॥ पुनिपरिहरेउपुराणउप
 ण्ण॥ उमानामतवभयउअपणा॥ देखिवउमहितपक्षी
 णशरीरा॥ धूमगिराभईगगनगंभीरा॥ ॥ दोहा ॥
 भयउमनोरथरुफलतब॥ सुनुगिरिराजकुमारी॥ प
 रिहरदसहकलेशसब॥ अबमिलिहहिंनिपुरारि॥ २७
 ॥ चौपाई॥ ॥ असतपकाहुनकीन्हभवानी॥ भयेअ
 नेकधीरमुनिजानी॥ अबउरधरहुब्रह्मवरवानी॥ स
 त्यसदासंततनुनिजानी॥ आवैंपीताबुलावनजबहीं
 ॥ दृष्टपरिहरिघरजायहुतबहीं॥ मिलिहहिंतुमहिंजब
 नमकपीजा॥ जानेहुतबममाणवागोशा॥ सुनतगि
 नाविधिगगनचर्यानी॥ सुलकमानगिरिजाहर्यानी
 ॥ उमानरितमेंसंदरगाचा॥ रकनहुशंभुकरचरितसु
 दाचा॥ जयनेंसुनोलाइतनुत्यागा॥ नचनेंशिवमनभये

उबिरागा ॥ जपहिंसदारघुनायकनामा ॥ जहंतहंस्नहिं
 रामगुणग्रामा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सच्चिदानंदस्वरवधाम
 शिव ॥ विगतमोहमदकाम ॥ बिचरहिंमहिधरिहृदयह
 रि ॥ सकललोकअभिराम ॥ ६८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ क
 तहुंमुनिनउपदेशहिंज्ञाना ॥ कतहुंरामगुणकरहिंबरवा
 ना ॥ यदपिअकामतदपिभगवाना ॥ भगतविरहदुरवदु
 रिवतस्तजाना ॥ यहिविधिगयेउकालबहुवीनी ॥ नित
 नवहोइरामपदप्रीती ॥ नेमप्रेमशंकरकरदेरवा ॥ अवि
 चलहृदयभक्तिकीरेरवा ॥ प्रगटेरामकृतज्ञकृपाला ॥
 रूपशीलनिधितेजविशाला ॥ बहुप्रकारशंकरहिंसरा-
 हा ॥ तुमबिनुअसब्रतकोनिरवाहा ॥ बहुविधिरामशिव
 हिंसमुजावा ॥ पारवतीकरजन्मसुनावा ॥ अतिपुनीतगि
 रिजाकीकरणी ॥ विस्तरसहितकृपानिधिबरणी ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ अबबिनतीममस्नहुशिव ॥ जौमोपरनि
 जनेहु ॥ जाइबिबाहुहुशैलग्नहि ॥ यहमोहिमांगेदेहु ॥
 ॥ ६९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहशिवयदपिउचितअसनाही
 ॥ नाथबचनपुनिमेदिनजाहीं ॥ शिरधरिआयस्ककरिय
 तुह्मारा ॥ परमधरमयहनाथहमारा ॥ मातुपितागुरुप्र
 भुकीबानी ॥ बिनहिविचारकरियशुभजानी ॥ तुमसब
 भांतिपरमहितकारी ॥ आज्ञाशिरपरनाथतुह्मारी ॥ प्र
 भुतोषेउस्ननिशंकरबचना ॥ भक्तिविवेकधर्मयुतरच
 ना ॥ कहप्रभुहरतुह्मारपणरहेऊ ॥ अबउररारवेहुजो
 हमकहेऊ ॥ अंतरध्यानभयेअसभारवी ॥ शंकरसोमू
 रतिउररारवी ॥ तबहिससकरषिशिवपहआये ॥ बोले
 प्रभुसनबचनसहाये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पारवतीपह-

जाइतुम॥ प्रेमपरीक्षालेहु॥ गिरिहिपेरिपठायेहुभवन
 दूरकरहुसंदेहु॥ १००॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऋषिनगौरी
 देखीतहकैसी॥ मूरतिवंततपस्याजैशी॥ बोलेमुनिस
 नुशीलकुमारी॥ करहुकवनकारणतपभारी॥ कहिअ
 पराधहुकातमचहहू॥ हमसनसत्यमर्मकिनकहहू॥ सु
 नतऋषिनिकेवचनभवानी॥ बोलीगूढमनोहरबानी
 ॥ कहतमरममनअतिसकुचाई॥ हंसिहहुस्फनिहमा
 रिजडलाई॥ मनहठपरासनैनसिरवावा॥ चहतवारि
 परभांतिउठावा॥ नारदकहासत्यसोईजाना॥ विनुपं
 धनहमचहहिंडडाना॥ देखहुमुनिअधिवेकहमारा॥
 चाहहिशिवहिसदाभरतारा॥ ॥ दोही ॥ ॥ सुनत
 वचनविहंसेअपय॥ गिरिसंभवतवदेह॥ नारदकहुउ
 पदेशसुनि॥ कहहुवसेकोगेह॥ १०१॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ दक्षसुतन्हिउपदेशनिजाई॥ निनफिरिभवननदेखे
 ॥ आई॥ चित्रकेतुकरघरउनघाला॥ कनककशिपुक
 रपुनिअसहाला॥ नारदसीरवजेसनहिंनरनारी॥ अ
 दशिभवननजिहोहिंभिरवारी॥ मनकपटीतनसज्जन
 निन्हा॥ आपसरिससचहोचहकीन्हा॥ तेहिकेवचन
 मानिदिआला॥ तुमचाहुहुपतिसहजउदासा॥ निगुण
 निरुजकुनैपकपान्ना॥ अकुलअगेहादिगंवरव्याली॥
 कदहुकवनसतवअसचरपाये॥ भलभूलिउठगयेवग
 गये॥ पंचकदशिचमनाचिवादी॥ पुनिअवडोरिमराड
 चकदी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अचकरवसोचनगोचनदि॥
 भांगगोभिभवगोदि॥ सहजगुकाकिनकेभयन॥ क
 दहुकिनारिगुदी॥ १०२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अजहु

मानहु कहहाहमारा ॥ हमतुम कहं बरनी कबिचारा ॥ अवि
संदरशचि सरवदसशीला ॥ गावहिं बंदजासुयशली
ला ॥ दूषणरहितसकलगुणरासी ॥ श्रीपतिपुरवैकुंठनि
वासी ॥ असबरतुमहिमिलाउवआनी ॥ सुनतबिहंसि
कहबचनभवानी ॥ सत्यकहहुगिरिभवतनुएहा ॥ हठन
छूटछूटेबरुदेहा ॥ कनककौसुनिपषानतेंहोई ॥ जारेहु
सहजनपरिहरसोई ॥ नारदबचननंपरिहरहूं ॥ बसौभ
वनउजरौनहिडरऊं ॥ गुरुकेबचनप्रतीतिनजैही ॥ सप
नेहुसगमनसरवसिद्धितेही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महादेव
अवगुणभवन ॥ विष्णुसकलगुणधाम ॥ जैहिकरम-
नरमजाहिसन ॥ ताहिताहिसनकाम ॥ १०३ ॥ ॥ चौपा
ई ॥ ॥ जोतुममिलतेहुप्रथमसुनीशा ॥ सुनतेउसीरि
तुहारिधरिशीसा ॥ अबमेंजन्मशंभुहितहारा ॥ कोशु
एदोषहिंकरैबिचारा ॥ जोतुमरेहठहृदयविशेषी ॥ ह
रिनजाइविनकियेबरेषी ॥ तौकोतुकिअन्हआलसना
हीं ॥ बरकन्याअनेकजगमाहीं ॥ जन्मकोटिलगिरग
रहमारी ॥ बरौशंभुनतुरहौकुमारी ॥ तजौननारदकर
उपदेशू ॥ आपुकहहिंशतबारमहेशू ॥ मैपापरीकहेज
गदंबा ॥ तुमगृहगवनहुभएउविलंबा ॥ देखिप्रेमबो
लेसुनिज्ञानी ॥ जयजयजयजगदंबभवानी ॥ ॥ दोहा
॥ ॥ तुममायाभगवानशिव ॥ सकलजगतपितुमात
॥ नाइचरणशिरसुनिचलेउ ॥ पुनिपुनिहर्षितगात ॥
१०४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जाइसुनिन्हहिमवंतपठाये ॥
करिबिनतीगिरिजहिगृहलाये ॥ बहुरिससकृषिशि
वपहंजाई ॥ कथाउमाकीसकलसुनाई ॥ भयेगमनशि

तव आपन प्रभा विस्तारा ॥ निज बश कीन्ह सकल संसा-
रा ॥ कोबे उजबहिं बारि चर केतू ॥ क्षण मह मिटे सकल-
श्रुति सेनू ॥ ब्रह्म चर्य ग्रत संयम नाना ॥ धीरज वर्म ज्ञा-
न विज्ञाना ॥ सदाचार जप योग विरागा ॥ सभय विवेक
कटक सब भागा ॥ ॥ छंद ॥ ॥ भागे उ विवेक सहा
इ सहित सो सुभट संसुग महिं सुरे ॥ सद ग्रंथ पर्वत के
दर न महं जाइ तेहि अवर सरदुरे ॥ होनि हार कार कतार
कोर रववार जगर वर भर परा ॥ दुइ माथ के हिरति नाथ-
जोहि कहं कोपि धनु शकर धरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जैस
जीब जग अचर चर ॥ नारि पुरुष अस नाम ॥ ते निज निज
मर्याद तजि ॥ भये सकल वश काम ॥ १०७ ॥ ॥ चौपाई ॥
सब के हृदय मदन अभिलाषा ॥ लतानिहारिन बहिरु
शारवा ॥ नदी उमगि अंबुधिक हं धाई ॥ संग मकरहित
लावत लाई ॥ जहं अस दशा जडन की बरणी ॥ लोकहि
शकै सचेतन करणी ॥ पशु पक्षिन भजल थल चारी ॥ भ-
ये काम वश समय बिसारी ॥ मदन अंध व्याकुल सब लो-
का ॥ निशि दिन नहिं अवलोकहिं कोका ॥ देव दनु जनर
किन्नर व्याला ॥ प्रेत पिशाच भूत बैताला ॥ इनकी दशा
न कहै उबरवानी ॥ सदा काम के चरे जानी ॥ सिद्ध विरक्त
महामुनियोगी ॥ तेपि काम बश भये वियोगी ॥ ॥ छंद
॥ ॥ भये काम बश योगी शतापस पा मरनर की को कहै ॥
देखहि चराचर नारि मय जे ब्रह्म मय देखत रहै ॥ अब
लाविलोकहिं पुरुष मय जग पुरुष सब अबलामय ॥
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं ॥
सारठा ॥ ॥ धरीन काहू धीर ॥ सब के मन मन सिजह

रे ॥ जेहि सरव उर धुबीर ॥ ते उबरे तेहि काल मह ॥ १०८ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ उभय धरि अस कौ कौ तु क भय ऊ ॥ जब
 ल गिका मशं भुप हंगय ऊ ॥ शिव हि विलोकिस शं के उमा
 रु ॥ भय उच था स्थित सब संसार ॥ भय उतुरु तज गजी
 व सरवारै ॥ जिमि मंद उतरि गये मन वारे ॥ रुद्र हिंदे रि
 मदन भय माना ॥ दुरा धर्षे दुर्गम भगवाना ॥ फिर तला
 ज कछु करि नहि जाई ॥ मरण ठानि मन रचै सिउ पाई ॥ प्र
 गटै सितुरु त रुचि अतुराजा ॥ कुसुमित नवन रुराजि बि
 राजा ॥ वन उपवन बापिका तडागा ॥ परम सुभग सब दि
 शा विभागा ॥ जहंत हंजनु उमगत अनुरागा ॥ देखि सु-
 एहु मन मन सिज जागा ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जागे उमना
 भव मुएहु मन वन सुभगतान परै कही ॥ शीतल सुगंध
 रुमंद मारुत मदन अनल शारवासही ॥ विकसे सरहि
 बहु कंज गुजत पुंज मंजुल मधुकरा ॥ कलहंस पिकशुक
 सरसर च करि गान नाचहि अपसरा ॥ ॥ दोहा ॥
 सकल कला करि कोटि विधि ॥ हारें न सेन समेत ॥ चली
 न अचल समाधि शिव ॥ कोपे हृदय निकेत ॥ १०९ ॥
 चौपाई ॥ ॥ देखि वरसाल विटप वर शारना ॥ तेहि परच
 टे उमदन मन मारवा ॥ सुमन चापनि जशर संधाने ॥ अ
 निरि शता कि अचल गिताने ॥ आडो विषम विशिख उ
 नलागे ॥ ॥ दूरी समाधि शंभु नव जागे ॥ भय उई गमन को
 भावि शोषी ॥ नयन उधारि सकल दिशि देखी ॥ सौरभ प
 लव मदन चिन्तोका ॥ भय उकोप कंपे उचय लोका ॥ नव
 शिखरि नयन नयन उधारा ॥ चित नयन काम भय उज्जरि छा
 ना ॥ साहाकार भय उजग भारी ॥ इर पंकर भये अकर सु

रवारी॥ समुजिकामकरवशाचहिभोगी॥ भयेअकटक
 साधकयोगी॥ ॥ उंद॥ ॥ यागीअकटकभयेउप-
 तिगतिसुनतरतिसूच्छितभयी॥ रोदतिबदतिबहुभां
 करुणाकरतिशंकरपहंगयी॥ अतिप्रेमकरिविनती
 विविधविधिजोरिकरसंसुरवरही॥ प्रभुआशुतोषक
 गालुशिवअबलानिररिवबोलेसही॥ ॥ दोहा॥ ॥
 अवतैरतितबनाधकर॥ होइहिनामअनंग॥ विनुबपु
 व्यापहिंसबहिंपुनि॥ सलुनिजमिलनप्रसंग॥ ११०॥
 चौपाई॥ ॥ जययदुवंशकृष्णअवतारा॥ होइहिंहरण
 महामहिभारा॥ कृष्णतनयहोइहिपतितोरा॥ बचनअ
 न्यथाहोइनमोरा॥ रतिगवनीसुनिशंकरबानी॥ कथा-
 अवरपुनिकहौबरवानी॥ देवनसमाचारसबपाये॥ ब
 ह्नादिकवैकुण्ठसिधाये॥ सबकरविष्णुविरंचिसमेता॥
 गयेजहांशिवकृपानिकेता॥ पृथक्पृथक्कतिनकीन्हप्र-
 शंसा॥ भयेप्रसन्नचंद्रअवतंसा॥ बोलेकृपासिंधुदृषके
 तू॥ कहहुअमरआयेहुकेहिहेतू॥ कहविधितुमप्रभुअ
 तरजामी॥ तदपिभक्तिवशबिनबहुस्वामी॥ ॥ दोहा॥
 ॥ सकलकरनकेहृदयअस॥ शंकरपरमउछाहु॥ नि-
 नयनदेखाचहहिं॥ नाथतुह्यारविवाहु॥ १११॥ ॥ चौ
 पाई॥ ॥ यहउत्सवदेखियभरिलोचन॥ सोकहुकरिय
 मदनमोचन॥ कामजारिरतिकहंवरदीन्हा॥ कृपासिंधु
 यहअतिभलकीन्हा॥ शासतिकरिपुनिकरहिपसाऊ॥
 नाथप्रभुनकरसहजसुभाऊ॥ पारवतीतपकीन्हअपा
 रा॥ करहुतासअबअंगीकारा॥ सुनिविधिबिनयसमु
 प्रभुवाणी॥ ऐसेइहोउकहाकरवसानी॥ तबदेवनहु

दुभीवजाई ॥ वरपि सुमनजयजयसरसाई ॥ अवसर
 जानिससकपिआये ॥ तुरुतहिविधिगिरिभवनपठा
 ये ॥ प्रथमगयेजहरहीभवानी ॥ बोलेबचनमधुरछल
 सार्ना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहाहमारनकुनेहुतब ॥ नारद
 करउपदेश ॥ अवभाऊठतुह्यारपण ॥ जारेउकाममहे
 श ॥ ११२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिबोलीमुसकाइभवानी
 ॥ उचितकहेउमुनिवरविजानी ॥ तुह्यारेजानकामहर
 जारा ॥ अवलगिशंभुरहेसविकारा ॥ हमरेजानसदा
 शिवयोगी ॥ अजअनवद्यअकामअभोगी ॥ जौमैशि
 वसेएउंअसजानी ॥ प्रीतिसमेतकर्ममनवानी ॥ तौह
 मारपणसुनहुंमुनीशा ॥ करहहिंसत्यरुपानिधिईशा
 ॥ ॥ ॥ इहांदुरचौपाईक्षेपक ॥ ॥ ॥ तुमजोकहाहरजारे
 उमारा ॥ सोअतिबडअविवेकतुह्यारा ॥ तातअन
 लकरसहजसुभाऊ ॥ हिमतेहिनिकटजाइनहिकाऊ ॥
 गयेसमीपसोअवशिनशाई ॥ जिमिसंपातिनिजपक्ष
 गवांई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हियहरषेमुनिबचनसुनि ॥ दे
 शिवप्रतीतिविश्वास ॥ चलेभवानिहिनाइशिर ॥ गयेहि
 माचलपाग ॥ ११३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सचप्रसंगगिरि
 पानिहिंसुनावा ॥ मदनदहनसुनिअतिदुरवपावा ॥
 बहुरिकरेउरतिकरवरदाना ॥ सुनिहिमवंतबहुतसु
 खमाना ॥ हृदयविचारिशंभुमभुनाई ॥ सादरमुनिव
 रानियेचुनाई ॥ सुदिनसुनरवतसप्रसीसहाई ॥ वे
 रीगबेदविधिलगनधराई ॥ पवित्राद्यकपिनसांडदानी
 ॥ गदिपदाचिनयाहिमाचलकीन्दी ॥ जादविधिदितिन
 दीन्दीगोपनी ॥ पांचनप्रानिनदददसमार्ता ॥ लगनबा

चित्रजसबहिसुनाई॥हरषेमुनिसबसरसमुदाई॥सु
मनवृष्टिनभवाजनबाजे॥मंगलकलशदशहुंदिशिसा
जे॥ ॥दोहा॥ ॥लगेसंचारनसकलसर॥बाहनविधि
धविमान॥होहिसगुणमंगलसुलभ॥करहिंअपसरा
गान॥११४॥ ॥चौपाई॥ ॥शिवहिंशंभुगणकरहिं
शिंंगारा॥जटासुकुटअहिमौरसंवारा॥कुंडलकंक-
णपहिरेव्याला॥तनुविभूतिपटकेहरिछाला॥शि
शिललाटसंदरशिरगंगा॥नयननीनिउपवीतभुजं-
गा॥गरलकंठउरनरशिरमाला॥अशिवबेषशिवधा
मकृपाला॥करत्रिशूलअरुडमरुबिराजा॥चलेचष
भचटिबाजहिंबाजा॥देखिशिवहिंसरतियसुसुका
हीं॥वरलायकदुलनिजगनाहीं॥विष्णुविरंचिआदि
सरत्राता॥चटिचटिबाहनचलेवराता॥सरसमाज
सबभांतिअनूपा॥नहिबरातदुलहाअनुरूपा॥ ॥
दोहा॥ ॥विष्णुकहाअसबिहंसितब॥बोलिसकल
दिशिराज॥विलगबिलगहोइचलहुसब॥निजनिजस
हितसमाज॥११५॥ ॥चौपाई॥ ॥वरअनुहारबरा
तनभाई॥हंसिकरहुहुपरपुरजाई॥विष्णुबचनसु
निसरसुसुकानै॥निजनिजसेनकहितबिलगानै॥म
नहोमनमहेशसुसुकाहीं॥हरिकेव्यंगबचनसनहिजा
हीं॥अतिप्रियबचनसुनतहरिकेरे॥भुंगीप्रेरीसकलग
एटेरे॥शिवअनुशासनसुनिसबआये॥प्रभुपदजलज-
शीसतिननाये॥नानावाहननानावेषा॥बिहंसेशिवस
माजनिजदेवा॥कोउसुरवहीनबिपुलसुरवकाहू॥बिनुप
दकरकोउबहुपदबाहू॥विपुलनयनकोउनयनविहीना॥

तुष्टपुष्टकोउअतितनक्षीणा॥ ॥छंद॥ ॥तनुक्षीणा-
 कोउअतिपीनपावनकोउअपावनतनुधरै॥भूषणक
 रालकपालकरसबसद्यशोणिततनुभरै॥११॥स्वरश्वा
 नसुअरशृगालमुरवगणवेषअगणितकोगनै॥बहु-
 जिनसमेतपिशाचयोगिनिभांतिवरनतनहिपनै॥१२
 ॥सोरठा॥ ॥नांचहिंगावहिंगीत॥परमतरंगीभूतस
 व॥देखतअतिविपरीत॥बोलहिंवचनविचित्रविधि
 ॥११६॥ ॥चौपाई॥ ॥जसदूलहतसवनीबराता॥कौ
 तुकविविधहोहिंमगुजाता॥इहांहिमाचलरचेउबिता
 ना॥अतिविचित्रनहिजायबरवाना॥शैलसकलजहं
 लगिजगमाही॥लघुविशालनहिवरणिसिराही॥वन
 सागरसवनदीनलावा॥हिमगिरिसबकहंनेवतपठा
 वा॥कामरूपसुंदरतनुधारी॥सहितसमाजसहितव
 रनारी॥आयेसकलहिमाचलगेहा॥गावहिमंगल-
 सहितसनेहा॥प्रथमहिंगिरिबहुगृहसबराये॥यथा-
 योगजहंतहंसबछाये॥पुरशोभाअवलोकिसकहाई॥
 लागेलघुविरंचिनिपुणार्ड॥ ॥छंद॥ ॥लघुलाग
 विधिर्वानिपुणताअवलोकिपुरशोभासही॥वनबा
 गकुपतडागसरितासुभगताशककोकही॥१३॥मंग
 लविपुलनाराणपनाकाकेतुगृहगृहसोहहीं॥बनिता
 पुण्यसुंदरचतुरलविदेसिमृनिमनमोदहीं॥१४॥
 ॥दोहा॥ ॥जगदंवाजहंअवतरि॥सोपुरवरणिनजा
 इ॥अधिमिलसंयतिसकल॥नितनृननअधिकाइ॥
 १००॥ ॥चौपाई॥ ॥नगरनिक्कवरगतसर्पिनआई
 ॥पुंरववरगोभाअधिकाइ॥कारिबनायसाजिनाइन

नाना॥ चलैलेनसादरअगवाना॥ हियहरषेसरसेननि
 हारी॥ हरिहिंदेरिवअतिभयेसरवारी॥ शिवसमाजज
 बदेरवनलागे॥ बिडरीचलेबाहनसबभागे॥ धरिधीर
 जनहारहेसयाने॥ बालकसबलैजीवपराने॥ गयेबभ
 नपूछहिंपितुमाता॥ कहहिबचनभयंकपितगाता॥ क
 हियकहाकहिंजाइनवाता॥ यमकरधारकिधोंबरिया
 ता॥ बरबौराहबरदअशवारा॥ ब्यालकपालविभूष-
 णछारा॥ ॥छंद॥ ॥तनछारब्यालकपालभूषणन
 गनजटिलभयंकरा॥ संगभूतमेतपिशाचजोगिनिबि
 कटमुखरजनीचरा॥ १५॥ जोजियतरहिहिं वरातदेरव
 तपुएयबहुतिहिकरसही॥ देरिवहिसोउमाबिबाहघर
 घरवातअसिलरिकनकही॥ १६॥ ॥दोहा॥ ॥स
 मुजिमहेशसमाजसब॥ जननिजनकसुसकांहि॥ बा
 लबुजायेविविधविधि॥ निडरहोहुडरुनाहि॥ १७॥
 चौपाई॥ ॥लैअगवांनवरानहिंआए॥ दिएसबहिंज-
 नवाससुहाए॥ मैनाशुभआरतिसंवारी॥ संगसुमंग
 लगावहिंनारी॥ कंचनथावरसोहवरयानी॥ परिछण
 चलीहरहिंहरषांनी॥ बिकटबेषरुद्रहिंजबदेरवा॥ अ
 वलनिउरभयभएउविशेरवा॥ भागिभवनपैठीअति-
 आसा॥ गयेउमहेशजहांजनवासा॥ मैनाहृदयभयेउदु
 खभारी॥ लीन्हीबोलिगिरीशकुमारी॥ अधिकसनेह
 गोदबैठारी॥ श्यामसरोजनचनभरिवारी॥ जिहिविधि
 तमहिरूपअसदीन्हा॥ निहिंजडवरबाउरकसकीन्हा
 ॥ ॥छंद॥ ॥कसकीन्हवरुवौराहिविधिजिहितुमहिं
 कंदरतादई॥ जोफलुचहिसुरतरूहिंसोवरवसबबूर

हिलागई ॥१७॥ तुम सहित गिरिते गिरों पाव कज रों जल
 निधि मह परो ॥ घर जाउ अपज श होउ जग जीवत विवाह
 न हों करों ॥१८॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भइ विकल अबला सकल
 ॥ दुरि वन देखि गिरि नारि ॥ करि विलापुरोदनि वदति ॥
 सुता सनेह संभारि ॥१९॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नारद क
 रमें कहा विगारा ॥ भवन मोर जिन वसत उजारा ॥ अस उ
 पदेश मोहि जिन दीन्हा ॥ वौरे वर हिला गित पु कीन्हा ॥ सा
 चेहु उन के मोहन माया ॥ उदासीन धन धाम न जाया ॥ प
 र घर घाल कला जन भीरा ॥ बांऊ कि जान प्रसव की पीरा ॥
 जननि द्विविकल विलोकि भवानी ॥ बौली जुत विवेक मु
 दुवाणी ॥ अस विचार शोचि हमनि माता ॥ सोन टरे जो
 र चो विधाता ॥ करम लिर बाजो वाउर व्याहू ॥ तौ कत दो
 पल गाइय काहू ॥ तुम सनमि लहिं कविधि के अंका ॥
 मातु व्यर्थ जिन लेहु कलंका ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जनिले हुमा
 तु कलंक करुणा परिहरहु अबसर नहीं ॥ दुरव सुख जो
 लिरवो ललार हमरे जाव जहं पाउ वनहीं ॥२०॥ सुनि उ
 माय चन विनीति कोमल सकल अबला शोचिहि ॥ बहु
 भांति विधि हिल गाइ दृपण नयन वारि विमोचहीं ॥२१॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ तिहि अबसर नारद सहित ॥ अरु कृपिस
 ससमेन ॥ समाचार सुनि तुहिन गिरि ॥ गवने नुरत नि
 केत ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तवनारद सवाहिस मुखा
 या ॥ परव कथा परंग कनाया ॥ मयना सन्यस न हं मम
 बाणी ॥ जगदं दानव सुता भवानी ॥ अज अनारि दंश
 नि अरि नाशिनी ॥ अता शंभु अरधांग निवा निनी ॥ ज
 गरं भव पावन नन्द कारिणी ॥ निरुद अज नाना न पुधा

रिणी॥ जन्मी प्रथमदक्षगृहजाई॥ नामसतीसुंदरतनु-
 पाई॥ तहहुंसतीशंकरहिबिबाही॥ कथाप्रसिद्धसकल
 जगमाहीं॥ एकवारआवतशिवसंगा॥ देरवेउरघुकुलक
 मलपतंगा॥ भएउमोहिशिवकहानकीन्हा॥ भ्रमवशवेष
 सीयकरलीन्हा॥ ॥छंद॥ ॥सियवेषसतीजोकीन्हति
 हिअपराधशंकरपरिहरी॥ हरविरहजाइबहौरिपितुके
 यज्ञजोगानलजरी॥ २१॥ अवजनमतुहारेभवननिजप
 तिलागिदारुणतपुकिया॥ असजानिसंशयतजहुगि-
 रिजासर्वदाशंकरप्रिया॥ २२॥ ॥दोहा॥ ॥सुनिनार
 दकेबचनतब॥ सबकरमिताविषाद॥ क्षनमहुंव्यापेउस
 कलपुर॥ घरघरयहसंवाद॥ १२१॥ ॥चौपाई॥ ॥न
 बमैनाहिमवंतअनंदे॥ पुनिपुनिपार्वतीपदवंदे॥ नारि
 पुरुषशिशुजुवासयाने॥ नगरलोकसबअतिहरषाने॥
 लगेहौंनपुरमंगलगाना॥ सजेसबहिहाटकघटनाना॥
 भांतिअनेकभईजिवनारा॥ सूपशारुजशकछुव्यव-
 हारा॥ सोजिवनारकिजाइबरवानी॥ वसहिंभवनजिहिं
 यातभयानी॥ सादरबोलेसकलवराती॥ विष्णुविरंचि
 देवसबजाती॥ विविधपांतिबैठीजिवनारा॥ लगेपरोस
 ननिपुणसुधारा॥ नारिवृंदसरजेंवतजानी॥ लागीदे-
 नगारीसुदुबानी॥ ॥छंद॥ ॥गारीमधुरसरदेहि-
 सुंदरिव्यंगबचनसुनावही॥ भोजनकरहिंसरअति-
 विलंबविनोदसुनिसरवपावहिं॥ २३॥ जेवतजोबढ्यो
 अनंदसोसुरवकोदिहुंनपूरेकह्यो॥ अंचवाइदीन्हेपा
 नगचनेबासजहंजाकोरह्यो॥ २४॥ ॥दोहा॥ ॥बहु
 रिमुनिनहिमवंतकहं॥ लगनसुनाइआई॥ समयवि

लोकविवाहकर ॥ पठये देवबुलाई ॥ १२२ ॥ ॥ चौपाई ॥
 बोलिसकलसुरसादरलीन्हे ॥ सबहियथोचितआसन
 दीन्हे ॥ वेदीवेदविधानसंवारी ॥ सुभगसुमंगलगावहि
 नारी ॥ सिंघासनअतिदिव्यसुहावा ॥ जाईनवरणिवि
 रंचिबनावा ॥ बैठेशिवविग्रहिशिरनाई ॥ हृदयसुमि
 रिनिजप्रभुरघुराई ॥ बहुरिमुनीशउमाबुलाई ॥ करिभृं
 गारसरिवलेआई ॥ देखतरूपसकलस्वरमोहै ॥ वरनै
 छविअसजगकविकोहै ॥ जगदंविकाजानिभवभा-
 मा ॥ स्मरनमनहिंमनकीन्हप्रणामा ॥ सुंदरतामर्याद
 भवानी ॥ जईनकोटिहुवदनवरवानी ॥ ॥ छंद ॥
 कोटिहुवदननहिवनैवरणतजगजननीशोभामहा ॥
 सकुचहिकहतश्रुतिशेषशारदमंदमतितुलसीकहा ॥
 ॥ २५ ॥ छविरवानिमातुभवानिगवनीमध्यमंडपशिव
 जहां ॥ अचल्लोकिशकाहिनसकुचिपतिपदकमलमन
 मधुकरनहां ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मुनिअनुशासनग
 णपतिहिं ॥ पूजेउशंभुभवानि ॥ कोउस्तनिसंशयकरै



जनि॥ स्मर अनादिजियजानि॥ १२३॥ ॥ चौपाई॥
 बधिअतिगाई॥ महासुनिनसो सब क
 रवाई॥ गहिगिरिशकुशकन्यापाणी॥ शिवहि समपी
 ॥ पाणिग्रहणजब कीन्हमहेशा॥ हियह
 रैतबसकलसुरेशा॥ वेदमंत्रसुनिवरउच्चरहीं॥ जय
 जयजयशंकरस्मरकरहीं॥ बाजहिं बाजनबिबिधबि
 धाना॥ समनवृष्टिनभभइविधिनाना॥ हरगिरिजा-
 करभयउविवाह॥ सकलभुवनभरिरहाउछाह॥ दा
 सीदासतुरगरथनागा॥ धेनुवसनमणिवस्त्रविभागा
 ॥ अन्नकनकभाजनभरियाना॥ दाइजदीन्हनैजाइ
 बरवाना॥ ॥ छंद॥ ॥ दाइजदियोबहुभातिपुनि-
 करजोरिहिमभूधरकह्यो॥ कादेउंपूरणकामशंकरच
 रणपंकजगहिरह्यो॥ शिवकृपासागरश्वशुरकरसंतो
 हैंकियो॥ पुनिगहेउपदपाथोजमयनाये
 मपरिपूरणहियो॥ २४॥ ॥ दोहा॥ ॥ नाथउमामम
 ॥ गृहकिंकरीकरेहु॥ क्षमहुसकलअपराध
 अब॥ होइप्रसन्नवरदेहु॥ १२४॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 बहुविधिशंभुसासुसमुझाई॥ गवनीभवनचरणशि
 रनाई॥ जननीउमाबोलितबलीन्ही॥ लेउछंगसंदर
 खदीन्ही॥ करहुसदाशंकरपदपूजा॥ नारिधर्मपति
 देवनदूजा॥ वचनकहतिभरिलोचनबारी॥ बहुरिला
 इउरलीन्हकुमारी॥ कतबिधिसिरजिनारिजगमाहीं
 ॥ पराधीनसपनेहुस्मरवनाहीं॥ भईअतिप्रेमविकल-
 महनारी॥ धीरजकीन्हकुसमयविचारी॥ पुनिपुनि-
 ॥ परमप्रेमकछुजाइनबर-

एषा ॥ सबनारिनमिलि भेटि भवानी ॥ जाइ जननि उर पु-
 निल पदानी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जननि हिं बहुरिमिलि चली
 उचित आशीस सब काहु दई ॥ फिरि फिरि विलोकति मा-
 तु तन तव सरवीलै शिव पहंगई ॥ २६ ॥ याचक सकल स-
 नोषि शंकर उमा सहित भवनहिं चले ॥ सब अमर हर
 पे स्रमन वर पे निशानन भवाजहिं भले ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ चले संगहि मचेतन व ॥ पहुंचावन अति हेतु ॥ विविध
 भांति परीतोष करी ॥ विदा कीन्ह वृष केतु ॥ १२५ ॥ ॥ चौ-
 पाई ॥ ॥ तुरत भवन आये गिरि राई ॥ सकल शैल सरलि
 ए खुलाई ॥ आदर दान विनय बहु माना ॥ सब कर विदा
 कीन्ह हिमवाना ॥ जव ही शंभु कैलासहि आये ॥ सरस-
 वनिज निज लोक सिधाए ॥ जगत मातुं पितु शंभु भवा-
 नी ॥ नेहि भृंगारन कहौ चपानी ॥ करहिं विविध विधि
 भोग विलासा ॥ गणन समेत वसहिं कैलासा ॥ हर गिरि
 जाविहार नितन येऊ ॥ इहि विधि विपुल काल चलि ग-
 येऊ ॥ तव जन्म पद वदन कुमारा ॥ नारक अरु सरस मरजि
 हिं मारा ॥ आगमनि गमय सिद्ध पुराणा ॥ पद सुरव जन्म
 कर्म जग जाना ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जग जान पद सुरव जन्म क-
 र्म प्रताप पुरुषारथ महा ॥ नेहि हेतु मै वृष केतु स्रत कर-
 चरित संक्षेपहिं कहा ॥ ३१ ॥ यह उमा शंभु विवाह जे नर-
 नारिकहिं जे गावहिं ॥ कल्याण काज विवाह मंगल स-
 नैदा सरन पावहीं ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चरित गिं धुगि-
 रि जाद मण ॥ वेदन पावहिं पार ॥ वरणी तुलसी दास कि-
 मि ॥ अति मति मंद गनार ॥ ३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शंभु
 नारिकहिं नार सरस कहा ॥ भरद्वाज मुनि अनिराग पा

वा ॥ बहुलालसाकथापरबादी ॥ नयननीररोमावलिठा
 दी ॥ प्रेमविवशसुरवचनबानी ॥ दशादेरिवहरषेसु
 निजानी ॥ अहो धन्यतबजन्ममुनीशा ॥ तुमहिप्राणस
 मप्रियगौरीशा ॥ शिवपदकमलजिनहिरतिनाहीं ॥ राम
 हितेसपनेहुनसहाहीं ॥ बिनछलबिभ्वनाथपदनेहू ॥
 रामभक्तिकरलक्षणएहू ॥ शिवसमकोरघुपतिव्रतधा
 री ॥ बिनुअघतजीसतीअसनारी ॥ पणकरिरघुपति
 भक्तिददाई ॥ कोशिवसमरामहिंप्रियभाई ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ प्रथमकहामैशिवचरित ॥ बूजामरमतुह्यार ॥ शुचि
 सेवकतुमरामके ॥ रहितसमस्तबिकार ॥ १२७ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ मैजानातुह्यारगुणशीला ॥ कहोंसुनहुअब
 रघुपतिलीला ॥ सुनुमुनिआजुसमागमतोरै ॥ कहिन
 जायजससुरवमनमोरै ॥ रामचरितअतिअमितमुनी
 शा ॥ कहिनशकहिशतकोटिअहीशा ॥ तदपियथाशु
 तकहाबरवानी ॥ सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपानी ॥ शा
 रददारुनारिसमस्वामी ॥ रामसूत्रधरअंतरजामी ॥
 जेहिपरकृपाकरहिजनजानी ॥ कविउरअजिरनचा
 वहिंबानी ॥ प्रणवोंसोइकृपालुरघुनाथा ॥ वरणोंवि-
 शदतासुगुणगाथा ॥ परमरम्यगिरिवरकैलासू ॥ स
 दाजहांशिवउमानिवासू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सिद्धतपोध
 नयोगीजन ॥ सरकिन्नरमुनिद्वंद ॥ वसहितहांसरु
 तीसकल ॥ सेवहिंशिवसरवकंद ॥ १२८ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ हरिहरविमुखधर्मरतिनाहीं ॥ तेनरतहांस्वपनेहुन
 जाहीं ॥ तेहिगिरिपरबटबिटपविशाला ॥ नितनूतनसुं
 दरसमकाला ॥ त्रिविधसमीरसुशीतलछाया ॥ शिव-

विश्रामविटपश्रुतिगाथा॥ एकवारतेहीतरप्रभुगयेऊ॥
 तरुविलोकिउरअतिसरवभयेऊ॥ निजकरडासिनाग
 रिपुछाला॥ वैठेसहजहिंशंभुहृत्पाला॥ कुंदइंदुवरगौ
 रशरीरा॥ भुजप्रलंबपरिधनमुनिचोरा॥ तरुणअरुण
 अंबुजसमंचरणा॥ नखद्युतिभक्तहृदयतमहरणा॥ भू
 जगभूतिभूषणत्रिपुरारी॥ आननशरदचंद्रछविहारी॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ जटासुकुटसरसरितशिर॥ लोचननलि
 नविशाल॥ नीलकंठलावण्यनिधि॥ सोहबालविधुभा
 ल॥ १२२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वैठेसोहकामरिपुकैसैं॥ ध
 रेशरीरशांतरसजैसैं॥ पारवतीभलअवसरजानी॥
 गईशंभुपहंमातुभवानी॥ जानिप्रियाआदरअतिकी
 न्हा॥ वामभागआसनहरदीन्हा॥ वैठीशिवसमीपह
 रयाई॥ पूरवजन्यकथाचितआई॥ पतिहियहेतुअ
 धिकअनुमानी॥ विहंसिउमाचोलीप्रियवानी॥ कथा
 जोसकललोकहिनकारी॥ सोइपूछनचहशैलकुमा
 री॥ विन्वनाथसमनाथपुरारी॥ त्रिभुवनमाहिमाविदि
 ततुमारी॥ चरअरुअचरनागनरदेवा॥ सकलकरहि
 पदपंकजसेवा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुसमर्थसर्वेशशिव
 ॥ सकलकलागुणधाम॥ योगजानवैराग्यनिधि॥ प्र
 णतकल्पतरुनाम॥ १३०॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जौआंपरप्र
 सन्नसुखरासी॥ जानियसत्यसोद्विनिजदासी॥ तौप्र
 भुहरहुमोरअजाना॥ नारिरघुनाथकथाविधिनाना
 ॥ जानुभवनसरतनरनौडे॥ साहिकिदांनद्रजनिन
 दगनाडे॥ जाशिभूषणअमहदयादिनारी॥ हरहुना
 थननमनिअमभासी॥ प्रभुजैनुनिपरमान्धवादी॥

कहहिं राम कहं ब्रह्म अनादी ॥ शेष शारदा वेदपुराणा ॥
सकल करहिं रघुपति गुणगाना ॥

राती ॥ सा दरज पहु अनंग अराती ॥ राम सो अबध नृप
ति सुत सोई ॥ को अज गुण अलख गति कोई ॥ ॥

॥ जौ नृप तनय तो ब्रह्म किमि ॥ नारि बिरह मति भोरी ॥
रि वचरित माहि मा सुनत ॥ भ्रमति बुद्धि अति मोरि ॥ १३१

॥ चौ पाई ॥ ॥ जौ अनीह व्यापक विभु कोऊ ॥ कहहु बु
झाइन अथ मोहु सोऊ ॥ अज्ञ जानि रिस जनि उर धरहु ॥ जे

हि विधि मोह मिटै सोइ करहु ॥ मै बन देर वराम प्रभु ताई
॥ अति भय विकल न तुमहि सुनाई ॥ तदपि मलिन मन

बोधन आवा ॥ सो फल भली भांति मै पावा ॥ अजहु कुछ
संशय मन मोरै ॥ करहु कृपा बिन ऊकर जोरै ॥ प्रभु तब

मोहि बहू भांति प्रबोधा ॥ नाथ सो समुझि करहु जनि को
धा ॥ तब कर अस विमोह अवनाहीं ॥ राम कथा पर रु-

चि मन माहीं ॥ कहहु पुनीत राम गुण गाथा ॥ भुजगराज
भूषण सरनाथा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बंदोंष दधरि धरणि-

शिर ॥ विनय करौं कर जोरि ॥ बरण हुरधु बर विशदय
श ॥ श्रुति सिद्धांत निचौरि ॥ १३२ ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ यदपि

योषिता अन अधिकारी ॥ दासी मन क्रम बचन तुहारी ॥
गूढ़ौ न तनु साधु दुरावहिं ॥ आरत अधिकारी जहं पाव

हिं ॥ अति आरति पूछौ सर राया ॥ रघुपति कथा कहहु
करि दाया ॥ प्रथम सो कारण कहहु विचारी ॥ निर्गुण ब्र-

ह्म सगुण वपु धारी ॥ पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ॥ बा
ल चरित पुनि कहहु उदारा ॥ कहहु यथा जानकी विबा
हा ॥ राजत जा सो दूषण काहा ॥ बन वसि कीन्हें उचिरत-

अपारा॥ कहहुनाथजिमिरावणमारा॥ राजचैंठोंकीन्ही
 बहुलीला॥ सकलकहहुशंकरसरवशीला॥ ॥दोहा॥
 ॥बहुरिकहहुकरुणायनन॥ कीन्हजोअचरजराम॥ म
 जासहितरघुवंशमणि॥ किमिगवनेनिजधाम॥ १३३॥
 चौपाई॥ ॥पुनिप्रभुकहहुसोतत्वबरवानी॥ जेहिविज्ञा
 नमगनसुनिज्ञानी॥ भक्तिज्ञानविज्ञानविरागा॥ पुनिस
 ववरणदुसहितविभागा॥ ओरौरामरहस्यअनेका॥
 कहहुनाथअमिविमलविवेका॥ जोप्रभुमैपूछानहि-
 होई॥ सोउदयालुरारवहुजनिगोई॥ तुमविभुवनगुरु
 वंदवरवानी॥ आनजीवपामरकाजाना॥ प्रभउमाकी
 सहजसहाई॥ छलविहीसुनिशिवमनभाई॥ हरहि
 यरामचरितसवआये॥ मैमपुलकलोचनजलछाये॥
 श्रीरघुनाथरूपउरआपा॥ परमानंदअमितसरवपा
 वा॥ ॥दोहा॥ ॥मगनध्यानरसदंडयुग॥ पुनिमन-
 वाहिरकान्ह॥ रघुपतिचरितमहेशानन॥ हविंतवरणै
 नीन्ह॥ १३४॥ ॥चौपाई॥ ॥ऊठोंसत्यजाहिविनुजा
 नें॥ जिमिभुजंगविनुरघुपतिचानें॥ जेहिजानेंजगजा
 डहिराई॥ जागेंग्रथास्वप्नभ्रमजाई॥ वंदोंबालरूपसो
 डराम्॥ सबसिधिसकलभजयतजसुनाम्॥ मंगलभव
 नअमंगलहारी॥ द्रवोंसोदशरथअजिरविहारी॥ करि
 प्रणामरामहिधिपुरारी॥ हरिवसंधासमगिराउचारी॥
 धन्यधन्यागिरिराजकुमारी॥ नुमनमाननहिंकोउउप
 नारी॥ पृष्ठेउन्धुपतिव्यामनेगा॥ सकललोकजग
 पावनमंगा॥ ॥समरघुवीरचरणअनुरागी॥ कीन्हहुम
 नमगनदिललागी॥ ॥दोहा॥ ॥रामरूपातेपारवती॥

सपनेहुतबमनमाहिं॥ शोकमोहसंदेहभ्रम॥ ममविचार
 कछुनाहिं॥ १३५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ तदपिअशंकाकी
 उसोई॥ कहतसुनतसबकरहितहोई॥ जिन्हकरि
 कथासुनिनहिंकाना॥ श्रवणरंध्रअहिभवनसमाना
 ॥ नयननसंतदरशनहिंदेरवा॥ लोचनमोरपक्षकल
 रेषा॥ तेसिरकदुतुबीसमतूला॥ जैजनमतहरिगुरु
 पदमूला॥ जिन्हहरिभक्तिहृदयनहिआनी॥ जीवन
 सबसमानतेहिप्राणी॥ जोनहिकरैरामगुणगाना॥
 जोहसोदादुरजीहसमाना॥ कुलिशकठोरनिठुरसोइ
 छाती॥ सुनिहरिचरितनजोहरषाती॥ गिरिजासुनु
 रामकीलीला॥ स्मरहितदजुजविमोहनशीला॥ ॥ दो
 हा॥ ॥ रामकथास्मरधेनुसम॥ सेवतसबस्मरवदानि
 ॥ संतसमाजस्मरलोकसम॥ कौनसुनैअसजानि॥
 १३६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ रामकथासुंदरकरतारी॥ संशयबिहग
 डावनिहारी॥ रामकथाकलिविटपकुठारी॥ सादरसुनुगिरि
 राजकुमारी॥ रामनामगुणचरितसुहाए॥ जनमकरमअग-
 तश्रुतिगाए॥ जथाअनंतरामभगवाना॥ तथाकथाकीरनि
 गुणगाना॥ तदपिजथाश्रुतिजसमतिमोरी॥ कहिहोंदेखिप्री
 अतिनोरी॥ उमाप्रभतबसहजसुहाई॥ सुखदसंतसंमत
 सुहिभाई॥ एकवातनहिमोहिसोहानी॥ यदपिमोहवशकहे
 भवानी॥ तुमजोकहारामकोउआना॥ जैहिश्रुतिगा
 वधरहिंसुनिध्याना॥ ॥ दोहा॥ ॥ कहहिंसुनहिंअ
 सअधमनर॥ ग्रसैजेमोहपिशाच॥ पाषंडीहरिपद
 विमुख॥ जानहिंजुठनसांच॥ १३७॥ ॥ चौपाई॥
 अज्ञअकोविदअंधअभागी॥ कोइविषयसुकरम

नलागी॥लंपटकपटीकुटिलविशेषी॥सपनेहुसंतस
 भानहिदेषी॥कहहिनेबेदअसंमतवाणी॥जिनहिंन
 सूऊलाभनहिहानी॥मुकुरमलिनअरुनयनबिहीना
 ॥रामरूपदेरवाहिंकिमिदीना॥जिनकेअगुणनसगुण
 विवेका॥जल्पहिकल्पितबचनअनेका॥हरिमायाव
 शजगतभ्रमाही॥तिनहिंकहतकलुअघदितनाही॥
 वानुलभूतविवशमतवारे॥तेनहिंबौलहिंबच
 रे॥जिनकृतमोहामोहमदपाना॥तिनकरकहाकरिय
 नहिंकांता॥ ॥सोरठा॥ ॥असनिजहृदयविचारि
 ॥नजुसंशयभजुरामपद॥सुनुगिरिराजकुमारि॥अ
 मतभरविकरबचनमम॥१३८॥ ॥चौपाई॥ ॥सगु
 णहिंअगुणहिंनहिकलुभेदा॥गावहिंसुनिपुराणबु
 धवेदा॥अगुणअरूपअलखअजजोई॥भक्तप्रेमव
 शसगुणसोहोई॥जोगुणरहितसगुणसोकैसें॥जल
 हिंसउपलविलंगनजैसे॥जासुनामभ्रमतिमिरपतंगा
 ॥तिहिकिमिकहियविमांहप्रसंगा॥रामसच्चिदानंद
 दिनेशा॥नहितहंमोहनिशालवलेशा॥सहजप्रकाश
 रूपभगवाना॥नहितहंपुनिविज्ञानबिहाना॥हरषवि
 यादज्ञानअज्ञाना॥जीवधर्मअहमितिअभिमाना॥
 रामवत्प्रज्यापकजगजाना॥परमानंदपरेशपुराणा॥
 ॥दोहा॥ ॥पुरुषप्रसिद्धप्रकाशनिधि॥प्रगटपराव
 रमाय॥रघुकुलमणिममस्वामिसोई॥कहिशिवनाथ
 उमाय॥१३९॥ ॥चौपाई॥ ॥निजभ्रमनहिंसमुज
 हिंअज्ञाना॥प्रभुपरमोदधरहिंजडपानी॥जयागग
 नयनपटलनिहारी॥रूपेउभानुकहहिंकविचारी॥

चित्तबजोलोचनअंगुलिलार्यै॥ प्रगटयुगलशशितेहि
 केभार्यै॥ उमारामविषयकअसमोहा॥ नभतमधुमधू
 रिजिमिसोहा॥ विषयकरणकरजीवसमेता॥ सकल
 ऐकतेँ एकसचेता॥ सबकरपरमप्रकाशकजाई॥ राम
 अनादिअवधपतिसोई॥ जगतप्रकाशप्रकाशकरा
 मू॥ मायाधीशज्ञानगुणधामू॥ जासुसत्यतानैँजडमा
 या॥ भाससत्यइवमोहसहाया॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रजत
 सीपमहभासजिमि॥ यथाभानुकरबारि॥ यदपिमृ
 षातिहुँकालसोइ॥ भ्रमनशकैँकोउटारि॥ १४०॥ ॥ चौ
 पाई॥ ॥ येहिबिधिजगहरिआश्रितरहई॥ यदपिअ
 सत्यदेतदुरवअहई॥ ज्यौँस्वपनेँशिरकाटैँकोई॥ बि
 नुजागैँदुरवदूरिनहोई॥ जासुकृपाअसभ्रममिटिजा
 ई॥ गिरिजासोइकृपालुरघुराई॥ आदिअंतकोउजा
 स्तनपावा॥ मतिअनुमाननिगमअसगावा॥ बिनुप
 दचलैँसुनैँबिनुकाना॥ करबिनुकर्मकरैँबिधिनाना॥
 आननरहितसकलरसभोगी॥ बिनुवाणीवक्ताबड
 योगी॥ तनुबिनुपरसनयनबिनुदेषा॥ ग्रहैँघ्राणबि
 नुबासअशेषा॥ अससबभांतिअलौकिककरणी
 ॥ महिमाजासुजाइनहिबरणी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जे
 हिइमिगावहिंबेदबुध॥ जाहिधरहिंसुनिध्यान॥
 सोइदशरथसुतभक्तहित॥ कोशलपतिभगवान॥
 १४१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ काशीमरतजंतुअवलौकी॥
 जासुनामबलकरोँबिशोकी॥ सोइप्रभुमोरचराचर
 स्वामी॥ रघुबरसबउरअंतरजामी॥ विवशहुँजासु
 नामनरकहहीं॥ जन्मअनेकरचितअघदहहीं॥ साद

रसमिरणजेनरकरहीं॥ भववारिधिगोपदइवतरहीं॥
 रामसोपरमात्माभवानी॥ तहंभ्रमअतिअविहितब-
 द्धानी॥ अससंशयआनतउरमाहीं॥ ज्ञानविरागसक-
 लगुणजाहीं॥ सनिशिवकेभ्रमभंजनबचना॥ मिटिग-
 इसवकुतर्ककीरचना॥ भइरघुपतिपदप्रीतिप्रतीती॥
 दारुणअसंभावनाचीती॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुनिपुनिप्र-
 भुपदकमलगहि॥ जोरिपंकुरुहपाणि॥ बोलीगिरिजा-
 वचनवर॥ मनहुंमेमरससानि॥ १४२॥ ॥ चौपाई॥
 शंकरसमस्तनिगिरातुह्मारी॥ मिदामोहशरदानप-
 भारी॥ तुमकृपालुसबसंशयहरेऊ॥ रामस्वरूपजानि
 मोहिपरेऊ॥ नाथकृपाअवगयेउविषादा॥ सरवीभ-
 येउप्रभुचरणशसादा॥ अवमोहिआपनिकिंकरि-
 जानी॥ यदपिसहजजडनारिअयानी॥ प्रथमजोमैं
 पूछासोहि कहहु॥ जौमोपरप्रसन्नप्रभुअहहु॥ रा-
 मवद्वानिन्मयअविनाशी॥ सर्वरहितसबउरपुरवा-
 सी॥ नाथधरेंउनरतनुकेहिहेतू॥ मोहिसमुझाइकह
 हुवृपकेतू॥ उमावचनस्तनिपरमविनीता॥ रामक-
 थापरप्रीतिपुनीता॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हियहरयेकामा-
 गिनव॥ शंकरसहजसज्जान॥ बहुविधिउमहिंप्रशं-
 सिपुनि॥ बोलेकृपानिधान॥ १४३॥ ॥ सोरठा॥
 कनुकभक्तभाभवानि॥ रामचरितमानसविमल॥
 कदाभुखुंडिचयानि॥ सनाविहगनायकगरुड॥ १४४॥
 सोसंचादउदार॥ जिहिविधिभाअगेंकहव॥ सून-
 हंगमअवतार॥ चरितपरमकंदरअनय॥ १४५॥ ह-
 रिगुणनामअपार॥ कृत्यारूपअगणितअमित॥ में

निजमतिअनुसार ॥ कहोंउमासादरसनहुं ॥ १४६ ॥
चौपाई ॥ ॥ स्नुगिरिजाहरिचरितसहाये ॥ बिपुल
बिशदनिगमागमगाये ॥ हरिअवतारहेतुजेहिहोई
॥ यदमित्थंकहिजाइनसोई ॥ रामअतवर्थबुद्धिमन-
बानी ॥ मतिहमारअससुनहुभवानी ॥ तदपिसंतमु
निबेदपुराणा ॥ जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना ॥
तसमैसमुखिस्सनावउतोही ॥ समुजियरैजसकार
णमोही ॥ जबजबहोइधर्मकीहानी ॥ बाढहिंअस्फ
रअधमअभिमानी ॥ करहिअनीतिजाइ
॥ सीदहिविप्रधेनुस्तरधरणी ॥ तबतबप्रभुधरिवि-
विधशरीरा ॥ हरहिंकृपानिधिसज्जनपीरा ॥ ॥ दोहा ॥
अस्तरमारिथापहिस्तरन्हि ॥ राखहिंनिजश्रुतिसेतु ॥
जगविस्तारहिविशदयश ॥ रामजन्मकरहेतु ॥ १४७
॥ चौपाई ॥ ॥ सोइयशगाइभक्तभवतरहीं ॥ कृपासिं
धुजनहिततनुधरहीं ॥ रामजन्मकेहेतुअनेका ॥ परम
अयेकतेयेका ॥ जन्मएकदुइकहौबषानी ॥ साव
धानस्नुस्ममतिभवानी ॥ द्वारपालहरिकेप्रियदोऊ ॥
जयअरुबिजयजानसबकोऊ ॥ विप्रशापतेंदोनोंभा
इ ॥ नामसअस्तरदेहतिनपाई ॥ कनककशिपुअरु
हाटकलोचन ॥ जगतबिदितस्तरपतिमदमोचन ॥ वि
जयीसमरवीरविरव्याता ॥ धरिवराहबपुएकनिपा
ता ॥ होइनरहरिपुनिदूसरमारा ॥ जनप्रह्लादसय
शविस्तारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भएनिशाचरजाइते ॥ म
हावीरबलवान ॥ कुंभकर्णरावणसभट ॥ स्तरविज
यीजगजान ॥ १४८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मुक्तनभयेउ

हते भगवाना ॥ तीनिजन्महिजबचनप्रमाणा ॥ एकवार
 तिनकेहितलागी ॥ धरेउशरीरभक्तअनुरागी ॥ कश्यप
 अदितितहांपितुमाता ॥ दशरथकौशल्याविरव्याता ॥
 एककल्पएहिबिधिअवतारा ॥ चरितपवित्रकियेसं
 सारा ॥ एककल्पसरदेरिवदुरवारे ॥ समरजलंधरस
 नसबहारे ॥ शंभुकीन्हसंग्रामअपारा ॥ दनुजमहाब
 लमरैनमा रा ॥ परमसतीअसुराधिपनारी ॥ तेहिब
 लताहिनजितहिंपुरारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ छलकरिदारे
 उतासब्रत ॥ प्रभुसरकारजकीन्ह ॥ जबतेहिजानेउं प
 रमतव ॥ शापकोपकरिदीन्ह ॥ १४८ ॥ ॥ चौपाई ॥
 तासुशापहरिकीन्हप्रणामा ॥ कौतुकनिधिकृपालुभ-
 गवाना ॥ तहांजलंधररावणभयऊ ॥ रणहतिरामपरम
 पददयऊ ॥ एकजन्मकाकारणएहा ॥ जेहिलगिरामंध
 रानरदेहा ॥ प्रतिअवतारकथाप्रभुकेरी ॥ सुनिमुनिव
 रणिकविनघनेरी ॥ नारदशापदीन्हएकवारा ॥ कल्प
 एकतेहिलगिअवतारा ॥ गिरिजाचकितभईसुनिया
 णी ॥ नारदविष्णुभक्तसुनिजानी ॥ कारणकवनशाप
 मुनिदीन्हा ॥ काअपराधरमापतिकीन्हा ॥ यहप्रसंग
 मोहि कहहुपुरारी ॥ सुनिमनमोहसोअचरजभारी ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ बोलेविहंसिमहेशतव ॥ ज्ञानीमूढनको
 द ॥ जेहिजसरघुपतिकरहिंजव ॥ सोनसतेहिक्षणाहो
 द ॥ १४९ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ कहौरामगुणगाथ ॥ भरद्वाज
 सादरसुनहु ॥ भवभंजनरघुनाथ ॥ भजुतुलसीतजि
 नानमद ॥ १५० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हिमगिरिगुहाएक
 आनिपावनी ॥ बहसर्मापसरसरितरक्तहावनी ॥ आअ

मपरमपुनीतसहावा ॥ देरिवदेवक्रषिमनअतिभावा
 ॥ निररिवशैलगिरीविपिनविभागा ॥ भयेउरमापतिप
 दअनुरागा ॥ सुमिरतहरिहिंशापगतिबाधी ॥ सहज
 विमलमनलागिसमाधी ॥ मुनिगतिदेरिवसुरेशडरा
 ना ॥ कामहिबोलिकीन्हसनमाना ॥ सहितसहायजा
 हुममहेतू ॥ चलेउहरषिहिहियजलचरकेतू ॥ सुना
 सीरमममहंअतिआसा ॥ चहतदेवक्रषिममपुरबासा
 ॥ जेकामीलोलुपजगमाहीं ॥ कुटिलकाकडबसबहि
 राहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सूरवहाडलैभागुशठ ॥ श्वान
 ॥ छीनिलेइजनिजानजड ॥ निमिसु
 रपतिहिंनलाज ॥ १५२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेहिआश्रम
 ॥ निजमायावसंतनिर्मयेऊ ॥ कुसु
 धवितपबहुरंगा ॥ कूजहिंकोकिलगुंजहिंभूं
 ॥ चलीसहावनित्रिविधवयारी ॥ कामकृशानुबदा
 वनहारी ॥ रंभादिकसरनारिनवीना ॥ सकलअसम
 शरकलाप्रबीणा ॥ करहिंगानबहुभातितरंगा ॥ बहु
 वधिक्रीडहिंपानिपतंगा ॥ देरिवसहायमदनहरषा-
 ॥ कीन्हेसिपुनिप्रपंचविधिनाना ॥ कामकलाकछु
 व्यापी ॥ निजभयडरेउमनोभवपापी ॥ सिम
 पशकैकोउतासू ॥ बडरखबाररमापतिजासू ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सहितसहायसभीतअति ॥ ॥
 ॥ गहेसिजाइमुनिबरचरण ॥ कहिसुठिआ
 रतवयन ॥ १५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भयेउननारदमन
 कछुरोषा ॥ कहिप्रियवचनकामपरितोषा ॥
 ॥ गयेउमदनतबसहितसहाई ॥ सु

सुशीलता आपनिकरणी ॥ सुरपतिसभा जाइ सब बरणी
 ॥ सुनि सब के मन अचरज आवा ॥ मुनिहि प्रशंसि हरि
 हि शिर नावा ॥ तब नारद गवने शिव पाहीं ॥ जीत काम अ
 हमनि मन माहीं ॥ मारचरित शंकर हिं सुनावा ॥ अति प्रि
 य जानि महेश शिरवावा ॥ बार बार बिन बऊं सुनि तोही ॥
 जिमिय हकथा सुनाय उमोही ॥ तिमिजनि हरि हिं सुं
 ना बहु कह हूं ॥ चले उप्रसंग दुरा एहुत बहूं ॥ ॥ दोहा ॥
 शंभु दीन्ह उपदेश हित ॥ नहि नारद हि सुहान ॥ भरहा
 ज को लुक सुनहु ॥ हरि ईच्छा बलवान ॥ १५४ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ राम कीन्ह चाहें सो होई ॥ करै अन्यथा अस न
 हि कोई ॥ शंभु चचन सुनि मन नहि भाये ॥ तब बिरंचिके
 लोक सिधाये ॥ एकवार करत लबरवीणा ॥ हरिय श-
 गावन परम प्रवीणा ॥ क्षीरसिंधु गवने मुनि नाथा ॥ जहां
 वसे श्रीनिवास श्रीसाथा ॥ हरि मि लै उठि रमानिकेता
 ॥ वेढे आसन ऋषि हि समेता ॥ बोले बिहसि चराचर
 राया ॥ बहु ते दिन कीन्ही मुनि दाया ॥ कामचरित नारद
 सब भायें ॥ यद्यपि प्रथम बरजि शिव रायें ॥ अति प्रचंड
 रघुपति की माया ॥ जे दिन मोह अस को जग जाया ॥
 दोहा ॥ ॥ रुख वंदन करि चचन मृदु ॥ बोले श्रीभगवा
 न ॥ तुम्हरे सुमिर गतें मिटहिं ॥ मोह मार मद मान ॥ १५५
 ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनि मुनि मोह होइ मन ताके ॥ ज्ञान विरा
 गद दय नहि जाके ॥ अद्य चये घन रत मति धारा ॥ तुमहिं
 किकरें मनो भय पाया ॥ नारद कहें उमहित अभिमाना ॥
 प्रपानु न्द्राग्नि मूल भगवाना ॥ करुणानिधि मन दीरवनि
 नाग ॥ उन अक्षरें उगवत रुभाये ॥ वेगिसोमें जारि होइ पा

रो ॥ पणहमारसेवकहितकारी ॥ मुनिकरहितममकौतु
 कहोई ॥ अवशिउपायकरवमैसोई ॥ तबनारदहरिपद
 शिरनाई ॥ चलेहृदयअहमितिअधिकाई ॥ श्रीपतिनि
 जमायातवप्रेरी ॥ सुनहुकठिनकरणीतेहिकेरी ॥ ॥
 दोहा ॥ ॥ विरचेउमगुमहंनगरतेहिं ॥ शतयोजनवि-
 स्तार ॥ श्रीनिवासपुरतेंअधिक ॥ रचनाविविधप्रकार
 ॥ १५६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बसहिंनगरसुंदरनरनारी ॥
 जनुबहुमनसिजरतितनुधारी ॥ तेहिपुरबसैशीलनि
 धिराजा ॥ अगणितहयजगसेनसमाजा ॥ शतसरेश
 समविभवविलासा ॥ रूपतेजबलशीलनिवासा ॥ वि
 श्वमोहिनीतासुकुमारी ॥ श्रीविमोहजेंहिंरूपनिहा-
 री ॥ सोहरिमायासबगुणरवानी ॥ शोभातासुकिजा
 इबरवानी ॥ करैस्वयंवरसौनृपबाला ॥ आयेतहंअग
 णितमहिपाला ॥ मुनिकौतुकीनगरतैहिगयेऊ ॥ पुरबा
 सिनसनबूझतभयेऊ ॥ सुनिसबचरितभूपगृहआये
 ॥ करिपूजानृपमुनिबैठाये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आनिदिखा
 ईनारदहिं ॥ भूपतिराजकुमारि ॥ कहहुनाथगुणदोष
 सब ॥ एहिकेहृदयविचारि ॥ १५७ ॥ ॥ चौपाई ॥
 देखिरूपमुनिबिरतिविसारी ॥ बड़ीबारलगिरहेनिहा
 री ॥ लक्षणतासुबिलोकिभुलाने ॥ हृदयहर्षनहिप्र-
 गटबरवाने ॥ जोएहिबरैअमरसोहोई, समरभूमितेहि
 जीतनकोई ॥ सेबहिसकलचराचरताही ॥ बरेशीलनि
 धिकन्याजाही ॥ लक्षणसबविचारिउरराषे ॥ कहुक
 बनाइभूपसनभाषे ॥ सुतासुलक्षणकहिनृपपाही
 ॥ नारदचलेशोचमनमाही ॥ करीजाइसोइयतनविचा

री॥ जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी॥ जपन पकछु न होइ य
 हि काला॥ हे विधि मिलै कवन विधि बाला॥ ॥ दोहा॥
 यहि अवर सचाहिय परम॥ शोभा रूप विशाल॥ जो बि
 लाकिरी जैकु अरि॥ तब मेलै जय माल॥ १५८॥ ॥ चौ-
 पाई॥ ॥ हरि सन मागों संदर ताई॥ होइ हि जात गहरु
 अति भाई॥ मोरे हित हरि समनहि कोऊ॥ यहि अवर स
 सहाय सो होऊ॥ बहु विध बिनय कीन्ह तेहि काला॥ प्र
 गदेउ प्रभु कौतु कीलु पाला॥ प्रभु विलोकि मुनि नयन जु
 डाने॥ होइ हिं काज हिं ये हर पाने॥ अति आरत कही क
 थारु नाई॥ करहु कृपा प्रभु होउ सहाई॥ आपन रूप
 देहु प्रभु मोही॥ आन भांति नहि पावहुं ओही॥ जेहि वि
 धि नाथ होइ हित मोरा॥ करहु सो वेगि दास मैं तोरा॥ नि
 ज माया बल देरि व विशाला॥ हिय हसि बोलैं दीन दया
 ला॥ ॥ दोहा॥ ॥ जेहि विधि होइ हि परम हित॥ नार
 द सुनहु तुम्हार॥ सोइ हम करवन आन कछु॥ वचन-
 मृषा हमार॥ १५९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ कुपय मागुरु ज
 आकुल रोगी॥ वैद न देई सुनहु मुनि योगी॥ इहि विधि
 नित तुम्हार में टयेंऊ॥ कहि अस अंतर हित प्रभु भयेऊ
 ॥ माया विवश भये मुनि मूढा॥ सुमुनि नहि हरि गिरानि
 गृहा॥ गवनें तुरुन न हो अर्प राई॥ जहां स्वयं वर भूमि
 वनाई॥ निज निज आसन वेंदरा जा॥ बहु वना ब करि सा
 दिन समाजा॥ मुनि मन हर्ष रूप अति मोरें॥ मोहि नहि अ
 नहि घर नहि भोरें॥ मुनि हिन कारण कृपा निधाना॥ दी
 न कुरुन जाइ यरना ना॥ सो नरि बल रिन काहुन पावा
 ॥ नारद जानि गयहि शिर नावा॥ ॥ दोहा॥ ॥ रहै न हो-

दुईरुद्रगण॥ तेजानहिंसबभेउ॥ बिप्रबेषदेषतफिरहिं
 ॥ परमकौतुकीतेउ॥ १६०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जेहिसमाज
 बैठेमुनिजाई॥ हृदयरूपअहमितिअधिकारि॥ तहंबैठे
 महेशगणदोऊ॥ बिप्रबेषगतिलखेनकोऊ॥ करहिंकूट
 नारदहिंस्ननाई॥ नीकदीन्हहरिसंदरताई॥ रीफिहिरा
 जकुअरिछबिदेवी॥ इनहिंबरिहिहरिजानिबिशेखी॥
 मुनिहिंमोहमनहाथपराये॥ हंसहिंशंभुगणअतिसचु
 पाये॥ यदापिस्ननहिंमुनिअटपटिबानी॥ समुजिनपरै
 बुद्धिभ्रमसानी॥ काहुनलखासोचरितविशेषी॥ सो
 स्वरूपनृपकन्यादेवी॥ मर्कटबदनभयंकरदेही॥ देख
 तहृदयक्रोधभातेही॥ ॥ दोहा॥ ॥ सतीसंगलैकुंअ
 रितब॥ चलिजनुराजमराल॥ देखतिफिरैमहीपसब॥
 करसरोजजयमाल॥ १६१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जेहिदि
 शिवैठेनारदफूली॥ सोदिशितेहिनबिलोकेउभूली॥
 पनिपुनिसुनिउकशहिंअकुलाही॥ देखिदशाहरगण
 मुसकाही॥ धरिनृपतनुतहंगयउकृपाला॥ कुंअरि
 हर्षमेलीजयमाला॥ दुलहिनिनलैगयेउलक्ष्मीनिवासा
 ॥ नृपसमाजसबभयेउनिराशा॥ मुनिअतिबिकलमो
 हमतिनाठी॥ मणिगिरिगईछटीजनुगांठी॥ तबहरग
 णबोलेमुसकाई॥ निजमुखमुकुटबिलोकहुजाई॥ अ
 सकहिदोउभागेभयभारी॥ बदनदीखसुनिबारिनिहा
 री॥ बेषबिलोकिक्रोधअतिबाढा॥ तिनहिंशापदीन्हा
 अतिगाढा॥ ॥ दोहा॥ ॥ होहुनिशाचरजाइतुम॥
 कपटीपापीदोउ॥ हंसहुहमाहिंसोलेहुफल॥ बहुरिहं
 सेउमुनिफोउ॥ १६२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ पुनिजलदीख

रूपनिजपावा॥ तदपि हृदयसंतोषनआवा॥ फरकतआ
 घरकोपमनमाहीं॥ सपदिचलेकमलापतिपाहीं॥ दैहों
 शापकिमरिहोंजाई॥ जगतमोरउपहासकराई॥ बीच
 हिंपंथमिलेदनुजारी॥ संगरमासोइराजकुमारी॥ बोले
 मधुरवचनसरसाई॥ मुनिकिहिचलेविकलकीनाई
 ॥ स्तनतवचनउपजाआति क्रोधा॥ मायावशनरहामनबो
 धा॥ परसंपदाशकहुनहिदेपो॥ तुस्नरेईषीकपटविशेषी
 ॥ मथतसिंधुरुद्रहिबोशयेहु॥ सरनपेरिविषपानकरा
 येहु॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असुरकराविषशंकरहि॥ आपुर-
 मा मणिचारु॥ स्वारथसाधककुटिलतुम॥ सदाकपट
 अवहाक॥ ॥ ६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परमस्वतंत्रनशिरप
 रकांडे॥ भावैमनहिकरहुनुमसोई॥ भलेहिमंदमंदहि
 मलकरहु॥ विस्मयहर्षनेहियकछुधरहु॥ डहकिडह-
 किपरिचेंहुंसबकाहु॥ अतिअशंकमनसदाउछाहु॥ क
 मेक्षभाक्षभनुमाहिनचाधा॥ अवलगितुमाहिनकाउ
 लाधा॥ भलेभवनअववायनदीन्हा॥ पावैगेफलआ
 पनकीन्हा॥ वंचेहुमोहिजवनधारिदेहा॥ सोइतनुधर
 हजापममएहा॥ काप्याह्मंततुमकीन्हहमांरी॥ करि
 होदर्वजगमहाईनुस्नारी॥ ममअपकारकीन्हतुमभारी
 ॥ नारिविरहुतुमहोवदुखारी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शापशी
 नधारिदर्याहिय॥ प्रभुवहुबिनतीकीन्ह॥ निजमाया
 कीप्रवृत्ता॥ हपिंछुपानिधिर्लान्द॥ ॥ ६४ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ जगद्वरिमायाद्वरिनिचारी॥ नहिनहंरमानराज
 कुमारी॥ नवमुनिअतिसभीतहरिचरणा॥ गहंपाहि-
 मगनारतिहरणा॥ मृपाहोहुमगशापछुपान्हा॥ ममद

कहदीनदयाला॥ सैदुबचनकहेउं बहुतेरे॥ कहमुनि
 पापमिदहिकिमिमेरे॥ जपहुजाइशंकरशतनामा॥ होइ
 हित्दयतुरुतविश्रामा॥ कोउनहिशिवसमानप्रियमारे
 ॥ असप्रतीतित्यागेउजनिभोरे॥ जेहिपरकृपानकरहि
 पुरारी॥ सोनपावमुनिभक्तिहमारी॥ असउरधकिम-
 हिबिचरहुजाई॥ अवनतुमहिमायानियराई॥ ॥
 दोहा॥ ॥ बहुविधिसुनिहिप्रबोधिप्रभु॥ भएतबअ-
 तरधान॥ सत्यलोकनारदचलै॥ करतरामगुणगान॥
 ॥१६५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ हरगणमुनिहिंजातपथदेवी॥
 विगतमोहमनहर्षविशेषी॥ अतिसभीतनारदपहं-
 आये॥ गहिपदआरतबचनसुनाये॥ हरगणहमनवि-
 प्रमुनिराया॥ बडअपराधकीन्हफलप्राया॥ शापअ-
 नुग्रहकरहुकृपाला॥ बोलेनारददीनदयाला॥ निशि-
 चरजाइहोहुतुमदोऊ॥ वैभवविपुलबैजबलहोऊ॥ मु-
 जबलविश्वजीतबतुमजहिआ॥ धरिहहिविष्णुमनु-
 जतनुतहिआ॥ समरमरणहरिहाथतुह्मारा॥ होइह-
 हुसुक्तनपुनिसंसारा॥ चलैयुगलमुनिपदशिरनाई॥ भ-
 एनिशाचरकालहिपाई॥ ॥ दोहा॥ ॥ एककल्पए-
 हिहतुप्रभु॥ लीन्हमनुजअवतार॥ कररंजनसज्जन-
 करवद॥ हरिभंजनभूभार॥ १६६॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 एहिबिधिजन्मकर्महरिकेरे॥ सुंदरकरवदविचित्र-
 यनेरे॥ कल्पकल्पप्रतिप्रभुअवतरहीं॥ चारुचरित-
 नानाविधकरहीं॥ तबतबकथासुनीशनगाई॥ परम-
 पुनीतविचित्रसुहाई॥ विविधप्रसंगअनूपबरवाने॥
 करहिंनसुनिआश्चर्यसयाने॥ हरिअनंतहरिकथा

अनंता ॥ कहहि सनहि बहुविधि श्रुति संता ॥ रामचंद्र
 केचरित सह्याये ॥ कल्पकोटिल गिजाइन गाये ॥ यह प्र
 संग मै कहा भवानी ॥ हरि मायामोहे मुनि ज्ञानी ॥ प्रभु
 कोतु की प्रणत हित कारी ॥ सेवत सकल भसकल दुरवहा
 री ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सरनर मुनि कोउ नाहिं ॥ जेहि न
 मोह माया प्रबल ॥ अस विचारि मन माहि ॥ भजिय म
 हा माया पतिहि ॥ १६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अपर हेतु स
 नु शैल कुमारी ॥ कहौ विचित्र कथा विस्तारी ॥ जेहि का
 रण अज अगुण अनूपा ॥ ब्रह्म भये कोशल पुर भूपा
 ॥ जो प्रभु विपिन फिरत तुम देषा ॥ बंधु समेत धरै मुनि
 वेपा ॥ जासु चरित अवलोकी भवानी ॥ सती शरीर र
 हि उवौ रानी ॥ अजहुन छाया मित तुहारी ॥ तासु च
 रित सनु भ्रम रुज हारी ॥ लीला कीन्ह जो तेहि अवता
 रा ॥ सो सब कहि हो मति अनुसारा ॥ भर हाज सुनि शं
 कर चाणी ॥ सकुचि सप्रेम उमा सुसुका नी ॥ लगे बहुरि
 चरणें दृष केतु ॥ सो अवतार भये उजै हि हेतु ॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ सोमै तुम सन कह वसव ॥ शुनु सुनो समन लाइ ॥
 राम कथा कलि मल हरणि ॥ मंगल करणि सह्याइ ॥ १६८
 ॥ चौपाई ॥ ॥ न्वायें भुवमनु अरु शतरूपा ॥ जिन ते
 मैन रस प्रिय अनूपा ॥ दंपति धर्म आचारणी का ॥ अ
 जहु गाव श्रुति जिन की लोका ॥ नृप उजान पाद सुतता
 सु ॥ धन दारि प्रभु भये सत जास ॥ लघु सुतना म प्रिय
 वत नार्हा ॥ वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥ देव दूता पुनि ता
 सन जाग ॥ सो मुनि प्रिय कदं म की नारी ॥ आदि देव म
 भू दोन दखान्ता ॥ नदर भरे जेहि कीपल रूपान्ता ॥ सो

स्वशास्त्रजिन प्रगट करवाना ॥ तत्त्वविचारमिष्टुण भगवा
ना ॥ तेहि मधुराज कीन्ह बहु काला ॥ प्रभु आसक्त
ला ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ होइन विषय विराग ॥
भवन वसत भाचौ थपन ॥ हृदय बहुत दुरवलाग ॥ ज-
मगये उ हरि भक्ति बिनु ॥ १६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ स-
रब सराज कत हित बदीन्हा ॥ नारि समेत गमेन
हा ॥ तीरथ वरनै मिष विख्याता ॥ अति सुनील साधक
सिद्धिदाता ॥ सब हित हंसुनि सिद्ध समाजा ॥ तहं हिय
हर्षि चले मधुराजा ॥ पंथ जात सो हहि मति धीरा ॥ ज्ञान भ-
क्ति जनु धरै शरीरा ॥ पहंचे जाइ धेनु मति तीरा ॥ हर्ष न हा-
ने निर्मल नीरा ॥ आस मिलन सिद्ध सुनि जानी ॥ धर्म धु-
र धर नृप कृषि जानी ॥ जहं जहं तीरथ रहैं कहाए ॥ मुनि
न सकल सादर करवाए ॥ कृश शरीर मुनि पट परिधाना ॥
संत समाज निति कनहिं पुराणा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्वादश
अक्षर मंत्र वर ॥ जपहिं सहित अमुराग ॥ वासुदेव पद
पंकरुह ॥ दंपति मन अतिलाग ॥ १७० ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ करहिं आहार शाक फल कंदा ॥ कमिरहिं ब्रह्म सच्चि-
दानंदा ॥ पुनि हरि हेतु करण तपलागे ॥ करि आहार-
मूल फल त्यागे ॥ उर अभिलाष निरंतर होई ॥ देखिय
नयन परम प्रभु सोई ॥ अंगुण अरवंड अनंत अनादी
॥ जेहि चित्तहिं परमारथ वादी ॥ नेति नेति जेहि वेद-
निरूपा ॥ विदा संद निरूपाधि अनूपा ॥ शंभु विरिंचि
विष्णु भगवाना ॥ उपजहिं जासु अंश तेनाना ॥ ऐसे प्र-
भु सेवक बश अह हीं ॥ भक्त हेतु लीला तनु गह हीं ॥
जो यह बचन सत्य अति भाषा ॥ तो हमार पूजहिं अभि

लाया ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एहि विधि वीते वर्षषट् ॥ सहस्रव
 रि आहार ॥ संवतसस सहस्रपुनि ॥ रहै समीर आधार
 ॥ १७१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वरष सहस्र दशत्यागे उ सोऊ
 ॥ ठाटे रहै एक पैद दोऊ ॥ विधि हरि हरत पदे रि व अपारा
 ॥ मनु समीप आये बहु बारा ॥ मागहु बर बहु भांति लु-
 भाये ॥ परम धीर नहि चलिहि चलाये ॥ अस्थि मात्र हो
 यरही शरीरा ॥ तदपि मनागपि नहि मन पीरा ॥ प्रभु सर्व
 ज्ञ दास निज जानी ॥ गति अनन्य ताप सनृप राणी ॥ मांगु
 मांगु नृप भयन भवानी ॥ परम गंभीर कृपा मृत सानी ॥ मृ-
 त कजि आवति गिरा सह आई ॥ श्रवण रं ध्र होइ उर जब
 आई ॥ हृष्ट पुष्ट तनु भये सह आये ॥ मानहु आवहि भव
 न ते आये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रवण सुधा सम वचन सुनि
 ॥ पुलक प्रफुलित गात ॥ बोले मुनि करि दंड वत ॥ प्रेम
 न हृदय समात ॥ १७२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनु सेवक सु-
 रत रुसर धेनू ॥ विधि हरि हर बंदित पद रेणू ॥ सेवत
 सकल भक्त सकल रुसर वदायक ॥ प्रणत पाल सच सचर ना-
 यक ॥ जो अनाथ हित हम परनेहु ॥ तो प्रसन्न होइ य-
 ह वर देहु ॥ जो स्वरूप बस शिव मन माहीं ॥ जिहिं कार-
 ण मुनियत्न कराहीं ॥ जो भुंछुं डिमन मान सहंसा ॥ स-
 गुण अगुण जे दिन गम प्रशंसा ॥ देखिहि सो स्वरूप भ-
 दि लानन ॥ कृपा करहु प्रणतारति मोचन ॥ दंपती वच-
 न परम प्रिय लागे ॥ मृदुल बिनीत प्रेम रस पागे ॥ भक्त व-
 न लक्ष्मण पाणि धाना ॥ विश्ववास प्रगटे भगवाना ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ नील सरोरुह नील मणि ॥ नील नीर धरु उ-
 म ॥ ना जहि न शोभा निरखि ॥ कोटि कोटि जन काम ॥

॥१७३॥ ॥चौपाई॥ ॥शरदमयंकमदनछविसीवा॥
 चारुकपोलचिबुकदरग्रीवा॥ अधरअरुणरदसंदरना
 सा॥ विधुकरनिकरविनिंदकहासा॥ नवअंबुजअंबक
 छविनीकी॥ चितवनिललितभावतीजीकी॥ भृकुटि-
 मनोजचापछविहारी॥ तिलकललाटपटलद्युतिकारी
 ॥ कुंडलमकरमुकुटशिरफ्राजा॥ कुटिलकेशजनुम-
 धुपसमाजा॥ उरश्रीवत्सरुचिरबनमाला॥ पदिकहा
 रभूषणमणिजाला॥ केहरिकंधरचारुजनेऊ॥ बाहु
 विभूषणसंदरतेऊ॥ करिकरसरिससभगभुजदंडा॥
 कटिनिषंगकरशरकोदंडा॥ ॥दोहा॥ ॥तडितविनिं-
 दकपीतपट॥ उदरदेखवरतीनि॥ नाभिमनोहरलेति
 जनु॥ यमुनभ्रमरछविछीनि॥ १७४॥ ॥चौपाई॥
 पदराजीववरणिनहिजाही॥ मुनिमनमधुपबसहिंजे
 हिमांहीं॥ वामभागशोभतिअनुकूला॥ आदिशक्ति
 छविनिधिजगमूला॥ जासुअंशउपजहिं गुणखानी
 ॥ अगणितलक्ष्मीउमाब्रह्माणि॥ भृकुटिविलासजा
 सजगहोई॥ रामवामदिशि सीतासोई॥ छविसमुद्र
 हरिरूपविलोकी॥ एकटकरहैनयनपटरोकी॥ चितब
 हिसादररूपअनूपा॥ तृप्तिनमानहिंमनुशतरूपा॥ ह
 र्षविवशतनुदशाभुलानी॥ परेदंडवगहिपदपाणी॥-
 सिरपरसेप्रभुनिजकरकंजा॥ तुरतउठाएकरूणापुं
 जा॥ ॥दोहा॥ ॥बोलेकूपानिधानपुनि॥ अतिप्रसन्न
 मोहिजानि॥ मांगहुवरजोइभावमन॥ महादानिअनु
 मानि॥ १७५॥ ॥चौपाई॥ ॥सुनिप्रभुबचनजोरियु
 गपाणी॥ धरिधीरजबोलेमृदुबाणी॥ नाथदेखिपदक

मलतुह्यारे ॥ अब पूरे सब काम हमारे ॥ एकलाल साव
 डि मन माहीं ॥ सग म अगम कहि जाति सुनाहीं ॥ तुमहिं
 देत अति सग म गोसांई ॥ अगमला गुमोहिनि ज कृपणा
 ई ॥ यथादरिद्री विबुध तरु पाई ॥ बहु संपति मांगत सकु
 चाई ॥ तासु प्रभाव जान नहि सोई ॥ तथा हृदय मम संश
 य होई ॥ सो तुम जानहु अंतर जामी ॥ पुर बहु मोर मनो
 रथ स्वामी ॥ सकुच विहाइ मागु नृप मोही ॥ मोरे नहि अ
 देय कछु नोही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दानि शिरोमणि कृपानि
 धि ॥ नाथ कहौ सत भाव ॥ चहौ तुमहि समान सुत ॥ प्र
 भु सनक वन दुराव ॥ १७६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखि प्रीति
 सनि वचन अमोले ॥ एवमस्त करुणानिधि बोले ॥ आ
 पसरि सरवोजौ कह जाई ॥ नृपत वतन य होमै आई ॥ श
 तरूप हि विलोकि कर जोरे ॥ देवि मांगु वर जो रुचितोरे
 ॥ जो वर नाथ चतुर नृग मांगा ॥ सो इह कृपालु मोहि अति
 प्रिय लागा ॥ प्रभु परंतु कठि होति दिठाई ॥ यदपि भक्त
 हित तुमहि सुहाई ॥ तुम अह्मादि जनक जग स्वामी ॥ अ
 ह्म सकल उर अंतर जामी ॥ अस स मुकत मन संशय होई
 ॥ कहा जौ प्रभु प्रमाण पुनि सोई ॥ जनिज भक्त नाथ तव अ
 हई ॥ सो सरवपावहिं सो गतिल हई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सो
 इकरव सोइ गति भक्ति सोइ ॥ सोइ निज चरण सनेहु ॥ सो
 उचि वेंक सोइ रहनि प्रभु ॥ हमहिं कृपा करि देहु ॥ १७७ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ सनि मृदु मृदु रुचिर वर रचना ॥ कृपा सिंधु
 बोले मृदु वचना ॥ जो कछु रुनि तुमरे मन माहीं ॥ मे सोई न
 सब संशय नार्हां ॥ मानु विवेंक अलौकिक नोरे ॥ कवहु न
 पिदि अत्र नृ अह मोरे ॥ वंदि चरण मनु कहें उव होरे ॥ अ

बर एक बिन ती प्रभु मोरी ॥ सुत विषय कत बप दरति होऊ ॥
 ॥ मोहि बड मूढ कहै किन कोऊ ॥ मणि बिनु फणि जिमि-
 जल बिनु मीना ॥ मम जीवन तिमितु महि अधीना ॥ अस
 बर मांगि चरण गहिर हैऊ ॥ एव मस्त करुणानिधिक
 हैऊ ॥ अब तु मम अनुशासन मानी ॥ बसहु जाई स्त-
 र पति रजधानी ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ तहं करि भोग विला-
 स ॥ तात गये कछु काल पुनि ॥ होइहु अवध भुआल ॥
 तब मै होवतु ह्यारै स्त ॥ १७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इच्छा
 मय नर वेष संवारे ॥ होइहौं प्रगटनिके तातु ह्यारे ॥ अंश
 न सहित देह धरिताता ॥ करिहौं चरित भक्त करवदाता ॥
 ॥ जे सुनिसा दरनर बड भागी ॥ भवतरह हिंममताम-
 द त्यागी ॥ आदिशक्ति जिहिं जग उपजाया ॥ सो अब न
 रहि मोर यह माया ॥ पुरव मै अभिलाषतु ह्यारा ॥ सत्य
 सत्य पण सत्य ह्यारा ॥ पुनि पुनि अस कहि कृपानिधा-
 ना ॥ अंतर धान भए भगवाना ॥ दंपती उर धरि भक्ति कृ-
 पाला ॥ तेहि आश्रमनि बसे कछु काला ॥ समय पाइत
 नुत जिअन यासा ॥ जाइ कीन्ह अमरावति वासा ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ यह इतिहास पुनीत अति ॥ उमहिं कहै उ-
 वष केतु ॥ भरद्वाज सुनु अपर पुनि ॥ राम जन्म करहे
 तु ॥ १७९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनि सुनि कथा पुनीत पु-
 राणी ॥ जोगिरि जा प्रति शंभु बरवानी ॥ विश्वविदित-
 एक के कय देखू ॥ सत्य केतु तहं बसे नरेशू ॥ धर्म धुरंध-
 र नीतिनिधाना ॥ तेज प्रतापशील बलवाना ॥ तेहि के-
 भये युगल सुत वीरा ॥ सब गुण धाम महारणधीरा ॥
 राजधानी जेठे सुत आही ॥ नाम प्रताप भानु अस ताही ॥

॥ अथ परस्मै हिं अरि मर्दननामा ॥ भुजबल अशूल अच-
 ल संग्रामा ॥ भाइहि भाइ परस्पर प्रीती ॥ सकल दोष छल
 वर्जित रीती ॥ जेठे सुतहिं राज नृप दीन्हा ॥ हरिहित आशु
 गवन वन कीन्हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नवप्रताप रवि अये उन्-
 प ॥ फिरी दोहा द्वै देश ॥ प्रजापाल अति वेद विधि ॥ कत
 हुन रह अघलेश ॥ १८० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नृप हिन का-
 रक सचिव कृजाना ॥ नाम धर्म रुचि शक्र समाना ॥ स-
 चिव सयान बंधु बल वीरा ॥ आपु प्रताप पुंजर राधीरा ॥
 ॥ सैन संग चतुरंग अपारा ॥ अमित सुभट सब समर जु-
 जारा ॥ सैन विलोकी राऊ हरषाना ॥ अरु बाजे गह गह
 निसाना ॥ विजय हेतु कटक ही बनाई ॥ सुदिन साधि
 नृप चले उब जाई ॥ जह जह परी अने कल राई ॥ जीते स-
 कल भूपवरि आई ॥ ससही पभुजबल बश कीन्हे ॥ लै
 छे दंड छाडि नृप दीन्हे ॥ सकल अविनिमंडल लेहि का-
 ला ॥ एक प्रताप भानु महिपाला ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्ववश
 यि श्वकारि बाहु बल ॥ निज पुर कीन्ह प्रवेश ॥ अर्थ धर्म-
 कामादि करव ॥ संवाहि समय नरेश ॥ १८१ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ भूप प्रताप भानु बल पाई ॥ काम येनु भइ भूमि सह आई ॥
 राव दुख लज्जित मजा करवारी ॥ धर्म शील सुंदर नर ना-
 री ॥ सचिव धर्म रुचि हरि पद प्रीती ॥ नृप हिन हेतु शिखा
 चतनीती ॥ गुरु कर संतपितर महि देवा ॥ करें सदानृप
 सब की सेवा ॥ भूप धर्म जे वेद वरवाने ॥ सकल करें साद-
 र करद माने ॥ दिन प्रति देई विविध विधि दाना ॥ सुने
 गा क्यवर वेद पुराणा ॥ जाना नारी कृपत दागा ॥ सुम-
 न नारी का सुंदर यागा ॥ निप्रभवन कर भवन सहार्ये ॥

सबतीरधनविचित्रबनाये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जहलंगिक
है सुराणशुति ॥ एक एक सब याग ॥ बार सहस्र सहस्र
नृप ॥ किए सहित अनुराग ॥ १८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ त
दयन कछ फल अनुसंधाना ॥ भूपविवेकी परम सुजा
ना ॥ करै जै धर्म कर्म मन बाणी ॥ वासुदेव अर्पित नृप-
ज्ञानी ॥ चटि वर वाजि वार एक राजा ॥ मृग या कर सब
साजि समाजा ॥ विंध्या चल गंभीर वन गयेऊ ॥ मृग पु
नीत बहु मारत भयेऊ ॥ फिरत बिपिन नृप दीख बराह ॥
जनु बन दूरे उशशिहिं ग्रसि राह ॥ बड विधुनहिं समा
तयुरव माहीं ॥ मनुहुं क्रोध वश उगिलत नाहीं ॥ कोल
कराल दशन छवि गई ॥ तनु विशाल पीवर अधिका
ई ॥ घुर घुरात हय आरव पाये ॥ चकित विलोकत का-
न उठाये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नीलमही धर शिखर सम ॥
देखि विशाल बराह ॥ चपरि चले उहय सुदुकि नृप ॥
हांकिन होइ निबाह ॥ १८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आवत
देखि अधिकं रव बाजी ॥ चले उवराह मरुत गनि भाजी
॥ तुरत कीन्ह नृप शर संधाना ॥ महि मिलि गये उबिलो
कित बाणा ॥ त कित कितीर मही शचला वा ॥ करि छल
सु अर शरीर बचावा ॥ पगट दुरत जाई मृग भागा ॥ रि
सव श भूप चले उ संग लागा ॥ गये उ दूरि घन गहन बरा
ह ॥ जह ताहीं गज बाजि निबाह ॥ अति अकेल बन वि
पुल कलेशू ॥ तदपिन मृग मगत जे उन रेभू ॥ लोक बि
लोकि भूप बड धीरा ॥ भागि पेदी गिरि गुहा गभीरा ॥
अगम देखि नृप अति पछिताई ॥ फिरे उ महा बन प
रे उ भलाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ खेद देखि ननु पित क्षुधित

॥ राजावाजिसमेत ॥ खोजतव्याकुलसरितसर, जलवि
 नुभयेउअचेत ॥ १८४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ फिरतविपिन
 आश्रमएकदेषा ॥ तहंवसनृपतिकपटमुनिवेषा ॥ जा
 सुदेषनृपलीन्हछुडाई ॥ समरसैनतजिगयेउपराई ॥
 समयप्रतापभानुकरजानी ॥ आपनअतिअसमय-
 अनुमानी ॥ रिषिउरमारिरंकजिमिराजा ॥ विपिनवसै
 तापसकेसाजा ॥ तासूसमीपगमननृपकीन्हा ॥ यहप्र
 तापरवितिहितवचीन्हा ॥ राउतृषितनहिंसोपहिचाना
 ॥ देखिस्ववेषमहामुनिजाना ॥ उतरितुरततैकीन्हप्रणा
 मा ॥ परमचतुरनकहेउनिजनामा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूप
 तिनृपितविलोकितिहि ॥ सरवरदीन्हदेखाइ ॥ मज्ज
 नपानसमेंतहय ॥ कीन्हनृपतिहरषाइ ॥ १८५ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ गइअमसकलसरवीनृपभयेउ ॥ निजआश्र
 मतापसलंगयेऊ ॥ आसनदीन्हअस्तरविजानी ॥ पु
 नितापसबोलेमृदुबाणी ॥ कोतुमकसवनफिरहुअ-
 केले ॥ सुंदरयुवाजीवपरहेले ॥ चक्रवर्तिकेलसौपतो
 रे ॥ देखतदयालागिअतिसोरे ॥ नामप्रतापभानुअव
 नो जा ॥ तासूसचिवमेसुनहुसुनीशा ॥ फिरतअदेरहिं
 परेउभुलाई ॥ बडेभाग्यदेखेउपदयाई ॥ हमकहेदुल
 भदरगनुहारा ॥ जानतहोंकछुअलहोंनिहारा ॥ कहमु
 नितानभयेउअंधियारा ॥ योजनसनरिनगरनुहारा
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निशायोरगंभारवन ॥ पंथनसुकरसजा
 न ॥ वसहुआजुअसजानितुम ॥ जागहुहोनचिहान ॥
 ॥ १८६ ॥ ॥ नुलदोजनभविनअया ॥ तैसांमिलेसहा
 ई ॥ आपनअदेतादिए ॥ नैतनहिनहोंलेजाइ ॥ १८७ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ भलेहिनाथ आये सुधरि शीशा ॥ बांधितु
 रगत रुबैदमहीशा ॥ नृप बहु भांति प्रशंसे उताही ॥ चर-
 ण बांदिनिज भाग्य सराही ॥ पुनि बोले उमृदु गिरास
 ॥ जानि पिता प्रभु करौ टिठाई ॥ मोहि सुनी शक्त सेवक
 जानी ॥ नाथ नामनिज कहहु बरवानी ॥ तेहि न जान नृप
 नृपहिं सो जाना ॥ भूप हृदय सो कपट सयाना ॥ वैरी पुनि
 क्षत्री पुनि राजा ॥ छल बल कीन्ह चहै निज काजा ॥ समु-
 राज सरवदुखित अराती ॥ आवा अनल इव फल-
 गै छाती ॥ सरल बचन नृप के सुनिकाना ॥ बयर संभारि
 हृदय हरषाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपट बोलि वाणी मृदु-
 ल ॥ बोले उयुक्ति समेत ॥ नाम हमार भिरवारि अब ॥ नि-
 धन रहित निकेत ॥ १८८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कह नृप जे-
 ज्ञान विधाना ॥ तुम सारि रवे गलित अभिमाना ॥ स-
 दार हहिं अपन पौदुराये ॥ सब विधिकुशल कुबेष ब-
 नाये ॥ तेहि तैं कहहिं संत श्रुति देरे ॥ परम अकिंचन प्रि-
 य हरि करे ॥ तुम सम अधन भिरवारि अगेहा ॥ होत बि-
 रंचि शिवहिं संदेहा ॥ यांसि सो सित बचरण नमामी ॥
 मो पर कृपा करिय अव स्वामी ॥ सहज प्रीति भूपतिकी
 देयी ॥ आप विषय विश्वास विशेषी ॥ सब प्रकार राजहिं
 अपनाई ॥ बोले उअधिक सनेह जनाई ॥ सुनु सति भाव
 कहो महिपाला ॥ इहां बसत बीते बहु काला ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ अब लगि मोहि न मिले उकोउ ॥ मै न जनाये उकाहुं ॥
 लोक मान्यता अनल सम ॥ करत पकान न दाहु ॥ १८९ ॥
 ॥ सोरठा ॥ ॥ तुलसी देरि वरु बेष ॥ भूपहिं गूढन चतुर
 नर ॥ सुंदर के किटि पेष ॥ बचन सुधा सम अशम अहि

यह प्रगटै अथवा द्विज शापा ॥ नाश तोर सनु भानु प्रतापा ॥
 ॥ आन उपायनि धनत वनाहीं ॥ जो हरि हर को पहिं मन-
 माहीं ॥ सत्य नाय पद गहि नृप भाषा ॥ द्विज गुरु को पकह
 हु को गया ॥ राखै गुरुजौ को पविधाता ॥ गुरु विरोध धन
 हि को उजगनाता ॥ जौ न चल वह भक है तु ह्मारे ॥ होइ ना
 शन हि शोच हमारे ॥ एहि डर डर पत मन मोरा ॥ प्रभु महि
 देव शाप अति घोरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ होहि विप्रवश क
 वन निधि ॥ कहहु कृपा करि सोइ ॥ तुम तजि दीन दया
 लनिज ॥ हित न देखौ कोइ ॥ १२५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ स
 नु नृप विविध यत्न जग माहीं ॥ कष्ट सांध्य पुनि होहि कि
 नाहीं ॥ अहं एक अति सुगम उपाई ॥ तहां परं तु एक कठि
 नाई ॥ मम अधीन युक्ति नृप सोई ॥ मोर जावत वन नगर
 न होई ॥ आजु लागि अरु जवनें भयेऊ ॥ काहू के गृह या
 मन गयेऊ ॥ जौ न जावत वहोइ अकाजू ॥ बना लाइ अ
 समंजस आजू ॥ रक्षा निमही पवोले मृदु दाणी ॥ नाथ नि
 गम अस नैति वरवानी ॥ बडे मन हल धुन पर कर हीं ॥
 गिरिनिज शिरनि सदा तृण धर हीं ॥ जलधि अगाध सौं
 निचहु फेन ॥ संतत धरणि धरत शिर रेणु ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ अमर नाहि गहन रेणु पद ॥ स्वामी हांहु रूपालु ॥ सोहि
 आगि दुग्ध सहिय प्रभु ॥ सज्जन दीन दयालु ॥ १२६ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ जानि नृपहिं आपन अधीना ॥ बोलाना
 पस कपट मनो गा ॥ सत्य कहौ भूपति सनु नो दो ॥ जगम
 हं नाहि दुलभ कलु मां हो ॥ अराज काये ये कारि हीं नो स
 ॥ मन तनु चन भैरव मोन ॥ योग युक्ति नय मंच प्रभा
 ॥ ॥ फलित वदिं जय कारि यदु राऊ ॥ जौ न रेणु के को रसो

ई॥ तुमपरसहुमोहिजाननकोई॥ अन्नसोजोइजोईभो
जनकरई॥ सोइसोइतबआयसअनुसरई॥ पुनितिन
केगृहजेबेजोई॥ तबबशहोइभूपसत्तुसोई॥ जाइउपा
यरचहुचपएहू॥ संवतभरिसंकल्पकरेहू॥ ॥ दोहा॥
नितनूतनहिजसहसशत॥ बरेहुसहितपरिवार॥ मैतु
हरेसंकल्पलगि॥ दिनहिंकरबजेवनार॥ १६७॥ ॥
चौपाई॥ ॥ एहिविधिभूपकष्टअतिथोरे॥ हीइहिंसक
लविप्रवशतोरे॥ करिहोहिंविप्रहोममखसेवा॥ तेहिप्र
संगसहजहिंवशदेवा॥ औरएकतोहिकहौलखाऊ॥
मैयहिवेषनआउबकाऊ॥ तुहरेउपुरोहितकहराया॥
हरिआनबमैकरिनिजमाया॥ तपबलतेहिकरिआपु
समाना॥ ररिवहोंइहाबरषप्रमाणा॥ मैधरितासुवेष
सुतुराजा॥ सबविधितोरसंबारवकाजा॥ गईनिशिव
हुतशयनअवकीजै॥ मोहिवोहिभूपभेंटदिनतीजै॥
मैतपबलतोहितुरगसमेता॥ पहुचैहोंसोवतहिंनिके
ता॥ ॥ दोहा॥ ॥ मैआउबसोइवेषधरि॥ पहिचाने
उतबमोहि॥ जबएकांतबुलाइसब॥ कथासुनाऊंतो-
हि॥ १६८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ शयनकीन्हनृपआयस
मानी॥ आसनजाईबैठछलझानी॥ अमितभूपनिद्रा
अतिआई॥ सोकिमिसोवशोचअधिकई॥ कालकेतु
तहंआवा॥ जैहिशूकरहोईनृपहिभुलावा॥
परममित्रतापसनृपकेरा॥ जानैसोअतिकपटघनेरा॥
तेहिंकेशनसुतअरुदशभाई॥ खलअतिअजयदेव
दुरवदाई॥ प्रथमहिभूपसमरसबमारे॥ विप्रसंतसुर
देखिदुरवारे॥ तेहिरवलपाछिलवयरसंभारा॥ तापस

नृपमिलिमंत्रविचारा ॥ जेहिरिपुक्षयसोइरचेन्हउपाई
 ॥ भावीवशनजानकछुराई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रिपुतेजस्वी
 अकेलअपि ॥ लघुकरिगणियनताहु ॥ अजहुदेतदुरवर
 विशशिहिं ॥ शिरअवशेषितराहु ॥ १६६ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ तापसनृपनिजसरवहिंनिहारी ॥ हरषिमिलेउठिभय
 उकरवारी ॥ मित्रहिंकहिसवकथासुनाई ॥ जातुधानबो
 लासरवपाई ॥ अवसाधेउरिपुसुनहुंनरेशा ॥ जौतुमकी
 न्हमोरउपदेशा ॥ परिहरिशोचगहहुतुमसोई ॥ विनुअप
 पधाहिंच्याधिविधिस्वोई ॥ कुलसमेतारिपुमूलबहाई ॥
 चौथेदिवसमिलावमैआई ॥ तापसनृपहिंचहूतपरितो
 यी ॥ चला महाकपटीअतिरोषी ॥ भानुप्रतापहिंचाजि-
 समेता ॥ पहुंचायेसिसोवनहिंनिकेता ॥ नृपहिंनारिप
 हंशयनकराई ॥ हयगृहयांधेसियाजिवनाई ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ राजाकेउपुरोहितहिं ॥ हरिलेगयउबहोरि ॥ ले
 शरवेसिगिरिस्वोहमहं ॥ मायाकारिमतिभोरि ॥ २०० ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ आपुविरचिउपुरोहितरूपा ॥ पराजाइते
 दिगेजेअनृपा ॥ जागेउनृपअनुभयउविहाना ॥ देखि
 भवनअतिअनरजमाना ॥ मुनिमहिमामनमहंअनु
 मानी ॥ उदेउराउजेहिजाननराणी ॥ काननगयेउपाजि-
 नदिनेदो ॥ पुरनरनारिनजानेउकेदो ॥ गयेयामयुगभू
 पतिआना ॥ परवरउत्सववाजुवधावा ॥ उपरोहितदि
 शेगजयगता ॥ नफिनयिनोकिस्कर्मारसोडकाजा ॥
 युगममनृपादेगयेदिननीना ॥ कपटीमुनिपदरदमनि
 नीना ॥ नमयजानिउपरोहितआना ॥ नृपदिमनीसच
 नदिंसमुजाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नृपदयेपादिनानिगुरु ॥

भ्रमबशरहानचेत॥ वरैतुरतशतसहसबर॥ विप्रकुटुं
 बसमेत॥ २०१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उपरोहितजेवनारव-
 नाई॥ छरसचारिविधिजसश्रुतिगाई॥ मायामयतेहि
 कीन्हरसोई॥ व्यंजनबहुगणिसकैनकोई॥ विविधसृग
 नकरआमिषरांधा॥ तैहिमहविप्रमांसखलसांधा॥
 भोजनकहसबविप्रबुलाये॥ पदपरवारिसादरबैठाये
 ॥ परसनलागुजबहिंमहिपाला॥ भईआकाशबाणीते
 हि काला॥ विप्रदंडउठिउठिगृहजाहू॥ हैबडिहानिअ
 नजनिरवाहू॥ भयेउरसोईभूस्तरमासू॥ सबहिजउठे
 मानिविश्वासू॥ भूपविकलमतिमोहभुलानी॥ भावीब
 शनआवमुखवाणी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बोलेविप्रसकोप
 तब॥ नहिकछुकीन्हविचार॥ जाइनिशाचरहोहुनृप॥
 मूढसहितपरिवार॥ २०२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ क्षत्रबंधुत
 बविप्रबुलाई॥ घालैलियेसहितसमुदाई॥ ईश्वरगरवा
 धर्महमारा॥ जैहसितैसमेतपरिवारा॥ संवतमध्यना-
 शतबहोऊ॥ जलदातानरहहिंकुलकोऊ॥ नृपसुनिशा
 पविकलअतिआसा॥ भईवहोरिवरगिराअकाशा॥
 विप्रहुशापविचारिनदीन्हा॥ नहिअपराधभूपकछुकी
 न्हा॥ चकितविप्रसबसुनिनभवानी॥ भूपगयेजहंभो
 जनखानी॥ तहंनअशननहिंविप्रसुआरा॥ फिरेउराउ
 मनशोचअपारा॥ सबप्रसंगमहिस्तरनसुनाई॥ आ
 सितपरेउअवनीअकुलाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूपतिभा
 वीमिटैनहि॥ यदपिनदूषणतोर॥ कियेअन्यथाहोइ
 नहि॥ विप्रशापअतिघोर॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ॥ जोकरि
 कपटछलेजगकाहू॥ देइहिईशअधमगतिताहू॥ विप्र

वचनस्तनिनृपचक्रुलाना॥ उठिपुनिविनयकीन्हविधि
 नाना॥ पुनिपुनियदगहकहेउभूआला॥ शापअनुग्रह
 कहहुकृपाला॥ जबतुमहोवनि साचरजाई॥ ब्रह्मवंश
 तामसतनुपाई॥ अजरअमरअतुलितप्रभुताई॥ ज
 गचिरव्यातवीरदोउभाई॥ होईहहिजबहिपराभवचा
 री॥ तबतुमसेउवदेवपुरारी॥ शिवप्रसादवरुपाईवहो
 री॥ होईहैसवजगप्रभुतातोरी॥ मिलहहितोहितबंस
 ननकुमारा॥ तबतुमसमुजवशापहमारा॥ ॥ दोहा॥
 तुमपुछवनिस्तारनिज॥ सादरस्तनहुनरेस॥ सबपरि
 वारउधारतव॥ होईहैमुनिउपदेस॥ २०३॥ इहांतक
 क्षेपकहै ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ असकहिसवमहिदेव
 सिधाए॥ समाचारपुरलोगनपाए॥ शौचहिंदूपणदे
 वहिंदेहीं॥ विरचितहंसकाककियजेहीं॥ उपरोहित
 भवनपहुचाई॥ अस्करतापसहिंस्ववरिजनाई॥ ते
 हिरवलजहंतहंपत्रपठाये॥ सजिसजिसैन्यभूपसव
 आये॥ घेरिन्हनगरनिसानवजाई॥ विविधभांतिनि
 तहोनिलगई॥ जूजेसकलसुभटकरिकरणी॥ बंधुस
 मेंनपरेउनुपधरणी॥ सत्यकेतुकुलकोउनवांचा॥ वि
 प्रशापकिमिहोइकसांचा॥ रिपुहिंजीतिनृपनगरबसा
 ई॥ निजनिजपुरगैजययशपाई॥ ॥ दोहा॥ ॥ भर
 द्राजसकुजाहितव॥ होतविधातावाम॥ धूरिमेरुसम
 जनकयम॥ ताहिब्यालसमदाम॥ २०४॥ ॥ चौपाई॥
 ॥ कान्यपादमुनिगकुनोदराजा॥ भयेजनिशाचरसहि
 तगनाजा॥ दशजिनताहिदशभुजदंडा॥ गवणनाम
 रीनतारिबंदा॥ भूपअनृपअरिमर्दननामा॥ भयेइसो



कुंभकर्णचलधामा ॥ सचिकजोरहाधर्मरुचिजासू ॥
 विमात्रबंधुलघुतासू ॥ नामबिभीषणजेहिंजगजाना ॥
 षण्मुभक्तविज्ञाननिधाना ॥ रहैजैसुतसेवकचूपकैरे ॥ भ
 येनिशाचरघौरघनेरे ॥ कामरूपरवलजनि सअनेका ॥
 कुदिलभयंकरविगतविवेका ॥ कृपारहितहिंसकसब
 पापी ॥ वरणिनजाइविश्वपरतापी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उप
 यदपिपुलस्त्यकुल ॥ पावनअनलअनूप ॥ तदपि
 होसरशापवश ॥ भयेसंकलअघरूप ॥ २०५ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ कीन्हविविधतपतीनिहभाई ॥ परमउग्रसो
 वरणिनजाई ॥ गयेउनिकटतपदेखिविधाता ॥ मांगहुं
 वरप्रसन्नमैताता ॥ करिविनतीपदगहिदशशीशा ॥ वो
 लेउबचनसुनहुजगदीशा ॥ हमकाहूकेमरहिंनमारे ॥
 बानरमनुजजातिदुइवारे ॥ एवमस्तुमबडतपकी
 न्हा ॥ मैबह्नाभिलिहिवरदीन्हा ॥ पुनिप्रभुकुंभकर्णपह

गयेऊ ॥ तेहि विलोकि मन विस्मय भयेऊ ॥ जौ यह सब लनि
 तिकर वञ्च हारा ॥ होइ हहिं सब उजारि संसारा ॥ शारद
 प्रेरिता सुमति फेरी ॥ मांगे सिनींद मास षट केरी ॥ ॥
 दोहा ॥ ॥ गयेउ विभीषण पास पुनि ॥ कहेउ पुन वरमां
 गु ॥ तेहि मागे उभग वंत पद ॥ कमल अमल अनु रागु ॥
 २०६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाए ॥ ह
 रित ते अपने गृह आए ॥ मय ननु जा मंदो दरिनामा ॥ प
 रम सुंदरी नारिल लामा ॥ सोइ मय दीन्ह रावणाहि आनी
 ॥ भई सो यातु धान पटरानी ॥ हर्षित भयेउ नारि भलि पा
 ई ॥ पुनि दोउ बंधु बिबाहे सिजाई ॥ गिरि त्रिकूट एक सिं
 धु मजारी ॥ विधि निर्मित दुर्गम अति भारी ॥ सो मय दान
 व बहुरि संवारा ॥ कनक रचित मणि भवन अपारा ॥ भोग
 वर्ताज स अहिकुल वासा ॥ अमरावती जस शक्र निवासा
 ॥ तन्ह ते अधिक रम्य अति वंका ॥ जग विख्यात नाम ते
 हिलंका ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रवाई सिंधु गभीर अति ॥ चारि
 उदिशि फिरि आव ॥ कनक कोट मणि रचित दृढ ॥ वर
 णिन जाइ वनाव ॥ २०७ ॥ ॥ हरि प्रेरित जिहिं कल्प जो
 इ ॥ जानु धान पति होइ ॥ सरप्रतापी अनुल बल ॥ दल स
 मेत वस सोइ ॥ २०८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रहै नहां निशि च
 र भट भारे ॥ ते सच सरन समर संहारे ॥ अचत हं रहहिं श
 क्र के मेरे ॥ रक्षक कोटि यक्ष पति के रे ॥ दशमुख कवहु
 र वरि अस पाई ॥ सैन साजि गट घेरें सिजाई ॥ देखि वि
 कट भट वारि कट नई ॥ यक्ष जी बलें गए पगई ॥ फरी स
 चन गरद शासन देखा ॥ गयेउ जो चस सब भयेउ विंश पा ॥
 सुंदर सह न अगम अनुमानी ॥ कीन्ह नहां रावण रजधा

॥ जेहिजस योगब्राह्मि गृह दीन्हा ॥ करवी सकल रजनी-

॥ एकचार कुबेर पदं धावा ॥ पुण्य कजान जीतिले

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौतुक हो कैलास पुनि ॥ लीन्हें सि

जाइ उठाइ ॥ मनहुं तोलि भट बाहु बल ॥ चला अधिक सु

॥ २०६ ॥ दैव यक्ष गंधर्व नर ॥ किन्नर नाग कुमारि ॥

त बरी निज बाहु बल ॥ बहु सुंदरि वरनारि ॥ २१० ॥

॥ ॥ यह एक दोहा क्षेपक ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुरव

त सुत सैन सुहाई ॥ जय प्रताप बल बुद्धि बडाई ॥

॥ ॥ जिधि प्रतिलाभ सो भअधि

काई ॥ अति बल कुंभ कर्ण अस भ्राता ॥ जेहि कहं नहि म

॥ ॥ करि मद पान सो वषट मासा ॥ जागत

होइ तिहुं पुर आसा ॥ जौ दिन प्रति आहार करु सोई ॥ विश्व

वेगि सब चौपट होई ॥ समर धीर नहि जाइ बरवाना ॥ ते

अधिक वीर बलवाना ॥ बारिद नाद जेठ सुत तास

॥ भट मह प्रथम लीक जग ज्ञास ॥ जेहि न होइ रण संसुरव

॥ सर पुर नितहि परावन होई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कु

ल शरद ॥ धूम्र केतु अत्रिकाय ॥ एक ए

कजग जीति शक ॥ ऐसे सुभट निकाय ॥ २११ ॥ ॥ चौपा

ई ॥ ॥ काम रूप जानहि सब माया ॥ सपनेहु जिन के ध

या ॥ दश सुरव बैठ सभा एक वारा ॥ देखि अभिन

र वारा ॥ सुत समूह जन परिजन नाती ॥ गनै

न शाचर जाती ॥ सैन बिलोकि सहज अभिमा

॥ बोला बचन क्रोध मद सानी ॥ सुनहु सकल रज-

॥ हमरे बैरी विबुध वरूथा ॥ ते संसुरवनहि

॥ देखि सब लरि पूजाहि पराई ॥ निन कर

मरण एक विधि होई ॥ कहौ बुझाई सुनहु अव सोई ॥ द्वि
 ज भोजन मरव होम शराधा ॥ सब कहं जाइ करहु तुम वा
 धा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्षुधा क्षीण बल हीन कर ॥ सहज हिं
 मिलि हहि आइ ॥ तब मारि हौं किछाडि हौं ॥ भली भांति
 अपनाइ ॥ २१२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मेघनाद कह पुनि हं
 करावा ॥ दीन्ह सीख बल वयर बदावा ॥ जै कर समधीर
 जबलवाना ॥ जिन केलरि वेकर अभिमाना ॥ तिनहिं जी
 निरण आनहु वांधी ॥ उठि सकत पितु अनुशासन साधी
 ॥ यह विधि सब नहिं आजादी नही ॥ आपुन चले उगदा
 करली नही ॥ चलन दशानन डोलनि अवनी ॥ गर्जत ग
 र्भ स्तवन कर रमणी ॥ रावण आवन सुने उस कोहा ॥ दे
 वनन के उमेरु गिरि खोहा ॥ दिक्पालन केलो कशिधाए
 ॥ सुनै सकल दशानन आये ॥ पुनि पुनि सिंहनाद करि
 भारी ॥ दंड दंड नान्ह मारि प्रचारी ॥ रणमदमत्त फिरई
 जगधावा ॥ प्रतिभटखोजत कतहुन पावा ॥ ॥ दोहा ॥
 सम हीपन वरवंडलगि ॥ सप्तपाताल आकाश ॥ कंपमा
 न धरिनिधिकत ॥ सारिण पतिन्हि मन आस ॥ २१३ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ नारद मिलै कहि सिं मुसुकाई ॥ देव कहं मु
 नि देहु दिखवाई ॥ सुनत अनय नारद हिंन भावा ॥ श्वेत ही
 पति हिं नुरत पदाना ॥ सागर उत्तरि पार गोगयें ऊ ॥ नारि
 चंद्रत हं देखन भयें ऊ ॥ तन्ह सन कहा पतिन पहजाह ॥
 कहि डकि आननि शाचरनाह ॥ तव गौंतिन्हि हिं जीति सं
 ग्रामा ॥ नैं नैं हों नुम को जज धामा ॥ सुनत चचन रुकजर
 दरि नानी ॥ प्राइ नरण गहि गगन उगानी ॥ गर्दहरि धार
 धारि गन जोन ॥ दारि शशि भूमि अति जाग ॥ ॥ दोहा ॥

॥ गयो पाताल अचेत द्यै ॥ मरै न विप्र प्रसादा ॥ सावधान उ-
 ठि गर्ज पुनि ॥ हिये न हरष विषाद ॥ २१४ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ जीते सिनागनगर शिशु नाना ॥ निज बलति नहिं दीन्ह भ-
 गवाना ॥ धाइ धरातिन्ह पुरलै आए ॥ नगर नारिनर देख-
 न धाए ॥ वी श बाहु दश कंधर जाई ॥ विधियह गटनिक
 हाकी आई ॥ राखिन्ह बांधिखि जावहिं भारी ॥ नाम न
 कहै सहै वरुगारी ॥ बावन दीख बहुन सकुचाना ॥ तब छू-
 डाइ दिय कृपानिधाना ॥ चला तुरत निशाचरनाहा ॥ लो-
 ज शंक कछु नहि मन माहा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अति निर्ले-
 ज दयारहित ॥ हिंसा पर अति प्रीति ॥ राम विमुरव द-
 श कंध शठ ॥ ता पर चाहत जीति ॥ २१५ ॥ भर हाज सुनु-
 जाहि जब ॥ होइ विधाता बाम ॥ कनक कांच द्यै जाइत
 ब ॥ लहै न कौडी दाम ॥ २१६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जहं क-
 हु फिरत देवहि ज पाई ॥ दंड लेइ बहु आस दिखवै ॥ इहि
 आचरण फिरै दिन राती ॥ महाघोर मयखल उत पाती ॥
 तब तुरत पंपा पुर आवा ॥ बालि नाम कपि पति जिहिं ठा-
 वा ॥ दीख जाइइ कसरवर शोभा ॥ जेहि मन महा मुनि
 न कर लोभा ॥ तहां कपी श करै निज ध्याना ॥ आदर म-
 हसं ध्यासन माना ॥ जाइ ठाइत ह भारज नीशा ॥ ठोक
 बाहु गर्जित भुज बीशा ॥ तब कपी शचित बासु सुकाई
 ॥ ध्यान की ओसर रिस बिस राई ॥ तब रावण बोला क-
 रि क्रोधा ॥ बक ध्यानी कपि शठ सुनु बोधा ॥ ॥ दोहा ॥
 मोहि जितें बिनु समर सुनु ॥ न करु ध्यान पति की श ॥
 अंजुलि देइ न पाइ है ॥ शपथ करौं अजई श ॥ २१७ ॥
 चौपाई ॥ ॥ तब वाली बोला बिहसाई ॥ बल तुल्यारण

सौंहेभाई ॥ रह अंजुलिमें देउस प्रीती ॥ ठाढ़ होउ जाइहु-
 मुहि जीती ॥ तब निशि चरपनि उठारि साइ ॥ दै कपियुद्ध
 छांडि कट राई ॥ तब हिंकी शपति मनहिं विचारा ॥ शिव ब-
 ल दीन्ह मरहि नहि मारा ॥ दशकंधर धर जाहु विचारी ॥
 अजय तुह्मारी सुनी विधिचारी ॥ बहुत भांती बोली स-
 मुझा वा ॥ कौनेहु भांति बोधनहि आवा ॥ तब सकोप प-
 हुचि धरा कपीशा ॥ धरिनिहि कांख चापी दशशीशा ॥
 अंजुलि दीन्ह रविहि मनवाणी ॥ अचई सप्तहु उदधि
 करपानी ॥ जण आदि शंकर मनवाणी ॥ तिहि क्षण सं-
 ध्या चंदि सिरानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आवा घरहिं कपीश
 तब ॥ कांख रहालं केश ॥ इहिविधि बीते मास षट ॥ पाए
 बहुत कलंश ॥ २१८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेइ कलेश चंशक
 र उपाई ॥ तहन चले कलु आतुर नाई ॥ बहुमस्वेद करव-
 रीम हुं जामा ॥ अतिकुवासनहां भई घामा ॥ कलमलाइ
 रिस दशनानिकाटा ॥ कच करजाम मनहु भ्रमचाटा ॥ ए-
 कादिव सरवि अंजुली साजा ॥ कांखते निसरि महा धु-
 नि गाजा ॥ तब पुनि धरि कपीस सो चांधा ॥ ले आयो अं-
 गद के राधा ॥ बीश भुजा दशशीश सुधारा ॥ चरण दोउ
 पुनि धरि उर पारा ॥ धरि समेटि जू मरी सब कीन्हा ॥ बा-
 धि शंख परशो भा दीन्हा ॥ अंगद खैल ललात शिर मारा ॥
 किलकिन्हा डकिल नें किलकाग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नारा-
 चिन्ह उरावणाहि ॥ तिहि क्षण दीन्ह लुडाइ ॥ जाहुतुर
 नलं केश गृह ॥ बहुरि धरिहिं कपराइ ॥ २१९ ॥ ॥ चौ-
 पाई ॥ ॥ पुनिरावण आवा तिहिं दोइ ॥ सहस्र बाहु ज-
 मारा स पनाइ ॥ तल ब्रजाना कर संग सब नारी ॥ विविध

भांतिशोभाअतिभारी॥ आएसमंडलजहरेवा ॥ सर
नरनागकरहिंसबसेवा॥ जाइदीखरावणसरवनाना॥ ह
रषसमेतहृदयसरवमाना॥ तहंलंकेशजाइशिवदेखा॥
मनहुंविरेचिरचेहुबहुरेखा॥ तुलसीकमलपत्रसबआना
॥ बिल्वपत्रअरुपुष्पप्रमाणा॥ जाइकैजलक्षोभीउदश
शीशा॥ आभिउमंत्रसुमिरिगवरीशा॥ ॥ दोहा ॥
जबप्रचंडजलक्षोभएउ॥ बूडैलागसमाज॥ सहसबाहु
अतिशंकमन॥ सकलनियनउरलाज॥ २२०॥ ॥ चौपा
ई॥ ॥ तबराजासनबोलहिंनारी॥ अतिसुंदरीराजकु
मारी॥ सुनहुनृपतिआवाकोउगाढा॥ अकस्मातमहा
नंदबाढा॥ सुनिराजहिंभाक्रोधअपारा॥ जसत्रिभैत्रि
पुरकहजारा॥ जाइदीखरावणतहठाढा॥ जासुमंत्रज
नुजलनिधिबाढा॥ मायाप्रबलमहाबलभारी॥ लंकेश्व
रकहंधरिसिप्रचारी॥ लैपुनिबांधिगयौतिनपासा॥ ग
दनिदेखिसबपरमहुलासा॥ करिअसनानपूजिगौरी
शा॥ हयशालाबांधिसिदशशीशा॥ लज्जितदुष्टमुष्ट
करिरहई॥ रिसउरमारिकष्टबहुसरई॥ ॥ दोहा ॥
सुगिरिजापावनपरम॥ अबयहकथारसाल॥ लैह
यशालाबांधिवहि॥ वीशभुजादशभाल॥ २२१॥ ॥ चौ
पाई॥ ॥ सकलआइदेखहिंनरनारि॥ मारहिलातहं
सहिदेगारी॥ नामनकहैरहैसकुचाना॥ बहुविधिपूछ
हिंनृपतिसुजाना॥ नृत्यकरहिंरंभादिकनारी॥ दशहु
माथदशदीपकवारी॥ कलुकदिवसइहिंभांतिगवांवा
॥ सोपुलस्त्यमुनिजाइछुडावा॥ चलातुरंतमहाअभि
मानी॥ नलकीशापआइनियरानी॥ मारगजातदीख-

विबुधारी॥ अतिअनूपसुंदरवरनारी॥ चंदनपुष्पपत्र
 करधारी॥ पूजैचलीजायत्रिपुरारी॥ देखिउर्वशीमनस
 कुचानी॥ तवरावणबोलामृदुबाणी॥ कोतुमकहांगमन
 तियकीन्हा॥ लज्जावशउन्हउतरनदीन्हा॥ ॥दोहा॥
 ॥निकटजाइदशकंधर॥ गहैअंकभरिलीन्ह॥ पुत्रवधू
 कुवेरकी॥ नहिबिचारिकलुकीन्ह॥ २२२॥ ॥चौपाई॥
 ॥बिन्हितियहंमनशंकाआई॥ घाटिकर्मकीनेपछि-
 नाई॥ मनपछिताइशोचउरभयेऊ॥ लंकेश्वरलंकाकह
 गयेऊ॥ चलीउर्वशीआईताहां॥ अलकापुरनलकूब
 रजहां॥ समाचारसवपतिहिंसनावा॥ सुनीकथामम
 पदपछितावा॥ दीन्हशापकरिओधअपारा॥ रावण
 वंशहोहुक्षयकारा॥ चलीशापलंकामहआई॥ दशकं
 धरबैठिउजिहिंठाई॥ आगेआइठादिभइशापा॥ तव-
 लंकेश्वरअतिभयकांपा॥ सडरसकोपचितवतिहिंओ
 रा॥ नलकूबरशापअतिमोरा॥ ॥दोहा॥ ॥शापहिअ
 गिकारकर॥ मनमहकीन्हविचार॥ कपीन्हदंडनहिदी
 न्हमें॥ रोपेउलंकभुवार॥ २२३॥ ॥चौपाई॥ ॥दूत-
 चारितिहिंपठवभयानी॥ भरहानसुनिकथाचरवानी॥
 आयेदूतकपिन्हकंगेहा॥ देखनसबहिंभयेसंदेहा॥
 पछाहिकपयनकांपगुधारा॥ कहहुकुशललंकेशभु
 गान॥ नानकुशलअबभइविपरीता॥ तुमसनमागिन्ह
 देनअभाता॥ देखदंडअसकहाहिरिसाई॥ कैगिरिके
 दराजाहुगनई॥ सानिअसवचनसंचादिदरुपावा॥ तु
 मितगर्वानिन्हपात्रमंगाना॥ सबमिलकरिअविचारइक-
 दाग॥ भौचनराधिरकपयनेआए॥ दूतनकहंमोंगा

मनजानी॥ होइसकोपबोलेमृदुबाणी॥ ॥दोहा॥ ॥
घटउघरतक्षयहोइहिं॥ सहितसकलपरिवार॥ लेयदू
ततहांआयेहि॥ जहांलंकभुवारा॥ २२४॥ चौपाई॥ जिहिंदर
वारनीतिनहिभाई॥ खलमंडलीजुरीतहांआई॥ आये
दीखदूतजबरावण॥ परमउल्हासभयोमनभावन॥ आ
गेआनिघटधराउतारी॥ देखिशंकलंकापतिभारी॥ बो
लिन्हबचनकहायहभाई॥ सकलकथातिन्हनृपहिंसु-
नाई॥ इहघटतैलंकापतिनाशा॥ सबदूतन्हअसबच-
नप्रकाशा॥ यहघटलैउत्तरदिशिजाहू॥ जननसमेतध-
रहुलैताहू॥ सुनिनृपबचनचलैतेतैसैं॥ जनकरायकेदे-
शहिपैसैं॥ करहिबिचारकरियअबसोई॥ उत्तमथल
घटरारिवयजोई॥ ॥दोहा॥ ॥अतिउत्तमउत्तरदिशा
॥ जनकरायकरदेश॥ दूतन्हकरीविचारिमन॥ कीन्हौ-
सथलप्रवेश॥ २२५॥ ॥चौपाई॥ ॥क्षेत्रसमांऊघट
धराउतारी॥ सोनपुनीतहेतुविबुधारी॥ जनकयज्ञत
हांकीन्हअरंभा॥ रचेकनककदलीकैखंभा॥ कियोमे
खलामणिमयपूरि॥ भूमिसुहावनपावनभूरि॥ शता
नंदअनुशासनपाई॥ चामीकरहलरचाबनाई॥ हाट
कलांगलमहीसुधारी॥ तहांपगटभईअधियकुमारी
॥ भुजानामकहिनिकटबुलाए॥ देवअदेवसर्वतहां
आए॥ कन्यादेखिअनूपभवानी॥ सुतामानिराजा
मृहआनी॥ नामजानकीपरमपुनीता॥ नारदआइक
हापुनिसीता॥ ॥छंद॥ ॥कहिसुतिसीतापरमपु-
नीता॥ आदिज्योतकीशक्तिसही॥ नृपनीतिविधानाप-
रमसुजानाआदिमध्यअवसानमहौ॥ ३३॥ भवउद्भव

करणी पालनहरणी नेति नेति यह वेद कहै ॥ तु वक्तव्य प्र
काशी भुजा विलासी तीनि लोक महं पूरि रहै ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ सकल कथानुपजन कसौ ॥ नारद कही बरवा
नि ॥ सकल सुलक्षणी लक्ष्मि गुणी ॥ जगदंबा जिय जा
नि ॥ २२६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जनक सवियन कहत कर
जोरे ॥ नाथ मनोरथ पूजे मोरे ॥ चरण परवारि सुथल बै
ठारी ॥ विनय कीन्ह अस्तति विस्तारी ॥ परम उल्हास
वचन श्रुत भाषा ॥ चरणोदक लै माथै राधा ॥ धन्य धन्य
कहि सुता प्रभाऊ ॥ पुनि असि प्रीति कीन्हि नहि काऊ ॥
जो तुम कृपा कीन्ह पगु धारे ॥ मिटै अमंगल दोष हमारे ॥
॥ अवमोहि भाभरो समुनि नाथा ॥ भयो धन्य मै गुणग
एगाथा ॥ साधु विदेहराज श्रीजा की ॥ उपमा और क
हौं नृपका की ॥ तुम उपमा उपमेय और सब ॥ जहां प्रग
ट भइ कुजा आइ अव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जोग भोग मै
गोइ मन ॥ कीयो न प्रगट प्रभाऊ ॥ भये विदेह विदेह सु
नि ॥ बिदा भये सुनिराउ ॥ २२७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहि
सुक आनंद पिराउ सिधाए ॥ बहुरि दून लंका पुर आए ॥
कहहि जाइ आए हम राधा ॥ सो शंकर गिरिजासन भा
धी ॥ याज्ञवल्क्य सनिक धार साला ॥ साधु साधु मुनि
परम कृपाला ॥ पुनि मुनि कहि उक्त्या उपदेशा ॥ जग
जोतिहुं सब लंकन रे शा ॥ चरि ठाउ हारि सिभद्रा सा ॥
न कल दंत को नैन ज दासा ॥ ॥ ॥ ॥ इहा तां डें चौपाई ५२
तथा १४ दोहा और छंद २ संपक है ॥ ॥ ॥ रवि शाशिप
वन वरुणा धन धारा ॥ अग्निकाल यम सब अधिकारी ॥
किन्नर सिद्ध मनुल कर नागा ॥ हटि मंद ही कं पंथ हिला

गा॥ ब्रह्मसृष्टिजहलगितनुधारी॥ दशमुखवशवर्त्तनि
रनारी॥ आर्यसकरहिंसकलभयभीता॥ नमइं आइं
नितचरणविनीता॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भुजबलविश्वव-
श्यकरि॥ राखेसिकोउनस्वतंत्र॥ मंडलीकमहिंरावण
हिं॥ राजकरैनिजमंत्र॥ २२८॥ देवहिंजक्षगंधर्वनर॥
किन्नरनागकुमारि॥ जीतिबरीनिजबाहुबल॥ बहुसं-
दरिवरनारि॥ २२९॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इंद्रजीतसन-
जोकछुकहेऊ॥ सोसबजनुपहिलैकरिरहेऊ॥ प्रथम
हिंजिनकहुंआर्यसदीन्हा॥ तिन्हकरचरितसुनहुजो
कीन्हा॥ देखतभीमरूपसबपापी॥ निशिचरनिकर-
देवपरितापी॥ करहिंउपद्रवअसरनिकाया॥ नाना
रूपधरहिंकरिमाया॥ जेहिविधिहोइधर्मनिर्मूला॥
सोसबकरहिंवेदप्रतिकूला॥ जेहिंजेहिंदेशधेनुहिंज
पावहीं॥ नगरग्रामपुरआगिलगावहीं॥ शूभआच-
रणकतहुंनहिहोई॥ देवविप्रगुरुमाननकोई॥ नहि
हरिभक्तियज्ञजपज्ञाना॥ सपनेहुसुनियनवेदपुरा-
णा॥ ॥ छंद ॥ ॥ जपयोगविरागातपमखभागाअव-
णसुनैदशशीश॥ आपुनउठिधावैरहैनपावैधरिस
बघालैखीस॥ ३५॥ असभ्रष्टआचाराभाससाराध-
र्मसुनियनहिकाना॥ तेहिबहुविधिनासैदेशनिकासै
जोकहवेदपुराणा॥ ३६॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ बरणिनजा
इजाइअनीति॥ घोरनिशाचरजोकरहिं॥ हिंसापरअ-
तिपीति॥ तिनकेपापहिंकवनमिति॥ २३०॥ ॥ चौपा-
ई॥ ॥ बाटेखलबहुचोरजुआरा॥ जेलंपटपरधनपर
दारा॥ मानहिंमातपितानहिदेवा॥ साधुनसोंकरबावहिं

सेवा॥ जिनके यह आचरण भवानी॥ ते जानहुनि शिखर
 शमप्राणी॥ अति शयदेखि धर्म की हानी॥ परम स भीत ध
 रा अकुलानी॥ गिरिसरि सिंधु भार नहि मोही॥ जश गोहि
 गरु अ एक पर द्रोही॥ सकल धर्म देखि हं विचारीता॥ कहि
 न शकै रावण भयभीता॥ धेनु रूप धरि हृदय विचारी॥ ग
 ईता हां जहं सर मुनिजारी॥ निज संताप सुनाये सिरोई॥
 काहु नैं कछु काज न होई॥ ॥ उंद॥ ॥ सर मुनि गंधर्व
 मिलि करि सर्वा गये विरंचि के लोका॥ संग गोतनु धारि
 भूमि विचारी परम विकल भय शोका॥ ३७॥ ब्रह्मा सब
 जाना मन अनुमाना मोरी कछु न बसाई॥ जा करि नैं दासी
 सो अविनाशी हमरे उतोर सहाई॥ ३८॥ ॥ सोरठा॥
 धरणि धरहु मन धीर॥ कह विरंचि हरि पद सुमिरि॥
 जानत जन की पीर॥ प्रभु भंजहिं दारुण विपति॥ २३१॥
 चौ पाई॥ ॥ बैठे सुर सब करहिं विचारा॥ कहां पाइय
 प्रभु कारिय पुकारा॥ पुरवै कुंठ जान कह कोई॥ कोउ कह
 पय निधि महं बस सोई॥ जाके हृदय भक्ति जस प्रीती॥
 प्रभु तेहि प्रगट सदा यहरी तो॥ तेहि समाज गिरिजामै र
 हेऊं॥ अच सरपाय च न न इक कहैऊं॥ हरि व्यापक सर्वत्र
 समाना॥ प्रेम ते प्रगट होहिं मै जाना॥ देश काल दिशि वि
 दिशि हुमाहा॥ कह हलोक यज्ञा जहां प्रभु नाहीं॥ अगज
 गमय सब रहित चिरागी॥ पवन ते प्रगट होइ जिमि आगी
 ॥ मोर य चन सब के मन माना॥ साधु साधु कारि ब्रह्म बरवा
 ना॥ ॥ दोहा॥ ॥ सुनि विरंचि मन दयं ननु॥ पुलकन यन
 यदनी॥ अस्मृति कर अज जोरि कर॥ सावधान मति थी
 दा॥ २३२॥ ॥ उंद॥ ॥ जय जय सरनाय कजन सरवदा

यकप्रणतपालभगवंत ॥ गोहिजहितकारीजयअस-
 रशीसिंधुसुताप्रियकंत ॥ ३६ ॥ पालनसरधरणीअ
 दभुतकरणीमर्मनजानैकोई ॥ जोसहजकृपालादीन
 दयालाकरीअनुग्रहसोई ॥ ४० ॥ जयजयअविनाशीस
 बघटवासीव्यापकपरमानंद ॥ अबिगतगोतीतंचरि
 तपुनीतमायारहितसुकुंद ॥ ४१ ॥ जहिलगिविरागी-
 अतिअनुरागीविगतमोहमुनिचंद ॥ निशिवासरध्या
 वहिगुणगणगावहिजयतिसच्चिदानंद ॥ ४२ ॥ जैहि-
 सृष्टिउपाईत्रिविधबनाईसंगसहायनदूजा ॥ सोकर
 हुंअघारीचिंतहमारीजानियभक्तिनपूजा ॥ ४३ ॥ ॥
 जोभवभयभंजनमुनिमनरंजनगंजनविपथिवरूथा
 ॥ मनबचक्रमबाणीछांडिसयानीशरणसकलसर
 यूथा ॥ ४४ ॥ शारदश्रुतिशेषाकृषयअशेषाजाकहं
 कोउनहिजान ॥ जिहिंदीनपियारेबेदपुकारेद्रवीसो
 श्रीभगवान ॥ ४५ ॥ भगबारिधिमंदरसबविधिसुंद
 रगुणमंदिरसरवपुंज ॥ मुनिसिद्धसकलसुरपरम
 भयातुरनमननाथपदकंज ॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जा

निभयातुरभूमिस्फुर॥वचनसमेतसनेह॥गगनगिरा
 गंभीरभइ॥हरणशोकसंदेह॥२३३॥ ॥चौपाई॥ ॥
 जिनिडरपहुमुनिसिद्धस्फुरेशा॥तुमहिलागिधरिहौंन
 रवेशा॥अंशनसहितमनुजअवतारा॥लहहौंदिनकर
 वंशउदारा॥कश्यपअदितिमहानपकीन्हा॥तिनकहं-
 मेंपूरववरदीन्हा॥तेदशरथकौशल्यारूपा॥कोशल
 पुरीप्रगटनरभूपा॥तिनकेगृहअवतरिहौंजाई॥रघु
 कुलतिलकसोचारिउभाई॥नारदवचनसत्यसबकरि
 हों॥परमशक्तिसमेतअवतरिहों॥हरिहोंसकलभू-
 मिगरुआई॥निर्भयहोहुदेवसमुदाई॥गगनब्रह्मवा
 णीसुनिकाना॥तुरतफिरेस्फुरहृदयजुडाना॥नबब्र
 ह्माधरणिहिंसमुजावा॥अभयभईभरोसजियआ
 वा॥ ॥दोहा॥ ॥निजलोकहिंविरेचिगे॥देवन्हइहै
 सिरवाइ॥वानरतनुधरिधरणिमहं॥हरिपदसेवहु-
 जाइ॥२३४॥ ॥चौपाई॥ ॥गयेदेवसबनिजनिज
 धामा॥भूमिसहितपायेंउविश्रामा॥जोकछुआयसु
 ब्रह्मादीन्हा॥हयेंदेवविलंचनकीन्हा॥वानरदेहधरी
 क्षितिमाहीं॥अतुलितचलप्रतापतिनपाहीं॥गिरित
 रुनखआचुधसबवीरा॥हरिमारगचितवहिंरणधी
 रा॥गिरिकाननजहंनहंभरिपूरि॥रहैनिजनिजअ-
 नीकरुचिरुरी॥यहसबरुचिरचरितमैभाषा॥अव
 सोक्तनहुंजांवीचहिंसाषा॥अवधपुरीरघुकुलमणि
 राउ॥चंदनिदिनानिदिदशरथनाक॥धर्मधुरंधरगुण
 निधिज्ञानी॥हृदयभक्तिमतिगारंगपाणी॥ ॥दोहा॥
 ॥ ॥कौशल्यदिकनारिधिय॥सबआचरणपुनीत॥

पतिअनुकूलप्रेमदृढ ॥ हरिपदकमलविनीत ॥ २३५ ॥
 चौपाई ॥ ॥ एकवारभूपतिमनमाही ॥ भइगलानिमो
 रेसुतनाहीं ॥ गुरुगृहगयेतुरतमहिपाला ॥ चरणला-
 गिकरिबिनयबिशाला ॥ निजसरवदुखनृपगुरुहिंस्र
 नायेऊ ॥ कहिवसिष्टबहुविधिसमुजायेऊ ॥ धरहुधीर
 होइहिस्तचारी ॥ त्रिभुवनविदितभक्तभयहारी ॥ शृं
 गीअषिहिंस्रसिष्टबुलावा ॥ पुत्रलागिशुभयज्ञकरावा
 ॥ भक्तिसहितमुनिआहुतिदीन्हे ॥ प्रगटेअग्निचरूक
 रलोन्हे ॥ बोलेअनलप्रेमयुतबाणी ॥ अतिप्रसन्ननहि
 परैबरवानी ॥ जोवसिष्टकछुहृदयबिचारा ॥ सकलका
 जभासिद्धतुह्यारा ॥ यहहबिबांदिदेहुनृपजाई ॥ यथा
 योगजेहिभागबनाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबअदृश्यपा
 वकभये ॥ सकलसभहिंसमुजाइ ॥ परमानंदभगवंत
 नृप ॥ हर्षनहृदयसमाइ ॥ २३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तबहिराउ
 प्रियनारिबुलाई ॥ कौशल्यादितहांचलिआई ॥ अर्धभाग
 कौशल्याहिदीन्हा ॥ उभयभागआधेकरकीन्हा ॥ कैकयीक
 हनृपभागसोदयेऊ ॥ रहेउसोउभयभागपुनिभयेऊ ॥ कौ
 शल्याकैकयीहाथधरी ॥ दीन्हसमित्रहिंस्रमनप्रसन्नकरी ॥
 यहिविधिगर्भसहितसबनारी ॥ भयेउहृदयहर्षितसरवभा
 री ॥ जोदिनतेहरिगर्भहिंस्राये ॥ सकललोकसरवसं-
 पतिछाये ॥ मंदिरमहंशवराजहिराणी ॥ शोभाशीलते
 जकीरवानी ॥ सरवयुतकछुककालचलिययेऊ ॥ जेहिं
 प्रभुप्रगटेसोअवसरभयेऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ योगलभ
 यहवारतिथि ॥ सकलभएअनुकूल ॥ चरअरुअच
 रहर्षयुत ॥ रामजन्मसरवसूल ॥ २३७ ॥ ॥ चौपाई ॥

नवमीतिथिमधुमासपुनीता ॥ शकुपक्षअभिजितहरि
 प्रीता ॥ मध्यदिवसअतिशीतनघामा ॥ पावनलोकका
 लविश्रामा ॥ शीतलमंदस्तरभिवहवाऊ ॥ हर्षितस्तरसं
 तनमनचाऊ ॥ यनकुसुमितगिरिगणमणिआरा ॥ स्व
 वहिंसकलसरितामधुधारा ॥ सोअवसरविरंचिसब
 जाना ॥ चलेसकलसुरसाजिविमाना ॥ गगनविमलसं
 कुलस्तरयूथा ॥ गावहिंगुणगंधर्ववरूथा ॥ वर्षहिसं
 मनस्सअंजुलिसाजी ॥ गहंगहिगगनदुंदुभीवाजी ॥
 अस्तुति करहिं नागमुनिदेवा ॥ बहुविधिलावहिं निज
 निजसेवा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्तरसमूहबिनतीकरि ॥ प
 हुचेनिजनिजधाम ॥ जगन्निवासप्रभुप्रगटेउ ॥ अखि
 ललोकविश्राम ॥ २३८ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ भयेप्रगटरूपा
 लादीनदयालाकौशल्यहितकारी ॥ हर्षितमहतारी
 मुनिमनहारी अद्भुतरूपविचारी ॥ ४७ ॥ लोचनअभि
 रामाननुघनप्रयामानिजआयुधभुजचारी ॥ भूषणच
 नमालानयनविशालाशोभासिंधुरवरारी ॥ ४८ ॥ कह
 दुहंकरजोरी अस्तुतितोरी केहिविधिकरी अनंता ॥
 मायागुणज्ञानातीतअमानावेदपुराणभगवंता ॥ ४९
 ॥ करुणास्तरसागरसवगुणआगरजोहिगावहिंश्रु
 निसंत ॥ सोममहितलागीजनअनुरागीप्रगटभयेभी
 केत ॥ ५० ॥ बह्मोडनिकायानिर्मितमायासोमसोमप्रति
 पेटकहे ॥ ममउरसोबासी यहउपहासीसनतधारम
 तिधिरनरहे ॥ ५१ ॥ उपजाजबजानाप्रभुसुसुकरनाच
 रितबहुनविधिनान्दबहे ॥ कहिकथासुनाईमानुबुझ
 ईतेहप्रकारकनप्रमनहे ॥ ५२ ॥ मातापुनिबोनीसोम

तिडोलीतजहुतातयहरूपा॥ कीजेशिशुलीलाप्रतिप्रि
यशीलायहसरवपरमअनूपा॥ ५३॥ सुनिबचनसुजा
मारीदनदानाहोइबालकसरभूपा॥ यहचरितजेगावहिं
हरिपदपावहितेनपरहिंभवकूपा॥ ५४॥ ॥ दोहा॥
विप्रधेनुसरसंतहित॥ लीन्हमनुजअवतार॥ निजइ-
च्छानिर्मिततनु॥ मायागुणगोपार॥ २३६॥ ॥ चौपाई॥
॥ सुनिशिशुरुदनपरमप्रियबाणी॥ संभमचलिआइ
सबराणी॥ हर्षितजहंतहंधाईदासी॥ आनंदमगनस
कलपुरवासी॥ दशरथपुत्रजन्मसुनकाना॥ मानहुंअ
हानंदसमाना॥ परमप्रेममनपुलकशरीरा॥ चाहतउठ
नकरंतमतिधीरा॥ जाकरनामसुनतशुभहोई॥ मोरे
गृहआवाप्रभुसोई॥ परमानंदपूरिमनराजा॥ कहाबु
लाइबजाबहुबाजा॥ गुरुवसिष्ठकहंगयेउहंकारा॥ आ
एहिजन्हसाहितनृपद्वारा॥ अनुपमबालकदेखिनजाई
॥ रूपराशिगुणकहिनसिराई॥ ॥ दोहा॥ ॥ नांदीमुख
शराधकरि॥ जातकर्मसबकीन्ह॥ हाटकधेनुबसन्नम
णि॥ नृपविभनकहंदीन्ह॥ २४०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ ध्वज
पताकतोरणपुरछावा॥ कहिनजाइजेहिंभांतिबनाव॥
सुमनवृष्टिआकाशतेहोई॥ अहानंदमगनसबकोई॥
हृंदहृंदमिलिचलीलुगाई॥ सहजसिंगारकियेउठिधाई
॥ कनककलशमंगलभरिथारा॥ गावतषटहहिंभूपदुआ
रा॥ करिआरतीनिछावरकरहीं॥ बारबारशिशुचरण
नपरहीं॥ मागधसूधबंदिगुणगायक॥ पावनगुणगाव
हिरघुनायक॥ सर्वस्वदानदीन्हसबकाहू॥ जेहिंसावा
शरवानहिताहू॥ मृगमदचंदनकुंकुमकीचा॥ मचीसक

लवीथिनविचवीचा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गृहगृहबाजवधा
 वशुभ ॥ प्रगटेउसरवमाकंद ॥ हरषवंतसवजहंतहां ॥ न
 गरनारिनरवृंद ॥ २४१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ केकयसुतासु
 मित्रादोऊ ॥ संदरसुतजन्मतभयेओऊ ॥ वहसरवसंप
 तीसमयसमाजा ॥ कहिनसकैशारदअहिरजा ॥ अब
 धपुरीसोहैएहिभांती ॥ प्रभुहिमिलनआईजनुराती ॥
 देखिभानुजनुमनसकुचानी ॥ तदपिबनीसंध्याअनु
 मानी ॥ अगुरुधूपजनुबहुअंधियारी ॥ उडैअचीरमन
 हुअरुणारी ॥ मंदिरमणिसमूहजनुराता ॥ नृपगृहक
 लशसोइंदुउदारा ॥ भवनवेदधुनिअतिमृदुवाणी ॥ ज
 नुरवगमुखरसमयसरवसानी ॥ कौतुकदेखिपतंगभु-
 लाना ॥ एकमासतेंहिंजातनजाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पास
 दिवसकरदिवसभा ॥ मरमनजानेकोइ ॥ रथसमेत
 रविथाकेउ ॥ निशाकवनविधिहोइ ॥ २४२ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ यहहरहरस्यकाहूंनहिजाना ॥ दिनमणिचलेक
 रतगुणगाना ॥ देखिमहोत्सवसरसुनिनागा ॥ चले
 भवनवरणतनिजभागा ॥ ओरोएककहौंनिजचोरी ॥
 सुनुगिरिजाअतिदृढमनितोरी ॥ काकभुशुंडिसंग
 हमदोऊ ॥ मनुजरूपजानैनहिकोऊ ॥ परमानंदप्रेम
 सरवफूले ॥ वीथिनफिरहिंमगनमनभूले ॥ यहस
 वनरितजानपैसाई ॥ हृषारामकीजापरहोई ॥ तेहि
 अवसरजोजेहिविधिआवा ॥ दीन्हभूपजोजेहिमन
 भावा ॥ गजरथनुरगहंमगोहीरा ॥ दीन्हनृपनानावि
 धनीग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मनसंतोपैसुचनिके ॥ जहंतहं
 देखिअसीपा ॥ राकलतनयाचिरजीवहु ॥ तुलसिदा-

सकेईश॥२४३॥ ॥चौपाई॥ ॥कछुदिवसवीतेयहि
भांती॥जातनजानहिंदिनअरुराती॥नामकरणकरअ
वसरजानी॥भूपबोलिपठयेमुनिजानी॥करिपूजाभूप
तिअसभाषा॥धरियनामजोमुनिगुणिराषा॥इनके-
नामअनेकअनूपा॥मैनूपकहबस्वमतिअनुरूपा॥जो
आनंदसिंधुगुणराशी॥श्रीकरतेत्रैलोक्यनिवासी॥
सोकरवधामरामअसनामा॥अखिललोकदायकवि
श्रामा॥विश्वभरणपोषणकरुजोइ॥ताकरनामभरत
असहोई॥जाकेसुमिरणतेंरिपुनाशा॥नामशत्रुहन
बेदप्रकाशा॥ ॥दोहा॥ ॥लक्षणसुधामारामप्रिय॥
सकलजगतआधार॥गुरुवसिष्ठतेंहिंसारवेउ॥लक्ष्मण
नामउदार॥२४४॥ ॥चौपाई॥ ॥धरेनामगुरुहृदय-
बिचारी॥बेदतत्त्वनृपतबसुतचारी॥मुनिजनधनसर्व
स्वशिवप्राणा॥बालकेलिरसतेंहिंसरवमाना॥बारेहि
तेनिजहितपतिजानी॥लक्ष्मणरामचरणरतिमानी॥
भरतशत्रुघनदानौभाई॥प्रभुसेवकजशप्रीतिबडाई॥
प्रियामगौरसंदरदोउजोरी॥निरषहिंछुबिजननीतृणतो
री॥चारिउशीलरूपगुणधामा॥तदपिअधिकसरवसा
गररामा॥हृदयअनुग्रहइंदुप्रकाशा॥सूचतकिरणम
नोहरहासा॥कबहुउछंगकबहुवरपालन॥मातुहुलारै
कहिहिप्रियलालन॥ ॥दोहा॥ ॥आपकब्रह्मनिरं
जन॥निर्गुणविगतविनोद॥सोअजप्रेमभक्तिबश॥
कौशल्याकेमोद॥२४५॥ ॥चौपाई॥ ॥कामकोटि-
छुबिप्रियामशरीरा॥नीलकंजचारिदगंभीरा॥अरुण
चरणपंकजनखज्योती॥कमलदलनबैठेजनुमोती॥

रेखकुलिशध्वजअंकुशसोहै॥ नूपुरध्वनिसुनि सुनिम
 नमोहै॥ कटिकिंकिनीउदरत्रयरेखा॥ नाभिगभीरजा
 नजहिंदेखा॥ भुजविशालभूषणयुतभूरी॥ हियहरिन
 रवशोभाअतिरूरी॥ उरमणिहारपदिकक्रीशोभा॥ वि
 प्रचरणदेखतमनलोभा॥ कंबुकंठअतिबुबुकसुहा
 ए॥ आननअमितमदनछबिल्लाए॥ दुइदुइदशनअ
 धरअरुणारे॥ नासातिलककोवरणैपारे॥ सुंदरअव
 एसुचारुकपोला॥ अतिप्रियमधुरनोतरेबोला॥ नी
 रकमलदोउनयनविशाला॥ विकटभृकुटिलटकनिव
 रमाला॥ चिक्कएकचकुंचितघुघुआरे॥ बहुप्रकारर
 चिमातुसंवारे॥ पीतजंशुलियाननुपहिराए॥ जानुपा
 णिविचरतमोहिभाए॥ रूपसकहिनहिश्रुतिशेषा॥
 सौजानेसपनेहुजिन्हदेखा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरवसंदो
 हमोरपर॥ ज्ञानगिरागोतीत॥ दंपतीपरमप्रेमवश॥
 करशिबुचरितपुनीत॥ २४६॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यहि-
 विधिरामजगतपितुमाना॥ कौशलपुरवासिनसरवदा
 ता॥ जिनरघुनाथचरणरतिमानी॥ तिनकीयहमती
 मगटभवानी॥ रघुपतिविमुखयत्नकरकौरी॥ कवनश
 कैभवबंधनछोरी॥ जीवचराचरवशकारिराये॥ सोमाया
 मभुमोंभयभाये॥ भृकुटिविलासनचावेंताही॥ अस-
 मभुछाडिभजियकहुकाही॥ मनक्रमचचनछाडिच
 तुगई॥ भजनहिंछपाकरैरघुगई॥ इहिविधिशिबुपि
 नोदमभुकीन्हा॥ सकलनगरवासिनसरवदीन्हा॥ ले
 ॥ छेगकवहंदलगवै॥ कवहगालनेघालिऊलावै॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ प्रेमगगनकोशेन्या॥ निशिदिनजानन-

जान ॥ स्तुत सनेह बशमात अति ॥ बालचरित करिगा
 न ॥ २४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एक बार जननी अन्हवाए
 ॥ करि सिंगार पलना पौटाए ॥ निज कुल इष्ट देव भगव
 ना ॥ पूजा हेतु कीन्ह असनाना ॥ करि पूजानै वेद्य चढा
 वा ॥ आपुगइ जह बाक बनावा ॥ बहुरि मातुत हंवाच
 लि आइ ॥ भोजन करत दीखर घुराई ॥ गई जननी शि
 शप हं भय भीता ॥ देखे बालक तहां पुनीता ॥ बहुरि आ
 इ देखे स्तुत सोई ॥ हृदय कंप मन धीर न होई ॥ इहां उहां
 दुइ बालक देखे ॥ मति भ्रम मोरि कि आन विशेषा ॥ दे
 रिव राम जननी अकुलानी ॥ प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुस
 कानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दिखरावामात हिं निज ॥ अदभु
 तरूप अखंड ॥ रोम रोम प्रतिराज हिं ॥ कोटि कोटि ब्रह्मा
 ण्ड ॥ २४८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अगणित रविशशिशिव
 चतुरानन ॥ बहुगिरि सरित सिंधु महिकानन ॥ काल
 कर्म गुण ज्ञान स्वभाऊ ॥ सो देखे जो स्तनान काऊ ॥ देखी
 माया सब विधि गादी ॥ अतिस भीत जोरै कर ठादी ॥ दे
 रवा जीवन चावै जाही ॥ देखे भक्ति जो छोरे ताही ॥ तनु
 पुलकित मुख बचनन आवा ॥ नयन मूदि चरण निशि
 रनावा ॥ विस्मय मंद देखे महतारी ॥ भये बहुरि शिशु
 रूप स्वरासी ॥ अस्तुति करि न जाइ भयसाना ॥ जगत
 पिता मै स्तुत करि जाना ॥ हरि जननी बहुविधिस मुजा
 ई ॥ यह जनिकत हं रुहसितै माई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बार
 बार हू कोशलया ॥ बिनय करै कर जोरि ॥ अब जनिक
 बहं व्यापै ॥ प्रभु मोहि माया तोरि ॥ २४९ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ ॥ बालचरित हरि बहुविधि कीन्हा ॥ अति आनंद दास

न कहदीन्हा ॥ कछुककालवीतें सब भाई ॥ बडे भये परि-
 जन सरवदाई ॥ चूडा करण कीन्ह गुरु आई ॥ विप्रन पु-
 निदक्षिणा बहु पाई ॥ परम मनोहर चरित अपारा ॥ कर-
 न फिरत चारि उर कुमारा ॥ मन क्रम बचन अगोचर जो-
 ई ॥ दशरथ अजिर विचर प्रभु साई ॥ भोजन करत बुला-
 वत राजा ॥ नहिं आवहिं तजि बाल समाजा ॥ कौशल्या-
 जव बोलन जाई ॥ तुमु किदु मुकि प्रभु चलहिं पराई ॥-
 निगमनेति शिव अंतन पावा ॥ ताहि धरै जननी हठि धा-
 वा ॥ धूसर धूरि भरै तनु आए ॥ भूपति विहंसि गोद बैठा-
 ए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भोजन करित चपल चित ॥ इत उत अ-
 वसर पाइ ॥ भाजि चले किल कत बदन ॥ दधि ओदन ल-
 पटाइ ॥ २५० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बाल चरित अतिसरल
 सुहाए ॥ शारद शेष शंभु श्रुति गाए ॥ जिन कर मन इन स-
 न नहि गता ॥ तेज गवंचित किये विधाता ॥ भए कुमार ज-
 वहिं सब भ्राता ॥ दीन्ह जने ऊ गुरु पितु माता ॥ गुरु गृह ग-
 ण पदन रघु राई ॥ अल्प काल विद्या सब आई ॥ जाकी स-
 हज न्वास श्रुति चारी ॥ सो हरि पद यह कौतुकी भारी ॥ वि-
 द्या विनय निपुण गुण शाला ॥ खेलहिं खेल सकल नृप-
 लीन्हा ॥ करतल बाण धनुष अति सोहा ॥ देखत रूप चरा-
 चर मोहा ॥ जिन बीथि न विहरहिं सब भाई ॥ अकित हो-
 दिस बलांग लुगाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौशल पुरवा सीन-
 रा ॥ नारी बद्ध अरु चालु ॥ प्राण हंतें प्रिय लागहिं ॥ सब क-
 हग मरु पानु ॥ २५१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बंधु सखा संग-
 लहिं बुलाई ॥ दन मुग यानित रंग लहिं जहई ॥ पावन मु-
 ग मारहिं नित यजानी ॥ दिन प्रति नृपहिं देखवावहिं आनी

जो मृगराज बाण के मारे ॥ ते तनु तजि सरलोक सिधारे ॥
 अनुज सरवा संग भोजन करहिं ॥ मातु पिता आजा अनु
 सरहीं ॥ जेहिं विधि सरवी होहिं पुरलोगा ॥ करहिं कृपा-
 निधि सो इस योगा ॥ वेद पुराण सुनहिं मन लाई ॥ आपु
 कहहि अनुज हि स मुझाई ॥ प्रात काल उठि के रघुनाथा
 ॥ मातु पिता गुरु ना वहिं माथा ॥ आय सु मांगि करहिं पु
 रकाजा ॥ देखि चरित हषहिं मन राजा ॥ ॥ दोहा ॥
 व्यापक अल अनीह अज ॥ निर्गुण नाम न रूप ॥ भक्त
 हंतु नाना विधिहिं ॥ करत चरित्र अनूप ॥ २५२ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ यह सब चरित कहा मै गाई ॥ आगिल कथा सु
 नहु मन लाई ॥ विश्वा मित्र महामुनि ज्ञानी ॥ बसहिं वि
 पिन श्रु भ आश्रम जानी ॥ तहं जप यज्ञ योग मुनि करहीं
 ॥ अति मारीच सुबाहु हिं डरहीं ॥ देखत यज्ञ निशाचर
 धां वहीं ॥ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहीं ॥ गाधित नय
 मन चिंता व्यापी ॥ हरि बिनु मरहिं न निशाचर पापी ॥ तु
 बं मुनि बर मन कीन्ह बिचारा ॥ प्रभु अवतरे उहरण माहि
 आरा ॥ एहु मिस देखौ प्रभु पद आई ॥ करि बिन ती आ
 नौ द्वौ भाई ॥ ज्ञान बिराग सकल गुण अयना ॥ सो प्रभु
 मै देख व भरि नयना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहु वि
 धि करत मनोरथ ॥ जात न लागि वार ॥ करि मज्जन स
 रजू सलिल ॥ गये भूप दरबार ॥ २५३ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ ॥ मुनि आगमन सुजाज बराजा ॥ मिलन गये
 उलें बिप्र समाजा ॥ करि दंड वत मुनि हिं सन मानी ॥ निज
 आसन बैठारीन आनी ॥ चरण परिवारि कीन्ह अति पू
 जा ॥ सो सम आहु धन्य नहि दूजा ॥ विविध भांति भोज

न करवावा ॥ मुनिवरहृदयहर्षअतिपावा ॥ पुनिचरण
 नमैलेसुतचारी ॥ रामदेखिमुनिविरतिविंसारी ॥ भये-
 मगनदेखतमुखशोभा ॥ अनुजकोरपूरणशशिलोभा ॥
 ॥ तवमनहर्षिवचनकहराऊ ॥ सुनिअसंकृपाकीन्हन
 हिकाऊ ॥ केहिकारणआगमनतुह्यारा ॥ कहहुसोक
 रतनलाउवचारी ॥ अस्तरसमूहसताबहिंघोरी ॥ मैया
 चनआएउंचपतोही ॥ अनुजसमेतदेहुरघुनाथा ॥ नि-
 शिचरबधमैंहोवसनाथा ॥ ॥ दोहा ॥ देहुभूपमनह
 रित ॥ तजहुमोहअज्ञान ॥ धर्मसुखशनृपतुमकहं ॥
 इनकहंअतिकल्याण ॥ २५४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनि
 राजाअतिअप्रियवाणी ॥ हृदयपंकमुखदुतिकुहिला
 नी ॥ चौथेपनपाएउसुतचारी ॥ विप्रवचननहिकहेहु
 विचारी ॥ मांगहुभूमिधेनुधनकोषा ॥ सर्वस्वदेहुआ
 जुसहरोया ॥ देहुमाणतैंप्रियकछुनाहीं ॥ सोउमुनिदेउं
 निमियएकमाहीं ॥ सबसुतप्रियमोहिप्राणकिनाई ॥
 रामदेननहिवनैगुसाई ॥ कहंनिशिचरअतिघोरक-
 टोरा ॥ कहंसंदरसुतवयसकिशोरा ॥ सुनिनृपगिरा
 प्रेमरससानी ॥ हृदयहर्षमानामुनिजानी ॥ तववसिष्ठ
 बहुविधिसमुजावा ॥ नृपसंदेहनाशकहंपावा ॥ अति
 आदरहोतनयबुलाये ॥ हृदयलाइबहुभांतिसिरवा
 ये ॥ मेरेमाणनाथसुतदोऊ ॥ तुममुनिपिताआनन
 दिकोऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सांयेभूपतिअधिहिसुत ॥
 बहुविधिदेइअशीस ॥ जननीभवनगएप्रभु ॥ चले
 नाइपदशीस ॥ २५५ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ पुरुषसिंहहो
 धीर ॥ दापंचलमुनिभयहरण ॥ कृपासिंधुमतिधीर ॥



अखिलविश्वकारणकरण॥२५६॥ ॥चौपाई॥ ॥
 अरुणनयनउरबाहुविशाला॥नीलजलजतनुश्याम
 तमाला॥कटिपटपीतकसेंवरभाथा॥रुचिरचापसा
 यकदुहंहाथा॥श्यामगौरसंदरहौभाई॥विश्वामि
 त्रमहानिधिपाई॥प्रभुब्रह्मण्यदेवमेंजामा॥मोहि-
 तपितातजेउभगवाना॥चलेजातमुनिदीन्हदिरवाई॥
 सनिताडकाक्रोधकरिधार्ई॥एकहिंबाणप्राणहरि
 लीन्हा॥दीनजानितेहिंनिजपददीन्हा॥तबऋषिनिज
 नाथहिंजियचीन्हा॥विद्यानिधिकहंविद्यादीन्हा॥जां
 तैलागनक्षधापियासा॥अतुलितबलतनुतेजप्रका
 शा॥ ॥दोहा॥ ॥आयुधसकलसमर्पिकरि॥प्रभु
 निजआश्रमआनि॥कंदमूलफलभोजनहिं॥दिये-
 भक्तहरिजानि॥२५७॥ ॥चौपाई॥ ॥प्रातकहा-
 मुनिसनरघुराई॥निर्भययज्ञकरहुतुमजाई॥होम
 करणलागे मुनिजारी॥आपुरहेसखकीरखवारी॥
 सनिमारीचनिशाचरकोही॥लैसहायधांवा मुनिशे

ही ॥ विनु फरवाण राम तेहिं मारा ॥ शत योजन गासागर
 पारा ॥ पांच कूशर सुबाहु पुनि मारा ॥ अनुज निशाचर-
 कटक संघारा ॥ मारि अस्तर द्विज निभयकारी ॥ अस्तु
 ति करहिं देव सुनीजारी ॥ तह पुनि कछु कदिव सरधुरा
 या ॥ रहै कीन्ह बिप्र न परदाया ॥ भक्ति हेतु बहु कथा पु-
 राणा ॥ कहे बिप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥ तव मुनि सादर-
 कहा बुझाई ॥ चरित एक देखिय प्रभु जाई ॥ धनुष यज्ञ
 सुनिरघु कुलनाथा ॥ हर्षि चले मुनि वर के साथ ॥ आ-
 अम एक दीख मग माहीं ॥ स्वग मृग जीव जंतु तह नाहीं
 ॥ पूछा मुनि हिंशिला प्रभु देखी ॥ सकल कथा अधिक ही
 विशेषी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गौतम नारी शाय बश ॥ उपल-
 देह धरि धीर ॥ चरण कमल रज चौहती ॥ कृपा करहु
 रघु वीर ॥ २५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ परसत पद पावन शो-
 कन शावन प्रगट भई तप पुंज सही ॥ देखत रघु नायक
 जनकर खदायक संमुख होइ कर जोरि रही ॥ ५५ ॥ अ-
 ति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहि आवै वचन कही
 ॥ अति शय चड भागी चरण निलागी युगल नयन जल
 धार चहीं ॥ ५६ ॥ धीर जमन कीन्हा प्रभु कह चीन्हारघु
 प्रति कृपा भक्ति पाई ॥ अति निर्मल बाणी अस्तुति दा-
 नी जान गम्य जय रघु राई ॥ ५७ ॥ मैं नारि अपावन प्रभु
 जग पावन गवणारि पुजन कर्य दाई ॥ राजीव सुलोक
 न भव नय नोचन पाहि पाहि शरणहिं आई ॥ ५८ ॥ मु-
 नि गाप जाँदा न्हा अति भक्त कीन्हा परम अनुग्रह मे मा-
 ना ॥ देखे उभारि लोचन हरि भव मोचन यहै लाभ शंकर
 जाना ॥ ५९ ॥ विन नारी प्रभु मोरी मै मति भोरी नाथ नवर

मागों आना ॥ पदपद्मपरागारसअनुरागामममनमधु
 पकरै पाना ॥ ६० ॥ जेहि पदस्तरसरिता परमपुनीता प्र
 गट भई शिवशी सधरी ॥ सोइ पदपंकज जेहि पूजत अ
 जममशिर धरे उक्तपालु हरी ॥ ६१ ॥ यहि भांतिसिधारी
 गौतमनारी बारबार हरिचरण परी ॥ जो अतिमन भा
 वा सोवर पावा गई पतिलोक आनंद भरी ॥ ६२ ॥ ॥ दो-
 हा ॥ ॥ असप्रभु दीनबंधु हरि ॥ कारण रहित कृपालु
 ॥ तुलसिदास शठताहि भजु ॥ छांडिक पदजंजालु ॥
 ॥ २५६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चले रामलक्ष्मणमुनिसंगा ॥
 गएजहां जगपावनि गंगा ॥ ॥ यहप्रसंगतै क्षेप कहैं ॥
 अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा ॥ बहु प्रकार स्वरव-
 पाएउरामा ॥ पुनि स्तरसरि उत्पत्ति रघुराई ॥ कौशिक
 पह पूछा शिरुनाई ॥ कह सुनि प्रभु तब कुल एकराजा ॥
 नाम सगरति हुं लोकविराजा ॥ नृपकें युग भामिनि सुकु-
 मारी ॥ केशिनि ज्येष्ठ सुमति लघुप्यारी ॥ सब प्रकार स-
 पति गुण भ्राजा ॥ सुत बिहीन मन बिस्मय सजा ॥ एक सम
 य भामिनि दोऊ साथ ॥ बनतप हेतु गएर घुनाथा ॥ सघन
 सुफल तरु सुंदर नाना ॥ तहं भृगु मुनि तप तेजनिधाना ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सहित नारि नृप सुदित मन ॥ रहै वरष शत एक
 ॥ कीन्हा तप भल देरि वभृगु ॥ अस्तंति कीन्ह अनेक ॥ २६०
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कहिनि जदुख प्रणाम नृप कीन्हा ॥ दै अशी
 शत बसुनि वर दीन्हा ॥ नृपरानी सन मुनि अस भाषा ॥ ले
 उसो वर जो जिहिं अभिलाषा ॥ सुनि मुनि चरण शीश-
 तिन्ह नावा ॥ देउनां थतु म कहं जो भावा ॥ एकहि एक क-
 हा सुत होना ॥ दुसरि सहस्र साठि गुण लोना ॥ हर्षित-

भयेउसभगवरपाई ॥ हाथजोरिचरणनिशिरनाई ॥ स
 हितभामिनिन्हअवधहिंआयेऊ ॥ हर्षसहितकछुदिव
 सगमायेऊ ॥ जानिसुघरिनखतरसरवदाई ॥ तबकेशि
 निअसमंजसजाई ॥ सुमतिप्रसवतुमरीएकसोई ॥ भए
 सुतप्रगटकहेमुनिजोई ॥ हर्षसहितदियेदाननरेशू ॥ पू
 जिविप्रगुरुगौरिगणेशू ॥ घृतमधुसुंदरतुरतमंगाए ॥
 तेसवसुतनृपतिन्हमहुंनाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहिविधि
 भएतिहिंसकलसुत ॥ पूजेसवमनकाम ॥ जाहीदिवस
 निशिहर्षवश ॥ सुनहुरामघनश्याम ॥ २६१ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ परिजनसवघरघरनिनरेशू ॥ अतिआनंदतनु
 मिटाकलेशू ॥ बालकेलिकरिभएउकुमारा ॥ लीलांकरैअ
 गमसंसार ॥ होहिसुकाजसकलमनचीते ॥ इहिसरव
 वसतबहुतदिनचीते ॥ सरजूनदोअवधिजोअहई ॥ वि
 मलसलिलउत्तरदिशिबहई ॥ प्रजालोगकेबालकनाना



॥ निनइटिनहोकरहिंअगनाना ॥ असमंजसनहांतरणी
 आनी ॥ निन्दहिंनदाइचोरगहिपानी ॥ नाप्रजासवपर
 भदगानी ॥ बान्धवधअवसुतहृदबारी ॥ सकलगए

जह बैठनृपाला ॥ बोलै बचननाइ पदभाला ॥ तज बदेशब
रुसुनहु नरेश ॥ विना तजैनहिं मिटव कलेश ॥ तुम नृपच
हहु प्रजाप्रतिपाला ॥ सुतहु तुम्हार भासब कर काला ॥
॥ दोहा ॥ ॥ तब सुत कीन्है पापबहु ॥ मारे बालक बृंद ॥ तु
म कहं प्राणसमान सुत ॥ सकल प्रजन कहं मंद ॥ २६२ ॥
चौपाई ॥ ॥ प्रजागिरा सुनिधीरज दीन्हा ॥ सुतहि दश
तैं बाहर कीन्हा ॥ ता सुत नय जग विदित प्रभाऊ ॥ गुण-
निधि अंशु मानति हिं नाऊ ॥ बसत हृदय नृप कै सो कै सें
फणिमणि मीन सलिल रहजै सें ॥ गए प्रजा सब निज नि
ज धामा ॥ भये विशोच मनहिं बिआमा ॥ बहुरि नृपतिम
न कीन्ह बिचारा ॥ आइ भये उपनचौ थह मारा ॥ हिजमं
त्रिन गुरु सुतनि बुलाए ॥ हिमगिरि विंध्य मध्यतब आ-
ए ॥ रुचिर बोदिका एक बनाई ॥ देखत बने बरणी नहि जा
ई ॥ मख आरंभ छांडे उत बलुरगा ॥ बेगवंत देखिय जिमि
उरगा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुरपति सुनि मख दारुण ॥ मन-
महं करि अनुमान ॥ आइ तुरगतिन्ह लीन्है उ ॥ मरमन-
कोऊ जान ॥ २६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राखे उ आनि कपिल
मुनि पाहीं ॥ कोऊ न जान काहु गति नाहीं ॥ युगवतर है जे
सुभट सयाने ॥ लेत तुरगति नहून हिजाने ॥ तिन सब आ
इ कहा नृप पाहीं ॥ महाराज हम कहं तडराहीं ॥ लीन्ह तुर
ग यह जानन कोई ॥ कहा करीय सोइ आय सुहोई ॥ सु
नत बचन नृप बिस्मय पाएऊ ॥ सकल सुतन कहं तुरत
बुलाएऊ ॥ जाइ तुरग तुम हेरहु जाई ॥ सकल चले चरण
॥ सुरपति सम देखिय बलवीरा ॥ सकल ध
नुर्धर अतिरणधीरा ॥ तिनहि चलत धरणी अकुलाई ॥

वलिपशुजीवभएसवआई॥सुमनवाटिकाउपवनबागा
 ॥सरितकूपवापिकातडागा॥नगरगांडमुनिआश्रमना-
 ना॥गिरिकाननकंदरअस्थाना॥ ॥सोरठा॥ ॥इहि
 विधिरवोजेहुजाइ॥आएसबमिलिभूपपहि॥चरण-
 निमाथोनाइ॥बोलेप्रभुकहुंअश्वनहि॥२६४॥ ॥चौ
 पाई॥ ॥खोजंमहिस्ततफेरिपठाए॥चलैसकलपूर-
 वदिशिआए॥तिनकेकरजनुबज्जसमाना॥योजनभ-
 रिरखोदलहिंबलवाना॥देखिअतुलबलबिबुधडराने
 ॥मरिहहिंकहिविरंचिसमाने॥शोधतमहिपातालस
 वआए॥दिग्गजदेखिसवनिशिरनाए॥तिहिंपूजास
 वकथासुनाएऊ॥बहुरिसकलदक्षिणादिशिआएऊ
 ॥इहिविधिपुनिदूसरगजदेया॥अतिउत्तंगुणविम-
 लविशेषा॥ताहुकहंप्रणामपुनिकीन्हा॥चलेसकल-
 पश्विमचितदीन्हा॥तीसरेदेखिप्रदक्षिणाकीन्हा॥पु-
 निउत्तरदिशिसोधनलीन्हा॥दिग्गजश्वेतदेखिसकरव
 पाए॥सकलकपिलमुनिपरचलिआए॥खोदिसिमही
 कोउपारनपावा॥सोईभाचलहुदिशिजलधिसहावा
 ॥ ॥दोहा॥ ॥देखिसिआइतुरंगनव॥वांधासुनिव
 रपास॥बोलेवचनसकुठहुइ॥भाचहसवकरनाश॥
 ॥२६५॥ ॥चौपाई॥ ॥खोदामहीहंसचारिहुकोधा॥रे-
 रेहुप्रबहुनतोहिगोधा॥कोऊकहचारदीरवबहुहोई॥
 इहिसमछन्नाअवरनहिंकोई॥स्तनतचचनमुनिचि-
 तनानवहीं॥भएभस्मक्षणमहंसवतवहीं॥उमावचन
 नातिहिसयुजिनबांला॥सुधादोडाविपतिहिंक्रमडोला
 ॥पाचकताभिधरंकरमाणी॥जरहिंनकाहेतेंअभिमाना

॥ जानिगरलजेसंग्रहकरहीं ॥ स्तनहुरामतेकाहेनमरहीं
 क्रोधकीन्हबिनकरैंबिचारा ॥ भएसकलतिहिंतेजरिस्स
 रा ॥ इहांचृपतिअंशुमानबुलाएऊ ॥ नहिआएसकततिन्ह
 हिंपठाएऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दीन्हचृपतिआशीशतब ॥ अ
 तिहितबारहिंबार ॥ वेगिफिरहुलैतुरगस्त ॥ मेरेयाएआ
 धार ॥ २६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चलेऊनाईपदशीशकुमारा ॥
 विष्णुभक्ततिहुंकुलउजिआरा ॥ जहंकहुंनिररिवसुनिनिके
 धामा ॥ पूछीखवरिकरिदंडप्रणामा ॥ चलेमुनिन्हसनपा
 इआशीसा ॥ खोजहुंपैहहुजाहुमहीशा ॥ इहिविधिखोज
 तमगमहजाता ॥ मिलेउगरुडसभतिकरआता ॥ चरणप
 रततबआशिषदएऊ ॥ जरेसकलजिहिंबिधिसोकहेऊ ॥
 स्तनतहिबचनशोचभाभारी ॥ लैखगेशदेखएउथलबा
 री ॥ अंशमानतहंमज्जनकीन्हा ॥ क्रमक्रमसबहिंतिला
 जलिदीन्हा ॥ बहुरिगरुडबोलेस्तनुआता ॥ मैतोहिकहों-
 करैएकबाता ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ करस्तसोइउपाइ ॥ गं
 गाआवहिंअवनिमहं ॥ दरशनतेअधजाइ ॥ मज्जनकी
 न्हेपरमहित ॥ २६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ षष्टिसहस्रस्त
 तरिहहिंइहिंबिधि ॥ गंगापाइपरमपावननिधि ॥ स्तनि-
 असबचनहृदयअतिभाए ॥ सहितगरुडमुनिवरपहिंअ
 ए ॥ तबखगेशमुनिचरणनिनायेऊ ॥ पूरवकथानृपके-
 रिसुनायेऊ ॥ आशिषदेइतुरगमुनिदीन्हा ॥ हर्षितहृदयग
 वनतबकीन्हा ॥ नगरसमीपगरुडपहुचाई ॥ गयेउभवन
 तबनिजरघुराई ॥ इहांतुरंगलेइचृपहिंशिरुनाई ॥ षष्टि
 सहस्रस्तवमरणस्तनाई ॥ विस्मयहर्षबिबसचृपभएऊ
 ॥ कीन्हजज्ञदानबहुदएऊ ॥ बहुविधिचृपतिराजतबकी-

न्हा ॥ प्रजालोक कहं अति सरवदीन्हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मनु
 कहं राजदेइ नृप ॥ आपुग एउ सर धाम ॥ सर सरि मही आ
 ये विना ॥ मनु नल है विश्राम ॥ २६८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ता
 सत नय दिलीप नृप भयेऊ ॥ मनु तप हेतु उत्तर दिशि गए
 ऊ ॥ अति हि अगमत पकीन्ह नृपाला ॥ भए काल वश गए
 कछु काला ॥ किहि विधि कहों दिलीप प्रभु नाई ॥ सेवहिं
 सकल नृपति तिहिं आई ॥ युग वन जासु सरव सरपति र
 हई ॥ महि माता सक वन कवि कहई ॥ भागीरथ अस
 सत भए जासू ॥ पितु सम नीति अधिक उरतासू ॥ तिन्ह
 हिं बोलित वदीन्हे उराजू ॥ आपु चले उठित पके काजू ॥
 मन महं करत पंथ अनुमाना ॥ सर सरि आवत जों ननु
 प्राणा ॥ जिमि मनु तनु दीन्है तिमि देऊ ॥ फिरि निजनगर
 कनाउन लेऊ ॥ इहि विधि करत विचार भुवाला ॥ जाइ
 कीन्ह तप परम विशाला ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ करत विचा
 र भुवाल ॥ जाइ कीन्ह वन प्रबल तप ॥ वीते कछु एक का
 ल ॥ देहत जी कोउ प्रगट नहि ॥ २६९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 सर सरि लागित जेतन भूषा ॥ सोत जिमूढ पिअहिं जल
 कृपा ॥ इहां भगीरथ मन अस भएऊ ॥ पितु न अवबहु दि
 न चलि गएऊ ॥ ककुत्स्थ नाम तनय एकर हेऊ ॥ दीन्हारा
 ज नीति बहु कहेंऊ ॥ कहि सन पूर्व कथा सत पांहा ॥ दीन्ह
 अजीय चले उतर नाहा ॥ निकसत नगर सगुन भल पाए ॥
 अति हि निविड वन तहां नृप आए ॥ देखि भगीरथ मन
 अनिभावा ॥ सर सरि हेतु तप हिं मन लावा ॥ एक चरण
 दोउ भुजा उग्राए ॥ रवि संमुख चित चहिं मन लाए ॥ वर्ष
 मत्त सखी नंदि भांती ॥ जानन जाना हिं दिन अरु रात्री ॥ दे

अतपविधिचलिआए॥ बोलेनृपसनबचनसुना
 ॥ चांहहिंनृपसुलेहुवरदाना॥ बोलेउनृपकरिअजहिंम
 एामा॥ जोमांगोंसोजानतअहहू॥ सोमोहिसनमागन
 प्रभुकिमिकहहू॥ ॥ सोरठा॥ ॥ तदपिकहोंप्रभुदेहु
 ॥ वरभुभसंतानबहु॥ दुसरेंकरहुसनेहु॥ गंगाआवहिं
 अचनिमहं॥ २७०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ एवमस्तकहिपुनि
 कहहीं॥ सरसरिदेउराखिकोसकहीं॥ छूटेजाइ
 पुनितुरतरसातल॥ फिरहिननृपतिसुनियमोभूतल॥
 तिहितेंकहोंएकनोहिउपाही॥ अतिदयालुशंकरमन-
 मांहीं॥ सोइसकैराखिदेवसरिआजू॥ ताहिजपेतबहो
 इहिकाजू॥ असकहिबिधिअंतरहितभएऊ॥ बहुरिभ-
 गीरथशिवपठएऊ॥ बिंबिधवर्षअंगुष्ठअधारा॥ बारबा-
 रशिवनामउचारा॥ शिवकृपालुप्रगटेतबआई॥ हाथ-
 जोरिनृपकहशिरनाई॥ मैराखसरसरिकहईशा॥ बहु-
 रिउमापतिगएकैलाशा॥ ॥ दोहा॥ ॥ उहांदेवसरिशि-
 बबचन॥ सुनिमनकीन्हबिचार॥ जाउरसातलशिवस-
 हित॥ जातनलावोंचार॥ २७१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ अंतर
 जामीशिवरचाउपाई॥ निजशिरजटासुअगमबनाई॥
 इहांभगीरथअस्तुतिकीन्ही॥ सुनिमृदुगिराछांडिबिधि
 दीन्ही॥ छुटतसोरभएउअतिभारी॥ चकितदेवअहिदि-
 गजचारी॥ सरसरिआईशिवजटासमानी॥ एकवर्ष
 तहांरहीभुलानी॥ कौतुकदेखिसकलसरहर्षे॥ कहि-
 जयजयतिसुमनतिन्हवर्षे॥ बहुरिभगीरथसुमिरणा
 कीन्हा॥ शिवतबडारिबुंदएकदीन्हा॥ तिहितेंभईतीनि
 तबधारा॥ एकगईनभएकपतारा॥ गईनभसोअघसो

घकीसांपिनी ॥ देवनि धरानाममंदाकिनी ॥ ॥ सोरठा ॥
 दुसरी गई पताल ॥ नामप्रभावतिहरणीदुख ॥ तीसरी गं
 गविशाल ॥ स्फुरसंतनिकहंकरणिस्फुरा ॥ २७२ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ आइ भगीरथतबशिरनावा ॥ बोली स्फुरसरिबच
 नसहावा ॥ वेगवंतनृपरथतै आनू ॥ तुरगमरुतशुभग
 तिजिमिभानू ॥ तिहिरथचढिनृपचलुममआगें ॥ चलि
 होमैंतवपाछेलागें ॥ स्फुनिनृपतुरतदिव्यरथआना ॥ च
 ढउहृदयस्फुरितभगवाना ॥ चलीअग्रकरिनृपहिंस्फ
 रसरी ॥ देवन्हमुदितस्फुमनऊरकरी ॥ चलततेजकछु
 वरणिनजाई ॥ दूटहितरुगिरिशिलासहाई ॥ करहिंकु
 लाहलजीवबहुजाती ॥ कमठनक्रऊपव्याकुलबहुभांती
 ॥ मज्जनकरहिंदेवताआई ॥ मुनिगणसिद्धरहैतहंछाई ॥
 सोरठा ॥ ॥ तपनकरैमनलाइ ॥ हर्षहृदयनहिजातकहि
 ॥ दरशनतैअग्रजाइ ॥ तरहिंसकलस्फुरमुनिकहहिं ॥ २७३
 ॥ चौपाई ॥ ॥ करिजोमज्जनतपमनलाइहि ॥ तिहिकीम
 हिमाकहिनसिराइहि ॥ स्वंदनपरनृपसोइहकैसें ॥ तेजवं
 तरविदेरिवयजैसें ॥ लांघतशैलसहावनदेशा ॥ पाछेंसु
 रसरिअग्रनरेशा ॥ हरिहारसमीपतवआई ॥ तीर्थदेरिव
 स्फुरसरिमनभाई ॥ तीरथहुंमनभास्फुरवभांरी ॥ आइअ
 यागपहुंचीअग्रहारी ॥ तहोमज्जनकीन्हेंदुखजाई ॥ बहु
 रिदेवसरिकाशीआई ॥ सोशिवपुरीसहजस्फुरदाई ॥
 वरणिनजाइमनोहरनाई ॥ ओंरोनार्थविनिधविधिजानी
 ॥ गइंनहांकिमकहोंचरनानी ॥ मगन्नीगनकहंकरतिसना
 था ॥ जाइन्हांइहिनिधिरगुनाथा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भिली-
 थहांनिउदधिमहं ॥ उदधितदयहरपान ॥ लगेउसराहन-

भगीरथहिं॥तुमसमधन्यनन्मान॥२७४॥ ॥चौपाई॥
 कीन्हैउअसजशकरइनकोई॥तपमहिमाबलकाइनहो
 ई॥सगरतनयतरेतनकाला॥हर्षवंततबभएउभुवाला
 औरीरहीजेकुलमहकोऊ॥तिन्हकेसंगतरेसबओऊ॥
 सकलसरन्हसंगतहांविधाता॥नृपसनआइकहीअ
 सिवाता॥धन्यभगीरथजगयशलएऊ॥तुमसमाननृप
 अवरनभएऊ॥आपनिसत्यप्रतिज्ञाकरेऊ॥संमतवेद
 सबहिंस्रभदएऊ॥गंगासागरसबकोऊकहहीं॥अथ
 उलूकदेखतरविडरहीं॥भागीरथीअसनामकहैंहीं॥
 सरसुनिनागसिद्धयशगहैंहीं॥असकहिंविधिनिजलो
 कसिधाए॥इहांभगीरथअतिसरवपाए॥ ॥छंद॥
 ॥चाएअमितसरवबहुरिपूजउसरसरिहिमनलाइके
 ॥तबदीन्हआशिषमुदितगंगानृपभवनगएसरवपाइके
 ॥६२॥ इहिंभातिसुनिगंगाकथातबरामऋषिचरणनि
 नए॥कहदासतुलसीरामलक्ष्मणहिंमहामुनिआशिष
 दए॥६३॥ ॥दोहा॥ ॥कौशिकआशिषअमीयसम॥
 सुनिहर्षेरघुनाथ॥प्रभुसरवपाइकहाबहुरि॥वेगिच
 लियमुनिनाथ॥२७५॥॥यहांतकक्षेपकहैं॥॥ ॥
 चौपाई॥ ॥गाधिसवनसबकथासुनाई॥जोहिप्रका
 रसरसरिमहिआई॥तबप्रभुऋषिनसमेतअन्हाए
 ॥विविधदानमहिदेवनपाए॥हरषिचलैमुनिवृंदसहा
 या॥वेगिविदेहनगरनियराया॥पुररम्यतारामजब
 देवी॥हर्षअनुजसमेतविशेषी॥वापीकूपसरितसरना
 ना॥सलिलसुधासममणिसोपाना॥युंजतमंजुमनर
 सभृंगा॥कूजतकलबहुवरणबिहंगा॥वरणवरणवि

कसेजलजाता ॥ त्रिविधसमीरसदांकरवदाता ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ ॥ रुमनवाटिकावागवन ॥ विपुलबिहंगनिवास ॥ फू
 लतफलतरुपल्लवित ॥ सोहतपुरचहुपास ॥ २७६ ॥
 चौपाई ॥ ॥ वनैनवरणतनगरनिकाई ॥ जाहांजाइमनत
 हांलुभाई ॥ चारुवजारविचित्रअटारी ॥ मणिमयविधिज
 नुस्वकरसवारी ॥ धनिकवणिकवरधनदसमाना ॥ बैठे-
 सकलवस्तुलै नाना ॥ चोहदसंदरगलीसुहाई ॥ संततर
 हहिंसगंधसिचाई ॥ मंगलमयमंदिरसबकरे ॥ चित्रितज
 नुरतिनाथचितैरे ॥ पुरनरनारिसकलशुचिसंता ॥ धर्मशी
 लज्ञानीगुणवंता ॥ अतिअनूपजहंजनकनिवासू ॥ विथ
 कहिविबुधविलोकिविलासू ॥ होतचकितचितकोटवि-
 लोकी ॥ सकलभुवनशोभाजलुरोकी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ध
 वलधाममणिपुरपटु ॥ सुघटितनानाभांति ॥ सियनिव
 ससंदरसदन ॥ शोभाकिमिकहिजाति ॥ २७७ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ सुभगद्वारसबकुलिशकपाटा ॥ भूपभीरनट
 मागधभाटा ॥ वनीविशालबाजिगजशाला ॥ यहगजर-
 थसंकुलसबकला ॥ शूरसचिवसेनपवहुतेरे ॥ नृपगृह
 सरिससदनसबकरे ॥ पुरचाहिरसरसरितसमीपा ॥ उ
 तरेजहंतहंविपुलमहापा ॥ देरिवअनूपअकअमराई ॥
 रावसपाससबशांतिसुहाई ॥ कौशिकेकहेउमोरमन-
 माना ॥ इहांरहियरघुवीरसजाना ॥ भलेहिनाथकहि
 हयानिकेता ॥ उत्तरंतहंसुनिहंदसमंता ॥ विश्वामित्रमहा
 मुनिआग ॥ जगानारामथिलापतिपाए ॥ ॥ दोहा ॥
 नैनसचिवशक्तिभूरिभट ॥ भृंकरवरगुरुजाति ॥ नले-
 धितरसुनिनायकई ॥ सुदिनराउयहभांति ॥ २७८ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा ॥ दीन्ह अशी
 ष नृपहिं सुनि नाथा ॥ विप्र हृंद सब सादर वंदे ॥ जानि भाग्य
 वडराउ आनंदे ॥ कुशल प्रभु कहि बारहिं बारा ॥ विश्वामित्र
 नृपहिं बैठारा ॥ तेहि अवसर आए दोऊ भाई ॥ गए रहै दे-
 रवन फुलवाई ॥ प्रथम गौर मृदु बचस किशोरा ॥ लोचन सु-
 खद विश्व चित चोरा ॥ उठै सकल जबर घुपति आए ॥ वि-
 श्वामित्र निकट बैठाए ॥ भए सब सरवी देखि हौ आता ॥ बा-
 रि बिलोचन पुलकित गाता ॥ मूरति मधुर मनोहर देखी ॥ भ-
 एउ विदेह विदेह विशेषी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रेम मगन मन जा-
 नि नृप ॥ करि विवेक धरि धीर ॥ बोलेउ सुनि पदनाइ शिर
 ॥ गङ्गद गिरागंभीर ॥ २७६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहहु नाथ-
 सुंदर दोउ बालक ॥ सुनि कुलतिलक किं नृप कुल पालक ॥
 ब्रह्म जोनि गमनेति कहि गावा ॥ उभय वेष धरि सोई कि आ-
 वा ॥ सहज बिराग रूप मन मोरा ॥ थकित होत जिमि चंद्र च-
 कोरा ॥ तातैं प्रभु पूछों सद भाऊ ॥ कहहु नाथ जनिकरहु दु-
 राऊ ॥ इनहि बिलोकत अति अचुरागा ॥ परब सब ब्रह्म सु-
 खहि मन त्यागा ॥ कह सुनि बिहंसि कहहु नृप नीका ॥ बच-
 न तु हमार न होइ अलीका ॥ एप्रिय सबहि जहां लगि माणी
 ॥ मन मुसकां हिं राम सुनि बाणी ॥ रघुकुल मणिदशरथ
 केजाए ॥ मम हित लागि नरेश पठाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रा-
 म लषण हौं बंधुवर ॥ रूप शील बल धाम ॥ मरवरा रवेउ स-
 ब साक्षि जग ॥ जीति अकर संग्राम ॥ २८० ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ सुनि तब चरण देखि कह राऊ ॥ कहिन शकौं निज पुण्य
 प्रभाऊ ॥ सुंदर प्रथम गौर दोउ आता ॥ आनंद हूके आनंद
 मन की पीति परस्य पावनी ॥ कहिन जाइ मन भाव

स्तुहावनी ॥ स्तुनहुनाथकहमुदितविदेहू॥ ब्रह्मर्ज
 इवसहजसनेहू॥ पुनिपुनिप्रभुहिंचितचनरनाहू॥ पुलक
 गातउरअधिकउछाहू॥ मुनिहिप्रशंसिनाइपदशीसा॥
 चलेउलवांइनगरअवनीशा॥ सुंदरसदनसरवदसवका
 ला॥ तहांवासलैदीन्हभुआला॥ करिपूजासबविधिसे
 वकाई॥ गयेउराउगृहविदाकराई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अथ
 यसंगरघुवंशमणि॥ करिभोजनविश्राम॥ जबैप्रभुआ
 तासहित॥ दिवसरहाभरियाम॥ २८१॥ ॥ चौपाई॥
 लपएतदयलालसाविशेषी॥ जाइजनकपुरआइयदे-
 यी॥ प्रभुभयवहुरिमुनिहिंसकुचाहीं॥ प्रगटनकहहिंम
 नमुसुकाहीं॥ रामअनुजमनकीगतिजानी॥ भक्तवत्स
 लनाहियहुलसानी॥ परमविनीतसकुचिमुसुकाई॥
 ओलेगुरुअनुशासनपाई॥ नाथलषणपुरदेखनचहहीं
 ॥ प्रभुसंकोचडरप्रगटनकहहीं॥ जौंराउरआयसुमैपा
 ऊं॥ नगरदेखाइतुरतलैआऊं॥ स्तुनिमुनीशकहवचन
 राप्रोती॥ कसनगमराखहुतुमनीती॥ धर्मसेतुपालकतु
 मनाना॥ प्रेमविवससेवकसरवदाता॥ ॥ दोहा॥
 जाइदेखिआवहुनगर॥ सरवनिधानहौभाइ॥ करहुमु
 फलसवकेनयन॥ सुंदरवदनदेखाइ॥ २८२॥ ॥ चौ
 पाई॥ ॥ मुनिपदकमलवंदीदोउआता॥ चलेलोकलो
 ननसरवदाता॥ बालकचंददेखिअतिशोभा॥ लगेसंग
 लोननमनलोभा॥ पीतवसनपरिकरकाटिभाथा॥ चा
 रुनापगारसोहतहाथा॥ तनुअनुहरनसुचंदनगोरी॥
 ग्यागनगौरमनोहरजोरी॥ केहरिकंधरबाहुविशाला॥
 उरअतिरुनिरनागमणिमाला॥ रुभगअचणसररी॥

रुहलोचन ॥ बदनमयंकतापत्रयमोचन ॥ काननिकनक
फूलछविदेहीं ॥ चितवतचितहिंचौरिजनुलेहीं ॥ चितव
तिचारुभृकुटिचरबाकी ॥ तिलकरेखशोभाजनचांकी ॥

॥ दोहा ॥ ॥ रुचिरचौतनीसुभगशिर ॥ मेचककुंचि
तकेश ॥ नखशिरखसुंदरबंधुहौ ॥ शोभासकलसुदेश ॥

॥ २६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखननगरभूपसुतआए ॥ स
माचारपुरवासिनपाए ॥ धायेधामकामसबत्यागी ॥ म

नहुरंकनिधिलूटनलागी ॥ निरखिसहजसुंदरदोउभाई ॥
होहिंसरखीलोचनफलपाई ॥ युवतीभवनऊरोखनिला-

गी ॥ निरखहिरामरूपअनुरागी ॥ कहहिपरस्परबचन
संपीती ॥ सरखइनकोटिकामछुबिजीती ॥ सरनरअसु

रनागमुनिमांहीं ॥ शोभाअसकहुंसुनियतनाहीं ॥ विष्णु
चारिभुजविधिसुखचारी ॥ विकटवेषसुखपंचपुरारी ॥

अपरदेवअसकोजगआही ॥ यहछविसरिखपटनरिये-
जाही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वयकिशोरसुखमासदन ॥ श्याम

गौरसरवधाम ॥ अंगअंगपरिवारिए ॥ कोटिकोटिशत
काम ॥ ॥ २६४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहहुसरखीअसकोतनु

धारी ॥ जोनमोहयहरूपनिहारी ॥ कोउसप्रेमबोलीमृदु
बाणी ॥ जोमैसनासोसुनहुसयानी ॥ एदोउचृपदशरथ-

केढोटा ॥ बालमरालनिकेकलजोटा ॥ मुनिकौशिकमख
केरखवारे ॥ जिनरणअजिरशिशाचरमारे ॥ श्यामगा

तकलकंजविलोचन ॥ जोमारीचसुभुजमदमोचन ॥ कौ
शल्यासुतसोसरखरवानी ॥ नामरामधनुशायकपाणी ॥

गौरकिशोरवेषवरकाछै ॥ करशरचापरामकेपाछै ॥ ल
क्ष्मणरामनामलघुभाता ॥ सुनुसरितासुसुमित्रामाता ॥

॥ दोहा ॥ ॥ विप्रकाजकरिबंधुदोउ ॥ मगमुनिवधूउधारि
 ॥ आएदेखनचापमख ॥ सुनिहरषीसबनारि ॥ २८५ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ देखिरामछबिकोउएककहई ॥ योग्यजा
 नकीयहवरअहई ॥ जोसरिवइनहिंदेखिनरनाहू ॥ पण
 परिहरिहठिकरैविवाहू ॥ कोउकहएभूपतिपहिचाने ॥
 सुनिसमेतसादरसनमाने ॥ सरिवपरंतुपणराउनतज-
 ई ॥ विधिवशहठिअविवेकहिभजई ॥ कोउकहजौभल
 अहैविधाता ॥ सबकहंसुनियउचितफलदाता ॥ तौजा
 नकिहिमिलीहिवरएहू ॥ नाहिनआलियहिमहंसंदेहू ॥ जौ
 विधिवशअसवनैसंयोगू ॥ तौकृतकृत्यहोइसबलोगू ॥
 सरिवहमरेंअतिआरतितातैं ॥ कचहुकएआवहिंएहिना
 तैं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाहितहमकहंसुनहुसरिव ॥ इन्हकर
 दरशनदूरि ॥ यहसंघटतवहोइजव ॥ पुण्यपुराकृतभूरि
 ॥ २८६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बोलीअपरकहेउसरिवनीका ॥
 यहिविवाहअतिहितसबहीका ॥ कोउकहशंकरचापक
 दोरा ॥ एश्यामलमृदुगातकिशोरा ॥ सबअसमंजसअ
 हैसयानी ॥ यहसुनिअपरकहैमृदुवाणी ॥ सरिवइनक
 हकोउकोउअसकहहीं ॥ बडप्रभावदेखतलघुअहहीं ॥
 परमिजासपदपंकजधूरी ॥ तरीअहल्याअघकृतभूरी ॥
 सोकिरहैविनुशिवधनुतोरै ॥ यहप्रतीतिपरिहरियनमो
 रै ॥ जेहिधरंनिरचिसीअसंवारी ॥ नैहिंश्यामलवररचे-
 उविचारी ॥ नामकवचनसुनिंसबहरयानी ॥ ऐसैहोउकह
 हिमृदुवाणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हियहरयहिंवरपहिसुम
 न ॥ सुमुखिसुलोचनिचंद्र ॥ जाहिजहांजहबंधुदोउ ॥ न
 हनहंपरमानंद ॥ २८७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पुरपुरवदिशि

गेदोउभाई॥जहांधनुषमरवभूमिबनाई॥अतिविस्तार
 चारुगचदारी॥विमलबेदिकारुचिरसंवारी॥चहुंदिशि
 कंचनमंचविशाला॥रचेजहांबैठिहिमहिपाला॥तेहिपा
 छैसमीपचहुंपासा॥अपरमंचमंडलीविलासा॥कलुकऊं
 चसबभांतिस्फहाई॥बैठहिंनगरलोगजहंजाई॥तिनकेनि
 कटविशालस्फहाए॥धवलधामबहुबरणनबनाए॥ज
 हंबैठेदेखहिपुरनारी॥यथायोग्यनिजकुलअनुहारी॥पु
 रबालककहिकहिमृदुबचन॥सादरप्रभुहिदेखावहिरच
 ना॥॥दोहा॥॥सबशिशुएहिमिसप्रेमबश॥परसि-
 मनोहरगत॥तनुपुलकहिंअतिहर्षहिय॥देखिदेखिदौ-
 भ्रात॥२८८॥॥चौपाई॥॥शिशुसबरामप्रेमबशजा
 ने॥प्रीतिसमेतनिकटबैठाने॥निजनिजरुचिसबलेडबु
 लाई॥सहितसनेहजाहिंदोउभाई॥रामदिरवावहिंअनु
 जहिरचना॥कहिमृदुमधुरमनोहरबचना॥लवनिमेष
 महिंभुवननिकाया॥रचेजासुअनुशासनमाया॥भक्त
 हेतुसोइदीनदयाला॥चितवच्चकितधनुषमरवशाला॥
 कौतुकदेखिचलेगुरुपाहीं॥जानिविलंबत्रासमनमाहीं
 ॥जासुत्रासडरकहंडरहोई॥भजनप्रभावदेखावतसो
 ई॥कहिबानेंमृदुमधुरस्फहाई॥कियेबिदाबालकवरि-
 आई॥॥दोहा॥॥सभयसप्रेमबिनीतअति॥सकु
 चसहितदोउभाई॥गुरुपदपंकजनाइशिर॥बैठेआय-
 सपाइ॥२८९॥॥चौपाई॥॥निशिप्रवेशपुनिआय
 सुदीन्हा॥सबहीसंध्यावंदनकीन्हा॥कहतकथाइति-
 हासपुराणी॥रुचिररजनिपुगयामसिरानी॥मुनिबर
 शयनकीन्हतबजाई॥लगेचरणचापनदोउभाई॥जिन

केचरणसरोरुहलागी ॥ करतविविधजपयोगविशगी ॥ ते
 दोउबंधुप्रेमजनुजीते ॥ गुरुपदकमलपलोदतप्रीते ॥ बार
 बारमुनिआज्ञादीन्हा ॥ रघुवरजाइशयनतबकीन्हा ॥ वा
 पतचरणलषणउरलाए ॥ सभयसप्रेमपरमस्तरवपाए ॥
 पुनिपुनिप्रभुकहसोबहुनाता ॥ पौढेधरिउरपदजलजा
 ता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उठेलषणनिशिविगतसुनि ॥ अरुण
 शिरवाध्वनिकान ॥ गुरुनैपंहिलैंजगतपति ॥ जागेरामसु
 जान ॥ २६० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सकलशोचकरिजाइन-
 हाए ॥ नित्यनिवाहमुनिहिशिरनाए ॥ समयजानिगुरु-
 आयसुपाई ॥ लैनप्रसूनचलेदोउभाई ॥ भूपबागवरदे
 रवेउजाई ॥ जहंवसंतभ्रतुरहीभुलाई ॥ लागेविटपमनो
 हरनाना ॥ बरणवरणवरवेलिविनाना ॥ नवपल्लवफल
 सुमनसुहाए ॥ निजसंपतिसुतरतरुहिलजाए ॥ चातक
 कोकिलकीरचकोरा ॥ कूजतविहगनचतकलमोरा ॥ म
 ध्यवागसरसोहसुहावा ॥ मणिसोपानविचित्रचनावा ॥
 बिमलसलिलसरसिजबहुरंगा ॥ जलरवगकूजतकुंजत
 भृंगा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वागतडागविलोकिप्रभु ॥ हरषेबं
 धुसमेत ॥ परमरम्यआरामचह ॥ जोरामहिसुखदेत ॥ २६१
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चहुदिशिचित्तैपूछीमालीगण ॥ लगे
 लैनदलफूलसुदिनमन ॥ तेहिअवसरसीतानहंआई ॥
 गिरिजापूजनजननिपटाई ॥ संगसरिवसदसुभगयानी
 ॥ गावहिगीतमनोहरवाणी ॥ सरसमीपगिरिजागृहसो
 दा ॥ वरणिनजाइदेखिमनमोहा ॥ मज्जनकरिसरसरी
 समेता ॥ गर्दमुदिनमनगोरीनिकेता ॥ पूजाकीन्हअधिक
 अनुगमा ॥ निजअनुरूपसुभगवरमांगा ॥ एकसरबीसि

य संगविहाई ॥ गईरही देखन फुलवाई ॥ तेहिंदोउबंधुविलो
 केउजाई ॥ प्रेमविवशसीतापहिआई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तासु
 दशादेखी सरिखन ॥ पुलकगातजलनयन ॥ काहुकारणि
 जहर्षकर ॥ पूछहिं सबमृदुबचन ॥ २९२ ॥ ॥ चौपाई ॥
 देखनबागकुंवरदोउआए ॥ बयकिशोरसबभांतिस्फहाए
 ॥ श्यामगौरकिमिकहोंबरवानी ॥ गिराअनयननयनबिनु
 बाणी ॥ सुनिहर्षीसबसरवीसयानी ॥ सियहियअतिउत
 कंठाजानी ॥ एककहहिंनृपसुततेआली ॥ सुनेजेमुनिसं
 गआएकाली ॥ जिननिजरूपमोहनीडारी ॥ कीन्हेंस्ववश
 नगरनरनारी ॥ बरणतछबिजहंतहंसबलोगू ॥ अबशदे
 रिवयेंदेखनजोगू ॥ तासुबचनअतिसियहिसोहाने ॥ द
 रशलागिलोचनअकुलाने ॥ चलीअग्रकरिप्रियसरिखसो
 ई ॥ प्रीतिपुरातनलखैनकोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुभिरिसि
 यनारदबचन ॥ उपजीप्रीतिपुनीत ॥ चकितविलोकतिस
 कलदिशि ॥ जनुशिशुमृगीसभीत ॥ २९३ ॥ ॥ चौपाई ॥
 कंकणकिंकिणिनूपुरध्वनिसुनि ॥ कहतलषणसुनरामह
 दयगुणि ॥ मानहुंमदनहुंदुभीदीन्हा ॥ मनसाविश्वविजय
 कहंकीन्हा ॥ असकाहिफिरिचितएतेहिंओरा ॥ सियसु-
 खशशिभयेनयनचकोरा ॥ भयेविलोचनचारुअचंच
 ल ॥ मनहुंसकुचितिमितजेहगंचल ॥ देखीसीयशोभा
 सरवपावा ॥ हृदयसराहतबचननआवा ॥ जनुविरंचि
 सबनिजनिपुणाई ॥ बिरचिविश्वकहंप्रगटदीरवाई ॥ सुं
 दरताकहंसुदरकरई ॥ छबिगृहदीपशिरवाजनुबरई ॥
 सबउपमाकबिरहेजुठारी ॥ केहिंपटतरियबिदेहकुमारी
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सियशोभाहियबरणिप्रभु ॥ आपनिद-

शाविचारि ॥ बोले शक्तिमन अनुजसन ॥ बचन समय अनु
 हारी ॥ २२४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तातजन कतन यायह सोई ॥
 धनुषय जजेहि कारण होई ॥ पूजन गौरी सरवीलै आई ॥ क
 रति प्रकाश फिरति फुलवाई ॥ जासु विलोकि अलौकिक शो
 भा ॥ सहज पुनीत मोर मन सोभा ॥ सो सब कारण जान वि
 धाता ॥ फरकहि सभग अंक सनु भाता ॥ रघुवंशिन कर
 सहज स्वभाऊ ॥ मन दुषंथ पंग धरै न काऊ ॥ मोहि अति श
 य प्रतीति जिय केरी ॥ जेहिं स्वपनेहु परनारिन हेरी ॥ जिन
 कीलह हिंनरि पुरण पीठी ॥ नहिलावहिं परति यमन डीठी ॥
 ॥ मंगन लहहिं न जिन केनाहीं ॥ ते नरवर थोरे जग माहीं ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ करत वात कहौ अनुजसन ॥ मनसिय रूप
 लोभान ॥ मुख सरोज मकरंद छवि ॥ करत मधुप इव पान ॥
 २२५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चितवति चकित चहुं दिशि सीता ॥
 कह गए नृप किशोर मन चीता ॥ जेहि विलोकि सुगशावक न
 यनी ॥ जनु नह वर्ष कमलसित श्रेणी ॥ लता ओटत वसवि
 न नरवाए ॥ अमल गौर किशोर सहाए ॥ देखि रूप लोचन
 ललचाने ॥ हर्षे जनु निजनिधि पहिचाने ॥ थकेन यनरघुप
 ति छवि देखें ॥ फल कनहुं परिहरा निरोपें ॥ अधिक सनेह
 निवश भइ भोरी ॥ भरदश शिहिं जनु नित वच कोरी ॥ लोच
 न मगु रामहिं उर आनी ॥ दीन्हें फल ककपाट सयानी ॥ जव
 न सय सखिन मंमवश जानी ॥ कहिन सकहिं कलु मन सकु
 चानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लता भवननं प्रगट भए ॥ तैहि अतर
 र दोड भाइ ॥ निकसे जनु युगाविमल निधु ॥ जल दपट लवि
 न पाइ ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शोभा सीवस भग दोड
 नीना ॥ नीलपान जनु जा भगरी रा ॥ कावय क्ष शिरसा हतनी

के॥ गुच्छाविचविचकुसुमकलीके॥ भालतिलकश्रमबिंदु
सहाए॥ श्रवणसुभगभूषणछविछाए॥ विकटभृकुटि
कचघुंघूरबारे॥ नवसरोजलोचनरतनारे॥ चारुचुबुक-
नासिकाकपोला॥ हासविलासलेतमनुमोला॥ मुखछवि
कहिनजाइमोहिपाहीं॥ जेहिबिलोकिबहुकामलजाहीं
॥ उरमणिमालकंबुकलगीवा॥ कामकलभकरभुजबल
सींचा॥ सुमनसमेतवामकरदोना॥ सांवरकुवरसरवीसु
ठिलोना॥ ॥ दोहा॥ ॥ केहरिकटिपटपीतधर॥ सुख
माशीलनिधान॥ देखिभानुकुलभूषणहिं॥ विसरासरिव
नअपान॥ २६७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ धरिधीरजएकसरवी
सयानी॥ सीतासनबोलीगहिपाणी॥ बहुरिगौरिकरध्या
नकरेहू॥ भूपकिशोरदेखिकिनलेहू॥ सकुचिसीअतबन
यनउघारै॥ संमुखदोउरघुसिंहनिहारै॥ नखशिरवदेखि
रामकीशोभा॥ सुमिरिपितापणमनअतिक्षोभा॥ परब
शसरिवनलखीजबसीता॥ भयेउगहरुसबकहहिंसभी
ता॥ पुनिआउबएहिंबेरहिंकाली॥ असकहिमनबिहंसि
एकआली॥ गूढगिरासुनिसिधसकुचानी॥ भएउबिलं
बमानुभयमानी॥ धरिबडिधीररामउरआनी॥ फिरीअ
पनपोपितुबशजानी॥ ॥ दोहा॥ ॥ देखनमिसुमृगवि
हंगतरु॥ फिरेबहोरिबहोरि॥ निरखिनिरखिरघुबीरछ
बि॥ बाढैप्रीतिनथोरि॥ २६८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जानिक
ठनशिवचापबिभूरति॥ चलीराखिउरश्यामलमूरति॥ प्र
भुजबजातजानकीजानी॥ सुखसनेहशोभागुणरवानी
॥ परमप्रेममयमृदुमसिकीन्ही॥ चारुचित्तभीतरलखि-
लीन्ही॥ गईभवानीभवनबहोरी॥ बंदिचरणबोलीकर

जोरी ॥ जयजयजयगिरिराजकिशोरी ॥ जयमहेशगिरि
 चंद्रचकोरी ॥ जयगजवदनषडाननमाता ॥ जगतजननि
 दामिनिद्युतिगाता ॥ नहितवश्चादिमध्यश्रवसाना ॥ श्र-
 मितप्रभाववेदनहिजाना ॥ भवभवविभवपराभवकारि
 णी ॥ विश्वविमोहिनिस्ववशविहारिणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 पतिदेवतासुतीयमहं ॥ मातुप्रथमतवरेष ॥ महिमाश्र-
 मितनकहिशकहिं ॥ सहसशारदाशेष ॥ २६६ ॥ ॥ चौ-
 पाई ॥ ॥ सेवतसोहिसलभफलचारी ॥ वरदायिनित्रि-
 पुरारिपियारी ॥ देवीपूजीपदकमलतुह्यारे ॥ स्फुरनरसु-
 निसचहोहिंस्फुरवारे ॥ मोरमनोरथजानहुं नीके ॥ बसहु-
 सदाउरपुरसबहीके ॥ कीन्हेउप्रगटनकारणतेही ॥ अ-
 सकहचरणगहेंवैदेही ॥ बिनयप्रेमवशभईभवानी ॥
 खसीमालमूरतिमुस्ककानी ॥ सादरसियप्रसादउरधरे-
 ऊ ॥ बोलीगौरीहर्षहियभयेऊ ॥ स्फुटसियसत्यअशीष-
 हहमार्ग ॥ पूजहिंमनकामनातुह्यारी ॥ नारदबचनस-
 दाशानिसांचा ॥ सोवरमिलिहिंजाहिमनराचा ॥ ॥ छं-
 द ॥ ॥ मनजाहिंराचेउमिलिहिंसोवरसहजसुंदरशांया-
 रो ॥ करुणानिधानसुजानशीलसनेहजानतरावरो ॥ ६५
 ॥ यहिभांतिगौरिअशीसक्तनिसियसहितहियहर्षि-
 तअली ॥ तुलसीभवानिहिपूजिपुनिपुनिसुदितमनमं-
 दिरचली ॥ ६६ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ जानिगौरिअनुकूल ॥
 निसियहियहपेनजायकहि ॥ मंजुलमंगलमूल ॥ वामअं-
 गफरकनलगै ॥ ६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हृदयसराहन-
 गोचलुनाई ॥ गुरुसमीपगवनेदोउभाई ॥ रामकहास-
 नकीशिकपार्श्व ॥ सरलसुभावदृष्ट्याललनार्हां ॥ सुम

नपाइ सुनि पूजा कीन्हो ॥ पुनि अशीष दोउ भाइ न्हदीन्हो ॥
 सफल मनोरथ होउ तुम्हारे ॥ राम लषण सुनि भए सरवा
 रे ॥ करि भोजन सुनि वर विज्ञानी ॥ लगे कहन कछु कथा
 पुराणी ॥ विगत दिवस सुनि आय सुपाई ॥ संध्या करण
 चले दोउ भाई ॥ प्राची दिशि शशि उगै उरु हावा ॥ सिय सु
 सरिस देखि सरव पावा ॥ बहुरि बिचार कीन्ह मन मा
 हीं ॥ सिय बदन समहि मकर नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जन्म सिं
 धु पुनि बंधु विष ॥ दिन मलीन सकलंक ॥ सिय सुख समता
 व किमि ॥ चंद्र वा पुरोरंक ॥ ३०१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ घटै
 बटै विरहिनि दुख दाई ॥ असे राहुनि जसंधिहि पाई ॥ को
 कशोक प्रद पंकज दोही ॥ अवगुण बहुत चंद्र मातोही ॥ बैदे
 ही सुख पटतर दीन्है ॥ होइ दोष बड अनुचित कीन्है ॥ सिय
 सुख छवि धुव्याज बरवानी ॥ गुरु पहिंचले निशा बडि जा
 नी ॥ करि सुनि चरण सरोज प्रणामा ॥ आय सुपाई कीन्ह
 आमा ॥ विगत निशार घुनाय कजाके ॥ बंधु विलोकिकह
 न असलागे ॥ उगे अरुण अवलोकहु नाता ॥ पंकज लोक
 लोक सरव दाता ॥ बोले लषण जोरियुग पाणी ॥ प्रभु प्रभा
 व सूचक मृदु बाणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अरुणोदय सकुचै कु
 मुद ॥ उडुगण जोतीति मलीन ॥ तिमितुम्हार आगमन सु
 ॥ भए नृपति बलहीन ॥ ३०२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नृप स
 बन रवत करहि उजियारी ॥ टारिन शकहिंचापत म भारी ॥
 कमल कोक मधुकर खग नाना ॥ हरषे सकल निशा अवसा
 ना ॥ ऐसेहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे ॥ होइ हहिं टूटै धनुष स
 र्वारे ॥ उदय भातु बिनु अमृत मनाशा ॥ दुरे नखत जग तेज प्र
 काशा ॥ रविनिज उदय व्याजर घुराया ॥ प्रभु प्रताप सब नृप

नेदेखाया ॥ तब प्रभु बल महिमा उदघाटी ॥ प्रगटी धनुष विष
 ट परिपाटी ॥ बंधु बचन सानि प्रभु सुसुकाने ॥ होइ शक्ति स
 हज पुनीत नन्हाने ॥ नित्य क्रिया करि गुरु पहिं आए ॥ चरण
 सरोज सुभग शिरुनाए ॥ शतानंद तब जनक बुलाए ॥ कौ
 शिक मुनि पहिं तुरत पठाए ॥ जनक बिनयन नितिन आइ सु
 नाई ॥ हर्षे बोलिली एदो उभाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शतानंद प
 द बंदि प्रभु ॥ बैठे गुरु पहिं जाई ॥ चलहु तात मुनि कहें उत
 व ॥ पठवा जनक बुलाइ ॥ ३०३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सीय स्व
 यंवर देरि वय जाई ॥ ईश्वर कहि धों देहि बडाई ॥ लख एक
 हाज शभा जन सोई ॥ नाथ कृपात बजा पर होई ॥ हर्षे मुनि
 सब मुनि चरवाणी ॥ दोन्हि अशीष सब हिं सरव मानो ॥ पु
 नि मुनि छंद समेत कृपाला ॥ देखन चले धनुष सरव शाला
 ॥ रंग भूमि आए दो उभाई ॥ असि शक्ति सब पुरवासिन पा
 ई ॥ चलें सकल गृह काज विसारी ॥ बालक युवा जरठ नर ना
 री ॥ देख जनक भार भइ भारी ॥ शक्ति सेवक सब लिहें का
 री ॥ तुलत सकल लोगन पहिं जाहु ॥ आसन उचित देहु स
 व काहु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहि मृदु वचन विनीत तिन ॥ पैदा
 रें नर नारी ॥ उत्तम मध्यम नीच लघु ॥ निज निज थल असु
 हारि ॥ ३०४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राज कुंवर तें हिं अवसर आए
 ॥ मनहु मनो हरतात नुछाए ॥ गुण सागर नागर वर वारा ॥
 संदर श्याम लंगोर शरीरा ॥ राज समाज विराजत रुरे ॥ उ
 डगण महेज नु युग विभु पूरे ॥ जिन कें रहां भावना जें सी ॥
 प्रभु मुरति देखि नित नैं सी ॥ देख हिं भूष महारण धीरा ॥
 मनहु वीर सधैं शरीरा ॥ डरें कुटिल नृप प्रभु हिं निहारा ॥
 मनहु भयानक मुरति भारी ॥ रहें असुर छल छांणि पंथा

॥तिनप्रभुप्रगटकालसमदेखा॥पुरबासिनदेखेदोउभाई
 ॥वरभूषणलोचनसरवदाई॥ ॥दोहा॥ ॥नारिबिलोक
 । हर्षिहिय॥निजनिजरुचिअनुरूप॥जनुसोहतभृंगार
 धरि॥मूरतिपरमअनूप॥३०५॥ ॥चौपाई॥ ॥विदुष
 नप्रभुविराटमयदोषा॥बहुमुखकरपदलोचनशीषा॥
 । नकजातिअवलोकहिं कैसैं॥सज्जनसगेप्रियलागहिं
 जैसैं॥सहितविदेहबिलोकहिराणी॥शिशुसमप्रीतिन
 । ॥स्वानी॥योगिनपरमतत्त्वमयभासा॥संतशुद्ध-
 समसहजप्रकाशा॥हरिभक्तनदेखेदोउभाता॥इष्टदे
 वइवसबसरवदाता॥रामहिचितबभावजेहिंसीया॥
 सोसनेहुसरवनहिकथनीया॥उरअनुभवतिनकहि
 शकसोऊ॥कवनप्रकारकहैकबिकोऊ॥यहिविधिरहा
 जाहिजशभाऊ॥तेहितसदेखेउकोशलराऊ॥ ॥दोहा॥
 ॥राजतराजसमाजमहं॥कोशलराजकिशोर॥सुंदर-
 श्यामलगौरतनु॥बिभ्वविलोचनचौर॥३०६॥ ॥चौपा
 ई॥ ॥सहजमनोहरमूरतिदोऊ॥कोटिकामउपमालघु
 सोऊ॥शरदचंदनिंदकमुखनीके॥नीरजनयनभावतेजी
 के॥चितवनिचारुमादमदहरणी॥भावतिहृदयजायन
 हबरणी॥कलकपोलश्रुतिकुंडललोला॥चिबुकअध-
 रसुंदरमृदुबोला॥कुसुदबंधुकरनिंदकहासा॥भृकुटीवि
 कटमनोहरनासा॥भालबिशालंतिलकजलकाहीं॥क
 चबिलोकिअलिअवलिलजाहीं॥पीतचौतनीशिरन-
 सुहाई॥कुसुमकलीबिचबीचबनाई॥देखारुचिरकं
 बुकलग्रीवा॥जनुत्रिभुवनसरवमाकीसींवा॥ ॥दोहा
 ॥ ॥कुंजरमणिकंठाकुलित॥उरतुलसीकीमाल॥दृष

भकंधकेहरिटचनि॥वलनिधिबाहुविशाल॥३०७॥ ॥
 चौपाई॥ ॥कटितूणीरपीतपटबोधे॥करशरधनुषवा
 मकरकांधे॥पीतयज्ञउपवीतसुहाए॥नखशिरवमंज-
 महाछविछाए॥देखिलोगसबभएसरवारे॥एकटकलो
 चनटरहिंनटारे॥हर्षेजनकदेखिदोउभाई॥मुनिपदक
 मलगहेतवजाई॥करिविनतीनिजकथासुनाई॥रंगअ
 गनिसबमुनिदेखाई॥जहंजहंजाहिंकुअरवरदोऊ॥त
 हंतहंचकितचितबैसबकोऊ॥निजनिजरुचिरामहिंसा
 बदेसा॥कोउनजानकछुमर्मविशेषा॥भलिरचनानृपस
 नंमुनिकहेऊ॥राजामुदितमहासरवलहेऊ॥ ॥दोहा॥
 ॥सबमंचनतेंमंचएक॥सुंदरविशदविशाल॥मुनिसमे
 तदोउबंधुतहं॥बैठारेमहिपाल॥३०८॥ ॥चौपाई॥
 प्रभुहिदेखिसवनृपहियहारे॥जनुराकेशउदयभएता
 रे॥असिप्रतीतिसबकैमनमाहीं॥रामचापतोरबशंक
 नाहीं॥विनुभंजेहुंभवधनुषविशाला॥मेलहिंसीयराम
 उरमाला॥असविचारिगवनेहुधरभाई॥जसप्रतापवल
 नेलगवाड़े॥विहंसेअपरभूपसुनिवाणी॥जेअविवेक
 अंधअभिमानो॥तोरेहुंधनुषव्याहअवगाहा॥विनुतो
 रेकोकुंवरिविवाहा॥एकचारकालहुकिनहोई॥सियहि
 तसमरजीतवहमसोई॥यहसुनिअपरभूपमुसुकाने॥
 धमंशालद्वारिभक्तसयाने॥ ॥सोरठा॥ ॥सीयविवाह
 चराम॥गवेंद्वारिकारिचपनकर॥जीतिकोगकरसंग्राम॥द
 शरअकैरगायांकुरे॥३०९॥ ॥चौपाई॥ ॥तुथामरहुन
 निगालवजाई॥मनमोदकनहिंभूखविताई॥सीखदमा
 रकनुपमपुनीता॥जगदंवाजानहुंजियसीता॥जग-

तपितारघुपतिहिविचारी॥भरिलोचनछबिलेहुनिहारी॥
 संदरसुखदसकलगुणरासी॥एदोउबंधुशंभुउरवासी॥
 सधासमुद्रसमीपविहाई॥मृगजलनिरखिमरहुकतधा
 ई॥करहुजाइजाकहजोइभावा॥हमतोआजुजन्मफलपा
 वा॥असकहिभलेभूपअनुरागे॥रूपअनूपबिलोकनला
 गो॥देखहिस्तरनभचदेविमाना॥वरषहिसमनकरहिंक
 लगाना॥॥दोहा॥॥जानिस्अवसरसीयतव॥पठवा
 जनकबुलाइ॥चतुरसखीसंदरिसकल॥सादरचलीलि
 वाइ॥३१०॥॥चौपाई॥॥सियशोभानहिजाइबरवानी
 ॥जगदंबिकारूपगुणरवानी॥उपमासकलमीहिलधुला
 गी॥प्राकृतनारिअंगअनुरागी॥सीयवरणितेहिउप
 मादेही॥कोकविकहईअयसकोंलेही॥जौपटतरियती
 यसनसीया॥जगअसियुवतिकहाकमनीया॥गिरासु
 खरतीनअर्धभवानी॥रतिअतिदुखितअतनपतिजा
 नी॥विषवारुणीबंधुप्रियजेही॥कहियरमासमकिमिबै
 देही॥जौछबिसधापयोनिधिहोई॥परमरूपमयकच्छ
 पसोई॥शोभारज्जुमंदरअंगारू॥मथैपाणिकपंकजनि
 जमारू॥॥दोहा॥॥एहिविधिउपजैलक्ष्मिजब॥संदर
 तास्तरवमूल॥तदपिसकोचसमेतकवि॥कहहिसीयस
 मतूल॥३११॥॥चौपाई॥॥चलीसंगलैसखीसयानी
 ॥गावतिगीतमनोहरवाणी॥सोहनबलतनुसंदरसारी
 ॥जगतजननिअतुलितछविभारी॥भूषणसकलसुदेश
 सुहाए॥अंगअंगरचिसखिनबनाए॥रंगभूमिजबसिय
 पगुधारी॥देखिरूपमोहेनरनारी॥हर्षिस्तरनिदुंदुभीब
 जाई॥वर्षिप्रसूनअपसरागाई॥पाणिसरोजसोहजय-

माला॥ अवचदचित्तएसकलभुआला॥ सीयचकितचि
 तरामहिचाहा॥ भएमांहवशसवनरनाहा॥ मुनिसमीपदे
 रवेदोउभाई॥ लगेललकिलोचननिधिपाई॥ ॥ दोहा॥
 ॥ गुरुजनलाजसमाजबडि॥ देखिसीयसकुचानि॥ ला-
 गिविलोकनसरिनतन॥ रघुवीरहिंउरआनि॥ ३१२॥
 ॥ चौपाई॥ ॥ रामरूपअरुसियछविदेखें॥ नरनारिनप-
 रिहरीनिमिषें॥ शोचहिसकलकहतसकुचाहीं॥ विधिस
 नविनयकरहिंमनमाहीं॥ हरुविधिवेगिजनकजडताई
 ॥ मतिहमारीअसदेहुसहाई॥ विनुविचारपणतजिन
 रनाहू॥ सीयरामकरकरैविवाहू॥ जगभलकहहिंभावस
 वकाहू॥ हरकीन्हैअंतहुउरदाहू॥ यहलालसामगनसव
 लीगू॥ रघुवरसांवरजानकीजोगू॥ तवबंदीजनजनक
 बुलाए॥ विरदावलीकहतचलीआए॥ कहनृपजाइक
 हहुपणमोरा॥ चलेभाटहियहर्षनयोरा॥ ॥ दोहा॥ ॥
 योलेवंदीवचनवर॥ सनहुसकलमहिपाल॥ पणविदे
 हकरकहहिंहम॥ भुजाउठाइविशाल॥ ३१३॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ नृपभुजचलविधुशिवधनुराहू॥ गुरुअकठोरबि
 दितसवकाहू॥ रावणबाणमहाभटभारे॥ देखिशरास
 नगार्वाहंसिधारे॥ सोइपुरारिकोदंडकटोर॥ राजसमाज-
 आजुजेंहितोर॥ त्रिभुवनजयसमेतवेंदेहा॥ विनहिविच
 रवरेंदितेहा॥ सानिपणसकलभूपअभिलाषें॥ भटमा
 नोअतिगयमनमापें॥ परिकरबोधिउतेंअकुलाड॥ च
 न्दप्रदंचनशिरनाहें॥ नमकिताकिनकिशिवधनुधरहें
 ॥ उटइनकोटिभांतिचलकरहें॥ जिन्हकंकुचुविचारम
 नमाहें॥ चापसमीपमहोपनजाहें॥ ॥ दोहा॥ ॥ तम-

किधराहधनुमूढनृप॥ उठइनचलहिंचलाइ॥ मनहुपाइ
 भटबाहुबल॥ अधिकअधिकगरुआइ॥ ३१४॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ भूपसहसदशएकहिंबारा॥ लगेउठावनटरइनटा
 रा॥ डिगैननशंभुशरासनकैसैं॥ कामीबचनसतीमनजैसैं
 ॥ सबनृपभएयोगउपहांसी॥ जैसेबिनुबिरागसन्यासी॥
 कीरतिविजयबीरताभारी॥ चलेचापकरबरवसहारी॥
 श्रीहतभएहारिहियराजा॥ बैठेनिजनिजजाइसमाजा॥ नृ
 पबिलोकिजनकअकुलाने॥ बोलेबचनरोषजनुसाने॥
 द्वीपद्वीपकेभूपतिनाना॥ आएसुनिहमजोपणठाना॥ दे
 वदनुजधरिमनुजशरीरा॥ बिपुलबीरआएरणधीरा॥
 ॥ दोहा॥ ॥ कुंअरिमनोहरिविजयबडि॥ कीरतिअतिक
 मनीय॥ पावनहारिविरंचिजनु॥ रचेउनधनुदमनीय॥ ३१५
 ॥ चौपाई॥ ॥ कहहुकाहियहलाभमनभावा॥ काहुन
 शंकरचापचढावा॥ रहोचढाउबतोरबभाई॥ तिलभरिभू
 मिनशकेहुलुडाई॥ अबजनिकोउमापैभटमानी॥ बीर
 विहीनमहीमैजानी॥ तजहुआशनिजनिजगृहजाहू॥
 खानबिधिबैदेहीबिबाहू॥ सकुतजाइजोपणपरिहर
 ऊ॥ कुंअरिकुंआरिरहोकाकरऊ॥ जौजानतबिनुभटभु
 वभाई॥ तौपणकरिहौंतेउनहंसाई॥ जनकबचनसुनि
 सबनरनारी॥ देखिजानकीभएदुरवारी॥ भाषालषण
 टिलभैभीहैं॥ रदपुटफरकतनयनरिसौहैं॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ कहिनशकयरघुबीरडर॥ लगेबचनजनुबाण॥ ना
 इरामपदकमलशिर॥ बोलेगिराप्रमाण॥ ३१६॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ रघुवंशिनमहंजहंकोउहोई॥ तेहिसमाजअस
 कहहिनकोई॥ कहीजनकजशअनुचितवाणी॥ विद्य

मानरघुकुलमणिजानी ॥ सनहुभानुकुलपंकजभानू ॥ क
 होंस्वभावनकलुअभिमानू ॥ जौतुह्मारिअनुशासनपांड
 ॥ कंदुकइवब्रह्मांडउठाऊं ॥ कांचेघटजिमिडारोंफोरी ॥ श
 कौमेरुमूलकइवतोरी ॥ तवप्रतापमहिमाभगवाना ॥ को
 वापुरोपिनाकपुराणा ॥ नाथजानिअसआयसहोऊ ॥ कौ
 तुककरोविलोकियसोऊ ॥ कमलनालजिमिचापचटावों ॥
 शतयोजनप्रमाणलैधावों ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तौरोछत्रकदं
 डजिमि ॥ तवप्रतापबलनाथ ॥ जौनकरोप्रभुपदशपथ ॥
 मुनिनधरौधनुहाथ ॥ ३१७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लषणसको
 पवचनजवबोले ॥ डगमगानिमहिदिग्गजडोले ॥ सकल
 लोकसदभूपडेराने ॥ सियहियहर्षजनकसकुचाने ॥ शु
 रुरघुपतिसबमुनिमनमांहीं ॥ मुदितभएपुनिपुनिपुल
 काहीं ॥ सैनहिरघुपतिलषणनिवारे ॥ प्रेमसमेतनिकट
 बैठारें ॥ विश्वामित्रसमयश्रुभजानी ॥ बोलेअतिसनेह
 मयवाणी ॥ उदहुरामभंजहुभंवचापू ॥ मेटहुतातजनक
 परितापू ॥ सनिगुरुवचनचरणशिरनावा ॥ हर्षविषादन
 कलुउरआवा ॥ ठाटभएउटिसहजसुभाए ॥ ठवनियुवा
 मृगराजलजाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उदितउदयगिरिमंचपर
 ॥ रघुवरबालपतंग ॥ विकसेसंतसरोजवन ॥ हर्षलोचन
 भृंग ॥ ३१८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नृपनकेरिआशानिशिना
 रें ॥ वचननयनअवलीनप्रकाशी ॥ मानीमहिपकुमुदस
 कृचाने ॥ कपटीभृपउल्कलुकाने ॥ भार्गवशोककांकमुनि
 टेना ॥ वर्षाहसुमनजनावहिंसवा ॥ गुरुपदचंदिसहित
 अनुगंगा ॥ राममुनिन्हसनआयसगंगा ॥ सहजहिंन
 नैसकलजगन्नामो ॥ मत्तमंजुवृंजरवरगामो ॥ चलन

रामसबपुरनरनारी॥ पुलकपूरितनभएसरवारी॥ वंदिपि
 तरसरसकृतसम्हारे॥ जोकछुपुएयप्रभावहमारे॥ तौ-
 वधनुमृणालकीनाई॥ तोरहिंरामगणेशगुसाई॥ ॥
 दोहा॥ ॥रामहिप्रेमसमेतलखि॥ सरिवनसमेतबुलाइ
 ॥सीतामातुसनेहवश॥ बचनकहैबिलखाइ॥ ३१६॥
 चौपाई॥ ॥सरिवसबकौतुकदेखनहारे॥ जोउकहाव-
 तहितूहमारे॥ कोउनबुजाइकहवनृपपाहीं॥ एबालक-
 असहठभलनाहीं॥ रावणबाणछुआनहिचापा॥ हारेस
 कलभूपकरिदापा॥ सोधनुराजकुअरकरिदेहीं॥ बाल
 मरालकिमंदरलेहीं॥ भूपसयानपसकलसिरानी॥ सरिव
 गतिकछुजातिनजानी॥ बोलीचतुरसरवीमृदुबा-
 णी॥ तेजवंतलघुगणियनराणी॥ कहंकुंभजकहंसिंधु
 अपारा॥ शोषेउसयशसकलसंसार॥ रविमंडलदेखत
 लघुलागा॥ उदयतासत्रिभुवनतमभागा॥ ॥दोहा॥
 मंत्रपरमलघुजासबश॥ विधिहरिहरसरसर्व॥ महा
 मत्तगजराजकहं॥ वशकरअंकुशखर्व॥ ३२०॥ ॥चौ
 पाई॥ ॥कामकुसुमधनुसायकलीन्हें॥ सकलभुवन
 अपनेबशकीन्हें॥ देवितजियसंशयअसजानी॥ भं
 जबधनुषरामसुनुरानी॥ सरवीबचनसुनिभइपरती
 ती॥ मिटाविषादबडीअतिप्रीती॥ तबरामहिविलोकि
 बैदेही॥ सभयहृदयविनवतिजेहिंतेही॥ मनहींमनम
 नायअकुलानी॥ होहुप्रसन्नमहेशभवानी॥ करहुस
 फलआपनिसेवकाई॥ करिहितहरहुचापगरुआई॥
 गणनायकवरदायकदेवा॥ आजुलगेकीन्हीतबसेवा॥
 बारबारबिनतीसुनिमोरी॥ करहुचापगरुताअतिथो

१४८ बालकांडम् १
 री॥ ॥ दोहा॥ ॥ देखि देखि रघुवीर तनु॥ स्वरमनावध
 रिधीर॥ भरे विलोचन प्रेमजल॥ पुलकावली शरीर॥
 ३२१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ नीके निरखि नयन भरि शोभा॥
 पितु पणसुमिरि बहुरि मनक्षोभा॥ अहह तात दारुण ह
 ठठानी॥ समुजत नहि कलुला भनहानी॥ सखि वस भय
 सिख देइ न कोई॥ बंधु समाज बहु अनुचित होई॥ कहं
 धनु कुलिश हुचाहि कठोरा॥ कह श्यामल मृदु गात कि
 शोरा॥ विधिके हि भांति धरौ उरधीरा॥ शिरिष सुमन-
 किमिवे धिहि हीरा॥ सकल सभा की मति भइ भोरी॥ अब
 मोहि शत्रुचाप गति तोरी॥ निज जड ताली गन पर डारी॥
 होहु हरु अरघुपति हिंनिहारी॥ अति परिताप सीय मन
 माहीं॥ लवनि मेष युग समचलि जाहीं॥ ॥ दोहा॥ ॥ प्रभु
 हिंचिते पुनि चितव माहि॥ राजतलोचन लोल॥ खेलत म
 नसिज मीन युग॥ जनु विधुमंडल डोल॥ ३२२॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी॥ प्रगटन लाज नि-
 शा अचलो की॥ लोचन जलरुह लोचन कोणा॥ जै सें परम
 कृपण कर सोना॥ सकुची व्याकुलता बडि जानी॥ धरिधी
 रज प्रतीति उर आनी॥ तनु मन बचन मोर पण सांचा॥ रघु
 पति पद सरोज मन रगचा॥ तौ भगवान सकल उर वासी॥
 करि हहिं मोहि रघुपति की दासी॥ जेहि के जेहिं परसत्य
 सनेह॥ सो तेहिं मिलि न कलु संदेह॥ प्रभु तन चिते प्रेम
 पण टाना॥ कृपानिधान राम सब जाना॥ सिधहिं विलो-
 कित के उधनु कै सें॥ चितव गरुड लघु व्याल हिं जें सें॥ ॥
 दोहा॥ ॥ लगण लखे उर सुवंशमणि॥ ताके उदर को दं
 ड॥ पुलकित जान बोलें वचन॥ चरण चापि घस्यां ड॥ ३२३॥

॥ चौपाई ॥ ॥ दिशिकुंजरहुकमठअहिकोला ॥ धरहुधर
 धरिधीरनडोला ॥ रामचहहिंशंकरधनुतोरा ॥ होहुस
 स्तनिआयसुमोरा ॥ चापसमीपरामजबआए ॥ नर
 नारिन्हसरसकृतमनाए ॥ सबकरसंशयअरुअजा
 ॥ मंदमहीपनकरअभिमानू ॥ भृगुपतिकेरिगर्वगरु
 ई ॥ सरमुनिवरनकेरिकदराई ॥ सियकरशोचजनकप
 तावा ॥ रानिनकरदारुणदुखदावा ॥ शंभुचापबडवो
 ई ॥ चढेजाइसबसंगबनाई ॥ रामबाहुबलसिं
 अपारा ॥ चहतपारनहिकोउकडहारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रा
 मबिलोकेलोगसब ॥ चित्रलिरखेसेदेरि ॥ चितईसीयक
 पायतन ॥ जानीबिकलविशेखी ॥ ३२४ ॥ ॥ चौपाई ॥
 देरिविपुलबिकलबैदेही ॥ निमिषविहातकल्पसमते
 ही ॥ तृषितवारिविनुजौतनुत्यागा ॥ सुऐकरैकासुधात
 डागा ॥ कावर्षाजबकृषीसरवाने ॥ समयचूकपुनिकाप
 छिताने ॥ असजियजानिजानकीदेखी ॥ प्रभुपुलकेल
 रेखी ॥ गुरुहिप्रणाममनहिमनकीन्हा ॥ अ
 वउठाइधनुलीन्हा ॥ दमकेउदामिनिजिमिघनल
 यऊ ॥ पुनिधनुनभमंडलसमभयऊ ॥ लेतचढावतरवै
 चतगाटे ॥ काहुनलखादेखसबठाटे ॥ तेहिदशमध्या
 मधनुतोरा ॥ भरेउभुवनध्वनिघोरकठोरा ॥ ॥ छंद ॥
 भरिभुवनघोरकठोरस्वरविबाजितजिमारगचले ॥ चि
 करहिंदिगजडोलमहिअहिकोलकूरमकलमले ॥ ६७
 सरअसरमुनिकरकानदीन्हेंसकलबिकलविचारही
 ॥ कोदंडखदेउरामतुलसीजयतिबचनउचारही ॥ ६८ ॥
 ॥ सोरठा ॥ ॥ शकरचापजहाज ॥ सागररघुबरबाहुब

ल॥ बूडेउसकलसमाज॥ चढेजेप्रथमहिंमोहबश॥ ३२५
 ॥ चौपाई॥ ॥ प्रभुदोउखंडचापमहिडारे॥ लेखिलोगसब
 भएसरबारे॥ कौशिकरूपपयोनिधियावन॥ प्रेमवारिअ
 वगाहसुहावन॥ रामरूपराकेशनिहारी॥ बंडतवीचिपु-
 लकावलिभारी॥ वाजेनभगहगहेनिसाना॥ देववधूनाच
 हिंकरिगाना॥ ब्रह्मादिकसरसिद्धसुनीशा॥ प्रभुहिप्रशं
 सहिंदेहींअशीषा॥ वर्षेहिंसुमनरंगबहुमाला॥ गावहिं
 किन्नरगीतरसाला॥ रहीभुवनभरिजयजयवाणी॥ ध-
 नुषभंगध्वनिजातनजानी॥ सुदितकहहिंजहंतहनरना-
 रि॥ भंजेउरामशंभुधनुभारी॥ ॥ दोहा॥ ॥ वंदीमागध
 सूतगण॥ विरदबदहिंमतिधीर॥ करहिंनिछावरिलोग
 सब॥ हयगजधनमणिचोर॥ ३२६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जं
 जिमृदंगशंखसहनाई॥ भेरीचोलदुंदुभीवजाई॥ वाज
 हिंवहुवाजनेसुहाए॥ जहंतहंयुवतिनमंगलगाए॥ सरित
 नसहितहृषितअतिराणी॥ सूरखनधानपराजनुपानी॥
 जनकलहंडसरवजोचविहाई॥ पैरतथकेआहजनुपाई
 ॥ श्रीहनभएभूपधनुदूटै॥ जैसैंदिवसदीपछविछूटै॥
 सिर्याहयसरवरणियकेहिभांती॥ जनुचातकपाइज
 लसुंती॥ रामहिलपणविलोकनकैसैं॥ शशिहिंचकोर
 किशोरकजैसैं॥ शतानंदतवआयसदांन्हा॥ सीतागमन
 समायहिंकोन्हा॥ ॥ दोहा॥ ॥ संगसरवीरुंदरिचनु-
 रि॥ गावहिंमंगलचार॥ गवनीबालमगलगति॥ सुख-
 नाअंगअपार॥ ३२७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुग्विनमध्यसि
 यरौहतिंकैसी॥ उविगणमध्यमहाछविजैसी॥ करस-
 नैजजयमानसुहाई॥ दिन्वाचिजयगोभाजिहिछाई॥ त

नुसंकोचमनपरमउच्छाहू॥ गूढप्रेमलखिपरैनकाहू॥ जाइस
 मीपरामछबिदेषी॥ रहिजनुकुंअरिचित्रअबरेषी॥ चतुरस
 रवीलखि कहाबुजाई॥ पहिरावहुजयमालसहाई॥ सुनतयुग
 लकरमालउठाई॥ प्रेमबिवसपहिराइनजाई॥ सोहतजनुयुग
 जलजसनाला॥ शशिहिंसभीतदेतजयमाला॥ गावहिंछबिअ
 वलोकिसहली॥ सियजलमालरामउरमेली॥ ॥ सोरठा॥ रघु
 वरउरजयमाल॥ देखिदेववरषहिसमन॥ सकुचेसक
 लभुआल॥ जनुविलोकिरविकुमुदगए॥ ३२८॥ ॥ चौ
 ई॥ ॥ पुरअरुव्योमवाजनेबाजे॥ खलभएमलिन-
 साधुसबराजे॥ सरकिन्नरनरनागमुनीशा॥ जयजय
 कहिदेहिंअशीषा॥ नाचहिंगावहिंविबुधवधूटी॥
 बारबारकुसुमावलिलूटी॥ जहतहंविप्रवेदध्वनिकर
 हीं॥ वंदीबिरदाबलिउच्चरहीं॥ महिपातालनाकयशव्या
 ॥ रामबरीसियभजेउचापा॥ करहींआरतीपुरनर-
 नारी॥ देहिनिछावरिवित्तविसारी॥ सोहतसीयरामकी
 ॥ छविभृंगारमनहुंएकदोरी॥ सरवीकहहिंमभुपद
 सीता॥ करतिनचरणपरसअतिभीता॥ ॥ दोहा॥
 ॥ गौतमतीयगतिसरतिकरि॥ नहिपरसतिपदपाणि॥
 नबिहंसेरघुवंशमणि॥ प्रीतिअलौकिकजानि॥ ३२९॥
 ॥ चौपाई॥ ॥ तबसियदेखिभूपअभिलाषे॥ कूरकपू
 तमूढमनमाषे॥ उठिउठिपहरिसनाहअभागे॥ जहत
 हंगालवजावनलागे॥ लेहुछुडाइसीयकहकोऊ॥ धरि
 बांधहुनृपबालकदोऊ॥ तोरैधनुषचाडनहिसरई॥ जी
 तहमहिंकुअरिकोवरई॥ जौबिदेहकछुकरैंसहाई॥
 जीतहुसमरसहितदोउभाई॥ साधुभूपबोलेकनिबा

एणी॥ राजसमाजहिंलाजलजानी॥ बलप्रतापवीरताब-
 डाई॥ नाकपिनाकहिंसंगसिधाई॥ सोइभूरताकिअबक
 हुपाई॥ असविधितौविधिसुहमसिलाई॥ ॥दोहा॥
 देखहुरामनयनभरि॥ तजिईर्षामनमोहु॥ लषणरोष-
 पावकप्रबल॥ जानिशलभजनिहोहु॥ ३३०॥ ॥चौपाई॥
 ॥वैनतेयबलिजिमिचहकागू॥ जिमिशशचहहिंनागअ-
 रिभागू॥ जिमिचहकुशलअकारणकोहो॥ सर्वसंपदाचह
 हिंशिवद्रोही॥ लोभीलोलकुलकीरतिचहई॥ अकलंकता-
 फिकामीलहई॥ हरिपदविमुखपरमगतिचाहा॥ तसतुह्मा
 रलालचनरनाहा॥ कोलाहलसुनिसीयशकानी॥ सरवीलि
 बाइगईजहंराणी॥ रामसुभायचलेगुरुपाहीं॥ सियसनेह
 वरणतमनमाहीं॥ रानिनसहितशोचवशसीया॥ अवधौ
 विधिहिंकहाकरणीया॥ भूपवचनसुनिइतउतकहहीं॥
 लपणरामडरबोलिनशकहीं॥ ॥दोहा॥ ॥अरुणनयन
 भृकुटीकुटिल॥ चितवतनृपनसकोप॥ मनहुमत्तगजगण
 निरसि॥ सिंहकिशोरहींचोप॥ ३३१॥ ॥चौपाई॥ ॥स्व-
 रभरदंस्त्रविकल्पुनारी॥ सबमिलिदेहींमहीपनगारी॥
 तैहअवसरसुनिशिवधनुभंगा॥ आएउभृगुकुलकमल
 पतंगा॥ दंस्त्रमहापसकलसकुचाने॥ बाजकपटजनुलया
 लुकाने॥ गौरशरीरभूतिभलिभ्राजा॥ भालविशालभिपुं
 इतिराजा॥ शोभजटाशशिवदनसुहावा॥ रिसिवशकडु
 कअरुणहांइआवा॥ भृकुटीकुटिलनयनरिसिगने॥ स
 दजतिचिंतवतमनहुंसिसाने॥ दृषभकंधरउरवाहुविशा
 ला॥ चारुजनंदमालसुगच्छाला॥ कटिमुनिचसननृगदुद
 बोधे॥ धनुशरकरकुदारकलकांधे॥ ॥दोहा॥ ॥शान

वेषकरणीकठिन॥बरणिनजाइस्वरूप॥धरिसुनितनुज
 नुबीररस॥आएउजहंसबभूप॥३३२॥ ॥चौपाई॥ ॥दे
 रवतभृगुपतिवेषकराला॥उठेसकलभयबिकलभुआला
 ॥पितासमेतकहिकहिनिजनामा॥लगेकरणसबदंडम
 णामा॥जेहिंसभावचितवहिंहितजानी॥सोजानैजनु-
 आयुरबुदानी॥जनकबहोरिआइशिरनावा॥सीयबुला
 इप्रणामकरावा॥आशिषदीन्हसरवीहरषानी॥निजसमा
 जलैगईसयानी॥विश्वामित्रमिलेपुनिआई॥पदसरोज
 मेलेदोउभाई॥रामलषणदशरथकेदोटा॥दीन्हअशीष
 जानिभलजोटा॥रामहिंचितयरहेथकिलोचन॥रूपअ
 पारमारमदमोचन॥ ॥दोहा॥ ॥बहुरिविलोकिबिदे
 हसन॥कहुहुकहाअतिभीर॥पूछतजानअजानजिमि
 ॥आपेउकोपशरीर॥३३३॥ ॥चौपाई॥ ॥समाचार
 कहिजनकसुनाए॥जेहिकारणमहीपसबआए॥सुन
 तबचनफिरिअनतनिहारे॥देखेचापरखंडमहिडारे॥अ
 तिरिसबोलेबचनकठोरा॥कहुजडजनकधनुषकेहितो
 रा॥वेदिदरवाउमूदननुआजु॥उलटौमहीजहंलगितब
 राजू॥अतिडरउत्तरदेतनृपनाहीं॥कुटिलभूपहरषेम
 नमनमाहीं॥सरसुनिनागनगरनरनारी॥शोचहिंसक
 लआसउरभारी॥मनपछितातिसीयमहतारी॥विधि
 संवारिसबवातविगारी॥भृगुपतिकरसुभावसुनिसी
 ता॥अर्धनिमेषकल्पसमबीता॥ ॥दोहा॥ ॥सभय
 विलोकेलोगसब॥जानिजानकीभीरु॥ददयहर्षविषा
 दकलु॥बोलेश्रीरघुवीरु॥३३४॥ ॥चौपाई॥ ॥नाथ
 शंभुधनुभंजनिहारा॥होइहिंकोउएकदासतुहारा॥आ

यस्तकहाकहियकिनमोही॥ सुनिरसायबोलेमुनिको-
 ही॥ सेवकसोजुकरैसेवकाई॥ अरि करुणी करिकरिय-
 लराई॥ सुनहुगामजेहि शिवधनु तोरा॥ सहसबाहुसम
 सोरिपुमोरा॥ सोबिलगाउविहाइसमाजा॥ नतुमारेजैहैं
 सवराजा॥ सुनिमुनिबचनलषणमुसुकाने॥ बोलेपरशु
 धरहिंअपमाने॥ बहुधनुहींतोरेउलरिकाई॥ कबहुनअ
 सरिसिकीन्हगोसाई॥ इहिधनुपरममताकेहिंहेतू॥ सु
 निरसायकहंभृगुकुलकेतू॥ ॥ दोहा॥ ॥ रेनृपबालक
 कालवस॥ बोलततोहिनसंभार॥ धनुहोसमत्रिपुरारि
 धनु॥ विदितसकलसंसार॥ ३३५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ लष
 एकहाहंसिहमरेजाना॥ सुनहुदेवसबधनुषसमाना॥
 काक्षतिलाभजीएधनुतोरे॥ देखारामनयनकेकोरे॥ छु
 वतट्टरघुपतिहिनदोषू॥ मुनिविनुंकाजकरियकतरो
 पू॥ बोलेचितइपरशुकीओरा॥ रेशदसूनेसिसुभाउन
 मोरा॥ बालकबोलिवधौंनहितोही॥ केवलमुनिजडजा
 नंसिमोही॥ बालब्रह्मचारीअनिकोही॥ विश्वविदितहा
 श्रीकुलदोही॥ भुजबलभूमिभूपविनुकीन्ही॥ विपुलवार
 महिदेवनदोन्ही॥ सहसबाहुभुजछेदनहारा॥ परशुवि
 लोक्तमहापनुमारा॥ ॥ दोहा॥ ॥ मानुपितदिंजनिशोन

वश॥ करसिमहीपकिशोर॥ गर्भनकेअर्भकदलन॥ परश
 मोरअतिघोर॥ ३३६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ बिहंसिलषणबोले
 मृदुबाणी॥ अहोमुनीशमहाभटमानी॥ पुनिपुनिमोहिदे
 खावकुठारा॥ चहतउडावनफुंकिपहारा॥ इहांडखकहानि
 यकोउनाहीं॥ जेतर्जनीदेखतडरिजाहीं॥ देखिकुठारश
 राशनबाणा॥ मैकछुकहासहितअभिमाना॥ भृगुकुल
 समुजिजनेउबिलोकी॥ जोकछुकहहुसहौरिसरोकी॥
 सरमहिसरहरिजनअरुगाई॥ हमरेकुलइन्हपरनभू
 राई॥ वधैपापअपकीरतिहारे॥ मारतहुंपापरियतुह्मा
 रे॥ कौटिकुलिशसमबचनतुह्मारा॥ अर्थधरहुधनुबा
 णकुठारा॥ ॥ दोहा॥ ॥ जोविलोकिअनुचितकहेउ॥ क्ष
 महुमहामुनिधीर॥ सनिसरोषभृगुवंशमणि॥ बोलेगि
 रागंभीर॥ ३३७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ कौशिकसनहुमंदय
 हबालक॥ कुटिलकालवशनिजकुलघालक॥ भानुवंश
 राकेशकलंकू॥ निपटनिरंकुशअबधअशंकू॥ कालकव
 लहोइहिंक्षणमाहीं॥ कहौंपुकारिरवोरिमोहिनाहीं॥ तु
 महटकहुजोचहहुउवारा॥ कहिप्रतापबलरोषहमारा॥
 लषणकहेउमुनिसयशतुह्मारा॥ तुमहिअछतको
 बरणेपारा॥ अपनेसुरवतुमआपनिकरणी॥ बारअ
 नेकभांतिबहुबरणी॥ नहिसंतोषतोपुनिकछुकहहु॥
 जनिरिसरोकिदुसहदुरवसहहु॥ वीरवृत्तितुमधीर
 अक्षोभा॥ गारीदेतनपावहुशोभा॥ ॥ दोहा॥ ॥ शू
 रसमरकरणीकरहि॥ कहिनजनावहिंआपु॥ विद्यमा
 नरणापाडरिपु॥ कायरकथहिंपलापु॥ ३३८॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ तमतौकालहांकिजनुलावा॥ बारबारमोहिला-

गिबुलावा॥ स्तनतलषणकेवचनकठोरा॥ परशुसुधारि
 धरेउकरघोरा॥ अवजनिदेइदोषमाहिलोगू॥ कदुवादी
 बालकवधयोगू॥ बालविलोकिबहुतमैवाचा॥ अबयह
 मरणहारभासांचा॥ कौशिककहाक्षमियअपराधू॥ बा
 लदोषगुणगणहिंनसाधू॥ करकुठारमैअकरणकोही
 ॥ आगैअपराधीगुरुद्रोही॥ उत्तरदेतछाडौंविनुमारै॥
 केवलकौशिकशीलतुह्मारै॥ नतुएहिकाटिकुठारकठोरे
 ॥ गुरुहिउरिणहोतेउअसथोरे॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गाधिसुअ
 नकहृदयहंसि॥ मुनिहिंहरेहरेसूज॥ अजगवरवंडेउऊ
 खजिमि॥ अजहुनबूजअबूज॥ ३३६॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ क
 हेउलषणमुनिशीलतुह्मारा॥ कोनहिजानविदितसंसार
 ॥ मातुहिपितुहिउरिणभएनीके॥ गुरुअणारहाशोचवड
 जीके॥ सोजनुहमरेहिमाथेकादा॥ दिनचलिगएव्याजब
 हुवादा॥ अवअनियव्यवहरिहाबोली॥ तुरतदैवमैथै
 लीरबोली॥ स्तनिकदुवचनकठोरसुधारा॥ हाहाकहि-
 सवल्लोगपुकारा॥ भृगुवरपरशुदेखावहुमोही॥ विप्रवि-
 चारिवंचौनृपद्रोही॥ मिलेनकवहुंसुभटरणगाटे॥ द्विज
 देवताघरहिंकेवाटे॥ अनुचितकहिसवल्लोगपुकारे॥ र
 घुपतिसयनहिलयनिवारे॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लषणउतरआ
 हुनिआहुतिसरिस॥ भृगुपतिकोपहुशानु॥ बटनदेखि
 जलसमचनन॥ बोलैरघुकुलभानु॥ ३३७॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ नाथकरहुवारकपरछोह॥ शहदुधमुखकरियनको
 ह॥ जोपेयभुमभावकहुजाना॥ नौकिचरावरकरतअया
 ना॥ नौनारिकाकहुअनगारिकरही॥ गुरुपितुमानुमोद
 मनभरही॥ कौरवसगाशिशुसेवकजानी॥ नुमसमशीन

लधीरमुनिज्ञानी ॥ रामवचनसुनिकछुकजुडाने ॥ कहि
 कछुलषणबहुरिसुसुकाने ॥ हंसतदेखिनखशिखरिसि
 व्यापी ॥ रामतोरभाताबंडपापी ॥ गौरशरीरश्याममन-
 माहीं ॥ कालकूटमुखपयमुखनाहीं ॥ सहजदेहअनुह
 रैनतोही ॥ नीचमीचुसमदेखतमोही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लष
 एकहेउहंसिसुनहुमुनि ॥ क्रोधपापकरमूल ॥ जेहिबश
 जनअनुचितकरहीं ॥ चरहिंविश्वप्रतिकूल ॥ ३४१ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ मैतुहमारअनुचरमुनिराया ॥ परिहरिकोप
 करियअवदाया ॥ दूटचापनहिंजुरहिंरिसाने ॥ बैठिय
 होइहिंपायपिराने ॥ जौअतिप्रियतौकरियउपाई ॥ जौ
 रियकोउबडगुणीबुलाई ॥ बोलतलषणहिंजनकडेरा
 हीं ॥ मुष्टकरहुअनुचितभलनाहीं ॥ थरथरकांपहींपुर
 नरनारी ॥ छोटकुमारखोटअतिभारी ॥ भृगुपतिसुनि-
 सुनिनिर्भयबाणी ॥ रिसतनुजरैहोइबलहानी ॥ बोलेरा
 महिंदेइनिहोरा ॥ बचौबिचारिबंधुलघुतोरा ॥ मनमलीन
 तनुसुंदरकैसें ॥ विषरसभराकनकघटजैसें ॥ ॥ दोहा ॥
 सुनिलक्ष्मणबिहंसेबहुरि ॥ नयनतरेरेराम ॥ गुरुसमीप
 गवनेसुकुचि ॥ परिहरिवाणीवाम ॥ ३४२ ॥ ॥ चौपाई ॥
 अतिबिनीतमृदुशीतलबाणी ॥ बोलेरामजोरियुगपाणी
 ॥ सुनहुनाथतुहसहजसुजाना ॥ बालकवचनकरियन
 हिकाना ॥ वररैबालकएकसुभाऊ ॥ इनहिंसंतविदूष-
 हिंकाऊ ॥ निन्हनाहीकछुकाजबिगारा ॥ अपराधीमैना-
 थतुहारा ॥ कृपाकोपबधबंधगोसाई ॥ मोपरकरियदा
 सकीनाई ॥ कहियबेगिजेहिंविधिरिसजाई ॥ मुनिनाय
 कसोडकरियउपाई ॥ कहसुनिरामजाइरिसकैसें ॥ अज

हुअनुजतवचितवअनैसैं ॥ एहिकेकंठकुठारनदीन्हा ॥
 तोमेंकहाकोपकरिकीन्हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गर्भअवहिंअव
 निपरमणि ॥ सुनिकुठारगतिघोर ॥ परशुअछतदेखौंजि
 यत ॥ वैरीभूपकिशोर ॥ ३४३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वहनहाथ
 दहीरिसछाती ॥ भाकुठारकुंठितनृपघाती ॥ भएउबामवि
 धिफिरेउसभाऊ ॥ मोरेहृदयकृपाकसकाऊ ॥ आजुदया
 दुरवदुसहसहावा ॥ सुनिसौमित्रिविहंसिशिरनावा ॥ ना
 यकृपामूरतिअनुकूला ॥ बोलतवचनऊरतजनुफूला ॥
 जौअसकृपाजरैसुनिगाता ॥ क्रोधभएनतुराखविधाता ॥
 ॥ देखुजनुकहठिवालकएहु ॥ कीन्हचहतजडयमपुरगे
 हु ॥ वेगिकरहुकिनआंखिनओटा ॥ देखतछोटखोटनृ
 दोटा ॥ विहंसैलषणकहासुनिपाहीं ॥ सुंदियआंखिकत-
 हुकोउनाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परशुरामतवरामप्रति ॥ बोले
 वचनसक्रोध ॥ शंभुसरासनतोडिशठ ॥ करसिहमारप्रबो
 ध ॥ ३४४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बंधुकहेंकहुसंमततोरे ॥ तूंछ
 लविनयकरसिकरजोरे ॥ करुपरितोषमोरसंग्रामा ॥ नाहि
 तछांडुकहाउवशमा ॥ छलतजिकरहुसमरशिवद्रोही ॥
 बंधुसहितननुमारौंतोही ॥ भृगुपतिकहहिंकुठारउत्थाए ॥
 मनमुस्ककाहिरामशिरनाए ॥ गुणहुलयणकरहुमपररो
 प ॥ कतहुंसुधाडहुतेंवडदोष ॥ देवजानिशंकासवका-
 ह ॥ वक्रचंद्रनहिग्रसेनराह ॥ रामकहेंउरिसितजियमुनी
 गा ॥ करकुठारआगेयहजांसा ॥ नहिंरिशिजाडकारिय
 सोइस्वामी ॥ मोहिजानिआपनअनुगामी ॥ ॥ दोहा ॥
 प्रभुसंवदहिंसमरकस ॥ तजहुविप्रवररोष ॥ वेपविलो
 चित्तहेंसिकछु ॥ बालकहेंनहिदोष ॥ ३४५ ॥ ॥ चौपाई ॥

॥देखिकुठारबाणधनुधारी॥भइलरि कहिरिसिबीरवि-
चारी॥नामजानपैतुमहिनचीन्हा॥वंशसुभावउत्तरतेहिं
दीन्हा॥जौतुमअचतेहुमुनिकीनाई॥पदरजशिरशिभुध-
रतगोसाई॥क्षमहुचूकअनजानतकेरी॥चहियविप्रउर
कृपाघनेरी॥हमहिंतुमहिंसरबरिकसनाथा॥कहुहुतोक
हांचरणकहमाथा॥राममात्ररघुनामहमारा॥परशुस-
तबडनामतुह्मारा॥देवएकगुणधनुषहमारे॥नवगु-
णपरमपुनीततुह्मारे॥सबप्रकारहमतुमसनहारे॥क्ष-
महुविप्रअपराधहमारे॥ ॥दोहा॥ ॥बारबारमुनिवि-
वर॥कहारामसनराम॥बोलेभृगुपतिसरुषहोइ॥तु-
हुबंधुसमबाम॥३४६॥ ॥चौपाई॥ ॥निपटहिंहिजक
जानसिमोही॥मैजसविप्रसुनाऊंतोही॥चापसुबा-
शरआहुतिजानू॥कौंपमोरअतिथोरकृशानू॥समिध
सेनचतुरंगसहाई॥महामहीपभएपशुआई॥मैएहिप-
रशकाटिबलिदीन्हा॥समरयज्ञजगकोटिनकीन्हा॥मो-
रप्रभावविदितनहितोरे॥बोलसिनिदरिविप्रकेभोरे॥भं-
उचापदापबडबादा॥अहमितिमनहुंजीतिजगठादा॥
रामकहामुनिकहुहुविचारी॥रिसिअतिबडोलघुचूक
हमारी॥छुवतहिंदूटपिनाकपुराणा॥मैकेहिहेतुकरीअ-
॥ ॥दोहा॥ ॥जौहमनिडरहिविप्रवर॥सत्य
सुनहुभृगुनाथ॥तौअसकोजगसुभटजिहिं॥भयबश
नावहिंमाथ॥३४७॥ ॥चौपाई॥ ॥देवदनुजभूपति-
भटनाना॥समबलअधिकहोउबलवाना॥जौरणहम
रहिंकोऊ॥लरहिंसकेनकालकिनहोऊ॥क्षत्रि-
यतनुधरिसमरसंकाना॥कुलकलंकतेहिपामरजाना॥

कहौस्वभावनकुलहिप्रशंसी॥ कालहुडरहिंनरणरघुवंशी
 ॥ विप्रवंशकीअसप्रभुताई॥ अभयहोइजोतुमहिंदेराई
 ॥ सुनिमृदुगूढबचनरघुपतिके॥ उधरेपठलपरशुधरमनि
 के॥ रामरमापतिकरधनुलेहु॥ रवैचहुमोरमिटैसंदेहु॥ दे
 तचापआपुहिंचदिगएऊ॥ परशुराममनविस्मयभएऊ॥
 ॥ दोहा॥ ॥ जानारामप्रभावतब॥ पुलकप्रफुलितगात॥
 जोरिपाणिघोलेबचन॥ हृदयनप्रेमसमात॥ ३४८॥ ॥
 चौपाई॥ ॥ जयरघुवंशकमलबनभानू॥ गहनदनुजकु
 लदहनकुशानू॥ जयसरविप्रधेनुहितकारी॥ जयमदमो
 हकोहभ्रमहारी॥ विनयशीलकरुणायुणसागर॥ जय
 निवचनरचनान्प्रतिआगर॥ सेवकसरवदसभगसब
 अंगा॥ जयशरीरछंचिकोटिअनंगा॥ करौंकहामुखएक
 प्रशंसा॥ जयमहेशमनमानसहंसा॥ अनुचितबहुतकहे
 उअज्ञाता॥ क्षमहुक्षमामंदीरदोउभाता॥ कहिजयजय
 जयरघुकुलकेनू॥ भृगुपतिगएबनहितपहेनू॥ अवभय
 कुटिलमहोपडेराने॥ जहतहंकायरगवहिंपराने॥ ॥ दो
 हा॥ ॥ देवनदीन्हीदुंदुभी॥ प्रभुपरचरपहिंपूल॥ हरये
 पुरनरनारिसव॥ मिटामोहमयभूल॥ ३४९॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ अतिगद्गहेवाजनैवाजे॥ सर्वाहमनोहरमंगलसा
 जै॥ घृथयुथमिलिसुखिवसनयनी॥ करहिंगानकल
 कोकिलनयनी॥ सरनचिदेहकरवणिनजाई॥ जन्यदरि
 द्रमनहुंनिधिपाई॥ विगतत्रासभईसोयसुखारा॥ जनु
 निधुउदयनकोरकुमारा॥ जनककीन्हकौशिकहिंपरा
 गा॥ प्रभुप्रसादधनुभंजेउरमा॥ मोहिफलकरुणकीन्ह
 दुहंगाई॥ अवतौउचितगोर्ताहयगोसाई॥ कहेसुनि

सनुनरनाथप्रवीणा॥रहाविवाहचापआधीना॥दूततहि
 धनुभगउविआहू॥सरनरनागविदितसबकाहू॥ ॥दो-
 हा॥ ॥तदपिजाइतुमकरहुअब॥यथावंशव्यवहार॥
 वृजिविप्रकुलदृढगुरु॥वेदविदितआचार॥३५०॥ ॥
 चौपाई॥ ॥दूतअवधपुरपठबहुजाई॥आनहिनुपद
 शरथहिबुलाई॥मुदितराउकहिभलेहिकुपाला॥पठए
 दूतबोलितेहिकाला॥बहुरिमहाजनसकलबुलाए॥आ
 इसबहिसादरशिरनाए॥हाटबाटमंदिरसरवासा॥नग
 रसंचारहुचारिहुपाशा॥हरषिचलेनिजनिजगृहआए॥
 पुनिपरिचारकबोलिपठाए॥रचहुविचित्रवितानबनाई
 ॥शिरधरिवचनचलेसंचुपाई॥पठाएबोलिगुणीतिन्हना
 ना॥जेवितानविधिकुशलसुजाना॥विधिहिबंदितिन्हकी
 न्हअरंभा॥विरचेकनककदलिकेखंभा॥ ॥दोहा॥ ॥
 हरितमणिनकेपत्रफल॥पद्मरागकेफूल॥रचनादेखिवि
 चित्रअति॥सुनिविरंचिकरभूल॥३५१॥ ॥चौपाई॥
 वेणुहरितमणिमयसबकीन्हें॥सरलपर्णपरहिंनहिचो
 न्हें॥कनककलितअहिबेलिबनाई॥लखिनहिपरैसप
 र्वसुहाई॥तेहिकेरचिपचिबंधबनाए॥बिचबिचमुक्ता
 दामसुहाए॥माणिकमरकतकुलिशपरौजा॥चीरको
 रपचिरचैसरोजा॥किएभृंगबदरंगबिहंगा॥गुंजहिंकूज
 हिंपवनप्रसंगा॥सुरप्रतिमाखंभनगटिकाटी॥मंगलद्र
 व्यलिसबठाटी॥चौकभांतिअनेकपुराई॥सिंदुरमणि
 मयसहजसुहाई॥ ॥दोहा॥ ॥सौरभपल्लवसुभगसु
 ठि॥किएनीलमणिकोर॥हेममोरमरकतधवरि॥लस
 तपादमयडोर॥३५२॥ ॥चौपाई॥ ॥रचेरुचिरवरबं-

दिनवारे॥ मनहुं मनोभव फंदसं वारे॥ मंगल कलश अने
 कवनाए॥ ध्वज पताक पट चमर सह्याए॥ दीप मनोहर म
 णि मय नाना॥ जाइन बरणि विचित्र विताना॥ जेहि मंड
 प दुलहिं निवै देही॥ सो वर ऐं अ समतिक विकेही॥ दुल
 ह गम रूप गुण सागर॥ सो वितान तिहुं लोक उजागर॥ ज
 नक भवन की शोभा जैसी॥ गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी
 ॥ जेति रतिते हिं सम यनिहारी॥ तेहिं लघुलहे भुवन दश
 चारी॥ जोरु संपदानि जगृह सोहा॥ सो विलोकि स्फुर नाय
 क मोहा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बसैन गरजे हिलक्षिकरि॥ कपट
 नारि चरवैष॥ तेहि पुर की शोभा कहव॥ सकुचै सादर शेष
 ॥ ३५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पहुंचे दूत राम पुर पावन॥ हरये
 नगर विलोकि सह्यावन॥ भूपहारति नृखवरि जनार्द॥ द
 शरथ नृप सुनिलि एबुलाई॥ कारि प्रणामति नृपांती दीन्ही
 ॥ मुदित महां पआ पुठिलीन्ही॥ वारि विलोचन बांचत पां
 ती॥ पुलक गात आई भरि छाती॥ राम लषण कर उर वर
 चीती॥ रहि गए कहत नखा दीमीठी॥ पुनि धरि धीर पत्रि
 कावाची॥ हरषी सभाचात सुनिसाची॥ खेलत रहै तहां सु
 धिपाई॥ आण भरत सहित हो भाई॥ पूछत अनिसनेह सकु
 नाई॥ तान कहों तें पांती आई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुशल प्राण
 प्रिय बंधु दोउ॥ यह हिं कहहु केहि देश॥ सुनि सनेह साने
 यचन॥ बांची बहुरि नरेश॥ ३५४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनि
 पांति पुलकें दोउ आता॥ अधिक सनेह समात न गाना॥ प्री
 ति पुनीत भवन की देपी॥ सकल सभा स्फुरवलहे उविशोपी॥
 नव नृप दूत नि कटवै टारे॥ मधुर मनोहर वचन उचारे॥ भो
 सा कहहु कुशल दोउ चारे॥ तुम नीक निजन यन निहाउ॥

मलगौरधरैधनुभाथा ॥ वयकिशोरकौशिकमुनिसाथा ॥
 पहिचानेहुतौकहहुसभाऊ ॥ प्रेमविवशपुनिपुनिकहराऊ ॥
 ॥ जादिनतेंमुनिगएलिवाई ॥ तबतेंआजुसांचिसुधिपा
 ई ॥ कहहुबिदेहकवनविधिजाने ॥ सुनिप्रियबचनदूत-
 सुसुकाने ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनहुमहीपतिसुकुटमणि ॥ तु
 मसमधन्यनकोउ ॥ रामलषणजिनकेतनय ॥ विश्वविभू
 षणदोउ ॥ ३५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पूछनयोगनतनयतु-
 ह्मारे ॥ पुरुषसिंहतिहुंपुरउंजियारे ॥ जिनकेयशप्रताप
 केआगे ॥ शशिमलीनरविशीतललागे ॥ तिनकहकहिय
 नाथकिमिचीन्हे ॥ देखियरविकिदीपकरलीन्हे ॥ सीयस्व
 यंवरभूषअनेका ॥ सिमिटेसुभटएकतेंएका ॥ शंभुसरास
 नकाहुनटारा ॥ हारेसकलभूषवरियारा ॥ तीनिलोकमहं
 जेभटमानी ॥ सबकीशक्तिशंभुधनुभानी ॥ शकैउठाइसु
 रासुरमेरू ॥ सोउहियहारिगएउकरिफेरू ॥ जैहिंकोतुक
 शिवशैलउदावा ॥ सोउतेंहिंसभापराभवपावा ॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ तहांरामरघुवंशमणि ॥ सुनियमहामहिपाल ॥ भजे
 उचापप्रयासबिनु ॥ जिमिगजपंकजनाल ॥ ३५६ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ सुनिसरोषभृगुनायकआए ॥ बहुतभांतिनिन
 आरिखदेखाए ॥ देखिरामबलनिजधनुदीन्हा ॥ करिबहु
 बिनयगवनवनकीन्हा ॥ राजनरामअतुलबलजैसें ॥ ते
 जनिधानलषणपुनितैसें ॥ कंपहिंभूषबिलोकतआके ॥
 जिमिगजहरिकिशोरकेताके ॥ देवदेखितबबालकदो
 ऊ ॥ अवनिआखितरआवनकोरू ॥ दूतबचनरचना
 प्रियलागी ॥ प्रेमप्रतापवीररसपागी ॥ सभासमेतराउ-
 अनुरागे ॥ दूतहिंदेननिछावरिलगे ॥ कहिअनीतितेसू

दहिकाना॥ धर्मविचारिसबहिंसकरमाना॥ ॥ दोहा॥
 तबउठिभूपवसिष्ठकहं॥ दीन्हपत्रिकाजाइ॥ कथासुना
 इगुरुहिंसब॥ सादरदूतबुलाइ॥ ३५७॥ ॥ चौपाई॥
 स्तनिबोले सुनिअतिसरवपाई॥ पुण्यपुरुषकहं महिसु
 खछाई॥ जिमिसरितासागरमहंजाहों॥ यद्यपिताहिका
 मनानाहीं॥ तिमिसरवसंपतिविनहिबुलाए॥ धर्मशील
 पहंजाहिसहाए॥ तुमगुरुविप्रधेनुसरसवी॥ तसपुनीत
 कौशल्यदेवी॥ सकृतीतुमसमानजगमाहीं॥ भएउनहै
 कोउहोनेउनाहीं॥ तुमतेअधिकपुण्यबडकाके॥ राजन
 रामसरिसक्तजाके॥ वीरविनीतधर्मव्रतधारी॥ गुणसा
 गरबालकवरचारी॥ तुमकहंसर्वकालकल्याणा॥ सजहु
 वरातबजाइनिसाना॥ ॥ दोहा॥ ॥ चलेउबेगिस्तनियु
 रुचचन॥ भलेइंनथशिरनाइ॥ भूपतिगवनेभवनतब॥
 दूतन्हिवासदिवाइ॥ ३५८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ राजासवर-



निनाननुनां॥ जनकपत्रिकावांचिसुनाइ॥ स्तनिसेदेग
 मगदगवना॥ अपरनथ्यासबभूपवयानी॥ प्रेममपुदि

तराजाराणी॥मनहुंशिरिवनसुनिवारिदवाणी॥मुदित-
 आशीषदेहिंशुरुनारी॥अतिआनंदमगनमहतारी॥ले-
 हिपरस्परअतिप्रियपांती॥हृदयलगाइजुडावहिंछाती॥
 ॥रामलषणकीकीरतिकरणी॥बारहिंबारभूपवरवरणी॥
 ॥मुनिप्रसादकहिद्वारसिधाए॥रानिन्हतबमहिदेवबुला-
 ये॥दिएदानआनंदसमेता॥चलेविप्रवरआशिषदेता॥
 ॥सौरठा॥ ॥याचकलियेहंकारी॥दीन्हनिछावरिकोटि-
 विधि॥चीरजीवहुसुतचारि॥चक्रवर्तिदशरथके॥३५६॥
 ॥चौपाई॥ ॥कहतचलेपहिरेंपदनाना॥हरषिहनेगहग-
 हैनीसाना॥समाचारसबलोगनपाए॥लागेघरघरहौंन-
 बधाए॥भुवनचारिदशभरेउउछाहू॥जनकसुतारधु-
 वीरविवाहू॥सुनिशुभकथालोगअनुरागे॥मगगृहगली-
 संवारनलागे॥यद्यपिअवधसदैवसुहावनि॥रामपुरी-
 मंगलमयपावनि॥तदपिप्रीतिकीरीतिसुहाई॥मंगलर-
 चनारचीबनाई॥ध्वजपताकपटचामरचारू॥छावापर-
 मविचित्रबजारू॥कनककलशतोरणमणिजाला॥हर-
 ददूबदधिअक्षतमाला॥ ॥दोहा॥ ॥मंगलमयनिज-
 निजभवन॥लोगनरचेबनाइ॥वीथीसीचिचतुरसम॥
 चौकेचारुपुराइ॥३६०॥ ॥चौपाई॥ ॥जहतहंयूथयू-
 थमिलिभामिनी॥सजिनवसससकलद्युतिदामिनी॥वि-
 धुवदनीमृगशावकलोचनी॥निजस्वरूपरतिमानवि-
 मोचनी॥गावहिंमंगलमंजुलवाणी॥सुनिकलरवकल-
 कंठलजानी॥भूपभवनकिमिजाइबषाना॥विश्वविमोह-
 नरचेउविताना॥मंगलद्रव्यमनोहरनाना॥राजतबाज-
 तविपुलनिसाना॥कतहुंविरदबंदीउच्चरही॥कतहुंवे

दधनिभूसरकरहों ॥ गावहिंसंदरीमंगलगीता ॥ लैलैना
 मरामअरुसीता ॥ बहुतउछाहभवनअतिथोरा ॥ मानहुं
 उमगिचलाचहुंओरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शोभादशरथभवन
 की ॥ कोकविवरणोपार ॥ जहांसकलसुरशीर्षमणि ॥
 रामलीन्हअवतार ॥ ३६१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूपभरत
 सुनिलियेबुलाई ॥ हयगजस्यंदनसाजहुजाई ॥ चलहु
 वेगिरसुवीरवराता ॥ सनतपुलकपूरेदोउभ्राता ॥ भरतस
 कलसालनीबुलाए ॥ आयसदीन्हसुदितउठिधाए ॥ रचि
 रचिजीनतुरगतिनसाजे ॥ वर्णवर्णवरवाजिविराजे ॥ स
 भगसकलउटिचंचलकरणी ॥ हयइवजरतधरतपगुधर
 णी ॥ नानाभांतिनजाहिंवषाने ॥ निदरिपवनजनुचहतउ
 डाने ॥ तिनसवछयलभएअसवारा ॥ भरतसरिससवरा
 जकुमारा ॥ सवसंदरसवभूषणधारी ॥ करशरचापतूण
 कटिभारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ छरेछर्यालेछलयसव ॥ भूरस
 जाननवीन ॥ सुगपदचरअशवारप्रति ॥ जैअसिकला
 प्रवीण ॥ ३६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बांधेविशदवीरगणगाटे
 ॥ निकसिभयेपुरचाहिरटाटे ॥ फेरहिंचतुरतुरंगतिना
 ना ॥ हरपहिंध्वनिसुनिपवननिसाना ॥ रथसारथिनवि
 चित्रबनाए ॥ ध्वजपताकमणिभूषणलाए ॥ चमरचारु
 किंकिणिधनिकरहीं ॥ भानुयानशाभाअपहरहीं ॥ इयाम
 कणेअगणितहयहोने ॥ तेतिन्हरथनसारथिनजोते ॥ सुं
 दरसकलअलंकृतसोहै ॥ तिनहिंदिलोकनमुनिमनमो
 है ॥ जैजलचलहिंचलहिंकीनाई ॥ टापनबूढ़वेगअधि
 काटे ॥ अरुअशरसवसाजसजाई ॥ रथसारथिनवि
 चित्रबनाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नदिनदिदयचाहिरनगर ॥

लागीजुरनबरात॥होतसगुणसंदरसबहिं॥
 रजजात॥३६३॥ ॥चौपाई॥ ॥कलितकरी
 बारी॥कहिनजाइजेहिंभानिसंवारी॥चलेमत्तगजघंटवि
 ॥मनहुसुभगश्रावणघनगाजे॥बाहनअपरअनेक
 ॥शिबिकासुभगसुखासनयाना॥तिनचटिच-
 लेविप्रवरघंदा॥जनुतनुधरैसकलश्रुतिछंदा॥मागधसू

नबंदिगुणगायक॥चलेयानचटिजेजेहिलायक॥बैसरउठ
 टषभवहुजाती॥चलेवस्तुअगणितबहुभांती॥कोटिह-
 कावरिचलेकहारा॥विविधवस्तुकोबरणैपारा॥चलेस
 कलसवकसमुदाई॥निजनिजसाजसमाजबनाई॥
 ॥दोहा॥ ॥सबकेउरनिर्भरहरष॥पूरतपुलकशरीर॥
 रुबहिंदेखीहेनयनभरि॥रामलषणदोउवीर॥३६४॥
 ॥चौपाई॥ ॥गरजहिं गजघंटाध्वनिघोरा॥रथवर
 सचहुंओरा॥निदरिघनहिंघूमहिंनिसाना॥निजपरा
 यकलुसुनियनकाना॥महाभीरभूपतिकेद्वारे॥रजहोइ

जाइपरवानपवारे ॥ चढीअदारिनदेखहिंनारी ॥ लिएआ
 रतिमंगलथारी ॥ गावहिंगीतमनोहरनाना ॥ अतिआनं
 दनहिजाइबषाना ॥ तबसुमंतदुइस्यंदनसाजी ॥ जोते
 रविहयनिंदकवाजी ॥ दोउरथरुचिरभूषपहंआने ॥ नहि
 शारदप्रतिजाहिंबखाने ॥ राजसमाजएकरथसाजा ॥ दु
 सरतेजपुंजअतिभाजा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेहिंरथरुचिर
 वसिष्ठकह ॥ हरषिचढाइनरेश ॥ आपचढेउस्यंदनसु
 मिरि ॥ हरगुरुगौरिगणेश ॥ ३६५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सहि
 मवसिष्ठसोहनृपकैसे ॥ सरगुरुसंगपुरंदरजैसे ॥ करि
 कुलरीतिवेदविधिराऊ ॥ देखिसबहिंसबभांतिबनाऊ
 ॥ सुमिरिरामगुरुआयसुपाई ॥ चलेमहीपतिशंखबजा
 ई ॥ हर्षेविबुधविलोकिवराता ॥ वरषहिंसुमनसुमंगल-
 दाता ॥ भएउकोलाहलहंयगजगाजे ॥ व्योमवरातवाजने
 वाजे ॥ सरनरनारिसुमंगलगार्डे ॥ सरसरागवाजहिंसा
 हनाई ॥ पटघंटिधनिवरणिनजाई ॥ सरचकरहिंपायक
 फहराई ॥ करहिंविदूषककौतुकनाना ॥ हंसकुशलकल
 गानसुजाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तुरगनचावहिंकुंअरवर ॥
 अकिनमृदगनिसान ॥ नागरनटचितवहिंचकित ॥ डिग
 हिननालबंधान ॥ ३६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वनैनवरणत
 यनीचराता ॥ होउसगुणसुंदरशुभदाता ॥ चारुचापवा
 मदिगिलेई ॥ मनहुंसकलमंगलकहिदई ॥ दाहिनकागसु
 रंतकरहावा ॥ नकुलदरशसबकाहुनपावा ॥ सानुकूलव
 दनिविधिबयारी ॥ सघटसवालआववरनारी ॥ लावा
 फांसीफारदरशदिनवावा ॥ सरभीसंसुरखशिबुहिंपिआ
 ना ॥ भृगागालादाहिनाफारिआई ॥ मंगलगणजनुदीन्हटि

खाई॥ क्षेमकरी कह क्षेमविशेषी॥ श्यामा चान्द्रा तनु परदे-
 षी॥ संसुख आचउदधि अरु मीना॥ कर पुस्तक दुइ विप्र
 वीणा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मंगल मय कल्याण मय॥ अभिमत फ
 ल दातार॥ जनु सब सांचै हौ न हित॥ भए शगुण एकवार॥
 ३६७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ मंगल सगुण सुगम सुभता के॥ स
 गुण ब्रह्म संदर सुत जा के॥ राम सरिस वर दुलहि नि सीता॥
 समधी दशरथ जनक पुनीता॥ सुनि अस व्याह शगुण सब
 नाचे॥ अब कीन्ह बिरंचि हम सांचे॥ यहि विधि कीन्ह बरात
 पयाना॥ हयगज गाजहिं हनहिं निसाना॥ आवत जानि भा
 नुकुल केनू॥ सरित जनक बंधाये सेतू॥ बीच बीच वर वास
 बनाए॥ सुरपुर सरिस संपदा छाए॥ अशन शयन वर वस
 न सुहाए॥ पावहिं सब निज निज मन भाए॥ नित नूतन सु
 ख लषि अनुकूले॥ सकल वरातिन मंदिर भूले॥ ॥ दोहा ॥
 आवत जानि वरात वर॥ सुनि गह गहे निसान॥ सजि गजर
 थ पद चतुरंग॥ लैन चले अगवान॥ ३६८॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 कनक कलश कल कोपर थारा॥ भोजन ललित अनेक प्रका
 रा॥ भरे सुधा सम सब पकवाना॥ भांति भांति नहिं जाहिं बरवा
 ना॥ फल अनेक वर वस्तु सुहाई॥ हरषि भेट हित भूप पठा
 ई॥ भूषण वसन महामणि नाना॥ स्वग मृग हयगज बहु वि
 धयाना॥ मंगल सगुण सुगंध सुहाए॥ बहुत भांति महि
 पाल पठाए॥ दधि चिउरा उपहार अपारा॥ भरि भरि कांचरि
 चले कहारा॥ अगवाहन जब दीरव वराता॥ उर आनंद पुल
 क भर गाता॥ देखि वनाव सहित अगवाना॥ सुदित वराति
 न हने निसाना॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हरषि परस्पर मिलन हित॥ क
 लक चले वगमेल॥ जनु आनंद समुद्र दंड॥ मिलत विहाइ सवेले॥ ३६९॥

॥ चौपाई ॥ ॥ वरपि सुमन सरसंदरि गावहिं ॥ मुदित देव
 दुंदुभी च जावहिं ॥ वस्तु सकल राखी नृप आगे ॥ विनय की
 न्हति न्ह अति अनुरागे ॥ प्रेम समेत राउ सब लीन्हा ॥ भई
 वकसी सयाच कन दीन्हा ॥ करि पूजा मान्यता बडाई ॥ ज
 नवां से कहं चले लिवाई ॥ बसनं विचित्र पांडवे परहीं ॥ दे
 सि धन दधन मद परिहरहीं ॥ नृप दशरथ तापर पशु धरहीं
 ॥ वरपि सुमन सुरजय जय करहीं ॥ यह दुई पद दोष कहैं
 ॥ ॥ अति सुंदर दीन्हे उजन वासा ॥ जहं सब कहं सब भांति
 सुपासा ॥ जानी सीय वरात पुर आई ॥ कछु निज महिमा प्र
 गटि जनाई ॥ हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई ॥ भूप पहुनई
 करण पठाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सिय आस सुशिर सिद्धि धरि
 ॥ गई जहां जन वास ॥ लिए संपदां सकल सरव ॥ सुरपुर भो
 ग विलास ॥ ३७० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ निज निज बास विलोकि
 वराती ॥ सर सरव सकल सुलभ सर भांती ॥ विभव भेद
 कंछु काहुन जाना ॥ सकल जन ककर करहिं बरवाना ॥ सि
 य माहि मार घुनायक जानी ॥ हरषे हृदय हेतु पहि चानी ॥ पि
 तु आगमन सुनत दोउ भाई ॥ हृदय न अति आनंद समाई
 ॥ सकुचत कदिन शकन गुरु पाहीं ॥ पितु दर्शन लालच म
 न माहीं ॥ निश्चामित्र विनय चडि देपी ॥ उपजाउर संतोष
 नि शेषी ॥ हरपि बंधु दोउ हृदय लगाए ॥ पुलक अंग लोचन
 जल छाए ॥ चलें तहां दशरथ जन वासे ॥ मनहुं सरोवर त
 रंगियासे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूप विलोके जवहिं सुनि ॥ आव
 न सुनत समंत ॥ उठे उहरि पस्तन सिंधु मह ॥ चले याह सी
 नें ॥ ३७१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मुनि हिंदं चन कीन्ह मही गा
 ॥ धारवा गपद गज धरि गो गा ॥ कोशिन रागुनि यें उर लाई ॥

कहिआशीषपूछिकुशलाई॥पुनिदेवतकरतदोउभाई॥
देखिवनृपतिउरसरवनसमाई॥सुतहियलाईदुस
मेदे॥मृतकशरीरप्राणजनुभेदे॥

न्हनाए॥प्रेममुदितमुनिवरउरलाए॥विप्रद्वंद्वंदेदुहुभा
ई॥मनभावतिआशिषतिन्हपाई॥भरतसहानुजकीन्ह
प्रणामा॥लिएउठाइलाईउररामा॥हरषेलषणदेखिदो
उभाता॥मिलेप्रेमपरिपूरितगाता॥ ॥दोहा॥ ॥पुर-
नपरिजनजातिजन॥चाचकमंत्रीमीत॥मिलेयथावि

॥परमहृपालुबिनीत॥३७२॥ ॥चौपाई॥

रामहिदेखिवरातजुडानी॥प्रीतिकीरीतिनजाइबषानी
॥नृपसमीपसोहहिंसुतचारी॥जनुधनधर्मादिकतनुधा
॥सुतन्हसहितदशरथकहंदेखी॥मुदितनगरनरनारिवि

शेषी॥सुमनवरषिस्वरहनहिंसाना॥नाकनटीनाच
हिंकरिगाना॥शतानंदअरुविप्रसचिवगण॥मागधसू
तविदुषबंदोजन॥सहितबरातराउसनमाना॥आयसुमां

अगवाना॥प्रथमवरातलगनतेंआई॥तातेंपुरप्र
मोदअधिकई॥ब्रह्मानंदलोगसबलहहीं॥वढउदिवस-
सनकहहीं॥ ॥दोहा॥ ॥रामसीयशोभाअ

वधि॥सुकृतअवधिदोउराज॥जहतहंपुरजनकहंहिअ
स॥मिलिनरनारिसमाज॥३७३॥ ॥चौपाई॥ ॥जनक-
सुकृतमूरतिबैदेही॥दशरथसुकृतरामधरिदहीं॥इनस

मकाहुनशिवआराधे॥काहुनइनसमानफलसाधे॥इन
समकोउनभएजगमाहीं॥हैनहिंकतहुंहीनउनाहीं॥हम
सबसफलसुकृतकीराशी॥भयेजगजनिजनकपुरवा

सी॥जिनजानकीरामछविदेखी॥कोसुकृतीहमसरिसदि

१७२ बालकांडम् १
 श्रेयी ॥ पुनिदेखवरधुवीरविवाह ॥ लेवभेलीविधिलोचन
 लाह ॥ कहहिं परस्परकोकिलबयनी ॥ यहिविवाहबड
 लाहुसुनयनी ॥ वडेभागविधिवातवनाई ॥ नयनअति
 थिहोडउदोउभाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वारहिं बारसनेहबश ॥
 जनकबोलाउवसीय ॥ लैनआइहहिं बंधुदोउ ॥ कोटिका
 मकमनीय ॥ ३७४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विविधभांतिहोइहिं
 पहुनाई ॥ प्रियनकाहिअससासुरमाई ॥ तबतबरामल
 पणहिं निहारी ॥ होइहहिंसवपुरलोगसरवारी ॥ सरिखज-
 सरामलपणकरजोटा ॥ तैसेइभूपसंगदुइदोटा ॥ श्यामगौर
 सबअंगसहाए ॥ तेसबकहहिंदेखिजेआए ॥ कहाएक
 मेंआनुनिहारे ॥ जनुविरंचिनिजहाथसंवारे ॥ भरतराम
 एकहिअनुहारी ॥ सहसालखिनशकहिंनरनारी ॥ लष
 एशनुसूदनएकरूपा ॥ नखशिरवनेंसवअंगअनूपा ॥ म
 नभावहिंमुखवरणिनजाहीं ॥ उपमाकहंनिभुवनकोउ
 नाहीं ॥ ॥ छंद ॥ ॥ उपमानकोउकहदासतुलसी कतहुं
 कविकोविदकहै ॥ बलविनयविद्याशालशोभासिंधुइनस
 मएलहै ॥ ६६ ॥ पुरनारिसकलपसारिअंचलविधिहिंवच
 नसुनावहीं ॥ व्याहियसुनारिउभाइएहिंपुरहमसुमंगल
 गावहिं ॥ ७७ ॥ ॥ सारटा ॥ ॥ कहहिं परस्परनारि ॥ वारि
 विलोचनपुलकतनु ॥ सरिवसवकरवपुरारि ॥ पुण्यपयो
 निधिभूपदोउ ॥ ३७५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इहिविधिसकल
 मनोरथकरहीं ॥ आनंदउमगिउमगिउरभरहीं ॥ जेनूपसो
 यस्वयंवरआए ॥ देखिवंधुसवतिनसुखपाए ॥ कहतरा
 मयगनिशदविशाला ॥ निजनिजभवनगएमहिपाला ॥ ग
 एगानिकलुदिनयहिभांती ॥ नमुदितपुरजनसकलवराती ॥

मंगलमूललगनदिनआवा॥हिमऋतुअगहनमाससुहा
वा॥ग्रहतिथिनखतयोगबरबारू॥लगनशोधिविधिकी
न्हविचारू॥पढेदीन्हनारदसनसोई॥गुनीजनककेगणकह
जोई॥सुनीसकललोगनयहवाता॥कहहिंज्योतिषीविप्र
विधाता॥ ॥दोहा॥ ॥धेनुधूलिवेलाविमल॥सकलसु
मंगलमूल॥विप्रनकहेउविदेहसन॥जानिसमयअनुकू
ल॥३७६॥ ॥चौपाई॥ ॥उपरोहितहिकहेउनरनाहा॥
अबविलंबकरकारणकाहा॥शतानंदतबसचिवबुलाए
॥मंगलसकलसाजिसबल्याए॥शंखनिसानपणवबहुबा
जे॥मंगलकलशसगुनसबसाजे॥सुभगसुआसिनि
गावहिंगीता॥करहिंवेदध्वनिविप्रपुनीता॥लेनचलेसा
दरयहिभांती॥गएजहांजनवासवराती॥कोशलपतिकर
देरिवसमाजू॥अतिलघुलागतिनहिसरराजू॥भएउस-
मयअवधारियपाऊ॥यहसुनिपरानिसाननघाऊ॥गु
रुहिपूछिकरिकुलविधिराजा॥चलेसंगसुनिसाधुसमा-
जा॥ ॥दोहा॥ ॥भाग्यविभवअवधेशकर॥देरिवदेव-
ब्रह्मादि॥लगेसराहनसहससुख॥जानिजन्यनिजवादि
॥३७७॥ ॥चौपाई॥ ॥सरनसुमंगलअवस
रजाना॥वरपहिंसुमनबजाइनिसाना॥शिवब्रह्मा-
दिकविबुधवरूथा॥चदेविमानन्हयानायूथा॥प्रेमपु
लकतनुहृदयउछाहू॥चलेविलोकनरामविवाहू॥
देरिवजनकपुरसरअनुरागे॥निजनिजलोकसबहिं
लघुलागे॥चितवहिंचकितविचित्रविताना॥रचना
सकलअलौकिकनाना॥नगरनारिनररूपवि
धाना॥सुघरसुधर्मसुशीलसुजाना॥तिन-

हिदेरिवसवस्तरसुरनारी ॥ भएनखतजनुविधुउंजियारी ॥
 ॥ विधिहिं भएउआश्वर्यविशेषी ॥ निजकरणी कछुकत
 हूनदेयी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शिवसमुजाएदेवसब ॥ जनि-
 आश्वर्यभुलाहु ॥ तदयविचारहुधीरधरि ॥ सियरघुवी
 रविचाहु ॥ ३७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जेहिकरनामलेतज
 गमाही ॥ सकलअमंगलमूलनशाही ॥ करतलहोहिंप
 दारथचारी ॥ तेसियरामकहेउकामारी ॥ यहिविधिशां
 भुस्तरनसमुजावा ॥ पुनिआगेवरवशहुचलावा ॥ देव
 नदेरवेदशरथजाता ॥ महामोदमनपुलकितगाता ॥ सा
 धुसमाजसंगमहिदेवा ॥ जनुतनुधरैकरहिस्तरवसेवा ॥
 सोहनसाथसुभगस्ततचारी ॥ जनुअपवर्गसकलतनु
 धारी ॥ मरकतकनकवरणवरजोरी ॥ देरिवस्तरनभइ
 प्रीतिनथारी ॥ पुनिरामहिंविलोकिहियहर्षे ॥ नृपहिंस
 राहिस्तरमनतिन्हवर्षे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामरूपनखशि-
 खसुभग ॥ वारहिंवारनिहारि ॥ पुलकगातलोचनसज
 ल ॥ उमासमेतपुरारि ॥ ३७९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ केकीकं
 ददुतिध्यामलअंग ॥ तडितविनिंदकवसनस्तरंगा ॥ -
 व्याहाविभूषणविविधवनाए ॥ मंगलमयसवभांति सुहा
 ए ॥ शरदविमलविधुवदनसुहावन ॥ नयननवलराजी
 यलजावन ॥ सकलअलौकिकसुंदरताई ॥ कहिनजाइ
 मनहोमनभाई ॥ बंधुमनोहरसोहहिंसंगा ॥ जातनचा
 वतचपलनुरंगा ॥ राजकुअरवरवाजिनचावहिं ॥ वंश
 मशंसकविरटसुनावहिं ॥ जेहि नुरंगपररामविराजे ॥ ग
 तिबिलोकिखगनायकसाजे ॥ कहिनजाइसवभांति सुहा
 ता ॥ वाजिवंशजनुकामवनावा ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जनुवाजि

वेषवनाइमनसिजरामहितअतिसोहहीं॥अपनेसुव
 यबलरूपगुणगतिसकलभावनमोहहीं॥७१॥जगमगि
 तजीनजडावजोतिसुमोतिमणिमाणिकलगे॥किंकि
 णीललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनिठगे॥७२
 ॥ ॥दोहा॥ ॥प्रभुमानसलयलीनमन॥चलतवाजि
 छविपाव॥भषितउडुगणतडितघन॥जनुबरबर्हिन
 चाव॥३८॥ ॥चौपाई॥ ॥जैहिवरवाजिरामअसवा
 रा॥तेहिंशारदहुनबरणैपारा॥शंकररामरूपअनुरागे
 ॥नयनपंचदशअतिप्रियलागे॥हरिहितसहितरामज
 बजोहै॥रमासमेतरमापतिमोहै॥निरषिरामछविविधि
 हरषाने॥आठैनयनजानिपछिताने॥सरसेनपउरब
 हुतउछाहू॥विधितैबटेबिलोचनलाहू॥रामहिंचितवसु
 रेशसुजाना॥गौतमशापपरमहितमाना॥देवसकल-
 सरपतिहिंसिहाहीं॥आजुपुरंदरसमकोउनाहीं॥सु
 दितदेवगणरामहिदेवी॥नृपसमाजदुहुंहर्षविशेषी॥
 ॥छंद॥ ॥अतिहर्षराजसमाजदुहुदिशिदुंदुभीबज-
 हिघनी॥वरषहिंसुमनसरहरषिकहिजयजयतिजयर
 घुकुलमणी॥७३॥इहिभांतिजानिवरातआवतबाजने
 बहुबाजहीं॥राणीसुआसिनीबोलीपरिछनहेतुमंगल
 साजहीं॥७४॥ ॥दोहा॥ ॥सजिआरतिअनेकविधि
 ॥मंगलकलशसह्यारि॥चलीमुदितपरिछनकरण॥ग
 जगामिनिवरनारि॥३८१॥ ॥चौपाई॥ ॥विधुवदनी
 मृगशावकलोचनि॥सबनिजतनुछविरतिमदमोचनी
 ॥पहिरैवरणवरणवरचीरा॥सकलविभूषणसजैशरी
 रा॥सकलसुमंगलअंगबनाए॥करहिंमानकलकटल

जाए ॥ कंकणकिंकणिनूपुरवाजहिं ॥ चालिबिलो
 मगंजलाजहिं ॥ वाजहिंवाजनविविधप्रकारा ॥ नभअरुन
 गरसुमंगलचारा ॥ शचीशारदारमाभवानी ॥ जेसरतिय
 भुचिसहजसयानी ॥ कपटनारिवरवेषवनाई ॥ मिलीस
 कलरनिवासहिंआई ॥ करहिंगानकलमंगलवाणी ॥ ह
 रपविवशसवकाहुनजानी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कोजानकेहि
 आनंदवशसवब्रह्मवरपरिछनचली ॥ कलगानमधुर
 निसानवरषहिंसुमनसरशोभाभली ॥ ७५ ॥ आनंदकंद
 विलोकिदूलहसकलहियहर्षितभइ ॥ अंभोजअंबक
 अंबुडमगिसअंगपुलकावलछइ ॥ ७६ ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ जोसरवभासियमातुमन ॥ देखिरामवरवेष ॥ सोन
 शकहिंकाहिकल्पशत ॥ सहसशारदाशेष ॥ ३६२ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ नयननीरहटिमंगलजानी ॥ परिछनकरहिंसु
 दितमनरानी ॥ वेदविहितअरुकुलव्यवहारू ॥ कीन्हभ
 लीविधिसवपरिचारू ॥ पंचशब्दध्वनिमंगलगाना ॥ प
 टपांवडेपरहिंविधिनाना ॥ करिआरतीअर्धतीनदीन्हा
 ॥ रामगवनमंडपतवकीन्हा ॥ दशरथसहितसमाजवि
 राजे ॥ विभवविलोकिलोकपतिलाजे ॥ समयसमयसु
 रवर्षाहिफूला ॥ शांतिपदहिंमहिसरअनुकूला ॥ नभ
 अरुनगरकोलाहलहोई ॥ आपनपरकलुसुनैनकोई ॥
 इतिविधिराममंडपहिंआए ॥ अर्घदेइआसनवैटाए ॥
 ॥ छंद ॥ ॥ बैटारिआसनआरतिकारिनिरखिवरसरव
 पावहीं ॥ मणिनगनभूषणभूरिवारहिंनारिमंगलगान
 हैं ॥ ७७ ॥ अस्मादिसरवरविप्रचंपवनाइकैतुकदेखही
 ॥ अचनोकिरसुकुलकमलरनिछविरूपलजीवनलेख

हों॥७८॥ ॥दोहा॥ ॥नाऊवारिभाटनट॥रामनिछाव
 ॥मुदितअशीषहिंनइशिर॥हर्षनहृदयसमाइ।
 ॥३८३॥ ॥चौपाई॥ ॥मिलेजनकदशरथअतिप्रीती॥
 करिवैदिकलौकिकसबरीती॥मिलतमहांदोउराजविरा
 जे॥उपमारखोजिरखोजिकबिलाजे॥लहीनकतहंहारिहि
 यमानी॥इनसमएउपमाउरआनी॥समधीदेखिदेव
 अनुरागे॥सुमनिवर्षियशगावनलागे॥जगविरंचिउ
 जावाजवतें॥देखेसुनेच्याहबहुतवतें॥सकलभांति
 समसाजसमाजू॥समसमधीदेखेहमआजू॥देवगि
 रासुनिसुंदरसांची॥प्रीतिअलौकिकदुहुदिशिमाची॥
 देतपांवडेअर्घसहाए॥सादरजनकमंडपहिल्याए॥
 ॥छंद॥ ॥मंडपविलोकिविचित्ररचनारुचिरतामुनि-
 मनहरे॥निजपाणिजनकसुजानसबकहंआनिसिंहा
 सनधरे॥७९॥कुलइष्टसरिसवसिष्टपूजेविनयकरि-
 आशिषलही॥कौशिकहिंपूजतपरमप्रीतिकीरीतितो
 नपरैकही॥८०॥ ॥दोहा॥ ॥वामदेवआदिकऋषय
 ॥पूजेमुदितमहीश॥दियेदिव्यआसनसंबहीं॥सबस
 नलहीआशीष॥३८४॥ ॥चौपाई॥ ॥बहुरिकीन्हको
 शलपतिपूजा॥जानिईशसमभावनदूजा॥कौन्हजोरि
 करबिनयबडाई॥करिनिजभाग्यविभवबहुताई॥पूजे
 भूपतिसकलवराती॥समधीसमसादरसबभांती॥आ
 सनउचितदिएसबकाहू॥कहोंकहासुरवएकउछाहू॥
 सकलवरातजनकसनमानी॥दानमानविनतीबरवी-
 णी॥विधिहरिहरदिशिपतिदिनराऊ॥जेजानहिंरघुवी
 रप्रभाऊ॥कपटविप्रवरवेषबनाए॥कौतुकदेखहिंअ

तिसंचुपाए॥ पूजेजनकदेवसमजाने॥ दिएसुआसनविनु
 पहिचाने॥ ॥ छंद॥ ॥ पहिचानकोकोहजानसबहिंअपा
 नसुधिभोरीभई॥ आनंदकंदविलोकिदूलहउभयदिशिआ
 नंदमई॥ ८१॥ सरलरवेरामसुजानपूजेमानसिकआसन
 दए॥ अवलोकिशीलसुभावप्रभुकोविबुधमनप्रमुदितभ
 ए॥ ८२॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामचंद्रमुखचंद्रछवि॥ लोचनचा
 रुचकोर॥ करतपानसादरसंकल॥ प्रेमप्रमोदनथोर॥
 ॥ ८३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ समयविलोकिवसिष्ठबुलाए॥
 सादरशतानंदसुनिआए॥ वेगिकुंअरिअबआनहुंजाई॥
 चलेमुदितमुनिआयसुपाई॥ रानीसुनिउपरोहितवाणी
 ॥ प्रमुदितसरिवनसमेतसयानी॥ विप्रवधूकुलवृद्धबुला
 ई॥ करिकुलरीतिसुमंगलगार्ई॥ नारिवेषजेसरवरवा-
 मा॥ सकलसुभायसुंदरीश्यामा॥ तिनहिंदेरिवसरवपाव
 हिंनारी॥ विनुपहिचानीप्राणतेप्यारी॥ बारबारसनमान
 हिंरानी॥ उमारमाशारदसमवानी॥ सीयसह्यारिसमा-
 जवनाई॥ मुदितमंडपहिंचलीलिवाई॥ ॥ छंद॥ ॥ च
 निलवाइसीतहिसरवीसादरसाजिसुमंगलभामिनी॥ न
 वरससाजेसुंदरीसवमनकुंजरगामिनी॥ ८३॥ कलगा
 नसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकांकिललाजहीं॥ मजी
 रनूपुरकलितकंकणतालगतिवरवाजहीं॥ ८४॥ ॥
 दोहा॥ ॥ सोहातिचनिताचंदमहं॥ सहजसोहावनिसी
 य॥ छविललनागणमध्यजनु॥ सरवमातियकमनीय॥
 ८५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सियसुंदरतावरणिनजाई॥ ल
 सुपातचहूतमनोहरताई॥ आचनदेखिवरातिनसीता॥
 लपराशिसवभातिपुनाना॥ सबहिंमनहिंमनकीन्हप्राणा

मा ॥ दारिवरामभइ पूरणकामा ॥ हर्षेदशरथसुतनसमेता ॥
 ॥ कहिनजाइउरआनंदजेता ॥ स्वरप्रणामकरिवर्षहिफू
 ला ॥ मुनिआशीषध्वनिमंगलमूला ॥ गाननिसानकोला-
 हलभारी ॥ प्रेमप्रमोदनगरनरनारी ॥ इहिविधिसीयमंडप
 हिंआई ॥ प्रसुदितशांतिपदहिंसुनिराई ॥ तेहिअवसरक
 रिविधिव्यवहारू ॥ दुहुंकुलगुरुसबकीन्हआचारू ॥ ॥
 छंद ॥ ॥ आचारकरिगुरुगौरिगणपतिसुदितविप्रपुजा
 वहिं ॥ स्वरप्रगटिपूजालैहिंदेहिंअशीषअतिस्वरुपाव
 हीं ॥ ८५ ॥ मधुपर्कमंगलद्रव्यजोजेहिंसमयमुनिमनमहु
 चहैं ॥ भरेकनककोपरकलशसोतबलयेपरिचारकरहैं
 ॥ ८६ ॥ कुलशेतिप्रीतिसमेतरविकहिदेतसबसादरकि
 यौ ॥ यहिभांतिदेवपुजाइसीतहिंसुभगसिंहासनदियौ
 ॥ ८७ ॥ सियरामअवलो कनपरस्परप्रेमकाहुवलरिपरै
 ॥ मनबुद्धिवरवाणीअगोचरप्रगटकविकैसैंकरै ॥ ८८ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ होमसमयतनुधरिअनल ॥ अतिहितआहुति
 लेहिं ॥ विप्रवेषधरिवेदसब ॥ कहिविवाहविधिदेहिं ॥ ८९ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ जनकपाटमहिषीजगजानी ॥ सीयमातु-
 किमिजाइबरवानी ॥ सुयशसुकृतस्वरुसुंदरताई ॥ सब
 समेटिविधिरचीबनाई ॥ समयजानिसुनिवरनिबुलाई
 ॥ सुनतस्वासिनिसादरल्याई ॥ जनकवामदिशिसो
 हसुनयना ॥ हिमगिरिसंगवनिजनुमयना ॥ कनकक-
 लशमणिकोपररूरे ॥ शुचिस्नग्ंधमंगलजलपूरे ॥ निज
 करसुदितराउअरुनानी ॥ धरेरामकेआगेआनी ॥ पदहिं
 वेदमुनिमंगलवाणी ॥ गगनसुमनजरिअवसरजानी
 ॥ बरविलोकिदंपतीअनुरागे ॥ पायपुनीतपरवारणला

गे ॥ ॥ छंद ॥ ॥ लागे पधारण पादपंकज प्रेम तनु पुलका
 वली ॥ नभनगरगाननिसानजयध्वनि उमगिजनु चहुं दि
 शिचली ॥ ६६ ॥ जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव
 विराजहीं ॥ जे सकल तसुमिरत विमलता मन सकल कलि
 मल भाजहीं ॥ ६७ ॥ जे परसि सुनिबनि ताल ही गति रहो
 जो पात कमई ॥ मकरंद जिन को शंभु शिर शक्तिता अव
 धि सरवर नई ॥ ६८ ॥ करि मधुप सुनि मन योगिजन न
 जे सेइ अभिमत गति लहैं ॥ ते पद पधारत भाग्य भाजन
 जनक जय जय सर कहैं ॥ ६९ ॥ वर कुं अरि करत लजो रि
 शारवो चार दोउ कुल गुरु करैं ॥ भयो पाणि गहण विलो
 कि विधि सर मनुज सुनि आनंद भरैं ॥ ७० ॥ सरवमूल
 दूलह देरि वंद्यती पुलकतनु हुलसौ हियौ ॥ करि लोक बे
 द विधान कन्यादान नृप भूषण कियौ ॥ ७१ ॥ हिमवत जि
 मि गिरिजामहेशहिं हरिहिं श्री सागर दई ॥ ति मि जनक
 रामहिं सिय समपीं विश्वकल कीरति नई ॥ ७२ ॥ क्यों क
 रे विनय विदेह कियौ विदेह मूरति सांवरी ॥ करि होम वि
 धि वत गांठि जोरी होन लागी भांवरी ॥ ७३ ॥ ॥ दोहा ॥
 जयध्वनि चंदी वेदध्वनि ॥ मंगलगाननिसान ॥ सुनि ह
 र पहिं चर पहिं विबुध ॥ सरतरु सुमन सुजान ॥ ३६८ ॥
 ॥ नौ पाई ॥ ॥ कुं अर कुं अरि कल भावरि देहीं ॥ नयन ला
 भ सव सादर लेहीं ॥ जाइ नवरणि मनोहर जोरी ॥ जो उप
 मा कलु कहों सो थोरी ॥ रामसीय सुंदर परिछाहीं ॥ ज
 गम गानि मणि रवं भनमाहीं ॥ मनहुं मदन रति धरि बहु
 ॥ देवहिं नामनि नाह अ नृपा ॥ दरश लाल सास कु
 ॥ प्रगत दुरत व होरि व होरी ॥ भए मगन सव

देखनिहारे॥जनकसमानअपानबिसारे॥प्रसुदि
नभांवरीफेरी॥नगसहितसबरीतिनिवेरी॥राम-
सीयशिरसिंदुरदेहीं॥शोभाकहिनजातविधिकेहीं॥अ-
रुणपरागजलजभरिनीके॥शशिहिंभूरवअहिलोभअ-
मीके॥बहुरिवसिष्ठदीन्हअनुशासन॥वरदुलहिनिबै
ठेएकआसन॥॥छंद॥॥बैठेबरासनरामजानकीमु-
दितमनदशरथभये॥तनुपुलकिपुनिपुनिदेखिअप-
नेसुकृतसरतरुफलनये॥६७॥भरिभुवनरहाउछा-
हरामविवाहभासबहिकहा॥कैहिभांतिबरणिसिरातर-
सनाएकमुखमंगलमहा॥६८॥तबजनकपाइवसिष्ठ-
आयसव्याहसाजसह्यारिके॥मांडवीश्रुतिकीर्तिउर्मि-
लाकुंअरिलइहंकारिके॥६९॥कुशकेतुकन्याप्रथमजोगुण-
शीलमुखशोभामयी॥सबरीतिप्रीतिसमेतकरिसो-
व्याहिनृपभरतहिंदयी॥१००॥जानकीलघुभगिनिपर-
मसुंदरिशिरोमणिजानिकै॥सोजनकदीन्हीव्याहिलष-
सकलविधिसनमानिकै॥१०१॥जैहिनामश्रुतिकी-
रतिसल्लोचनिसुमुखिसबगुणआगरी॥सोदईरि-
दनहिंभूपतिरूपशीलउजागरी॥१०२॥अनुरूपवरदु-
लहनिपरस्परलखीसकुचिहियहर्षहीं॥सबसुदितसु-
दरतासराहहिंसमनसुरगणवर्षहीं॥१०३॥सुदरीसुंद-
रवरवरएसबमिलएकमंडपराजहीं॥अनुजीवउरचा-
हुअवस्थाविभुवनसहितविराजहीं॥१०४॥॥दोहा
॥॥सुदितअवधपतिसकलसुत॥वधूनसमेतनिहा
॥जनुपाएमहिपालमणि॥क्रियनसहितफलचारि॥
३८६॥॥चौपाई॥॥जशरघुवीरव्याहविधिबरणी॥

सकलकुंअरव्याहेते करणी ॥ कहिनजाइ कछु दाइ जभूरी
 ॥ रहा कनकमणि मंडप पूरी ॥ कंवल बसन विचित्र पटोरे
 ॥ भांति भांति बहु मोचन थोरे ॥ गजरथ तुरंग दास अरु
 दासी ॥ धेनु अलंकृत काम दुघासी ॥ वस्तु अनेक करिय
 कि मिलेखा ॥ कहिन जाइ जानहिं जिन देखा ॥ लोकपाल
 अवलोकि सिंहाने ॥ लीन्ह अवध पति सब स्वरवमाने ॥
 दोन्ह याच कीन्ह जो जेहिं भावा ॥ ऊबर सो जन वासहिं
 आवा ॥ तब कर जोरि जनक मृदुवाणी ॥ बोले सब वरा
 त सनमानी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सनमानि सकल वरात आद
 रदान विनय वटाइके ॥ प्रसुदित महा मुनि वृंद वंदे पूजि प्रे
 म लडाइके ॥ १०५ ॥ शिर नाइ देव मनाइ सब सनक हतक
 र संपुट किये ॥ सरसा धुचाहत भाव सिंधु की तोष जल-
 अंजलि दिये ॥ १०६ ॥ कर जोरि जनक बहोरि बंधु समेत
 कोशल राय सों ॥ बोले मनोहर बचन सानि सनेह शील
 सुभाय सों ॥ १०७ ॥ संवंध राजन रावरे हम वडे अवस
 व विधि भए ॥ यह राज साज समेत सेवक जानि वो विनु-
 य थलए ॥ १०८ ॥ एदारिका परिवारिका करि पालवी क
 रुणामयी ॥ अपराध क्षमियो बोलि पठए बहुत हाटी ठी
 दयी ॥ १०९ ॥ पुनि भानुकुल भूषण सकल सनमान विधि
 समर्पि किये ॥ कहि जात नहि विनती परस्पर प्रेम परिपू
 रण द्विग ॥ ११० ॥ छंदार का गुण समन वरपहिं राउ जन
 बांसहि चले ॥ दंडु भीधनि अरु वेद ध्वनि नभन गरकु
 न हल भले ॥ १११ ॥ तब सरस्विन मंगल गान करति सुनी-
 श आचरु पाइके ॥ दलह दलहिनि सहित संदरि चली
 कोह वरल्याइके ॥ ११२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुनि पुनि राम-

हिंचितवसिय ॥ सकुचतिमनसकुचैन ॥ हरितमनोहरमी
नछवि ॥ मेमपियासेनैन ॥ ३६० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ श्याम
शरीरसभायसहावन ॥ शोभाकोटिमनोजलजावन ॥ या
चकयुतपदकमलसहाए ॥ सुनिमनमधुपरहतजहंछा
ए ॥ पीतपुनीतमनोहरधोती ॥ हरतबालरविदामिनिजो
ती ॥ कलकिंकिणीकटिसूत्रमनोहर ॥ बाहुविशालविभू
षणसोहर ॥ पीतजनेउमहाछविदेई ॥ करमुद्रिकाचोरि
चितलेई ॥ सोहतव्याहसाजसबसाजे ॥ उरआयतउर
भूषणराजे ॥ पीतउपणाकांखासोती ॥ दुहुआचरनि
लागेमणिमोती ॥ नयनकमलकलकुंडलकाना ॥ वदन
सकलसौंदर्यनिधाना ॥ सुंदरभृकुटिमनोहरनासा ॥ भा
लतिलकशुचिरुचिरनिवासा ॥ सोहतमौरमनोहरमाथे
॥ मंगलमयमकुतामणिगांथे ॥ ॥ छंद ॥ ॥ गांथेमहा
मणिमौरमंजुलअंगसबचितचोरहीं ॥ पुरनारिसुंदर
वरविलोकहिंनिरषिछबितृणतोरहीं ॥ ११३ ॥ मणिवस
नभूषणवारिआरतिकरहिंमंगलगावहीं ॥ सरसमनव
र्षहिंसूतमागधबदिसयशसुनावहीं ॥ ११४ ॥ कोहवर
हिंआनेकुंअरकुंअरिसुआसिनीन्हसरवपाइके ॥ अति
पीतिलौकिकरीतिलागीकरणमंगलगाइके ॥ ११५ ॥ लहि
कोरिगौरीशिरवावरामहिंसीयसनसादरकहै ॥ रनिवां
सहासबिलासरसवशजन्मकोफलसबलहै ॥ ११६ ॥ नि
जपाणिमणिमहंदेरिप्रतिमूरतिस्वरूपनिधानकी ॥ चा
लतिनभुजवल्लीविलोकनिबिरहवशभइजानकी ॥ ११७
॥ कौतुकविनोदप्रमोदयेमनजाइकहिजानहिअली ॥ वा
रकुंअरिसुंदरसकलसरिवनलिवाइजनवासहिचली ॥

॥११८॥ तेहि समय सनिय आशिष जहंत हं नगर नभ
 आनंद महा ॥ चिरंजीय हुजोरी चारु चरि उमुदित मन स
 वही कहा ॥ ११९ ॥ योगींद्र सिद्ध मुनी शदेव विलोकि प्रभु
 दुंदुभीहनी ॥ चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक ज-
 यजयजय भनी ॥ १२० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहित बंधून कुं
 अर संघ ॥ तव आये पितु पास ॥ शोभा मंगल मोद भरि ॥
 उमगे उज जुन वास ॥ ३६१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पुनि जेव
 नार भए उबहु भांती ॥ पठए जनक बुलाइ वराती ॥ परत
 पांव डेब सन अनूपा ॥ सुतन समेत गवन किय भूपा ॥
 सादर सब के पाद परवारे ॥ यथा योग्य पीठन बैठारे ॥
 धोए जनक अवध पति चरणा ॥ शील सनेह जाहिन हि
 चरणा ॥ बहुरि राम पद पंकज धोए ॥ जे हरहृदय कमल
 मह गोए ॥ तीनों भाइ राम सम जानी ॥ धोए चरण जनक
 निज पाणी ॥ आसन उचित सब हिनृप दीन्हा ॥ बोलि सू-
 पकारी सब लीन्हा ॥ सादर लगे परन पन वारे ॥ कनक की-
 लमणि परण सद्गारे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सूपोदन सुरभी स-
 रपि ॥ सुंदर स्वादु पुनीत ॥ क्षण महं सब के परुसिगे ॥ च-
 तुर सुआर विनीत ॥ ३६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पंचक बल
 करि जेवन लागे ॥ गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥ भांति
 अनेक परे पकवाना ॥ सुधा सरिस नहि जाहि चरवाना ॥
 परुस न लागे सुधर सुआरा ॥ व्यंजन विविध को चरणे
 पारा ॥ चारि भांति भोजन विधि गाई ॥ एक एक विधि वर-
 णिन जाई ॥ छर सरुचिर व्यंजन यहु जानी ॥ एक एक र-
 स अराणिन भांती ॥ जेवन देहिं मधुर धनि गारी ॥ लैलें-
 नाय सु रूप अकनारी ॥ समय सदावन गारि विराजा ॥ ॥

सतराउसकनिसहितसमाजा॥ यहिविधिसबहीभोजन
कीन्हा॥ आदरसहितआचमनलीन्हा॥ ॥दोहा॥ ॥दे
इपानपूजेजनक॥ दशरथसहितसमाज॥ जनवासेग
वनेमुदित॥ सकलभूपशिरताज॥ ३८३॥ ॥चौपाई॥
॥नितनूतनमंगलपुरमाहीं॥ निमिषसरिसदिनयामि
निजाहीं॥ बडेभोरभूपतिमणिजागे॥ याचकगुणगण
गावनलागे॥ देखिकुंअरवरवधूनसमेता॥ किमिक
हिजातमोदमनजेता॥ प्रातक्रियाकरिगेगुरुपाहीं॥ म
हाप्रमोदप्रेममनमाहीं॥ करिप्रणामपूजाकरजोरी॥ बो
लेगिराअमियजनुबोरी॥ तुहरीरूपासकनियमुनिरा-
जा॥ भएउआजुममपूरणकाजा॥ अबसबविप्रबुला
इगोसाई॥ देवहुधनसबभांतिवनाई॥ सुनिगुरुकरि
महिपालबडाई॥ पुनिपठएसुनिचंदबुलाई॥ ॥दोहा॥
॥वामदेवअरुदेवअपि॥ बालमीकजाबालि॥ आएसु-
निवरनिकरतब॥ कौशिकादितपशालि॥ ३८४॥ ॥चौ
पाई॥ ॥दंडप्रणामसबहिंनृपकीन्हा॥ पूजिसप्रेमबरा
सनदीन्हा॥ चारिलक्षवरधेनुमंगाई॥ कामसरभिसम
शीलसुहाई॥ सबविधिसकलअलंकृतकीन्ही॥ मुदि
तमहीपअपिनकहंदीन्ही॥ करतविनयबहुविधिनर
नाहू॥ लहेउआजुजगजीवनलाहू॥ पाइअशीषमही
शअनंदा॥ लियेबोलिपुनियाचकवृंदा॥ कनकबसन
मणिहयगजस्यंदन॥ दियेबूजिरुचिरविकुलनंदन॥ च
लेपटतगावतगुणगाथा॥ जयजयजयदिनकरकुलना
था॥ इहिविधिरामविवाहउछाहु॥ शकैनबरणिसहस
सुरवजाहु॥ ॥दोहा॥ ॥बारबारकौशिकचरणा॥ शीस

नाइ कहराउ ॥ यह सब करव सुनि राजतब ॥ कृपा कटाक्ष प्र
 भाउ ॥ ३६५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जनक सनेह शील करवती ॥
 नृप सब राति सराह विभूती ॥ दिन उठि विदा अवध पति मां
 गा ॥ राखहिं सहित जनक अलुरागा ॥ नित नूतन आदर-
 अधिक आई ॥ दिन प्रति सहस भांति पहुनाई ॥ नित नवनगर
 र आनंद उछाहू ॥ दशरथ गवन सोहाइन काहू ॥ बहु नदि
 वस बीते इहि भांती ॥ अनु सनेह रजु बधैं वराती ॥ कौशिक
 शतानंद तब जाई ॥ कहा बिदेह नृपहिं समुजाई ॥ अब दश
 रथ कहूं आय सुदेहु ॥ यद्यपि छांडिन सकहु सनेहु ॥ भले-
 हिना थकहि सचिव बुलाए ॥ कहि जय जीव शी सति नू-
 नाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अवधनाथ चाहत चलन ॥ भीतर
 करहु जनाउ ॥ भए प्रेम बश सचिव सुनि ॥ विप्र सभा सद-
 राउ ॥ ३६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पुरवासिन सुनि चली वरा-
 ता ॥ पूछन विकल परस्पर वाता ॥ सत्य गवन स्तनिस ब-
 विलखाने ॥ मनहु सांज सरसिज सकुचाने ॥ जहं जहं आ-
 वतव से वराती ॥ तहं तहं सिद्ध चली वहु भांती ॥ विविध
 भांति मेवा पकवाना ॥ भोजन साजन जाइ वरवाना ॥ भरि
 भरि वसत अ पार कहारा ॥ पठए जनक अनेक सुआरा
 ॥ तुरग लारव रथ सहस पचीशा ॥ सबल संवारे नख अरु
 शीशा ॥ मत्त सहस दशसिंधुर साजें ॥ जिनहिं देखि दिशि
 कुंजर लाजें ॥ कनक वसन मणि भरि भरि जाना ॥ महिषी
 धनु वस्त्र विधिनाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दाइज अभिनन-
 शकिय कहि ॥ दीन्ह बिदेह वहां रि ॥ जो अवलोकन लोक
 पति ॥ लोक संपदा थोरि ॥ ३६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सब स-
 माज दाइ भांति बनाई ॥ जनक अवध पुर दीन्ह गदाई ॥ न

लिहिं बरात सनत सब राणी ॥ विकल मीन गण जनु लघु
 पानी ॥ पुनि पुनि सोय गोद करिले ही ॥ देइ अशीष शिरवा
 बन देहीं ॥ होइ हहु संतत पति हि पियारी ॥ चिर अहि वात
 आशीष हमारी ॥ सासु ससुर गुरु सेवा करिहू ॥ पति रुष-
 ल रिख आयस अनुसरिहू ॥ अति सनेह बश सखी सया
 नी ॥ नारी धर्म शिरव वहिं मृदु बाणी ॥ सादर सकल कुं अ-
 रिस मुजाई ॥ रानि नवर बार उर लाई ॥ बहुरि बहुरि भेट
 हिं महतारी ॥ कहहि विरंचिर चीकत नारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 तेहि अवसर भाइन सहित ॥ राम भानु कुल केतु ॥ चले ज
 न कमंदिर सुदित ॥ बिदा करावन हेतु ॥ ३६८ ॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ चारि उभाइ सभाय सुहाए ॥ नगर नारिन रदेखन धा
 ए ॥ कोउ कह चलन चहत हहिं आजू ॥ कीन्ह विदेह विदा
 कर साजू ॥ भले उनयन भरि रूप निहारी ॥ प्रिय पाहुने भू
 पसुत चारी ॥ कोजाने केहि सकल तस यानी ॥ नयन अति
 धि कीन्ह विधि आनी ॥ मरण शील जिमि पाव पियूषा ॥
 सुरतरुल है जन्म कर भूषा ॥ पावनार की हरि पद जै सैं ॥ इ
 न कर दरशन हम हंते सैं ॥ निरखि राम शोभा उर धरहु ॥
 निज मन फणि मूरति मणिकरहु ॥ इहि विधिस बहिन य
 न फल देता ॥ गए कुं अरस बराज निकेता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 रूप सिंधु सब बंधु लखि ॥ हर्षि उठे उर निवासु ॥ करहिं-
 निछावरि आरति ॥ महा सुदित मन सासु ॥ ३६९ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ देखि राम छवि अति अनुरागी ॥ प्रेम विवश सु
 निपुनी पद लागी ॥ रहीन लाज प्रीति उर छाई ॥ सहज स
 नेह बरणि किमि जाई ॥ भाइन सहित उवदि अन्ह बाये ॥
 छरश अशन अति हेतु जे बाये ॥ बोले राम सु अवसर जा

नी ॥ शीलसनेह सकुचमयवाणी ॥ राउ अवधपुरचहत
 सिधाए ॥ विदाहोनहितहमहिं पठाए ॥ मातुसुदितमन
 आयसुदेह ॥ बालकजानिकरबनितनेह ॥ सुनतबच
 नविलखेउरनिवासू ॥ बोलिनसकहि प्रेमवशाजासू ॥
 हृदयलगाइकुअरीसबलीन्ही ॥ पतिनसोपिविनती
 अतिकीन्ही ॥ ॥ छंद ॥ ॥ करिविनयसियरामहिस
 मर्पाजोरिकरपुनिपुनिकहै ॥ वलितातजाउं सुजानतु
 मकहंविदितगतिसबकीअहै ॥ १२१ ॥ परिवारपुरज
 नमोहिराजहिं प्राणप्रियसियजानिवी ॥ तुलसीसुशी
 लसनेहलखिवनिजकिं करोकरिमानिवी ॥ १२२ ॥ ॥
 सोरठा ॥ ॥ तुमपरिपूरणकाम ॥ जानिशिरोमणिभा
 वप्रिय ॥ जनगुणगाहकराम ॥ दोषदलनकरुणायतन
 ॥ ४०० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ असकहिरहीचरणगहिशनी ॥
 प्रेमपंकजनुगिरासमानी ॥ सुनिसनहसानीवरवाणी ॥
 बहुविधिरामसासुसनमानी ॥ रामविदामांगतकरजोरी
 ॥ कीन्हमणामवहोरिचहोरि ॥ पाइअशोषबहुरिशिर
 नाई ॥ भाइनसाहतचलेरघुराई ॥ मंजुमधुरमूरतिउरआ
 नी ॥ भईसनेहशिथिलसवरानी ॥ पुनिधारजधरिकुंअरि
 हंकारा ॥ थोरचारभेटाहंमहतारी ॥ पहुंचावहिंफिरिमि
 लहिंचहोरी ॥ बटिपरस्परप्रीतिनथोरी ॥ पुनिपुनिमिल
 तिसखिनावलगार्इ ॥ बालवत्सर्जिमधेनुलवाई ॥ ॥ दो
 हा ॥ प्रेमाविवधानरनारिसव ॥ सखिनसाहतरनिवास ॥
 मानहुंकीर्त्तावदेहपुर ॥ करुणाविरहनिवास ॥ ४०१ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ अकशांरिकजानकींजियाए ॥ कनकपि
 नरनगानिपदाए ॥ अकुलकहहिंचहावेदेही ॥ मुनि-

बालकांडम् ९

धीरजपरिरहेनकही॥भएविकलखगमृगइहिभांती॥
 मनुजदशकैसैंकहिजाती॥बंधुसमेतजनकतबआ
 ए॥प्रेमउमगिलोचनजलछाए॥सीयबिलोकिधीरता
 भागी॥रहेकहावतपरमबिरागी॥लीन्हराजउरलागि
 जानकी॥मिटीमहामर्यादज्ञानकी॥समुजावतसब-
 सचिवसयाने॥कीन्हविचारअनअवसरजाने॥बार
 बारसुताउरलाई॥सजिसंदरपालकीमंगाई॥
 ॥दोहा॥॥प्रेमबिबशपरिवारसब॥जानिसुलगन
 नरेश॥कुअरिचढाईपालकी॥सुमिरेसिद्धगणेश॥
 ॥४०२॥॥चौपाई॥॥बहुविधिभूपसुतासमुजाई
 ॥नारिधर्मकुलशैतिशिरवाई॥दासीदासदिएबहुते
 रे॥शुचिसेवकजेप्रियसियकेरे॥सीयचलतव्याकु
 लपुरवासी॥होहिंसगुणशुभमंगलराशी॥भूसुरस
 वसमेतसमाजा॥संगचलेपहुचावनराजा॥रथ-
 गजवाजिबरातिनसाजे॥समयबिलोकिबाजनेबाजे
 ॥दशरथविप्रबोलिसबलीन्हे॥दानमानप्ररिपूरण
 कीन्हे॥चरणसरोजधूरिधरिशीषा॥मुदितमहीप
 पाइअशीषा॥सुमिरिगजाननकीन्हपयाना॥मंग
 लमूलसगुणभएनाना॥॥दोहा॥॥सुरप्रसूनब
 रषहिंहरषि॥करहिंअपसरागान॥चलेअवधपति
 अवधपुर॥मुदितबजाइनिसान॥४०३॥॥चौपाई
 ॥॥नृपकरिविनयमहाजनकेरे॥सादरसकलमांग
 नेटेरे॥भूषणबसनवाजिगजदीन्हे॥प्रेमपौषिठाटे-
 सबकीन्हे॥बारबारबिरदावलिभाषी॥फिरेसकल
 रामहिंउरराषी॥बहुरिबहुरिकोशलपतिकहहीं॥ज

नकप्रेमवशफिरानचहहीं॥ पुनिकहभूपतिवचनसुहा
 ए॥ फिरियमहीपदुरिवडिआए॥ राउबहोरिउतरिभ
 एठादे॥ प्रेमप्रवाहविलोचनवाटे॥ तबविदेहबोलेकर
 जोरी॥ वचनसनेहसुधाजनुबोरी॥ करौंकवनविधि-
 विनयसुहाई॥ महाराजमोहिदीन्हबडाई॥ ॥ दोहा॥
 ॥ कोशलपतिसमधीसजन॥ सनमानेसबभांति॥ मि
 लनपरस्परबिनयअति॥ प्रीतिनहृदयसमाति॥ ४४
 ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ मुनिमंडलिहिंजनकशिरनावा॥ आ
 शीर्वादसबहिंसनपावा॥ सादरपुनिभेटेजामाता॥ रूप
 शीलगुणनिधिसबभाता॥ जोरिपंकरुहपाणिस्तहाए
 ॥ बोलेवचनप्रेमजनुजाए॥ रामकरौंकोहिभांतिप्रशंसा
 ॥ मुनिमहेशमनमानसहंसा॥ करहिंयोगयोगीजोहिला
 गो॥ कोहमोहममतामदत्यागी॥ व्यापकब्रह्मअलख-
 अविनाशी॥ विदानंदनिर्गुणगुणराशी॥ मनसमेतजो-
 हिंजाननवाणी॥ तरकिनशकहिंसकलअनुमानी॥ महि
 मानिगमनेतिकरिकहहीं॥ जोतिहुंकालएकरसरहहीं
 ॥ दोहा॥ ॥ नयनविषयमोकहंभएउ॥ सोसमस्तसुरख
 मूल॥ सबहिसकलभजगजीवकहं॥ भएईशअनुकूल॥
 ॥ ४५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सबहिभांतिमोदीन्हबडाई॥ नि
 जजनजानिलोन्हअपनाई॥ होहिंसहसदशशारदशो
 पा॥ करहिंकल्पकोटिकभरिलेरवा॥ मोरभाग्यराउर
 गुणगाथा॥ कहिनसिराहिंसनियरघुनाथा॥ मैकछु
 कहींएकबलमोरें॥ तमरीऊउसनेहसुदित्योरें॥ बारबा
 रमागोंकरजोरें॥ मनपरिरहेचरणजनिभोरें॥ स्तनिव
 नवचनप्रेमजनपोषे॥ पूरणकामरामपरितोषे॥ करिव

रविनयसस्तरसनमाने ॥ पितुकौशिकवसिष्ठसमजाने
 ॥ विनतीबहुतभरतसन कीन्हा ॥ मिलिसप्रेमपुनिआ-
 शिषदीन्हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मिलेलषणरिपुसूदनहिं ॥
 दीन्हअशीषमहीश ॥ भएपरस्परप्रेमबश ॥ फिरिफिरि
 नावहिंसीश ॥ ४०६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बारबारकरिविन-
 यवडाई ॥ रघुपतिचलेसंगसबभाई ॥ जनकगहेकौशि
 कपदजाई ॥ चरणारेणुशिरनयननिलाई ॥ सनुमुनीशस
 वदरशनतोरे ॥ अगमनकछुप्रतीतिमनमोरे ॥ जोसरवसु
 यशलोकपतिचहहिं ॥ करतमनोरथसकुचतअहहीं ॥
 सोसरवसुयशसुलभमोहिस्वामी ॥ सबसिधितबदर
 शनअनुगामी ॥ कीन्हविनयपुनिपुनिशिरनाई ॥ फिरेम
 हीपतिआशिषपाई ॥ चलीवरातनिसानबजाई ॥ मुदि-
 तछोटबडसबसमुदाई ॥ रामहिंनिरखिग्रामनरनारी ॥
 पाईनयनफलहोहिंसरवारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बीचबीच
 वरवासकरि ॥ मगलोगनसुखदेत ॥ अवधसमीपपुनि
 तदिन ॥ पहुंचीआइजिनेत ॥ ४०७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ह
 नेनिसानपणवबरबाजे ॥ भेरीशंखध्वनिहयगजमा
 जे ॥ जांऊमृदंगडिमिडिमीसहाई ॥ सरसरागबाजेसह
 नाई ॥ पुरजनआवतअकनिवराता ॥ मुदितसकलपुल
 कावलिगाता ॥ निजनिजसुंदरसदनसंवारे ॥ हाटबाट
 चौहटपुरेद्वारे ॥ गलीसकलअरगजहिंसिंचाई ॥ जहं
 तहंचौकेचारुपुराई ॥ बनाबजारनजाइबरवाना ॥ तोर
 णकेतुपताकविताना ॥ सफलपुंगिफलकदलीरसाला
 ॥ रोपेबकुलकदंबतमाला ॥ लगेसुभगतकरुपरसतधर
 णी ॥ मणिमयआलबालकलकरणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

विविधभांतिमंगलकलश ॥ गृहगृहरचेसंवारी ॥ स्फुरब
 ह्नादिसिंहाहिसब ॥ रघुवरसुनीनिहारि ॥ ४०८ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ भूपभवनतेहिअवसरसोहा ॥ रचनादेरिवमदन
 मनमोहा ॥ मंगलसगुणमनोहरताई ॥ ऋधिसिद्धिस्फुर
 संपदासहाई ॥ जनुउछाहसबसहजसुहाए ॥ तनुधरि
 धरिदशरथगृहआए ॥ देखनहेतुरामबैदेही ॥ कहहुला
 लसाहोइनकेही ॥ दूथदूथमिलिचलीसुआसिनी ॥ नि
 जछविनिदरहिंमदनविलासिनी ॥ सकलसुमंगलस-
 जेंआरती ॥ गावहिंजनुबहुवेषभारती ॥ भूपतिभवन
 कोलाहलहोई ॥ जाइनवरणिसमयस्फुरसोई ॥ कौश
 ल्यादिराममहतारी ॥ प्रेमविवशतनुदशाविसारी ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ दियेदानविमनविपुल ॥ पूजिगणेशपुरारि
 ॥ प्रसुदितपरमदरिद्रजनु ॥ पाइपदारथचारि ॥ ४०९ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ मोदप्रमोदविवशसबपाता ॥ चलहिंन
 चरणशिथिलभएगाता ॥ रामदरशहितअतिअनुरा-
 गी ॥ परिछनसाजसजनसबलागी ॥ विविधविधानवा
 जनेवाजे ॥ मंगलसुदितसुमित्रासाजे ॥ हरंददूवदधि
 पल्लवफूला ॥ पानपुंगफलमंगलमूला ॥ अक्षतअंकुर
 रोचनलाजा ॥ मंजुलमंजरीतुलसिविराजा ॥ छुहेपुरट-
 घटसहजसहाए ॥ मदनशकुनिजनुनीडवनाए ॥ सगुण
 सागंधनजाहिंरखानी ॥ मंगलसकलसजहिंसबराणी
 ॥ रचोआरताविविधविधाना ॥ सुदितकरहिंकलमंगल
 गाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कनकथारभारिमंगलन्हि ॥ कमल
 करनिलियेंमात ॥ चलीसुदितपरिछनकरणा ॥ पुलक
 पल्लवितगात ॥ ४१० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ धूपधुगनभमंनक

भएऊ ॥ श्रीवणघनघमंडजनुछएऊ ॥ सरतरुसुमनमाल
सुरवर्षेहीं ॥ मनहुंबलाकअवलिमनकषेहीं ॥ मंजुलमणि
मयबंदनिवारा ॥ मनहुंपाकरिपुचापसंवारा ॥ प्रगटहिंद
रहिअटहिपरभाभिनी ॥ चारुचपलजनुदमकहिंदामि
नी ॥ दुंदुभिधनिघनगरजहिंदोरा ॥ याचकचातकदा
दुरमोरा ॥ सरसगंधशुचिवर्षहिंवारी ॥ सरवीसकल
शिपुरनरनारी ॥ समयजानिगुरुआयसदीन्हा ॥ पुर
प्रवेशरघुकुलमणिकीन्हा ॥ समिरिशंभुगिरिजागण
राजा ॥ सुदितमहीपतिसहितसमाजा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हो
गुणवर्षहिंसुमन ॥ सरदुंदुभीबजाइ ॥ विबुधवधू
नाचहिंसुदित ॥ मंजुलमंगलगाइ ॥ ४११ ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ मांगधसूतबंदीजटनागर ॥ गावहिंयशतिहुंलो
गर ॥ जयध्वनिविमलवेदवरबाणी ॥ दशदिशि
सुमंगलसानी ॥ विपुलबाजनेबाजनलागे ॥ नभसर
नगरलोगअनुरागे ॥ बनेबरातीवरणिनजाहीं ॥ महा
तमनसरवनसमाहीं ॥ पुरवासिनतबराउजोहारे ॥
देखतरामहिंभएसुरवारे ॥ करहिंनिछावरिमणिगण
चोरा ॥ बारिविलोचनपुलकशरीरा ॥ आरतिकरहिं
मुदितपुरनारी ॥ हर्षहिंनिरखिकुंअरवरचारी ॥ शिवि
कासुभगउहारउधारी ॥ देखिदुलहिनिन्हहोहिंसरवा
री ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहिविधिसबहिंदेतसरव ॥ आएरा
हुआर ॥ मुदितमातुपरिछनकरहिं ॥ बधुनसमेतकु
मार ॥ ४१२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ करहिंआरतीबारहिंबा
रा ॥ प्रेमप्रमोदकहैकोपारा ॥ भूषणमणिपटनानाजाती
॥ करहिंनिछावरिअगणितभांती ॥ बधूनि समेतदेखि

सुतचारी ॥ परमानंदमगनमहतारी ॥ पुनिपुनिसीयरा
 मछविदेखी ॥ मुदितसुफलजगजीवनलेखी ॥ सरखीस
 यमुखपुनिपुनिचाही ॥ गानकरहिनिजसुकृतशराही ॥
 वरषहिंसुमनक्षणहिंक्षणदेवा ॥ नाचहिं गावहिंला
 सेवा ॥ देखिमनोहरचारिउजोरी ॥ शारदउपमासकलदं
 दोरी ॥ देतनवनहिंनिपटलघुलागी ॥ एकटकरहीरूप
 अनुरागी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निगमनीतिकुलरीतिकरि ॥ अ
 र्घ्यपाववेदेत ॥ वधुनिसहतसुतपरिल्लिसब ॥ चलीलि-
 चाइनिकेत ॥ ४१३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चारिसिंहासनस
 हजसुहाये ॥ जनुमनोजनिजहाथबनाये ॥ तिनपरकुं
 अरिकुं अरवैठारे ॥ सादरपायपुनीतपरवारे ॥ धूपदीप
 नैवेद्यवेदविधि ॥ पूजेवरदुलहिंनिमंगलनिधि ॥ बारहिं-
 बारआरतीकरहीं ॥ व्यजनचारुचामरशिरदरहीं ॥ व
 स्तुअनेकनिछावरिहोहीं ॥ भरीप्रमोदमानुसबसोही
 ॥ पावापरमतलजनुयोगी ॥ अमृतलहाजनुसंततरीगी
 ॥ जन्मरंकजनुपारसपावा ॥ अंधहिलोचनलाभसुहा
 वा ॥ मूकवदनजनुशारदछाई ॥ मानहुंसमरभूरजयपा
 ई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहिसरवतेंशनकोटिगुण ॥ पावहिंमा
 तुअनंद ॥ भाइनसहितविवाहघर ॥ आयेरघुकुलचं
 द ॥ ४१४ ॥ लोकरीतिजननीकरहिं ॥ वरदुलहिनिसकुचा
 हिं ॥ मोदविनांदविलांकिवड ॥ राममनहिंसुसकाहिं ॥
 ॥ ४१५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देवपितरपूजेविधिनीकी ॥ पू
 जासकलवासनाजीकी ॥ सबहिंबंदिमागहिंवरदाना ॥
 भाइनसहितरामकल्याणा ॥ अंतरहितसरअशीपदे
 हिं ॥ मुदितमानुअचलभरिलेहिं ॥ भूपतिचोलिवशनीली

हे ॥ यानबसनमणिभूषणदीन्हे ॥ आइरुपाइराखिउ
 ररामहिं ॥ सुदितगएसबनिजनिजधामहिं ॥ पुरनरना
 रिसकलपहिराये ॥ घरघरबजहिं आनंदधाये ॥ याच
 कजनयाचहिं जोइजोई ॥ प्रसुदितराउदेहिंसोइसोई ॥
 सेवकसकलवजनियांनाना ॥ पूरणकियेदानसनमाना
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देहिंअशीषजुहारिसब ॥ गावहिं गुण-
 गणगाथ ॥ तबगुरुभूस्करसहितगृह ॥ गवनकीन्हनर
 नाथ ॥ ४१६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोवसिष्ठअनुशासन
 दीन्हा ॥ लोकवेदविधिसादरकीन्हा ॥ भूस्करभीरदेखि
 तबरात्री ॥ सादरउठीभाग्यबडजानी ॥ पायपरवारिसक
 लअन्हवाये ॥ पूजिभलीविधिभूपजेंवाये ॥ आदरदान
 प्रेमपरिपोषे ॥ देतअशीषचलेमनतोषे ॥ बहुविधिकी
 न्हगाधिसुतपूजा ॥ नाथमोहिसमधन्यनदूजा ॥ कीप्र
 शंसाभूपतिभूरि ॥ राणिनसहितलीन्हपदधूरी ॥ भीतर
 भवनदीन्हवरवासू ॥ मनजुगवतरहनृपरनिवासू ॥ पू
 जेगुरुपदकमलबहोरी ॥ कीन्हविनयमनप्रीतिनथोरी
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वधूनसमेतकुमारसब ॥ राणिनसहि-
 तमहीश ॥ पुनिपुनिवंदितगुरुचरण ॥ देतअशीषमुनी
 श ॥ ४१७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विनयकीन्हउरअतिअनुरा
 गे ॥ स्तुतसंपदाराखिसबआगे ॥ नेगमांगिसुनिनायक
 लीन्हा ॥ आशीर्वादबहुतविधिदीन्हा ॥ उरधरिरामहिंसी
 यसमेता ॥ हरषिकीन्हगुरुगमननिकेता ॥ विप्रवधूकुल
 वृद्धबुलाई ॥ चारचारुभूषणपहिराई ॥ बहुरिबुलाईरु
 आसिनिलीन्ही ॥ रुचिबिचारिपहिरावनदीन्ही ॥ नेगी
 नेगयोगसबलेही ॥ रुचिअनुरूपभूपमणिदेही ॥ प्रियपा

हुने पूज्यते जाने ॥ भूपति भली भाति सनमाने ॥ देवदे
 रघुवीर विवाह ॥ वरषि प्रसून प्रशंसी उछाह ॥ ॥ दोहा ॥
 चले निसान बजाइ सर ॥ निजनिज पुर सरवपाइ ॥ कह
 त परस्पर रामयश ॥ हर्षन हृदय समाइ ॥ ४९६ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ सब विधिस बहिंसु दित नरनाह ॥ रहा हृदय भरि
 पूरि उछाह ॥ जहंर निवास तहां पगु धारि ॥ सहित वधू दिन
 कुंअर निहारे ॥ लिए गोद करि मोद समेता ॥ को कहि श
 कै भए उ सरवजेता ॥ वधूस प्रेम गोद बैठाशे ॥ बार बार हि
 य हर्षि दुलारी ॥ देखि समाज सुदितर निवासू ॥ सब के उ
 र आनंद विलासू ॥ कहे उ भूपजिमि भए उ विवाह ॥ सुनि
 सुनि हर्ष होत सब काह ॥ जनकराज गुण शील बडाई ॥
 प्रीति रीति संपदा सह आई ॥ बहुविधि भूपभाटजिमि वर
 णी ॥ राणी सब प्रसुदित सनिकरणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सु
 तन समेत नहाइ नृप ॥ बोलि विप्रगुरु ज्ञाति ॥ भोजन की
 न्ह अनेक विधि ॥ घरी पंचगइ राति ॥ ४९६ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ मंगलगान करहिं वर भामिनी ॥ भई सरवमूल मनोहर
 यामिनी ॥ अचै पान सब काहं पाए ॥ स्वगसुगंध भूषित
 उ विछाए ॥ रामहिं देखि रजाय सु पाई ॥ निजनिज भव
 न चले शिर नाई ॥ प्रेम प्रमोद विनोद बडाई ॥ समय समा
 ज मनोहर नाई ॥ कहिन शकहिं श्रुति शारदशेषू ॥ वेद वि
 रंचि महेश गणेश ॥ सोमैं कहौ कवन विधि वरणी ॥ भूमि
 नाग शिर धरैं कि धरणी ॥ नृप सब भांति सबहिं सनमानी ॥
 ॥ कहि मृदु वचन तुलाइ गनी ॥ वधूलरि किनी पर घर आ
 ई ॥ गरन उ नयन पल कनी नाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लरिका अ
 मित उनी दवश ॥ शयन कर गहु जाइ ॥ अस कहि गोवि-

आमगृह॥ रामचरणचितलाइ॥ ४२०॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 भूपवचनसुनिसहजसुहाए॥ जटितकनकमणिपलंग
 डसाए॥ सुभगसरभिपयफेनुसमाना॥ कोमलकलित
 रूपेतीनाना॥ उपबर्हएवरवरणिनजाहीं॥ स्वगसुगं
 धिमणिमंदिरमाहीं॥ रतनदीपश्रुतिचारुचंदोवा॥ कह
 तनबनैजानजेहिंजोवा॥ सजरुचिररचिरामउदाये॥ मे
 मसमेतपलंगपौदाये॥ आजापुनिपुनिभाइनदीन्ही॥
 निजनिजसेजशयनतिनकीन्ही॥ देखिइयाममृदुमंजुल
 गाता॥ कहहिंसप्रेमबचनसबमाता॥ मारगजातभया
 वनिभारी॥ केहिविधिताततारकामारी॥ ॥ दोहा॥ ॥
 घोरनिशाचरनिकटभट॥ समरगनेनहिंकात॥ ॥ ॥
 हितसहायकिमि॥ खलमारीचक्रपाह॥ ॥ ॥
 ई॥ मुनिमसादबलिताततुहारा॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ मखरषवाशेकरिदुहुभाई॥ गुरुमसादसबबिद्या
 पाई॥ मुनितियतरिलगतपदधूरी॥ कीरतिरहीभवनभ
 रिपूरी॥ कमठपीठिपबिकूटकठोरा॥ नृपसमाजमहिं
 शिवधनुतोरा॥ विश्वविजययशजानकीपाई॥ आए
 भवनव्याहिसबभाई॥ सकलअमानुषकर्मतुहारे॥ के
 वलकौशिककृपासुधारे॥ आजुसफलजगजन्महमारे॥
 देखितातविधुबदनतुहारे॥ जेदिनगएतुमहिंबिनुदेखे
 ॥ सोविरंचिजनपारहिलेखे॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामप्रतोषी
 मातुसब॥ कहिबिनीतवरबयन॥ समिरिशंभुगुरुवि
 प्रपद॥ कियेनींदबशनयन॥ ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ नीं
 दहुबदनसोहसुठिलोना॥ मनहुसांजसरसोरुहसोना॥
 घरघरकरहिंजागरणनारी॥ देखिपरस्परमंगलगारी॥

पुरीविराजतिराजतिरजनी ॥ रानी कहहिं विलोकहु सज
 नी ॥ सुंदरवधुन सासुलै सोई ॥ फणिपतिजनु शिरमणि
 उरगोई ॥ प्रातपुनीतकालप्रभुजागे ॥ अरुणचूडबरबो
 लनलागे ॥ वंदी मागधगुणगणगाए ॥ पुरजन द्वारजुहा
 रनआए ॥ वंदिविप्रसुरगुरुपितृमाता ॥ पाइ अशीषमु
 दितसबभ्राता ॥ जननी सादरबदननिहारे ॥ भूपतिसं
 गद्वारपगुधारे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कीन्ह शौचसबसहजनु
 चि ॥ सरितपुनीतनहाइ ॥ प्रातक्रियाकरितातपहं ॥ आ
 एचारिउभाइ ॥ ४२३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूपविलोकिलये
 उरलाई ॥ बैठेहरषिरजायसपाई ॥ देखिरामसबसेभा-

उच्चरुरागे ॥ स्तनिसमेतठाटभएआगे ॥ नाथसकलसं
 पदातुह्मारी ॥ मैसेवकसमेतस्तनचारी ॥ करवसदालरि
 कनपरछोहु ॥ दरशनदेतरहवमुनिमोहु ॥ असकहिराउ
 सहितस्तनानी ॥ परेउचरणमुखआवनबाणी ॥ दोहि
 अशीषविप्रबहुभांती ॥ चलेनपीतिरीतिकहिजाती ॥ रा
 मसमेतसंगसबभाई ॥ आयसुपाइफिरेपहुचाई ॥ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ रामरूपभूपतिभगति ॥ व्याहउछाहआनंद ॥
 जातसराहतमनहिमन ॥ मुदितगाधिकुलचंद ॥ ४२५ ॥
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वामदेवरघुकुलगुरुजानी ॥ बहुरि-
 गाधिसुतकथावरवानी ॥ स्तनिमुनिस्तयशमनहिमन
 राऊ ॥ वरणतआपनपुण्यप्रभाऊ ॥ बहुरेलोगरजाय-
 सुभएऊ ॥ स्तनसमेतनृपतिगृहगएऊ ॥ जहंतहंस-
 व्याहसबगावा ॥ स्तयशपुनीतलोकतिहुंछावा ॥ आ-
 व्याहिरामधरजबतें ॥ बसेआनंदअवधसबतबतें ॥ प्र
 भुविवाहजशभएउउछाहु ॥ सकहिंनबरणिगिराअहि
 नाहु ॥ कविकुलजीवनपावनजानी ॥ रामसीययशमं
 गलरवानी ॥ तेहिंतेमैकछुकहावरवानी ॥ करणपुनीत
 हेतुनिजबाणी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ निजगिरापावनकरण
 कारणरामयशतुलसीकह्यौ ॥ रघुबीरचितअपारवा
 रिधिपारकविकवनेलह्यौ ॥ १२३ ॥ उपवीतव्याहउछा
 हमंगलस्तनहिंसादरगावहीं ॥ बैदेहिरामप्रसादतेजन
 सर्वदास्वरुपावहीं ॥ १२४ ॥ ॥ श्लोक ॥ स्तनिगाईक
 होंगिरिशकन्याधन्यअधिकारीसही ॥ नितपीतिनूत
 नस्तनतहरिगुणभगतिअनुपमतेलही ॥ १२५ ॥ रघुवी
 रपदअनुरागजललोंभागिबेगिबुझावहीं ॥ एहिजानितु

लसीदासमनकमवचनहरिगुणगावहीं ॥ १२६ ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ कठिनकालमलग्नसितमनु ॥ साधनकछुनहोइ
 ॥ यहविचारिविश्वासकरि ॥ हरिस्मिरैबुधसोइ ॥ ४२६
 ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ मनहरिपदअनुरागु ॥ करहुत्यागिना
 नाकपट ॥ महामोहनिशजागु ॥ सोवतवीतेकालबहु ॥
 ॥ ४२७ ॥ सियरघुवीरविवाह ॥ जेसप्रेमसादरसुनहि ॥
 तिनकहंसदाउछाह ॥ मंगलायतनरामयश ॥ ४२८ ॥ ॥
 ॥ ॥ इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषवि
 धंसनेविमलविज्ञानवैराग्यसंतोषसंपादनोनामतुल
 सीकृतबालकांडः प्रथमः सोपानः समाप्तः ॥ ॥ शुभम
 स्तु ॥ ॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 अतिपुनीतसरजूवहै ॥ तहांअवधपुरधाम ॥ चैत्रशुक्ल
 नवमीसुभग ॥ प्रगटभएश्रीराम ॥ १ ॥ बालचरित्रवर्ण
 नाकयो ॥ तुलसीदासअनूप ॥ श्रीधररघुवरविशदगु
 ण ॥ समुक्तिरोभवकूप ॥ २ ॥ ॥ सिद्धिरस्तु ॥ ॥ ७ ॥
 ॥ श्रीमज्जगदीश्वरार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

इति तुलसीदासकृत रामायण वा
 लकांडं समाप्तम्.

श्री
अथ
तुलसिदासकृत
रामायणअथो
ध्याकांड
प्रारंभः



श्रीगणेशायनमः

अथ अयोध्याकांडं लिख्यते.

श्लोक-

वामांकेचविभातिभूधरसुतांदेवापगामस्तकेभालेबाल
विधुर्गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट्॥सोयंभूतिविभू-
षणःस्तरवरःसर्वाधिपःसर्वदाशर्बःसर्वगतःशिवःशशि-
नभःश्रीशंकरःपातुमान्॥१॥प्रसन्नतांयोनगतोभिषे-
कतस्तथाननम्नोवनवासदुःखतः॥सुखांबुजश्रीरघुनं-
दनस्यमेसदास्तसामंजुलमंगलप्रदम्॥२॥नीलांबुज
श्यामलकोमलांगंसीतासमारीपितवामभागम्॥पाणौ
महासायकचारुचापन्नमामिरामंरघुवंशनाथम्॥३॥
॥दोहा॥ ॥श्रीगुरुचरणसरोजरज॥निजमनमुकुरसु-
धार॥वरणौरघुवरविमलयश॥जोदायकफलचार॥१॥
॥चौपाई॥ ॥जबतेंरामव्याहिघरआए॥नितनव
मंगलमोदबधाए॥भुवनचारिदशभूधरधारी॥सुकृत
मेघवरषहिंस्तरववारी॥अधिसिधिसंपतिनदीसुहाई॥
उमगिअवधअंबुधिकहंआई॥मणिगणपुरनरनारि
सुजाती॥शुचिअमोलसुंदरसबभांती॥कहिनजाइ
कछुनगरविभूती॥जनुइतनियबिरंचिकरतूती॥सबवि-
धिसबपुरलोगस्तरवारी॥रामचंद्रमुखचंद्रनिहारी॥सु-
दितमातुसबसरवीसहेली॥फलितबिलोकिमनोरथवे-
ली॥रामरूपगुणशीलसुभाऊ॥प्रसुदितहोहिंदेरिसुनि-
राऊ॥ ॥दोहा॥ ॥सबकेउरअभिलाषअस॥कहहिंम-
नाइमहेश॥आपुअछतयुगराजपद॥रामहिंदेहिंनरेश॥
॥२॥ ॥चौपाई॥ ॥एकबारजानकीसमेता॥बैठेप्रभु

निजरुचिररनिकेता ॥ भुजप्रलंबरनयनविशाला ॥ पीत
 वसनतनश्यामतमाला ॥ कोटिमनोजदेषिलुबिमोहा ॥
 ताकरचांमरवरसोहा ॥ तेहिअवसरअपिनारदआए ॥
 स्फुरहितलागिविरंचिपठाए ॥ तेजपुंजतनुकरतलबीना ॥
 हरिगुणगणगावतलयलीना ॥ देषिरामसहसाउठिधा
 ए ॥ करिदंडवतहृदयमुनिलाए ॥ सादरनिजआसनबै
 ठारे ॥ जनकसुतातवचरनपषारे ॥ तेहिचरणोदकभव
 नसिंचावा ॥ जगपावनहरिसीसचटावा ॥ स्फुनिमुनिविष
 यनिरतजेप्रानी ॥ हमसारिरवेदेहअभिमानी ॥ तिन्हकह
 सत्संगतितवहोई ॥ करै कृपाजाकहुं प्रभुसोई ॥ ताकहुं
 मुनिनाहिंनभवआगें ॥ जेहिबिनुहेतुसैतप्रियलागें ॥ त
 तेनारदमैवडभागी ॥ यद्यगृहकुटुंबअनुरागी ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ स्फुनिहरिवचनमधुरप्रिय ॥ करिविचारमुनि
 धीर ॥ परमकृपालुकलोकहित ॥ लागिकहत रघुवीर
 ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहतमुनितवमहिमारघुराया
 ॥ मैजानउकछुतुह्नरिहिदाया ॥ वचनकहेहुप्राकृतकी
 नाई ॥ तातेनहिंकछुघटेऊगोसाई ॥ प्रभुयहतुह्नहिस
 दावनिआई ॥ निजलघुताजनकेरिबडाई ॥ सहजस
 भाउप्रनतअनुरागी ॥ नरतनुधरेहुदासहितलागी ॥ मा
 यागुणगोमानअतीता ॥ अजितनामसोदासन्हजीता
 ॥ जेहिप्रभुसमअतिशयकोउनाहीं ॥ आपकअजस
 मानसचमाहीं ॥ उदरचराचरमेलिजोसोया ॥ स्तनमु
 खपानलागिसोरोवा ॥ नामरूपवपुचरननभंदा ॥ अ
 पिगानिअकलनेतिकहबेदा ॥ निरमममुक्तनिरामय
 जोई ॥ दशरथसुकनहिगाईयसोई ॥ जपतपयोगय

श्रवतदाना ॥ विमलविरागज्ञानविज्ञाना ॥ करहिजतनसु
 निपावतकोई ॥ देखवाप्रगटभक्तवससोई ॥ हठवससठ
 साधनबहुकरहीं ॥ भक्तिहीनभवसिंधुनतरहीं ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ जानिसकहुतेजानहु ॥ निर्गुणसगुणस्वरूप ॥
 ममहृदयंकजभृगइव ॥ बसहुसामनरभूप ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ ब्रह्मभुवनमैरहेउरुपाला ॥ गावततवगुणदीन
 दयाला ॥ असईछाउपजीमनमाहीं ॥ देखेउचरनबहु
 तदिननाहीं ॥ यद्यपिप्रभुसर्वत्रसमाना ॥ सगुणरूपमो
 रेमनमाना ॥ अवधचलतविरचिमोहिजाना ॥ कीन्ही
 विनयलागिममकाना ॥ प्रभुजानतसबअंतरजामी ॥
 भक्तिवश्यविनतीयहस्वामी ॥ जिनहितलीन्हमनुजअ
 वतारा ॥ नाथवेगिसोकरियसंभारा ॥ सनतवचनरघु
 पतिमुसकाने ॥ मुनिअजहुंबिरंचिभयमाने ॥ कहेहुता
 तब्रह्महिसमुझाई ॥ कलुदिनवीतेंदेखहुंआई ॥ बारबा
 रचरणान्हिसिरनाई ॥ ब्रह्मानंदनहृदयसमाई ॥ रामरू
 पउरधरिसुनिनारद ॥ चलेकरतगुणग्रामविशारद ॥ त
 वरघुपतिसीतहिसमुझावा ॥ चहतकरनसोचरितब
 नावा ॥ सरहितलागिकरियसोउपाई ॥ जाईयवनपरि
 हरिठकुराई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जगसंभवअस्थितिलय ॥
 जाकीभृकुटिविलास ॥ सोप्रभुजतनविचारतकेहि ॥ वि
 धिनिसिचरनास ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकसमयसब
 सहितसमाजा ॥ राजसभारघुराजविराजा ॥ सकलस
 कृतसूरतिनरनाह ॥ रामसजशक्तनिअतिहिउछाह ॥
 नृपसबरहहिंकृपाअभिलाषे ॥ लोकपरहहिंप्रीतिरु
 षराषे ॥ त्रिभुवनतीनिकालजगमाहीं ॥ भूरिभागदश

रथसमनाहों॥ मंगलमूलरामस्तजसू॥ जोकछुकहिय
 थोरसबतासू॥ राजसभायसुकुरकरलीन्हा॥ बदनवि-
 लोकिमुगुटसमकीन्हा॥ श्रवणसमीपभएसितकेशा॥
 मनहुंचोथपनअसउपदेशा॥ नृपसुवराजरामकहंदेहु
 ॥ जीवनजन्यसफलकरिलेहु॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहवि-
 चारउरआनिनृप॥ सुदिनसुअवसरपाइ॥ तनुपुलकि
 तमनसुदितअति॥ गुरुहिसुनायउजाई॥ ६॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ कहेउभुआलसुनियसुनिनायक॥ भएरामसब
 विधिसवलायक॥ सेवकसचिवसकलपुरवासी॥ जे
 हमारअरिमित्रउदांसी॥ सबहिंरामप्रियजेहिंविधिमो
 ही॥ प्रभुअशीषजनुतनुधरिसोही॥ विप्रसहितपरि
 वारगोसांई॥ करहिंछोहसबरौरीहिंनई॥ जेगुरुचरा
 एरेणुशिरधरहीं॥ तेजनुसकलविभववशकरहीं॥ मो
 हिसमानअरुभएउनदूजे॥ सर्वपायउप्रभुपदरजपूजे
 ॥ गुनसागरनागरश्रुतिगाए॥ बडेभागमोरेगृहआए॥
 जेठेरामजगतहितकारी॥ सकलसराहतपुरनरनारी॥
 अचअभिलाषएकमनमोरे॥ पूजहिंनाथअनुग्रहतोरे
 ॥ सुनिप्रसन्नलखिसहजसनेहु॥ कहेउनरेशरजायसु
 देहु॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजनराउररामयश॥ सबअभिमत
 दानार॥ फलअनुगामीमहिपमणि॥ मनअभिलाषतु-
 स्मार॥ ७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सर्वाविधिगुरुप्रसन्नजिय-
 जानी॥ योलेउगरविहंसिमृदुवाणी॥ नाथरामकहंक
 रियुवराज॥ कहियकृपाकरिकारियसमाज॥ मोहिअ
 उनदहहोइउछाह॥ लहहिंलोगसबलोचनलाह॥ प्रभु
 प्रसादजिवसबैनिवाही॥ यहैलालसाहैमनमाहीं॥ पु

निन शोचतनुरहौकिजाऊ॥ जेहिनहोइ पाछे पिछताऊ॥ भ
रथरामसें आएसमांगी॥ पछिमगएमातुलहितलागी॥
करहुबिचारनलावहुवारा॥ अवपुनिभापनचोथहमारा
॥ सुनि सुनि दशरथ बचन सुहाए॥ मंगलमोदमूलमन-
भाए॥ सुनि नृपजासुबिमुख पछताही॥ जासुभजन-
बिनुजरनिनजाही॥ भएतुह्मारतनयसोईस्वामी॥ रामपु
नीतप्रेमअनुगामी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वेगिविलंबनकरिय
नृप॥ साजियसबैसमाज॥ सुदिनसुमंगलतबहिजब॥
रामहोहिंयुवराज॥ ८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुदितमहीप
तिमंदिरआए॥ सेवकसचिवसुमंत्रबुलाए॥ कहिज-
यजीवसीशतिन्हनाए॥ भूपसुमंगलबचनसुनाए॥ प्र
सुदितमोहिकहेउगुरुआजू॥ रामहिंराजदेहुयुवराजू॥
जौपांचहिंमतलागैनीका॥ करहुहरषिहियरामहिटी
का॥ मंत्रीसुदितसुनतप्रियबाणी॥ अभिमतविरचपरे
उजनुपानी॥ विनतीसचिवकरहिंकरजोरी॥ जियहुज
गतपतिबरषकरोरी॥ जगमंगलभलकाजबिचारा॥ वे
गहिनाथनलाइयवारा॥ नृपहिंमोदसुनिसचिवसुभा
षा॥ बढतविटपजनुलहीसुशारवा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क
हतभूपमुनिराजकर॥ जीजोआयसुहाइ॥ रामराजअ
भिषेकहित॥ बेगिकरहुसोइसोइ॥ ९॥ ॥ चौपाई॥
हरषिमुनीशकहेउमृदुबाणी॥ आनहुसकलसुतीरथ
पानी॥ औषधिमूलफूलफलपाना॥ कहेनामगणिमंग
लनाना॥ चामरचरमबसनबहुभांती॥ रोमपाटपटअ
गणितजाती॥ मणिगणमंगलवस्तुअनेका॥ जीजग
योगभूपअभिषेका॥ वेदबिहितकहिसकलविधाना॥

कहैउरचहुंपुरविविधविताना॥ सकलरसालपुंगफलके
 रा॥ सोपहुबीथिनपुरचहुंफेरा॥ रचहुमंजुमणिचौंकेचारू
 ॥ कहहुवनावनबेगिबजारू॥ पूजहुगणपतिगुरुकुलदे-
 वा॥ सबविधिकरहुभूमिस्तरसेवा॥ ॥ दोहा॥ ॥ ध्व
 जपताकतोरणकलश॥ सजहुतुरगरथनाग॥ शिरधरि
 मुनिवरवचनसव॥ निजनिजकाजहिंलाग॥ १०॥ ॥ चौ
 पाई॥ ॥ सुनिसुमंत्रमनअतिहरयाना॥ जीवनजन्मस
 फलकरिमाना॥ जहतंहंधावनकोटिपठाए॥ मंगलद्रव्य
 सकललैआए॥ कनककलशसजिधारैद्वारे॥ गजरथतु-
 रगअनेकसंवारे॥ बहुविधिबांधेबंधनबारा॥ ध्वजपता
 कमणिवसनअपारा॥ वनानगरनहिवरणाजाई॥ सक
 ललोकसोभापुरछाई॥ तहांतैक्षेपकहैं॥ ॥ जहिंसुनी
 शजोआयसुदीन्हा॥ सोजनुकाजप्रथमतोइकीन्हा॥ सु
 निमनईछाकरैनपावा॥ सोसुमंत्रपहिलेहिलैआवा॥ ॥
 ॥ विप्रसाधुस्तरपूजतराजा॥ करतरामहितमंगलकाजा
 ॥ सनतरामअभिषेकसहावा॥ वाजेगहगहेअवधवधा
 वा॥ रामसीयतनुसगुणजनाए॥ फरकहिंमंगलअंगसु
 हाए॥ पुलकिसप्रेमपरस्परकरहीं॥ भरथआगमनसू
 चकअहहीं॥ भएवहुतदिनअनिअवसेरी॥ सगुणप्रती
 तिभेंटप्रियकेरी॥ भरतसरिसप्रियकोजगमांहीं॥ यहैस
 गुणफल्दसरनाहीं॥ रामहिंशोचबंधुदिनराती॥ अंडनि
 कमठदयजहिंभांती॥ ॥ दोहा॥ ॥ इहिंअवसरमंग
 लपरम॥ मानिहरपंडरनिवास॥ शोभिन्नरिविविधुवद
 नजनु॥ चारिधियोचिविलास॥ ११॥ ॥ चौपाई॥ ॥ प्र
 थमजाडजिन्हचननसुनाए॥ भूषणवसनभूरिनिहपा

ए॥ प्रेमपुलकतनुमनअनुरागी॥ मंगलसाजसजनसब-
 लागी॥ चौकेचारुसुमित्रापूरे॥ मणिमयविविधभांतिअ-
 तिरूरे॥ आनंदमगनराममहतारी॥ दिएदानबहुविप्रहंका-
 री॥ पूजेउग्रामदेवसरनागा॥ कहेउबहोरिदेनबलिभाग्य॥
 इहांतेक्षेपकहैं॥ ॥ बारबारगनपतीहिनिहोरा॥ कीजेस-
 कलमनोरथमोरा॥ भूपहृदयप्रभुमेरहुजाई॥ मतिदृढदे-
 हुजोजियमहुआई॥ जोकछुइछोरहीमनमाहीं॥ सोपरि-
 होईआनकछुनाहीं॥ ॥ जोहिंविधिहोइरामकल्याण-
 ॥ देहुदयाकरिसोवरदाना॥ गावहिंमंगलकोकिलबयनी॥
 ॥ विधुबदनीमृगशावकनयनी॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामराज-
 अभिषेकसुनि॥ हियहरषेनरनारि॥ लगीसुमंगलस-
 नसब॥ विधिअनुकूलविचारि॥ १२॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 तबनरनाहबसिछुबुलाये॥ रामधामशिखदेनपढाये॥
 गुरुआगमनसुनतरघुनाथा॥ द्वारआइनायेउपदमा-
 था॥ सादरअर्घदेइघरआने॥ षोडशभांतिपूजिसनमाने॥
 ॥ गहंचरणसिंघसहितबहोरी॥ बोलेरामकमलकरजो-
 री॥ सेवकसदनस्वामिआगमनू॥ मंगलमूलअमंगल-
 दमनू॥ तदपिउचितअसबोलिसप्रीती॥ पठइयनाथका-
 जअसनीती॥ प्रभुतातजिप्रभुकीन्हसनेहु॥ भएउपुनी-
 तआजुममगेहु॥ आयसुहोइसोकरियगोसांई॥ सेवक-
 लहैस्वामिसेवकाई॥ ॥ दोहा॥ ॥ सुनिसनहसानेब-
 चन॥ सुनिरघुबरहिंप्रशंस॥ रामकसनतुमकहुहुअस॥
 हंसवंशअवतंस॥ १३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ बरणिरामगुण-
 शीलसुभाऊ॥ बोलेप्रेमपुलकिसुनिराऊ॥ भूपसजेऊअ-
 जू॥ चाहतदेनतुमहिंयुवराजू॥ रामकरहुस

वसंयमआजू॥ जौंविधिकुशलनिवाहैकाजू॥
 देइराउपहंगएऊ॥ रामहृदयजनुविस्मयभएऊ॥ जनमेए
 कसंगसबभाई॥ भोजनशयनकेलिलरिकाई॥ कएबेध
 उपवीतबिवाहा॥ संगसंगसबभएउउछाहा॥ विमलवंश
 इहअनुचिनएऊ॥ बंधुबिहाइबडेहिअभिषेकू॥ प्रभुसमे
 मपछितानिस्तहाई॥ हरहिंभक्तमनकीकुटिलाई॥ ॥दो
 हा॥ ॥तेहिंअवसरआएलपण॥ मगनप्रेमआनंद॥ स
 नमानेप्रियवचनकहि॥ रविकुलकैरवचंद॥ १४॥ ॥
 चौपाई॥ ॥बाजहिंवाजनविविधविधाना॥ पुरप्रमोद
 नहिंजाइवरवाना॥ भरतआगमनसकलमनावहिं॥ आ
 वहिंवेगिनयनफलपावहिं॥ हाटबाटबरगलीअथाई
 ॥ कहहिंपरस्परलोकलुगाई॥ कालिलगनभरिकेनिक
 रावा॥ पूजाहिंविधिअभिलाषहमारा॥ कनकसिंहासन
 सीयसमेता॥ बैटहिंरामहोइचिंतचेता॥ सकलकहहिं
 कवहोइहिंकाली॥ विधनमनावहिंदेवकुचाली॥ तिनहिं
 सोदावनअवधवधावा॥ चोरहिंचांदनिरातिनभावा॥
 आरटबोलिबिनयसरकरहीं॥ वारहिंवारपांडलैपरहीं
 ॥ ॥दोहा॥ ॥विपतिहमारिविलोकबडि॥ मानुकरिय
 सोइआजू॥ रामजाहिंवनराजनजि॥ होइसकलसुरका
 जू॥ १५॥ ॥चौपाई॥ ॥रुनिरुनविनयटाटिपछिता
 ती॥ भइउसरोजविपिनहिमराती॥ देखिदेवपुनिकहहिं
 बंदोरी॥ मानुतोहिंनहिथोरीउखोरी॥ विस्मयहृषेरहित
 रघुराऊ॥ तुमजानहुंरघुवीरसुभाऊ॥ जीवकर्मवशदुरव
 सुन्दभारी॥ नादयअवधदेवहितलागी॥ बारबारगहि
 नरणमकांनो॥ चर्नविनारिविनुधर्मनिपांनो॥ उंचनि

वासनीचकरतूती॥ देखिन शकहिंपराइबिभूती॥ आगि
 लकाजबिचारिबहोरी॥ करिहैंचाहकुशलकविमोरी॥
 हरषित्दयदशरथपुरआई॥ अनुग्रहदशादुसहदुखदा
 ई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाममंथरामंदगति॥ चेरिकेकथिकेरि
 ॥ अथशपिटांरीताहिकरि॥ गईगिरामतिफेरि॥ १६॥ ॥
 चौपाई॥ ॥ देखिमंथरानगरबनावा॥ मंगलमंजुलबाजु
 बधावा॥ पूछेसिलोगन्हकाहउछाहू॥ रामतिलकसुनिभा
 उरदाहू॥ करैविचारकुबुद्धिकुजाती॥ होइअकाजकवन
 राती॥ देखिलागिमधुकुटिलकिराती॥ जिमिगवत
 केलेउंकेहिभांती॥ भरतमातुपहंगइबिलरवानी॥ काअ
 नमनीहंसिकहहिंसिरानी॥ उतरदेइनलेइउसासू॥ नारि
 चरितकरिदारनिआंसू॥ हंसिकहरानिगालबडतोरै॥ दी
 न्हलषणशिषअसमनमोरै॥ तबहूनबोलिचेरिबडिपा
 ॥ छडैआसकारिजनुसांपिनौ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सभ
 यरानिकहकहसिकिन॥ कुशलराममहिपाल॥ भरतल
 रिपुदवनसुनि॥ भाकुवरीउरशाल॥ १७॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ ॥ कासोवहिसोहागअभिमानी॥ निकटमहा
 भयतूनडरानी॥ ॥ कतशिखदेइहमहिंकोउमाइ॥ गाल
 करवकिहिकरबलपाई॥ रामहिंछांडकुशलकेहिआजू॥
 नरेशदेतयुवराजू॥ भाकौशल्यहिंबिधिअति
 न॥ देखतगर्वरहतउरनाहिन॥ देखहुकसनजाइ
 भा॥ जोअवलोकिमोरमनक्षोभा॥ पूतविशेदनशोचतु
 ह्यारे॥ जानतिहोवशनाहहमारे॥ नौंदबहुतप्रियसेजतुरा
 ई॥ लपहुनभूषकपदचतुराई॥ सुनिप्रियबचनकुटिलम
 नजानी॥ ऊकिक्वरीसनकहअसरानी॥ पुनिअसकव

हुंकहसिघरफोरी॥तौधरिजीभकदावौंतोरी॥ ॥दोहा॥
 ॥कानेरखोरेकूबरे॥कुटिलकुचालीजानि॥तियविशेषपुनि
 चेरिकहि॥भरतमातुसुसुकानि॥१८॥ ॥चौपाई॥ ॥
 प्रियवादिनिशिरवदीन्हैउतोही॥सपनेहुतोपरकोपनमो-
 ही॥सुदिनसुमंगलदायकसोई॥तोरकहाफुरजिहिंदिन
 होई॥जेठस्वामिसेवकलघुभाई॥यहदिनकरकुलरीति
 सुहाई॥रामतिलकजौंसाचेहुकाली॥मंगुदेउमनभावत
 आली॥कौशल्यसमशवमहतारी॥रामहिंसहजसुभा
 वपियारी॥मोपरकरहिंसनेहविशेषी॥मैंकरिप्रोतिपरी
 क्षादेखी॥जौंविधिजन्मदेइकरिछोहू॥होहिंरामसियपू
 तपनोहू॥आएतेंअधिकरामप्रियमोरे॥तिनकेतिलक-
 क्षोभकसतोरे॥ ॥दोहा॥ ॥भरतशपथतोहिसत्यकहुं
 ॥परिहरिकपटदुराव॥हर्षसमयविस्मयकरसि॥कारणमो
 हिस्तनाव॥१९॥ ॥चौपाई॥ ॥सुनतवचनमंधरारिसा-
 नी॥बोलिवचनकपटललसानी॥एकहिंवारआशसबपू
 जी॥अवकलुकहवजीभकरिदूजी॥फोरेयोगकपारअभा
 गा॥भलौकहतदुरवरोरेहुंलागा॥कहइछूटपुरबातवना-
 ई॥तेंपियतुमहिंकरुइमोमाई॥हमहुकहवअवठकुर-
 सोदाती॥नाहितमौनरहवदिनराती॥करिकुरूपविधिपर
 वशकीन्हा॥बोवासोलुनियचहियजोदीन्हा॥कोउचृपहो
 उहमेंकाहानी॥चैरीछाडिनहोउवरानी॥जारइजोगसुभा
 वहमारा॥अनभलंदरिवनजाइतुहारा॥तानेंकलुकवात
 अनुसारी॥समवदविचिचूकहमारी॥ ॥दोहा॥ ॥
 मुटकपटाप्रयवचनसुनि॥तायअधरबुधिरानी॥सुर
 मायावगचैरनिहिं॥सुददजानिपतिआनि॥२०॥ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ सादरपुनिपुनिपूछतओही ॥ शबरीगानमृ-
गीजतुमोही ॥ तसमतिफिरिअहेजसभावी ॥ रहसिचेरिधा-
तभलिफावी ॥ तुमपूछहुमैं कहतडेराऊं ॥ धरेहुमोरघरफोरी
नाऊं ॥ सजिप्रतीतिबहुबिधिगढिछोली ॥ आयुधसादसती
तबबोली ॥ प्रियसियरामकहातुमरानी ॥ रामहिंतुमप्रियसो
कुरवानी ॥ रहाप्रथमदिनसोअबवीते ॥ समयपाइरिपुहो
हिंपिरीते ॥ भानुकमलकुलपोषनिहारा ॥ बितुजलजारि
करैसोइचारा ॥ जरितुह्यारिचहसबतिउस्वारी ॥ रुंधहुक-
रिउपाइवरचारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तुमहिनशोचसोहागब-
ल ॥ निजबशजानहुराव ॥ मनमलीनसुहमीठनृप ॥ राउर
सलरसभाव ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चतुरगंभीररामम-
हतारी ॥ बीचपाईनिजकाजसमहारी ॥ पठएभरतभूपनि-
ओरे ॥ राममातुमतिजानबरौरे ॥ सेवहिंसकलसबतिमो-
हिनीके ॥ गर्बितभरतमातुबलपीके ॥ शालतुह्यारकौशिल
हिमाई ॥ चतुरकपटनहिपरतलखाई ॥ राजहिंतुमपरप्री-
तिविशेषी ॥ सबतिसुभावशकैनहिदेखी ॥ रविप्रचंडभूप
हिंअपनाई ॥ रामतिलकहितलगनभराई ॥ इहिकुलउचि-
तरामकहंटीका ॥ सबहिंसोहाइमोहिसुठिनीका ॥ आगि-
लबातसमुझिडरमोही ॥ देऊंदैवफिरिसोफलओही ॥
॥ दोहा ॥ ॥ रचिपचिकोटिककुटिलपन ॥ कीन्हैसिकपट-
प्रबोध ॥ कहेसिकथाशतसौनिकर ॥ जातेबदैबिरोध ॥ २२
॥ चौपाई ॥ ॥ भावीबशप्रतीतिउरआई ॥ पूछिरानिनि-
नशपथदिवाई ॥ कापूछहुतुमअवहुंनजाना ॥ निजहित
अनहितपशुपहिचाना ॥ भएउपारवादिनसजतसमाजू ॥
सुधिपायहुमोसनआजू ॥ रवाइयपहिरियराजतु-

ह्यारे ॥ सत्य कहौं नहि दोष हमारे ॥ जौ असत्य कह्यु कहववना
 ई ॥ तौ विधि देहहिं मोहि सजाई ॥ रामहिं तिलक कालिजों
 भएऊ ॥ तुम कह बिपति बीज विधि बएऊ ॥ रेखारखैं चि कहौं
 बल भारखी ॥ भामिनि भयि दुदुध की मारखी ॥ जौं सत सहि
 त करहुं सेवकाई ॥ तौ घर रहहुन आन उपाई ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ कटु बनी नहिं दीन्ह दुख ॥ तुमहिं कौ शिला देव ॥ भरत बं
 दि गृह सेइ हैं ॥ राम लषण करनेव ॥ २३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 के कय सुता सुनत कटु वाणी ॥ कहिन शकैं कछु सहमि सु
 खानी ॥ तनु पसेव कदली जिमिकां पी ॥ कुवरी दशन जी भ
 तव चां पी ॥ कहि कहि कोटि कपट कहानी ॥ धीरज धर
 हु प्रबोधे सिरानी ॥ कीन्है सिकठिन पदाइ कपाट ॥ जिमि
 न नवैं फिरि उकठि कुकाट ॥ ॥ क्षेप कहै ॥ वचन सुनत अ
 निसय भय मानी ॥ दुष्ट संग तेम तीवै रानी ॥ धरम निरत गु
 न ज्ञान गंभीरा ॥ दुष्ट संग मति रहै न धीरा ॥ ॥ ॥ फिरा कर्म प्रि
 य लारु कुचाली ॥ वकिहि सराहति मनहु मराली ॥ सुनु मंथ
 रा वात फुरतीरी ॥ दाहिन आंखि फरकानित मोरी ॥ दिन प्रति
 देखैं राति कुसपना ॥ कहौं न तोहि मोहव श अपना ॥ काह
 करों गखि शब्द सुभाऊ ॥ दाहिन वाम जानौ नहि काऊ ॥ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ अपने चलत न आ जुलगी ॥ अन भल काहु क
 कीन्ह ॥ केहि अघ एकहिं वार मोहि ॥ दैव दुसह दुख दीन्ह ॥
 ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नैहर जन्म भरव वरु जाई ॥ जिअ
 तन करव सवति सेवकाई ॥ अरि वश देव जि आवैं जाही ॥
 मरगानो कर्ता द जानन चाही ॥ दोन वचन कहवहु विधरा
 नी ॥ मनि कुवरी नित्य माया दानी ॥ असक सकहु मानि म
 नहुना ॥ सुख मोहा गनु मकह दिन दुना ॥ जो राउर अस अ

नभलताका॥सौपाइहियहफलपरिपाका॥जबतेंकुमति
सुनामेंस्वामिनि॥भूरखनबासरनींदनयामिनि॥पूछागु
णिन्दरेखतिनखांची॥भरतभुआलहोवयहसांची॥भा-
मिनिकरहुतोकरींउपाऊ॥हैतुह्मरेसेवाबशराऊ॥॥दोहा
॥॥परौंकूपतबबचनलगि॥शकौंपूतपतित्यागि॥कहे
सिमोरदुरवदेखिबड॥कसनकरवहितलागि॥२५॥॥
चौपाई॥॥कुबरीकरीकचुलिकैकेई॥कपटछुरीउरपाह
नदेई॥लपेनरानिनिकठदुरवकैसे॥चरेहरिततृणवलिप
शजैसे॥सुनतबातमृदुअंतकठोरी॥देतिमनहुंमधुमा
हुरघोरी॥कहेचेरिसाधिअहैकिनाही॥स्वामिनिकहहुक
थामोहिपांही॥दुइवरदानभूपसनथाती॥मांगहुआजुजु
डाबहुछाती॥सुतहिंराजरामहिंबनबासू॥देहुलेहुसब
सबतिहुलासू॥भूपतिरामशपथजबकरही॥तबमांगहु
जेहिबचननटरेई॥होइअकाजुआजुनिशिबीते॥बचन
मोरफुरमानहुजीते॥॥दोहा॥॥बडकुघातकरिपात-
किनि॥कहेसिकोपगृहजाहु॥काजसंवारहुसजगहोई॥
सहसाजनिपतिआहु॥२६॥॥चौपाई॥॥कुबरिहिंरा
निप्राणप्रियजानी॥बारबारबडिबुद्धिबरवानी॥तोहिस
महितनमोहिसंसार॥बहेजातकैभयिसिअधरा॥जौंवि
धिपुरवमनोरथकाली॥करींतोहिचखपूतरिआली॥ब
हुबिधिचेरिहिंआदरदेई॥कोपभवनगवनीकैकेई॥वि
पतिबीजवर्षाअतुचेरी॥भूइभइकुमतिकैकयीकेरी॥पाइ
कपटजलअंकुरजामा॥वरदोउदलफलदुरवपरिणामा॥
कोपसमाजसाजिसबमोई॥राजकरततेहिकुमतिविगोई
॥राउरनगरकोलाहलहोई॥यहकुचालिकछुजाननसोई॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रमुदित पुरनर नारिस ब ॥ साजिसुमंग
 लचार ॥ एकप्रविशहिं एकनिर्गमही ॥ भीरभूपदरबार ॥ ॥
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बालसुबासनिहियहरषाहीं ॥ मिलिद
 शपांचरामपहिंजाहीं ॥ प्रभुआदरहिं प्रेमपहिचानी ॥ पूछ
 हिंकुशलक्षेममृदुबाणी ॥ फिरहिं भवनप्रभुआयसुपाई
 ॥ करतपरस्पररामबडाई ॥ कोरघुवीरसरिससंसार ॥
 शीलसनेहनिवाहनहारा ॥ जेहिंजेहिं योनिकर्मवशभ्रम
 हीं ॥ तहतहंडशदेवयहहमहीं ॥ सेवकहमस्वामीसियना
 हु ॥ होउनाथयहओरनिबाहु ॥ ॥ ॥ क्षेपकहें ॥ अभिमति
 दानीकहवहुनीके ॥ पुरवहुसकलमनोरथजीके ॥ ॥ ॥ अ
 सअभिलाषहृदयसबकाहु ॥ केकयसुताहृदयअतिदा
 हु ॥ कोनकुसंगतिपाइनशाई ॥ रहैनीचमतेचतुराई ॥ ॥
 क्षेपकहें ॥ अतिहिसशीलकैकेयीरानी ॥ दुष्टसंगतैमति
 वोरानी ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मांऊसमयसानंदनृप ॥ गएकै
 कयीगोह ॥ गवननिदुरतानिकटकिय ॥ जनुधरिदेहसने
 ह ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कोषभवनसुनिसकुचेराऊ ॥ भए
 बजअगमनपरैनपाऊ ॥ सरपतिवसहिंवाहुबलजाके ॥ न
 रपतिरहहिंसकलरूपनाके ॥ सोसुनितियारिसगएसुरवा
 डें ॥ देखहुकामप्रतापबडाई ॥ शूलकुलिशअसिअवग
 निहारे ॥ नैरतिनाथसुमनशरमारे ॥ सभयनरेशधियाप
 हंगएऊ ॥ देखिदशादुखदरुणभएऊ ॥ भूमिशयनपटमो
 टपुगणा ॥ ॥ द्यडारितनुभूषणनाना ॥ कुमतिहिंकेसकुरु
 पताफावी ॥ अनअहिवातसुचजनुभार्या ॥ जाइनिकदनु
 पकहमृदुबाणी ॥ प्राणधियाकैहिहेतुरिसानी ॥ ॥ छंद ॥
 ॥ कैहिहेतुगुनिगिमानिपरसतपाणिपतिहिंनिवारई ॥ मा

नहुंसरोषभुजंगभामिनिविषमभांतिनिहारई ॥ १ ॥ द्यौवा
सनारसनादशनवरमर्मठाहरदेखई ॥ तुलसीनृपतिभवि
तव्यतावशकामकौतुकलेखई ॥ २ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ बार-
बारकहराउ ॥ सुमुखिखसलोचनिपिकबयनि ॥ कारणमो
हिस्सनाऊ ॥ गजगामिनिनिजकोपकर ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई
॥ ॥ अनहिततोरप्रियाकेहिंकीन्हा ॥ केहिदुइशिरतेहिय
मचहलीन्हा ॥ कहुकेहिरंकहिकरींनरेशू ॥ कहुकेहिनृप
हिनिकारींदेशू ॥ शकौंतोरअरिअमरहुंमारी ॥ कहाकी
टबपुरेनरनारी ॥ जानसिमोरसभावबरोरू ॥ मनतबआ
ननचंद्रचकोरू ॥ प्रियाप्राणसुतसर्वसमोरे ॥ परिजनप्र-
जासकलबशतोरे ॥ जोकलुकहोंकपटकरितोही ॥ भामि
निरामशपथशतमोही ॥ बिहंसिमांगुमनभावतिबाता ॥ भू
षणसाजुमनोहरगाता ॥ घरीकुघरीसमुजिजियदेखू ॥ बे
गिप्रियापरिहरहुकुबेखू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहसनिमनगुणि
शपथबडि ॥ बिहंसिउठिमतिमंद ॥ भूषणसजतिबिलोकि
मृग ॥ मनहुंकिरातिनिफंद ॥ ३० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पुनिकह
राउसहृदजियजानी ॥ प्रेमपुलकिमृदुमंजुलबाणी ॥ भा
मिनिभएउतोरमनभावा ॥ घरघरनगरआनंदबधावा ॥
रामहिंदेऊकालियुवराजू ॥ सजहुसलोचनिमंगलसाजू ॥
दलकिउठिसनिबचनकठोरा ॥ जनुलुइगएउपाकबरतोरा
॥ ऐसीपीरबिहंसिउरगोई ॥ चोरनारिजिमिप्रगटनरोई ॥
लखीभूषकपटचतुराई ॥ काटिकुटिलमणिगुरूपढाई ॥ य
द्यपिनीतिनिपुणनरनाह ॥ नारिचरितजलनिधिअवगा
ह ॥ कपटसनेहबडाइबहोरी ॥ बोलीबिहंसिनयनमुखमो
री ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मांगुमांगुतुल्यकहहुपिय ॥ कबनदहुन

हिलेहु ॥ देन कहै उवरदानहुइ ॥ सोउ पावत संदेहु ॥ ३१ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ * क्षेप कहै ॥ देहु तजिय तऊ तजौ न पाणा ॥
 वचन सुनत भूपति मुस्ककाना ॥ * ॥ जाने ऊर्म मराउ हंसि
 कहई ॥ तुमहि काहो वपर मप्रिय अहई ॥ थाती राखिन
 मागे उकाऊ ॥ विसरि गए मम भोर सुभाऊ ॥ जूटहुं दोष ह
 महि जनि देहु ॥ दुइ के चारि मांगिकि न लेहु ॥ रघुकुलरी-
 तिसदा चलि आई ॥ प्राण जाइ बरु वचन न जाई ॥ नहि अ
 सत्य सम पात कपुंजा ॥ गिरि सम होहिं कि कोटि कपुंजा ॥
 सत्य मूल सब सुकृत सुहाए ॥ वेद पुराण विदित मुनि गा
 ए ॥ तेहि पर राम शपथ करि आई ॥ सुकृत समेन अवधि
 रघुराई ॥ वात दटाइ कुमति हंसि बोली ॥ कुमति विहंग कु
 लहजनु खोली ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूपमनोरथ सुभगवन
 ॥ सुख सुविहंग समाज ॥ भिल्लिनि जनु छाडन चहति ॥
 वचन भयंकर काज ॥ ३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनहु प्रा
 णपति भावत जीका ॥ देहु एक वर भरतहि दीका ॥ दूसर
 वर मागों कर जोरी ॥ नाथ मनोरथ पुर बहु मोरी ॥ ताप
 सबै य विशेष उदासी ॥ चौदह वर्ष राम वन वासी ॥ सुनि
 तिय वचन भूप उर शोक ॥ शशिकर उदित विकल जिमि
 कोक ॥ संभ्रम मुरछि परे नृप कैसे ॥ काटे उपर वपरा पग
 जैसे ॥ अनिव्याकुल तनु विवरन केशा ॥ धरि धीर जन
 व ऊटे न रेशा ॥ गए सहमि कछु कहिन हि आवा ॥ जनु मि
 चान वन उपदेउ लावा ॥ विवरण भए उनि पट महि पाल
 ॥ दामिनि हत उमन हुन रुतान् ॥ माथे हाथ मुं दंडो उलो
 चन ॥ तनु धरि शो नला गुननु शोचन ॥ मोर मनोरथ सु
 रत रुकुला ॥ फलत करिणी जनु हत उलमूला ॥ अथ धउ

जारिकीन्हकैकेई॥दीन्हैसिअचलबिपतिकैनेई॥॥दोहा॥
 ॥कवनेअवसरकाभएउ॥गएउनारिविश्वास॥योगसि-
 हिफलसमयजिमि॥यतिहिअविद्यानाश॥३३॥॥
 चौपाई॥॥इहिविधिराऊमनहिमनजाषा॥देरिवकुभां-
 तिकुर्मातिमनमाषा॥भरतकिराउरपूतनहोही॥आनेहु
 मोलबेसाहिकिमोही॥जोसुनिशरअसलागुतुह्मारे॥का-
 हेनबोलेउबचनसंभारे॥देहुउतरअसकहहुकिनाई॥
 सत्यसिंधुतुमरघुकुलमाही॥देनकहेउवरअवजनिदे-
 हु॥तजहुसत्यजगअपयशलेहु॥सत्यसराहिकहेउवर
 देना॥जानेहुलेइहिंमांगिचबेना॥शिबिदधिचीबलिजो
 कछुभाषा॥तनुधनतजेउबचनपणराषा॥अतिकहुबच-
 नकहतिकैकेयी॥मानहुलौनजरेपरदेई॥॥दोहा॥
 धर्मधुरंधरधीरधरि॥नयनउधारेराऊ॥शिरधुनिलीन्ह
 उसासअति॥मारेसिमोहिकुघाउ॥३४॥॥चौपाई॥
 आगदेरिवअरतिरिसभारी॥मनहुंरोषतरबारिउधारी॥
 मूढकुबुद्धिधारनिठुराई॥धरिकुवरीस्वरशानबनाई॥
 लषेउमहीपकरालकठोरा॥सत्यहिंजीवनलेइहिंमोरा॥
 बोलेराउकठिनकरीछाती॥बाणीबिनयनताहिसोहा-
 ती॥मोरेभरतरामदोउआरवी॥सत्यकहौंकरिशंकरसा-
 रवी॥प्रियाबचनकसकहसिकुभांती॥रीतिप्रतीतिप्रीति
 करिहाती॥अवशिदूतमैपठउवप्राता॥इहैबेगिसुनतदो-
 उभाता॥सुदिनसाधिसबसाजसजाई॥देहौंभरतहिंरा-
 जबडाई॥*क्षेपकहै॥तबसुतराजकरीसुनुरानी॥रा-
 मरहहुगृहकौयहबानी॥*॥॥दोहा॥॥लोभनराम
 हिंराजकर॥बहुतकरतपरप्रीति॥मैबडछोटबिचारकरि

॥ करतरहेउं नृपनीति ॥ ३५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ॐ क्षेपकहै ॥
 विनुरघुपति ममजीवननाहीं ॥ प्रियाविचार देखु मनमा
 ही ॥ ॐ रामशपथ शतकहेउ सकभाऊ ॥ राममातु मोहिकहा
 नकाऊ ॥ मैम्व कीन्ह तोहि बिनु पूछे ॥ तांते परेउ मनोरथ छू
 छे ॥ रिसपरि हरु अवमंगल साजू ॥ कछु दिन गए भरत सु
 वराजू ॥ एकहिं बात मोहि दुखलागा ॥ बरदूसरं असमंज
 समांगा ॥ अजहुं हृदय दहत तोहि आंचा ॥ रिसपरि हास
 कि सांचहु सांचा ॥ बहुत जिरौष राम अपराधू ॥ सब कोउ
 कहतराम सुठि साधू ॥ तैंहु सराहसि करसि सनेहू ॥ अव
 स्तनि मोहि भएउ संदेहू ॥ जासु सकभाव अरिहु अनुकूला
 ॥ सोकि मिकरहिं मातु प्रतिकूला ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रियाहा
 सरिसपरि हरहु ॥ मांगु विचारि बिबेक ॥ जेहि देखौं अव
 नयन भरि ॥ भरतराज अभियेक ॥ ३६ ॥ ॥ चौपाई ॥
 जिये भिनवरुवारि विहीना ॥ मणिबिनु फणिक जिये दु
 खदीना ॥ कहौ सकभावन छलमनमांहीं ॥ जीवन मोरराम
 विनु नाहिं ॥ समुझि देखु नैं प्रिया प्रबीणा ॥ जीवन रामद
 रश आधीना ॥ ॐ क्षेपकहै ॥ यद्यपि नृप अति कीन्ह निहो
 रा ॥ माने नहि अति हृदय कठोरा ॥ ॐ ॥ स्तनि मृदु बचन कु
 मति अति जरई ॥ मनहुं अनल आहुति घृत परई ॥ कहहु
 कहहु किन कोटि उपाया ॥ इहां नलागि हि राउर माया ॥ दे
 हु किलेहु अयश कर नाहीं ॥ मोहिन बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥
 राममाधुन मसाधु सजाना ॥ राममातु भलितु मयहि चा
 ना ॥ नशकागल्या मोर भलताका ॥ तस फल देउन्है करि
 शाका ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्वांन प्रात मुनिवेष धरि ॥ जौन राम
 चल जाहिं ॥ मोर मरण राउर यश ॥ नृप समुझिय मनमांहिं ॥

॥३७॥ ॥चौपाई॥ ॥असकहिकुटिलभईउठिठादी॥
मानहुंरोषतरंगिनिबादी॥पापपहारप्रगटभइसोई॥भ
रिक्कोधजलजाइनजोई॥दुइबरकूलकठिनहठधारा॥भ
वरकुंवरिबचनप्रचारा॥डाहतिभूपरूपतरुमूला॥चली
बिपतिबारिधिअनुकूला॥लखीनरेशबातसबसाची॥
तियमिषमीचुशीसपरनाची॥गहिबदबिनयकीन्हबैठा
री॥जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी॥मांगुमाथअवहिंदे
उंतोही॥रामबिरहजनिमारसिमोही॥राखुरामकहंजे-
हितेहिभांती॥नाहितजरिहिंजन्मभरिछाती॥ ॥दोहा
॥देखिव्याधिअसाध्यनृप॥परेउधरणिधुनिमाथ॥
कहतपरमआरतबचन॥रामरामरघुनाथ॥३८॥ ॥चौ
पाई॥ ॥व्याकुलराउशिथिलसबगाता॥करिणीकल्पत
रुमनहुनिपाता॥कंठसूषमुखआवनबाणी॥जिमिपा-
ठीननदोबिनुपाणी॥पुनिकहकदुकठोरकैकेयी॥मन
हुपाबमहंमाहुरदेई॥जौअंतहुअसकरतबएऊ॥मांगु
मांगुतुमकिहिबलकहेऊ॥दुइकिहोईएकसमयभुआ
ला॥हसबसठाइफुलाइबगाला॥दानिकहाउवअरुह
पणाई॥चाहियक्षेमकुशलरौताई॥छाडहूबचनकिधी
रजधरहु॥जनिअवलाइवकरुणाकरहु॥तनुतियतनय
धामधनधरणी॥सत्यसिंधुकहतृणसमबरणी॥क्षे
पकहै॥दीनदानफिरिमागसिराजा॥परिहरवेदलोककी
राजा॥हीतप्रातस्तवनहिनजाई॥चौथेपननृपसजस
नसोई॥॥ ॥दोहा॥ ॥मर्मबचनसुनिराउकह॥कछु
कदोषनहितोर॥लागेउतोहिपिशाचजिमि॥कालकहाव-
तमोर॥३९॥ ॥चौपाई॥ ॥चहतनभरतभूपतिहिंभोरे॥

अचरजलागा ॥ जाहुसुमंत्रजगाबहुजाई ॥ कीजियकाज
 रजायसुपाई ॥ गेसुमंतनृपमंदिरमाही ॥ देखिभयानक
 जातडेराही ॥ धाइखाइजमुजाइनहेरा ॥ मानहुंबिपतिवि
 दबसेरा ॥ पूछतकोऊनऊतरदेई ॥ गेजहिभवनभूपकै
 केई ॥ कहिजयजीवबैठुशिरनाई ॥ देखिभूपगतिगएसु
 खाई ॥ शोचबिकलबिबरणमहिपरेऊ ॥ मानहुकमलसू
 लपरिहरेऊ ॥ सचिबसमीतशकैनहिपूछी ॥ बोलीअशुभ
 भरीशुभछुछी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परीनराजहिनींदनिशि ॥
 मर्मजानजगदीश ॥ रामरामरटिभोरकिय ॥ हेतुनकहेउ
 महीश ॥ ४२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आनुहरामहिबोगिबुला
 ई ॥ समाचारसबपूछहुआई ॥ चलेउसुमंतराउरुषजा
 नी ॥ लरवीकुचालिकीन्हकुछरानी ॥ शोचबिकलमगप
 रेनपाऊ ॥ रामहिबोलिकहोहिकाराऊ ॥ उरधरिधीरज
 गएउदुआरे ॥ पूछहिंसकलदेखिमनमारे ॥ समाधान
 सोकरिसबहिंका ॥ गएजहांदिनकरकुलदीका ॥ रामसु
 मंतहिआवतदेखा ॥ आदरकीन्हपितासमलेखा ॥ निर
 खिबदनकहिभूपरजाई ॥ रघुकुलदीपहिचलेलिवा
 ई ॥ रामकुभांतिसचिबसंगजाही ॥ देखिलोगजहंतह
 बेलखाही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाइदीखरघुबंशमणि ॥ न
 रपतिनिपटकुसाज ॥ सहमिपरेउलखिसिंहिनिहि ॥ म
 नहुंघड़गजराज ॥ ४३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सूर्यहिअधर
 जरेसबअंगू ॥ मनहुदीनमणिहीनभुबंगू ॥ सरूपसमी
 मानहुमीचुधुरीगुणिलेई ॥ करुणामुय
 अदुरामसुभाऊ ॥ प्रथमदीखदुखसुनानकाऊ ॥ तदपि
 धीरधरिसमयविचारी ॥ पूछीमधुरवचनसहतारी ॥ मो

हि कहु मातु तांत दुरव कारण ॥ करिय यत न जेहि होइ निवा
 रण ॥ सुनहु राम सब कारण एह ॥ राजहि तु म परबहु त-
 सनेह ॥ देन कहे मोहि दुइ वर दाना ॥ मांगेउ जो कछु मोहि
 सो दाना ॥ सो सुनि भयेउ भूप उर शोचू ॥ छांड़िन शोकहि तु
 झारस कोचू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुन सनेह इत बचन उत ॥ सं
 कट परेउ नरेश ॥ शकहु तो आयसु धरहु शिर ॥ मेदहु कठि
 न कलेश ॥ ५४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ निधरक बैठिक हति क
 दुवाणी ॥ सुनन कठिन ता अति व्यकुलानी ॥ जी भकमा
 न बचन शरना ना ॥ मनहुं मही पसु दुलक्ष समाना ॥ जनु
 क मोर पण धरें शरीर ॥ शीखइ धनुष विद्यावर वीर ॥ स
 व प्रसंग रघुपति हिं सुनाई ॥ बैठी मनु ननु धरिनि दुराई ॥
 मन सुसुकाहि भालु कुल भाजू ॥ राम सहज आनंद निधा
 न ॥ बोलें बचन विगन सब दूषण ॥ मृदु मंजुल जनु भागवि
 भूषण ॥ सुनु जननी सोइ सुत बड भागी ॥ जो पितु मातु ब
 चन अजु गी ॥ ननय मातु पितु पोषण हारा ॥ दुलभ जन-
 नीय हंस सारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनि गणामिलन विशेष वन
 ॥ सबहि भांति हित मोर ॥ लेहि महं पितु आयसु बहुरि ॥ सं
 मज जननी मोर ॥ ५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भरत माए प्रिय पा
 रहि राज ॥ विधिसव विधि मोहि सन्मुख अज ॥ जो न जा
 बचन ऐसै दुका जा ॥ प्रथम गणाय मोहि सुद समाजा ॥ से
 व एवें इदं तत्कन्यागी ॥ परिहरि अमिल लैहि विपमागी ॥
 तेउ न पाइ अस्स समय नु कही ॥ देखि विचारि मातु मन मो
 री ॥ अंबक दुरत मोहि विशेषी ॥ निपट विफल नर नायक
 दीपी ॥ भोग आन पतिहि दुरव भारी ॥ होति मर्ताति न सुहिम
 हनारी ॥ गड धीन गुलु इति अगाध ॥ भासोत कछु बड अ

पराधू॥ जातैं मोहिन कहत कह्यु राऊ॥ मोर शपथ तोहिक
 हुसति भाऊ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहज सरल रघुपति बचन
 ॥ कुमति कुटिल करि जान॥ चलैं जौं कजि मिब क्रगति॥ य
 यपि सलिल समान॥ ४६॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रहसी रानि
 राम र खु पाई॥ बोली कपट सनेह जनाई॥ शपथ तुहां र भ
 रत कै इ आना॥ हेतु न दूसर मै कह्यु जाना॥ तुम अ पराध
 योग नहि ताता॥ जननी जनक बंधु सरव दाता॥ राम स-
 त्य सब जौं कह्यु कह्यु॥ तुम पितु मातु बचन रत अहहु॥
 पितहि बुझाई कह्यु बलि सोई॥ चौथो पन जहि अ यशन
 होई॥ तुम सम सबन सकृत् जेहि दीन्हें॥ उचित न ता सक
 निरादर कीन्हें॥ लागहि कुमुखि बचन शुभ कै से॥ मग-
 ह गयादिक तीरथ जै से॥ रामहि मातु बचन सब भाए॥
 जिमि सर सरिगत सलिल सहाए॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गति
 मूर्छा रामहि समिरि॥ नृप फिरि कर बटलीन्ह॥ सचिव
 राम आगमन कहि॥ विनय समय सम कीन्ह॥ ४७॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ अवनिय अक निराम पगु धारे॥ धरिधी
 रजत बन यन उ धारे॥ संचिव संभारि गउ बैठारे॥ चरण
 परत नृप राम निहारे॥ लिये उसनेह बि कल उर लाई॥ ग
 इमणि मयहु फणि क फिरि पाई॥ रामहि चितैं रहे न रना
 हू॥ चला बिलोचन वारि प्रवाहू॥ शोक बिबश कह्यु कहे
 न पारा॥ हृदय लगावत बारहि बारा॥ विधिहि मनावरा
 उमन माहीं॥ जेहि रघुनाथ न कानन जाही॥ समिरि महे
 शहि कहहिनि होरी॥ विनती सनहु सदा शिव मोरी॥ आ
 श्रुतोष तुम अ दरदानी॥ आरति हरहु दीन जन जानी॥

वचनमोरतजिरहहिंघर॥ परिहरिशीलसनेहु॥ ४८॥ ॥
 चौपाई॥ ॥ अयशहोउवरुस्यशनशाऊ॥ नरकपरौब
 रुस्करपुरजाऊ॥ सबदुरवदुसहसदाबहुमोही॥ लोचन
 ओटरामजनिहोही॥ असमनगुणहिराउनहिबोला॥
 पीपरपातसरिसमनडोला॥ रघुपतिपितहिप्रेमबश-
 जानी॥ पुनिकछुकहेउमातुअनुमानी॥ देशकालअव-
 सरअनुसारी॥ बोलेवचनबिनीतबिचारी॥ तातकहौ
 कछुकरौंदिटाई॥ अनुचितक्षमवजानिलरिकाई॥ अ-
 तिलघुचातलागिदुरवपावा॥ काहेनमोहिकहिप्रथम
 सुनावा॥ देखिगोसांइहिंपूछेउमाता॥ सुनिप्रसंगभ-
 एशीतलगाता॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मंगलसमयसनेहब-
 श॥ शोचपरिहरियैतात॥ आयसुदेइयहरिहिय॥ क-
 हिपुलकेप्रभुगात॥ ४९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ धन्यजन्मज-
 गनीतलतासू॥ पितहिप्रबोधचरितसुनिजासू॥ चारि
 पदारथकरतलताके॥ प्रियपितुमातुप्राणसमजाके॥
 आयसुपालिजन्मभलपाई॥ ऐहौंवेगिहिहोईरजाई
 ॥ विदामातुसनआवौंसांगी॥ चलिहौंवनहिबहु रिपद
 लागी॥ असकहिरामगवनतवकीन्हा॥ भूपशोचवस
 उतरनदीन्हा॥ नगरव्यापिगईवातसूतीछी॥ छुअतच
 दीजनुसवननुचीछी॥ सुनिभएविकलसकलनरनारी
 ॥ बलिविदपजनुलागिदवारी॥ जोजहंसुनेधुनेंशिरसा
 ई॥ बडविपादनहिधीरजहोई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुखसू-
 खहिंलोचनस्यवहिं॥ शोकनन्ददयसमाई॥ यानहुकर
 गारसकदक॥ उतराअवधिवजाइ॥ ५०॥ ॥ चौपाई॥
 भनिचनाइविधिमानविगारी॥ जहंतहंदेखिकेकथिहि

गारी॥ इहि पापिनिहिं बुझिका परेऊ॥ छाइ भवन पर पाव
 कधरेऊ॥ निज करन यन काटि चह दीषा॥ डारि सुधा वि
 ष चाहत चीषा॥ कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी॥ भइरघु
 वंश वेणु बन आगी॥ पल्लव बैठि पेड़ चह काटा॥ सुख म
 हु शोक दाद धरि दाटा॥ सदा राम इहिं प्राण समाना॥ कार
 , वन कुटिल पण ठाना॥ सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ
 ॥ सब विधि अगम अगाध दुराऊ॥ निज प्रति बिंब रूप ग
 ह जाई॥ जानि न जाइ नारि गति भाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ का
 नहि पावक जारि शक॥ कान समुद्र समाइ॥ कान करै अ
 बला प्रबल॥ केहि जग काल नखाइ॥ ५१॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ कासना इविधि काह सुनावा॥ कादेखाइ चह काह देखा
 वा॥ एक कहै भल भूपन कीन्हा॥ वर विचारि नहि कुमति
 हि दीन्हा॥ जो हठ भए उस कल दुख भाजन॥ अवला बिब
 श ज्ञान गुण गाजन॥ एक धर्म परमिति पहि चाने॥ नृपहि
 दोष नहि देहि सयाने॥ शिव दधीचि हरि चंद्र काहानी॥ ए
 क एक सन कहहिं बखानी॥ एक भरत कर संमत कह हीं॥
 एक उदास भाव सुनिरह हीं॥ कान मूढि कर रद गहि जीहा
 ॥ एक कहहिं इह बात अलीहा॥ सुकृत जाइ अशकहत
 तु हनारे॥ भरत राम कहं प्राण पिआरे॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चं
 द्र चुबै बरु अनल कण॥ सुधा होइ विष तूल॥ सपनेहु कब
 हुन करहिं कछु ॥ भरत राम प्रतिकूल॥ ५२॥ ॥ चौपा
 ई॥ एक विधा तहिं दूषण दे हीं॥ सुधा देखै दीन्ह विष जे
 हीं॥ खर भरन गर शोच सब काहु॥ दुसह दाह उर मिटाउ
 छाहु॥ विप्र बधू कुल मान्य जिठेरी॥ जे प्रिय परम कै केयी
 केरी॥ लगी देन शिरवशील सराही॥ वचन बाण समलग

हिताही ॥ भरतनप्रियमोहिरामसमाना ॥ सदाकहहुइह
 सबजगजाना ॥ करहु रामपरसहजसनेहू ॥ केहिअपराध
 आजुवनदेहू ॥ कवहुनकीन्हसवतिअवरेषू ॥ प्रीतिप्रती
 तिजानसबदेषू ॥ कौशल्यअवकाहबिगारा ॥ तुमजेहि
 लागिबज्रपुरपारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीयकिपियसंगपरि
 हरिहिं ॥ लपणकिरहिहहिधाम ॥ राजकिभुंजवभरतपुर
 ॥ नृपकिजियहिविनुराम ॥ ५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ असवि
 चारिजियछाडहुकोहू ॥ शोककलंककोटिजनिहोहू ॥ भ
 रतहिंअवशिदेहुयुवराजू ॥ काननकवनरामकरकाजू
 ॥ नाहिनरामराजकरभूरवे ॥ धर्मधुरीणविषयरसरुखे
 ॥ गुरुगृहवसहिंसमतजिगेहू ॥ नृपसनअसवरदूसरले
 हू ॥ रामसरिससतकाननयोगू ॥ कहाकहंहिंसनितुमक
 हंलोगू ॥ जौनमानिहुंकहेहमारै ॥ नहिलागिहिंकछुहाथ
 तुम्हारै ॥ जौपरिहासकीन्हकछुहोई ॥ तौकाहिप्रगटजना
 बहुसोई ॥ उठहुवेगिसोइकरहुउपाई ॥ जेहिविधिशोक
 कलंकनशाई ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जेहिंभांतिशोककलंकजाई
 उपाइकरिकुलपालहू ॥ हरिफेरिरामहिंजातवनजनिवा
 तदूसरचालहू ॥ ३ ॥ जिमिभासुबिनुदिनप्राणाबिनुतनुचं
 दबिनुजिमियामिनी ॥ निमिअवधितुलसीदासप्रभुवि
 तुससुजिधौंजियभाभिनी ॥ ४ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सरि
 न्दशिरवावनदीन्ह ॥ सुननमधुरपरिणामहिन ॥ नेइक
 छुकाननकीन्ह ॥ कुटिलप्रबोधाकूवरो ॥ ५ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ उतरुनदेइदसहरिपकूषी ॥ मृगाहिंचितवजनुवा
 र्धानभूरदा ॥ व्याधिअसाध्यजानितिनत्यागी ॥ नलीक
 र्दानगतिमंदअभागी ॥ राजकरनइहिंकुमनिविगोई ॥ ॥

न्हेसिअसजसकरैनकोई॥इहिविधिविलपहिपुरनरना
 री॥देहिकुचालिहिकोटिकगारी॥जरहिविषमज्व
 उसाशा॥कवनरामविनुजीवनआशा॥विपुलवियोगप्र
 जाअकुलानी॥जिमिजलचरणसूखतपानी॥अति
 विषादवशलेगलुगाई॥गणमातुपहंरामगोसाई॥सुखप्र
 सन्नचितचौगुणचाऊ॥मिताशोचजनिराखहिंराऊ॥
 ॥दोहा॥ ॥नवगयंदरघुबंशमणि॥राजअलानसमान
 ॥छटेजनुबनगवनसुनि॥उरआनंदअधिकान॥५५॥
 ॥चौपाई॥ ॥रघुकुलतिलकजोरिदोउहाथा॥मुदितमातु
 पदनाएउमाथा॥दीन्हअशीषलाइउरलीन्है॥भूषणब
 सननिछावरिकीन्है॥बारबारसुखचुंबतिमाता॥नयन
 नेहजलपुलकितगाता॥गोदराखिपुनिहृदयलगाई॥स्र
 वतप्रेमरसपयदसुहाई॥प्रेमप्रमोदनकछुकहिजाई॥
 रंकधनदपदबीजनुपाई॥सादरसुदरबदननिहारी॥
 बोलीमधुरबचनमहतारी॥कहहुतातजननीबलिहारी
 ॥कवहिलगनसुदमंगलकारी॥सुकृतशीलसुखशीम-
 सोहाई॥जन्मलाभकीअबधिअघाई॥ ॥दोहा॥ ॥जे
 हिंचाहतनरनारिसब॥अतिआरतइहिंभांति॥जिमिच
 तकिचातकतृषित॥दृष्टिशरदकृतुसांति॥५६॥ ॥चौपा
 ई॥ ॥तातजाउंबलिबेगिअन्हाहू॥जोमनभावमधुरक
 लुरवाहू॥पितुसमीपतबजायेहुमैंआ॥भईबडिवारजाइ
 बलिमैंआ॥मातुबचनसुनिअतिअनुकूला॥जनुसनेह
 सुरतरुकेफूला॥निरखिराममनभवरनभूला॥धर्मपुरी
 णधर्मगतिजानी॥कहेउमातुसनअतिसुहुवाणी॥पिता
 दीन्हमोहिकाननराजू॥जहंसबभांतिभोरबडकाजू॥आ

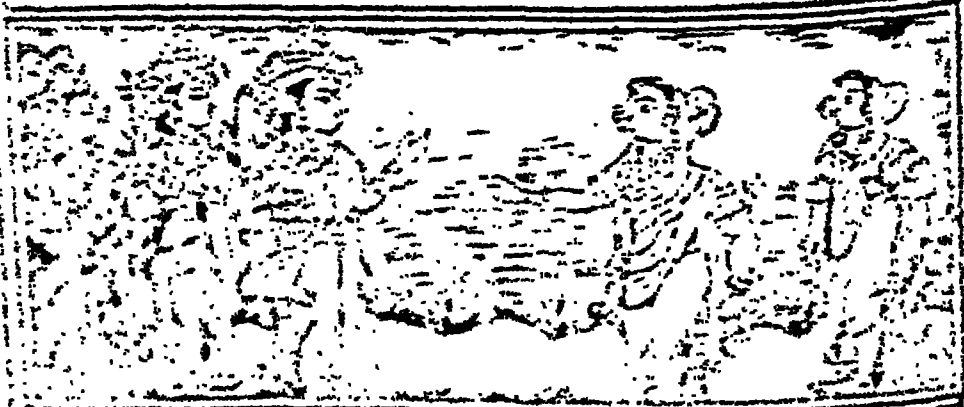
यस्तु देहु मुदित मन माता ॥ जहिंसुदमंगलकाननजाता ॥
 जनिसनेहबशडरपसिभोरे ॥ आनंदमातुअनुग्रहतोरे ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ वर्षचारिदशविपिनबसि ॥ करिपितुबच
 प्रमाण ॥ सत्यशवधै नृपरायकर ॥ मुनिवरकरिहैव
 ॥ सत्यवचनमममातस्तनि ॥ जेहिंकरआयस्तकीन ॥
 इपायपुनिदेखिहों ॥ मनजनिकरसिमलीन ॥ ५७ ॥
 चौपाई ॥ ॥ वचनबिनीतमधुररघुबरके ॥ शरसमल
 गेमातुउरकरके ॥ सहमिस्तखिस्तनिशीतलबाणी ॥ जि
 मिजवासपरपावसपानी ॥ कहिनजाइकछु ५
 ॥ जनुसहनैकरिकेहरिनाद ॥ नयनसलिलतनथरहर
 पी ॥ माजेहिंखाइमीनजनुमापी ॥ धरिधीरजस्तवदन
 निहारी ॥ गद्गदवचनकहतिमहतारी ॥ तातपितहिंतुमप्रा
 णपिआरे ॥ देखिमुदितचितचरिततुह्यारे ॥ राजदेनक
 हंशुभदिनसाधा ॥ कहेउजानवनकेहिअपराधा ॥ तातस्त
 नावहुमोहिनिदानु ॥ केदिनकरकुलभएउछुशानु ॥ ॥ दो-
 हा ॥ ॥ निरखिरामरुषसचिवस्त ॥ कारणकहेउबुजाई
 ॥ स्तनिप्रसंगरहिमूकगति ॥ दशावरणिनहिजाई ॥ ५८ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ राखिनशकहिनकहिशकजाहू ॥ दुहुभाति
 उरदारुणदाह ॥ लिखतस्तुधाकरगालिखिराहु ॥ विधिग
 तिबामसदासचकाह ॥ धर्मसनेहुअभयमतिघरी ॥ भइग
 तिमांयछलुंदरिंकरे ॥ राखेंस्तहिंकरेअनुरोधु ॥ धर्म
 जाइअस्तुवधुविरांधु ॥ कहेंजानवननौबडिहानी ॥ संक
 दगोचरिंकलभइरानी ॥ बहुरिस्तमुजिनियधर्मसयानी ॥
 रामभरतदोउस्तससजानी ॥ सरलस्तभावराममहतारी ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ धरिधरिभारें ॥ तातजाउवलिकीन्हेंउनीका ॥

पितुआयससबधर्मकदीका॥ ॥ दोहा॥ ॥ राजदेन
 दीन्हवन॥ मोहिसोदुरखलबलेश॥ तुमबितुभरतहिभूप
 तिहिं॥ प्रजहिप्रचंडकलेश॥ ५६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जोकेव
 लपितुआयसताता॥ तौजनिजाहुजांनिबडिमाता॥ जौ
 पितुमातुकहेउवनजाना॥ ताकाननशतअवधसमाना॥
 पितुवनदेवमातुवनदेखी॥ खगमृगचरणसरोरुहसेवी
 ॥ अंतहुउचितनृपहिंबनबास॥ बयबिलोकिहियहोतहु
 लास॥ बडभागीवनअवधअभागी॥ जोरघुबंशतिल
 कतुमत्यागी॥ जौंसुतकहोंसंगमोहिलेहु॥ तुह्मरेहृदयहो
 इशदेहु॥ पुत्रपरमप्रियतुमसबहीके॥ प्राणप्राणकेजीव
 नजीके॥ तेतुमकहहुमातुवनजाऊ॥ मैसुनिबचनबैठि
 पछिताऊ॥ ॥ दोहा॥ ॥ इहिबिचारिनहिकरउंहठ॥
 ने बढाइ॥ मानिभातुकोनानबलि॥ सरतिबिसरि
 जनिजाइ॥ ६०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ देवपितरसबतुमहिगो
 ॥ राखेहुपलकनयनकीनाई॥ अवधअंबुप्रियपरि
 ॥ तुमकरुणाकरधर्मधुरीना॥ असबिचारिसो
 ॥ सबहिंजिअतजेहिंमेटहुआई॥ जाहुसु
 खेनबैनहिंबलिजाऊं॥ करिअनाथजनपरिजनगाऊं॥
 ॥ ॥ भएउकुशलकालविप
 ॥ बहुबिधिविलपिचरणलपदानी॥ परमअभागि
 आहुहिंजानी॥ दारुणदुसहदाहउरव्यापा॥ बरणिन
 जाइबिलापकलापा॥ रामउठाइमातुउरलाई॥ कहिमृदु
 वचनबहुतससुजाई॥ ॥ दोहा॥ ॥ समाचारतौहिंसम
 यसुनि॥ सीयउठीअकुलाइ॥ बंदिसासुपदकमलयुग॥
 जाइबैठिशिरनाई॥ ६१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ दीन्हअशीष-

सासुमृदुबाणी ॥ अतिसकुमारिदेखिअकुलानी ॥ वैठि
 नमितमुखशोचइसीता ॥ रूपराशिपतिप्रेमपुनीता ॥ च
 लनचहतवनजीवननाथु ॥ केहिसकृतीसनहोइहिंसा
 थु ॥ कीतनुप्राणकिकेवलप्राणा ॥ विधिकरतबकुलजाइ
 नजाना ॥ चारुचरणनखलेखतिधरणी ॥ नूपरमुखरम
 धुरकविवरणी ॥ मनहुप्रेमवशबिनतीकरहीं ॥ हमहिंसी
 यप्रदजनिपदहरहीं ॥ मंजुबिलोचनमोचतिवारी ॥ बोली
 देखिराममहतारी ॥ तातसुनहुसियअतिसकुमारी ॥
 सासुससुरपरिजनहिंपिआरी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पिताज
 नकधुपालमणि ॥ ससरभानुकुलभानु ॥ पतिरविकुल
 कैरवविपिन ॥ विधुगुणरूपनिधानु ॥ ६२ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ मैपुनिपुत्रवधुप्रियपाई ॥ रूपराशिगुणशीलसहाई ॥
 नयनपुतरिकरिप्रीतिबढाई ॥ सरवेंउप्राणजानकिहिला
 ई ॥ कल्पवेलिजिमिवहुविधिलाली ॥ सींचिसनेहसलि
 लप्रतिपाली ॥ फुलतफलतभएउविधिबामा ॥ जानिन-
 जाइकाहपरिणामा ॥ पलंगपीठतजिगोदहिंडोरा ॥ सि
 यनदीप्तपगुअवनिकठोरा ॥ जीवनसुरिजिमिजुगवत
 रहेंउं ॥ दीपवातनहिटारनकहेउं ॥ सोइसियचलनचह
 तिबनसाथा ॥ आयसुकाहहोइरघुनाथा ॥ चंद्रकिरण
 रसरसिकचकोरी ॥ रविरुपनयनशकैकिमिजिमिजोरी
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिकेहरिनिशिचरचरही ॥ दुष्टजंतुवन
 भूरि ॥ वियवाटिकाकिसोहसुत ॥ सुभगमजीवनभूरि ॥
 ॥ ६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वनहितकालकिरातकिशोरी ॥ र
 चौचिरंचिविषयसरवभांगी ॥ ग्राहनहर्माजिमिकठिन
 सभाऊ ॥ तिनटिकलेशनकाननकाऊ ॥ कंतायसतिय-

काननयोगू॥ जिनतपहेतुतजेसबभोगू॥ सियबनबसि
 तातकेहिभांती॥ चित्रलिखितकपिदेखिडराती॥ सर
 सरसभनवनजवनचारी॥ डावरयोगकिहंसकुमारी॥
 असबिचारिजशआयसहोई॥ मैशिखदेउजानकिहि
 सोई॥ जौसियभवनरहैकहअम्बा॥ मोकहंहोइप्राणअ
 वलम्बा॥ सुनिरघुवीरमातुप्रियबाणी॥ शीलसनेहस
 धाजनुसानी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहिप्रियबचनबिवेकमय
 ॥ कीन्हमातुपरितोष॥ लगेप्रबोधनजानकिहि॥ प्रगटवि
 पिनगुणदोष॥ ६४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ मातुसमीपकहत
 सकुचाहीं॥ बोलेसमयसमुझिमनमाहीं॥ राजकुमारि-
 शिरवावनसनहू॥ आनभांतिजियजनिकछुगुणहू॥ ब
 चनहमारमानिगृहरहहू॥ आयसमोरसासुसेवकाई॥
 सबबिधिभामिनिभवनभलाई॥ इहितैंअधिकधर्मनहि
 दूजा॥ सादरसासुससुरपदपूजा॥ जबजबमातुकरि
 हैसधिमोरी॥ होइहिंप्रेमबिकलमतिभोरी॥ तबतबतु
 मकहिकथापुराणी॥ सुंदरीससुजायेहुमृदुबाणी॥ क
 होंसुभायशयथशतमोही॥ ससुरिवमातुहितराखोंतोरी॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुश्रुतिसंमतधर्मफल॥ पाइअवनहिंक
 लेश॥ हठबशसबकंटकसहे॥ गालबनहुषनरेश॥ ६५॥
 ॥ चौपाई॥ ॥ मैपुनिकरिप्रमानपितुबाणी॥ बेगिफिरवसु
 नुसुखीसयानी॥ दिषसजातनहिलागिहिंबारा॥ सुंदरि
 शीखबनुसुनहुंहमारा॥ जोहठकरहुप्रेमबशबासा॥ तौतु
 बपरिणामा॥ काननकठिनभयंकरभारी॥ घो
 ॥ कुशकंटकमशुकंकरनाना॥ चले
 वपयादेहिविनुषदयाना॥ चरणकमलमृदुमंजुतुहार॥ मा

रगअगमभुमिधरभारे॥कन्हरखोहनदीनदनारे॥अग-
 मअगांधनजाहिनिहारे॥भालुबाधकरिकेहरिनागा॥कर
 हिनादस्तनिधोरजभागा॥ ॥दोहा॥ ॥भुमिशयनबल
 कलवसन॥अशनकंदफलमूल॥तेकिसदासवदिनमिल
 हिं॥सवइसमयअनुकूल॥६६॥ ॥चौपाई॥ ॥नरअ-
 हारिरजनीचरचरहीं॥कपटवेषविधिकोटिकरहीं॥ल्य
 गैअतिपहारकरपानी॥विपिनविपतिनहिजाइबरखानी॥
 आलकरालविहंगवनघोरा॥निशिचरनिकरनारिनरचो
 रा॥डरपट्टिधीरगहनशुधिआए॥मृगलोचनितुमभीरुसु
 हाए॥हंसगवनितुमनहिंबनयोगू॥स्तनिअपयशदैहहि
 मोहिलोगू॥मानससलिलसुधाप्रतिपाली॥जिअइकि
 लवणपयोधिमराली॥नवरसालवनविहरणशीला॥सो
 हकिकोकिलविपिनकरीला॥हरहुभवनअसहृदयविचा
 रो॥चंद्रवदनिदुखकाननभारी॥ ॥दोहा॥ ॥सहजसुहृ
 दयगुरुस्वामिसुख॥जोनकरैहितमानि॥सोपछिताइअ
 घाइउरा॥अवशिहोइहितहानि॥६७॥ ॥चौपाई॥ ॥सु
 निमृदुवचनमनोहरपियके॥लोचनललितभरेजलसीय
 के॥शानलशिखदादकभइकैमें॥चकइहिंशरदचांदनीजै



सैं ॥ उतरन आवबि कल बै दे हो ॥ तजन चहत मोहि परम
 सने ही ॥ बरब शरी कि बिलोचन वारी ॥ धरि धीर जउर अ
 वनिकुमारी ॥ लागि सासु पद कह कर जोरी ॥ क्षम बदे वि
 बडि अविनय मोरी ॥ दीन्ह प्राण पति मोहि शिख सोई ॥ जे
 हिं बिधि मोर परम हित होई ॥ मै पुनि समुझि दीख मन मा
 हीं ॥ पिय बियोग सम दुख जग नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रा
 ण नाथ करुणायतन ॥ सुंदर सरखद सजान ॥ तुम बिनु
 रघुकुलकुमुद बिधु ॥ सुरपुर नरक समान ॥ ६८ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ मातु पिता भगिनी प्रिय भाई ॥ प्रिय परिवार सु
 हृद समुदाई ॥ सासु ससुर गुरु सजन सहाई ॥ सनत
 सुंदर सशील सरखदाई ॥ जहं लगि नाथ नेह अरु नाथे
 ॥ पिय बिनु तिय हिं तरणि तै ताते ॥ तनु धनु धाम धरणि
 पुर राजु ॥ पति बिहीन सब शोक समाजु ॥ भोग रोग सम
 भूषण भारू ॥ यम जात ना सरिस संसारू ॥ प्राण नाथ
 तुम बिनु जग माहीं ॥ मो कहां सरखद कतहु कोउ नाहीं ॥
 जिय बिनु देहन दी बिनु वारी ॥ तै से हिं नाथ पुरुष बिनु वा
 री ॥ नाथ सकलगुण साथ तुम्हारे ॥ शरद बिमल बिधु
 बदन निहारे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ खग मृग परिजन नगर ब
 न ॥ बलकल बिमल दुकूल ॥ नाथ साथ सरसदन सम ॥
 पर्ण शाल सरखमूल ॥ ६९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बदन देवी बन
 देव उदारा ॥ करि है सासु ससुर सम आरा ॥ कुशकिशल
 य साथरी सह आई ॥ प्रभु संग मंजु मनोजंतु राई ॥ कंदमू
 ल फल अमिय अहारू ॥ अवध सौध शत सरस पहारू
 ॥ छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी ॥ रहि हो सुदित दि
 वस जिमि कोकी ॥ बन दुख नाथ कहे बहु तेरे ॥ भए बिषा

दपतितातघनेरे ॥ प्रभुवियोगलवलेशसमाना ॥ सबमि
 लिहोहिंनकृपानिधाना ॥ असजियजानसुजानशिरोम
 णि ॥ लेइयेसंगमोहिछांडियजनि ॥ बिनतीबहुतकरोँका
 स्वामी ॥ करुणामयउरअंतरजामी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रा
 रिवयअवधतौअवधिलगि ॥ रहतजौँजानियप्राण ॥
 दीनबंधुसुंदरसरवद ॥ शीलसनेहनिधान ॥ ७० ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ मोहिमगचलतनहोइहिंहारी ॥ क्षणक्षणचर-
 णसरोजनिहारी ॥ सबहिभांतिपियसेवाकरिहौं ॥ मार
 गजनितसकलअमहरिहौं ॥ पाइपषारिबैठितरुछाहीं ॥
 करिहौंवातमुदितमनमाहीं ॥ अमकणसहितश्यामतनु
 देखैं ॥ कहंदुखसमउप्राणपतिपेरैं ॥ सममहितनतरु
 पल्लवडासी ॥ पाइपलोटिहिंसवनिशिदासी ॥ बारबारमृ
 दुमूरतिजोही ॥ लागहितातेवयारिनमोही ॥ कोप्रभुसंग
 मोहिचितचनिहारा ॥ सिंधबहुजिमिशशकसियारा ॥ मै
 सुकुमारिनाथवनजोगु ॥ तुमहिउचिततपुमोकहुंभोगु ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसेहुवचनकठोरसुनि ॥ जौँनहृदयविल-
 गान ॥ तौप्रभुविषमवियोगदुख ॥ सहिहैंपामरप्राण ॥ ७१ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ असकहिसीयविकलभइभारी ॥ वच
 नवियोगनशकीसंभारी ॥ देखिदशारघुपतिजियजा-
 ना ॥ हटिरापेरारिवहिंनहिंप्राणा ॥ कहेउरुपालुभानुकु
 लनाथा ॥ परिहरिशोचचलहुवनसाथा ॥ नहिविषाद-
 करअचसरआजु ॥ बेगिकरहुवचनगवनसमाजु ॥ क
 हिप्रियचचनप्रियहिंसमुजाई ॥ लगेमानुपदआशिय
 पाई ॥ बेगिप्रजादुखमेंटहुंआई ॥ जननीनिदुरविस-
 रिजनिजाई ॥ फिरहिंदशाविधिवहुरिकिमोरी ॥ देखिहौं

नयनमनोहरजोरी ॥ सुदिनसुधरितातकबहोई ॥ जननी
 ज ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिवत्सकहिला
 लकहि ॥ रघुपतिरघुबरतात ॥ कबहिबुलाईलगाइउर ॥
 हरषिनिरषिहौंगात ॥ ७२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लखिवसनेह
 कातरमहतारी ॥ बचननआवबिकलभई भारी ॥ राम-
 प्रबोधकीन्हविधिनाना ॥ समयसनेहनजाइबरवाना ॥ त
 बजानकीसासुपदलागी ॥ सुनियमातुमेंपरमअभागी
 ॥ सेवासमयदैवबनदीन्हा ॥ मोरमनोरथसफलनकीन्हा
 ॥ तजवक्षोभजनिछाडवछोहू ॥ कर्मकठिनकछुदोषनमो
 हू ॥ सुनिसियबचनसासुअकुलानी ॥ दशाकवनविधि
 कहौबरवानी ॥ बारहिंबारलाइउरलीन्हा ॥ धरिधीरज
 रवआशिषदीन्हा ॥ अचलहोउअहिबाततुझारा ॥
 जबलगिगंगजमुनजलधारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीतहिंसा
 सुअशीषशिरव ॥ दीन्हअनेकप्रकार ॥ चलीनाइपदपदा
 शिर ॥ अतिहितबारहिंबार ॥ ७३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ समा-
 चारजबलक्ष्मणपाए ॥ व्याकुलविलखिवदनउठिधाए ॥
 कंपपुलकतनुनयनसनीरा ॥ गहेचरणअतिप्रेमअधी-
 रा ॥ कहिनशकतकछुचितवतठाटे ॥ मीनदीनजनुजलतै
 काटे ॥ शोचहृदयविधिकहानिहारा ॥ सबसरवसुकृत-
 सिरानहमार ॥ मोकहंकहाकहवरघुनाथा ॥ राखिहिंभ-
 वनकिलैहहिंसाथा ॥ रागबिलोकिबधुकरजोरे ॥ देहगे
 हसबसतनृणातोरे ॥ बोलेबचनरामनयनागर ॥ शीलस-
 नेहसरलसुखसागर ॥ तातप्रेमबशजनिकदराहू ॥ समु-
 ऋहृदयपरिणामउछाहू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातुपिताशुक्रसा
 मिशिरव ॥ शिरधरिकरियसुभाय ॥ लहेउलाभतिनजन्म

कर॥ नतरुजगजाय॥ ७४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ असजियजा
 निसुनहुशिरवभाई॥ करहुमातुपितुपदसेवकाई॥ भवन
 भरतरिपुसूदननाहीं॥ राउवृद्धममदुरखमनमाहीं॥ मैबन
 जाउंतुमहिलेसाथा॥ होइहिंसबविधिअवधनाथा॥ गुरु
 पितुमातुप्रजापरिवारू॥ सबकहंपरैदुसहदुरवभारू॥ र
 हहुकरहुसबकरपतितोषू॥ नतरुतातहोइहिंबडदोषू॥
 जासुराजप्रियप्रजादुरवारी॥ सोनृपअबशिनरकअधि
 कारी॥ रहहुतातअसनीतिबिचारी॥ सुनतलषणभये-
 व्याकुलभारी॥ सियरेबचनभूषिगेकैसें॥ परसततुहिन
 तामररुजैसें॥ ॥ दोहा॥ ॥ उतरनआवतप्रेमबशा॥ ग
 हेउचरणअकुलाइ॥ नाथदासमैस्वामितुम॥ तजहुनौक
 हावशाइ॥ ७५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ दीन्हमोहिशिरवनीकगो
 साई॥ लागीअगमआपनिकदराई॥ नरवरधीरधर्मधु
 रधारी॥ निगमनीतिकेहुअधिकारी॥ मैशिशुप्रभुसनेह
 प्रतिपाला॥ मंदरमेरुकिलेइमराला॥ गुरुपितुमातुन
 नौकाहू॥ कहौंसुभावनाथपतिआहू॥ जहंलगिजगत-
 सनेहसगाई॥ प्रीतिप्रतीतिनीतिनिपुनाई॥ मोरेसबैए
 कतुमस्वामी॥ दीनबंधुउरअंतरजामी॥ धर्मनीतिउपदे
 शियनाही॥ कीरतिभक्तिरुगतिप्रियजाही॥ मनक्रमव
 चनचरणरतहोई॥ कृपासिंधुपरिहरियकिसोई॥ ॥ दो
 हा॥ ॥ करुणासिंधुसबंधुकें॥ सुनिमृदुवचनविनीत॥
 समुजाएउरलाइप्रभु॥ जानिसनेहसभीत॥ ७६॥ ॥ चौ
 पाई॥ मांगहुंविदामातुसनजाई॥ आवहुंवैगिचलहुबन
 भाई॥ सुदितभएसुनिरघुवरवाणी॥ भएउलाभवडभि
 दीगलानो॥ दपितहृदयमातुपहंआए॥ मनहुंअंधाफिरि

लोचनपाए॥ जाइजननिपदनाएउमाथा॥ बनरघुनंदनजा
नकिसाथा॥ पूछेउमातुमलिनमनदेवी॥ लषणकहेउसब
कथाविशेषी॥ गईसहमिसुनिबचनकदोरा॥ मृगीदेखिज
नुदबचहुंओरो॥ लषणालखेउभाअनरथआजू॥ इहस
नेहवशकरवअकाजू॥ मांगतबिदासमयसकुचाही॥ जा
नसंगबिधिकहिंहिकिनाहीं॥ ॥ दोहा॥ ॥ समुजिसुमि
आरामसिय॥ रूपसुशीलसुभाव॥ नृपसनेहलखिधुनेउ
शिर॥ पापिनिलीन्हकुदाव॥ ७७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ धीर
जधरेउकुअवसरजानी॥ सहजसुहृदबोलीमृदुबाणी
॥ ताततुह्मारमातुबैदेही॥ पितारामसबभांतिसनेही॥
अवधतहांजहांरामनिवास॥ तहांदिवसजहांभालुमका
भू॥ जोपैंसीयरामवनजाहीं॥ अवधतुह्मारकाजकलुना
हीं॥ गुरुपितुमातुबंधुसुखसाई॥ सेइयसकलप्राणको
नाई॥ रामप्राणप्रियजीवनजीके॥ स्वारथरहितसखास
बहिंके॥ पूजनीयप्रीयपरमजहांते॥ मानियसबहिंराम
केनाते॥ असजियजानिसंगवनजाहू॥ लेहुतात
वनलाहू॥ ॥ दोहा॥ ॥ भूरिभागभाजनभएउ॥ मोहि
समेतबलिजाउं॥ जौंतुह्मरेमनछांडिछल॥
दठाउं॥ ७८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ पुत्रवतीयुवतीजगसोई॥
रघुबरभक्तजासुसुतहोई॥ नतरुबांजुभलिवादिविया
नी॥ रामबिसुखसुततेहितहानी॥ तुह्मरेहिंभागसमब
नजाहीं॥ दुसरेहेतुतातकलुनाहीं॥ सकलसुकृतकरफ
लसुतएहू॥ रामसीयपदसहजसनेहू॥
दमोहू॥ जनिसपनेहुइनकेवशहोहू॥ सकलप्रकारवि
कारबिहाई॥ मनक्रमबचनकरेहुसेवकाई॥

सब भानि सपाशू ॥ संगपितु मातु रामसिय जासू ॥
 रामवनलहहिं कलेशू ॥ सुत सोइ करेहु इहै उपदेशू ॥ ॥ छं
 द ॥ ॥ उपदेश एहि जेहि नात तु हनैं रामसिय सुख पावहीं ॥
 ॥ पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति वन विसरावहीं ॥
 ॥ ५ ॥ तुलसी प्रभुहिं शिर खदेइ आयसु देइ पुनि आशिष द
 ई ॥ रति होउ अविरल अमल सिय रघुबीर पदनित नितन
 ई ॥ ६ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ मातु चरण शिर नाइ ॥ लषण चले
 शंकित हिये ॥ वागुरि विषम तुराई ॥ मनहुं भागु मृग भागव
 श ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गए लषण जहं जान किनाथा ॥
 भए मन सुदित पाइ प्रिय साथा ॥ बन्दि रामसिय चरण सु
 हाए ॥ चले संग नृप मंदिर आए ॥ कहहिं परस्पर पुर नर ना
 री ॥ भलि वनाई विधि वात विगारी ॥ तनु क्लृप्त मन दुख ब
 दन मलोना ॥ विकल मनहुं मापी मधुक्षीणा ॥ करमीं जहिं
 शिर धुनि पलिताहीं ॥ जनु विनु परव विहंग अकुलाहीं ॥
 भइ बडि मोर भूप दरवारा ॥ वरणि न जाइ विषाद अपारा
 ॥ सचिव उठाइ राउ वै ठारे ॥ कहि प्रिय बचन राम पगु धारे
 ॥ सिय समेत दाउत नयनि हारी ॥ अकुल भए भूमि पति
 भारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीय सहित सुत सुभग दोऊ ॥ देखि
 देखि अकुलाइ ॥ वारहिं वार सनं हवश ॥ राउं लेत उर ला
 इ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शकै न बोलि विकल नर नाइ ॥ श
 क जनित उर दाकण दाइ ॥ नाइ शी सपद अति अनुरागा ॥
 उठि रघुनाथ विदात वमोंगा ॥ पितु अशीय आयसु मां हि
 दोजे ॥ हयै समय दिस्मय कस कीजे ॥ नात किये प्रिय प्रेम
 ममाइ ॥ जन जग जाइ हांड अपदाइ ॥ सनि सनेह दशउटि
 ॥ वर नाइ ॥ वैठारं रघुपति गहि नाइ ॥ सनहु राम तुम कहं मु-

निकहहीं॥ रामचराचरनायकअहहीं॥ शमभअरुअशुभक
 र्मअनुहारी॥ ईशदेइफलहृदयबिचारी॥ करैजोकर्मपाव
 फलसोई॥ निगमनीतिअसकहंसबकोई॥ ॥ दोहा ॥
 औरकरैअपराधकोइ॥ औरपावफलभोग॥ अतिबि-
 चित्रभगवंतगति॥ कोजगजानेयोग॥ ८१॥ ॥ चौपाई॥
 राउरामरारवनहितलागी॥ बहुतउपायकीन्हछलत्यागी॥
 लखेउरामरुरवरहतनजाने॥ धर्मधुरधरधीरसयाने॥ त
 वनृपसीयलाइउरलीनी॥ अतिहितबहुतभांतिशिरवदी
 न्ही॥ कहिबनकैदुखदुसहसनाये॥ सासुससुरपितुस-
 खसमुजाये॥ सियमनरामचरणअनुरागा॥ घरनसुरा
 मबनविषमनलागा॥ औरौंसबहिंसीयसमुजाई॥ कहि
 कहिविपिनविपतिअधिकार्इ॥ सचिवनारिगुरुनारिस-
 यानी॥ सहितसनेहकहहिंमृदुबाणी॥ तुमकहतोनदीन्ह
 बनवास्त॥ करहुजोकहहिंससरगुरुसासु॥ ॥ दोहा ॥
 शिरवशीतलहितमधुरमृदु॥ सुनिसीनहिंसोहानि॥ श
 रदचंदचंदनिनिरखि॥ जनुचकईअकुलानि॥ ८२॥ ॥
 चौपाई॥ ॥ सीयशकुचवशउतरनदेई॥ सोसुनितमकि
 उठीकैकैई॥ मुनिपटभूषणभाजनआनी॥ आगेधरिबो
 लीमृदुबाणी॥ नृपहिंप्राणप्रियतुमरघुबीरा॥ शीलसनेह
 नछाडिहिंभीरा॥ सकृतसयशपरलोकनशाऊ॥ तुमहिंजा
 नबनकहहिंनराऊ॥ असबिचारिसाइकरहुजोभावा॥ रा
 मजननिशिरवसुनिसखपावा॥ भूपहिंबचनबाणसमला
 गे॥ करहिंनप्राणपयानअभागे॥ शोकबिकलमूर्छितनर
 नाहू॥ काहकरियकुछसूजनकाहू॥ रामतुरितमुनिबेषब
 नाई॥ चलेजनकजननीहिशिरनाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सजि

वनसाजसमाजसब ॥ वनिताबंधुसमेत ॥ वंदिविप्रगु
 रणप्रभु ॥ चलेकारिसवहिअंचेत ॥ ८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 निकसिवसिष्ठहारभएठाटे ॥ देरवेलोगविरहदवडाटे ॥
 हिप्रियवचनसवहिंसमुजाए ॥ विप्रहृंदरघुबीरबुलाए ॥
 गुरुसवकहिवरषाशनदीन्है ॥ आदरदानविनयवशकी
 न्है ॥ याचकदानमानसंतोषे ॥ मीतपुनीतप्रेमपरिपोषे ॥
 दासीदासबुलाइवहोरी ॥ गुरुहिंसौंपिबोलेकरजोरी ॥ स
 वकरसारसंभारगोसांडै ॥ करवजनकजननीकीनाई ॥
 रहिवारजोरियुगपाणी ॥ कहतरामसबसनमृदुबाणी ॥
 सोइसवभांतिमोरहितकारी ॥ जेहितेरहनरनाहसरवारी
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातुसकलमोरेविरह ॥ जेहिनहोहिंदुखदी
 न ॥ सोउपायतुमकरवसव ॥ पुरजनपरमप्रवीन ॥ ८४ ॥
 चौपाई ॥ ॥ इहिविधिरामसवहिंसमुजावा ॥ गुरुपदपद्म
 हरषिशिरनावा ॥ गणपतिगौरिगिरीशमनाई ॥ चलेअशी
 पपाइरघुराई ॥ रामचलतअतिभएउविषादु ॥ सुनिन-
 जाइपुरआरतनादु ॥ कुसगुनलंकअवधअतिशोकु ॥
 हृषेविषादविवशसरलोकु ॥ गैमूर्छातदभूपतिजागे ॥ वो
 लिस्समंत्रकहनअसलागे ॥ रामचलेदनप्राणनंजाहीं ॥
 केहिसरखलागिरहनतनमाहीं ॥ यहितेंकवनव्यथाबल
 जाना ॥ जोदुखपाइतजिहितनुप्राणा ॥ पुनिधरिधीरकह
 हिनरनाहु ॥ लैरथसंगसरवातुमजाहु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सु
 टिस्सकुमारकुमारदोउ ॥ जनकसुतास्सकुमारि ॥ रथचटा
 इदिग्वराइयन ॥ फिरेहुगएदिनचारि ॥ ८५ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ जौनदिफिरहिंधीरदोउभाई ॥ सत्यमिंधुददन्नरघुरा
 ई ॥ तौनुर्मविनयकरहुकरजोरी ॥ फेरियप्रभुमिथिलेशकि

शोरी ॥ जबसिय कानन देखि डराई ॥ कहै उमोर शिख अत्र
सर पाई ॥ सासु ससुर अस कहै उ संदेशू ॥ पुनि फिरिय ब
न बहुत कलेशू ॥ पितु गृह कबहु कबहुं ससुरारी ॥ रहेहु जहां
रुचि होइ तुहारी ॥ इहि विधिकरेहु उपाय कदंबा ॥ फिरइ
तो होइ प्राण अवलंबा ॥ नाहित मोर मरण परिणामा ॥ क
छुन बशाइ भए विधि वामा ॥ अस कहि मूर्छि परे महिराऊ
॥ राम लषणसिय आनि देखेखाऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पाय रजा
य सुनाइ शिर ॥ रथ अति बेगि बनाव ॥ गए उ जहां पाहिर
नगर ॥ सीय सहित दोउ भाइ ॥ ६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तब
सुमंत्र नृप बचन सुनाए ॥ करि बिनती रथ राम चढाए ॥ च
टि रथ सीय सहित दोउ भाई ॥ चले हृदय अवध हिंसिर ना
ई ॥ चलत नाथ लषि अवध अनाथा ॥ बिकल लोग लागे स
ब साथ ॥ कृपा सिंधु बहु विधिस मुजावहिं ॥ फिरहि प्रेम व
श पुनि फिरि आवहिं ॥ लागत अवध भयान कभारी ॥ मान
हुं काल राति अंधि आरी ॥ घोर जंतु सब पुरनर नारी ॥ डर
पहिं एकहिं एक निहारी ॥ घर स्म शान परिजन जनु भूता ॥
सुतहित मीत मनहु मम दूता ॥ बागन विट पबल कुहिला
हीं ॥ सरित सरोवर देखि न जाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हय गज
कोटिन केलि मृग ॥ पुर पशु चातक मोर ॥ पिकर थांग श
क शारिका ॥ सार सहं सच कोर ॥ ६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े ॥ जहंत हम नहुं चिन्नलिरि व
काढ़े ॥ नगर सकल वन गहवर भारी ॥ स्वग मृग विपुल स
कल नर नारी ॥ विधिकै कथा किराति नि कीन्ही ॥ जेहिं दे
व दुसह दशहु दिशि दीन्ही ॥ सहिन शकै रघुवर विरहा
गी ॥ चले लोग सब व्याकुल भागी ॥ सबहि बिचार कीन्ह

मनमाहीं ॥ रामलषणसिचविनुस्तरवनाहीं ॥ जहांरामतहां
 सकलसमाजू ॥ विनुरघुर्वारअवधकहकाजू ॥ चलेसाथ
 असमंजहठोई ॥ स्तरदुलेभस्तरवसदनविहाई ॥ रामचर
 णपंकजप्रियजिनहीं ॥ विषयभोगवशकरैकितिनहीं ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ बालकहृदविहाइगृह ॥ लगेलोगसबसाथ ॥ त
 मसातीरनिवासकिय ॥ प्रथमदिवसरघुनाथ ॥ टट ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ रघुपतिप्रजाप्रेमवशदेपी ॥ सदयहृदयदुस
 भएउविशेषी ॥ करुणामयरघुनाथगोसाई ॥ वेगिपाइइ
 हिपीरपराई ॥ कहिसप्रेममृदुवचनसुनाए ॥ बहुविधिरा
 मलोगसमुजाए ॥ किएपरमउपदेशसरे ॥ लोगप्रेमवश
 फिरहिनफेरे ॥ शीलसनेहछाडिनहिंजाई ॥ असमंजस
 वशभएरघुराई ॥ लोगशोकअमवशगेसोई ॥ कछुकदे
 वमायामतिभोई ॥ जबहिंयामयुगयामिनिवीनी ॥ राम
 सचिवसनकहेउसपीनी ॥ खोजमारिरथहांकहुनाता ॥
 आनउपायवनहिंनहिवाता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामलषणमि
 चयानचदि ॥ शंभुचरणशिरनाई ॥ सचिवचलाएउतुरि
 तरथ ॥ इनउतरखोजदुराई ॥ टट ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जागेस
 कललोगभएभोरु ॥ गएरघुर्वारभएउअतिशोरु ॥ रथक
 रखोजकतहुंनहिपावहिं ॥ रामरामकरिचहुदिशिधाव
 हीं ॥ मनहुंवारिनिधिवृडजहाजू ॥ भएउविकलसबवसि
 कसमाजू ॥ एकहिंएकदिहिंउपदेसू ॥ तजेउरामहमजानि
 कलह ॥ निंददिआपुसरहहिंसीना ॥ धिकूजावनरघुवी
 रविहीना ॥ जोंपोंप्रयदियोगविधिकीन्हा ॥ तोकसमरण
 भोगेनहिंदीन्हा ॥ इहिंविधिकरतपलापकलापा ॥ आए
 अदधभरंपरिनापा ॥ विषमदियोगनजाइवरताना ॥ अ

बधिआशवशराखहिंप्राणा॥ ॥दोहा॥ ॥रामदरश
हितनेमब्रत॥लगेकरणनरनारि॥मनहुंकोककोकीक
मल॥दीनबिहीनतमारि॥६०॥ ॥चौपाई॥ ॥सीतास



चिवसहितद्वौ भाई॥भृंगबेरपुरपहुंचेजाई॥उतरेरामदे
वसरिदेखी॥कीन्हदंडवतहर्षविशेषी॥लषएसचिवसी
यकीन्हप्रणामा॥सबहिंसहितसरवपाएउरामा॥गंगस
लिलमुदमंगलमूला॥सबसरवकरणिहरणिसबभूला
॥कहिकहिकोटिककथाप्रसंगा॥रामबिलोकतगंगतरं
गा॥सचिवहिंअनुजहिंप्रियहिंसुनाई॥बिबुधनदीम
हिमांअधिकार्ई॥मज्जनकीन्हपंथअमगएऊ॥शुचिज
लपिअतमुदितमनभएऊ॥सुमिरतजाइमिदहिंभवभा
रू॥तेहिंअमयहलौकिकव्यवहारू॥ ॥दोहा॥ ॥शुद्ध
सच्चिदानंदमय॥रामभावुकुलकेतु॥चरितकरतनरअ
नुहरत॥संसृतिसागरसेतु॥६१॥ ॥चौपाई॥ ॥इह
शुधिगुहनिषादजबपाई॥मुदितलिएप्रियबंधुबुलाई॥
लैफलमूलभेटभरिभारा॥मिलनचलाहियहर्षअपारा॥
करिदंडवतभेटधरिआगे॥प्रभुहिंबिलोकतअतिअनु

रागे ॥ सहजसनेहबिबशरघुराई ॥ पूछैउकुशलनिकट
 वैठाई ॥ नाथकुशलपदपंकजदेखे ॥ भएउभाग्यभाजनज
 नलेखे ॥ देवधरणिधनधामतुह्यारा ॥ मैजननीचसहितप
 रिवारा ॥ कृपाकरियपुरधारियपांऊं ॥ थापियजनसब
 गसिहांऊ ॥ कहेउसत्यसबसखासुजाना ॥ मोहिदीन्हपितुआ
 यंसकआना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वर्षचारिदशवासवन ॥ मुनि
 व्रतवेषआहार ॥ ग्रामवासनहिउचितसुनि ॥ गुहहिंभए
 उदुरवभार ॥ ६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामलषणसियरूपनि
 हारी ॥ कहहिंसप्रेमनगरनरनारी ॥ तैपितुमातुकहहुस-
 रिक्कैसे ॥ जनिपठएवनबालकऐसे ॥ एककहैभूपतिमल
 कीन्हा ॥ लोचनलाभहमहिंविधिदीन्हा ॥ तबनिषादपति
 उरअनुमाना ॥ तरुसिंशिषामनोहरजाना ॥ लैरघुनाथ-
 हिंठाउंवनवा ॥ कहेउरामसबभांतिखुहावा ॥ पुरजनक
 रिजुहारगृहआए ॥ रघुवरसंध्याकरणसिधाए ॥ गुहसं
 वारिसाथरीखनाई ॥ कुशकिशलयमृदुपरमसुहाई ॥ शु-
 चिफलमूलमधुरमृदुवाणी ॥ दोनाभरिभरिराखेसिआ-
 नी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सियसुमंत्रभ्रातासहित ॥ कंदमूल
 फलखाइ ॥ शयनकीन्हरघुवंशमणि ॥ पायपलोटतभा-
 इ ॥ ६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उठेलषणप्रभुसोवनजानी ॥ क-
 हिसचिन्हिसोवहुमृदुवाणी ॥ कछुकदूरिसजिबाएश-
 रासन ॥ जामनलागेबैठिदीशसन ॥ गुहबुलाइपाहरुप्री-
 तीती ॥ टांवटांघराखेअतिप्रीती ॥ आपुलपणपहिंबैठे
 जाई ॥ कटिभाथाशरचापचटाई ॥ सोवनप्रभुहिंनिहारी
 निपाटा ॥ भएउप्रेमवशहृदयविपाटा ॥ तनुपुलकितलो-
 नजलबहई ॥ बचनसप्रेमलपणसबकहई ॥ भूपतिभव

नसुसहजसुधावा॥ सरपतिसदननपटतरपावा॥ मणि
मयरचितचारुचौवारे॥ जतुरतिपतिनिजहाथसंवारे॥
॥ दोहा ॥ ॥ शुचिसुबिचित्रसुभोगमय॥ सुमनसुगंध
सुवास॥ पलंगमंजुमणिदीपजहं॥ सबबिधिसकलसु
पास॥ ६४॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बिबिधबसनउपधानतुरा
ई॥ क्षीरफेनमृदुबिषदसुहाई॥ तहशियरामशयननि
शिकरहीं॥ निजछबिरितिमनोजमदहरहीं॥ तेसियरा
मसाथरीसोइ॥ अमितबसनबिजुजाहिंनजोए॥ मातु
पितापरिजनपुरवासी॥ सखासुशीलदासअरुदासी॥
जगवहिंजिनहिंप्राणकीनाई॥ महिसोवतसोरामगोसा
ई॥ पिताजनकजगबिदितप्रभाऊ॥ सुसरसुरेशसखा
रघुराऊ॥ रामचंद्रपतिसोबैदेही॥ महिसोवतिबिधिवा
मनकेही॥ सियरघुबीरकिकाननयोगु॥ कर्मप्रधानसत्य
कहलोगु॥ ॥ दोहा ॥ ॥ केकयनंदनिमंदमति॥ कठिन
कुटिलपणकीन्ह॥ जेहिरघुनंदनजानकिहिं॥ सुखअ
वसरदुखदीन्ह॥ ६५॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भइदिनकरकु
लबिटपकुठारी॥ कुमतिकीन्हसबबिष्वदुखारी॥ राम-
सीयमहिशयननिहारी॥ भएउबिषादनिषादहिंभारी॥
बोलेलषणमधुरमृदुबाणी॥ ज्ञानविरागभक्तिरससा
नी॥ कौनकाहुदुखसुखकरदाता॥ निजकृतकर्मभोग
सबभाता॥ योगबियोगभोगभलमंदा॥ हितअनहितम
ध्यमभ्रमफंदा॥ जनममरणजहंलगिजलजालू॥ संप
तिबिपतिकर्मअरुकालू॥ धरणिधामधनपुरपरिवारू
॥ स्वर्गनरकजहंलगिव्यवहारू॥ देखियसुनियगुणिये
मनमाहीं॥ मोहमूलपरमारथमाहीं॥ ॥ दोहा ॥ ॥

पनेदोइभिरवारिनुप॥रंकनाकपतिहोइ॥जागेलाभनहा
 निकछु॥तिमिप्रपंचजियजोइ॥६६॥ ॥चौपाई॥ ॥अ
 सबिचारिनहि कीजियरोषू॥बादिकाहुनहि दीजियदोषू॥
 मोहनिशासबसोवनिहारा॥देखहिं स्वप्नअनेकप्रकारा
 ॥इहिजगयामिनिजागहिंयोगी॥परमारथीप्रपंचबियो
 गी॥जानियतबहिंजीवजगजागा॥जबसबबिष
 सविरागा॥होइविवेकमोहभ्रमभागा॥तबरघुबीरचर
 णअनुरागा॥सखापरमपरमारथएहू॥मनक्रमबचन
 रामपदनेहू॥रामब्रह्मपरमारथरूपा॥अबिगत
 लअनादिअनूपा॥सकलबिकाररहितगतभेदा॥
 नितनेतिनिरूपहिंवेदा॥ ॥दोहा॥ ॥भक्तभूमिभूसुर
 स्तरभि॥स्तरहितलागिहृपालु॥करतचरितधरमनु
 तनु॥स्तनतमिटहिंजगजालु॥६७॥ ॥चौपाई॥सखा
 समुजिअसपरिहरिमोहू॥सियरघुबीरचरणरतहोहू
 ॥कहतारामगुणभाभिनुसारा॥जागेजगमंगलदातारा॥
 सकलशौचकरिरामअन्हावा॥शुचिस्नानबटक्षी
 रमंगावा॥अनुजसहितशिरजटाबनाए॥देखिस्नमं
 ननयनजलछाए॥हृदयदाहअतिबदनमलीना॥क
 हकरजोरिवचनअतिदीन्हा॥नाथकहेउअसकोशल
 नाथा॥लैरथजाहु रामकेसाथा॥बनदेखाइस्तरसरि
 अन्हवाई॥आनेहुवेगिफेरिद्वीभाई॥लषणरामसिय
 आनेहुफेरी॥संशयसकलसंकोचनिवेरी॥ ॥दोहा॥
 नृपअसकहेउगोसाइजस॥कहइकरोवलिसोई॥क
 रिचिनतीपायनपरंऊ॥दीनवालिजिमिरोइ॥६८॥ ॥
 चौपाई॥ ॥तानकृपाकरिकीजियसोई॥जातेअबध-

अनाथनहोई ॥ मंत्रिहिंरामउठाइप्रबोधा ॥ तातधर्ममनु-
तुमसबशोधा ॥ शिविदधीचिहरिचंदनरेशा ॥ सहेधर्महि
तकोटिकलेशा ॥ रतिदेवबलिभूपसजाना ॥ धर्मधरेउसहि
संकटनाना ॥ धर्मनदूसरसत्यसमाना ॥ आगमनिगमपुरा
णबरवाना ॥ मैसोइधर्मसुलभकरिपावा ॥ तजौतोतिदुर
पुरअपयशछावा ॥ संभावितकहंअपयशलाह ॥ मरण
कोटिसमदारुणदाह ॥ तुमसनतातबहुतकाकहऊं ॥ दि
एउतरफिरिपातकलहऊं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पितुपदिगहि-
कोटिविधि ॥ बिनयकरवकरजोरि ॥ चिंताकबनिहुबा-
तकी ॥ तातकरियजनिमोरि ॥ ६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तु
मपुनिपितुसमानहितमोरि ॥ बिनतीकरीतातकरजोरि
॥ सबविधिसोइकरतव्यतुह्मारे ॥ दुरवनपावनृपशोच
हमारे ॥ सुनिरघुनाथसचिवसंवाद ॥ भएउसपरिजन
विकलनिषाद ॥ पुनिकलुलषणकहेउकटुबाणी ॥ प्रभु
वरजेउबडअनुचितजानी ॥ शकुचिरामनिजशपथदि
वाई ॥ लषणसंदेशकहवजनिजाई ॥ कहसुमंत्रपुनिभू
पसंदेश ॥ सहिनशकिहिसियविपिनकलेश ॥ जेहिबि-
धिअवधआवफिरिसीया ॥ सोइरघुवीरतुमहिंकरणी
या ॥ नतरुनिपटअवलंबबिहीना ॥ मैनजियवजिमिजल
बिनुमीना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मयकेससुरसकलसुत ॥ ज
बहिंजहांमनमान ॥ तबतहंरहवसरवेनसिय ॥ जबल-
गिबिपतिबिहान ॥ १०० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बिनतीकीन्ह
भूपजहिंभाती ॥ आरतिप्रीतिनसोकरहिजाती ॥ पितुस
देशसुनिरूपानिधाना ॥ सियहिंदीन्हशिरवकोटिविधा
ना ॥ सासुससुरगुरुप्रियपरिवार ॥ फिरहुतोसबकर-

मिटइखंभारू॥ स्तनिपतिवचनकहतिबैदेही॥ स्तनहुप्रा-
 णपतिपरमसनेही॥ प्रभुकुरुणामयपरमविवेकी॥ तनु
 तजिछांहरहतिकिमिछेकी॥ प्रभांजाइकहंभानुबिहाई॥
 कहांचंद्रिकाचंद्रतजिजाई॥ पतिहिप्रेममयबिनयसुना-
 ई॥ कहसिसचिवसनगिरासुहाई॥ तुमपितुससरसरि
 सहितकारी॥ उतरदेउफिरिअनुचितभारी॥ ॥दोहा॥
 आरतबशसन्मुखभएउं॥ बिलगनमानबतात॥ आरज
 स्तपदकमलबिनु॥ वादिजहांलगिनात॥ १०१॥ ॥चौपा
 ई॥ ॥पितबैभवबिलासमैंदीठा॥ नृपमणिसुकुटमिलि
 तपदपीठा॥ स्तरवनिधानअसमाइकमोरे॥ पतिबिही-
 नमनभावनभोरे॥ ससरचकवइकोशलराऊ॥ भुवन
 चारिदशप्रगटप्रभाऊ॥ आगेहोइजैहिंसरपतिलई॥ अ
 र्द्धसिंहासनआसनदेई॥ ससरएतादृशअवधनिवासु
 ॥प्रियपरिवारमातुसमसास्त॥ बिनुरघुपतिपदपद्म
 परागा॥ मोहिकोसपनेहुसरवदनलागा॥ अगमपंथव
 नभूमिपहारा॥ करिकेहरिसरसरितअपारा॥ कोलकि
 रातकुरंगविहंगा॥ मोहिसबसरवदप्राणपतिसंगा॥ ॥दो
 हा॥ ॥सास्तससुरसनमोरिहित॥ बिनयकरवपरिपाय
 ॥मोरशोचजनिकरियकछु॥ मैवनसरवीस्तभाय॥ १०२॥
 ॥चौपाई॥ ॥प्राणनाथप्रियदेवरसाथा॥ धीरधुरीणध
 रेंधनुभाथा॥ नहिमगुथमभ्रमदुखमनमोरे॥ मोहिलगि
 शोचकरियजनिभोरे॥ स्तनिस्तमंत्रसियशीतलवाणी॥
 भएविकलजनुफणिमणिहानी॥ नयननस्तस्तनेनहि
 काना॥ कहिनशंककलअतिअकुलाना॥ रामअयोधकी
 नहुभाना॥ तदपिलोइनहिशीतलछाती॥ यतनअन

कसाथहितकीन्हा॥ उचितउतररघुनंदनदीना॥ मेढिजाइ
 नहिंरामरजाई॥ कठिनकर्मगतिकछुनवसाइ॥ रा
 मलषणसियपदशिरनाई॥ फिरेबणिकजिमि-
 मूरगवाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रथहांकेयहरामत-
 न॥ हेरिहेरिहिहिनाहीं॥ देखिनिषादविषादवश॥ शिरधु
 धुनिपछिताहीं॥ १०३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जासुबियोग
 कलपश्रुऐसे॥ प्रजामातुपितुजीवहिं कैसें॥ वरवसरा
 समंत्रपठाए॥ सरसरितीरआपुचलिआए॥ मांगीना
 वनकेबटआना॥ कहेउतुह्मारमरममेंजाना॥ चरणकम
 लरजकहंसवकहई॥ मानुषकरणिमूरिकछुअहई॥ छु
 अतिशीलाभइनारिझहाई॥ पाहनतेनकाठकठिनाई॥
 तरणिउसुनिघरनीहोइजाइ॥ वाटपरैमोरिनाबउडाई॥
 एहिप्रतिपालौसबपरिवारू॥ नहिजानीकछुओरकबा-
 रू॥ जौप्रभुअवशिपारगाचहहू॥ तौपदपदपरवारण
 कहहू॥ ॥ छंद॥ ॥ पदपदधोइचढाइनावननाथउत
 राईचहौं॥ मोहिरामराउरिआनिदशरथशपथसबसांची
 कहौं॥ ७॥ वकतीरमारहिंलषणपैजबलगिनपांवपरवारि
 हौं॥ तौलगिनतुलसीदासनाथकृपालुपारउतारिहौं॥ ८
 ॥ सोरठा॥ ॥ सुनिकेवटकेवचन॥ प्रेमलपेटेअटपटे॥
 हसेकरुणाअयन॥ चितेजानकीलषणतन॥ १०४॥
 ॥ चौपाई॥ ॥ कृपासिंधुबोलेसुसुकाई॥ सोइकरहुंजेहिं
 नावनजाई॥ बेगिआनिजलपायपरवारू॥ होतबिलंबउ
 तारहुपारू॥ जासुनामसुमिरनएकवारा॥ उतरहिंनर
 भवसिंधुअपारा॥ सोइकृपालुकेवटहिंनिहोरा॥ जेहि-
 कियजगतिहुंपदतैंथोरा॥ पदनरवनिररिवदेवसरिहर

अयोध्याकांडम् २

५०

पी॥स्तनिप्रभुवचनमोहमतिकरपी॥केवटरामरजायसु
पावा॥पानिकठवताभरिलैआवा॥अतिआनंदउमगि-
अनुयागा॥चरणसरोजपरवारणलागा॥वर्षिसमनस्त
रसकलस्तहाही॥इहिसमपुण्यपुंजकोउनाही॥॥दोहा
॥॥पदपरवारिजलपानकरि॥आपसहितपरिवार॥पि
तरपारकरिप्रभुपुनि॥मुदितगएउलैपार॥१०५॥॥चौपा
ई॥॥उतरिकाठभएसुरसरिरेता॥सीयरामगुहलष-
णसमेता॥केवटउतरिदंडवतकीन्हा॥प्रभुसकुचेएहिक
छुनदीन्हा॥पियहियकीसियजाननिहारी॥मणिमुंदरी
मनमुदितउतारी॥कहेउकृपालुलेहुउतराई॥केवठचर
णगहेउअकुलाई॥नाथआजुहमकाहनपावा॥भिदेदो
षदुरवदारिददावा॥अमितकालमैकीनमजूरी॥आजुदो
नविधिसबभरिपूरी॥अवकुछुनाथनआहियमोरे॥दी
नदयालुअनुग्रहतोरे॥फिरतीबारजोकछुमोहिदेवा॥सो
प्रसादमैधरिशिरलेवा॥॥दोहा॥॥बहुनकीन्हहटल
षणप्रभु॥नहिकछुकेवटलेइ॥विदाकीन्हकरुणायतन
॥भक्तिविमलवरदेइ॥१०६॥॥चौपाई॥॥तबमज्ज
नकरिरघुकुलनाथा॥पूजिपार्थिवनायउमाथा॥सिय-
स्तरसरिहिकहाकरजोरी॥मातुमनोरथपुरइवमोरी॥
पतिदेवरसंगकुशलबहोरी॥आइकरौजेहिंपूजातोरी॥
स्तनिसियचिनयप्रेमरससानी॥भइतबविमलवारिब
रवाणी॥सुनुरघुवीरप्रियाबैदेही॥तबप्रभावजगबिदि
तनकेदी॥लोकपहोंहिबिलोकनतोरे॥तोहिसेवहिंसब
सिधिकरनोरी॥तुमजोहमहिंचडिचिनयस्तनाई॥रुपा
कीन्द्रमोहिदीन्हबडाई॥तदपिदेविमैदेवअसीशा॥रूप

लहोनहितनिजवागीशा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्राणनाथदेवर
सहित ॥ कुशलकोशलाआइ ॥ पूजहिं सब मन कामना ॥ सु
यशरहहिं जगछाड ॥ १०७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गंगबचनसु

मंगलमूला ॥ सुदितसीयसरसरिअनुकूला ॥ तबमधु
गुहहिंकहाघरजाहू ॥ सुनतशूषसुखभाउरदाहू ॥ दीनबच
नगुहकहकरजोरी ॥ बिनयसुनियरघुकुलमणिमोरी ॥
नाथसाथरहिंपंथदेखाइ ॥ करिदिनचारिचरणसेवका
इ ॥ जेहिंबनजाइरहवरघुराइ ॥ पर्णकुटीमैकरवसुहाइ
॥ तबमोकहंजशदेवरजाइ ॥ सोकरिहौंरघुवीरदुहाई ॥
सहजसनेहरामलखितासू ॥ संगलीन्हगुहहृदयहुला
सू ॥ पुनिगुहजातिबोलिसबलीन्हा ॥ करिपरितोषविदा
सबकीन्हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबगणपतिशिवसुभिरिप्रभु
॥ नाइसरसरिहिंमाथ ॥ सरवाअनुजसियसहितबन ॥

नूरघुनाथ ॥ १०८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेहिदिनभ
एबिटपतरवासू ॥ लषणसबकीन्हसुपाशू ॥ प्रातप्रातक
तकरिरघुराई ॥ तीरथराजदीरवप्रभुजाई ॥ सचिवसत्य
अद्वाप्रियनारी ॥ माधवसरिसमीतहितकारी ॥ चारिपदा
रथभराभंडासू ॥ पुण्यप्रदेशदेशअतिचारू ॥ क्षेत्रअगम
गढगाढसुहावा ॥ सपनेहुजिन्हप्रतिपक्षिनपावा ॥ सैनस
कलतीरथबरबीरा ॥ कलुषअनीकदलनरणधीरा ॥ सग
मसिंहासनसुठिसोहा ॥ छत्रअक्षयबटसुनिमनमोहा ॥
चमरजसुनजलगंगतरंगा ॥ देखिहोहिंदुखदरिदभंगा
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेवहिंसुकुतीसाधुभुचि ॥ पावहिंसबम
नकाम ॥ बंदीबेदपुराणगण ॥ कहहिंबिमलगुणग्राम ॥ १०९
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कोकहिशकैप्रयागप्रभारू ॥ कलुषपुंज

कुंजरमृगराज॥ असतीरथपतिदेखि सह्यावा॥ सरवसा
 गररघुवरसरवपावा॥ कहसियअनुजहिंसरवहिंसना
 ई॥ श्रीमुखतीरथराजबडाई॥ करिप्रणामदेखतवनवा
 गा॥ कहतमहातमअतिअनुरागा॥ इहिविधिआइवि-
 लोकिउबेगी॥ सुमिरतशकलसुमंगलदेनी॥ सुदितअ-
 न्हाइकीन्हशिवसेवा॥ पूजियथाविधितीरथदेवा॥ तब
 प्रभुभरहाजपहिंआए॥ करतदंडवतमुनिउरलाए॥ मु-
 निमनमोदनकलुहहिजाई॥ ब्रह्मानंदराशिजनुपाई॥
 ॥दोहा॥ ॥दीन्हअशीषमुनिशउर॥ अतिआनंदअस
 जानि॥ लोचनगोचरसुकृतफल॥ मनहुंकिएविधिआ-
 नि॥ ११०॥ ॥चौपाई॥ ॥कुशलप्रश्नकरिआसनदीन्हा
 ॥ पूजिप्रेमकरिपूरणकीन्हा॥ कंदमूलफलअंकुरनीके॥
 दियेआनिसुनिमनहुअमीके॥ सीयलषणजनसहित
 सह्याए॥ अतिरुचिराममूलफलखाए॥ भएविगतश्रम
 रामसरवारे॥ भरहाजमृदुवचनउचारे॥ आजुसुफल
 तपतीरथत्यागु॥ आजुसुफलजपजोगविरागु॥ सकल
 सुफलशुभसाधनसाजु॥ रामतुमहिअवलो कतआजु
 ॥ लाभअवधिसरवअवधिनदूजी॥ तुहारेदरशआश
 सत्रपूजी॥ अवकरिकृपादहुवरएहू॥ निजपदसरसिज
 सहजसनहू॥ ॥दोहा॥ ॥कर्मवचनमनछाडिछल॥
 जवलगिजननतुह्यार॥ तवलगिसरवसुपनेहुनहिं॥ कि-
 येकोटिउपचार॥ १११॥ ॥चौपाई॥ ॥सुनिमुनिवचन
 रामसकृचाने॥ भावभक्तिआनंदअधाने॥ तवरघुवरमु-
 निसुयशसह्यावा॥ कोटिभांतिकहिसत्रहिंसनावा॥ सो
 चदसोसबगुणगणगेहू॥ जहिंसुनीशतुमआदरदहू॥ सु

निरसुवीरपरस्परनमहीं॥

वहीं॥ यहभुधिपाइप्रयागनिवासी॥

॥ भरहाजआश्रमसबआए॥

सुअनसुहाए॥ रामप्रणामकीन्हसबकाहु॥ सुदितभ

एलहिलोचनलाहु॥ देहिंअशीषपरमसुखपाई॥

रेसराहतसुंदरताई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामकीन्हविश्राम

॥ प्रातप्रगागअन्हाइ

त॥ सुदितसुनिहिंशिरनाइ॥ ११२॥ ॥ चौपाई॥ ।

सप्रेमकहेउसुनिपाहीं॥ नाथकहियहमकेहिमगजा

हीं॥ सुनिसुनिबिहंसिरामसनकहहीं

मगुतुमकहेअहहीं॥ साथलागिसुनिशिष्यबुलाए॥

सुनिमनसुदितपचाशकआए॥ सबहिंरामपदप्रेमअ

पारा॥ सबहिंकहमगुदीखहमारा॥ सुनिबदुचारिसंग

तबदीन्हे॥ जिन्हबहुजन्मसुकृतसबकीन्हे॥ करिप्र-

शषपाई॥ प्रसुदितहृदयचलेरखुसाई॥

ग्रामनिकटजबनिकसेहिंजाई॥ देखहिंदरशनारिनर

धाई॥ होहिंसनाथजन्मफलपाई॥ फिरहिदुखितमन

संगपठाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बिदाकिएबहुबिनयकरि॥

॥ उत्तरिअन्हामेनजमुलजल॥ जो

शरीशमश्याम॥ ११३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुनतीरथबा-

सीनरनारी॥ धाएनिजनिजकाजबिसारी॥ लषणराम

देखिकरहिंनिजभाग्यबडाई॥ अति

लालसासबहिंमनमाहीं॥ नांवगांवसमजतसकुचाहीं

॥ जेतिनमहंबयबुद्धसयाने॥ तिनकरिसुकिरामपहि-

चाने॥ सकलकथाकहितिनहिंसुनाई॥ बानहिचलेपि

तु आचक्षपाई ॥ सुनि सविषाद सकल पछिताहीं ॥ रानि
 राउकीना भलनाहीं ॥ तेहिं अवसर एकताप स आवा ॥ ते
 ज पुंजल घुवय स सुहावा ॥ कवि अलखित गति बेष वि
 रागी ॥ मन बच कर्म राम अनुरागी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सजल
 नयन तनु पुलकनिज ॥ इष्ट देव पहि चानि ॥ परे उदंड जि
 मि धरणितल ॥ दशान जाति बरवानि ॥ ११४ ॥ ॥ चौ पा
 ई ॥ ॥ राम स प्रेम पुलकि उर लावा ॥ परम रजनु पारस
 पावा ॥ मनहुं प्रेम परमार थ दोऊ ॥ मिलत धरे तनु कहस
 ब कोऊ ॥ बहु रिलषण पायन सोइ लागा ॥ लीन्ह उगड़ उ
 मगि अनुरागा ॥ पुनिसिय चरण रेणु धरि सीषा ॥ जननि
 जानि शिशु दीन्ह अशीषा ॥ कीन्ह निषाद दंडवत तेही ॥
 मिले उ सुदित मन राम सने हो ॥ पीवत नयन पुटरूप पिचू
 षा ॥ सुदित सुअशन पाइ जिमि भूषा ॥ ते पितु मातु कहौ
 सरिब कैसे ॥ जिन पठ एवन बाल कए से ॥ राम लषण सि
 यरूप निहारी ॥ शोच सनेह बिकल नर नारी ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ तबर घुवीर अने कविधि ॥ सरवहिं शिरवावन दीन ॥
 राम रजाय सुशीष धरि ॥ भवन गवन तेहिं कीन ॥ ११५ ॥
 ॥ चौ पाई ॥ ॥ पुनिसिय राम लषण कर जोरी ॥ जमुनहिं
 कीन्ह प्रणाम बहोरी ॥ चले ससीय सुदित हौ भाई ॥ रवि
 तनया कर करन बडाई ॥ पथिक अने कमिल हिं मगु जा
 ता ॥ कहहिं स प्रेम देरिब हौ आता ॥ राम लक्षण सब अं
 गनु हमारे ॥ देरिब शोच हिय होत हमारे ॥ मारग चलहु प
 या देहिं पाए ॥ ज्योतिष जूठ हमारे भाए ॥ अगम पंथा गि
 रि क्यनन भारी ॥ तेहिं महसाथ नारि सुकुमारी ॥ करि के
 हरि वन जाहि न जोई ॥ हम संग चलहि जा आचक्ष होई ॥

जावजहांल गितहं पहुचाई ॥ फिरवबहोरितुमहिशिर
 नाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहि विधि पूछहिं प्रेमवश ॥ पुलक
 गात जलनयन ॥ कृपासिंधु फेरहिंतिनहिं ॥ करिबिदीत
 मृदुनयन ॥ ११६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जे पुर ग्रामवसहिंम
 गुमाहीं ॥ तिनहिं नागसरनगरसिहाहीं ॥ केहिं सकृती
 केहि घरी बसाए ॥ धन्य पुण्य मय परम सुहाए ॥ जहंज
 हं रामचरणचलिजाहीं ॥ तेहिं समान अमरावतिनाहीं
 ॥ पुण्य पुंजमगुनिकटनिवासी ॥ तिनहिं सराहहिं सर
 पुरवासी ॥ जो भरिनयन बिलोकहिं रामहिं ॥ सीताल
 षण सहित घनश्यामहिं ॥ जे सरसरितराम अवगाह
 हिं ॥ तिनहिं देवसरसरितमराहहिं ॥ जे हितरुतरप्रभु
 बैठहिं जाई ॥ करहिं कल्पतरुतासुबडाई ॥ परसिराम
 पदपद्म परागा ॥ मानति भूमिभूरिनिजभांगा ॥ ॥ दोहा
 ॥ छांहरहिं घनविबुधगण ॥ वरषहिं समनसिहाहिं ॥
 देरवतगिरिवनबिहंगमग ॥ रामचलेमगुजाहिं ॥ ११७
 ॥ चौपाई ॥ ॥ सीताल षण सहितरघुराई ॥ गांवनिकट
 जबनिकसहिं जाई ॥ सुनिसब बालवृद्धनरनारी ॥ चल
 हितुरितगृहकाजबिसारी ॥ रामलषणसियरूपनिहारी
 ॥ पाइनयनफलहोहिं सरवारी ॥ सजलनयन अतिपुल
 कशरीरा ॥ सबभएमगनदेखिहोवीरा ॥ वरणिनजाइ
 दशातिनकेरी ॥ लहीरंकजनु पारसदरी ॥ एकहिं रुक
 बोलिशिरवदेहीं ॥ लौचनलाहुलेहु क्षणएही ॥ रामहिं दे
 रिवएक अनुरागे ॥ चितवतचले जात संगलागे ॥ एकन
 यनमगुछबिउरआनी ॥ होहिं शिथिलतनुमानसबा
 णी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकदेखिवटछाहभलि ॥ डारिमृदुल

तृणपात॥ एकहिं गवाइ यक्षिनु कथम॥ गवनवचचहिं
 किमान॥ ११६॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एककलशभरिआनहिं
 पानी॥ अचइयनाथ कहहिं मृदुबाणी॥ सुनिप्रियवच
 नप्रीतिअतिदेखी॥ रामरुपालुसुशीलविशेषी॥ जानि
 सीयअमितमनमाहीं॥ घरीकविलंबकीन्हबटछाहीं॥
 सुदितनारिनरदेखहिं शोभा॥ रूपअनूपनयनमनलो
 भा॥ एकटकसबजोवहिंचहुंओरा॥ रामचंद्रमुखचंद्र
 चक्रेरा॥ तरुणतमालवरणतनुसोहा॥ देखतकामको
 टिमनमोहा॥ दामिनिवरणलषणसुठिनीके॥ नरवशि
 रससुभगभावतेजीके॥ मुनिपटकटिन्हकसेतूणीरा॥
 सोहतकरकमलन्हधनुतीरा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जयमुकुट
 शीसनिसुभग॥ उरभुजनयनविशाल॥ सरदपूर्णमा
 बिधुबदन॥ लसतस्वेदकणजाल॥ ११६॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ बरणिनजाइ मनोहरजोगी॥ शोभाअमितमोरमनि
 थोरी॥ रामलषणसियसुंदरताई॥ सबचितवहिंमति
 मनचितलाई॥ थकेनारिनरप्रेमपिआसे॥ मनहुंमृगीमृ
 गदेखिदियासे॥ सीयसमीपग्रामतीयजाही॥ पुछत-
 अतिसनेहसकुचाहीं॥ बारबारसबलागहिंपाए॥ कह
 हिंवचनमृदुसरलसुहाए॥ राजकुमारिविनयहमकर
 हीं॥ तियसुभावकुछपूछतडरहीं॥ स्वामिनिअविनय
 क्षमवहमारी॥ विनगुणमानवजानिगवारी॥ राजकुंअ
 रदोउसहजसलोने॥ इनतेलहिदूतिमरकतसोने॥ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ श्यामलगौरकिशोरवर॥ सुंदरसरवमाअ
 यन॥ शरदसर्वरीनाथमुख॥ शरदसरोरुदनयन॥ ११७
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कोटिमनोजलजावनिहारें॥ सुमुखिक

हहुकोअहहंतुहारे॥सुनिसनेहमयमंजुलबाणी॥स
कुचिसीयमनहुंसुसुकानी॥तिनहिंबिलोकिबिलोकेउ
धरणी॥दुहंसंकोचसकुचतिबरबणी॥सकुचिसप्रेम
बालमृगनयनी॥बोलीमधुरबचनपिकवयनि॥सह
जसभावसुभगतनगोरे॥नामलषणरघुदेवरमारे॥
बहुरिबदनविधुअंचलटाकी॥पियतनचितैभौंहक
॥खंजनमंजुतिरीच्छेनयनी॥निजपतिकहे
उतिनहिंसियसयनी॥भईसुदितसबग्रामवधूटी॥

जनुल्हूटी॥ ॥दोहा॥ ॥अतिसप्रेम

धरि॥बहुबिधिदेहिंअशीष॥सदासोहागि

॥जबलगिमहिअहिशीष॥१२१॥ ॥चौ

पाई॥ ॥पारवतीसमपतिप्रियहोहु॥देविनहमपर

छाडव ॥पुनिपुनिबिनयकरहिंकरजोरी॥जौइ

रयबहोरी॥दरशनदेवजानिभिजदासी

॥लखीसीयसबप्रेमपिआसी॥मधुरबचनकहिक

परितोषी॥जनुकुसुदिनीकौसुदीपोषी॥तबहिल

॥पुछेउमगुलोगनिसुदुबाणी॥

सुनतनारिनरभएदुरवारी॥पुलकितअंगबिलोचन

बारी॥मिटामोदमनभएमलीने॥बिधिनिधिदीन्हलेत

॥समुझिकर्मगतिधीरजकीन्हा॥शोधिसुगम

मगुतिन्हकहिदीन्हा॥ ॥दोहा॥ ॥लषणजानकीसहि

ततब॥गवनकीन्हरघुनाथ॥फेरेसबप्रियबचनकहि

॥लिएलायमनसाथ॥१२२॥ ॥चौपाई॥ ॥फिरतना

रिनरअतिपछिताहीं॥दैवहिंदोषदेहिंमनमाहीं॥सहि

तविषादपरस्परकहहीं॥बिधिकरतबसबउलटैअहा

हीं ॥ तिपटनिरंकुशनिष्ठुरनिशंकू ॥ जेहिं शशिकीन्हस
 रुजसकलंकू ॥ रूषकल्पतरुसागरस्वारा ॥ तेइपठएवन
 राजकुमारा ॥ जौपैइनहिंदीनवनबास ॥ कीनवादिवि-
 धिभोगबिलास ॥ येविचरहिं मगुबिनुपदवाणा ॥ रचेवा
 धिविधिवाहननाना ॥ एमहिंपरहिंडासिकुसपाता ॥ सभ
 गसेजकतसृजतविधाता ॥ तरुतरवासइनहिंविधिदीना
 ॥ धर्मलधामरचिअमकतकीना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जौएसु-
 निपटधरजटिल ॥ सुंदरसूठिसुकुमार ॥ विविधभांति
 भूषणवसन ॥ वादिकिएकरतार ॥ १२३ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ जौयेकंदमूलफलस्वाही ॥ वादिसुधादिअशनजग
 माही ॥ एककहहिं येसहजसुहाए ॥ आपुप्रगटभएवि
 धिनबनाए ॥ जहलंगिवेदकहेउविधिकरणी ॥ अक्खण
 नयनमनगोचरबरणी ॥ देखहरखोजिभुवनदशचारी ॥
 कहंअसपुरुषकहांअसनारी ॥ इनहिंदेखिविधिमनअ
 नुरागा ॥ पटतरुयोगबनावनलागा ॥ कीनबहुतअमए-
 कनआए ॥ तेहिंइर्षावनआनिदुराए ॥ एककहहिंहमव
 हुननजानहिं ॥ आपुहिंपरमधन्यकरिमानहिं ॥ तेपुनिपु
 एयपुएयहमलेखे ॥ जेदेखहिंदेखहिंजिनदेखे ॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ इहिविधिकहहिंबचनप्रिय ॥ लोहिनयनभरिनीर ॥
 किमिचलिहैंमारगअगम ॥ सूठिसुकुमारशरीर ॥ १२४
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नारिसनेहदिकलसबहोही ॥ चक
 ऊसमयजिमिसोही ॥ मृदुपदकमलकटिनमगुजानी ॥
 गहवारहृदयकहहिंमृदुवाणी ॥ परसनमृदुलचरण-
 अरुणारे ॥ सकुचतिमहिजिमिहृदयहमार ॥ जौजग
 दीशइनहिंवनदीना ॥ कसनसुमनमयमारगकीन्हा ॥

जौ मांगे पाइय बिधि पांहीं ॥ राखि ए सखि अही आखिन
 माहीं ॥ जे नर नारिन अवसर आए ॥ तिन सिय राम न देख
 न पाए ॥ सनि स्वरूप बूझहिं अकुलाई ॥ अवल गि गए क
 हां ल गि भाई ॥ सम रथ धाई बिलोकहिं जाई ॥ प्रसुदित फि
 रहि नयन फल पाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबला बाल क बृहज
 न ॥ कर मीं जहिं पछिताहीं ॥ होहिं प्रेम व शलोग इमि ॥ रा
 म जहां जहं जाहीं ॥ १२५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गांउं गांउं अस-
 होइ अनंद ॥ देखि भानु कुल कै र वचंदू ॥ जे कुछ समाचा
 र सनि पावहिं ॥ ते नृप रानिहिं दोष लगावहिं ॥ कहहिं ए
 क अति भल नर नाहू ॥ दीन हमहिं जिन लोचन लाहू ॥ कह
 परस्पर लोग लुगाई ॥ बातें सरल सनेह सह आई ॥ ते पि
 तु मातु धन्य जेहि जाए ॥ धन्य सो नगर जहां तें आए ॥ ध
 न्य सो शैल देश बन गाऊं ॥ जहं जहं जाहिं धन्य सो ठाऊं ॥
 सरव पाए बिरांचि रचिते ही ॥ ये जिन के सब भांति सनेही
 ॥ राम लषण पथ कथा सह आई ॥ रही सकल मगु कान
 ई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहि बिधिर घु कुल कमल रवि ॥ मगु लो
 गनि सरव देत ॥ जाहिं चले देवत बिपिन ॥ सिय सौ मित्रि
 समेत ॥ १२६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आगें राम लषण पुनि पा-
 छें ॥ ताप सबे पबिराजत काछें ॥ उभय मध्य सिय शोभ
 कैसी ॥ बह्म जीव बच माया जैसी ॥ बहुरि कहउं
 जस मन बसई ॥ जनु मधुमदन मध्य रतिल सई ॥ उपमा
 बहुरि कहां जिय जोही ॥ बुध बिधु मध्य रोहिणी सोही ॥
 प्रभु पद रोख बीच बिच सीता ॥ धरति चरण मगु
 समीता ॥ सीय राम पद अंक बराए ॥ लषण
 दाहिन वांए ॥ राम लषण सिय प्रीति सह आई ॥ वचन अ

गोचरकिमिकहिजाई ॥ खगमृगमगनदेखिछविहोहिं ॥
 लिएचोरिचितरामवदोहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जिनजिनदेसे
 पथिकप्रिय ॥ सियसहितहोभाई ॥ सबमगुअगमअन
 दते ॥ बिनुअमरहेसिराए ॥ १२७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अजहु
 जासुउरसपनेहुकाऊ ॥ बसहिंरामसियलषणबटाऊ ॥
 रामधामपथपाईहि सोई ॥ जोपथपावकबहुमुनिकोई
 ॥ तवरघुबीरअमितसियजानी ॥ देखिनिकटबटशीत
 लपाणी ॥ तहवसिकंदमूलफलखाई ॥ प्रातअन्हाइच
 लेरघुराई ॥ देखतवनसरशैलसहाए ॥ बालमीकआ
 अमप्रभुआए ॥ रामदेखिसुनिवाससुहावन ॥ सुंदर
 गिरिकाननजलपावन ॥ सरसिसरोजविटपवनफूले
 ॥ गुंजतमंजुमधुपरसभूले ॥ खगमृगविपुलकोलाह
 लकरहीं ॥ बिरहितबैरसुदितवनचरहीं ॥ ॥ दोहा ॥
 शक्ति सुंदरआअमनिरखि ॥ हर्षैराजिवनयन ॥ सुनि
 रघुवरआगमनसुनि ॥ आगेआएलयन ॥ १२८ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ सुनिकहरामदंडवतकीन्हा ॥ आशीर्वादविप्र
 वरदीन्हा ॥ देखिरामछविनयनजुडाने ॥ करिसनमान
 आअमहिंआने ॥ सुनिवरअतिथिप्राणप्रियपाए ॥
 कंदमूलफलमधुरमंगाए ॥ सियसौमित्रिरामफलखा
 ए ॥ तवसुनिआसनदिएसहाए ॥ बालमीकमनआनं
 दभारी ॥ मंगलमूरतिनयननिहारी ॥ तवकरकमलजो
 रिरघुराई ॥ बोलेवचनअवणसरवदाई ॥ तुमत्रिकाल
 दरशीसुनिनाथा ॥ विश्ववदरजिमितुहारेहाथा ॥ अस
 कहिप्रभुसबकथावरवानी ॥ जेहिंजेहिंभांतिदीन्हवन
 रानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातवचनपुनिमातुहित ॥ भाइभरत

असराउ॥मोकहंदरशतुह्मारप्रभु॥सबममपुण्यप्रभा-
उ॥१२९॥ ॥चौपाई॥ ॥देखिपायसुनिरायतुह्मारे॥भ
एककृतसबसफलहमारे॥अवजहंराउरआयसहो
ई॥मुनिउद्देगनपावहिंकोई॥मुनितापसजिनतेंदुखल
हहीं॥तेनरेसबिनुपावकदहहीं॥मंगलमूलविप्रपरि-
तोषू॥दहइकोटिकुलभूसररोषू॥असजियजानिकहि
यहसोइठाऊं॥सियसौमित्रिसहितजहंजाऊं॥तहंरुचि
रुचिरपणीतृणशाला॥वासकरौंकलुकालकृपाला॥
सहजसरलसुनिरघुवरबाणी॥साधुसाधुबोलेमुनि
जानी॥कसनकहहुअसरघुकुलकेतू॥तुमपालकसं
ततश्रुतिसेतू॥ ॥छंद॥ ॥श्रुतिसेतुपालकरामतुमज
गदीशमायाजानकी॥सोसृजतिजगपालतिहरतिरुष
पाइकृपानिधानकी॥६॥जोसहसशीषअहीशमहिध
रिलषणसचराचरधनी॥सरकाजधरिनरराजतनुच
लेदलनखलनिशिचरअनी॥१०॥ ॥सोरठा॥ ॥राम
स्वरूपतुह्मार॥बचनअगोचरबुद्धिवर॥अविगतअक
थअपार॥नेतिनेतिनितनिगमकहं॥१३०॥ ॥चौपाई॥
जगपेक्षणतुमप्रेक्षणिहारे॥विधिहरिशंभुनचावनहा
॥तेउनजानहिंमर्मतुह्मारा॥औरतुमहिंकोजाननहा
रा॥सोजानैजेहिंदहुजनाई॥जानततुहैंतुमहिंदोइजा
इ॥तुह्मरीकृपातुमहिरघुनंदन॥जानतभक्तभक्तउर
चंदन॥चिदानंदमयदेहतुह्मारी॥बिगतविकारजान
अधिकारी॥नरतनुधरेहुसंतसरकाजा॥कहहुकर
हुजसप्राकृतराजा॥रामदेखिसुनिचरिततुह्मारे॥ज
डमोहहिंबुधहोहिंसरवारे॥तुमजोकहहुकरहुसवसा

चा॥ जसकाछियतसनकाहिअनाचा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पू
 जेहुमोहिकिरहौं कहां॥ मैपूछतसकुचाउं॥ जहनहोहु
 तहेंदेहुकहि॥ तुमहिबतावौं वाउं॥ १३१॥ ॥ चौपाई॥
 सुनि सुनि वचन प्रेमरस साने॥ सकुचिराममनम
 काने॥ बालमीकहंसिकहहिबहोरी॥ वाणीमधुर
 यरसवोरी॥ सुनहु रामअवकहौंनिकेता॥ वसहुजहां
 सियलषणसमेता॥ जिनकेअवणसमुद्रसमाना॥
 ह्यारसभगसरिनाना॥ भरहिंनिरंतरहोहिनपूरे॥ तिन
 हृदयसदनतवरूरे॥ लोचनचातकजिनकरिराषे॥ र
 दरशजलधरअभिलाषे॥ निदरहिंसिंधुसरितअतिभा
 शी॥ रूपबिंदुजलहोहिं सरवारी॥ तिनकेहृदयसदनसु
 खदायक॥ वसहुलषणसियसहरघुनायक॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ यशतु ह्यारमानसबिमल॥ हंसिनिजीहाजासु॥ सुक
 फलगुणगणचुनै॥ वसहुरामहियतासु॥ १३२॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ प्रभुप्रसादशुचिसुभगसुवासा॥ सादरजासुलहै
 नितनाशा॥ तुमहितिवेदितभोजनकरहीं॥ प्रभुप्रसाद
 पटभूषणधरहीं॥ शीसनवहिंसुखगुरुहिजदेषी॥ मीति
 सहितकरिविनयविशेषी॥ करनितकरहिंरामसियपू
 जा॥ रामभरोसहृदयनहिदूजा॥ चरणरामतीरथचलि
 जाहीं॥ रामवसहुतिनकेमनमाहीं॥ मंत्रराजनितज
 तुह्यारा॥ पूजहिंतुमहिंसहितपरिवारा॥ तर्पणहोमकर
 हिंविधिनाना॥ विप्रजेंवाइदेहिंवहुदाना॥ तुमतेअधि
 कगुरुहिंजियजानी॥ सकलभायसेवहिंसनमानो॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सबकरिमांगहिंएकफल॥ रामचरणरतिहो
 उ॥ तिनकेमनमंदिरवसहु॥ सियरघुनंदनदोउ॥ १३३॥

॥ चौपाई ॥ ॥ कामक्रोधमदमाननमोहा ॥ लोभनक्षोभन
 रागनद्रोहा ॥ जिनके कपटदंभनहि माया ॥ तिनके हृदय
 बस हुरघुराया ॥ सबके प्रिय सबके हितकारी ॥ दुख सु-
 ख सरिस प्रशंसागारी ॥ कहहि सत्य प्रिय बचन विचारी
 ॥ जागत सोवत शरण तु ह्वारी ॥ तुमहिं छाडि गति दूसर
 नाही ॥ राम बसहु तिनके उर माही ॥ जननी सम जानहि
 परनारी ॥ धन पराय विषतैं विष भारी ॥ जे हरषहिं पर-
 संतति देखी ॥ दुखित होहिं पर बिपति विशेषी ॥ जिनहिं
 राम तुम प्राण पियारे ॥ तिनके उर श्रम सदन तु ह्वारे ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ स्वामि सरवापितु मातु गुरु ॥ जिनके सब तु
 मतात ॥ तिनके मन मंदिर बसहु ॥ सीय सहित दौ भ्रात
 ॥ १३४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अब गुणतजि सबके गुण गह
 हीं ॥ विप्र धेनु हित संकट सह हीं ॥ नीति निपुण जिनकी
 जगलीका ॥ घर तु ह्वार तिनके मन नीका ॥ गुण तु ह्वार स-
 मुझहिं निज दोष ॥ जेहिं सब भांति तु ह्वार भरोस ॥ राम भ-
 क्त प्रिय लागहिं जे हीं ॥ तेहिं उर बसहु सहित बैदे हीं ॥ जा-
 ति पांति धन धर्म बडाई ॥ प्रिय परिवार सह दस मुदाई ॥
 सब तजि तुमहिं रहै लव लाइ ॥ ताके हृदय बस हुरघुराइ
 ॥ स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना ॥ जहंत हं दीख धरैं धनु बा-
 ॥ मन क्रम बचन जोरा उर चैरा ॥ राम करहु ताके उर डे-
 रा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाहिन चाहिय कबहु कछु ॥ तुम सन-
 ॥ बसहु निरंतर तासु उर ॥ सोरा उर निज-
 १३५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इहि विधि मुनिवर सदन
 ॥ बचन स प्रेम राम मन भाए ॥ कह मुनि सनहु
 भानु कुल नायक ॥ आश्रम कहों समय सरवदायक ॥

चित्रकूटगिरिकरहुनिवास॥ तहंतुह्यारसबभांतिस्त
 पाशु॥ शैलसहावनकाननचारु॥ करिकेहरिमृग
 हंगविहारु॥ नदीपुनीतपुराणवरवानी॥ अत्रिप्रियानि
 जतपवलआनी॥ सरसरिधारनाममंदाकिनी॥ जोस
 वपातकपोतकडाकिनी॥ अत्रिआदिमुनिवरबहुबस
 हीं॥ करहिंयोगजपतपतनुकसहीं, चलहुसफलआअ
 मप्रभुकरहु॥ रामदेहुगौरवगिरिवरहु॥ ॥ दोहा॥
 चित्रकूटमहिमाअमित॥ कहीमहासुनिगाइ॥ आइअ
 न्हानेसरितवर॥ सीयसहितद्वौभाइ॥ १३६॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ रघुवरकहेउलषणभलघाटू॥ करहुकतहुंअवा
 ठाहरठाटू॥ लषणदीरवपयउतरकरारा॥ चहुंदिशिफि
 रेउधनुषाजिमिनारा॥ नदीपचनशरशमदमदाना॥ स
 कलकलुपकलिसाउजनाना॥ चित्रकूटजनुअचलअ
 हेरी॥ चूकनघातमारुमुठभेरी॥ असकहिलषणठाउँदे
 रवावा॥ थलविलोकिरघुपतिसरवपावा॥ रमेउरामम
 नदेवन्हजाना॥ चलेसहितसुरपतिपरधाना॥ कोल
 किरातबेषधरिआए॥ रचैउपर्णतृणसदनसहाए॥ व
 रणिनजाइमंजुहुइशाला॥ एकललितलघुएकविशा-
 ला॥ ॥ दोहा॥ ॥ लषणजानकीसहितप्रभु॥ राजत



पणनिकेत ॥ सोहमदनमुनिवेषजनु ॥ रतिऋतुराजस
 मेत ॥ ११७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अमरनागकिन्नरदिक
 पाला ॥ चित्रकूटआएतेहिंकाला ॥ रामप्रणामकीन्ह
 सबकाहू ॥ सुदितदेवलहिलोचनलाहू ॥ वर्षिसुमन
 कहदेवसमाजु ॥ नाथसनाथभएहमआजु ॥ करिवि
 नतीदुरखदुसहसनाए ॥ हर्षितनिजनिजसदनसिधा
 ए ॥ चित्रकूटरघुनंदनछाए ॥ समाचारसुनिसुनिसुनि
 आए ॥ आवतदेखिसुदितमुनिचंद्रा ॥ कीन्हदंडवतर
 घुकुलचंद्रा ॥ सुनिरघुवरहिंलाइउरलेहीं ॥ सुफलहो
 नहितआशिषदेहीं ॥ सियसौमित्रिरामछबिदेखी ॥
 साधनसकलसुफलकरिलेखी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यथा
 योगसनमानिप्रभु ॥ बिदाकिएसुनिचंद्र ॥ करहिंयोगज
 पयज्ञतप ॥ निजआश्रमस्वच्छंद ॥ ११८ ॥ ॥ चौपाई ॥
 यहसुनिकोलकिरातनपाई ॥ हर्षेजनुनवविधिधरआ
 ई ॥ कंदमूलफलभरिभरिदोना ॥ चलेरंकजनुलूटनसो
 ना ॥ तिनमहंजिनदेखेद्वौभाता ॥ औरतिनहिंपूछहिंम
 गुजाता ॥ कहतसुनतरघुबीरनिकाई ॥ आएसबदेखे
 द्वौभाई ॥ करहिंजुहारिभेटधरिआगे ॥ प्रभुहिंबिलोकत
 अतिअनुरागे ॥ चित्रलिखेजनुजहंतहंठाटे ॥ पुलकश
 रीरनयनजलबाटे ॥ रामसनेहमगनसबजाने ॥ कहिप्रि
 यबचनसकलसनमाने ॥ प्रभुहिंजोहारिबहोरिबहोरी
 ॥ बचनबिनीतकहहिंकरजोरी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अबहम
 नाथसनाथसब ॥ भएदेखिप्रभुपाय ॥ भाग्यहमारेआ
 गमन ॥ राउलकोशलराय ॥ ११९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ धन्य
 भूमिबनपंथपहारा ॥ जहंजहंनाथपांवतुमधारा ॥ धन्य

बिहंगमृगकाननचारी॥ सुफलजन्मभएतुमहिंनिहा
 री॥ हमसबधन्यसहितपरिवारा॥ देखिनयनभरि
 रशतुहारा॥ कीन्हवासभलठामबिचारी॥ इहांसक
 अतुरहवसरवारी॥ हमसबभांतिकरवसेवकाई॥ क
 रिकेहरिअहिबाधवराई॥ बनबिहंगगिरिकंदरखोहा
 ॥ सबहमारप्रभुपगुपगुजोहा॥ तहंतहंतुमहिंअहेर-
 खेलाउव॥ सरनिर्जरसबठाउदेखाउव॥ हमसेवकप
 रिवारसमेता॥ नाथनसकुचआयसुदेता॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ बेदबचनमुनिमनअगम॥ नेप्रभुकरुणाअयन॥
 बचनकिरातनकेसनन॥ जिमिपितुबालकबचन॥
 १४०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ रामहिंकेवलप्रेमपिआरा॥ जा
 निलेहुजोजानहिंहारा॥ रामसकलबनपरपरितोषे॥
 कहिमृदुबचनप्रेमपरिपोषे॥ विदाकिएशिरनाइसि
 धाए॥ प्रभुगुणकहतसननधरआए॥ इहिविधिसी
 यसहितहोभाई॥ वसहिंबिपिनसरमुनिसरवदाई॥
 जवनेआइरहेरघुनायक॥ तवनेंभएबनमंगलदायक
 ॥ फुलहिफुलहिंविटपविधिनाना॥ मंजुललितवरबे-
 लिविताना॥ सरुतरुसरिससुभावसहाए॥ मनहुंवि
 बुधवनपरिहरिआए॥ गुंजतमंजुलमधुकरश्रेणी॥
 भिविधवयारवहैसरवदेनी॥ ॥ दोहा॥ ॥ नीलकंठ
 कलकंठशुक॥ चानकचक्रचकोर॥ भांतिभांतिचोल
 हिंविहग॥ अवणसरवदचितचोर॥ १४१॥ ॥ चौपा
 ई॥ करिकेहरिकपिकोलकुरंगा॥ विगतवयरविहर
 हिंएकसंगा॥ फिरनअखेदरामछविदंपी॥ होहिंसुदि
 तमृगवृंदविशोपी॥ विबुधविपिनजहंलगिजगमाही॥

देखि राम बन सकल सिंहाही ॥ सर सरि स सर स्वति-
 ॥ मेकल सुता गोदावरि धन्या ॥ सब स
 र सिंधु नदी नद नाना ॥ मंदा किनिकर करहि बरवाना
 ॥ उदय अस्त गिरिवर कैलास ॥ मंदर मेरु सकल सर
 बास ॥ शैल हिंमाचल आदिक जेते ॥ चित्रकूट यशगा
 वहि तेते ॥ देव सुदित मन सरवन समाई ॥ बिनु भ्रम बिपु
 ल बडाई पाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चित्रकूट के बिहंग
 मृग ॥ बेलिविट पतृण जाति ॥ पुण्य पुंज सब धन्य अ
 स ॥ कहहिं देव दिन राति ॥ १४२ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ नयन वंतर घु पति हिं बिलोकी ॥ पाइ ज
 न्य फल होहिं बिशोकी ॥ परसि चरण रज अचर सरवा-
 री ॥ भए परम पद के अधिकारी ॥ सोवन शैल सुभाय सु
 हावन ॥ मंगल मय अति पावन पावन ॥ महि मा कहौं क
 वन विधितास ॥ सरव सागर जहं कीन्ह निवास ॥ पय
 पयोधित जि अ व ध बिहाई ॥ जहं सिय राम लषण रह
 आई ॥ कहिन श कहिं सरव माज सकानन ॥ जौ शत स
 ह सहोहिं सह सानन ॥ सोमे बरणि कहौं विधिके हीं ॥
 डावर कमठ कि मंदर ले हीं ॥ सेवहिं लषण कर्म मन बाणी
 ॥ जाइन शील सनेह बरवानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्षण क्षण
 लखि सिय राम पद जानि आ पु पर नैह ॥ करत लषण स
 पनेन चित ॥ बंधु मातु पितु गेह ॥ १४३ ॥ ॥ चौपाई ॥
 राम संग सिय रहहिं सरवारी ॥ पुर परिजन गृह सरति
 बिसारी ॥ क्षण क्षण प्रिय बिधु बदन निहारी ॥ प्रमुदि
 त मन हुंच कोर कुमारी ॥ नाहने तनित बटत बिलोकी ॥
 हर्षित रहति दिवस जिमि कोकी ॥ सिय मन राम चरण

अलुरागा ॥ अवधसहससमवनप्रियलागा ॥ पर्णकु
 टीप्रियप्रियतमसंगा ॥ प्रियपरिवारकुरंगदिहंगा ॥ सा
 कससकरसममुनितियमुनिबर ॥ अशनअमियसम
 कंदमूलफर ॥ नाथसाथसाथरीसहाई ॥ मयनशय
 नशतसमदुरवदाई ॥ लोकपहोहिंबिलोकतजासू ॥
 तेहिकिमोहशकविषयबिलासू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुमि
 रनरामहिंतजहिंजन ॥ तृणसमबिषयबिलासू ॥ राम
 प्रियाजनजनसिसिय ॥ कछुनआचरजतासू ॥ १४४
 ॥ चौपाई ॥ ॥ सीयलषणजेहिंविधिसरवलहहिं ॥
 सोइरघुनाथकरहिंसोइकहहीं ॥ कहहिंपुरातनसू
 कथाकहानी ॥ सुनहिंलषणसियअतिसरवमानी ॥
 जबतवरामअवधसूधिकरहीं ॥ तबतबवारिबिलो
 चनभरहीं ॥ सुमिरिमातृपितृपरिजनभाई ॥ भरतस
 नेहशीलसेवकाई ॥ कृपासिंधुप्रभुहोहिंदुरवारी ॥ धी
 रजधरहिंकुसमयविचारी ॥ लरिसियलषणबिकल
 होइजाहीं ॥ जिमिपुरुषहिंअनुसरपरिछाहीं ॥ प्रिया
 धंधुगतिलरिवरघुनंदन ॥ धीरकृपालुभक्तउरचंद
 न ॥ लगेकहनकछुकथापुनीता ॥ सुनिसरवलहहिं
 लषणअरुसीता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामलषणसीतास-
 हित ॥ सोहतपर्णनिकेत ॥ जिमिवासववसअमरपु
 र ॥ शचीजयंतसमेत ॥ १४५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ युगव
 हिंप्रभुसियलषणहिकैसे ॥ पलकविलोचनगोलक
 जैसे ॥ सेवहिंलषणसीयरघुवीरहि ॥ जिमिअविवे
 कीपुरुषशरीरहिं ॥ इहिविधिप्रभुवनवसहिंसरवा
 री ॥ खगमृगकरनापसहितकारी ॥ कहेउरामवनगव

नसहोवा ॥ सनहुसमंत्रअवधजिमिआवा ॥ फिरेउ
 निषादपभुहिपहुंचाई ॥ सचिवसहितरथदेखेउआ
 ई ॥ मंत्रिहिंबिकलबिलोकिनिषाद ॥ कहिनशकहिं
 नशभएउविषाद ॥ रामरामसियलषणपुकारी ॥
 उधरएतलव्याकुलभारी ॥ देखिदक्षिणदिशिहय
 हिहिनाही ॥ जिमिबिनुपंखविहगअकुलाही ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ नहितएचरहिंनपियहिंजल ॥ मोचतलोचन
 वारि ॥ व्याकुलभएउनिषादपति ॥ रघुवर
 नि ॥ १४६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ धीरजधरितबकहहिंनिषा
 द ॥ अवसमंत्रपरिहरहुविषाद ॥ तुमपंडितपरमार
 यज्ञाता ॥ धरहुधीरलखिविसुरखविधाता ॥ विविध
 कथाकहिकहिसुदुबाणी ॥ रथबैलारेसिवरबशआ
 नी ॥ शोकशिथिलरथशकहिनहाकी ॥ रघुपतिविर
 हिपीरउरवाकी ॥ तरफराहिमगुचलहिनघोरे ॥ बन
 मृगमनहुंआनिरथजोरे ॥ उदकिपरहिंफिरिचितव
 पीछे ॥ रामबियोगबिकलदुरवतीछे ॥ जोकहंराम
 लषणवैदेही ॥ हिकरहिकरिहयहेरहिंतेही ॥ बाजिवि
 हकिजाती ॥ मणिबिनुफणिकबिकलजे
 भांती ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भएनिषादविषादबश ॥ देखत
 सचिवतुरंग ॥ बोलिससेवकचारितब ॥ दिएसारथी-
 संग ॥ १४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गुहसारथिहिंफिरेपहुं
 चाई ॥ बिरहविषादवरणिनहिजाई ॥ चलेअवधल
 रथहिंनिषादा ॥ होतक्षणहिंक्षणमगनविषादा ॥ शो-
 चसमंत्रबिकलदुरवदीना ॥ धीकजीवनरघुवीरदि-
 हीना ॥ रहहिंनअंतहुअधमशरीरा ॥ यशनलहंउवि

छरतरघुवीरा ॥ भएउअयशअयभाजनप्राणा ॥ कौ
 नहेतुनहिकरतपयाना ॥ अहहमंदमतिअवसरचूका
 ॥ अजहुनहृदयहोतहुइदूका ॥ मीजिहाथशिरधुनिप-
 छिताई ॥ मनहुंलपणधनराशिगंवाई ॥ विरदवाधिवर
 वीरकहाई ॥ चलेसमरजनुसुभटपराई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 विश्विविवेकीवेदविद ॥ संमतसाधुसुजाति ॥ जिमिधो
 रवेमदपानकर ॥ सचिवशोचतेहिभांति ॥ १४८ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ जिमिकुलीनतियसाधुसयानी ॥ पनिदेवता
 कर्ममनवाणी ॥ रहैकर्मवशपरिहरिनाहू ॥ सचिवहृ
 दयतिमिदारुणदाहू ॥ लोचनसजलदृष्टिभइथोरी ॥
 सुनैनअवणविकलमतिभोरी ॥ सुखहिंअधरलागि
 सुहलाटी ॥ जीवनजाइउरअवधकपाटी ॥ विवरणभ
 एउनजाइनिहारी ॥ मारेसिमनहुंपितामहतारी ॥ हा-
 निगलानिविपुलमनव्यापी ॥ यमपुरपंथशोचजिमि
 पापी ॥ वचननआवहृदयपछिताई ॥ अवधकहांमै-
 देखवजाई ॥ रामरहितरथदेखिहिंजोई ॥ सकुचिहिं
 मोहिविलोकतसोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धाइपूछिहहिंमो
 हिजब ॥ विकलनगरनरनारि ॥ उत्तरदेवमैसबहिंतब
 ॥ हृदयवेज्यवेदारि ॥ १४९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पूछहहिंदी
 नदुखितसयमाता ॥ कहवकहामैतिनहिंविधाता ॥ सु
 छहहिंजबहिंलपणमहतारी ॥ कहिहोंकवनसंदेशसु
 रवारी ॥ रामजननिजबआइहिंधाई ॥ सुमिवल्लजिमि
 धेनुलवाई ॥ पूछतउत्तरदेवमैनेह्री ॥ गोपनरामलपण
 बंदेही ॥ जोइपूछहिंनहिउमरदेया ॥ जाइअवधअव
 गहसुखलंबा ॥ पूछहिंजबहिंराउदुखदीना ॥ जीवन-

जासरघुनाथअधीना॥दैहौउतरकवनमुहलाई॥आ
एउंकुशलकुंवरपहुंचाई॥सुनतलषणसियरामसंदेशू
॥तृणइवतनुपरिहरहिंनरेशू॥॥दोहा॥॥हृदयनवि
दरतपंकजिमि॥बिछुरतप्रियतमनीर॥जानतहौंमोहि
दीन्हबिधि॥इहजातनाशरीर॥१५०॥॥चौपाई॥॥इहिबि
धिकरतपंथपछितावा॥तमसातीरतुरतरथआवा॥विदा
किएकरिविनयनिषादू॥फिरेपायपरिविकलविषादू॥बैठत
नगरसचिवसकुचाई॥जनुजारेसिगुरुब्राह्मणगाई॥बैठि
षिटपतरदिवसगवावा॥सांजसमयतबअवसरपा
वा॥अवधप्रवेशकीन्हअंधिआरे॥पैठतवनरथरा
खिदुआरे॥जिन्हजिन्हसमान्चारसुनिपाए॥भूप-
हाररथदेखनआए॥रथपहिचानिबिकललखिघो
रे॥गरहिंगातजिमिआतपओरे॥नगरनारिनरब्या
कुलकैसे॥निघटतनीरमीनगणजैसे॥॥दोहा॥॥
सचिवअगमनसुनतसब॥बिकलभएउरनिवास॥
भवनभयंकरलागतेहिं॥मानहुंप्रेतनिवास॥१५१॥
॥॥चौपाई॥॥अतिआरतसबपूछहिंराणी॥उ
तरनआवबिकलभईबाणी॥सुनैनअवणनयननहिं
सूजा॥कहहुंकहांनृपजेहितेहिंबूजा॥दासिन्हदीख
सचिवबिकलाई॥कौशल्यागृहगईलबाई॥जाइसु
मंत्रदीरवकसरजा॥अमियरहितजनुचंदविराजा॥
अशननशयनविभूषणहीना॥फरेउभूमितलनिपटा
मलीना॥लेनश्वासशोचैइहिभांती॥सरपुरतैजनु
खसेउजजाती॥लेतशोचभरिक्षणक्षणछाती॥
जरिपंषपरेउसंपाती॥रामरामकहरामसनेही

निकहरामलषणवैदेही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देखि सचिवज
 यजीव कहि ॥ कीन्है सिदंड प्रणाम ॥ स्तनत उठे व्याकुल
 नृपति ॥ कहु स्तमंत्र कहं राम ॥ १५२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भू
 पस्तमंत्रलीन्ह उरलाई ॥ बूडत कलु आधार जनु पाई ॥
 सहित सनेह निकट बैठारी ॥ पूछत राउ नयन भरि वा-
 री ॥ राम कुशल कहु सरवा सनेही ॥ कहं रघुनाथ लष-
 णवै देही ॥ आनेहु फेरि किब नहि सिधाए ॥ स्तनत स-
 चिव लोचन जल छाए ॥ शोक बिकल पुनि पुछिन रेभू ॥
 कहु सिय राम लषण संदेशू ॥ राम रूप गुण शील स्तभा-
 ऊ ॥ स्तमिरि स्तमिरि उर शोचत राऊ ॥ राज स्तनाइ दी-
 न्ह बन वास्त ॥ स्तनि मन भए उन हरष हरास्त ॥ सो सुत
 विछुरत गएन प्राणा ॥ कोपापी बड मोहि समाना ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सरवाराम सिय लषण जहं ॥ वहां मोहि पहुं-
 चाऊ ॥ नाहित चाहुत चलन अब ॥ प्राण कहों सति भाऊ
 ॥ १५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पुनि पुनि पूछत मंत्रि हिं राऊ ॥
 प्रियतम स्त अन संदेश स्तनाऊ ॥ करहु सरवा सोइ बेगि
 उपाइ ॥ राम लषण सिय बेगि दिखाई ॥ सचिव धीर ध-
 रि कहु मृदु बाणी ॥ महाराज तुम पंडित ज्ञानी ॥ वीर स्त
 धीर धुरंधर देवा ॥ साधु समाज सदा तुम सेवा ॥ जन्म
 कर्म सब दुख स्त रव भोगा ॥ हानि लाभ प्रिय मिलन वि-
 योगा ॥ काल कर्म वश होहि गोसाई ॥ परवश राति दि-
 वस की नाई ॥ स्त रव हर्षे हिं जड दुरवा विलर दाहीं ॥ हों स-
 मधीर धर हिं मन माहीं ॥ धीरज धरहु विवेक विचारी ॥
 आडिय शोच सकल हितकारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रथम वा-
 नत गसा भएउ ॥ दुसर सुरि सरि नीर ॥ न्हाइ रहं जल पा

नकारि॥सियसमेतहौवीर॥१५४॥ ॥चौपाई॥ ॥केब
टकीन्हबहुतसेवकाई॥सोयामिनिशृंगबेरगंवाई॥होत
प्रातबटक्षीरमंगावा॥जटासुकुटनिजसीसबनावा॥रा
मसरवातबनामंगाई॥प्रियाचटाइचढेरघुराई॥लषण
धरेधनुबाणबनाई॥आपुचढेप्रभुआयसुपाई॥बिक
लबिलोकिमोहिरघुवीरा॥बोलेमधुरबचनधरिधीरा॥
तातप्रणामतातसनकहेहू॥बारबारपदपंकजगहेहू
॥करविपायकरिविनयबहोरी॥तातकरियजनिचिता
मोरी॥बनमगुमंगलकुशलहमारे॥कृपाअनुग्रहपु-
एयतुहमारे॥ ॥छंद॥ ॥तुहारेअनुग्रहतातकानन
जातसबसरवपाइहौं॥प्रतिपालिआयसुकुशलद्वैरव
नपायपुनिफिरिआइहौं॥११॥जननीसकलपरितो
षिपरिपरिपायकरिविनतीधनी॥तुलसीकरेहुसोइ
यत्नजेहिंविधिकुशलरहहिंकोशलधनी॥१२॥ ॥सो
रवा॥ ॥गुरुसनकहबसंदेश॥बारबारपदपद्मग-
हि॥करवसोइउपदेश॥जेहिनशोचमोहिअवधपति
॥१५५॥ ॥चौपाई॥ ॥पुरजनपरिजनसकलनिहोरी
॥तातसुनायहुबिनतीमोरी॥सोइसबभांतिमोरहि
तकारी॥जातेरहनरनाहसरवारी॥कहबसंदेशभ
रतकेआए॥नीतिनतजवराजपदपाए॥पालहुंप्रज-
हिंकर्ममनवाणी॥सेइयहुमातुसकलशमजानी॥
औरनिवाहवभायपभाई॥करिपितुमातुसजनसे
वकाई॥तातभांतितीहिंरारवबराऊं॥शोचमोरजेहिं-
करहिंनकाऊं॥लषणकहेकलुबचनकठोरा॥बरजि
रामपुनिमोहिनिहोरा॥बारबारनिजशपथदिवाई॥

कहविनतातलषणलरिकाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहिप्रण
 मकछुकहनलिय ॥ सियभइशिथिलसनेह ॥ थकित
 वचनलोचनसजल ॥ पुलकपल्लवितदेह ॥ १५६ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ नहिंअवसररघुवररुषपाई ॥ केबटपा
 रहिंनावचलाई ॥ रघुकुलतिलकचलेभांति ॥ देखेउं
 दादकुलिशकरिछाती ॥ मैंआपनकिमिकहुंउंकलेशू
 ॥ जिअतफिरिउंलैरामसंदेशू ॥ असकहिसचिवबच
 नरहिगएउ ॥ हानिगलानिशोचवशभएउ ॥ सुनतसु
 मंत्रवचननरनाहू ॥ परेउधरणिउरदारुणदाहू ॥ तल
 फतबिकलमोहमनमापा ॥ माजामनहुंमीनकहुंव्या
 पा ॥ करिबिलापसवरोवहिरानी ॥ महाविपत्तिकिमि
 जाइबरवानी ॥ सुनिविलापदुखहुंदुरवलागा ॥ धीर
 जहूकरधीरजभागा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भएकोलाहलअ
 वधअति ॥ सुनिनृपराउरसौर ॥ विपुलविहगवनप
 रेउनिशि ॥ मानहुकुलिशकठोर ॥ १५७ ॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ प्राणकंठगतभएउभुआलू ॥ मणिविहीनजिमि
 व्याकुलव्यालू ॥ इंद्रियसकलविकलभइभारी ॥ जनुसु
 रसरसिजवनविनुवारी ॥ कौशल्यानृपदीखमलीना ॥
 रविकुलरविअथएजियदीना ॥ उरधरिधीरराममहता
 री ॥ बोलीवचनसमयअनुसारी ॥ नाथससुजिमनक
 रियविचारू ॥ रामवियोगपयोधिअपारू ॥ कर्णधार
 तुमअवधजहाजू ॥ चलेउसकलप्रियवणिकसमाजू
 ॥ धीरजधरियनोपाइयपारू ॥ नाहितवृडहिंसबपरि
 दारू ॥ जौजियधरिचिनयपियमोरी ॥ रामलषणसिय
 मिलवबहोरी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रियावचनमहुसुनननृप ॥

चित्तएउआंरिवउघारि॥ तलफतमीनमलीननजु॥ सी
 चतसीतलवारि॥ १५८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ धरिधीरजउ
 ठिबैठभुआलु॥ कहुसुमंत्रकहंरामकृपालु॥ कहालष
 एकहंरामसनेही॥ कहंप्रियपुत्रबंधुबैदेही॥ विलपत
 राउबिकलबहुभांती॥ भइयुगसरिससिरातिनराती॥
 तापसअंधशापशुधिआई॥ कौशल्यहिंसबकथासु
 नाई॥ भएबिकलबिबरणइतिहासा॥ रामरहितधिक
 जीवनआशा॥ सोतनुरारिवकरवमैकाहा॥ जेइनप्रेम
 पणमोरनिवाहा॥ हारघुनंदनप्राणपरीते॥ तुमबिनुजि
 अतबहुतदिनबीते॥ हाजानकीलषणहारघुवर॥ हापि
 तुहितहितचातकजलधर॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामरामकहि
 रामकहि॥ रामरामकहिराम॥ तनुपरिहरिरघुवरविर
 ह॥ राउगएसरधाम॥ १५९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जियन
 मरणफलदशरथपावा॥ अंडअनेकअमलयशछावा
 ॥ जिअतरामबिधुबदननिहास॥ रामविरहभरिमरण
 संचारा॥ शोकबिकलसबरोचहिंरानी॥ रूपशीलवलते
 जबरवानी॥ करहिंविलापअनेकप्रकारा॥ परहिंभूमि
 तलबारहिंबारा॥ विलपहिंबिकलदासअरुदासी॥ घर
 घररुदनकरहिंपुगवासी॥ अथएउआजुभानुकुलभा
 नू॥ धर्मअबधिगुणरूपनिधानू॥ गारीसकलकैकयी
 हिंदेही॥ नयनबिहीनकीन्हजगजेही॥ इहिविधिविलप
 तनैनिबिहानी॥ आएसकलमहासुनिजानी॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ तबयशिष्टमुनिसमयसम॥ कहिअनेकइतिहास
 ॥ शोकनिवारेउसबहिंकर॥ निजबिज्ञानप्रकाश॥ १६
 ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ तेलनाबभरिनृपतनुरावा॥

इबहुरिअसभाषा॥ धावहुबेगिभरतपहंजाहू॥ नृपशु-
 धिकतहुं कहहुजनिकाहू॥ इतनै कहैहुभरतसनजाई॥
 गुरुबुलाइपठएदोउभाई॥ सुनिमुनिआयसुधावन
 धाए॥ चलेबेगिवरबाजिलगाए॥ अनरथअवधअ-
 रंभेउजबते॥ कुशगुणहोहिंभरतकहंतबतें॥ देखहिं
 रातिभयानकसपना॥ जागिकरहिंकटुकोटिकल्पना
 ॥ विप्रजेंबाइदेहिंदिनदाना॥ शिवअभिषेककरहिंवि-
 धिनाना॥ मांगहिंहृदयमहेशमनाई॥ कुशलमातु
 पितुपरिजनभाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इहिविधिशोचत
 भरतसन॥ धावनपहुंचेआइ॥ गुरुअनुशासनअव-
 एसुनि॥ चलेगणेशमनाई॥ १६१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 चलेसमीरबेगिहयहांके॥ लांघतसरितशैलबनवांके
 ॥ हृदयशोचबडकछुनसोई॥ असजानहिंजियजा
 उंउडाई॥ एकनिमेषैवरषसमजाई॥ इहिविधिभरत
 अवधनियराई॥ असगुणहोहिंनगरपैठारा॥ रटहि
 कुभांतिकुरवेतकरारा॥ स्वरभृगालचोलाई
 ॥ सुनिसुनिहोहिंभरतमनमूला॥ श्रीहतसर
 तावनवागा॥ नगरविशेषभयावनलागा॥ खगसृगह
 यगजजाहनिजोए॥ रामवियोगकुरोगविगोए॥ नगर
 नारिनरनिपटदुखारी॥ मनहुंसभनिसवसंपतिहा-
 री॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुरजनमिलहिंनकहहिकछु॥ ग
 वहिंजोहारहिंजाहिं॥ भरतकुशलनहिंपूछिशक॥ भ
 एबियादमनमांहि॥ १६२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दाटचाट
 नहिंजाइनिहारी॥ जनुपुरदशादिशिलागुदवारी॥ आ
 वतसुतसुनिकेकयनदिनि॥ हरधीरविकुलजलरुह

चांदिनि ॥ सजिआरती सुदित उठि धाई ॥ द्वारहिं भटी भवन
लै आई ॥ भरत दुखित परिवारनि हारा ॥ मानहु तुहि ज-
वन जवन भारा ॥ कैकेयी हर्षित भइ इहिं भाती ॥ मनहुं सु-

॥ सुतहिं सशोच देरिव मन मारे ॥ पू-

छतिनै हरकुशल हमारे ॥ सकल कुशल कहि भरत सुना
ई ॥ पूछीनि जकुल कुशल भलाई ॥ कहु कहं तात कहां सब
माता ॥ कहं सिय राम लषण प्रिय भ्राता ॥ ॥ दोहा ॥

सुनि सुत बचन सने हमय ॥ कपटनीर भरि नयन ॥ भर-
त श्रवण मन भूल सम ॥ पापिनि बोली बयन ॥ १६३ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ तात बात मै सकल संवारी ॥ भई मंथरा स-
हाइ बिचारी ॥ कछु क काज विधि बीच बिगारे ॥ भूपति-
सरपति पुर पगु धारे ॥ सुनत भरत भए बिबश बिषादा

॥ जनु सह मेउ करि के हरि नादा ॥ तात तात हातात पुका-
री ॥ परे भूमि तल व्याकुल भारी ॥ चलत न देखन पाएउ
तोही ॥ तात न रामहिं सौं पैहु माही ॥ बहुरि धीर धरि उठे

संभारी ॥ कहु पितु मरण हेतु महतारी ॥ सुनि सुत बच-
न कहति कैकेयी ॥ मर्म पाछि जनु माहुर देही ॥ आदिहि
तैं सब आपनि करणी ॥ कुटिल कठोर सुदित मन बरणी

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरतहिं बिसरेउ पितु मरण ॥ सुनत रा-
म वन गौन ॥ हेतु आपुन को जानि जिय ॥ थकित रहै ध-
१६४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बिकल बिलोकि सुत

हिस सुजावति ॥ मनहुं जरै परलोन लग्गावति ॥ तातरा
शोचइ योगू ॥ विविध सुकृत जश कीन्हें उभोगू

॥ जीवत सकल जन्म फल पाए ॥ अंत अमर पति सदन
धाए ॥ अस अनुमानि शोच परि हरहू ॥ सहित स-

माजराजपुरकरहू॥ सुनिसहमेऊं सुठिराजकुमारू॥ पा
 केक्षतजनुलागुअंगारू॥ धीरजधरिभरिलेहिउशासा
 ॥ पापिनिसबहिंभांतिकुलनाशा॥ जौपैंकुमतिरहीअस
 तोही॥ जनमतकाहेनमारेसिमोही॥ पेडकाटितैंपल्लव
 सीचा॥ मीनजिअनहितवारिउलीचा॥ ॥ दोहा॥ ॥
 सबंशदशरथजनक॥ रामलषणसेभाइ॥ जननीतूज
 ननीभई॥ विधिसोंकहावसाइ॥ १६५॥ ॥ चौपाई॥
 जवतैंकुमतिकुमत्तजियठएऊ॥ खंडखंडहोइहृदयन
 गएऊ॥ वरमांगतमबभ्रूनहिपीरा॥ जरिजजी
 रेउनकीरा॥ भूपप्रतीतितोरिकिमिकीन्ही॥ मरणका
 लविधिमतिहरिलीन्ही॥ विधिहुननारिहृदयगतिजा
 नी॥ सकलकपटअघअवगुणरवानी॥ सरलसुशील
 धर्मरतराऊ॥ सोकिमिजानहितीयसुभाऊ॥ असको
 जीवजंतुजगमाहीं॥ जेहिरघुनाथप्राणप्रियनाहीं॥ भे
 अतिअहितरामतैंतोही॥ कोतुकअहसिसत्यकहुमो
 ही॥ जोहसिसोहसिसुहमसिलाई॥ आरिबओटउठि
 बैठेहिजाई॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामविरोधीहृदयतैं॥ प्रग
 टकीन्हविधिमोहि॥ सोसमानकोपातकी॥ बादिकहों
 कलुतोहि॥ १६६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुनिशत्रुघनमातु
 कुटिलाई॥ जरहिंगातरिसकलुनवशाई॥ तैंहिंअवस
 रकुवरीतहंआई॥ वसनविभूषणविविधवनाई॥ लखि
 रिसभरेउलषणलसुभाई॥ वरतअनलघृतआहुतिरा
 इ॥ हुमकिलातैंतिकुवरीकुमारा॥ परिसुहभरिमहिक
 रतिप्रकारा॥ वृचवहृदउफूटिकयारू॥ दलितदशनमु
 खरुधिरप्रचारू॥ आहिदइयमेंकाहनशावा॥ करतनी

कफलअपयशपावा॥सुनिरिपुहनलखिनखशिखरवो
 दी॥लगेघसीटनंधरिंधरिचाटी॥भरतदयानिधिदीह
 छुडाई॥कौशल्यापहिगोदीउभाई॥ ॥दीहा॥ ॥मलि
 नबसनबिवरणबिकल॥कृशशरीरदुरवभार॥कनक
 कल्पवरबेलिबन॥मानहुहूनिनुषार॥१६७॥ ॥चौपा
 ई॥ ॥भरतहिंदेरिमातुउठिधाई॥मूर्छितअवनिप
 रीजूषआई॥देखतभरतबिकलभएभारी॥परेचरण
 तनुदशाविसारी॥मातुतातकहंदेहिदेखाई॥कहंसि
 यरामलषणदोउभाई॥कैकेयिकतजनमीजगमाजा॥
 जौजननीभइकाहेनबांजा॥कुलकलंकजेहिजनमोहि
 मोही॥अपयशभाजनप्रियजनद्रोही॥कोत्रिभुवनमो
 सअभागी॥गतिअसितोरिमातुजौहिलागी॥
 बनरघुकुलकेतू॥मैकेवलसवअनरथ
 हेतू॥धिगमोहिभएउबेणुवनआगी॥दुसहदाहदुख
 दूषणभागी॥ ॥दीहा॥ ॥मातुभरतकेबचनमृदु॥
 सुनिपुनिउठीसंभारि॥लिएउठाइलगाइउर॥लोचन
 मोचतिवारि॥१६८॥ ॥चौपाई॥ ॥सरलसुभायमा
 इहियलाए॥अतिहितमनहुंरामफिरिआए॥भटेउ
 बहुरिलषणलघुभाई॥शोकसनेहनहृदयसमाई॥दे
 रिवसुभावकहतसबकोई॥राममातुअसकाहेनहोई
 ॥माताभरतगोदबैठारे॥आंसुपौंछिमृदुबचनउचारे॥
 अजहुंबत्सबलिधीरजधरहु॥कुसमयसमुजिशोक
 परिहरहु॥जनिमानहुहियहानिगलानी॥कालकर्म
 गतिअघटितजानी॥काहुहिंदोषदेहुजनिताता॥भा
 मोहिसबविधिबामविधाता॥जौऐतेहुंदुरवमोहिजि

आवा ॥ अजहुंकोजानेकातेहिभावा ॥ ॥ दोहा ॥ ।
 तुआयसुभूषणबसन ॥ ताततजेरघुवीर ॥ विस्मयह
 र्बनहृदयकलु ॥ पहिरेवल्कलचीर ॥ १६६ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ सरवप्रसन्नमनरागनरोष ॥ सबकर
 रपरितोष ॥ चलेविपिनसुनिसियसंगलागी ॥ रहैनरा
 मचरणअनुरागी ॥ स्तनतहिलषणचलेउठिसाथा ॥
 रहहिनयतनकिएरघुनाथा ॥ तबरघुपतिसबहीशि
 रनाई ॥ चलेसंगसियअरुलघुभाई ॥ रामलषणसिय
 बनहिसिधाए ॥ गर्दनसंगनहिप्राणपठाए ॥ इहसब
 भाइन्हआंरिवन्हआगे ॥ तउनतजततनुजीवअभा
 गे ॥ मोहिनलाजनिजनेहनहारी ॥ रामसरिससक्तमैं
 महतारी ॥ जिआइमरइभलभूपतिजाना ॥ मोरहृदय
 शतकुलिशसमाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौशल्याकेबचन
 सुनि ॥ भरतसहितरनिवास ॥ व्याकुलविलपतराजगृ
 ह ॥ मानहुशोकनिवास ॥ १७० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विल
 पहिंबिकलभरतहौभाई ॥ कौशल्यालिएहृदयलगाई
 ॥ भांतिअनेकभरतसमुजाए ॥ कहिविवेकपरबचन
 सुनाए ॥ भरतहुमातुसकलसमुजाई ॥ कहिपुराणशु
 तिकथासुहाई ॥ छलविहीनशुनिसरलसुवाणी ॥ बो
 लेभरतजोरियुगपाणी ॥ जेअघमातुपितासक्तमारे ॥
 गाईगोरमहिसुरपुरजारे ॥ जेअघतियबालकबधकी
 न्हे ॥ मीतमहीपहिमाहुरदीन्हे ॥ जेपातकउपपातकअह
 हीं ॥ कर्मबचनमनभवकविकहहीं ॥ तेपातकमोहिहोउ
 विधाता ॥ जौंयहहोइमोरमतिमाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जे
 परिहरिहरिचरणरति ॥ भजहिंभूतगणघोर ॥ तिनकी

गतिमोहिदेउविधि॥जोजननीमतमोर॥१७१॥ ॥चौपा
ई॥ ॥वेचहिबेदधर्महुहिलेहीं॥पिशुनप्रायपापकहि
देहीं॥कपटीकुटिलकलहप्रियक्रोधी॥बेदबिदूषकवि
श्वबिरोधी॥लोभीलंपटलोललवारा॥जेताकहिपरध
नपरदारा॥पावउंमैतिन्हकीगतिधारा॥जोजननीइह-
संमतमोरा॥जोनहिसाधुसंगअनुरागे॥परमारथप
थबिसुखअभागे॥जेनभजहिंहरिनरतनुपाई॥जिन्ह
हिनहरिहरसुखशसुहाई॥तजिअतिपंथवाममगुच
लहीं॥वचकबिरचिवेषजगछलहीं॥तिन्हकीगतिमो
हिशंकरदेऊ॥जननीयोयहजानौभेऊ॥ ॥दोहा॥
मातुभरतकेबचनसुनि॥मांचेसरलसुभाय॥कहति
रामप्रियताततुम॥सदाबचनमनकाय॥१७२॥ ॥चौपा
ई॥ ॥रामप्राणतैप्राणतुह्मारे॥तुमरघुपतिहिंप्राण
तैप्यारे॥विधुविषचुबैसुखैहिमआगी॥होइवारिचर
वारिविगारी॥भएज्ञानबरुमिटैनमोहू॥मततुह्मारइ
हजोजगकहहीं॥सोसपनेहुंसुखसुगतिनलहहीं॥
असकहिमातुभरतहियलाए॥थनपयसुखहिंनयन
जलछाए॥करतबिलापतिपुलइहमांती॥बैठहिंबीति
गईसबराती॥वामदेववसिष्ठतबआए॥सचिवमहा
जनसकलबुलाए॥मुनिबहुभांतिभरतउपदेशे॥कहि
॥ ॥दोहा॥ ॥तातहृदयधीर

करहुजोअवसरआजु॥उठेभरतगुरुबचन

॥करणकहेसबकाजु॥१७३॥ ॥चौपाई॥ ॥नृ

पतनुबेदबिहितअन्हवावा॥परमबिचित्रविमानबना
वा॥गहिपदभरतमातुसबराषी॥रहीरामदरशनअ-

भिलाषी ॥ चंदन अगर भार बहु आए ॥ अमित अनेक
 सुमंध सु आए ॥ सरजु तीर रचि चिता बनाई ॥
 पुर सो पान सुहाई ॥ इहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्हा ॥
 विधि वतन्हा इति लांजलि दीन्हा ॥

पुराणा ॥ कीन भरत दशगात्र विधाना ॥ जहंजस मुनि
 आय सु दीन्हा ॥ तहं सत सहस भांति सब कीन्हा ॥ भए
 विश्वरूप दिए सब दाना ॥ धेनु बाजि गज बाहन नाना ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ सिंहासन भूषण बसन ॥ अन्न धरणि धन
 धाम ॥ दिए भरत लहि भूमि सुर ॥ भे परि पूरण काम ॥ १७४
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पितु हित भरत कीन्ह जश करणी ॥ सो
 सुख लारख जाइ नहि वरणी ॥ सुदिन शोधि मुनि वरत ब
 आए ॥ सकल महाजन सचित वबुलाए ॥ बैठे राज सभा
 सब जाई ॥ पठए बोलि भरत दोउ भाई ॥ भरत बशिष्ठ नि
 कट बैठारे ॥ नीति धर्म मय बचन उचारे ॥ प्रथम कथा स
 व मुनि वर बरणी ॥ कैकेयि कुटिल कीन्ह जश करणी ॥
 भूष धर्म व्रत सत्य सराहा ॥ जेहिं तनु परि हरि प्रेम निवाहा
 ॥ कहत राम गुण शील सुभाऊ ॥ सजल नयन पुलक सु-
 निराऊ ॥ बहुरि लषण सिय प्रीति बखानी ॥ शोक सनेह
 मगन मुनि जानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनहु भरत भावी प्रब
 ल ॥ बिलखि कहै उ मुनि नाथ ॥ हानि लाभ जीवन मरण
 ॥ यश अपयश बिधि हाथ ॥ १७५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अ
 स विचारि कैहि दीजिय दोष ॥ न्यर्ये काहि परकीजिय रो
 पु ॥ तात विचार करहु मन माहीं ॥ शोच योग दशरथ नृ
 पनाहीं ॥ शोचिय विप्र जो वेद बिहीना ॥ तजि निज धर्म
 विषय लमलीना ॥ शोचिय नृपति जो नीति न जाना ॥ जे

हिनप्रजाप्रियप्राणसमाना ॥ शोचियवैश्यकृपणधनबा
 नू ॥ जोनअतिथिशिवभक्तिसुजानू ॥ शोचियभूद्रविप्र
 अपमानी ॥ सुखरमानप्रियज्ञानगुमानी ॥ शोचियपुनि
 पतिबंचिनिनारी ॥ कुटिलकलहप्रियाइच्छाचारी ॥ शो
 चियबहुनिजव्रतपरिहरई ॥ जोनहिगुरुआयसुअनु
 सरई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शोचियगृहीजोमोहबश ॥ करैक
 र्मपथत्याग ॥ शोचिययतीप्रपंचरत ॥ बिगतविवेकवि
 राग ॥ १७६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वैखानससोइशोचनयो
 गू ॥ तपविहायजैहिभावैभागू ॥ शोचियपिशुनअकार
 एक्रोधी ॥ जननिजनकगुरुबंधुविरोधी ॥ सबबिधि-
 शोचियपरअपकारी ॥ निजतनुषोषकनिर्दयभारी ॥
 शोचनीयसबहीबिधिसोई ॥ जोनछाडिछलहरिजन
 होई ॥ शोचनीयनहिकोशलरऊ ॥ भुवनचारिदशप्रग
 टप्रभाऊ ॥ भएउनअहईनहीनिहुंहास ॥ भूपभरतजश
 पितातुह्मारा ॥ विधिहरिहरकरपतिदिशनाथा ॥ बर
 एहिसबदशरथगुणगाथा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहहुतात
 केहिभांति कोऊ ॥ करिहिंबडाईतासु ॥ रामलषणेतुम
 शत्रुहन ॥ सरिससुअनशुचिजासु ॥ १७७ ॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ सबप्रकारभूपतिबडभागी ॥ बादिबिगारिकरि
 यतेंहिंलागी ॥ इहसुनिससुफिशोचपरिहरहू ॥ शिरध
 रिराजरजायसुकरहू ॥ रामराजपदतुमकहंदीन्हा ॥ पि
 ताबचनपुरचाहियकीन्हा ॥ तजेरामजैहिबचनहिंला
 गी ॥ तनपरिहरेउरामबिरहागी ॥ नृपहिंबचनप्रियन-
 ॥ करहुतातपितुबचनप्रणामा ॥ करहुशी
 रभूपरजाई ॥ हेतुमकहंसबभांतिभलाई ॥ परशु-

रामपितु आज्ञारारवी ॥ मारी मातु लोक सब सारवी ॥ त
 नययजा तिहिं यौवनदएऊ ॥ पितु आज्ञा अघ अघशन
 भएऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अनुचित अचित बिचार तजि
 ॥ जेपालहिं पितु वनय ॥ ते भाजन करव सकय शके ॥ ब
 सहिं अमरपति अयन ॥ १७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अव
 शिन रेश बचन फुर करहू ॥ पालहु प्रजा शोक परिहरहू
 ॥ कर पुर नृप पाइहिं परितोषु ॥ तम कहं सु कृत सकय श
 नहि दोषु ॥ बेद विहित संमत सब हीका ॥ जेहिं पितु देहिं
 सोपा बैठीका ॥ करहु राज परिहरहु गलानी ॥ मारहु मो
 र बचन हितजानी ॥ सुनि करवल हब राम बैदेही ॥ अ
 नुचित कहहिं न पंडित केही ॥ कौशल्यादिस कल मह
 तारी ॥ तेउ प्रजा करव होहिं करवारी ॥ मरमतु हमार राम
 सब जानहिं ॥ सो सब विधितु मसन भल मानहिं ॥ सौं पै
 दुराजराम के आए ॥ सेवा करेहुं सनेह सह आए ॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ कीजिय गुरु आयसु अवशि ॥ कहहिं सचिव कर
 जोरि ॥ रघुपति आए उचित जश ॥ तब तस करव बहो
 रि ॥ १७९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कौशल्या धरि धीरज कह
 ई ॥ पुत्र पथ्य गुरु आयसु अहई ॥ सो आदरीय कहि
 यहित मानी ॥ तजिय विषाद काल गतिजानी ॥ वनरघु
 पति कर पुर नर नाहु ॥ तुम इह भांति तात कदराहु ॥ परि
 जन प्रजा सचिव कह अवा ॥ तुमहिं सुत सन कहं अव
 लंवा ॥ लखि विधि वाम काल कठिनाई ॥ धीरज धरहु मा
 तु बलि जाई ॥ शिर धरि गुरु आयसु अनुसरहु ॥ प्रजा पा
 ठि परिजन दुरवहरहु ॥ गुरु के बचन सचिव अभिनंदन ॥
 सुनत भरत हिया हित जनु चंदन ॥ सुनि बहोरि मानु मृदु

बाणी ॥ शीलसनेहसरलरससानी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सा
नीसरलरसमातुबाणीसुनिभरतव्याकुलभए ॥ लो
चनसरोरुहस्त्रवतसींचितबिरहउरअकुरनए ॥ १३
सोदशादेखतसमयतेहिंबिसरीसबहिंशुधिदेहकी
॥ तुलसीसराहतसकलसादरसीमसहजसनेहकी ॥
१४ ॥ ॥ सौरठा ॥ ॥ भरतकमलकरजोरि ॥ धर्मधुरं
धरधीरधरि ॥ बचनअमियजनुवोरि ॥ देतउचितउ
त्तरसबहिं ॥ १८० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मोहिउपदेशदीन्ह
गुरुनीका ॥ प्रजासचिवसंमतसबहीका ॥ मातुउचि
तपुनिआयसुदीन्हा ॥ अवशिशीसधरिचायिकी
न्हा ॥ गुरुपितुमातुस्वामिहितबाणी ॥ सुनिमनमुदित
करियभलजानी ॥ उचितकिअनुचितकिएबिचारू ॥
धर्मजाइशिरपातकभारू ॥ तुमतीदेहुसरलशिरवसो
ई ॥ जौआचरतमोरहितहोई ॥ यद्यपियहसमुजतहों
नीके ॥ तदपिहोतपरितोषनजीके ॥ अवतुमबिनयमो
सुनिलेहू ॥ मोहिअनुहरतशिरवावनदेहू ॥ उत्तर
देऊक्षमवअपराधु ॥ दुरिवतदोषगुणगणहिंनसा
धू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पितुसरपुरसियरामबन ॥ करण
कहहुमोहिराज ॥ इहितेंजानहुसोरहित ॥ कैआपनब
डकाज ॥ १८१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हितहमारसियपति
सेवकाई ॥ सोहरिलीन्हमातुकुटिलाई ॥ मैअनुमा
॥ आनउपायमोरहितनाही ॥ शो
कसमाजराजकेहिलेखे ॥ लषणरामसियपदबिनुदे
॥ वादिबसनबिनुभूषणभारू ॥ वादिविरतिबिनुब्र
ह्मबिचारू ॥ सरुजशरीरवादिबहुभोगा ॥ बिनुहरिभक्ति

जायजपयोगा॥ जायजीवबिनुदेहसुहाई॥ वादिमोर
 सबबिनुरघुराई॥ जाउंरामपहंआयसुदेहु॥ एकहिं-
 अंकमोरहितएहु॥ मोहिनृपकरिआपनभलचहहु
 ॥ सोसनेहजडताबशकहहु॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कैंकेयीसु
 तकुटिलमति॥ रामबिसुखगतलाज॥ तुम
 मोहबश॥ मोहिअधमकैराज॥ १८२॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 कहोंसाचसबसुनिपतिआहु॥ चाहियधर्मशीलनर
 नाहु॥ मोहिराजहठिदैहहूजबहीं॥ रसारसातल
 इहितबहीं॥ मोहिसमानकोपापनिवासी॥ जेहिं
 सीयरामबनबासी॥ राउरामकहंकाननदीना॥ बिलु
 रतगमनअमरपुरकीना॥ मैशठसबअनरथकरहे
 नू॥ बैठबातसबसुनहुसचेतू॥ बिनुरघुबीरबिलो-
 किअवास्त॥ रहेप्राणसोइजगउपहास्त॥ रामपुनीत
 विषयरसरूषे॥ लोलुपभूपभोगकेभूषे॥ कहंलगिक
 हंउत्तदयकठिनाई॥ निदरि कुलिशजेहिंलईबडाई
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कारणतेंकारजकठिन॥ होइदोषनहि
 मोर॥ कुलिशअस्थितेउपलते॥ लोहकरालकठोर॥
 ॥ १८३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ कैंकेयीभवतनुअनुरागे॥ ।
 मरप्राणअघाइअभागे॥ जौप्रियविरहप्राणलिय
 लागे॥ देरववसुनवचहुतअवआगे॥ लषणारामसि
 यकहंवनदीना॥ पठएअमरपुरपतिहितकीना॥ ल
 नूविधचपनअपयशआपू॥ दीन्हैउप्रजहिंशोकसं
 तापू॥ मोहिदीनकरवसुयशसुराजु॥ कीनकैंकेयीस
 वकरकाजु॥ इहितैमोरकाहअवनीका॥ तेहिंपरदेन
 कहहुतुमटाका॥ कैंकेयीजठरजनिजगमाहीं॥ यह

मोकहंकछुअनुचितनाहीं॥ मोरबातसबविधिहिंब
 नाई॥ प्रजापंचकतकरहुसराई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ग्रहगृही
 तपुनिबातबश॥ तेहिपुनिबीछीमार॥ ताहिपिआइ
 यबारुणी॥ कहहुकवनउपचार॥ १८४॥ ॥ चौपाई॥
 कैकेयीसुअनयोगजगजोई॥ चतुरबिरंचिरचेउमो
 हिसोई॥ दशरथतनयरामलघुभाई॥ दीनमोहिबिधि
 वादिबडाई॥ तुमकहसबहुकादावनटीका॥ रायरान
 जसबहीकहंनीका॥ उत्तरदेउंकेहिंबिधिकेहिकेही॥
 कहहुसरखेनयथारुचिजेही॥ मोहिकुमातुसमेत
 बिहाई॥ कहहुकहहिंकोकीनभलाई॥ मोहिविनु
 कोसंचराचरमाहीं॥ जेहिंसियरामप्राणप्रियनाहीं
 ॥ परमहानिसबकहंबडलाहू॥ अदिनमोरनहिदू
 षणकाहू॥ संशयशीलप्रेमवशाअहहू॥ सबउचित
 सबजोकछुकहहू॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राममातुसठिस
 रलचित॥ मोपरप्रेमविशेषी॥
 वश॥ मोरिदीनतादेषि॥ १८५॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 बेकसागरजगजाना॥ जिनहिंबिष्वकरबदरसमाना॥
 मोकहंतिलकसाजसजिसोई॥ भाविधिबिसुरवबि
 सुरवसबकोई॥ परिहरिरामसियजगमाही॥ कोइनक
 हहिंमोरमतनाहीं॥ सोमैसनवसहवसरवमानी॥
 तहुंकीचतहांजहंपानी॥ डरनमोहिजगकहहिं
 ॥ परलोकहुकरमोहिनशोचु॥ एकैवडउरदुसहदवारी
 ॥ मोहिलगिभेसियरामदुरवारी॥
 लपावा॥ सबतजिरामचरणमनलावा॥ मोरजन्म
 घुवरबनलागी॥ जूठकहौंप्रछिताऊंअभागी॥ ॥

आपनिदारुणदीनता॥ सबहिं कहें ससुजाय॥ देखि
बिनुरघुवीरपद॥ जियकीजरनिनजाय॥ १८६॥ ॥

चौपाई॥ ॥ आनउपायमोहिनहिसूजा॥ ।

रघुवरबिनूबूजा॥ एकहिं आकइहैमनमाही॥

लचलिहौं प्रभुपाहीं॥ यद्यपिमैं अनभलअपराधी॥

इमोहिं कारणसकलउपाधी॥ तदपिशरणसनमुख
मोहिदेवी॥ क्षमिसबकरिहहिं कृपाविशेयी॥ शील

सकुचसुठिसरलसुभाऊ॥ कृपासनेहसदनरघुराऊ॥

॥ अरिहुअनभलकीन्हनरामा॥ मैशिशुसेवकयद्य

पिवामा॥ तुमसबपांचमोरभलमानी॥ आयसुआ

शिषदेहुसुवाणी॥ जेहिंसुनिबिनयमोहिजनजानी॥

॥ आवाहिंचहुरिरामरजधानी॥ ॥ दोहा॥ ॥ यद्यपि

जन्मकुमातुते॥ मैशठसदासदोष॥ आपनजानिनत्या

गिहैं॥ मोहिरघुवीरभरोष॥ १८७॥ ॥ चौपाई॥ ॥

भरतबचनसबकहंप्रियलागे॥ रामसनेहसुधाजनु

पागे॥ लोगवियोगविषमदुरवदागे॥ मंत्रसबीजसुन

तजनुजागे॥ मातुसचिवगुरुपुरनरनारी॥ सकलस

नेहविकलभेभारी॥ भरतहिं कहहिंसराहिसराही॥

रामप्रेममूरतिजनुआही॥ तातभरतअसकाहिनक

हहू॥ आणसमानरामप्रियअहहू॥ जोपामरआपनि

जडेताई॥ तुमहिंसुगाईमातुकुटिलाई॥ सोशठको-

टिकपुरुषसमेंता॥ वसहिंकल्यशतनरकनिकेता॥

अहिअघअवशुणसणिनहिगहई॥ हरेगरलदुख

दरिददहई॥ ॥ दोहा॥ ॥ अवशचलियवनरामज

हैं॥ भरतमंत्रभलकीन्ह॥ शोकसिंधुबूझतसबहिं॥ तु

मअबलबनदीन्ह॥१८८॥ ॥चौपाई॥ ॥
मनमोदनथोरा॥जनुघनधुनिसुनिचातकमोरा॥
वप्रातलरिवनिर्णयनीके॥घरघरचलेमिटेदुरवजीके
॥धन्यभरतजीवनजगमाहीं॥शीलसनेहसराहतजा
ही॥कहहिंपरस्परभावडकाजु॥सकलकरहिंचलहिं
करसाजु॥जेहिंराखहिंघररउरखवारी॥सोजानैज
नुगरदनिमारी॥कोउकहंरहनकहीयनहिकाहू॥को
नचहैजगजीवनलाहू॥॥दोहा॥ ॥जरौससंपति-
सदनसरख॥सुहृदमातुपितुभाइ॥सन्मुखहोतजो
रामपद॥करैनसहजसहाइ॥१८९॥ ॥चौपाई॥ ॥
घरघरबाहनसाजहिंनाना॥हर्षहृदयपरभातपया-
ना॥भरतजाइघरकीन्हबिचारू॥नगरबाजिगजभव
नभंडारू॥संपतिसबरघुपतिकीआही॥जोबिनुय
तनचलोंतजिताही॥तौपरिणामनमोरभलाई॥पा
पिशिरोमणिसांईद्रोहोई॥करिंहिस्वामिहितसेवक
सोई॥दूषणकोटिदेइकिनकोई॥असबिचारिशुचिसे
वकबोले॥जेसपनेहुंनिजधर्मनडोले॥कहिसबमर्म
धर्मसबभाषा॥जोजेहिंलाइकसोतहंराषा॥करिसव
यतनरारिवरखवारे॥राममातुपहिंभरतसिधारे॥
॥दोहा॥ ॥आरतजननीजानिसब॥भरतसनेहस
जान॥कहेउसजावनपालकी॥सजनसरवासनजा
न॥१९०॥ ॥चौपाई॥ ॥चकचकईइवपुरनरना
री॥चलप्रातउरआरतभारी॥जागतसबनिशिभए
उबिहाना॥भरतबुलाइसजीवसुजाना॥कहेउलेहु
सवतिलकसमाजु॥वनहिंदेवसुनिरामहिंराजु॥बै-

गचलहुमुनिसचिवजोहारे॥७॥
 रे॥ अरुंधतीअरुअग्निसमाजु॥ रथचटिचदेप्रथम
 मुनिराजु॥ विप्रवृंदचटिवाहननाना॥ चलेसकलतप
 तेजनिधाना॥ नगरलोगसंबसजिसजियाना॥ चित्र
 कूटकहंकीन्हपयाना॥ शिबिकासुभगनजाइबरवा
 नी॥ चटिचटिचलतभइसबरानी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सौं
 पिनगरशक्तिसेवकन्हि॥ सादरसबहिंबुलाइ॥ सुमि
 रिरामसियचरणसव॥ चलेभरतदोउभाइ॥ १९१॥
 ॥ चौपाई ॥ रामदरशहितसबनरनारी॥ जनुकरिक
 रिनिचलैतकिवारी॥ बनसियरामसमुझिमनमाहीं
 ॥ सानुजभरतपयादेजाहीं॥ देखिसनेहलोगअनुग
 गे॥ उतरिचलेरथगजहयत्यागे॥ जाइसमीपराखि-
 निजडोली॥ राममातुमृदुबाणीबोली॥ तातचढहुर
 थबलिमहतारी॥ होइहिंप्रियपरिवारदुखारी॥ तुह
 रेचलतचलहिंसबलोगु॥ सकललोककृशनहिम
 गयोगु॥ शिरधरिबचनचरणशिरनाई॥ रथचटि
 चलतभलेदोउभाई॥ तमसाप्रथमदिवसकरिवास्त
 ॥ दुसरेगोमतितीरनिवास्त॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पयअहा
 रफलअशनएक॥ निशिभोजनएकलोग॥ करतराम
 हितनेमव्रत॥ परिहरिभूषणभोग॥ १९२॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ सईतीरवसिचलेविहाने॥ शृंगवेरपुरसवनिय
 राने॥ समाचारसवसुनेनिषादा॥ हृदयविचारकरैस
 विषादा॥ कारणकवनभरतवनजाहीं॥ हैकछुकपट
 भावमनमाहीं॥ जौपैजियनहोतुकुटिलाई॥ तौकत
 लीन्दि संगकटकाई॥ जानहिंसानुजरामहिंमारी॥ क

रौं अकंठकराजसरवारी॥

॥ तब कलंक अवजीवनहानी॥ सकल सुरासर सुरहिं
जुझारा॥ रामहिं समरकोजी तनहारा॥ का आश्चर्य भ
रत असंकरहीं॥ नहिविषवेलि अभिय फल फलही॥
॥ दोहा ॥ ॥ असबिचारि गुहजाति सन॥ कहेउस जग
सब होहु॥ निज हाथनि बोरहु तरणि॥ कीजिय घाटा
रोहु॥ १६३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ होहु सजोइ लरो कहूं घा
टा॥ ठाढेउ सकल मरण कै ठाटा॥ संमुख लोह भरत स
न लेहु॥ जियतन सर सरि उतरण देहु॥ समरण रण
पुनि सर सरि तीरा॥ राम काज क्षण भंगु शरीरा॥ भर
त भाइ नृप मजन नीचु॥ बडे भाग असि पाइ यमीचु॥
स्वामि काज करि हों रणरारी॥ यश धरिल हउं भुवन द
शचारी॥ तजों अणारघुनाथनि होरे॥ दुहु हाथ सुद-
मोदक मोरे॥ साधु समाज न जाकर लेखा॥ राम भक्त म
हं जा सुन रेखा॥ जाय जियत जग मोमहि भारू॥ जन
नी यौवन बिटप कुठारू॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बिगत बिषा
द निषाद पति॥ सबहिं बढाय उछाह॥ सुमिरि राम मा
गेउ तुरत॥ तरकस धनुष सनाह॥ १६४॥ ॥ चौपाई॥
॥ बेगहिं भाइ सजहु संजोऊ॥ सुनिर जाय कद रायन
कोऊ॥ भलेहिं नाथ सब सहहिं सहषी॥ एकहिं एक ब
ढावहिं कषी॥ चले निषाद जुहारि जुहारी॥ भूल सकल
रण रुचै खरारी॥ सुमिरि राम पद पकज पनही॥ भा
था बांधि चढावहिं धनुही॥ अगिरी पहिरि कुंडिशिर
धरही॥ फरसावांस सेल समकरहीं॥ एक कुशल अ-
ति ओडन खाडे॥ कुदहिं गगण मनहुं क्षिति छाडे॥ निज

निजसाजसमाजबनाई ॥ गुहरांवतहिं जुहारहिजाई ॥ दे
 रिवसुभटसबलायकजाने ॥ लैलैनामसकलसनमाने
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भाइहुलावहुधोरवजनि ॥ आजु
 डमोहु ॥ सुनिसरोषबोलेसुभट ॥ वीरअधीरनहोहु ॥
 ॥ १६५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामप्रतापनाथबलतोरै ॥ क
 रहिंकटकबिनुभटबिनुघोरे ॥ जीवतयांवनपाछेधर
 हीं ॥ रुंडसुंडमयमेदिनिकरहीं ॥ दीरवनिषादनाथभ
 लदोलु ॥ कहउवजाउंजुझारुदोलु ॥ इतनाकहतछीक
 भईवाऐं ॥ कहेईशगुनिअन्हखेतसुहाऐं ॥ बूढएकक
 हसगुणविचारी ॥ भरतहिमिलियनहोइहिरारी ॥ रा
 महिंभरतमनावनजाहीं ॥ शगुणकहेअसविग्रहनार्ह
 ॥ सुनिगुहकहैनीककहबूढा ॥ सहसाकारिपछिताहिं
 विमूढा ॥ भरतसुभावशीलबिनुबूजे ॥ वडिहितहानि
 जानिबिनुजूजे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गहहुघाटभटसिमिटि
 सब ॥ लोउमर्ममिलिजाइ ॥ बूझिमित्रअरिमध्यगति
 ॥ तबतसकरबउपाई ॥ १६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लखब
 सनेहसुभावसुहाए ॥ वैरप्रीतिनहिदुरतदुराए ॥ अ
 सकहिभटसजोवनलागे ॥ कंदमूलफलखगमृगमां
 गो ॥ मीनपीनपाटीनपुराने ॥ भरिभरिभारकहारन्हअ
 ने ॥ सकलसाजसजिमिलनसिधाए ॥ मंगलमूलशगु
 णशुभपाए ॥ देरिवदूरितककहिनिजनासु ॥ कीनसुनी
 शहिंदंडमणासु ॥ जानिरामप्रियदीनअशीया ॥ भरत
 हिंकहेउंबुजायसुनीशा ॥ रामसखासुनिस्यंदनत्यागा
 ॥ चलेउतुरितउमगतअनुगगा ॥ गावजातिगुहनामसु
 नाई ॥ कीनजुहारिमाथमहिलाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर

तदंडवतदेरिवतेहिं ॥ भरतलीन्हउरलाइ ॥ मनहुलषण
सनभटभई ॥ प्रेमनहृदयसमाइ ॥ १२७ ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ भटेउभरतताहिअतिप्रीती ॥ लोगसिहाहिंप्रेम-
किरीती ॥ धन्यधन्यध्वनिमंगलमूला ॥ सरसराहते
हिंवरषहिंफूला ॥ लोकषेदसबभांतिहिंनीच ॥ जासु
आंहुलुइलेइयसींचा ॥ तैहिंभरिअंकरामलघुभाता ॥
मिलतपुलकपरिपूरितगाता ॥ रामरामकहिंजैजंभु-
हाहीं ॥ तिनहिनपापपुंजसमूहाहीं ॥ यहतीरामलाय
उरलीन्हा ॥ कुलसमेतजगपावनकीन्हा ॥ कर्मनाशज
लसरसरिपरई ॥ तेहिकोकहहुशीसनहिधरई ॥ उ-
लदानामजपतजगजाना ॥ बालमीकभइबह्नसमाना
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वपचशवरखसजनमजड ॥ याम-
रकोलकिरात ॥ रामकहतपावनपरम ॥ होतभुवनवि-
ख्यात ॥ १२८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नहिअचरजयुगयु-
गचलिआई ॥ केहिनदीन्हरखुवीरबडाई ॥ रामनाम
महिमासरकहहीं ॥ सनिसनिअवधलोगसरवल
हहीं ॥ रामसरवहिंमिलिभरतसप्रेमा ॥ पूछहिंकुशल
समंगलक्षेमा ॥ देरिवभरतकरशीलसनेहु ॥ भानिपा-
दतेहिसमयविदेहु ॥ सकुचसनेहमोदमनबादा ॥ भ-
रतहिंचितवतएकठकठाटा ॥ धरिधीरजपदबंदिव
होरी ॥ बिनयसप्रेमकरतकरजोरी ॥ कुशलसूलपद
पंकजपेरवी ॥ मैतिहुकालकुशलनिजलेखी ॥ अव-
प्रभुपरमअनुग्रहतोरे ॥ सहितकोटिकुलमंगलमो-
रे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ समुजिमोरिकरतूतिकुल ॥ प्रभु-
माहिमाजियजाई ॥ जोनभरैरखुवीरपद ॥ जगविधि

वैचित्तसोइ ॥१६६॥ ॥चौपाई॥ ॥कपटीकायरकु



मतिकुजाती ॥ लोक्कवदबाहिरसंवभांती ॥ रामकीन्ह-
 आपनजवहीतें ॥ भएउं भुवनभूषणतवहीतें ॥ देखिप्री-
 तिसुनिविनयसुहाई ॥ मिलवहोरिलषणलघुभाई ॥
 कहिनिषादनिजनामसुवाणी ॥ सादरसकलजुहारी
 राणी ॥ जानिलषणसमदेहिं अशीषा ॥ जियहुकरवी
 शतलारववरीषा ॥ निरखिनिषादनगरनरनारी ॥ भए
 करवीजजुलषणनिहारी ॥ कहहिंलहेउयहजीवनलाहु
 ॥ भेटेउरामभाइ भविवाहु ॥ सुनिषादनिजभाग्यवडा
 ई ॥ प्रसुदितमनमहंचलेउलिवाई ॥ ॥दोहा॥ ॥सत
 कारेसेवकसकल ॥ चलेस्वामिरूपपाई ॥ घरतरुतर
 सरवागमन ॥ वासवनाएन्हिजाइ ॥ २०॥ ॥चौपाई
 ॥ ॥शृंगवेरपुरभरतदीखजव ॥ भएसनेहवशअंग
 शिथिलतव ॥ सांहतदिएनियादहिंलागु ॥ जनुतनुध
 रेविनयअनुरागु ॥ इहिनिधिभरतसेनसवसंगा ॥ दी
 खजाइजगयाचनिगंगा ॥ रामग्राटकहंकीन्हप्राणामा ॥
 भामनमगलामिलेजनुरामा ॥ करहिंप्रणामनगरनर-
 नारी ॥ मुदितअत्ममयवारिनिहारी ॥ करिमज्जनमां

गहिकरजोरी ॥ रामचंद्रपदप्रीतिनथोरी ॥ भरत कहउ
 स्फुरसरितवरण ॥ संकलस्फुरवदसेवकस्फुरधेनू ॥ जी
 रिपाणिवरमांगोएहू ॥ सीयरामपदसहजसनेहू ॥ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ इहिविधिमज्जनभरतकरि ॥ गुरुअनुशा
 सनपाइ ॥ मातुनहानीजानिसब ॥ डैरचलेलवाइ ॥ २०
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जहंतहंलोगन्हडेराकीन्हां ॥ भरत-
 शोधसबहीकहंलीन्हां ॥ गुरुसेवाकरिआयसपाई ॥
 राममातुपहिंगेदोउभाई ॥ चरणचांपिकहिकहिसृदुबा
 ॥ जननीसकलभरतसनमानी ॥ भाइहिंसोंपिमा
 तुसेवकाई ॥ आपुनिषादहिंलीन्हबुलाई ॥ चलेसरवा
 करसोंकरजोरे ॥ शिथिलशरीरसनेहनथोरे ॥ पूछत
 सरवहिंसोठांवदेरवाऊ ॥ रेकुनयनमंनजरनिजुडाऊ ॥
 जहंसियरामलषणनिशिसोए ॥ कहतभरेजललोच
 नकाए ॥ भरतबचनसुनिभरउविषादू ॥ तुरतजहांले
 गएउनिषादू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जहंसिंशपापुनीततरु ॥ र
 चरकियबिश्वास ॥ अतिसनेहसादरभरत ॥ कीन्हैउ
 दंडप्रणाम ॥ २०२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कुशसाथरीनिहा
 रिसुहाई ॥ कीन्हप्रणामप्रदक्षिणजाई ॥ चरणरेखर
 जआंखिन्हलाई ॥ बर्ननकहतप्रीतिअधिकाई ॥ क
 नंकबिंदुदुइवारिकदेखे ॥ राखेशीससीयसमलेखे ॥
 सजलबिलोचनहृदयगलानी ॥ कहतसरवासनबच-
 नसुवाणी ॥ श्रीहतसीयविरहदुतिहीना ॥ यथाअव
 धनरनारिमलीना ॥ पिताजनकदेउंपटतरकेही ॥ क
 रतलभोगयोगजगजेही ॥ ससरमातुकुलभातुभुआ
 ल ॥ जेहिसिहातअमरावतिपाल ॥ प्राणनाथरघुना

थगोसाई॥ जोबडहोतसोरामबडाई॥ ॥ दोहा ॥
 पतिदेवतासुतीयमणि॥ सीयसाथरीदेरिब॥ विरहन
 हृदयउनहहरिकरि॥ पवितैंकठिनविशेषि॥ २०३॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ लालनयोगलक्षणलघुलोणे॥ भेनभाइ
 असअहहिंनहोने॥ पुरजनप्रियपितुमातुदुलारे॥ सि
 यरघुवीरहिंप्राणपियारे॥ मृदुमूरतिसुकुमारसभा
 ऊ॥ तातीवातनलागीनकाऊ॥ तेवनसहहिंबिपतिस
 बभाती॥ निदरेकोटिकुलिशयहछाती॥ रामजनम
 जगकीन्हउजागर॥ रूपशीलसरवमागुणसागर॥ पु
 रजनपरिजनगुरुपितुमाता॥ रामसभावसबहिंसुरव
 दाता॥ वैरिउरामबडाईकरहीं॥ बोलनिमिलनिविनया
 मनहरहीं॥ शारङ्गकोटिकोटिशतवेषा॥ कस्नशकहिं
 प्रभुगुणलेखा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरवस्वरूपरघुवंश
 मणि॥ मंगलमोदनिधान॥ तेसोवतकुशडासिमहि॥
 विधिगतिअतिवलवान॥ २०४॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राम
 कनादुरवकाननकाऊ॥ जीवनतरुजिमिजुगवतराऊ
 ॥ पलकनयनफणिमणिजेहिंभांती॥ जुगबहिंजननि
 शकलदिनरार्ती॥ तेअवफिरतविपिनपदचारी॥ कंद
 मूलफलफूलआहारी॥ धिककैकैयिअमंगलमूला॥
 भईसिप्राणप्रियतमप्रतिकूला॥ मैधिकधिकअघउ
 दधिअभागी॥ सबउत्पानभएउजेहिंलागी॥ कुलक
 नंदकरिसृजेउविधाता॥ सोइद्रोहीमोहिकीन्हकुमा
 ला॥ कृनिस्त्रमेससमुजावनिपाद॥ नाचकरियकतवा
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामतुमहिप्रियरामहिं॥ यहिनिरदोपदोष
 विणिजमहीं॥ ॥ छंद ॥ ॥ विधिनामकीकरणीकटि

नजेइ मातु कीन्ही बावरी॥

भुसादर सराहन रावरी॥ १५॥ तुलसीन तुमसों राम प्रि
यतम कहत हों सो हैं किए॥ परिणाम मंगल जानि अप
ने अनिए धीरज हिए॥ १६॥ ॥ सौरभ ॥ ॥ अंतरजा
मीराम॥ सकुच समेम रूपायतन॥ चलि य करिय बिआ
॥ यहि बिचार हृद अनिमन॥ २०५॥ ॥ चौपाई॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा॥ वास चले सुमिरत र
वीरा॥ यह सुधि पाइ नगर नर नारि॥ चले बिलोकन
आरती भारी॥ प्रदक्षिण हिं करि करहिं प्रणामा॥ देहिं
कै के थिहिं रवोरि निकामा॥ भरि भरि बारि बिलोचन ले
हीं॥ वाम विधात हिं दूषण देहीं॥ एक सराह हिं भरत स
नेहू॥ कोउ कह नृपति निवाहे उनेहू॥ निंदहिं आपु सराहिं निषा
दहिं॥ को कहि शकै विमोहि विषादहिं॥ इहि विधिराति लोग स
ब जागे॥ भामिनु सार उतारें लागे॥ गुरुहिं सुनाव चढ़ाव सु
हाई॥ नई नाव सब मातु चढ़ाई॥ दंड चारि महं भेस बपारा॥

भरत तब सबहिं संभारा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रात क्रिया क
मातु पद॥ बंदि गुरुहिं शिर नाइ॥ आगे किए निषाद
॥ दीन्हा कटक चलाई॥ २०६॥ ॥ चौपाई॥ ।

अशु आई॥ मातु पाल की सकल चलाई

॥ विप्रन्न सहित गमन गुरु

कीन्हा॥ आपु सर सरिहिं कीन्ह प्रणामु॥ सुमिर लष-

॥ गवने भरत पिया देहिं पांए॥ कोत

ल संग जाहि डुरि आए॥ कहहिं सु सेवक बारहिं बारा

॥ होइ यनाथ अश्व सवारा॥ राम पया देहि पांच सिधा

॥ हम कहं रथ गज वाजि बनाए॥

असमोरा ॥ सबते सेवक धर्म कठोरा ॥ देखि भरत गति
 सुनि मृदु वाणी ॥ सब सेवक मन गरहिंगलानी ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ भरत तीसरे पहर कहं ॥ कीन्ह प्रवेश प्रयाग ॥ क
 हत राम सिय राम सिय ॥ उमगि उमगि अनुराग ॥ २०७
 ॥ चौपाई ॥ ॥ फल काजल कत पयान्ह कैसे ॥ पंकज को
 ष ओस कए जैसे ॥ भरत पया देहिं आए आजु ॥ भए दु
 रित सुनि सकल समाजु ॥ खबरिलीन्ह सब लोग आ
 न्हाए ॥ कीन्ह प्रणाम त्रिवेणिहिं आए ॥ सबिधिसितासि
 त नीर अन्हाने ॥ दिए दान महि सरसन माने ॥ देखत
 श्याम धवल हिंलोरे ॥ पुलक शरीर भरत करजोरे ॥ सक
 ल काम प्रदतीरथ राऊ ॥ वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
 मांगी भीरव त्यागिनिज धर्मु ॥ आरत काहन करहिं कुक
 र्मु ॥ असजिय जानि सुजानि सुदानी ॥ सफल करहिं
 जग याचक वाणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अर्थेन धर्मेन काम रु
 धि ॥ गति न चहउ निर्वाण ॥ जन्म जन्म रतिराम पद ॥ य
 ह वरदान न आन ॥ २०८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जान हुराम
 कुटिल फरि मोही ॥ लोग कहौ गुरु साहिब द्रोही ॥ सीता
 राम चरण रति मारे ॥ अनुदिन बटौ अनुग्रहतोरे ॥ जल
 द जन्म भरि सरति विसारे ॥ याचत जल पविपाहन डा
 रे ॥ चात कर दनि घटे घटि जाई ॥ बटे प्रेम सब भाति भ
 लाई ॥ कन कहि वानच दै जिमि दाहे ॥ तिमि प्रियतम प
 द प्रेमनि चाहै ॥ भरत वचन सुनि मांजु त्रिवेणी ॥ भई मृदु
 वाणि सुमंगल देनी ॥ तात भरत नुम सब विधिसाधु ॥ रा
 म चरण अनुराग अगाध ॥ नादिगल्यानि करहु मन मा
 री ॥ नुम समाहिं कोउ प्रिय नार्ही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तनु पु

लकेहियहर्षसुनि॥ वैणिबचनअनुकूल॥ भरत
 कहि धन्यकहि॥ नभसरबरषहिं फूल॥ २०६॥ ॥ चौ
 पाई॥ ॥ प्रमुदिततीरथराजनिवासी॥
 दुगृहीउदासी॥ कहहिं परस्परमिलिदशपांचा॥ भर
 तसनेहशीलशुचिसांचा॥ सुनतरामगुणग्रामसुहाए
 ॥ भरद्वाजमुनिवरपहंआए॥ दंडप्रणामकरतमुनिदे
 रवे॥ मूरतिवतभाग्यनिजलेखे॥ धाइउठाइलाइउर
 लीन्हे॥ दीन्हअशीषकृतारथकीन्हे॥ आसनदीन्ह
 इशिरवैठे॥ चहतसकुचगृहजनुभजिपैठे॥ मुनिपूछ
 हिंकछुयहबडशोचु॥ बोलेऋषिलखिशीलसंकोचु॥
 सुनहुंभरतहमसबशुधिपाई॥ विधिकरतवपरकछु
 नब्रसोई॥ ॥ दोहा॥ ॥ तुमगलानिजियजनिकरहु॥
 समुजिमातुकरतूति॥ तातकैकेयिहिदोषनहि॥ गईगि
 रामतिधूति॥ २१०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ यहउकहतभल
 कहहिनकोऊ॥ लोकवेदबुधसंमतदोऊ॥ ताततुह्मार
 विमलयशगाई॥ पाइहिंलोकहुंवेदबडाई॥ लोकवेद
 समतसबकहई॥ जेहिपितुराजदेइसोलहई॥ राउस
 त्यव्रततुमहिंबुलाई॥ देतराजसरवधर्मबडाई॥ रामग
 वनवनअनरथमूला॥ जोसुनिसकलविश्वभइमूला
 ॥ सोभावीबशरानिसयानी॥ करिकुचालिअंतहुयछि
 तानी॥ तहनतुह्मारअल्पअपराधू॥ कहैसोअधम
 अयातअसाधू॥ करतेहुराजतुह्मारनहिदोषु॥ राम
 सुनतसेतोषु॥ ॥ दोहा॥ ॥ अवअतिकीन्है
 हुभरतमल॥ तुमहिउचितमतएहु॥ सकलसुमंगलमू
 लजग॥ रघुवरचरणसनेहु॥ २११॥ ॥ चौपाई॥ ॥

सीतु हमार धनजीवन प्राणा ॥ भूरि भाग्य
 ना ॥ यह तु हमार अचर जनहिताता ॥ दशरथ सुअ
 मप्रिय भाता ॥ सुनहु भरतरघु पति मन माहीं ॥
 अतुम सम कोउ नाहीं ॥ लषण राम सीतहिं अति प्रीती ॥
 तेहिनि शितुमहिं सराहत बीती ॥ जाना मर्म अन्हात प्र
 यागा ॥ मगन होहिं तुं हमरे अनु रागा ॥ तुम पर अस सने
 हर सुवर के ॥ सरव जीवन जगज शज डनर के ॥ यहन
 धिकर सुवीर बडाई ॥ प्रणत कुडुं व पालर सु सई ॥ तुम-
 ती भरत मोर मत एहू ॥ धरे देह जनु राम सने हू ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ तुम कहं भरत कलंक यह ॥ हम सब कह उपदेश ॥
 राम भक्तिरस सिद्धि हित ॥ भायह सिद्धि गणेश ॥ ११२ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ नवविधु विमल तात यश तोरा ॥ रघुवर
 किंकर कुसुद चकोरा ॥ उदित सदा अथ इहिक वहुना ॥
 घटिहिन जगन भदिन दिन दूना ॥ कोक विलोकि प्रीति-
 अतिकर हीं ॥ प्रभु प्रतापर विछविहिन हर हीं ॥ निशि
 दिन सरवद सदा सब काहू ॥ असहिन कै कै थि करत बरा
 हू ॥ पूरण राम सुप्रेम पियूषा ॥ गुरु अपमान दोष नहि दू
 षा ॥ राम भक्तिरस अमिय अघाहूं ॥ कीन्हें उकल भसु
 धाव सुधाहूं ॥ भूप भगीरथ सर सरि आनी ॥ सुमिर-
 त सकल सुमंगल रवानी ॥ दशरथ गुण गण बरणिन ज
 हीं ॥ अधिक कहा जोहि सम कोउ नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 जासु सने ह सकौ च वश ॥ राम प्रगट भे आइ ॥ जे हरि
 हियन यन न्ह कवह ॥ निरखे नाहि अघाई ॥ २१३ ॥ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कीरति विधु तुम कीन्ह अ नृपा ॥ जहं व-
 सरान प्रेम मृगरूपा ॥ तात गलानि करहु जिय जाए ॥ डा

रहुदरिद्रहिंपारसपाए॥ स्ननुभरतहमजूठनकहहीं
॥ उदासीनतापसवनरहहीं॥ सवसाधनकरसफल
सहावा॥ लषणरामसियदरशनपावा॥ तेहिफलकर
फलदरशतुह्मारा॥ सहितप्रयागसभाग्यहमारा॥ भ
रतधन्यतुमजगयशलएउ॥ कहिअसप्रेममगनमुनि
भएउ॥ स्ननिमुनिबचनसभासदहर्षे॥ साधुसराहि
स्मनसरवर्षे॥ धन्यधन्यध्वनिगगनप्रयागा॥ सुनि
मुनिभरतमगनअनुरागा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुलकगात

॥ सजलसरोरुहनयन॥ करिप्रणाम
मुनिमंडलिहिं॥ बोलेगदगदबयन॥ २१४॥ ॥ चौपा
ई॥ ॥ स्ननिसमाजअरुतीरथराजू॥ सांचेहुशपथ
अघायअकाजू॥ इहिथलजौकछुकहियबनाई॥ स
हिसमनहिकछुअधअधमाई॥ तुमसरबज्ञकहोंस
तेभाऊ॥ उरअंतरजामीरधुराऊ॥ मोहिनमातुकर
तवकरशोचू॥ नहिदुरवजियजनजानहिपोचू॥ नाहि
जडरबिगरहिंपरलोऊ॥ पितहुंमरणकरमोहिनशो
कू॥ सकुतसयशभरिभुवनसहाए॥ लक्ष्मणराम
सरिसकतपाए॥ रामबिरहतजितनक्षणभंगू॥ भूप
शोचकरकवनप्रसंगू॥ रामलषणसियविनुपगपन
हीं॥ करिमुनिवेषफिरहिंबनबनहीं॥ ॥ दोहा ॥

अजिनबसनफलअशनमही॥ शयनडासिकुशपा
वसितरुतरनिसहतहिम॥ आतपवरषावात॥ २१५
॥ ॥ चौपाई॥ ॥ इहदुरवदाहदहैनितछाती॥ भूखन
वासरनींदनराती॥ इहकुरोगकरऔषधनाहीं॥ शो
धेउंसकलविश्वमनमाहीं॥

॥ नेइहमारहितकीन्हवसूला ॥ कलिकुकाठकरिकीन्ह
 कुयंचू ॥ गाडिअवधपठिकठिनकुमंचू ॥ मोहिलगिइ
 हकुठाटतेहिंठाटा ॥ घालिसिसंबजगवारहुवाटा ॥ मि
 टेकुरोगरामफिरिआए ॥ वसैअवधनहिआनउपाए ॥
 ॥ भरतवचनसुनिमुनिसरवपाई ॥ सबहिकीन्हबहुभां
 तिबडाई ॥ तातकरहुजनिशोचविशेषी ॥ सबदुरवमि
 टहिरामपददेषी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिप्रबोधसुनिव
 रकहेड ॥ अतिथिप्रेमप्रियहोहु ॥ कंदमूलफलदेहिह
 म ॥ लेहुसुदितकरिछोहु ॥ २१६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सु
 निमुनिवचनभरतहियशोचू ॥ भएकुअवसरकठि
 नसंकोचू ॥ जानिशुरुइशुरुगिराबहोरी ॥ चरणबंदि-
 बोलेकरजोरी ॥ शिरधरिआयसुककरियंतुहारा ॥ प
 रमधर्मयहनाथहमारा ॥ भरतवचनसुनिवरमनभा
 ए ॥ शक्तिसेवकसवनिकटबुलाए ॥ चाहियकीन्हभ
 रतपहुनाई ॥ कंदमूलफलआनहुजाई ॥ भलिहिना
 थकहिनिन्हशिरनाए ॥ प्रसुदितनिजनिजकाजसि
 धाए ॥ मुनिहिंशोचपाहुनवडनेवता ॥ तसिपूजाचाहि
 यजशदेवता ॥ सुनिअधिसिद्धिअणिमादिकआई
 ॥ आयसुहोइसोकरहिंगोसाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम-
 विरहव्याकुलभरत ॥ सानुजसकलसमाज ॥ पहुंना
 इकरिहरहुअम ॥ कहासुदितसुनिराज ॥ २१७ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ अधिसिधिशिरधरिसुनिवरवाणी ॥ ब
 डभागिनिआपुहिंअनुमानी ॥ कहहिंपरस्परसिधि
 समुदाई ॥ अनुलितअतिथिरामलघुभाई ॥ मुनिपद
 बंदिकरियसोइआजु ॥ होइसरवीसचराजसमाजु ॥

असकहिरुचिररचेगृहनाना ॥ जेहिं विलोकिविलरवा
हिं विमाना ॥ भोगविभूतिभूरिभरिरारवे ॥ देवतजिन
हिं अमरअभिलाषे ॥ दासीदाससाजसबलीन्हे ॥ भो
गवतरहहिं मनहिं मनदीन्हे ॥ सबसमाजसंजिसिधि
पलमाही ॥ जेसरवसपनेहुं सरपुरनाहीं ॥ प्रथम
हिवासदिएसबकेही ॥ संदरसरवदयथारुचिजेही
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिसपरिजनभरतकहं ॥ ऋषिआ
यस्कअसदीन्ह ॥ विधिविस्मयदायकविभव ॥ सुनिब
रतपचलकीन्ह ॥ २१८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिप्रभावज
बभरतविलोका ॥ सबलघुलगे लोकपतिलोका ॥ स
रवसमाजनहिजाइबरवानी ॥ देवतबिरतिविसार
हिं ज्ञानीं ॥ आसनशयनवसनसुविताना ॥ वनवाटि
काविहंगमृगनाना ॥ सरभिफूलफलाअभियसमा
ना ॥ विमलजलाशयविविधविधाना ॥ अशनपानशु
चिअमितअमीसे ॥ देखिलोकसकुचातजमीसे ॥
सरसरभिसरतसबहीके ॥ लखिअभिलाषसरे
शशचीके ॥ ऋतुवसंतवहत्रिविधवयासी ॥ सबक
हंसलभपदारथचारी ॥ सुक्चंदनबनितादिकभो
गा ॥ देखिहर्षविस्मयवशलोगा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संप
तिचकईभरतचक ॥ सुनिआयसरखेलवार ॥ तेहिंनि
शिआअमपीजरा ॥ सरवेभाभिनुसार ॥ २१९ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ कीन्हनिमज्जनतीरथराजा ॥ नाइसुनिहिं
शिरसहितसमाजा ॥ ऋषिआयस्कअसीषशिररा
खी ॥ करिदंडवतबिनयबहुभाषी ॥ पथगतिकुशल
साथसबलीन्हे ॥ चलेचित्रकूटहिंचितदीन्हे ॥ रामस

स्वाकरि दीन्है लागू ॥ चलत देह धरि जनु अनु रागू ॥
 पद आण शीर्ष नहि छाया ॥ प्रेम नेम प्रत धर्म अमाया ॥
 लषण राम सिय पंथ कहानी ॥ पूछत सरवहिं कहत मृदु
 आणी ॥ राम वास थल विट पबिलोकी ॥ उर अनु रागर
 हत नहि रोकी ॥ देखि दशा स्फुर बरषहिं फूला ॥ भइ मृदु
 महिम मंगल मूला ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ किये जाहिं छाया ज
 लद ॥ स्फुरव दब है बर बात ॥ त सम गु भए उन राम कहं ॥
 जस भा भरत हिं जात ॥ २२० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जड चेत
 न जग जीव घनेरे ॥ जेचित ए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥ ते सब
 भए परम पद जोगू ॥ भरत दरश मेदा भव रोगू ॥ यह ब
 डि बात भरत की नाही ॥ सुमिरत जिन हिं राम मन माहीं
 ॥ वारे कराम कहत जग जेऊ ॥ होत तरण तारण नर तेऊ ॥
 भरत राम प्रिय पुनिल सुभ्राता ॥ कसन होइ मगु मंगल
 दाता ॥ सिद्ध साधु मुनि वर अश कहहीं ॥ भरत हिं निर
 रिव हर्ष हिय लहहीं ॥ देखि प्रभाव स्फुरेशहिं शोचू ॥ ज
 ग भल भल हिं पोच कहं पोचू ॥ गुरु सन कहें उकरहु प्रभु
 सोई ॥ राम हिं भरत हिं भेटन होई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम स
 कोची प्रेम वश ॥ भरत स प्रेम पयोधि ॥ वनी बात विगर
 ए चहत ॥ करिय यतन छल शोधि ॥ २२१ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ वचन स्तनत स्फुर गुरु मुक्त काने ॥ सह सन यन विनु
 लोचन जाने ॥ कह गुरुवादि क्षोभ छल छाडु ॥ इहां क
 पट कारि होइ य भांडु ॥ माया पति सेवक सन माया ॥ क
 रिय तो उलटि परे स्फुर राया ॥ तव कछु कीन्ह राम रुचि
 जानी ॥ अव कुचालि कारि होइ हिं होनी ॥ स्तनु स्फुरेश
 घु नाथ सुभाऊ ॥ निज अपराध रि साहि न काऊ ॥ जो अ

पराधभक्तकरकरई ॥ रामरोषपावकसोजरई ॥ लोक
 हुंवेदविदितइहिहासा ॥ यहमहिमाजानहिंदुर्वासा ॥
 भरतसरिसकोरामसनेही ॥ जगजपुरामरामजपुजे
 ही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मनहुनआनियअमरपति ॥ रघुव
 रभक्तअकाज ॥ अयशलोकपरलोकदुरव ॥ दिनदिन
 शोकसमाज ॥ २२२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सनुकरेशउप
 देशहमारा ॥ रामहिंसेवकपरमपियारा ॥ मानतकरव
 सेवकसेवकाई ॥ सेवकबैरबैरअधिकाई ॥ यद्यपि-
 समनहिरागनरोषू ॥ गहहिंनपापपुण्यगुणदोषू ॥ कर्म
 प्रधानविश्वकरिरारवा ॥ जोजसकरैसोतसफलचा
 रवा ॥ तदपिकरहिंसमविषमविहारा ॥ रघुवरभक्तिभ
 क्तअनुसारा ॥ अगुणअलेषअमानएकरस ॥ रामस
 गुणभएभक्तप्रेमबश ॥ रामसदासेवकरुचिरारवी ॥ वे
 दपुराणसाधुकरभारवी ॥ असजियजानितजहुकुटि
 लाई ॥ करहुभरतपदप्रीतिसहाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम
 भक्तपरहितनिरत ॥ परदुरवदुरवीदयालु ॥ भक्तशिरो
 मणिभरतते ॥ जनिजरपहुकरपालु ॥ २२३ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ सत्यसंधप्रभुकरहितकारी ॥ भरतरामआय
 सअनुसारी ॥ स्वारथविवशबिकलतुमहोहु ॥ भरत
 दोषनहिराउरमाहु ॥ सनिसुरवरकरगुरुवरवाणी
 ॥ भाप्रमोदमनमिटोगलानी ॥ वरषिप्रसन्नहर्षिकर
 राऊ ॥ लगेसराहनभरतसभाऊ ॥ इहिविधिभरतच
 । दशादेखिसुनिसिद्धसिहाही ॥ जबहिरा
 मकहिलेहिंउशासा ॥ उमगतप्रेममनहुंचहुंपाशा ॥ द्रव
 शपषाणा ॥ पुरजनप्रेमनजाइव

खाना॥ वीचवासकरियमुनहिआए॥ निरखिनीरलो
 चनजलछाए॥ ॥दोहा॥ ॥रघुवरवर्णबिलोकिवर
 ॥वारिसमेतसमाज॥ होतविरहवारिधिमगन॥ चढेबि
 बेकजहाज॥ २२४॥ ॥चौपाई॥ ॥यमुनतीर
 नकरिवासू॥ भएउसमयसबसमहिस्फुपाभू॥
 घाटघाटकीतरणी॥ आईअगणितजाईनवरणी॥
 प्रातपारभेएकहिंरवेवा॥ तोषेरामसरवाकरिसेवा॥ च
 लेअन्हाइनदिहिंशिरनाई॥ साथनिषादनाथलघु-
 भाई॥ आगेमुनिवरवाहनआछे॥ राजसमाजजाइ-
 सबपाछे॥ तेहिंपाछेदोउबंधुपयादे॥ भूषणबसनवे
 षसूटिसादे॥ सेवकसूहृदसचिवसूतसाता॥ सरतल
 षणसीयरघुनाथा॥ जहंजहंरामवासबिश्वासा॥ तहत
 हंकरहिंसप्रेमप्रणामा॥ ॥दोहा॥ ॥मगुवासीनरना
 रिस्फुनि॥ धामकामतजिधाइ॥ देखिस्वरूपसनेहवश
 ॥सुदितजन्मफलपाइ॥ २२५॥ ॥चौपाई॥ ॥कहहिंस
 प्रेमएकएकपाहीं॥ रामलषणसरिवहोहिंकिनाहीं॥ व
 यवसुवरणरूपसोइआली॥ शीलसनेहसरिससम-
 चाली॥ वेदनसोसरिवतीयनसंगा॥ आगेअनीचलीच
 तुरांगा॥ नहिप्रसन्नमुखमानसरवेदा॥ सरिवसंदेहहो
 तइहिभेदा॥ नासूतहुंतिगुणिमनमानी॥ कहहिंसक
 लतोहिसमनसयानी॥ तेहिसराहिवाणीफुरपूजी॥ बो
 लीमधुरवचनतियदूजी॥ कहिसप्रेमसबकथाप्रसं-
 ग॥ जेहिंविधिरामराजरसभंगू॥ भरतहिंचहुरिसरा
 हनलगी॥ शीलसनेहसुभावसुभागी॥ ॥दोहा॥ ॥
 नन्तपदादेखानफल॥ पिनादीन्हतजिराज॥ जानमना

वनरघुवरहीं ॥ भरतसरिसको आज ॥ २२६ ॥

पाई ॥ ॥ भायपभक्ति भरत आचरण ॥

दुरवदूषणहरण ॥ जो कलुकहिय थोर सरिव सोई ॥ रा
मबंधु अस काहेन होई ॥ हम सब सानुज भरत हिंदे रे
॥ भए धन्य युवती जन ले रे ॥ सुनि गुणि दे रि व द शा प
छिताहीं ॥ कैकेयि जननी योग सुत नाही ॥ कोउ कहू

षण रानि हुनाहिन ॥ विधि सब कीन्ह हम हिं जो दाहिन

॥ कहं हम लोक बेद विधि हीना ॥ लघु कुल तिय करतू-

ति मलीना ॥ बस हिं कुदेश कुगाव कुठामा ॥ कहं यह द

रश पुण्य परिणामा ॥ अस आनंद अचर ज प्रति प्रा-

मा ॥ जनु भरि भूमि कल्पतरु जामा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भ

रत दरश देखत खुलेउ ॥ मगुली गन्ह कर भाग ॥ जनु सिं

घल वासिन्ह भए ॥ विधी बश सुलभ प्रयाग ॥ २२७ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ निज गुण सहित राम गुण नाथा ॥ सुनत

॥ ॥ तीरथ मुनि आश्रम सुरधा

॥ निरखि निमज्जहिं करहिं प्रणामा ॥ मन हिं मन मां

॥ सीयराम पद पद्म सनेह ॥ मिलहिं किरा

त कोल बन वासी ॥ वैखान सब दुयती उदासी ॥ करि प्र

णाम पूछहिं जोहि तेही ॥ केहि बन लषण राम वैदेही ॥

ते प्रभु समाचार सब कहहीं ॥ भरत हिंदे रि व ज न फल

लहहीं ॥ जे जन कहहिं कशल हम देखे ॥ ते प्रिय राम ल

॥ इहि विधि बूजत सब हिं सुवाणी ॥ सु

नत राम बन वास कहानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेहि वासर व

॥ चले समिरि रघुनाथ ॥ राम दरश कीला

लसा ॥ भरत सरिस सब साथ ॥ २२८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥

मंगल शशुण होहिं सब काहू ॥ फर कहिं सरवद विलोच
 बाहू ॥ भरतहिं सहीत समाज उछाहू ॥ मिलिहहिं राम-
 मिटिहिं दुख दाहू ॥ करत मनोरथ जशजिय जाके ॥
 हिं सनेह स्रधा सब छाके ॥ शिथिल अंग मगु पगुड गि
 डोलहिं ॥ बिहुल बचन प्रेम बश बोलहिं ॥ राम सरवाते
 हिं समय देखावा ॥ शैल शिरोमणि सहज सहावा ॥ जा
 स समीप सरित पय तीरा ॥ सीय समेत बसहिं दोउ वी
 रा ॥ देखि करहिं सब दंड प्रणामा ॥ कहि जय जान की जी
 वन रामा ॥ प्रेम मगन अस राज समाजू ॥ जनु फिरि अव
 ध चले रघु राजू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरत प्रेम तेहिं समय ज
 श ॥ तस कहि शकै न शेषु ॥ कविहिं अगम जिमि ब्रह्म
 सरव ॥ अहम ममलिन जनेषु ॥ २२६ ॥ ॥ चौपाई ॥
 सकल सनेह शिथिल रघुवर के ॥ गए कोश दुइ दिन क
 र टर के ॥ जल थल देखि वशे निशि बीते ॥ कीन्ह गवन र
 घुनाथ पिरीते ॥ उहां राम रजनी अख शेषा ॥ जागी सीय
 स्वप्न अस देखे ॥ सहित समाज भरत जनु आए ॥ ना
 थ वियोग ताप तनु ताए ॥ सकल मलिन मन दीन दुखा
 री ॥ देखी सासु आन अनुहारी ॥ सुनिसिय स्वप्न भरे
 जल लोचन ॥ भए शोच वश शोच विमोचन ॥ लक्षण
 स्वपन यह नीकन होई ॥ कठिन कुचाह सुनाइहिं कोई
 ॥ अस कहि बंधु समेत अन्हाने ॥ पूजी पुरारी साधु स
 न माने ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सनमानि सुर सुनि बंदि बैटे उत
 रादि शिंदर वन भए ॥ नभ दूरि खग मृग भूरि भागे विक
 ल प्रभु आश्रम गए ॥ २७ ॥ तुलसी उठे अवलोकिकार
 एकाद चित रहै ॥ सच समाचार किरान काल नि आइत

हिंअवसरकहे ॥ १८ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सुनतसुमंग
लबयन ॥ मनप्रमोदतनुपुलकभर ॥ शरदसरोरुहन-
यन ॥ तुलसीभरेसनेहजल ॥ २३० ॥ ॥ चौपाई ॥
बहुरिशोचबशभेसियरमण ॥ कारणकवनभरतअग
मनू ॥ एकआइअसकहाबहोरी ॥ सेनसंगचतुरंगन
थोरी ॥ सोसुनिरामहिंभाअतिशोचु ॥ इतपितुबचइ
तबंधुसंकोचु ॥ भरतसुभावसमुजिमनमाहीं ॥ प्रसु
हितचिततिथिपावतनाहीं ॥ समाधानतबभायहजा
ने ॥ भरतकहेमहंसाधसयाने ॥ लषणलखेउप्रभुहृद
यरवंभारू ॥ कहतसमयसमनीतिबिचारू ॥ विनुपूछे
कछुकहहुगोसाई ॥ सेवकसमयनढीठढिठाई ॥ तुम
सर्वज्ञशिरोमणिस्वामी ॥ आपनिसमुजकहौंअनु-
गामी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाथसुहृदसुठिसरलचित ॥
शीलसनेहनिधान ॥ सबपरप्रीतिप्रतीतिजिय ॥ जानि
यआपुसमान ॥ २३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विषईजीव
पाइप्रभुताई ॥ मूढमोहबशहोहिंजनाई ॥ भरतनीति
रतसाधुसुजाना ॥ प्रभुपदप्रेमसकलजगजाना ॥ तेउ
आजुसंजुपदपाई ॥ चलेधर्ममरजादमिताई ॥ कुटिल
कुबधुकुअवसरताकी ॥ जानिरामबनबासएकाकी
॥ करिहुमंत्रमनसाजिसमाजु ॥ आएकरणअकंटक
राजु ॥ कौटिप्रकारकपटकुटिलाई ॥ आएदलबदोरि-
दोउभाई ॥ जौजियहोतिनकपटकुचाली ॥ केहिसोहा
तरथबाजिगजाली ॥ भरतहिंदोषदेइकोजाए ॥ जग
बीराइराजपदपाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शशिशुरुतियगा
मीनहुष ॥ चढेउभूमिसुरयान ॥

॥ अधमकोबेणुसमान ॥ २३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सह
 बाहुसरनाथत्रिसंकु ॥ कैहिन राजमददीन्ह कलंकु ॥
 भरतकीन्ह यह उचित उपाऊ ॥ रिपुचरण रंचन राख
 काऊ ॥ एककीन्ह नहि भरत भलाई ॥ निदरे राम जानि
 अस हाई ॥ समुक्ति परिहिं सो आजु विशेषी ॥ समर स
 रोष राम मुख देखी ॥ इतनी कहत नीतिर समूला ॥ र
 एण स बिल पयल कजि मि फूला ॥ प्रभु पद बंदिशी सर
 ज राषी ॥ बोले सत्य सहज बल भाषी ॥ अनुचित नाथ
 न मान व मोरा ॥ भरत हमहिं उपचार न थोरा ॥ कलह
 गि सहिय रहिय मन मारे ॥ नाथ साथ धनु हाथ हमारे
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्षत्रिजातिर घु कुल जनम ॥ राम अनु
 ज जग जान ॥ लात हुं मारे चढ़त शिर ॥ नीच क्रोधुरि स
 मान ॥ २३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उठि कर जोरि रजाय सु
 मागा ॥ मनहु वीर रस सो वत जागा ॥ बांधि जटा शिर
 कटि कसि भाथा ॥ साजि शरासन शाय कहाथा ॥ आ
 चुराम सेवक यश लेऊं ॥ भरत हिं समर शिरवाचन देऊं
 ॥ राम निरादर कर फल पाई ॥ सो बहु समर सेज दोउ भा
 ई ॥ आई बना भल सकल समाजु ॥ प्रगट करीं रिसि या
 छिल आजु ॥ जिमि कुरि निकर दलै मृगराजु ॥ लेइ लपे
 टिल वाजि मिवाजु ॥ तैसे हिं भरत हिं सन समेता ॥ सानु
 ज निदरि निपातों रवेता ॥ जो सहाय कर शंकर आई ॥ ती
 मारीं रण राम दोहाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अतिसरोष भापे
 लपण ॥ लखि वस्तुनि शपथ प्रमाण ॥ सभय विलोकत
 लोकपति ॥ चाहत भभरि भंगान ॥ २३४ ॥ ॥ चौपाई ॥
 जग भासा च गगन भावानी ॥ लपण बाहु बल विपुल व

खानी ॥ तात प्रताप प्रभाव तु ह्यारा ॥ को कहि शके को ज
न निहारा ॥ अनुचित उचित काज कछु होई ॥ समुझि क
रिय भल कह सब कोई ॥ सहसा करि पाछे पछिता हीं ॥
कहहि बेध बुध ते बुध ना हीं ॥ सुनि सरबचन लषण
सकुचाने ॥ राम सीय सादर सन माने ॥ कही तात तु म
नीति सहार्ई ॥ सब ते कहिन राज मद भाई ॥ जो अचव
त नृप मातहिं ते हीं ॥ नाहिन साधु सभाजिन सोई ॥ सु
नहु लषण भल भरत सीरीषा ॥ विधि प्रपंच महं सुनान
दीषा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरतहिं होइन राज मद ॥ विधि
हरिहर पद पाइ ॥ कबहु कि काजी शी करन्हि ॥ क्षीर-
सिंधु बिन शाई ॥ २३५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तिमिर त-
रुण तरणिहि मकु गिलई ॥ गगन मगन मकु मेघहिं मि-
लई ॥ गोपद जल बूडहिं घट योनी ॥ सहज क्षमा वरुछा
डहिं सोणी ॥ मशक फूंक वरु मेरु उडाई ॥ होइन नृप मद
भरतहिं भाई ॥ लषण तु ह्यार शपथ पितु आना ॥ शुचि
सुबं धुनहि भरत समाना ॥ सगुण क्षीर अवगुण जल
ताता ॥ मिलेरचे उपरयंच विधाता ॥ भरतहं सरविबंश
तडागा ॥ जनमी कीन्ह गुण दोष विभागा ॥ गहि गुण य
यत जि अवगुण वारी ॥ निज यश जगत कीन्ह उचि आ
री ॥ कहत भरत गुण शील सुभाऊ ॥ प्रेम पयोधि मगन
रघु राऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिरघु वर बाणी विबुध ॥ दे
॥ सकल सराहत राम से ॥ प्रभु को क
पानिकेतु ॥ २३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जो न होत जग जन्म
भरत को ॥ सकल धर मधुर धरणि धरत को ॥ कबि कु-
ल अगम भरत गुण गाथा ॥ को जानै तुम बिनुरघु नाथा

लषणरामसियसुनिस्तरवाणी ॥ अतिस्तरवलहेउनजा
 इबरवानी ॥ इहांभरतसबसहितसुहाए ॥ मंदाकिनी
 पुनीतअन्हाए ॥ सरितसमीपराखिसबलोगा ॥ मांगि
 मातुगुरुसचिवयोगा ॥ चलेभरतजहंसियरघुराई ॥ सा
 थनिषादनाथलघुभाई ॥ समुझिमातुकरतवसकुचा-
 हीं ॥ करतकुतर्ककोटिमनमाहीं ॥ रामलषणसियसुनि
 ममनाऊ ॥ उठिजनिअनतजाहिंतजिठाऊ ॥ ॥ दोहा ॥
 रातुमतेमहंजानिमोहि ॥ जोकलुकहहिंसोथोर ॥ अव
 अबगुणक्षमआदरहिं ॥ समुझिआपनीओर ॥ २३७
 ॥ चौपाई ॥ ॥ जोपरिहरहिंमलिनमनजानी ॥ जौसन
 मानहिंसेवकमानी ॥ मोरेशरणरामकीपनहीं ॥ रामसु
 स्वामिदोषसबजनहीं ॥ जगयशभाजनचाचतमीना ॥
 नेमप्रेमनिजनिपुणनवीना ॥ असमनगुणतचलेमगु
 जाता ॥ सकुचसनेहशिथिलसबगाता ॥ फेरतिमनहि
 मातुकुतखोरी ॥ चलतभक्तिवलधीरजधोरी ॥ जवस
 मुझहिंरघुनाथसुभाऊ ॥ तवपथपरतउताइलपाऊ ॥
 भरतदशातेहिअवसरकैसी ॥ जलप्रवाहजलअलि
 गतिजैसी ॥ देखिभरतकरशोचसनेहू ॥ भानिषादते
 हिसमयविदेहू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लगेहोनमंगलशगु
 ण ॥ सुनिगणकहतनिषाद ॥ मिटिहिंशोचहोइहिंहर
 प ॥ पुनिपरिणामविषाद ॥ २३८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 सेवकबचनसत्यसबजाने ॥ आग्रसुनिकटजाइनिअ
 राने ॥ भरतदोखमनशीलसमाजु ॥ सुदितक्षुधितज
 नुपाइसुनाजु ॥ दीतिवीतिजनुप्रजादुरवारी ॥ भिविध
 तापपीडितग्रहमारी ॥ जाइसुराजसुदेशस्तरवारी ॥

॥ रामवासबनसंपत्तिसा

जा ॥ सरवी प्रजाजनु पाइ सराजा ॥ सचिव बिराग बिदे
कनरेशू ॥ बिपिन सहावन पावन देशू ॥ भटयमनिय
शैल रजधानी ॥ शांति सुमति शक्ति सुंदरिरानी ॥
सकल अंग संपन्न सराऊ ॥ रामचरण आश्रित चित्त
चाऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जातिमोह महिपाल दल ॥ सहि
त बिबेक भुआल ॥ करत अकंटक राजपुर ॥ सरव संप
दा सकाल ॥ २३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वनप्रदेश सुनि-
वास घनेरे ॥ जनु पुरनगर गांव गणखेरे ॥ बिपुल बिचि
त्र विहंगम गुनाना ॥ प्रजासमाजन जाइ बरवाना ॥ रव
गहां करि हरि बाध बराहा ॥ देखि महिष चूक साज सरा
हा ॥ बैर बिहाइ चरहि एक संग ॥ जहंत हं मनहु सेनच
तुरंगा ॥ ऊरना ऊरहिं मत्त गज गाजहिं ॥ मनहु निसान
बिबिध बिधि बाजहिं ॥ चकचक्कोर चातक शकपिकग
ण ॥ कूजत मंजु मराल सुदित मन ॥ अलिगण गावत
नाचत मोरा ॥ जनु सराज मंगल चहुं ओरा ॥ बेलि बि
टपतु ए सकल सफूला ॥ सब समाज मृदु मंगल मूला ॥
॥ दोहा ॥ ॥ राम शैल शोभानिररिव ॥ भरत हृदय अति
प्रेम ॥ ताप सतप फल पाइ जिमि ॥ सरवी सिराने नेम ॥
॥ २४० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तब केवट उंचे चटि धाई ॥
कहा भरत सन भुजा उठाई ॥ नाथ देखु यह बिटप विशा
ला ॥ पाकरि जंबुर सालत माला ॥ तिन्ह तरुवरन्ह मध्य
वट सोहा ॥ मंजु विशाल देखि मन मोहा ॥ नील सघन-
पल्लव फल लाला ॥ अविचल छांहि सरव द सब काला
॥ मानहुति मिर अरुण मयराशी ॥ विरची बिधिसके

लिखरवमासी ॥ तेहितरुसरितसमीपगोसाई ॥ रघुव
 रपणकुटीजहंछाई ॥ तुलसीतरुवरविविधसुहाए ॥
 कहुसियपियकहुलषणलगाए ॥ वटछायाबेदिकाब
 नाई ॥ सियनिजपाणिसरोजसुहाई ॥ ॥ दोहा ॥
 जहं बैठे सुनिगणसहित ॥ नितसिंधुरामसुजान ॥ सु
 नहिं कथाइतिहाससब ॥ आगमनिगमपुराण ॥ २४१
 ॥ चौपाई ॥ ॥ सरवाबचनसुनिबिटपनिहारी ॥ उमगे
 भरतबिलोचनवारी ॥ करतप्रणामचलेदोउभाई ॥ क
 हतप्रीतिशारदसकुचाई ॥ हर्षहिंनिरखिरामपदअं
 का ॥ मानहुपारसपाएउरका ॥ रजशिरधरिहियनय
 नन्हिलावहिं ॥ रघुवरमिलनसरिससुखपावहिं ॥
 देखिभरतगतिअकथअतीवा ॥ प्रेममगनखगमृग
 जडजीवा ॥ सरवहिंसनेहबिबशमगुभूला ॥ कहिसु
 पथसरवरपहिंफूला ॥ निरषिसिद्धसाधकअनुरा
 गे ॥ सहजसनेहसराहनलागे ॥ होतनभूतलभावभ
 रतको ॥ अचरसचरचरअचरकरतको ॥ ॥ दोहा ॥
 प्रेमअभियमंदरविरह ॥ भरतपयोधिगभीर ॥ मधि
 प्रगटेसरसाधुहित ॥ कृपासिंधुरघुवीर ॥ २४२ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ सरवासमेतमनोहरजोद ॥ लखेउनल
 यणसधनवनओटा ॥ भरतदीखप्रभुआश्रमपावन
 ॥ सकलसुमंगलसदनसुहावन ॥ करतप्रवेशमिता
 दुरवदावा ॥ जनुयोगीपरमारथपावा ॥ देखभरतलप
 णप्रभुआगे ॥ पूछेबचनकहतअनुरागे ॥ शीसजा
 दाकटिसुनिपटचांधे ॥ तूणकसेकरशरधनुकांधे ॥ बे
 दीपरसुनिसाधसमाजु ॥ सीयसहितराजतरघुगजु ॥

वल्कलबसनजटिलतनुश्यामा॥ जनुमुनिवेषकीन्ह
 रतिकामा॥ करकमलन्हधनुशायकफेरत॥ जियकी
 जरनिहरतहंसिहेरत॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लसतमंजुमुनि
 मंडली॥ मध्यसीयरघुचंद॥ ज्ञानसभाजनुतनुधरे॥
 भक्तिसच्चिदानंद॥ २४३॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ साजुजस-
 रवासमेतमगनमन॥ विसरेहर्षशोकसरवदुखगण॥
 पाहिनाथकहिपाइगोसाई॥ भूलतपरेलकुटकीनाई
 ॥ बचनसप्रेमलषणपहिचाने॥ करतप्रणामभरतजि
 यजाने॥ बंधुसनेहसरसइहिओरा॥ उतसाहिवसे
 वाबरजोस॥ मिलिनजाइनहिगुदरतबनई॥ सुकबि
 लषणमनकीमतिभनई॥ रहेरारिवसेवापरभारू॥
 चढीचंगजनुखैंचखेलारू॥ कहतसप्रेमनाइमहिमा
 था॥ भरतप्रणामकरतरघुनाथा॥ उठेरामस्तनिप्रेम
 अधीरा॥ कहुपटकहुनिषंगधनुतीरा॥ ॥ दोहा ॥
 वरवसलिएउठाइउर॥ लाएछुपानिधान॥ भरतराम
 कीमिलनिलरिव॥ विसरेउसबहिंअपान॥ २४४॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ मिलनिप्रीतिकिमिजाइबरवानी॥
 कुलअगमकर्ममनवाणी॥ परमप्रेमपूरणदोउभाइ॥
 मनबुधिचित्तअहमितिविसराई॥ कहहुसप्रेमप्रग
 वकोकरई॥ केहिछायाकबिमतिअनुसरई॥ कबि
 हिंअर्थआरवरबलसांचा॥ अनुहरनालगतिहिंन
 टनांचा॥ अगमसनेहभरतरघुवरको॥ जहंनजाइ
 मनविधिहरिहरको॥ सोमैकुमतिकहौंकहिभांती॥
 बाजुसरागकिगाडिवांती॥ मिलनिविलोकिभरत
 रघुवरकी॥ सरगणसभयधुकधुकीधरकी॥ समु

आए स्फुर गुरुजड जागे ॥ वरषि प्रसून प्रशंसन लागे ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ मिलि सप्रेम रिपु दमनहिं ॥ केवट भटे उ
 म ॥ भूरि भाग्य बटे भरत ॥ लषण करत प्रणाम ॥ २४ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ भटेल लषण लल किल धुभाई ॥
 बादलीन्ह उरलाई ॥ पुनि सुनि गण दुहु भाइन्ह बदै ॥
 अभिमत आशिष पाइ आनंदे ॥ सानुज भरत
 अनुरागा ॥ धरि शिर सिय पद पद्म परागा ॥ पुनि
 करत प्रणाम उठाए ॥ शिर कर कमल परशि बैठाए ॥
 य अशीष दीन्ह मन माहीं ॥ मगन सनेह द
 ॥ सब विधि सानु कूल लखि सीता ॥ मेनि शोच उर अ
 पडर बीता ॥ कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा ॥ प्रेम भरा
 मन निज गति छुछा ॥ तेहि अवसर केवट धीरज धरि
 ॥ जोरि पाणि विन वत प्रणाम करि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ना
 थ साथ सुनि नाथ के ॥ मातु सकल पुर लोग ॥ सेवक से
 न पस चिव सब ॥ आए सकल वियोग ॥ २४ ६ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ शील सिंधु मुनि गुरु आगमनु ॥ सीय सम
 रारि विरिपु दमनु ॥ चले सवेग राम तेहि काला ॥ धीर ध
 रम धुर दीन दयाला ॥ गुरुहि देखि सानुज अनुरागे
 ॥ दंड प्रणाम करत प्रभु लागे ॥ मुनि वरधाइ लिए उर ला
 ई ॥ प्रेम उमगि भेटे दोउ भाई ॥ प्रेम पुलकि केवट कहि
 नामु ॥ कीन्ह दूरितेहिं दंड प्रणामु ॥ राम सरवा ऋषि व
 रवस भेटा ॥ जनु महिलु दत सनेह समेटा ॥ रघुपति भ
 कि सुमंगल मूला ॥ नभस गहि स्फुर यरषहिं फूला ॥ इ
 हि समनि पट नीच कोउ नाहीं ॥ बड बशिष्ठ सम को जग
 माहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेहि लखि लय एहुं ते अधिक ॥

मिले सुदित सुनिराउ ॥ सो सीतापति भजन को ॥
 प्रतापप्रभाउ ॥ २४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आरत लोग
 मसब जाना ॥ करुणा करसु जान भगवाना ॥ जो जेहि
 भांति रह्य अभिलाषी ॥ तेहि तेहि कीतै सीरुचि
 ॥ सानुज मिलि पल मह सब काहू ॥ कीन्ह दूरि दुरवदा
 रुण दाहू ॥ यह बडि बात राम की नाही ॥ जिमि घट को
 एकर बिछाही ॥ मिलि केवटहिं उमगि अनुरागा ॥
 पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥ देखि राम दुखि
 तारी ॥ जनु सुवेलि अवलिहि ममारी ॥ प्रथम राम भे
 टी कैकेयी ॥ सरल संभाव भक्तिमति भई ॥ पग परि
 कीन्ह प्रबोध बहोरी ॥ काल कर्म बिधि शिर धरि
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भेटी बुधवर मातु सब ॥ करि प्रबो
 ध परि तोष ॥ अंब ईश आधीन गज ॥ काहुन देइ यदोष ॥
 ॥ २४८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गुरुनिय पद वैदे दोउ भाई ॥
 सहित विप्रतियजे संग आई ॥ गंग गौरि सम सब स-
 नमानी ॥ देहिं अशीष सुदित मृदु बाणी ॥ गहि पद ल
 गे सुमित्रा अंका ॥ जनु भेटी संपति अतिरंका ॥ पुनि
 जननी चरण न्ह दोउ भ्राता ॥ परे प्रेम व्याकुल सब गा
 ता ॥ अति अनुराग अंब उर लाए ॥ नयन सनेह सलि
 ल अन्हवाए ॥ तेहि अवसर कर हर्ष विषादु ॥ किमि
 कविकहे मूक जिमि स्वादु ॥ मिलि जननिहिं सानुज
 रघुराऊ ॥ गुरु सन कहै उकि धारिय पाऊ ॥ पुरजन पा
 ई सुनी शनियोगु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ महि स्वर मंत्री मा
 तु गुरु ॥ घणै लोग लिए साथ ॥ पावन आश्रम गमन
 किय ॥ भरत लषण रघुनाथ ॥ २४९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥

सीय आइ मुनिवर पद लागी ॥ उचित अशी षल ही मन
 मांगी ॥ गुरुपत्नि हिं मुनितिय न्हस मेता ॥ मि
 कहि जाइ न जेता ॥ बंदि बंदि पद सिय पद हीं के ॥
 वीदल हे प्रिय जी के ॥ सास सकल जब सीय निहारी ॥
 देउ नयन सह मि सुकुमारी ॥ परी वधिक शमन हु मराली
 ॥ काह की न्ह करतार कुचाली ॥ तिन्ह सिय निरखि नि
 पट दुरव पावा ॥ सो सब सहिय जो दैव सहावा ॥ जनक
 सुता तब उर धरि धीरा ॥ नील नलिन लोयन भरि जीरा
 ॥ मिलि सकल सासु न्ह सिय जाई ॥ तेहि अवसर करु
 णाम ति छाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लागि लागि पद सब नि स
 य ॥ भेटी अति अनुराग ॥ हृदय आशिष हिं प्रेम वश ॥
 रहि हहु भरि सुहाग ॥ २५० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बिकल सा
 नेह सीय सब राणी ॥ बैठेन सब हिं कहे उ गुरु ज्ञानी ॥
 थम कही जग गति सुनि नाथा ॥ कहे उ कलुक परमार थ
 गाथा ॥ नृप कर सरपुर गमन सुनावा ॥ सुनिरघुनाथ
 दुसह दुरव पावा ॥ मरण हेतु निज नेह विचारी ॥ भे अ
 ति बिकल धीर धुर धारी ॥ कुलिश कठोर सुनत कहु वा
 णी ॥ विलपत लपण सीय सवरानी ॥ शोक बिकल अ
 निसकल समाज ॥ मानहुं राज अकाजे उ आजु ॥
 रब हुरिराम समुजाए ॥ सहिस समाज सुसरित अन्हा
 ए ॥ चत निरं बुते हि दिन प्रभु की न्हा ॥ मुनि हुं कहे जलका
 हुन ली न्हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भोर भए रघु नंदन हिं ॥ जो
 मुनि आय सुदी न्ह ॥ अन्हा भक्तिसमेत प्रभु ॥ सो सब
 सादर की न्ह ॥ ३५१ ॥ ॥ जौ पाई ॥ ॥ करि पितु क्रिया
 वेद जगि जरी ॥ अं सुनीति मुनि कन मत्तर सी ॥ जास

नामपावकअघतूला॥सुमिरतसकलसुमंगलमूला
॥शुद्धसोभएउसाधुसंमतअस॥तीरथआवाहनसु
रसरिजस॥शुद्धभएदुइवासरबीते॥बोलेगुरुसनरा
मपिरीते॥नाथलोगसबनिपटदुरवारी॥कंदमूलफल
अंबुअहारी॥सानुजभरतसचिवसबमाना॥देखि
मोहीपलजिमियुगजाता॥सबसमेतपुरधारियपाऊ
॥आपुइहांअमरामवतिराऊ॥बहुतकहेउसबकिए
दिवाई॥उचितहोईतसकरियगोसाई॥॥दोहा॥
धर्मसेतुकरुणायतन॥कसनकहहुअसराम॥लोग
दुरितहुईदरश॥देखिलहेउविआम॥२५२॥॥चौपा
ई॥॥रामबचनसुनिसभयसमाजू॥जनुजननिधि
महंबिकलजहाजू॥सुनिमुनिगिरासुमंगलमूला॥भ
एउमनहुंमारुतअनुकूला॥पावनपयतिहुकालअन्हा
ही॥जेहिंबिलोकिअघअघनशाहीं॥मंगलमूरतिलो
चनभरिभरि॥निरखहिंहर्षितदंडवतकरिकरि॥राम
शैलवनदेखनजाहीं॥जहंसखसकलकतहुंदुरवना
हीं॥ऊरनाऊरहिंसधासमवारी॥त्रिविधतापहरत्रि
विधबयारी॥विटपबेलितृणअगणितजाती॥फलप्र
सूनपल्लवबहुभांती॥सुंदरशिलासुखदतरुछाही॥

॥॥दोहा॥॥सरनि

सरोरुहजलविहग॥कूजतगुंजतभुंग॥बैरविमतवि
हरतविपिन॥मृगबिहगबहुरंग॥२५३॥॥चौपाई॥
॥कोलकिरातभिल्लवनबासी॥मधुशुचिसुंदरखाहु
सुधासी॥भरिभरिपणीकुटीरुचिरूरी॥कंदमूलफल
अंकुरभूरी॥सबहिंदेहिंकरिविनयप्रणामा॥कहिक

हिस्वादुभेदगुणनामा ॥ देहिलोगबहुमोलनलेहीं ॥ फे
 रतरामदोहाईदेहीं ॥ कहिहिंसनेहमगनमृदुबाणी ॥ मा
 नतसाधुप्रेमपहिचानी ॥ तुमसुकृतिहमनीचनिषादा
 ॥ पावादरशनरामप्रसादा ॥ हमहिंअगमअतिदरशतु
 ह्मारा ॥ जसमरुधरणिदेवधुनिधारा ॥ रामकृपालुनि
 षादनेवाजा ॥ परिजनप्रजहिंउचितजसराजा ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ हयजियजानिसकोचनजि ॥ करियछोहल-
 खिनेहु ॥ हमहिंकृतारथकरणलुगि ॥ फलतृणअंकु
 रलेहु ॥ २५४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तुमप्रियपाहुनवनप
 गुधारे ॥ सेवायोगनभाग्यहमारे ॥ देवकहाहमतुमगो
 साई ॥ इंधनप्रातकिरातमिताई ॥ यहहमारअतिबडि
 सेवकाई ॥ लेहिनबासनबसनचोराई ॥ हमजडनीच
 जीवगणघाती ॥ कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती ॥ पाप
 करतनिशिवासरजाहीं ॥ नहिकटपटनहिपेटअघाहीं
 ॥ सपनेहुधर्मबुद्धिकसकाऊ ॥ यहरधुनंदनदशरथप्र
 भाऊ ॥ जबतेप्रभुपदसद्वनिहारे ॥ मितेअमंगलदोष
 हमारे ॥ वचनसुनतपुरजनअनुरोग ॥ तिन्हकेभाग्यस
 गहनलागे ॥ ॥ छंद ॥ ॥ लागेसराहनभाग्यसवअनु
 रागवचनसुनावहीं ॥ बोलनिमिलनिसियरामचरण
 सनेहलखिरवपावहीं ॥ १६ ॥ नरनारिनिदरहिनेह
 निजसुकनिकोलभिल्लुकीगिरा ॥ तुलसीकृपारघुवअ
 मणिकीलौहलेनोकातिरा ॥ २० ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ विह
 रहिंवचनहुंअोर ॥ प्रतिदिनप्रसुदितलोगसच ॥ जल
 ज्योंदादुरमार ॥ भगपीनपावासप्रथम ॥ २५५ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ पुरनरनारिमगनअतिप्रीती ॥ वासरजादि

फलकसमबीती ॥ सीयसासुपतिवेषबनाई ॥ सादर
 करहिंसरिससेवकाई ॥ लषानमर्मरामबिनुकाहू ॥ मा
 यासबसियमायानाहू ॥ सीयसासुसेवाबशकीन्ही ॥
 तिन्हलहिसरवसियआशिषदीन्ही ॥ लखिसियसाहि
 तसरलहोभाई ॥ कुटिलरानिपछिताइअघाई ॥ अव
 हंयाचतिकेकेई ॥ मोहिनवीचुविधिमीचुनदे
 ई ॥ लोकहुंवेदविदितकविकहहीं ॥ रामविमुरवथल
 नरकनलहहीं ॥ यहसंशयसबकेमनमाहीं ॥ रामग
 मनविधिअवधकिनाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निशिननींदन
 हिभूषदिन ॥ भरतविकलसूठिशोच ॥ नीचकीचविच
 मगनजश ॥ मीनहिंसलिलसंकोच ॥ २५६ ॥ ॥ चौपाई
 ॥ कीन्हमातुमिसकालकुचाली ॥ ईतिभीतिजशपात
 कशाली ॥ केहिविधिहोइरामअभिषेकू ॥ मोहिअब
 फुरतउपायनएकू ॥ अवशिफिरहिंसुरुआयसुमानी
 ॥ सुनिपुनिकहवरामरुचिजानी ॥ मातुकहेबहुरहिर
 घुराऊ ॥ रामजननिहठकरबिकिकाऊ ॥ मोहिअनुच
 रकरकेतिकबाता ॥ तेहिंमहंकुसमयवामविधाता ॥
 जोहठकरींतोनिपठकुकर्मु ॥ हरगिरितेगुरुसेवकध-
 र्म ॥ एकीयुक्तिनमनहठरानी ॥ शोचतभरतहिंरैनविहा
 नी ॥ प्रातअन्हाइप्रभुहिशिरनाई ॥ बैठतपठएकषय
 बुलाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुपदकमलप्रमाणकरि ॥ बैठे
 आयसुपाइ ॥ विप्रमहाजनसचिवसब ॥ जुरेसभास
 दआई ॥ २५७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बोलेसुनिवरसमय
 समाना ॥ सुनहुसभासदभरतसुजाना ॥ धर्मधुरीण
 भानुकुलभानू ॥ राजारामस्ववशभगवानू ॥ सत्यसं

धपालकश्रुतिसेतू ॥ रामजन्मजगमंगलहेतू ॥ गुरुपितु
 मालुबचनअनुसारी ॥ खलदलदलनदेवहितकारी ॥
 नीतिप्रीतिपरमारथस्वारथ ॥ कोउनरामसमजानय-
 थारथ ॥ विधिहरिहरशशिरविदिशिपाला ॥ माया-
 जीवकर्मकलिकाला ॥ अहीपमहीजहंलगिप्रभुताई ॥
 योगसिद्धिनिगमागमगाई ॥ करिविचारजियदेखहु
 नीके ॥ रामरजाइशीससबहीके ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राखे
 रामरजाईरुष ॥ हमसबकरहितहोई ॥ समुजिसयाने
 करहुअब ॥ सबभिलिसंमतसोइ ॥ २५६ ॥ ॥ चौपाई
 ॥ सबकहंस्वरं दरामअभिषेकू ॥ मंगलमोदमूलगुण
 एकू ॥ केहिविधिअबधचलहिंरघुराई ॥ कहहुसमु
 जिसोइकरियउपाई ॥ सबसादरस्फुनिसुनिवरबा-
 णी ॥ नयपरमारथस्वारथसानी ॥ उतरनआवलोग
 भेभोरे ॥ तवशिरनाईभरतकरजोरे ॥ भानुबशभेभूप
 घनेरे ॥ अधिकएकतेएकबडेरै ॥ जन्महेतुसबकहं-
 पितुमाता ॥ कर्मशुभाशुभदेइविधाता ॥ दलिदुरवसज
 इसकलकल्याणा ॥ असआशिषराउरगजजाना ॥ सो
 गोसाईविधिगतिजेइच्छेकी ॥ शकैकोटारिटैकजोटे
 की ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बुजियमोहिउपायअब ॥ सोसब
 मोरअभाग ॥ स्फुनिसनेहमयवचनगुरु ॥ उरउमगा
 अनुराग ॥ २५६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तातबातफुरराम
 रूपाही ॥ रामविमुरवसिद्धिसपनेहुनाही ॥ सकुचौता
 तकहतएकबाता ॥ अर्धतजहिंबुधसरवसुजाता ॥
 बुद्धकाननगवनहुहोभाई ॥ फेरियलषणसीयरघु
 राई ॥ स्फुनिशुभवचनहर्षहोआता ॥ भेप्रमोदपारपूर

॥ मनप्रसन्नतनुतेविराजा ॥ जनुजीयेराउरा
 मभेराजा ॥ बहुतलाभलोगन्हलघुहानी ॥ समदुरवसुरव
 सबदोषहिंशनी ॥ कहहिं भरतसुनि कहासोकीन्हे ॥ फल
 जगजीवनअभिमतदीन्हे ॥ काननकरौं जन्मभरिवासु
 ॥ इहितैअधिकनमोरसपाशु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंतरजा
 मीरामसिय ॥ तुमसरबज्ञसुजान ॥ जौपुरकहोतोना
 थनिज ॥ कीजियबचनप्रमाण ॥ २६० ॥ ॥ चौपाई ॥
 भरतबचनसुनिदेखिसनेहू ॥ सभासहितसुनिभए
 उविदेहू ॥ भरतमहामहिमाजलराशी ॥ सुनिमतिठ-
 दितीरअबलासी ॥ गान्वहपारयतनबहुहेरा ॥ पाव
 नहतवेश ॥ औरकरहिंकोभरतबडाई ॥
 सरसिजसीपकिसिंधुसमाई ॥ भरतसुनिहिमनधी
 तरभाए ॥ सहितसमाजरामपहंआए ॥ प्रभुप्रणाम
 करिदीन्हसुआसन ॥ बैठेसबसुनिसुनिअबुशासन
 ॥ बोलेसुनिवरबचनबिचारी ॥ देशकालअबसरअ
 नुहारी ॥ सुनहु रामसरबज्ञसुजाना ॥ धर्मनीतिगुण
 ज्ञानविधाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सबकेउरअंतरबसहु ॥
 भाव ॥ पुरजनजननीभरतहित ॥ होइसो
 कहियउपाय ॥ २६१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आरतकहहिबि
 चारिनकाऊ ॥ सूरनुआरिहिंआपनदाऊ ॥ सुनिमु
 निबचनकहतरघुराऊ ॥ नाथतुहारेहिहाथउपाऊ ॥
 सबकरहितरूपराउरराखे ॥ आयसुकरियसुदितफु
 रअप्ते ॥ मथमजोआयसुमोकहंहोई ॥ माथेमानिक
 रौंशिरवसोई ॥ पुनिजेहिंकहंजसकहहिंगोसाई ॥ सो
 सबभांतिकरिहिसेवकाई ॥ कहसुनिरामसत्यतुमभा

पा॥ भरतसनेहविचारनराणा॥ तेहितें कहउं बहोरि-
 बहोरी॥ भरतभक्तिमममतिहृतभोरी॥ मोरेजानभर-
 तरुचिरारवी॥ जोकीजियसोशुभशिवसारवी॥ ॥दो-
 हा॥ ॥ भरतदिनयसादरसुनिय॥ करियविचारबहो-
 रि॥ करवसाधुलोकमत॥ नृपनयनिगमनिचोरी॥ ॥२६२॥
 ॥चौपाई॥ ॥ गुरुअनुरागभरतपरदेखी॥ रामहृदय
 आनंदविशेषी॥ भरतहिंधर्मधुरंधरजानी॥ निजसेव-
 कतनुमानसबाणी॥ बोलेगुरुआयसुअनुकूला॥ व-
 चनमंजुमृदुमंगलमूला॥ नाथशपथपितुचरणदोहाई
 ॥ भएउनभुवनभरतसमभाई॥ जेगुरुपदअंबुजअनु-
 रागी॥ तेलोकहुंबेदहुंबडभागी॥ राउरजापरअसअ-
 नुरागू॥ कोकाहिशकैभरतकरभागू॥ लखिलघुबंधुबु-
 दिसकुचाई॥ करतंबदनपरभरतवडाई, भरतकहहिंसो-
 कियेभलाई॥ असकहिरामरहेअरगाई॥ ॥दोहा॥
 तवसुनिबोलेभरतसन॥ सबसकोचतजितात॥ कृपा
 सिंधुप्रियबंधुसन॥ कहहुहृदयकीवात॥ ॥२६३॥ ॥चौ-
 पाई॥ ॥ सुनिसुनिबचनरामरुषपाई॥ गुरुसाहिवअ-
 नुकूलअघाई॥ लखिअपनेशिरसवल्लरभारू॥ कहि-
 नशकहिंकलुकरवविचारू॥ पुलकशरीरसभाभएठा-
 टे॥ नीरजनयननेहजलबाटे॥ कहवमोरसुनिनार्थनि-
 वादा॥ इहितेंअधिककहोंमेंकाहा॥ मैजानोनिजनाथ
 सुभाऊ॥ अपराधिहुपरकोहनकाऊ॥ मांपरकृपासने-
 हविशेषी॥ खेलेतरुपुनसकचहुंनहिदेखा॥ शिशुपन-
 तेंपनिहरेउनसंगू॥ कबहुंनकीन्हमोरमनभंगू॥ मैप्र-
 भएपाशातिजियजोहो॥ हारेहुखेलजिताचहिमोहो॥

॥ दोहा ॥ ॥ मैं हुं सनेह सकोच बश ॥ सनमुख कहें न बयन
 ॥ दरशन तृप्तिन आजु लगी ॥ प्रेम पिआसे नयन ॥ २६४ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ विधिन शके उसहि मोर दुलारा ॥ नीच वीच
 जननी मिस्र पारा ॥ यह उ कहत मोहि आजु न शोभा ॥
 आपनि समुजिसाध शक्ति को भा ॥ मातु मंद मै साधु स्फ
 चाली ॥ उर अस आनत कोटि कुचाली ॥ फरे कि को दो बा
 लि स्फ शाली ॥ मुक्ता प्रसव कि शंबु कताली ॥ सपने हुं दो
 ष कलेशन का हू ॥ मोर अभाग्य उदधि अवगाहू ॥ बिनु
 समुजे निज अघ परिपाकू ॥ जारे उ जाय जननि कहिका
 कू ॥ हृदय हेरि हारे उं सब ओरा ॥ एक हि भांति भलि हि
 भल मोरा ॥ गुरु गो साई साहिब सिय रामू ॥ लागत मो
 हि नीक परिणामू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ साधु सभा प्रभु गुरु
 निकट ॥ कहौं साथ लसति भाउ ॥ प्रेम प्रपंच की जूट फु
 र ॥ जानहि मुनि रघुराउ ॥ २६५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूप
 ति मरण प्रेम पण राखी ॥ जननी कुमति जगत सब साखी
 ॥ देखि न जाहि बिकल महतारी ॥ जर हिंदु सह ज्वर पुर
 नर नारी ॥ मही सकल अनर थ कर मूला ॥ सौ स्फ नि समु
 जिस हे उ सब भूला ॥ स्फ नि बन गमन की न्ह रघु नाथा ॥ क
 रि मुनि वेष लषण सिय साथा ॥ बिनु पन ही अरु प्यादी
 ह पाए ॥ शंकर सारिवर हे उ इहि घाए ॥ बहुरि निहारि
 निषाद सनेहू ॥ कुलिश कठिन उर भय उन वेहू ॥ अव
 सब आरि विन्ह देखे उं आई ॥ जियत जीव जड सबै सहा
 ई ॥ जिन्ह हिं निरपि मधु सां पिनि बीछी ॥ तज हिं विषम
 वषताम सती सी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेरघु नंदन लषण सि
 य ॥ अनहित लागे जाहि ॥

॥देवसहाबैकाहि॥२६६॥ ॥चौपाई॥ ॥सुनिअतिबि
 कलभरतवरबाणी॥आरतिप्रीतिबिनयनयसानी॥
 कमराजसबसभारवंभारू॥मनहुंकमलवनपरेउतुषारू॥
 ॥कहिअनेकविधिकथापुराणी॥भरतप्रबोधक्रीन्हमु
 निजानी॥बोलेउचितवचनरघुनंदू॥दिनकरकुलकैर
 ववरचंदू॥तातजायजियकरहुगलानी॥ईशआधीन
 जीवगतिजानी॥तीनिकालत्रिभुवनमतमोरे॥पुण्य-
 श्लोकताततनुतोरे॥उरआनततुमपरकुटिलाई॥जाइ
 लोकपरलोकनशाई॥दोषदेहिजननिहिजडतेई॥जि
 न्हगुरुसाधुसभानहिसेई॥ ॥दोहा॥ ॥मिटहिंपाप
 प्रपंचसब॥अरिवलअमंगलभार॥लोकसकयशपर-
 लोकसरव॥सुमिरननामतुह्मार॥२६७॥ ॥चौपाई॥
 ॥कहौसुभावसत्यशिवसारखी॥भरतभूमीरहराउरि
 राखी॥तातकुतर्ककरहुजनिजाए॥वेरप्रेमनहिदुरेदुरा
 ए॥सुनिगणनिकटविहंगमृगजाहीं॥बाधकत्रधिकवि
 लोकिपराहीं॥हितअनहितपशुपक्षिंउजाना॥मानुषत
 नुगुणज्ञाननिधाना॥ताततुमहिमेंजानतनीकें॥करोँका
 हअसमंजसजीकें॥रापेउराउशत्यमोहित्यागी॥तन
 परिहरेउप्रेमपणलागी॥तासुवचनमेंटनमनशोचू॥ते
 हितेंअधिकतुह्मारसंकोचू॥तापरगुरुमोहिआयसु
 दीन्हा॥अवशिजोकहहुचहौसोंकीन्हा॥ ॥दोहा॥
 ॥मप्रसन्नकारिसकुचनजि॥कहहुकनोसोंआज॥स
 त्यमिंधुरभुपरवचन॥सुनिभासरवीसमाज॥२६८॥
 ॥चौपाई॥ ॥सरगणसुद्वितसभयसरराज॥शोच
 तचाहलहोनअकाज॥करतविचारवनतकछुनाहीं॥

रामशरणवसगेमनमाहीं ॥ बहुरिविचारिपरस्परक
 हहीं ॥ रघुपतिभक्तिभक्तिवशअहहीं ॥ शधिकरिअ
 बरीषदुवासा ॥ भेसरसरपतिनिपटनिराशा ॥ सहेस
 रन्हबहुकालविषादा ॥ नरहरिकिएप्रगटप्रल्हादा ॥ ल
 गिलगिकानकहिहिंधुनिमाथा ॥ अवसरकाजभरत
 केहाथा ॥ आनउपायनदेरिषयदेवा ॥ मानतरामससेव
 कसेवा ॥ हियसप्रेमसेवहुसबभरतहि ॥ निजगुणशील
 रामबशकरतहि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सनिसरमतसुरगु
 रुकहेउ ॥ भलतुह्मारबडभाग ॥ सकलसुमंगलमूलज
 ग ॥ भरतचरणअनुराग ॥ २६१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सीता
 पतिसेवकसेवकाई ॥ कामधेनुसमसरिससहाई ॥ भ
 रतभक्तितुमरेमनआई ॥ तजहुशोचबिधिबातबना
 ई ॥ देखुदेवपतिभरतप्रभाऊ ॥ सहजसभावबिबशर
 घुराऊ ॥ मनथिरकरहुदेवडरनाहीं ॥ भरतहिजानिरा
 मपरछाहीं ॥ सनिसरगुरुसरसंमतशौच ॥ अंतरजा
 मीप्रजुहिसंकोच ॥ निजशिरभारभरतजियजाना ॥ कर
 तकोटिविधिउरअनुमाना ॥ करिविचारमनदीन्हसुठी
 का ॥ रामरजायसुआपननीका ॥ निजपणतजिराखे
 उपनमोरा ॥ ओहसनेहकीन्हनहिंथोरा ॥ ॥ दोहा ॥
 कीन्हअनुग्रहअमितअति ॥ सबविधिसीतानाथ ॥
 करिप्रणामबोलेभरत ॥ जोरिजलजयुगहाथ ॥ २७०
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कहउकहावउंकाअबस्वामी ॥ कृपाअ
 बुनिधिअंतरयामी ॥ गुरुप्रसन्नसाहिबअनुकूला ॥
 मिटीमलीनमनकल्पितभूला ॥ अपडरडरेउंनशोच
 समूला ॥ रबिहिनदोषदेबदिशभूला ॥ मोरअभाग्य-

मातु कुटिलाई ॥ विधि गति विषम काल कठिनाई ॥ पांवरो
 पिसव मिलि मोहि घाला ॥ प्रणत पाल पण आपन पाला ॥
 इहन इरीति न राउ रि होई ॥ लोकहु वेद विदित नहि गोई
 ॥ जग अन भल भल एक गो सांई ॥ कहिय होइ भल कास
 भलाई ॥ देव देव तरु सरिस सभाऊ ॥ सन मुख विमुख
 काहु हि काऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाइनि कट पहि चानित रु
 ॥ छोह शमन सब शोच ॥ मांगत अभिमत पाव जग ॥ राउ
 रंक भल पोच ॥ २७१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लखि सब
 रुस्वामी सनेह ॥ मिटेउ भो भगत मन संदेह ॥ अवकरु
 एा कर कीजिय सोई ॥ जनहित प्रभु चित क्षोभन होई ॥
 जो सेवक साहिबहि संकोची ॥ निजहित चहै तासु मति
 पाची ॥ सेवक सहित साहिब सेवकाई ॥ करै सकल सु-
 ख लोभ विहाई ॥ स्वारथ नाथ फिरें सब हींका ॥ किएर-
 जाइ कोटि विधि नीका ॥ इह स्वारथ परमारथ सारू ॥ स
 कल सुकृत फल सुगति शिगारू ॥ देव एक बिन तीसुनि
 मोरी ॥ उचित होइ तस करवव होरी ॥ तिलक समाज सा
 जिसव आना ॥ करिय सुफल प्रभु जो सनमाना ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ सानुज पटइय मोहि वन ॥ कीजिय सब हि सना
 थ ॥ नतरु फेरिय बंधु दोउ ॥ नाथ चलों मै साथ ॥ २७२ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ नतरु जाहि वन तीनि उभाई ॥ बहुरिय सी
 य सहित राखु राई ॥ जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई ॥ क
 रुणा सागर कीजिय सोई ॥ देव दीन्ह सब मो परभारू ॥
 मोरे नीति न धर्म विचारू ॥ कहों वचन सब स्वारथ हेतू ॥
 रदन न आरत को चित चेतू ॥ उतर देइ सानि स्वामि रजाई
 ॥ मांसे वकल निन्या जल जाई ॥ असमें अवगुण उदधि

अगाधू॥ स्वामिसनेह सराहत साधू॥ अवलुपालुमी
 हि सोमतभावा॥ सकुचस्वामि मनजाइनपावा॥ प्रभु
 पदशपथ कहौं सति भाऊ॥ जगमंगलहित एकउपाऊ
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुप्रसन्न मन संकुच तजि ॥ जो जेहि
 आयसुदेव ॥ सो सिरधरि धरि करहिं सब ॥ मिदिहिं
 अनट अवरैव ॥ २७३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भरतबचन
 सुनि सुनि हिय हरषे ॥ साधु सराहि समन सरवरषे ॥
 असमंज सब श अवधनि वासी ॥ प्रसुदित मन तापस
 बन बासी ॥ चुपु रहि गेरघुनाथ संकोची ॥ प्रभु गति दे
 रिव सभा सब शोची ॥ जनक दत्त तेहि अवसर आए ॥
 मुनि विशिष्ट सुनि वेगि बुलाए ॥ करि प्रणाम तिन्ह राम
 निहारे ॥ वेष देखि भेनि पट दुखारे ॥ दूतहिं मुनि वरबू
 जी बाता ॥ कहहु विदेह भूप कुशलाता ॥ सुनि सकुचा
 इ नई महिमा था ॥ बोले चरवर जौ रैं हाथा ॥ बूजवराउ
 र सादर साई ॥ कुशल हेतु सो भये गो साई ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ नाहित कोशल नाथ कै ॥ साथ कुशल गै नाथ ॥ मिथिला
 अवध विशेषतें ॥ जग सब भयउ अनाथ ॥ २७४ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ कोशल पति गति सुनि जन कौरा ॥ भे सब लोग
 शोक वश वौरा ॥ जेहि देखातें हि समय विदेह ॥ नाम सत्य
 असलागन केहू ॥ रानि कुचाली सुनत महिपालहिं ॥ सू
 जन कछु जस मणि बिनु ब्यालहिं ॥ भरतराज रघुवर ब
 न बास ॥ भामिथिले शहदय हतरास ॥ नृप बूजे बुधस
 ॥ कहहु बिचारि उचित का आजू ॥ समुझि अ
 वध असमंजस दोऊ ॥ चलि यकि रहियन कह कोऊ ॥ नृ
 तधीर धरि हृदय बिचारी ॥ पठये अवध चतुर चरचारी ॥

बूझि भरत सत भाउकुभाऊ ॥ आयेहु बेगिन होइ लपाऊ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ गए अवध चल भरत गति ॥ बूझि देखि क
 रतूति ॥ चले चित्रकूटहि भरत ॥ चार चलेति रहति २७५
 ॥ चौपाई ॥ ॥ दूतन्ह आइ भरत किकरणी ॥ जनक समा
 जय धामति बरणी ॥ मुनि गुरु पुरजन सचिव महीपति
 ॥ भे सब शोचै सनेह बिकल अति ॥ धरि धीरज करि भ
 रत बडाई ॥ लिए सब दसाहनि बुलाई ॥ घर पर देश रा
 खिर ख वारे ॥ हय गजरथ बहु यान सवारे ॥ दुधरी सा
 धि चलेत त काला ॥ किय विश्राम नम गुमहि पाला ॥ भो
 रहिं आ जुन होइ प्रयागा ॥ चले यमुन उतरन सब लाग
 ॥ खबरिले न हम पठ एनाथा ॥ तिन्ह कहि असमहिना
 येउमाथा ॥ साथ किरात छ सात कदीन्हे ॥ मुनि वरतुर
 त बिदा कर चीन्हे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनत जनक आग
 मन सब ॥ हर्षेउ अवध समाज ॥ रघुनंदन हिं संकोच
 बड ॥ शोच विवश सरराज ॥ २७६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ग
 रइ गलानि कुटिल कै केयी ॥ काहिक है केहि दूषण देई ॥
 असमन अनि सुदित नरनारी ॥ भयेउ व होरि रहवदि
 नचारी ॥ इहि प्रकार गत वासर सोऊ ॥ प्रात अन्हान ला
 ग सब कोऊ ॥ करि मज्जन पूजहिं नरनारी ॥ गणपति गो
 रि पुरारित मारी ॥ रमारमण पद बंदि बहोरी ॥ विन बहिं
 अजलि अंचल जोरी ॥ राजाराम जान कीरानी ॥ आनंद
 अवधि अवध रज धानी ॥ स्ववशव सहिं फिरि सहित स
 माजा ॥ भरत हिं राम करहिं युवराजा ॥ इहि सरख सुधा
 सींचि सब काहु ॥ देव देहु जग जीवन लाहु ॥ ॥ दोहा ॥
 गुरु समाज भाइन्ह सहित ॥ राम राज पुर होउ ॥ अछत

रामराजा अबध ॥ मरिय मांग सब कोउ ॥ २७७ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ सुनिसनेह मय पुरजन बाणी ॥ निंद
बिरति सुनि जानी ॥ इहि विधिनित्य कर्म करि पुरज सु ॥
रामहिं करहिं प्रणाम पुलकित सु ॥ उंच नीच मध्य मन रना
री ॥ लहहिं दरशनिज निज अनुहौरी ॥ सावधान सबहिं
सन माहिं ॥ सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥ लरिकाहीं
तैं रघुवर बाणी ॥ पालत नीति प्रीति पहि चानी ॥ शील
सकोच सिंधुर घुराऊ ॥ सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ
॥ कहत राम गुण गण अनुरागे ॥ सब निज भाग्य सराह
न लागे ॥ हम सम पुण्य पुज जग थोरे ॥ जिनहिं राम जा
नत करि मोरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रेम मगन तेहि समय स
ब ॥ सुनि आवत मिथिलेश ॥ सहित सभा संभ्रम उठे
॥ रवि कुल कमल दिनेश ॥ २७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भा
ई सचिव गुरु पुरजन साथ ॥ आगेंगवन कीन्ह रघुना
थ ॥ गुरुवर दीख जन कनूष जबहीं ॥ करि प्रणाम त्यागा
रथ न बहीं ॥ राम दरश लाल सा उछाहु ॥ पथ अमलेश
कलेशन काहु ॥ मनुत हंज हं रघुवर बैदेही ॥ बिनु मन
तनु दुख सुख सुधिकेही ॥ आवत जनक चले इहि भांती
सहित समाज प्रेम मति भांती ॥ आनिकट देरि व अनुरा
गे ॥ सादर मिलन पर स्पर लागे ॥ लगे जनक सुनि गणप
द वंदन ॥ ऋषिन्ह प्रणाम कीन्ह रघुनंदन ॥ भाइन सहि
त राम मिलि राजहिं ॥ चले लवाइ सनेत समाजहिं ॥
दोहा ॥ ॥ आश्रम सागर शांतरस ॥ पूरण पावन पाथ
॥ सैन मनहुं करुणा सहित ॥ लिये जात रघुनाथ ॥ २७९
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तोरति ज्ञान विराग करार ॥ वचन स

शोकमिलतनदनारे ॥ शोचउ सांससमीरतरंगा ॥ धीरज
 तदतरुवरकरभंगा ॥ विषमविषादतुरावतिधारा ॥
 मभंवरआवर्तअपारा ॥ कैवटबुद्धिविद्यापडिनावा ॥ सक
 हिनखेइएकनहिआवा ॥ बनचरकोलकिरातविचारे ॥
 केबिलोकियथिकहियहारे ॥
 ई ॥ मनहुउठेअबुधिअकुलाई ॥ शोकविकलहौराजसा
 माजा ॥ रहानज्ञाननधीरजलाजा ॥ भूपरूपगुणशीलस
 राही ॥ रोवहिंशोकसिंधुअवगाहीं ॥ ॥ छंद ॥ ॥ अव
 गाहिशोकसमुद्रशोचहिंनारिनरव्याकुलमहा ॥ दैदोष
 सकलसरोषबोलहिं वामविधिकीन्होकहा ॥ २१ ॥ सुर
 सिद्धतापसयोगीजनमुनिदशादेखिविदेहकी ॥ तुल
 सीनसमरथकोउजौतरिशकैसरितसनेहकी ॥ २२ ॥ ॥
 सोरठा ॥ ॥ किएअमितउपदेश ॥ जहतहेंलोगन्हमुनि
 वरन्ह ॥ धीरजधरियनरेश ॥ कहेउबशिष्टविदेहसन ॥
 ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जासुज्ञानरविभवनिशिनाशा
 ॥ बचनकिरणमनकमलविकाशा ॥ तेहिकिमोहमम
 तानियराई ॥ यहसियरामसनेहवडाई ॥ विषयीसाध
 कसिद्धसयाने ॥ त्रिविधजीवजगवेदवरवाने ॥ रामस
 नेहसरसमनजासु ॥ साधुभावबडआदरतासु ॥ सो
 हनराममेमविनुज्ञाना ॥ कर्णधारविनुजिमिजलयाना
 ॥ मुनिबहुविधविदेहसमजाए ॥ रामघाटसवलोगअन्ह
 हाए ॥ सकलशोकसंकुलनरनारी ॥ सोवासरबीतेउवि
 नुचारी ॥ पशुरवगमृयनिनकीन्हअहारा ॥ प्रियपरिजन
 करकवनविचारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दोउसमाजमिलिराज
 रघु ॥ राजनहानेमात ॥ दैदेसबवटविटपतर ॥ मनमली-

नकुशगात ॥ २८१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जेमहिसरदशर
थपुरवासी ॥ जेमिथिलापतिनगरनिवासी ॥ हंसवंशगु
रुजनकपुरीधा ॥ जिन्हजगमगपरमारथशोधा ॥ लगे-
कहनउपदेशअनेका ॥ सहितधर्मनयविरतिबिबेका ॥
कौशिककहिकहिकथापुराणी ॥ समुजाइसबसभास
बाणी ॥ तबरघुनाथकौशिकहिकहेऊ ॥ नाथकालिज
गबिनुसबरहेऊ ॥ सुनिकहउचितकहतसरसुसाई ॥ गय
उबीतिदिनपहरअदाई ॥ ऋषिरुषलरिवकहतिरहुति
राजु ॥ इहांउचितनहींअशनअनाजु ॥ कहाभूपबलस
बहिसोहाना ॥ पाइरजायसुचलेनहाना ॥ ॥ दोहा ॥
तेहिअवसरफूलफलदल ॥ मूलअनेकप्रकार ॥ लैंआ
एबनचरबिपुल ॥ भरिभरिकावरिभार ॥ २८२ ॥ ॥ चौपा
ई ॥ ॥ कामदभेगिरिरामप्रसादा ॥ अबलोकतअपह
रतविषादा ॥ सरसरितावनभूमिविभागा ॥ जबुउमग
तआनंदअनुरागा ॥ बेलिबिदपसबसफलसफूला ॥
बोलतरवगमृगअतिअनुकूला ॥ तेहिअवसरवनअ
धिकउछाहू ॥ त्रिविधसभीरसरवदसबकाहू ॥ जाईन
बरणिमनोहरताई ॥ जनुमहिकरतजनकपहुनाई ॥
तबसबलोगनहाइनहाई ॥ रामजनकसुनिआयसुपा
ई ॥ देखिदेखितरुवरअनुरागे ॥ जहंतहंपुरजनउतर
एलागे ॥ दलफलफूलकंदविधनाना ॥ पावनसुंदरसु
धासमाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सादरसबकहेरामगुरु ॥ प
ठएभरिभरिभार ॥ पूजिपितरसरगुरुअतिथि ॥ लगे
करणफलहार ॥ २८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इहि
रबीनेचारी ॥ रामनिरखिनरनारिसरवारी ॥ ॥

जअसरुचिमन माहीं ॥ विनुसियरामफिरव भलनाहीं ॥
 ॥ सीतारामसंग बनवास ॥ कोटिअमरपुरसरिससुपा
 श्रू ॥ परिहरिलषणरामवैदेही ॥ जेहिघरभावबामवि-
 धितेहीं ॥ दाहिनदैवहोइजवसवहीं ॥ रामसमीपवसि
 यवनतवहीं ॥ मंदाकिनिमज्जनतिहुकाला ॥ रामदरश
 मुदमंगलमाला ॥ अटनरामगिरिवनतापसथल ॥ अश
 नअमियसमकंदमूलफल ॥ स्वरवसमेतसंवतहुइसा-
 ता ॥ पलसंमहोहिनजानीयजाता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहि
 स्वरवयोगनलोगसब ॥ कहहि कहांअसभाग ॥ सहज
 सभावसमाजदुहुं ॥ रामचरणअनुराग ॥ २८४ ॥ ॥
 चौपाई ॥ इहिविधसकलमनोरथकरहीं ॥ वचनसप्रे
 मसुनतमनहरहीं ॥ सीयमातुतेहिसमयपठाई ॥ दासी
 देरिवसुअवसरआई ॥ सावकाशसुनिसबसियसासु
 ॥ आणउजनकराजरनिवासु ॥ कौशल्यासादरसनमा
 नी ॥ आसनदीन्हसमयसबजानी ॥ शीलसनेहसरसदु
 हुंओरा ॥ इवहिदेरिवसुनिकुलिशकठोरा ॥ पुलकशि
 धिलतनुवारिविलोचन ॥ महिनखलिरवनलगीसबशो
 चन ॥ सबसियरामप्रेमकीमूरति ॥ जनुकरुणादहुवेष
 विसरति ॥ सीयमातुकहविधिवुद्धिबाकी ॥ जिमिपय-
 फेनुफोरफविटाकी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनियसुधादेरिव
 यगरल ॥ सवकरतूतिकराल ॥ जहतहंकाकउलुकवक
 ॥ मानसस्वहतमराल ॥ २८५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिस
 कोचकहंदेवसुमित्रा ॥ विधिगतिअतिविपरीतविचि
 आ ॥ जोसृजिपालइहरइचहोरी ॥ बालकैलिसमविधिमा
 तिमारी ॥ कौशल्यातहदोपनकाहु ॥ कर्मविवशदुरवसु

स्वक्षतिलाहू॥ कठिनकर्मगतिजानविधाता॥ जोशुभ
 अशुभकर्मफलदाता॥ ईशरजाइशीससबहींके॥ उत
 पतिस्थितिलयविषहुअमीके॥ देविमोहबशसोचिय
 वादी॥ विधिप्रपंचअसअचलअनादी॥ भूपतिजिय
 वमरबउरआनी॥ शोचिअसवीलखिनिजहितहानी॥
 सीयमातुकहसत्यसुवाणी॥ सुकृतअवधिअवधप-
 तिरानी॥ ॥ दोहा॥ ॥ लषणरामसियजाहिंबन॥ भ-
 लिपरिणामनपोच॥ गहवरिहियकहकौशल्य॥ मोहि
 भरतकरशोच॥ २८६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ ईशप्रसादआ-
 शीषतुह्मारी॥ सुतसुतबंधुदेवसरिवारी॥ रामसपथ
 मैकीन्हनकाऊ॥ सोकरिसखीकहौसतिभाऊ॥ भरतशी-
 लगुणबिनयबडाई॥ भायपभक्तिभरोसभलाई॥ कह-
 तशेषशारदमतिहीचे॥ सागरसीपकिंकरन्हउलीचे॥
 जानौसदाभरतकुलदीपा॥ बारबारमोहिकहेउमहीपा॥
 ॥ कसैकनकमणिपारिषपाए॥ पुरुषपरीक्षियसमयसु-
 भाए॥ अनुचितआजु कहवअसमोरा॥ शोकसनेह
 सयानपथोरा॥ सुनिसुरसरिसमयावनिबाणी॥ भ-
 ईसनेहबिकलसबरानी॥ ॥ दोहा॥ ॥ कौशल्यक-
 हधीरधरि॥ सुनहुदेविमिथिलेशि॥ कोविवेकनिधि
 बलुभहिं॥ तुमहिंशकैउपदेशि॥ २८७॥ ॥ चौपाई॥
 रानिरायसनिअवसरपाई॥ आपनिभांतिकहबससु-
 जाई॥ रारिवयलषणभरतगवनहिबन॥ म
 नैमहीपमन॥ तोभलयतनकरबसुबिचारी॥ मोरशो-
 चभरतकरिभारी॥ गूढसनेहभरतमनमाहीं॥ रहेनी-
 कमोहिलागतनाहीं॥ लखिसुभावसुनिसरलसुबा

एणी ॥ सबभइमगनकरुणारससानी ॥ नभप्रसूनऊरि
 धन्यधन्यध्वनि ॥ शिथिलसनेहसिद्धयोगीसुनि ॥ सु
 वरनिवासविथकिलखिरहेऊ ॥ तबधरिधीरसुमित्रा
 कहेऊ ॥ देविदंडयुगयामिनिवीती ॥ राममातुसुनिउठीं
 सप्रीतीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वेगिपायधारियलहिं ॥
 नेहसतिभाय ॥ हमरेंतबअवईशगति ॥ कैमिथिलेश
 हाय ॥ २८८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लपिसनेहसुनिबचनवि
 नीता ॥ जनकप्रियागहिपांयपुनीता ॥ देविउचित
 नयतुह्तारी ॥ दशरथघरणि राममहतारी ॥ प्रभुअपने
 नीचहुंआदरहीं ॥ अग्निधुमगिरिशिरसुणधरहीं ॥
 सेवकराउकर्ममनबाणी ॥ सदासहायमहेशभवानी ॥
 रेअंगयोगजगकोहै ॥ दीपसहायकिदिनकरसोहै ॥ रा
 मजाईवनकरिस्तरकाजु ॥ अचलअवधपुरकरिहहिं
 राजु ॥ अमरनागनररामबाहुबल ॥ स्तरववसिहहिंअ
 नेकअपनेथल ॥ इहसबयाज्ञवल्क्यकहिरारवा ॥ देवि
 नहोईरुधासुनिभाषा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ असकहिपद
 परिममअति ॥ सियहितविनयसुनाई ॥ सियसमेत
 सियमातुसब ॥ चलीसुआयसुपाई ॥ २८९ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ प्रियपरिजनहिभिलिवैदेहो ॥ जोजेहियोगभां
 नितिदिनेहो ॥ तापसवंपजानकिहिंदेधी ॥ भेसवविक
 लनिषादविशेषो ॥ जनकरामगुरुआयसुपाई ॥ चलै
 चलहिसियदेखैउआई ॥ लोन्हिलाइउरजनकजान
 री ॥ पाहुनिपाननिममप्राणकी ॥ उरउरगोउअंबुधि
 अनुसारी ॥ भयउभूपसनमनहुंप्रगारू ॥ सियसनेह
 बटवादनजोहा ॥ नापरराममेमेशिशुसोहा ॥ निरंजो

विमुनिज्ञानविकजनु ॥ बूडतलहेउवाल अबलंबनु ॥ मो
हमगनमतिनहि विदेहकी ॥ महिमासीयरघुवरसनेह
की ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीयपितुमातुसनेहवश ॥ बिकलन
शकेसंभारि ॥ धरणीसुताधीरजधरेउ ॥ समयसुधर्म
बिचारि ॥ २६० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तापसवेषजनकसि
यदेवी ॥ भएउप्रेमपरितोषविशेषी ॥ पुत्रिपवित्रकीए
कुलदोऊ ॥ सुयशधवलजगकहसबकोऊ ॥ जिमिसु
रसरिकीरतिसरितोरी ॥ गवनकीन्हविधिअंडकरोरी
॥ गंगअवनिथलतीनिबडेरे ॥ इहिकिएसाधुसमाज
घनेरे ॥ पितुकहसत्यसनेहसुबाणी ॥ सीयसंकुचमहं
मनहुसमानी ॥ पुनिपितुमातुलीहउरलाई ॥ शिखअ
शिषहितदीन्हिसुहाई ॥ कहतिसंकुचितसियमनमा
हीं ॥ इहांवसवरजनीभलनाहीं ॥ लखिरुखिरानिजना
यउराऊ ॥ हृदयसराहतशीलसुभाऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बा
रबारमिलिभेंटिसिय ॥ विदाकीन्हसनमानी ॥ कहास
मयशिरभरतगति ॥ रानिसुबाणिसयानि ॥ २६१ ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिभूपालभरतव्यवहारू ॥ स्वर्णसुअं
गसुधाशशिसारू ॥ सुंदेसजलनयनपुलकतन ॥ सुय
शसराहनलगेसुदितमन ॥ सावधानसुनुसुमुखिदसु
लोचनि ॥ भरतकथाभवबंधविमोचनि ॥ धर्मराजनय
ब्रह्मविचारू ॥ इहांयथामतिमोरप्रचारू ॥ सोमतिमो
रिभरतमहिमाहीं ॥ कहौकाहछलछुअतिनछाहीं ॥
विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद ॥ कविकोविदबु-
धबुद्धिविशारद ॥ भरतचरितकीरतिकरतूती ॥ धर्मशी
लगुणबिमलबिभूती ॥ समुजतसुनतसरवदसबका

हू॥ शक्तिस्तरुसरिरुचिनिदरिस्तथाहू॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 रबधिगुणनिरुपमपुरुष॥ भरतभरतसमजानि॥ कहि
 यस्तमेरुकिसेरसम॥ कबिकुलमतिकुचानि॥ २२२॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ अगमसबहिबरणतबरबरी॥ जिमिज
 लहीनमीनगणधरणी॥ भरतअमितमहिमास्तनुरा
 नी॥ जानहिंरामनशकहिंवरवानी॥ बरणिप्रेमभरतअ
 नुभाऊ॥ तियजियकीरुचिलखिकहराऊ॥ बहुरहिल
 षणभरतवनजाहीं॥ सबकरभलसबकेमनमाहीं॥ देवि
 परंतुभरतरघुवरकी॥ प्रीतिप्रतीतिजाईनहिंतरकी॥
 यद्यपिरामसीयसमताके॥ भरतअवधिसनेहममता
 के॥ परमारथस्वारथस्वरसारे॥ भरतसपनेहुंमनहुं
 निहारे॥ साधनसिद्धरामपदनेहू॥ मोहिलखिपरतभ
 रतमतिएहू॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भोरेहुभरतनबोलहहिं॥
 मनमहरामरजाइ॥ करियनशोचसनहवश॥ कहेंउभू
 पविलरवाई॥ २२३॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामभरतगुणग
 णतसप्रीती॥ निसिदंपतिहिंपलकसमबीती॥ राजस-
 माजप्रातयुगजागे॥ न्हाइन्हाइस्तरपूजनलागे॥ गेनहा
 इगुरुपहिंरघुराई॥ वंदिचरणबोलेरुषपाई॥ नाथभर
 तपुरजनमहतारी॥ शोकविकलवनवासदुरवारी॥ स
 हितसमाजराउमिथिलेशू॥ ॥ ॥
 ॥ उचितहोइसोकीजियनाथा॥ हितसबहीकररोरेहाया
 ॥ असकहिअतिसंकुचेरघुराऊ॥ मुनिपुलकेलखिशी
 लस्तभाऊ॥ तुमबिलु रामसकलस्तरवसाजा॥ नरकसरि
 सहुंराजसमाजा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्राणप्राणकेजीयके॥
 ॥ स्तरवकेस्तरवतुमराम॥ तुमनजितानसोहतगुहा॥ जि

न्हितिन्हिंविधिवाम॥२६४॥ ॥चौपाई॥ ॥सेस
 रवकरमधरमजरिजाऊ॥जहंनरामपदपंकजभाऊ॥यो
 गकुयोगज्ञानअज्ञानु॥जहांनरामप्रेमपरधानु॥तुमबिनु
 दुरवीसरवीतुमतेही॥तुमजानहुजियजोजेहिदेही॥रा
 उरआयसुशिरसबहीके॥विदितरूपालहिगतिसब
 नीके॥आपुआअमहिंधारियपाऊ॥भएउसनेहशि
 थिलमुनिराऊ॥करिप्रणामतबनामसिधाए॥अविध
 रिधीरजनकपहिंआए॥रामवचनगुरुनृपहिंसुनाए॥
 शीलसनेहसुभावसुहाए॥महाराजअबकीजियसोई
 ॥सबकरधर्मसहितहितहोई॥ ॥दोहा॥ ॥ज्ञाननि
 धानसुजानभुचि॥धर्मधीरनरपाल॥तुमबिनुअसमं
 जसशमन॥कोसमर्थइहिकाल॥२६५॥ ॥चौपाई॥
 सुनिमुनिबचनजनकअनुरागे॥लखिगतिज्ञानविरा
 गविरागे॥शिथिलसनेहगुणतमनमाहीं॥आइइहां
 कीन्हभलनाहीं॥रामहिंराउकहेउवनजाना॥कीन्हआ
 पुप्रियप्रेमप्रमाणा॥हमअबबननेबनहिंपठाई॥प्रसु
 बवेकबढाई॥तापससुनिमहिसरसुनि
 देखी॥भएप्रेमबशबिकलविशेषी॥समयसमुजिध
 ।चलेभरतपहिंसहितसमाजा॥भरत
 आयआगेंहुयलीन्हे॥अवसरसरिससुआसनदीन्हे
 ॥तातभरतकहतिरहुतिराऊ॥तुमहिंविदितरघुबीर
 सुभाऊ॥ ॥दोहा॥ ॥रामसत्यव्रतधर्मरत॥सबकर
 शीलसनेहु॥संकटसहतसंकोचबश॥बहियसोआ
 यसुदेहु॥२६६॥ ॥चौपाई॥ ॥सुनितनुपुलकिन
 रवारी॥बोलेभरतधीरधरिभारी॥प्रभुसियपू-

ज्यपितासमश्चापू॥ कुलगुरुसमहितमायनबापू॥ कौ
 शिकादिमुनिसचिवसमाजू॥ ज्ञानअंबुनिधिआपु
 नआजू॥ शिशुसेवकआयसुअनुगामी॥ जानिमोहि
 शिरवदेइयस्वामी॥ इहिसमाजथलबुजवराउर॥ मन
 मलीनमैबोलतबाउर॥ छोटेवदनकहौवडिवाता॥ क्ष
 मवतातलरिववामविधाता॥ आगमनिगमप्रसिद्धपुरा
 णा॥ सेवाधर्मकठिनजगजाना॥ स्वामीधर्मस्वारथहिवि
 रोधू॥ वैरअंधप्रेमहिंनप्रबोधू॥ ॥ दोहा॥ ॥ राखि
 रामरुषधर्मव्रत॥ पराधीनमोहिजानि॥ सबकेसंमतस
 र्वोहित॥ करियप्रेमपहिचानि॥ २६७॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 भरतवचनसुनिदेरिवसुभाऊ॥ सहितसमाजसराइन
 राऊ॥ सुगमअगममृदुमंजुकठोरे॥ अर्थअमितअति
 आरवरथोरे॥ ज्यौंसुखसुकुरसुकुरनिजपाणी॥ गहिन
 जाइअसअदुतवाणी॥ भूपभरतसुनिसाधुसमाजु॥
 गेजहंबिबुधसुकुदद्विजराजु॥ सुनिसुधिशोचविकल
 सवलोगा॥ मनहुंमीनगणनवजलयोगा॥ देवप्रथमकु
 लगुरुगतिदेयी॥ निरखिविदेहसनेहविशेषी॥ रामभ
 क्तिभयभरतनिहारे॥ सुखस्वारथीहहरिहियहारे॥ स
 वकोउरामप्रेममयपेरवा॥ भएअलेखशोचवशलेखा
 ॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामसनेहसंकोचवश॥ कहसशोच
 सुखराज॥ रचहुप्रपंचहिंपंचमिलि॥ नहितभएउअका
 ज॥ २६८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुखसुमिरिशारदास
 राही॥ देविदेवशरणागनपाही॥ फेरिभरतमतिकरि
 निजमाया॥ पालुविबुधकुलकारछलछाया॥ विबुध
 धिनयसुनिदेविसयानी॥ बोलैसुखस्वारथजडजानी॥

मोसन कहहु भरत मति फेरू ॥ लोचन सहसन सूऊ समेरू ॥
 ॥ विधि हरिहर माया बडि भारी ॥ सोन भरत मति शकै नि
 हारी ॥ सोमति मोहि कहत करु भोरी ॥ चांदन करै किंचंद्र
 कर चोरी ॥ भरत हृदय सिय राम निवास ॥ तहां किति मिर
 जइ तरणि प्रकाशू ॥ अस कहि शारद गड विधि लोका ॥ वि
 बुध बिकल निशि मानहु कोका ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरस्वा
 रथी मलीन मन ॥ कीन्ह कुमंत्र कुठठ ॥ रवि प्रपंच माया
 प्रबल ॥ भए भ्रम आर्त उचाट ॥ २६६ ॥ ॥ चौपाई ॥
 करि कुचालि शोचत सर राजा ॥ भरत हाथ सब काज अ
 काजा ॥ गए जनकर घुनाथ समीपा ॥ सनमाने सब रघु
 कूल दीपा ॥ समय समाज धर्म अविरोधा ॥ बोले तबर
 घुवंश पुरोधा ॥ जनक भरत संवाद सुनाई ॥ भरत कहा
 उतिकही सुहाई ॥ तात राम जस आय सुदेहू ॥ सो सब क
 रै मोर मत एहू ॥ सुनिरघुनाथ जोरियुग पाणी ॥ बोले स
 त्य सरल मृदु बाणी ॥ विद्यमान आपुन मिथिल भू ॥ मो
 र कहव सब भांति भद्रे सु ॥ राउर राय रजाय सु होई ॥ रा
 उरि शपथ सहिसिर सोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम शपथ सु
 निमुनि जनक ॥ सकुच सभा समेत ॥ सकल बिलोकहि
 भरत मुख ॥ बने न उत्तर देत ॥ ३०० ॥ ॥ चौपाई ॥
 सभा सकुच बश भरत निहारी ॥ राम बंधु धरि धीरज
 भारी ॥ कुसमय देखि सनेह संभारा ॥ बहत बिंध्याजि मि
 घटज निवारा ॥ शोक कनक लोचन मति क्षीणी ॥ हरी वि
 जग योनी ॥ भरत बिबेक बराह बिशाला ॥
 अनायास उधरीति हि काला ॥ करि प्रणाम सब कहं क
 र जोरे ॥ राम राउ गुरु साधु निहारे ॥ क्षमव आजु अति-

अनुचित मोरा ॥ कहंउं वंदन मृदु बचन कठोरा ॥ हृदय सु
 मिरिशारदा सहार्द्र ॥ मानस तें सुख पंकज आई ॥ विम
 ल बिबेक धर्म नय शाली ॥ भरत भारती मंजु मराली ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ निरखिविवेक बिलोचन न्हि ॥ शिथिल सने
 ह समाज ॥ करि प्रणाम बोले भरत ॥ सुमिरि सीयर सु
 राज ॥ ३०१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभु पितु मातु सह दगुरु
 स्वामी ॥ पूज्य परम हित अंतरजामी ॥ सरल सहा वि
 शील निधानू ॥ प्रणत पाल सर्वज्ञ सज्जानू ॥ समरथ शर
 णागत हितकारी ॥ गुणग्राहक अवगुण अघहारी ॥ स्वा
 मि गोसांई हिंसरि सगोसांई ॥ मोहिसमान मै स्वाभिदो
 हाई ॥ प्रभु पितु बचन मोह बश पेली ॥ आएउं इहां समा
 ज संकली ॥ जगभल पोच ऊंच अरु नीचू ॥ अमिय अमि
 र पद माहुर मीचू ॥ रामरजाय मे टिमन माहीं ॥ देखा स
 नाकत हुं कोउ नाहीं ॥ सोमैं सब विधिकी न्हि दिवाई ॥ प्र
 भुमानी सनेह सेवकाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृपा भलाई आ
 पनि ॥ नाथ कीन्ह भल मोर ॥ दूषण भे भूषण सरिस ॥ सु
 यश चारु चहुं ओर ॥ ३०२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राउरि नीति
 सुवाणि चडाई ॥ जगत विदित निगमागम गाई ॥ कूरकु
 टिल रत्नल कुमति कुलंकी ॥ नीचनिःशील निरीश निशंकी
 ॥ ते सुनि शरण सासु हे आए ॥ सुकृत प्रणाम किए अप
 नाए ॥ देखि दोष कबहुन उर आने ॥ सुनि गुण साधु समा
 ज चरवाने ॥ कोसाहि वसंव कहि निवार्जी ॥ आपु समान
 साज सब सार्जी ॥ निज कर नूतिन ससुजिय सपने ॥ सेव
 क सकुच शोच उर अपने ॥ सोगोसांई नहि दुसर कोपी ॥
 भुजा उठाइ कही पागोपी ॥ पसुनाचन शक पाठ प्रवीणा ॥

गुणगतिनटवाठकआधीना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यों संधारि
सनमानिजन ॥ किए साधुशिरमौर ॥ को कृपालु बिनु पा
हिलै ॥ बिरुदावलिकरजोर ॥ ३०३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शोक
सनेह कबालसभाए ॥ आए उरांतरजायमिटाए ॥ तबहुं
कृपालु हेरिनिजआरा ॥ सबहिभातिअलमानेहुमोरा ॥
देखेउपांयसमंगलमूला ॥ जानेउंस्वामिसहजअनुकू-
ला ॥ बडेसमाजबिलोकेउभागू ॥ बडेचूकसाहिबअनु
रागू ॥ कृपाअनुग्रहअंगअघाई ॥ कीन्हिकृपानिधिस
बअधिकाई ॥ राखामोरदुलारगोसाई ॥ अपनेशीलसु
भावभलाई ॥ नाथनिपटमैकीन्हिटिठाई ॥ स्वामिसमा
जसंकोचबिहाई ॥ अबिनयबिनययथारुचिबाणी ॥
क्षमियदेवअतिआरतजाणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुहृदसु
जानससाहिंबहिं ॥ बहुतकहवबरिखोरि ॥ आयसदे
इयदेवअव ॥ सबहिंसंधारियमोरि ॥ ३०४ ॥ ॥ चौपाई
॥ ॥ प्रभुपदपद्मपरागदोहाई ॥ सत्यसुकृतसरवसीम
॥ सोकरिकहौहियेयेअपनेकी ॥ रुचिजागतसो
वतसपनकी ॥ सहजसनेहस्वामिसेवकाई ॥ स्वारथछ
लफलचारिविहाई ॥ आज्ञासमनहिसाहिबसेवा ॥ सो
मसादजनपावैदेवा ॥ असूकहिप्रेमबिबशभएभारी ॥
॥ प्रभुपदकमलगहेअकु-
लाई ॥ समयसनेहनसोकहिजाई ॥ कृपासिंधुसनमानि
॥ बैठाएसमीपगहिपाणी ॥ भरतबिनयसुनि
देखिसभाऊ ॥ शिथिलसनेहसभारधुराऊ ॥ ॥ छंद ॥
॥ रघुराउशिथिलसनेहसाधुसमाजसुनिमिथिलाध-
नी ॥ मनमहंसराहतभरतभायपभक्तिकीमहिमाघनी ॥

॥२३॥ भरतहिमंशंसतबिबुधवरषतसुमनमानसमलि
 नसे ॥ तुलसीबिकलसबलोगसुनिसंकुचैनिशागमनलि
 नसे ॥ २४ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ देखिदुरवारीदिन ॥ दुहुस-
 माजनिरनारिसब ॥ मघवामहामलीन ॥ सुएमारिमंग
 लचहत ॥ ३०५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कपटकुचालिसीससु
 रराजू ॥ परअकाजप्रियआपनकाजू ॥ काकसमानपा-
 करिपुरीती ॥ छलीमलीनकतहूनप्रतीती ॥ प्रथमकुम
 तिकरिकपटसंकेला ॥ सोउचाटसबकेशिरमला ॥ सु
 रमायासबलोगविमोहै ॥ रामप्रेमअतिशयनबिछोहै ॥
 भएउचाटवसमनधिरनाहीं ॥ क्षणबनरुचिक्षणसदन
 सौहाहीं ॥ दुबिधमनोगतप्रजादुरवारी ॥ सरितसिंधुसं-
 गमजिमिवारी ॥ दुचितकतहुंपरितोषनलहहीं ॥ एकए
 कसनमर्मनकहहीं ॥ लखिहियहंसिकहकृपानिधानू ॥
 सरिसम्भानमघवाकरवानू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरतजन
 कमुनिगणसचिव ॥ साधुसचेतविहाइ ॥ लगीदेवमाया
 सवहिं ॥ यथायोगजनपाइ ॥ ३०६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कृ
 पासिंधुलखिलोगदुरवारे ॥ निजसनेहसुरपतिछलभा
 रे ॥ सभाराउगुरुमहिस्तरमंत्री ॥ भरतभक्तिसवकीम
 तियंत्री ॥ रामहिंचितवतचित्रलिखेसे ॥ सकुचतबोलत
 वचनशिरवसे ॥ भरतप्रीतिनितिविनयबडाई ॥ सनतसु
 रवदवरणतकठिनाई ॥ जासुविलोकिभक्तिलबलेशू ॥ प्रे
 ममनमुनिगणमिथिलेशू ॥ महिमातासुकहेकिमितुल-
 सी ॥ भक्तिप्रभावसुमतिहियहुलसी ॥ आसुछोटमहि-
 माबडिजाती ॥ कविबहुलकानिमानिसकुचानी ॥ कहिन
 शकानिगुणरुचिअधिकाई ॥ मतिगतिवालवचनकाना-

ई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरतविमलयसविमलविधु॥
चकोरकुमारी॥ उदितविमलजनहृदयनभ॥ एकटकरह
निहारि॥ ३०७॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भरतप्रभावन
महं॥ लघुमतिचापलताकविक्षमबहं॥ कहतसुनतसति
भावभरतको॥ सीयरामपदहोइनरतको॥ सुमिरतभर
तहिप्रेमरामको॥ जेहिनसुलभतेहिसरिसबामको॥ दे
खिदयालुदशासबहीकी॥ रामसुजानजानिजनजीकी॥
धर्मधुरीणधीरधरनागर॥ सत्यसनेहशीलसुखसागर
॥ देशकाललखिसमयसमाजु॥ नीतिप्रीतिपालकरघु
राजु॥ बोलेबचनबाणीबरबससे॥ हितपरिणामसुनत
शशिरससे॥ तातभरततुमधर्मधुरीणा॥ लोकबेदवि
धिपरमप्रबीणा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर्मबचनमानसविमल
॥ तुमसमानतुमतात॥ गुरुसमाजलघुबंधुगुण॥ कुसम
यकिमिकहिजात॥ ३०८॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जानहुतात
तरणिकुलशीती॥ सत्यसंधपितुकीरतिप्रीती॥ समय
समाजलाजगुरुजनकी॥ उदासीनहितअनहितमनकी
॥ तुमहिंविदितसबहींकरमरसू॥ आपनमोरपरमहि
तधरसू॥ मोहिसबभांतिभरोसतुह्नारा॥ तदपिकहउ
अवसरअबुसाश॥ ताततातबिनुबातहमारी॥ केवल
कुलगुरुकृपासुधारी॥ नतरुप्रजापुरजनपरिवारु॥ हम
हिंसहितसबहोतरुआरु॥ जौबिनुअवसरअथबदि
नेशू॥ जगकहंकाहेनहोइकलेशू॥ तसउत्पाततातविधि
कीन्हा॥ मुनिमिथिलेशखिसबलीन्हा॥ ॥ दोहा ॥
राजकाजसबलाजपति॥ धर्मधरणिधनधाम॥ गुरुप्र
भावपालिहिंसब॥ भलहोइहिपरिणाम॥ ३०९॥ ॥ चौपा

ई॥ ॥ सहित समाज तु ह्यारह मारा ॥ घर बन गुरु प्रसा
 र रव वारा ॥ मातु पिता गुरु स्वामिनि देखू ॥ सकल धर्म धर
 णी धरु देखू ॥ सातु मकर हुकरा बहु मोहू ॥ तात तरणि कु
 ल पालक होहू ॥ साधन एक सकल सिंधि देनी ॥ कीरति
 सुगति भूति मय वेणी ॥ सो बिचारि सहि संकट भारी ॥
 रहु प्रजा परिवार सरवारी ॥ बाँधिविपति सबहिं
 ॥ तुमहि अवधि भरि अति कठिनाई ॥ जानितुमहि मृदु
 कहों कठोरा ॥ कुसमय तातन अनुचित मोरा ॥ होंहि कुवा
 वस्तु बंधु सहों ए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेव कर पदन धन से ॥
 सुख सो साहिब होई ॥ तुलसी प्रीति कीरीति सुनि ॥ सुक
 विसराहहि सोई ॥ ३१० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सभा सकल सु
 निरघुवर वाणी ॥ प्रेम पयोधि अमिय जनु सानी ॥
 ल समाज सनेह समाधी ॥ देखि दशाक्षुष शारद साधी ॥
 भरतहिं भए उपरम संतोषू ॥ सन सुख स्वामि बिसुख दु
 ख दोषू ॥ सुख प्रसन्न मन मिटा विषादू ॥ भाजनु गुंगहिं
 गिरा प्रसादू ॥ कीन्ह स प्रेम प्रणाम बहोरी ॥ बोले पाणिपं
 करुह जोरी ॥ नाथ भए उ सरव साथ गएको ॥ लहे उं लाभ
 जग जन्म भए को ॥ अव कृपालु जस आयसु होई ॥ करों
 सी सधरि सादर सोई ॥ सो अवलंब देव मोहि देई ॥ अव
 धि पार पावउं जेहि सोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देव देव अभिषे
 कहित ॥ गुरु अनुशासन पाई ॥ आने उं सब तीरथ सल
 ल ॥ तेंहि कहं काहार जाई ॥ ३११ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एक
 मनोरथ बड गन माहीं ॥ भए उ संकोच जात कहि नाही ॥
 कहहु तात मनु आयसु पाई ॥ बोले पाणि सनेह सहोई
 ॥ निच कुट मुनि थल तीरथ वन ॥ गगन गगन सरिसर निज

रगिरिगण॥ प्रभुपदअंकितअवनिविशेषी॥ आयसुहो
इतोआवउंदेखी॥ अवशिअनिआयसुशिरधरहू॥ ता
तविगतभयकाननचरहू॥ सुनिप्रसादवनमंगलदाता॥
पावनपरमसोहावनभाता॥ अरिनायकजहंआयसु
देहीं॥ राखेहुतीरथजलथलतेहीं॥ सुनिप्रभुबचनभर
तसुखपावा॥ सुनिपदकमलमुदितशिरनावा॥ ॥दो
हा॥ ॥ भरतरामसंवादसुनि॥ सकलसुमंगलमूल॥
सरस्वारथीसराहिकुल॥ हर्षितवरषहिंकुल॥ ३१२॥
॥ ॥ चौपाई॥ ॥ धन्यभरतजय रामगोसांई॥ कहतदे
वहरषितवरिआई॥ सुनिमिथिलेशसभासबकाहू॥
भरतबचनसुनिभएउउछाहू॥ भरतरामगुणग्रामसने
हू॥ पुलकिप्रशंसितराउविदेहू॥ सेवकस्वामिसुभावसु
हावन॥ नेमप्रेमअतिपावनपावन॥ मतिअनुसारसरा
हनलागे॥ सचिवसभासदसबअनुरागे॥ सुनिसुनि
रामभरतसंवादू॥ दुहुंसमाजहियहर्षविषादू॥ राममा
तुदुरवसरवसमजानी॥ कहिगुणदोषप्रबोधरानी॥ ए
ककरहिंरघुबीरबडाई॥ एकसराहतभरतभलाई॥
॥ दोहा॥ ॥ अत्रिकहेउतबभरतसन॥ शीलसमीपसकू
प॥ राखियतीरथतोयतहं॥ पावनअमलअनूप॥ ३१३॥
॥ चौपाई॥ ॥ भरतअत्रिअनुशासनपाई॥ जलभाजन
सबदिएचलाई॥ साजुजआपुअत्रिसुनिसाधू॥ सहि
तगएजहंकूपअगाधू॥ पावनपाथपुएयथलराखा॥ सु
दितप्रेमअत्रिअसभाषा॥ तातअनादिसिद्धथलएहू
॥ लोपेउकालविदितनहिकेहू॥ तबसेवकनसरसथल
देखा॥ कीन्हसुजलहितकूपविशेषा॥ विधिबशभयेउ

विश्वउपकारू॥ सुगमअगमअतिधर्मविचारू॥ भरत
 कूपअब कहिहहिंलोगा॥ अतिपावनतीरथजलयोगा॥
 ॥ प्रेमसनेमनिमज्जतप्राणी॥ होइहिंबिमलकर्ममनबा
 णी॥ ॥ दोहा॥ ॥ कहतकूपमहिमासकल॥ गएजहार
 घुराउ॥ अत्रिसुनायेउरधुवरहि॥ तीरथपुण्यप्रभाउ॥
 ॥ ३१४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ कहतधर्मइतिहाससप्रीती॥ भ
 येउभोरनिशिसोसरवबीती॥ नित्यनिवाहिभरतदोउ
 भाई॥ रामअत्रिशुरुआयसुपाई॥ सहितसमाजसा
 जसबसादे॥ चलेरामवनअटनपयादे॥ कोमलचरण
 चलतबिनुपनही॥ भईमृदुभूमिसंकुचिमनमनही॥
 कुशकंदककांकरिकुराई॥ कटुककठोरकुबस्तदुराई॥
 महिमंजुलमृदुमारगकीन्हें॥ बहतसमीरत्रिविधिसु
 खलीन्हें॥ सुमनवरबिसरघनकरिछाहीं॥ बिटपफू
 लिफलितृणमृदुलाही॥ मृगबिलोकिरवगबोलिसुवाणी
 ॥ सेवहिंसकलरामप्रियजानी॥ ॥ दोहा॥ ॥ सुलभ
 सिद्धिप्राकृतहुं॥ रामकहतजंभुआत॥ रामप्राणप्रियभ
 रतकहं॥ यहनहोइवडिवात॥ ३१५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ इ
 हिविधिभरतफिरतवनमाहीं॥ नेमप्रेमलखिसुनिसंकु
 चाहीं॥ पुण्यजलाश्रयभूमिविभागा॥ खगमृगततरुतृण
 गिरिवनवागा॥ चारुविचित्रपवित्रविशेषी॥ ब्रूतभरत
 दिव्ययलदेषी॥ सुनिमनमुदितकहतअधिराऊ॥ हेतना
 मगुणपुण्यप्रभाऊ॥ कतहुनिमज्जनकतहुंप्रणामा॥ क
 तहुंविलोकतवनअभिरामा॥ कतहुंवेदिसुनिआयसु
 पाई॥ सुमिरतसायसहितहोभाई॥ देखिसुभावसनेह
 सुसेवा॥ देतअशीपमुदितवनदेवा॥ फिरद्विगयेदिनपह

रअटाई॥ प्रभुपदकमलविलोकहिंआई॥ ॥दोहा॥
 देखेथलतीरथसकल॥ भरतपांचदिनमाऊ॥ कहतसुन
 तहरिहरसुयश॥ गयउदिवसभईसांऊ॥ ३१६॥ ॥चौ
 पाई॥ ॥भोरन्हाइसबजुसमाजु॥ भरतभूमिसरति
 रहुतिराजु॥ भलदीनआजुमानिमनमाहीं॥ रामरुपालु
 कहतसंकुचाहीं॥ गुरुनृपभरतसभाअवलोकौ॥ संकु
 चिरामफिरिअवनिविलोकौ॥ शीलसराहिसभासबशो
 ची॥ कहुंनरामसमस्वामिसकोची॥ भरतसुजानरामरु
 खदेखी॥ उठिसप्रेमधरिधीरविशेषी॥ करिदंडवतकह
 तकरजोरी॥ रारवीनाथसकलरुचिमोरी॥ मोहिलगिस
 बहिंसहेउसंतापू॥ बहुतभांतिदुखपावाआपू॥ अब
 गोसांईमोहिदेउरजाई॥ सेबौअबधिअबधलगिजा
 ई॥ ॥दोहा॥ ॥जेहिंउपायपुनिपायजन॥ देखैदीन
 दयालु॥ सोशिरखदेइयअवधिलगि॥ कोशलपालुकुपा
 लु॥ ३१७॥ ॥चौपाई॥ ॥पुरजनपरिजनप्ररजागो
 सांई॥ सबशुचिसरिससनेहसगाई॥ राउरसंगभलभव
 दुखदाहू॥ प्रभुबिनुवादिपरमपदलाहू॥ स्वामिसुजान
 जानसबहीकी॥ रुचिलालसारहनिजनजीकी॥ प्रण
 तपालपालहिंसबकाहू॥ देवहुंदिशिओरनिवाहू॥ अ
 समोहिसबविधिभूरिभरोसो॥ कियेबिचारनशोचखरो
 सो॥ आरतिमोरीनाथकहछोहू॥ दुहुमिलिकीन्हदीठह
 ठिमोहू॥ यहुबडदोषदूरिकरिस्वामी॥ तजिसंकोचशि
 खइयअनुगामी॥ भरतबिनयसुनिसबहिंप्रशंसी॥ क्षी
 रनीरविवरणगतिहंसी॥ ॥दोहा॥ ॥दीनबंधुसुनिबं
 धुके॥ बचनदीनछलहीन॥ देशकालअवसरसरिस॥

बोलेरामप्रवीण॥३१८॥ ॥चौपाई॥ ॥ताततुह्यार
 रपतिजनकी॥चिंतागुरुहिंनृपहिंघरबनकी॥माथेपर
 गुरुमुनिमिथिलेशू॥हमहिंतुमहिंसपनेहुनकलेशू॥मो
 रतुह्यारपरमपुरुषारथ॥स्वारथसुयशधरमपरमार
 थ॥पितुआयसुपालियदुहुभाई॥लोकवेदभलभूपभ
 लाई॥गुरुपितुमातुस्वामिशिरवपाले॥चलतसुमगुप
 गुपरतनरवाले॥असबिचारिसबशोचविहाई॥पाल
 हुअवधअवधिभरिजाई॥देशकोषपुरजनपरिवारू
 ॥गुरुपदरजहिंलागछतभारू॥तुममुनिमातुसचिव
 शिरवमानी॥पालहुपहुमिप्रजारजधानी॥ ॥दोहा॥
 ॥सुरिवआसुरवसोचाहियै॥रवानपानकहंएक॥पाले
 पोषेसकलअंग॥तुलसीसहितविवेक॥३१९॥ ॥चौ
 पाई॥ ॥राजधर्मसरवसइतनोई॥जिमिसनमांहमनोर
 थगोई॥बंधुप्रबोधकीन्हबहुभाती॥बिनुअधारमनतो
 षनशांती॥भरतशीलगुरुसचिवसमाजु॥संकुचसने
 हविवशरघुराजु॥प्रभुकरिरूपापांवरिदीन्ही॥सादर
 भरतशीसधरिलीन्ही॥चरणपीठकरुणानिधानके॥
 तुयुगजामिकप्रजाप्राणके॥संपुटभरतसनेहहरतन
 के॥आखरयुगजनुजीवयतनके॥कुलकपाटकरकु-
 शलकर्मके॥विमलनयनसेवासुधमेके॥भरतमुदित
 अवलंबलहेतें॥अशसुखजशसियरामरहेतें॥ ॥दो
 हा॥ ॥सांगठविदाप्रणामप्रणामकरि॥रामलिएउर
 लाई॥लोगउचाटेअमरपति॥कुटिलअवसरपाई॥
 ॥३२॥ ॥चौपाई॥ ॥सोकुचालिसवकहंभइनीका
 ॥अप्रधिआशमवजीवनजीकी॥नतरुलखणसिय

रामवियोगा ॥ हहरिभरतसबलोगकुरोगा ॥ रामकृपाअ
 वरेवसुधारि ॥ विबुधधारिभद्रगुणदयुहारी ॥ भेटतभु
 जभरिभाइभरतसो ॥ रामप्रेमरसकहिंनपरतसो ॥ तन
 मनबचनउमगिअलुरागा ॥ धीरधुरंधरधीरजत्यागा ॥
 वारिजलोचनमोचतवारी ॥ देखिदशासरसभादुरवारी
 ॥ सुनिगणगुरुजनधीरजनकसे ॥ ज्ञानअनलमनकसे
 कनकसे ॥ जेविरंचिनिरलेपउपाए ॥ पद्मपत्रजिमिजग
 जलगाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेउबिलोकिरघुवरभरत ॥ प्री
 तिअनूपअपार ॥ भएमगनमनतनुबचन ॥ सहितविरा
 गविचार ॥ ३२१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जहांजनकगुरुगतिम
 तिभोरी ॥ प्राकृतप्रीतिकहतबडखोरी ॥ बरणातरघुवर
 भरतवियोगू ॥ सुनिकठोरकविजानिहिलोगू ॥ सोसंको
 चबशअकथसुवाणी ॥ समयसनेहसुमिरिसंकुचा
 नी ॥ भेटिभरतरघुवरसमुजाए ॥ पुनिरिपुदमनहर्षिहि
 यलाए ॥ सेवकसचिवभरतसरवपाई ॥ निजनिजकाज
 लघेसबजाई ॥ सुनिदारुणदुरवराजसमाजा ॥ लगेचल
 नकेसाजनसाजा ॥ प्रभुपदपद्मबंदिदौभाई ॥ चलेशी
 सधरिरामरजाई ॥ सुनितापसवनदेविनिहोरी ॥ सबस
 नमानिबहोरिबहोरी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लषणाहिंभेटिप्रमा
 एकरि ॥ शिरधरिसियपदधूरि ॥ चलेसप्रेमआशिषस
 नि ॥ सकलसुमंगलभूरि ॥ ३२२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सानुज
 रामनृपहिंशिरनाई ॥ कीन्हिबहुतविधिविनयबडाई ॥ दे
 वदयावशबडदुरवपाए ॥ सहितसमाजकाननहिआए ॥
 पुरपगुधारियदेइअशीषा ॥
 ॥ मनिमहिदेवसाधुसनमाने ॥ विदाकिएहा

ने ॥ सासुसमीपगएहौभाई ॥ फिरे बंदि पद आशिषपा
ई ॥ कौशिकवामदेवजाबाली ॥ परिजनपुरजनसचिव
सुचारी ॥ यथायोगकरिबिनयप्रमाणा ॥ विदाकिएसब
सालुजरामा ॥ नारिपुरुषलघुमध्यबडेरें ॥ सब
कृपानिधिफेरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरतमातुपदबंदिप्रभु ॥
सुचिसनेहमिलिभेटि ॥ विदाकीन्हसजिपालकी ॥ सकु
चशोचसबवेदि ॥ ३२३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परिजनमातु-
पितुहिंमलिसीता ॥ फिरिप्राणप्रियप्रेमपुनीता ॥ करिप्र
णामभेटीसबसासू ॥ प्रीतिकहतकबिहियनहूलासू ॥



सुनिशिरवअभिमतआशिषपाई ॥ रहीसीयदुहुंयीति
समाई ॥ रघुपतिपदुपालकीमंगाई ॥ करिप्रबोधसबमा
तुचदाई ॥ बारवारहिंलिमलिहौभाई ॥ समसनहुजन
नापहुंचाई ॥ साजिवाजिगजवाहननाना ॥ भूपभरतद
लकीन्हपयाना ॥ हृदयरामसियलपणसमेता ॥ चलेजा
हिंनवलंगअचेता ॥ सुचहुवाजिगजपशुहियहारें ॥

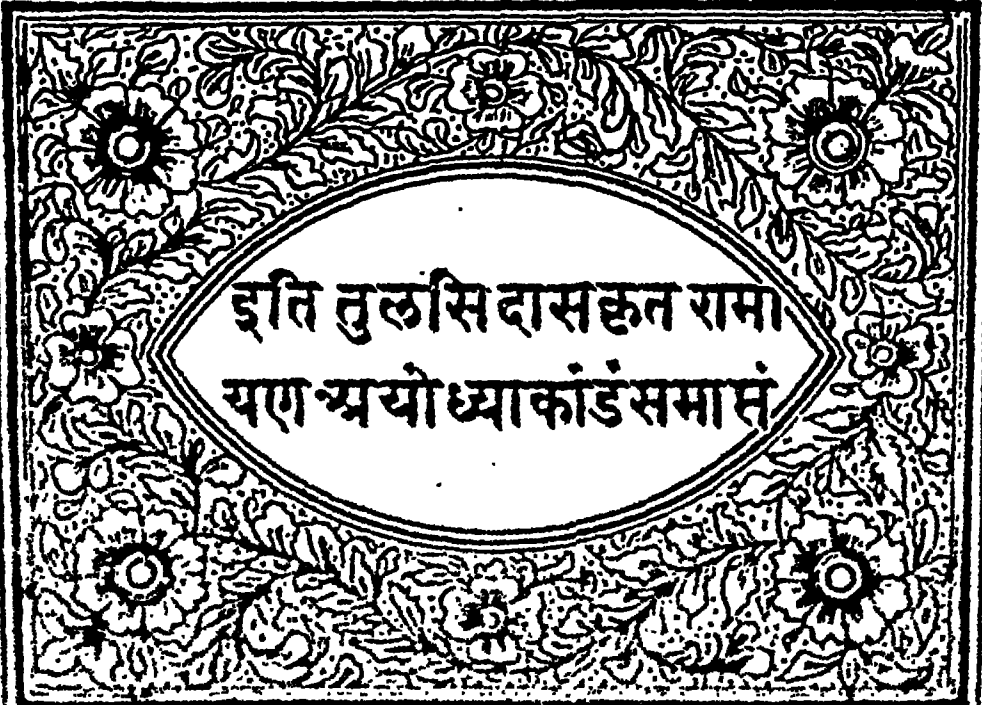
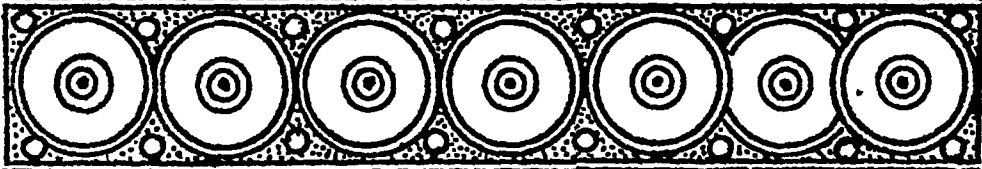
लेजाहिं परबशमनमारे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुगुरुतियपद
बंदिप्रभु ॥ सीतालषणसमेत ॥ फिरेहर्षविस्मयसहित ॥
आएपर्णनिकेत ॥ ३२४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बिदाकीन्हस
नमानिनिषादू ॥ चलेउहृदयबडिबिरहविषादू ॥ कोल
किरातभिलुवनचारी ॥ फेरेफिरेजोहारिजुहांरी ॥ प्रभुमि
ललषणबैठिबटछाहीं ॥ प्रियपरिजनवियोगविलखाहीं
॥ भरतसनेहसुभावसुबाणी ॥ प्रियाअनुजसनकहत
बरवानी ॥ प्रीतिप्रतीतिबचनमनकरणी ॥ श्रीमुखराम
प्रेमबशकरणी ॥ तेहिंअवसरखगमृगजनमीना ॥ चित्र
कूटचरअचरमलीना ॥ बिबुधबिलोकिदशारघुवरकी
॥ बरषिसुमनकहिगतिघरघरकी ॥ प्रभुप्रणामकरि-
दीन्हभरोसो ॥ चलेसुदितमनडरनखरोसो ॥ ॥ दोहा ॥
सानुजसीयसमेतप्रभु ॥ राजतर्पणकुदीर ॥ भक्तिज्ञान
वैराग्यजनु ॥ सोहतधरशरीर ॥ ३२५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
सुनुमहिस्वरगुरुभरतभुआलू ॥ रामबिरहसबसाज
बेहालू ॥ प्रभुगुणग्रामगुणतमनमाहीं ॥ सबचुपचापच
लेमगुजाहीं ॥ यमुनाउतरिपारसबभएऊ ॥ सोवासरवि
नुभोजनगएऊ ॥ उतरिदेवसरिदूसरिवासू ॥ रामसरवा
सबकीन्हसुपाशू ॥ सरीउतरिगोमतीनहाए ॥ चौथेदि-
वसअवधपुरआए ॥ जनकरहेपुरवासरचारी ॥ राज

॥ ३२६ ॥ साजिसबसाजू ॥ नगरनारिनरगुरुशिरा
॥ ३२७ ॥ करवेनरामरजधानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रासी
॥ ३२८ ॥ गसब ॥ करतनेमउपवांस ॥ तजितजि ॥
॥ ३२९ ॥ ख ॥ जिअतअवधिकीआश ॥ ३२६ ॥ सने-

॥ ॥ सचि वसुसेवक भरत प्रबोधे ॥ निजनिज काज पाइ
 शिष शोधे ॥ पुनि शिष दीन्ह बोलिलु धु भाई ॥ सौ पिसक
 ल मातु सेव काई ॥ भूसुर बोलि भरत कर जोरे ॥ करि प्र
 णाम वर विनय निहारे ॥ उंच नीच कारज भल पोचु ॥ आ
 य सुदेवन करव संकोचु ॥ परिजन पुरजन प्रजा बुलाए ॥
 समाधान करि सुवसव साए ॥ सानुज गे गुरु गोह बहोरी
 ॥ करि दंड वत कहत कर जोरी ॥ आय सुहोइ तोर हेउ स
 नमा ॥ बोले सुनि सुनि पुलकित प्रेमा ॥ समुजब कहव क
 रव तुम सोई ॥ धर्म सार जग होइ हिंजोई ॥ ॥ दोहा ॥
 सुनि शिष पाइ अशीष वडि ॥ गणक बोलि दिन साधि ॥
 सिंहासन प्रभु पादुका ॥ बैठारी निरुपाधि ॥ ३२७ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ राम मातु गुरु पद शिर नाई ॥ प्रभु पद पीठर
 जांच सुपाई ॥ नंदि ग्राम करि पूर्ण कुटीरा ॥ कीन्ह निवास
 धर्म धुर धीरा ॥ जटाजूट शिर सुनि पट धारी ॥ महिखनि
 कुश साधरी संवारी ॥ अशसन वस आसन व्रत नेमा ॥ क
 रत कटिन व्रत धर्म सप्रेमा ॥ भूषण वसन भोग सुख भूरी ॥
 मनतनु वचन तजे तृणा तोरी ॥ अवध राज सर राज सिंहा
 हों ॥ दशरथ धन लखि धन जल जाहीं ॥ तेहिं पुरवस वभ
 रत विनुरागा ॥ चंचरी कजि मिचं पकवागा ॥ रमा विलास
 राम अचुरागी ॥ तजत वमन इव जन बड भारी ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ राम प्रेम भाजन भरत ॥ बडेन इह कर तूति ॥ चात कहं
 तु सराहि अत ॥ टेकाविके कवि भूति ॥ ३२८ ॥ ॥ चौपाई ॥
 नापु दिन हि दिन दुवरि होई ॥ वदत तेज बल सुरव छवि सो
 लका ॥ तन वराम प्रेम पण पीना ॥ वदत धर्म बल मन न मली
 हिं न च ॥ मिजल निघटन शरद प्रकाशे ॥ बिलसत वैत सर्वज

नबिकासे ॥ शमदमसंयमनेमउपासा ॥ नखतभरतहि
यबिमलअकाशा ॥ ध्रुवविश्वासअबधिराकासी ॥ स्वा
मीस्फुरतिस्फुरबीथिविकाशी ॥ रामप्रेमबिधुअचलअ
दोषा ॥ सहितसमाजसोहनितचोषा ॥ भरतरहनिसमु
ऊनिकरतूती ॥ भक्तिबिरतियुगाबिमलबिभूती ॥ वर-
णतसकलसुकविसकुचाहीं ॥ शेषगणेशगिरागमना
हीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नितपूजतप्रभुपांवरि ॥ प्रीतिनह
दयसमाप्ति ॥ मांगिमांगिआयसुकरत ॥ राजकाजब
हुभांति ॥ ३२६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पुलकगातहियसिय
रघुवीरा ॥ जीहनामजपुलोचननीरा ॥ लषणरामसिय
काननबसहीं ॥ भरतभवनवसितपतचुकसहीं ॥ दुहुं
दिशिसमुझिकहतसबलोगू ॥ सबविधिभरतसराहन
योगू ॥ सुनिब्रतनेमसाधसंकुचाहीं ॥ देखिदशासुनिरा
जलजाहीं ॥ परमपुनीतभरतआचरण ॥ मधुरमंजुसु
दमंगलकरण ॥ हरणकठिनकलिकलुषकलेशू ॥ महामो
हनिशिदलनदिनेशू ॥ पापपुंजकुंजरमृगराज ॥ शमन
सकलसंतापसमाज ॥ जनरंजनभंजनभवभारू ॥ राम
सनेहसुधाशशिसारू ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सियरामप्रेमपियू
षपूरणहोतजन्मनभरतको ॥ सुनिमनअगमयमनिय
मशमदमविषमव्रतआचरतको ॥ २५ ॥ दुखदाहदारिद
दंभदूषणसुखशमिसुअपहरतको ॥ कलिकालतुलसी
सेशठहिं हठिरामसनसुखकरतको ॥ २६ ॥ ॥ सौरठा ॥
॥ भरतचरितकरिनेम ॥ तुलसीजेसादरसनहिं
यरामपदप्रेम ॥ अवशिहोइभवरसविरति ॥ ३३० ॥
इतिश्रीरामचरि

विमलविज्ञानवैराग्यसंपादनोनामतुलसीकृतायोध्या
 कांडद्वितीयः सोपानः समाप्तः ॥२॥ ॥शुभमस्तु॥ ॥
 ॥श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु॥ ॥दोहा॥ ॥निजच
 रणनकीपादुका सेवतसरितातीर॥ श्रीधरभावीभरत
 कीऋफलसदारधुबीर॥१॥ रामलषणसियसंगसरव
 ॥चित्रकूटबडभाग्य॥ श्रीधरज्यौंसत्संगमें॥ भक्तिज्ञान
 वैराग्य॥२॥ ॥सिद्धिरस्तु॥ ॥श्रीरस्तु॥ ॥
 ॥छ॥ ॥छ॥ ॥श्रीसीतारामचंद्रप्रसन्नोस्तु॥ ॥छ॥
 ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥
 ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥



इति तुलसिदासकृत रामा
 यण अयोध्याकांडं समाप्तं

श्री

अथ

तुलसिदास कृत

रामायणचरितम्

कांड

प्रारंभः



माना ॥ प्रेरितमंत्र ब्रह्मसरधावा ॥ चलाभाजि बायसभ
 यपावा ॥ धरिनिजरूपगयेउपितुमाहीं ॥ रामविमुखरा-
 खातिन्हनाहीं ॥ भानिराशउपजीउरत्रासा ॥ यथाचक्र
 भयक्रुषिदुर्वासा ॥ ब्रह्मधामशिवपुरसबलोका ॥ फिरा
 अमितव्याकुलभयशोका ॥ काहुबैठनकहानओही ॥
 ररिचकौशकैरामकरद्रोही ॥ मातुमृत्युपितुशमनसमा
 ना ॥ सुधाहोईविषसक्तुहरिजाना ॥ मित्रकरैशतरिपु
 कीकरणी ॥ ताकहंबिबुधनदीवैतरणी ॥ सबजगताहि
 अनलतैंताता ॥ जोरघुबीरविमुखसक्तुभ्राता ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ जिमिजिमिभाजतशक्रसंत ॥ व्याकुलअतिदु
 खदीन ॥ तिमितिमिधावतरामशर ॥ पाछेपरमप्रवीण ॥
 ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बचहिउरगवरुग्रसैखगेशा ॥ रघु
 पतिशरछुटिचचअवदेशा ॥ नारददेखाबिमलजयंता
 ॥ लागिदयाकोमलचितसंता ॥ दूरहितेकहिप्रभुप्रभुता
 ई ॥ भजेजातबहुविधिसमुझाई ॥ पठवातुरतरामपहं
 ताही ॥ कहसिपुकारिप्रणतहितपाही ॥ आतुरसभयग
 हसिपदजाई ॥ आहिआहिदयालुरघुराई ॥ अतुलितब
 लअतुलितप्रभुताई ॥ मैमतिमंदजानिनहिपाई ॥ निज
 कृतकर्मजनितभयपायेउं ॥ अबप्रभुपाहिशरणतकि-
 आयेउं ॥ सुनिहृपालुअतिआरतवाणी ॥ एकनयन-
 करितजाभवानी ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ कीन्हमोहबशद्रोह
 ॥ यद्यपितेहीकरवधउचित ॥ प्रभुछाडेउकरीछोड़ ॥ को
 रुपालुरघुवीरसम ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रघुपतिचित्र
 कूटवसिनाना ॥ चरितकरतयुतिस्तथासमाना ॥ वदुरि
 गमअसमनअलुमाना ॥ हांइहिभीरसबहिमोहिजाना ॥

सकलमुनिन्हसनविदाकराई ॥ सीतासहितचले दोउ भा
 ई ॥ अत्रिके आश्रम प्रभु चलि गयेउ ॥ सुनत महासुनिह
 रित भयेउ ॥ पुलकित गात अत्रि उठि धाए ॥ देखि राम आ
 तुर चलि आए ॥ करत दंडवत सुनि उर लाए ॥ प्रेम चारि द्वौ
 जन अन्ह वाए ॥ देखि राम छबिन यन जु डाने ॥ सादर नि
 ज आश्रम तब आने ॥ करि पूजा कहि बचन सुहाए ॥ दि
 ए मूल फल प्रभु मन भाए ॥ ॥ सौरा ॥ प्रभु आसन आसी
 न ॥ भरिलोचन शोभानिररवी ॥ सुनि वर प्ररम प्रवीण ॥ जो
 रि पाणि अस्तन करत ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ नमामि भक्त
 वत्सलं कृपालु शील कोमलं ॥ भजामिते पदांबुजं अका
 मिनां स्वधामदं ॥ १ ॥ निकाम श्याम सुंदरं भवांबुनाथ
 मंदरं ॥ प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं ॥ २ ॥ मलंब
 बाहु विक्रमं प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥ निषंग चाप सायकं ध
 रं त्रिलोकनायकं ॥ ३ ॥ दिनेशवंश मंडनं महेशचापरवं
 डनं ॥ मुनींद्र संतरंजनं सुरारि वृंद भंजनं ॥ ४ ॥ मनोजवै
 रिवंदितं अजादि देव सेवितं ॥ विशुद्ध बोध विग्रहं सम
 स्त दूषणापहं ॥ ५ ॥ नमामि इंदिरा पतिं
 गतिं ॥ भजे सशक्तिसालुजं शचीपति प्रियालुजम् ॥ ६ ॥
 तदांघ्रि मूल येन रा भजंति हीन मत्सरा ॥ पतंति ज्ञो भवा
 र्णीवं वितर्क वीचि संकलम् ॥ ७ ॥ विविक्त वासना सदा
 भजंति सुक्ति दं मुदा ॥ निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते ग
 ति स्वकं ॥ ८ ॥ त्वमेक मद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं
 पदुरुंच शाश्वतं तुरीय मेव केवलं ॥ ९ ॥
 भं कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥ स्वभक्त कल्प मादयं
 व्यमन्वहं ॥ १० ॥ अनूप रूप भूपतिं न तोह सुर्विजा पतिं ॥

प्रसीदमेनमामिते पदाब्जभक्तिदेहिमे ॥११॥ पठंति ये-
 स्त बंद्दं नरादरेण ते पदं ॥ ब्रजंति नात्र संशयं त्वदीयभा-
 वसंयुतम् ॥१२॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बिनती करि मुनि नाइ
 शिर ॥ कह कर जोरि बहोरि ॥ चरण सरोरुह नाथ जनि ॥
 कबहुं तजै मति मोरि ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अनुसूया
 के पद गहि सीता ॥ मिली बहोरि सुशील बिनीता ॥ ऋषि
 पत्नी मन सरव अघि काई ॥ आशिष देइ निकट बैठाई ॥
 दिव्य वस्त्र भूषण पहिराए ॥ जे नित नूतन अमल सह-
 ए ॥ ॐ ॥ अक की चौपाई सो ॥ ॐ ॥ जन्म जन्मतव पद सु-
 ख कंदा ॥ बटौ प्रेम चकोर जिमि चंदा ॥ देखि राम मुनि बि-
 नय प्रणामा ॥ विविध भांति पाए उबिआमा ॥ जे सिय स-
 कल लोक सरव दाता ॥ अखिल कोटि ब्रह्मांड किमाता ॥
 ते उपाइ मुनि वरवर भामिनि ॥ सरवी भई कुमुदिनि जि-
 मि यामिनि ॥ जाहि निरखि दुरव दूरि पराही ॥ गरुड जानि
 जिमि पन्नग जाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसे बचन बिचित्र सु-
 ठि ॥ दिए सीय कह आनि ॥ सनमानो प्रिय बचन कहि ॥
 प्रीति न जाइ वरवानि ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कह ऋषि ब-
 धू सरल मृदु बाणी ॥ नारि धर्म कहु व्याज वरवानी ॥ मातु-
 पिता भ्राता हितकारी ॥ मित सरव प्रद सुनुराज कुमारी ॥
 अमित दानि भतों वै देही ॥ अधम सो नारि जो सेवन ते ही
 ॥ धीरज धर्म मित्र अरु नारी ॥ आपद काल परिखि एहि च-
 री ॥ रुद्ध रोग दशजड धन हीना ॥ अंध बधिर क्रोधी अति
 दीना ॥ ऐसे दुपति करि किय अपमाना ॥ नारि पावय मपर
 दुरव नाना ॥ एक धर्म एक घत बेसा ॥ काय बचन मन पति
 पद प्रेमा ॥ जग पति प्रताप नारि निधि अह ही ॥ वेदपुरा

एसंत अस कहहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ उत्तम मध्यम नी
 चलधु ॥ सकल कहउं समुझाई ॥ आगे सुनहिते भवत
 रहिं ॥ सुनहु सीय चितलाई ॥ ॥ ॥ इह दोहा दोष कहै ॥ ॥
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उत्तम के असव समन माही ॥ सपने
 हु आन पुरुष जगनाहीं ॥ मध्यम परपति देखिं कैसे ॥
 आता पिता पुत्र निज जैसे ॥ धर्म विचारि समुझि कुल र
 हहीं ॥ सोनि कृष्ण त्रिय श्रुति अस कहहीं ॥ बिनु अवसर
 भय ते रह जोई ॥ जानेहु अधम नारि जग सोई ॥ पति बंच
 क परपति रतिकरई ॥ रौ रवनर क कल्प शत परई ॥ छि
 नु स्तरव लागि जन्म शत कोटी ॥ दुषन समुझै ते सम कैसे
 टी ॥ बिनु अम नारि प्रेम गतिलहई ॥ पति ब्रत धर्म छांडि
 छलगहई ॥ पति प्रतिकूल मिज हंजाई ॥ विधवा होय पा
 इतरुणाई ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सहज अपावनि नारि ॥
 पति सेवत शुभ गतिलहहिं ॥ यश गावत श्रुति चारि ॥ अ
 जहुं तुलसिका हरि प्रिया ॥ ॥ ॥ सुनु सीता तब नाम ॥ सु
 मिरि नारि पति ब्रत करहिं ॥ तुमहिं प्राण प्रिय राम ॥ कहे
 उंकथा संसारहित ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनि जानकी
 परम सुख पावा ॥ सादरता सुचरण शिर नावा ॥ तब सु
 निसन कह कृपा निधाना ॥ आय सहोइ जाउं बन आना ॥
 संत तमो पर कृपा करेहु ॥ सेवक जानित जहु जननेहु ॥
 भुके बाणी ॥ सुनि सप्रेम बोले मुनि जानी ॥
 जा सकृपा अज शिदसन काजी ॥ चहत सकल परमार्थ
 बादी ॥ ॥ इहां सौं ॥ ॥ ते तुम राम अकाम पिआरे ॥ दीन व
 धु मृदु वचन उचारे ॥ अब जानी मैं श्री चतुराई ॥ भजहुं तु
 तुमहिं सब देव बिहाई ॥ जेहिं समान अति शयनहिं कोई

॥ ताकरशीलकसनअसहोई ॥ केहिबिधिकहौंजाहुअ
वस्वामी ॥ कहहुनाथतुमअंतरजामी ॥ असकहिम-
भुविलोकिमुनिधीरा ॥ लोचनजलबहुपुलकशरीरा ॥

॥ छंद ॥ ॥ तनुपुलकनिर्भरप्रेमपूरणनयनसुरवपं
कजदीए ॥ मनज्ञानगुणगोतीतप्रभुमैदीखजपतपका
किए ॥ १३ ॥ जपयोगधर्मसमूहतेनरभक्तिअनुपमपाव
ई ॥ रघुवीररचितपुनीतनिशिदिनदासतुलसीगावई
॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कलिमलशमनदमनभव ॥ राम

सयशस्करवमूल ॥ सादरसनहिंजेताहिपर ॥ रामरह-
हिअनुकूल ॥ ११ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ कठिनसुकलिम
लकोष ॥ धर्मनज्ञाननयोगतप ॥ परिहरसकलभरोस ॥
रामभजहिंतेचतुरनर ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मुनिहुंकिअ
स्तुतिकीन्हप्रभु ॥ दीन्हसुभगवरदान ॥ सुमनवृष्टिन-
भसेकुल ॥ जयजयकृपानिधान ॥ १३ ॥ ईहातांडक्षेप

कहैं ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मुनिपदकमलनाइकरिशीसा
॥ चलेबनहिंसरनरमुनिईशा ॥ आगेरामअनुजमुनि
पाछे ॥ मुनिवरवेषवनेअतिकाछे ॥ उभयबीचसियसो
हतिकैसी ॥ ब्रह्मजीवविचमायाजैसी ॥ उपमाबहुरिक
हौंजयजोही ॥ बिधुबुधमध्यरोहिणीसोही ॥ सरिता
वनगिरिअवघटघाटा ॥ पतिपहिचानिदेहीवरवाटा ॥
जहंजहंजाहिंदेवरघुराया ॥ करहिंमेषनभतहंतहंछा
या ॥ इहातेक्षेपकहैं ॥ ॥ आश्रमविपुलदीपवनमाहीं ॥

देवसदनतेहिपटतरनाही ॥ बहुतवागसंदरअमराई ॥
भांतिभांतिसवसुनिन्हलगाई ॥ दिव्यविटपफलचहुंदि
शसोहैं ॥ देवतसनतसुकलमनमोहैं ॥ पक्षिअनेकअ

रबहुरंगा॥ कूजहिंकलरबकरहिबिहंगा॥ ॥ दोहा॥
 निजनिजआश्रमबेदिका॥ तेहिपरतुलसिबिरज॥ अनु
 जजानकीसहिततहां॥ राजतभएरघुराज॥ १४॥ आनिसु
 आसनमुदितमन॥ पूजियहुनईकीन्ह॥ कंदमूलफलअ
 मीयसम॥ आनिरामकहंदीन्ह॥ १५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ अ
 नुजसीयसहभोजनकीन्हा॥ जोजेहिभावसुमगवरदी-
 न्हा॥ तेहिदिनतहंप्रभुकीन्हनिवासा॥ सकलमुनिन्हमि
 लिकीन्हसुपासा॥ प्रातःकालउठिरघुकुलदेवा॥ मज्जन
 कीन्हकरिपार्थिवसेवा॥ तबरघुबीरमुनिन्हशिरनावा॥
 आशीर्वादसबहिसनपावा॥ सुमिरिउमापतिसिद्धगणे
 शा॥ पुनिप्रभुचलेसनहुंखगईशा॥ वनआनेकसंदरगि
 रिनाना॥ लांघतचलेजाइभगवाना॥ मिलांअसरबिराध
 मगुजाता॥ गरजतघोरकठोररिसाता॥ रूपभयंकरमान
 हुकाला॥ वेगवंतधाएउजिमिव्याला॥ गगनदेवगणमुनि
 वरनाना॥ तेहिदृष्टाहृदयहारिभयमाना॥ गहेपाणित्रिभू
 लअतिघोरा॥ केहरिमारिबांधिचहुंओरा॥ तुरतहिंसो-
 सीतहिलैगयेऊ॥ रामहृदयकहुबिसमयभयेऊ॥ समुद्रि
 हृदयकैकेयिककरणी॥ कहीअनुजसुनबहुबिधिवरणी
 ॥ बहुरिलषणरघुवरहिंप्रबोधा॥ पांचबाणछांडाकरिको
 धा॥ ॥ छंद॥ ॥ भयेक्रोधलषणसंधानिधनुशरमारि
 तेहिव्याकुलकियो॥ पुनिउठिनिशाचरराखिसीतहिंभूल
 लैछाडतभयो॥ १५॥ अनुकालदंडकरालधावतबिकलस
 वरवगसुगभये॥ धनुतानिभीरघुवंशमणिपुनिकाटिते
 हिरजसमकिये॥ १६॥ ॥ दोहा॥ ॥ बहुएकशरमारेउ॥
 १. धुनिमाथ॥ उठाबहुरिसोगर्जता॥ चलेउजहां

रघुनाथा॥१६॥ ॥चौपाई॥ ॥ऐसे कहतनिशाचरधावा
 ॥अवनहिवचहुतुमहिमैरवावा॥ आवप्रबलजेहिंविधि
 जनुभूधर॥ होइहिकहा कहहिं व्याकुलसर॥ तासुतेज
 शतमरुतसमाना॥ दूटहिंतरुबहुउडहिंपहाना॥ जीवजं
 तुजहंलगिरहेजेते॥ व्याकुलभागिचलेसबतेते॥ उरगस
 मानजोरिशरशाता॥ आवतहींरघुनाथनिपाता॥ तुरत
 हिंरुचिररूपतेहिंपावा॥ देखिदुरिवनिजधामपठावा॥ ता
 सुअस्थिगाडेउप्रभुधरणी॥ देवसुदितलषिप्रभुकीकरणी
 ॥ सीताआईचरणलपटानी॥ अनुजसहिततवचलेभवा
 नी॥ पुनिआएजहंसुनिशरभंगा॥ सुंदरअनुजजानकीसं
 गा॥ गएकहनप्रभुदेनशिषावणा॥ दिशिवलभैदबसतजह
 रावण॥ ॥दोहा॥ ॥सरपतिसंशयतमसमर॥ रघुप
 तितेजदिनेश॥ रावणजीवननिशासम॥ बीतेछुटहिंक
 लेश॥१७॥ ॥चौपाई॥ ॥सुनासीरप्रभुतेहिंक्षणदेखा
 ॥ तेजनिधानशुभ्रअतिवेषा॥ तुरगचालिवलमरुतस
 माना॥ रथविसमयनहीजाइवषाना॥ क्षितिनपरशअं
 तरहितरहई॥ श्वेतछत्रचामरसिरढरई॥ इहिविधप्रभु
 सरेशकहदेखा॥ भयेमगनसरवपायविशेषा॥ अनुजहि
 प्रियहिकहीसमुजोई॥ सरपतिमहिमागुणप्रभुताई॥
 जेहिकारणवासवनहआए॥ सोकछुवचनकहेनही
 पाए॥ बीचहिसुनिआगमनप्रभुकरों॥ कहिसारथिहिं
 तुरतरथफेरो॥ दूरहितैंकरिप्रभुहिंपणामा॥ हरपसरै
 शगयेंउनिजधामा॥ इहोनाइक्षेपकहैं॥ ॥॥मिलाअस
 रविगधमगजाता॥ आवतहिंरघुवीरनिपाता॥ तुरतहिं
 रुचिररूपतिहिंपावा॥ देखिदुरवीनिजधामपठावा॥ पु

निष्प्राणजहंसुनि शरभंगा ॥ सुंदर अनुज जानकी संग ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ देखि राम मुख पंकजहिं ॥ सुनि वरलोचन
 भुंग ॥ सादर पान करत अति ॥ धन्य जन्म शरभंग ॥ १६ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कह सुनि सुनिरघु बीर रूपाला ॥ शंकर मान
 सराज मराला ॥ जातर हे उबिरं चिके धामा ॥ सुने उं श्रवण
 वन आबतरामा ॥ चितवत पंथ रहे उदिन राती ॥ अब प्रभु
 देखि जु डानी छाती ॥ नाथ सकल साधन मै हीना ॥ कीन्ही
 कृपा जानि जन दीना ॥ सो कहु देवन मोरनि होरा ॥ निज प
 चोरा ॥ तब लगिर हहु दीन हित लागी ॥
 जब लगितु है मिलीं तनु त्यागी ॥ योग यज्ञ जप तप ब्रत की
 न्हा ॥ प्रभु कहं देइ भक्ति बर लीन्हा ॥ इहिं विधि शररचि सु
 नि शरभंगा ॥ बैठे हृदय छांडि सब संग ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सी
 ता अनुज समेत प्रभु ॥ नील जलज तनु श्याम ॥ मम हिय व
 सहु निरंतर हिं ॥ सगुण रूप श्री राम ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥
 अस कहि योग अग्नि तनु जारा ॥ राम कृपा बैकुंठ सिधास ॥
 ताते सुनि हरि लीन न भयेऊ ॥ प्रथम हि भेद भक्ति बर लयेऊ
 अघिनिकाय सुनि बर गती देषी ॥ सरवी भए निज हृदय बि
 शेषी ॥ अस्तुति करहिं सकल सुनि वृंदा ॥ जयति प्रणत हि
 त करुणा कंदा ॥ पुनिरघु नाथ चले वन आगे ॥ सुनि वर वृं
 चले संग लगै ॥ अस्थि समूह देखि रघुराया ॥ पूछा सुनि न्ह
 लागि अति दाया ॥ जानत हुका पूछहु स्वामी ॥ सम दरशी
 तुम अंतर जामी ॥ निशिचर नि कर सकल सुनि रवाए ॥ सुनि
 रघु नाथ नयन जल छाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निशिचर हीन क
 री मही ॥ भुज उठाइ पण कीन्ह ॥ सकल सुनि हके आश्रम न्ह
 ॥ जाइ जाइ सरव दीन्ह ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनि अगस्त्य

करशिष्यसज्जाना ॥ नामस्मृतीक्ष्णरतभगवाना ॥ मनकमव
 चनरामपदसेवक ॥ सपनेहुआनभरोसनदेवक ॥ प्रभुआ
 गमनश्रवणस्तुतिपावा ॥ करतसनोरथआतुरधावा ॥ हेवि
 धिदीनबंधुरधुराया ॥ सोसमउपरकरिहहिदाया ॥ सहित
 अनुजमोहिरामगोसाई ॥ मिलिहहिनिजसेवककीनाई ॥
 मोरेदृढभरोसजीयनाहीं ॥ भक्तिनविरतिज्ञानमनमाहीं ॥
 ॥ नहिसतसंगयोगजपयागा ॥ नहिदृढचरणकमलअनु
 रागा ॥ एकबाणिकरुणानिधानकी ॥ सोप्रियजाकेगतिन
 आनकी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सोपरमप्रियअतिपातकीजिन्ह
 कवहुप्रभुसुमिरणकर्यौ ॥ तेआजुमैंनिजनयनदेखौपू
 रीपुलकितहियथर्यौ ॥ १७ ॥ जेपदसरोजअनेकमुनिंकरि
 ध्यानबहुनपावहीं ॥ तेरामरघुवंशमणिप्रभुप्रेमतेसरव-
 पावहीं ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पन्नगारिसुप्रेमसम ॥ भ
 जननदूसरआन ॥ इहविचारिसुनिपुनिपुनि ॥ करतरा
 मगुणगान ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ होइहहिंसुफलआजु
 ममलोचन ॥ देखिवदनपंकजभवमांचन ॥ निरर्थप्रेमम
 गनसुनिजानी ॥ कहिनजाईसोइदशाभवानी ॥ दिशिअरु
 विदिशिपंथनहिंसूजा ॥ कोमैचलेउकहानहिचूजा ॥ कव
 हुंकनृत्यकरैगुणगाई ॥ अविरलप्रेमभक्तिसुनिपाई ॥ क
 वहुंकाफिरिपाछेहटिजाई ॥ प्रभुदेखहिंतरुआंटलुकाई ॥
 अतिशयप्रीतिदेखिरघुवीरा ॥ प्रगटेदृढदृढरणभलभोरा
 ॥ मुनिमगुगांजअचलहोइवेशा ॥ पुलकशरीरपनराफल
 जेला ॥ तवरघुनाथनिकटचलिआग ॥ देखिवदशानिजज
 नमनधारे ॥ ॥ सारना ॥ ॥ रामसुभक्तसहाय ॥ संवक-
 दुरवदारिद्रदमन ॥ सुनिसनप्रभुकाहियाय ॥ उठउठहिजम

मप्राणसमं ॥२२॥ ॥चौपाई॥ ॥मुनिहिरामबहुभांति
जगावा ॥ जागनध्यानजनितकरवपावा ॥ भूपरूपतबराम
दुरावा ॥ हृदयचतुर्भुजरूपदिरवावा ॥ मुनिअकुलाइउठात
बकैसे ॥ बिकलहीनमणिविनुफणिजैसे ॥ आगेदेखिराम
तनुश्यामा ॥ सीताअनुजसहितकरवधामा ॥ परेउलकुट
इबचरणह्लागी ॥ प्रेममगनमुनिबरबडभागी ॥ भुजबि
शालगहिलिएउठाई ॥ परमप्रीतिराखेउरलाई ॥ मुनिहि
मिलतअसमोहकृपाला ॥ कनकतरुहिजनुभेटतमाला ॥
रामबदनविलोकिमुनिठाढा ॥ मानहुंचित्रमांजलिरिवका
ढा ॥ ॥दोहा॥ ॥तबमुनिहृदयेधौरधरि॥ गहिपदबा
रहिबार ॥ निजआश्रमप्रभुआनिकरि ॥ पूजाबिबिधप्र-
कार ॥२३॥ ॥चौपाई॥ ॥कहमुनिप्रभुसनुबिनतीमो
री ॥ अस्तुति करौं कवनबिधतोरि ॥ महिमाअमितमोर
मतिथोरि ॥ रविसन्मुखस्वद्योतअंजोरि ॥ श्यामतामर-
सदामशरीर ॥ जटासुकुटपरिधनमुनिचौर ॥ पाणिचाप
शरकटितूणीर ॥ नौमिनिरंतरश्रीरघुबीर ॥ मोहबिपि
नघनदहनकृशानू ॥ संतसरोरुहकाननभानू ॥ निशिच
रकरिवरूथमृगराज ॥ आतुसदानोभवरवगबाज ॥ अरु
एनयनराजीवसुवेष ॥ सीतानयनचकोरनिशेष ॥ हरह
देमानसवालमरालं ॥ नौमिरामउरबाहुविशालं ॥ संश
यसर्पग्रसनउरगादं ॥ शमनसकलंसंतापविषादं ॥ भय
भंजनरंजनकरयूथं ॥ आतुसदानोकृपावरूथं ॥ निर्गु
णसगुणविषमरूपं ॥ ज्ञानगिरासीतीतअनूपं ॥ अमल
मखिलमनवद्यमपारं ॥ नौमिरामभंजनमहिभारं ॥ भक्त-
कल्पपादपआराधं ॥ तर्जनक्रोधलोभमदकामं ॥

गरभवसागरसेतुं ॥ आतु सदादिन करकुलकेतुं ॥ अतुलि
 तभुजप्रतापबलधामं ॥ कलिमलविपुलविभंजननामं ॥ ध
 र्मेवर्मशर्मदगुणग्रामं ॥ संततशंतनेतुअभिरामं ॥ यद्यपिवि
 रजव्यापकअविनाशी ॥ सबकेहृदयनिरंतरवासी ॥ तदपि
 अनुजसियसहितरवरी ॥ बसहुमानसममकाननचारी ॥
 ॥ जेजानहितेजानहुस्वामी ॥ सगुणअगुणउरअंतरजामी ॥
 जोकोशलपतिराजीवनयना ॥ करोसौरामहृदयममअयना
 ॥ सौरठा ॥ ॥ मायाबशजगजीवन ॥ रहहिंसदासंततम
 गन ॥ तिमिलागहुमोहिपीव ॥ करुणाकरसुंदरसरवद ॥ २४
 ॥ चौपाई ॥ ॥ असअभिमानजाइनहिभोरे ॥ मैसबकरसु
 पतिपतिमोरे ॥ रामभक्तितजिचहकल्याणा ॥ सोमरअध
 मभृगालसमाना ॥ परमप्रसन्नजानिसुनिमोही ॥ जोबरमां
 गुदेउंमैतोही ॥ सुनिमुनिबचनराममनभाए ॥ बहुरिहर्षिसु
 निवरउरलाए ॥ सुनिकहमैंवरकबहुनयाचा ॥ समुजिनप
 रैछूकासाचा ॥ तुमहिंनिकलागैरघुराई ॥ सोमोहिदेहुदा
 ससरवदाई ॥ अबिरलभक्तिविरतिविज्ञाना ॥ होऊसक
 लगुणज्ञानविधाना ॥ प्रभुजोदीन्हसोबरमैपावा ॥ अबसो
 देहुमोहिजोभावा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अनुजजानकीसहितप्र
 भु ॥ चापवाणधरराम ॥ ममहियगगनइंदुइव ॥ बसहुसदा
 यहकम ॥ २५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एवमरुक्कहिरमानिवा
 सा ॥ हर्षिचलेकुंभजअधिपाशा ॥ पुनिप्रणामकरिकहक
 रजोरी ॥ सुनहुनाथकलुविनतोमोरी ॥ बहुतदिवसगुरु
 दसनपाये ॥ भयेमोहिएहिआअमआये ॥ अबप्रभुसंग
 जाऊगुरुपाहीं ॥ तुमकहंनाथनिहोरानाहीं ॥ चलेजातमग
 तचपदकंजा ॥ देखिहोसोचिराधमदगंजा ॥ देखिहृपानि

धसुनिचतुराई॥ लिएसंगविहंसेहोभाई॥ पंथकहतनिज
भक्तिअनूपा॥ सुनिआश्रमपहुंचेसरभूपा॥ आश्रमदेखि
महाशुचिसुंदर॥ सरितसरोवरकाननभूधर॥ वनचरजल
चरजीवजहीते॥ बैरनकरहिंप्रीतिसबहीते॥ ॥दोहा॥
तरुबहुविधविहंगमृग॥ बोलतविविधप्रकार॥ बसहिंसि-
द्धसुनितपकरहिं॥ महिमागुणआगार॥ २६॥ ॥चौपाई॥

॥तुरतसुतीक्ष्णगुरुपहंगयेऊ॥ करिदंडवतकहतअस
भयेऊ॥ नाथकोशलाधीशकुमारा॥ आएमिलनजगतआ
धारा॥ रामअनुजसमेतबैदेही॥ निशिदिनदेवजपतहुहुजे
ही॥ सुनतअगस्त्यतुरतउठिधाए॥ हरिहिंबिलोकिलोच
नजलछाए॥ सुनिपदकमलपरेहोभाई॥ ऋषिअतिप्रीति
लिएउरलाई॥ सादरकुशलपूछिसुनिजानी॥ आसनपरबै
ठारेआनी॥ पुनिकरिबहुप्रकारप्रभुपूजा॥ मोहिसमभा
ग्यवंतनहिंदूजा॥ जहंगिरहेअपरसुनिहंदा॥ हर्षेसबवि
लोकिसरवकंदा॥ ॥दोहा॥ ॥सुनिसमूहमहंबैठप्रभु॥ सा
सुरवसबकीओर॥ शरदइंदुजनुचितवत॥ मानहुनिकरव

॥ ॥चौपाई॥ ॥पाइसथलजलहर्षितमोना॥ पा

॥प्रभुहिनिरषिसरवभाइहिभां
ती॥ चातकजथापाइजलस्वाती॥ तबरघुबीरकहासुनिपा
हीं॥ तुमसनप्रभुदुरावकछुनाहीं॥ तुमजानहुजेहिकारण

॥तातेनाथनकहिसमुजायेऊं॥ अबसोमंत्रदेहुप्र
भुमोही॥ जेहिप्रकारमारोंसरद्रोही॥ निशिचरअबनवच
।जिमिपंकजवनहिमऋतुपाई॥ सुनिसुस-

॥पूछहुनाथमोहिकाजानी॥ तुह्मरि
भजनप्रभावअधारी॥ जानौमहिमाकछुकतुह्मारी॥ ॥

॥ सौरठा ॥ ॥ भृकुटीनिरखतनाथ ॥ रहत सदा पद कमल
 तर ॥ जिन्हडारे निज गात ॥ बिबुध विधाता सिद्ध हर ॥ २८ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ अतिकराल सब परंजग जाना ॥ आरों कहीं सु
 निय भगवाना ॥ ऊमर तरु बिशाल तब माया ॥ फल ब्रह्मांड-
 अने कनिकाया ॥ जीव चराचर जंतु समाना ॥ भीतर सब हिं
 न जान हिं आना ॥ ते फल भक्षक कंठिन कराला ॥ तब भय ड
 रत सदा सो कोला ॥ ते तुम सकल लोक पति साई ॥ पूछेहु मो-
 हि मनुज की नाई ॥ इह बर मागौ कृपा निकेता ॥ बसहु हृदय
 सिय अनुज समेता ॥ अबिरल भक्ति बिरति सत संगी ॥ च
 रण सरोरुह प्रीति अभंगा ॥ यद्यपि ब्रह्मदुरवंद अनंता ॥-
 अनुभव गन्य भज हिं जे संता ॥ असत बरूप बरवानों जानों
 ॥ फिरि फिरि सगुण ब्रह्म रति मानों ॥ ॥ सौरठा ॥ ॥ जाहि
 जीव परमाय ॥ रहत तुम हिं संतत दिवस ॥ तिन की महिमा
 न जाय ॥ सेवक तुम कह प्राण प्रिय ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 संतत दास न्ह देहु बडाई ॥ ताते मोहि पूछेहु रघु राई ॥ है प्रभु
 परम मनोहर ठाऊं ॥ पावन पंचवटि तेहि नाऊं ॥ गोदावरी नदी
 तहं वडई ॥ चारिहु युग प्रसिद्ध तो अहई ॥ दंडकवन पुनीत-
 प्रभु कर हू ॥ उग्र शाप मुनिवर कै रह हू ॥ वास करहु तहं रघुकु-
 ल राया ॥ कीजै सकल मुनिन्ह पर दाया ॥ चले राम मुनि आया
 रूपाई ॥ तुरत हि पंचवटी निअराई ॥ दिव्य लता दुम प्रभु मन
 भाए ॥ निरखि राग ते भएउ सोहाए ॥ लक्ष्मण राम सिय चर
 ण निहारी ॥ कानन अघ भागार करव कारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 गंधराज सां भेंट भई ॥ बहुविध प्रीति ददाई ॥ गोदावरी समी
 प प्रभु ॥ रहं परं गृह छाई ॥ ३० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जब ते राम
 कान्ह तहं चासा ॥ सरवा भए मुनि वांती आसा ॥ गिरि वन नदी

तालछबिछाए॥ दिनदिनप्रतिअतिहोतसुहाए॥
 गवुंदअनंदितरहहीं॥ मधुरमधुपगुजतछविलहही॥-
 सोवनबरणिनशकअहिराजा॥ जहांप्रगटरघुवीरविरा
 जा॥ एकवारप्रभुकरवआसीना॥ लक्ष्मणबचनकहेछ
 लहीना॥ सरनरमुनिसचराचरसाई॥ मैंपूछौनिजप्रभु
 कीनाई॥ मोहिसमुजाइकहहुसोइदेवा॥ सबतजिकहो
 चरणरजसेवा॥ कहहुज्ञानविरागअरुमाया॥ कहहुसो
 भक्तिकरहुजेहिदाया॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ईश्वरजीवभेदप्र
 भु॥ सकलकहहुसमुजाई॥ जातेहोईचरणरति॥ शो-
 कमोहभ्रमजाई॥ ३१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ थोरेमहंसबक
 होंबुजाई॥ स्तनहुतातमतिमनचितलाई॥ मैंअरुमोर
 तोरतैंमाया॥ जैहिवशकीन्हेजीवनिकाया॥ गोगोचर
 जहंलगिमनजाई॥ सोसबमायाजानेहुभाई॥ तैंहिकर
 भेदस्तनहुतुमसोऊ॥ विद्याअपरविद्यादोऊ॥ एकदुष्ट
 अतिशयदुरवरूपा॥ जावशजीवपरेभवकूपा॥ एकर
 चैंजगगुणबशजाके॥ प्रभुपेरितनहिनिजबलताके॥
 ज्ञानमानजहंएकौनाहीं॥ देखतब्रह्मरूपसबमाहीं॥
 कहियेतासोंपरमविरागी॥ तृणसमसिद्धितीनिगुण
 त्यागी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मायाईशनआपुकहं॥ जानिक
 हैसोजीव॥ बंधमोक्षप्रदसर्वपर॥ मायापेरकशीव॥ ३
 ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ धर्मतैंविरतियोगतैंज्ञान॥ ज्ञानमोक्ष
 प्रददेवबरवाना॥ जातैंवेगिद्रवोंमैंभाई॥ सोममभक्ति
 भक्तकरवदाई॥ सोस्वतंत्रअवलंबनआना॥ तैंहिआ
 धीनज्ञानविज्ञाना॥ भक्तितातअनुपमकरवमूला॥ मि-
 लिदूजोसंतहोहिअनुकूला॥ भक्तिकेसाधनकहोंबरवा

नी॥ सुगमपंथमोहि पावहिं प्राणी॥ प्रथमहिं बिप्रचरण
 अतिप्रीती॥ निजनिजधर्मनिरतश्रुतिरीती॥ एहिकरफ
 लपुनिविषयबिरागा॥ तबममचरणउपजअनुरागा॥
 श्रवणादिकनवभक्तिहृदाहों॥ ममलीलारतिअतिमन
 माहों॥ संतचरणपंकजअतिप्रेमा॥ मनक्रमबचनभजन
 हृदनेमा॥ गुरुपितृमातृबंधुपतिदेवा॥ सबमोहिकहंजा
 नेहृदसेवा॥ ममगुणगावतपुलकशरीरा॥ गदगदगिरा
 नयनवहनीरा॥ कामादिकमददंभनजाके॥ तातनिरंतर
 वशमैताके॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बचनकर्ममनमोरिगति॥ भज
 नकरैनिःकाम॥ तिन्हकेहृदयकमलमहं॥ करों सदाविश्राम॥ ३३॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ भक्तियोगसुनिअतिसरवपावा
 ॥ लक्ष्मणप्रभुचरणहृशिरनावा॥ नाथरूनेगतममसं-
 देहा॥ भयउज्जानउपजेनवनेहा॥ अनुजबचनरूनिप्र



भुमनभाए॥ हर्षिरामनिजहृदयलगाए॥ इहिविधिगये
 कलुक्कदिनवीनी॥ कहतविरागज्ञानगुणनीती॥ श्रृपण
 यदारावणकीबहिनी॥ दुष्टहृदयदारुणजसिअहिनी
 ॥ पंचवटीमांगुदंगकवारा॥ देखिविकलभईसुगलकुमा

रा॥भातापितापुत्रउरगारी॥पुरुषमनोहरनिरखतिनारी॥
 ॥होइबिकलशकममनहिरोकी॥जिमिरविमणिद्रवरवि
 हिबिलोकी॥॥दोहा॥॥अधमनिशाचरिकुटिलअ-
 ॥चलीकरणउपहास॥सुनुरवगेशभावीप्रबल॥भा
 वहनिशिचरनाश॥३४॥॥चौपाई॥॥रुचिररूपध
 रेप्रभुपहंजाई॥बोलीबचनमधुरमुसकाई॥तुमसमपु
 रुषनमोसमनारी॥यहसंयोगविधिरचाबिचारी॥मम
 अनु रूपपुरुषजगनाहीं॥देखिउंरवोजिलोकतिहुंमाहीं
 ॥तातेअवलगिरहीकुमारी॥मनमानाकछुतुमहिनिहा
 री॥सीतहिचितइकहीप्रभुबाता॥अहैकुमारमोरल
 ॥गइलषणरिपुभगिनीजानी॥प्रभुबिलोकिबो
 लेमृदुबाणी॥सुंदरिसुनुमेंउन्हकरदासा॥पराधीनन
 तोरसपाशा॥प्रभुसमर्थकोशलपुराराजा॥जोकछु
 करहिंउन्हैसबछाजा॥॥दोहा॥॥केहरिसमनहिंक
 रिहिंबल॥वाकीवाजसमान॥प्रभुकेबकइमिजानहु॥
 मानहुबचनप्रमाण॥३५॥॥चौपाई॥॥सेबकसरव
 चहमानभिरवारी॥व्यसनीधनशुभगतिव्यभिचारी॥लो
 भीयसचहचाहगुमानी॥नभनहिदूधचहतएपाणी॥पु
 निफिरनिकटसोआई॥प्रभुलक्ष्मणपहंवहुरिपठाई॥
 लक्ष्मणकहातोहिसोचरई॥जोतूरातोरिलाजपरहरई॥
 तबरिसिंहानिरामपहजाई॥रूपभयांकरप्रगटिदेखाई
 ॥विथुरेकेशबदनविकराला॥भृकुटीकुटिलकरणलगि
 गाला॥सीतहिंसभयदेखिरघुराई॥केहाअनुजसनसे
 नबुजाई॥अनुजराममनकीगतिजानी॥उदेरिसाईसी
 सुनहुंभवानी॥॥दोहा॥॥लक्ष्मणअतिलाधवसो॥

नाककानबिनुकीन्ह ॥ ताकेकररावणकहं ॥ मनहुंचुनौती
 दीन्ह ॥ ३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नाककानबिनुभइविकरारा ॥
 जनुस्ववशैलगेरुकेधारा ॥ श्यामघटादेखतघनकेरी ॥ त
 हं बासबधनुमनहुंउगेरी ॥ खरदूषणपहंगइबिलपाता ॥
 धिक्रधिकतबपौरुषबलभाता ॥ तेइपूछासबकहेसिबु
 जाई ॥ यातुधानसकनिसैनबनाई ॥ चौदहसहस्रसभट
 संगलीन्है ॥ तिन्हसपनेहुंरणपीठनदीन्है ॥ धाएनिशिच
 रनिकरवरूथा ॥ जनुसपक्षकज्जलगिरियूथा ॥ नानाबा
 हननानाकारा ॥ नानाआयुधघोरअपारा ॥ भूर्पनखहिं
 आगेंकरिलीन्ही ॥ अशुभरूपश्रुतिनासाहीनी ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ निजनिजबलसबमिलिकहिं ॥ एकहिंएकसनाइ
 ॥ वाजनबाजुजुजावने ॥ हर्पनहृदयसमाइ ॥ ३७ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ अशगुणअमितहोहिंभयकारी ॥ गणहिंनमृ-
 त्युविवशवशभारी ॥ गर्जहिंतर्जुहिंगगनउडाहीं ॥ देखि-
 कटकभटअतिहरषाहीं ॥ कोउकहजिअतधरहुदोउभाई
 ॥ धरिमारहुतियलेहुछुडाई ॥ कोउकहसकनियसत्यहम
 कहहीं ॥ काननफिरहिवीरकोउअहहीं ॥ एकनकहामु
 एहोइरहहू ॥ खरकेआगेंअसजनिकहहू ॥ बहुविधव
 चनकहतरणधीरा ॥ आएसकलजहांरघुवीरा ॥ धूरि-
 प्ररिनभमंडलरहेऊ ॥ रामबुलाइअनुजसनकहेऊ ॥ लै
 जानकींहिजाहुगिरिकंदर ॥ आवानिशिचरकटकभयं-
 कर ॥ रहेहुसजागसकनिप्रभुकैवाणी ॥ चलंसहितप्रिय
 शरधनुपाणी ॥ देखिरामरिपुदलचलिआवा ॥ विहंसि
 कठिनकोदंडचदावा ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कोदंडकठिनचदाई
 प्रभुशिरजटावाधनसोदक्यो ॥ मरकतशैलपरलसतदा

मिनिकोटिसौयुगभुजगज्यौ ॥१६॥



लभुजगहिचापविशिखसुधारिकै ॥ चितवतमन
जप्रभुगजराजघंटनिहारिकै ॥ २० ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ आई
गयेवगमेल ॥ धरहुधरहुधाबहिंसुभट ॥ यथाबिलोकिअ
केल ॥ वालरविहिंघरतदनुज ॥ ३८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ घेरि
रहेनिशिचरसमुदाई ॥ दंडकरवगसृगचलेपराई ॥ प्रभुवि
लोकिशरशकहिंनडांरी ॥ थकितभईरजनीचरधारी ॥ स
चिवबोलिबोलेवरदूषण ॥ यहकोउनृपबालकनरभूषण
॥ करनरनागअसरसुनिजेते ॥ देखेसुनेहतेहमकेते ॥
हमभरिजनमसुनहुंसबभाई ॥ देखीनहीअससुंदरता
ई ॥ यद्यपिभगिनिहिकीन्हकुरुपा ॥ बधलायकनहिपुरु
षअनूपा ॥ देहुतुरतनिजनारिदुराई ॥ जीवतभवनजाहु-
दौउभाई ॥ मोरकहातुमताहिसुनावहु ॥ तासुबचनसुनि
आतुरआबहु ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भएकालबशमूढजब ॥ -
नहिरघुबीर ॥ मशकफुंककिमिमेरुउड ॥
गरुडमतिधीर ॥ ३९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दूतन्हकहारामस
नजाई ॥ सुनतरामबोलेसुसकाई ॥ आजुभयेउबडभा

ग्यहमारा॥ तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह बिचारा॥ हम क्षत्री मृग
 या बन करहीं॥ तुम सेखल मृग खोजत फिरहीं॥ रिपु बलव
 त देखि नहिं डरहीं॥ एक बार कालहु सनल रहों॥ यद्यपि म
 लुजदनुज कुल घातक॥ मुनि बालक खल शालक बालक॥
 जौ न होइ बल घर फिरि जाहु॥ समर बिसुख मेंहतोन काहु॥
 रणचटि करिय कपट चतुराई॥ रिपु पर कृपा परम कदराई
 ॥ दूत न्ह जाइ तुरत सब कहैऊ॥ सुनि खर दूषण उर अति द
 हैऊ॥ ॥ छंद॥ ॥ उर दहै उ कहै उ कि धरहु धावहु विकट
 भट रजनी चरा॥ शर चाप तोमर शक्ति मूल कृपाण परिघ पर
 भूधरा॥ २१॥ प्रभु कीन्ह धनुष टंकार प्रथम कठोर घोर भय
 म्बहा॥ भए बधिर व्याकुल यातु धानन ज्ञान तेहि अवस
 र रहा॥ २२॥ ॥ दोहा॥ ॥ सावधान होइ धाएऊ॥ जानि
 सबल आराति॥ लागे वरषण राम पर॥ अस्त्र शस्त्र बहु
 भांति॥ ४०॥ ॥ स्तेप कहै॥ उमा एक निज प्रभु हिवस॥ पुनि
 उनके बड भाग॥ तरन चहहि प्रभु शर लगे॥ विना जोग जप
 जाग॥ ॥ ॥ तिन्ह के आयुध तिल सरिस॥ करिकाटेर घुवीर
 ॥ तानि शरासन अवण लगि॥ पुनि छाडे निज तीर॥ ४१॥
 ॥ छंद॥ ॥ तव चले वाण कराल फुंकरत जनु बहु व्याल॥ को
 पेउ समर श्रीराम चले विशिख नि सितनिकामें॥ २३॥ अव
 लोकि खर तरनीर सुरि चले निशिचर वीर॥ एक एक कोउन
 संभार करें तात मात पुकार॥ २४॥ भए कुहती नो भाई॥ जो
 भागिरण ते जाई॥ तेहि बधव में निज पाणी॥ फिरे मरण म
 नम हटानि॥ २५॥ आयुध अनेक प्रकार॥ सन सुख ते कर
 हि प्रकार॥ रिपु परम कोपे जानि॥ प्रभु धनुष शर संधानि
 ॥ २६॥ छाडे विपुल नाराच॥ लगे कटन विकट पिशान॥ उर

शीसकरभुजचरण॥ जहंतहंलगेमहिपरण॥ २७॥ चिक
 रतलागतबाण॥ धरपरतकुधरसमान॥ भटकटततनू
 तरवंड॥ पुनिउठतकरिपारवंड॥ २८॥ नभउडतबहुभुज
 मुंड॥ विनुमौलिधावतरुंड॥ खगकंककाकमृगाल॥ क
 कदहिंकठिनकराल॥ २९॥ ॥ छंद॥ ॥ कटकदहिंजबू
 कभूतप्रेतपिशान्चखपूपरसंचहीं॥ बैतालबीरकपालता
 लबजाइयोगिनिचाचहीं॥ ३०॥ रघुबीरबाणप्रचंडखंड
 भटन्हकेउरभुजशिरा॥ जहंतहंपरहिउठिलरहिंधरु
 धरुकरहिगिराभयंकरा॥ ३१॥ अत्रावलीलैउडतगीद्विपि
 शाचकरगहिधावही॥ संग्रामपुरवासीमनहुबहुबालपु
 डीउडावहीं॥ ३२॥ मारेपछारेउरबिदारेविपुलभटकहंर
 तपरे॥ अवलोकिनिजदलबिकटभटत्रिशिरादिरवरदूष
 णफिरे॥ ३३॥ शरशक्तितोमरपरशुशूलरुपाणएकहिं-
 बारहीं॥ करिकोपश्रीरघुबीरपरअगणितनिशाचरडा
 रहीं॥ ३४॥ प्रभुनिमिषमहंरिपुशरनिवारिप्रचारिडारे-
 शायका॥ दशदशबिशिरखउरभांजमारेसकलनिशिच
 नायका॥ ३५॥ महिपरतउठिभटभिरतपुनिपुनिकरत
 मायाअतिघनी॥ सरडरतचौदहसहसनिशिचरएक
 श्रीरघुकुलमणि॥ ३६॥ सरमुनिसभयप्रभुदेखिमाया
 नाथअतिकीतुककर्यौ॥ देखहिंपरस्पररामकरिसं-
 ग्रामरिपुदललरिमर्यौ॥ ३७॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामराम
 कहितसुजहिं॥ पावहिंपदनिर्वाण॥ करिउपायरिपुमारे
 ॥ क्षणमहंरुपानिधान॥ ४२॥ हर्षितवर्षहिंसुमनसर॥
 वाजहिंगगननिशान॥ अस्तुतिकरिकरिसबचले॥ शोभि
 तविविधबिमान॥ ४३॥ ॥ नौपाई॥ ॥ जबरघुनाथस

मररिपुजीते ॥ सरनरमुनिसबकेदुरवबीते ॥ तबलक्ष्मण
 मीतहिलेआए ॥ प्रभुपदपरतहर्षिउरलाए ॥ सीतानिर
 खिश्याममृदुगाता ॥ परमप्रेमलोचननआधाता ॥ पंचव
 दीबसिथीरघुनायक ॥ करतचरितसरमुनिसरवदाय
 क ॥ धुआदेखिरवरदूषणकेरा ॥ जाइभूषणरावरावणप्रे
 रा ॥ बोलीबचनक्रोधकरिभारी ॥ दशकोशकीसरतिबि
 सारी ॥ करसिपानसोवसिदिनराती ॥ श्रुधिनतोहिशिर
 परआराती ॥ राजनीतिबिनुधनबिनुधर्म ॥ हरिहिसम



पैविनुसतकर्मा ॥ विद्याबिनुविचेकउपजाये ॥ अमफल
 पदैकियेअरुपाये ॥ संगतेयतीकुमंत्रतेराजा ॥ मानतेज्ञा
 नपानतेलाजा ॥ मीतिप्रणयणविनुमदतेगुणी ॥ नाशहिं
 वेगिनीतिअससुनी ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ रिपुरुजपावकपा
 प ॥ प्रभुअहिगणियनछोटकरि ॥ असकहिविविधबि
 लाप ॥ पुनिलागीरोदनकरण ॥ ४४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सभासो
 ऊपरिआकुल ॥ बहुप्रकारकहहोइ ॥ तोहिजिअतदशकं
 धर ॥ मोरिकिअसगतिहोइ ॥ ५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मुन

तसभासदउठिअकुलाई ॥ समुजाईगहिवाहुउठाई ॥ क
हलं केशकहसिनिजबाता ॥ केहितबनासाकाननिपाता
॥ अवधनृपतिदशरथकेजाए ॥ पुरुषसिंहबनखेलनआ
ए ॥ समुजिपरीमोहिउन्हकैकरणी ॥ रहितनिशाचरक
रिहहिंधरणी ॥ निजकरभुजबलपाइदशानन ॥ अभय
भयेमुनिबिचरहिंकानन ॥ देखतबालककालसमाना ॥
परमधीरधन्वीगुणनाना ॥ अतुलितबलप्रतापदोउभा
ता ॥ खलबधरतस्करमुनिस्करवदाता ॥ शोभाधामरामअ
सनामा ॥ तिन्हकेसंगनारिएकश्यामा ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥
अतिस्कुमारपियारि ॥ पदतरयोगनआहिकोउ ॥ मैम
नदीखबिचारि ॥ जहांरहेतेहिसमनकोउ ॥ ४६ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ अजहुजाइदेखबतुमजवहीं ॥ हैहहुबिकलता
स्वशतवहीं ॥ जीवनमुक्तलोकसबताके ॥ दशमुखस्
नहुसंदरिअसजाके ॥ रूपराशिबिधिनारिसंभारी ॥ र
तिशतकोटितासबलिहारी ॥ तासुअनुजकाटिश्रुतिना
सा ॥ स्तनितबभगिनीकरिपरिहासा ॥ खरदूषणस्तनि
लागुगोहारी ॥ क्षणमहंसकलकटकउनमारी ॥ खरदूष
णत्रिशिराकरघाता ॥ स्तनिदशशीसजरासबगाता ॥
॥ दोहा ॥ ॥ शूर्पनखहिसमुझाईकरि ॥ बलबोलेसिबहु
भांति ॥ भवनगंयेउअतिशोचबश ॥ नींदपपरीनहिंराति
॥ ४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ स्तरनरअस्तरनागमहिमाहीं ॥ मो
रेअनुचरकहकोउनाहीं ॥ खरदूषणमोसबबलवता ॥
तिन्हकोमारेबिनुभगवंता ॥ स्तररंजनभंजनमहिभारा ॥
जौजगदीशलीन्हअवतारा ॥ तौमैजाइबरहठिकरुं ॥ प्र
भुकरमरिभगसागरतरुं ॥ होयभजननहिंतामसदेहा ॥

मनक्रमवचनमंत्रदृढएहा॥जीवरूपभूपसूतकोऊ॥ह
 रिहौंनारिजीतिरणदोऊ॥चलाअकेलथानचदितहंवां॥
 रथअनूपजोरेखरचारी॥वेगवंतइमिजिमिउरगारी॥
 ॥छंद॥ ॥उरगारिसमअतिवेगवर्णतजाइनहीउपमाक
 ही॥शिरछत्रशोभितश्यामधनजलुचवरध्वेनविराजही॥
 ॥३८॥एहिभांतिलांघतसरितशैलअनेकवापीसोहही॥
 वनवागउपवनवाटिकाशुचिनगरसुनिमनमोहही॥३९॥
 ॥दोहा॥ ॥बहुतडागशुचिविहगसृग॥बोलनविविधा
 प्रकार॥एहिविधिआयोसिंधुतट॥शतयोजनविस्तार॥
 ॥४०॥ ॥चौपाई॥ ॥सुंदरजीवविविधविधजानी॥क
 रहिंकुलाहलदिनअरुनाती॥कूदहिनेगर्जहिंधननाई॥
 महाबलीबलवर्णिनजाई॥कनकवालुसुंदरकरवदाई
 ॥बैठहिंसकलजंतुनहंजाई॥तेहिपरदिव्यलताहुमला-
 गो॥जैहिदेपनसुनिमनअसुरागे॥गुहाविविधविरहहि
 वनाई॥वर्णतशारदमतिसकुचाई॥चाहियजहांअपिन
 करवासा॥तहांनिशाचरकरहिंनिवासा॥दशसुखदेखि
 सकलसकुचाये॥जेजडजीवसजीवअणने॥इहांगमज
 शसुक्तिवनाई॥सुनहुउमासोकथासुहाई॥ ॥दोहा॥
 लक्ष्मणगणद्वनहिंजव॥लेनमूलफलकंद॥जनकसूता
 सनबोलेउ॥विहंसिंहपाकरवचंद॥४१॥ ॥चौपाई॥
 सुनहुधियाद्रनरुचिरसुशाला॥सैकलुकरबललितनर
 लाला॥तुमपावकमहंकरहुंनिवासा॥जौंलगिकरींनिशा
 चरनागा॥जबद्विरामसबकहंउबरवानी॥अभुपदधरिहि
 अन्ननलसुमानी॥निजमतिविंशशिवनहंसीना॥तेस
 दशास्वरूपविनीता॥लक्ष्मणद्वयदममैनजाना॥जोक

छुचरित रचा भगवाना ॥ दशमुख गण उजहां मारीचा ॥ ना
 इमाथ स्वारथ रतनीचा ॥ नमनिनीच की अतिदुखदाई ॥
 जिमि अंकुश धनु उर गविलाई ॥ भयदाय करवल की मिय
 बाणी ॥ जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करि
 पूजा मारीच तब ॥ सादर पूछी बात ॥ कवन हेतु मन व्यथ-
 अति ॥ एक स आये हुतात ॥ ५० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दशमुख
 सकल कथा तेहि आगे ॥ कही सहित अभिमान अभागे ॥ हो
 हुक पट भुगतु मछल कारी ॥ जेहि विध हरि आनी नृप नारी
 ॥ तेहि पुनिकहा सुनहु दश शीसा ॥ तेन रूप चराचर ईशा
 ॥ तासों तात वैर नहिं कीजै ॥ मारे मरि यजि आ एजीजै ॥
 सुनि मखरावन गये उ कुमारा ॥ बिनु फर शर रघु पति मो-
 हि मारा ॥ शत योजन आये उंक्षण माहीं ॥ तिन्ह सन वैर
 किए भल नाहीं ॥ भइ मम कीट भुंग की नाई ॥ जहं तहं मै-
 देखों दोउ भाई ॥ जौं नर तात तदपि अति भूरा ॥ तिन्हिं बि-
 रोधन आइहिं पूरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेहिं ताड कासु बाहु
 हति ॥ खंडे उ हर को दंड ॥ खर दूषण भिशि सब धेउ ॥ मनु
 जकि अस वरि बंड ॥ ५१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जाहु भवन कु-
 ल कुशल बिचारी ॥ सुनत जरा दीन्हें सब हुगारी ॥ गुरुजि



मिमूढकरसिम्भमबोधा॥ कहूजगमोहिसमानकोयोधा॥
 तबमारीचहृदयअनुमाना॥ तबहिविरोधेनहिकल्याणा
 ॥ शरूमीममीप्रभुशठधन्वी॥ वेदवन्द्यकविमानसगुणी॥
 उभयभांतिदेखोनिजमरणा॥ तबताकेरघुनायकशरणा
 ॥ उतरदेतमोहिवधिहिअभागे॥ कसनमरीरघुपतिशर
 लागे॥ असजियजानिदशाननसंगा॥ चलारामपदप्रेम
 अभंगा॥ सनअतिहर्षजनावनतेही॥ आजुदेखिहौपर
 मसनेही॥ ॥ छंद॥ ॥ निजपरमप्रीतमदेखिलोचनस
 फलकरिस्करवपाइहौं॥ श्रीसहितअलुजसमेतकृपानि
 केतपदमनलाईहौं॥ ॥ ६०॥ निर्वाणदायकक्रोधजाकरभ-
 क्तिअवशहिंवशकरी॥ निजपाणिशरसंधानिसोमोहि
 वधहिंस्करवसागरहरी॥ ॥ ६१॥ ॥ दोहा॥ ॥ ममपाछेंध
 रधावत॥ धरशरासनबाण॥ फिरिफिरिप्रभुहिविलोकि
 हौं॥ धन्यनमोसमआन॥ ५२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सीताल-
 षणसहितरघुराई॥ जेहिंवनसवहींमुनिन्हस्करवदाई॥
 तेहिवननिकटदशाननगयेऊ॥ तबमारीचकपटमृगभये
 ऊ॥ अतिविचित्रकलुवरणिनजाई॥ कनकदेहमणिरचि
 नवनाई॥ सीतापरमरुचिरमृगदेखा॥ अंगअंगसुगमनो
 हरवेया॥ सुनहुदेवरघुवीरकृपाला॥ एहिमृगकरअ
 तिसुंदरछाला॥ सत्यसंधप्रभुवधकरिएहां॥ आनहु-
 चर्मकहावेदेही॥ तवरघुपतिजानासवकारण॥ उठेह
 यिंस्करकाजसंवारण॥ मृगविलोकिकटिपरिकरबांधा
 ॥ करतलचापरुचिरशरसांधा॥ प्रभुलक्ष्मणहिंकहासमु
 जाई॥ फिरतविपिननिशचरबहुभाई॥ सीताकरिकरहु
 ररवचारी॥ वृधिविनेकवलसमयाविचारी॥ ॥ दोहा॥

अस कहि चलेउतहां प्रभु॥ जहां कपट मृग नीच॥ देव हर्ष बि
स्मय बिबस॥ चातक जिमि वरषा बीज॥ ५३॥ ॥ चौपाई॥
प्रभु हि बिलोकि चला मृग भाजी॥ धाराम शरासन साजी॥
॥ निगमनेति शिव ध्यान पावा॥ माया मृग पाछें सोधावा॥ क



बहु निकट पुनि दूरि पराई॥ कबहुं कप्रगटै कबहुं छपाई॥
प्रगटत दुरत करत छल भूरि॥ इहि बिध प्रभु हि गयो लैं दूरी॥
॥ तब तकि राम कहिन शर मारा॥ धरणि परेउ करि घोर पुका
रा॥ लक्ष्मण कर प्रथम हि लैं नामा॥ पाछे सुमिरे सिमन म-
हं रामा॥ प्राण तजत प्रगटे सिनिज देहा॥ सुमिरे सिराम स-
मेत स्नेहा॥ अंतर प्रेम ता रूप हि चाना॥ सुनिदल भगति दी
न्ह सुजाना॥ ॥ दोहा॥ ॥ बिपुल सुमन सर बरषे हिं॥ गा
वहिं प्रभु गुण गाथ॥ निज पद दीन्हा अरु कहं॥ दीन बंधु
रघुनाथ॥ ५४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ खल बधितुर तफिरे रघु
वीरा॥ सोह चाप कर कटितूणीरा॥ अरत गिरा सुनी जव
सीता॥ कहै लक्ष्मण सन पर भस भीता॥ जाहु वेगि संकट
अति भ्राता॥ लक्ष्मण बिहंसि कहा सुनु माता॥ भूकुटी बि
लास सुष्टिलय होई॥ सपनेहु संकट परै कि सोई॥ सोपि-
गए मोहि रघु पति थाती॥ जौ तजि जाउ तोषन हि छाती॥ य

हजियजानिस्तनहुमममाता ॥ पूछत कह बकबनमैवाता ॥
 ॥ मर्मवचनसीताजबबोला ॥ हरिप्रेरितलक्ष्मणमतिडो
 ला ॥ चहुंदिशिरेखरवचाइअहीशा ॥ बारबारनावापदसी
 शा ॥ बनदिशिदेवसौंपिसबकाहू ॥ चलेजहांरावणशशि
 राहू ॥ चितवहिलक्ष्मणसियहिफिरिकैसैं ॥ तजतबतत्स
 निजमातहिजैसे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकडरतडररामके ॥ दू
 जेसीयअकेलि ॥ लक्ष्मणतेजतनुहतभयो ॥ जिमिबाटी
 दवबेलि ॥ ५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शून्यबीजदशकंधरदे-
 रवा ॥ आवानिकटयतीकेभेषा ॥ जाकेडरकरअकरडरा
 हों ॥ निशिननींददिनअन्ननरवाहीं ॥ सोदशशीसम्मान
 कीनाई ॥ इतउतचितइचलाभडिहाई ॥ जिमिकुपंथपग
 देतरवगेशा ॥ रहनतेजबलबुद्धिलवलेशा ॥ करिअनेक-
 विधिछलचतुराई ॥ मांगेउभिक्षादशसुरवजाई ॥ अति
 थिजानिसियकंदमूलफल ॥ देनलगितेंहि कीन्हबहुरि
 छल ॥ कहदशसुरवस्तनुसुंदरिवाणी ॥ बांधीभीरवनले
 उंसेयानी ॥ विधिमतिवासकालकटिनाई ॥ रेखलांधिसि
 यवाहिरआई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दिश्वभरणिअघदलनिसि
 य ॥ करणिसकलकरकाज ॥ जानानहितेंहिसमयसहं ॥
 दशशिरकपटकेसाज ॥ ५६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नानाविधा
 कहिकथासुहाई ॥ राजनीतिभयभीतिदिरवाई ॥ कहसी
 नास्तनुचतीगोसाई ॥ बोलैहुवचनदुष्टकीनाई ॥ तवरात
 एनिजरूपदेखावा ॥ भईसभौतजवनामस्तनावा ॥ कह
 सीताधरिधोरजगादा ॥ आइंगएमसुरहुखलटाटा ॥ जि-
 मिहरिवधूहिदृष्टशशचाहा ॥ भणसिकालवशनिशिच
 रनाहा ॥ वायसकरिचहखगपतिसमता ॥ सिंधुसमान-

होइ किमिसरिता ॥ खरीकि होइ सरधेनुसमाना ॥ जाहुभ
वननिज सुनु अज्ञाना ॥ सुनत बचन दशशीसलजाना ॥ म
नमहं चरणबंदि सरवमाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्रोधवंत तब
रावण ॥ लीन्हें सिरथ बैठाई ॥ चले उगगन पथ आतुर ॥ भ
यरथ हांकिन जाई ॥ ५७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हाजगदीशदेव
रघुराया ॥ केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥ आरति हरणश
रण सरवदायक ॥ हारधुकुल सरोज दिन नायक ॥ हाल द्वा
एतु हारनहिं दोषा ॥ सो फल पायेउं कीन्हें उं रोषा ॥ कैकेयी
मन जो कछु रहेउं ॥ सो बिधि आजु मोहि दुरव दयेउ ॥ पंच
वटी कै खग मृगजाती ॥ दुरवी भए जल चर बहुभांती ॥ बि
बिध बिलाप करती बैदेही ॥ भूरि कृपा प्रभु दूरिसनेही ॥
बिपति मोरि को प्रभु हि सुनावा ॥ पुरोडाश चहरास भस्वा
वा ॥ सीता कै बिलाप सुनि भारी ॥ भये उचरा चर जीव दुरवा
री ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुबिध करति बिलापन भ ॥ लिए जात
दशशीश ॥ इरतन खल बरपाइ भल ॥ जो दीन्हो अजईश ॥
५८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गृद्धराज सुनि आरत बाणी ॥ रघुकु
ल तिलक नारि पहि चानी ॥ अधमनिशा चर लीन्हें जाई ॥
जि भिमले छव शकपिला गाई ॥ अहह प्रथम बल ममतनु
नाहीं ॥ तदपि जाइ देरवों बल ताहीं ॥ सीता पुत्रिकर सिजनि
आसा ॥ करि हौं यातु धान करनाशा ॥ धावा क्रोधवंत खग
कैसें ॥ छटे पवि पर्वत कहं जैसें ॥ ररे दुष्ट ठाढ़ किन हीई ॥ नि
भय चले सिन जाने सि मोही ॥ आवत देखि कृतांत समाना
॥ फिरि दशकंध करत अनुमाना ॥ कीमै नाक कि खग पति
होई ॥ मम बल जानि सहित पति सोई ॥ जाना जरठ जटाधू
एहा ॥ मम करती रथ छाडि हि देहा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मम भुज

बलनहिजानहीं॥ आवतकिन्हसहाई॥ समरचढ़ैतौ यहि
 हतौ॥ जिअतननिजथलजाई॥ ५६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सु
 नतगृध्रक्रोधातुरधावा॥ कहसुनुगवणमोरशिरवावा॥ त
 जिजानकिहिकुशलगृहजाहु॥ नाहितखडितहोइहिबाहु
 ॥ रामरोषपावकअतिघोरा॥ होइहिसकलसुलभकुलतो
 रा॥ उत्तरनदेतदशाननयोधा॥ तबहिंगृध्रधावाकरिक्रो-
 धा॥ धरिकचविरथकीन्हमहिगिरा॥ सीतहिराखिगृध्र-
 पुनिफिरा॥ दशमुखउठिछतशरसंधाना॥ गृध्रआइका
 देउधनुवाणा॥ चोचन्हमारिविदारेसिदेही॥ दंडएकभ
 ईमूच्छतेही॥ ॥ दोहा॥ ॥ जेइरावणनिजबशकिए॥
 सुनिगणसिद्धसुरेश॥ तेहिरावणसनअमरअति॥ धी
 रवीरगृध्रेश॥ ६०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ करतिभएपुनिउठि
 सोधावा॥ मारीगृध्रसन्मुखतैहिआवा॥ कीन्हैसिबहुवि
 धयुद्धस्वगेशा॥ थकितभयातवजरठगृध्रेशा॥ तबसक्रो
 धनिशिचररिवसिआना॥ कादेसिपरमसकलकृपाणा॥
 कादेसिपरवपराखगधरणी॥ सुमिरिरामकरअद्भुतकर
 णी॥ मनमहग्रधपरमसुखमाना॥ रामकाजममलागेउपा
 णा॥ सीतहिंयानचढाइवहोरी॥ चलाउताइलआसनथो
 री॥ करतिविलापजातिनभसीता॥ व्याधविवशजनुमृ
 गीसर्भाता॥ गिरिपरवैदेकपिन्हनिहारी॥ कहिहरिनाम
 दीनपट्टडारो॥ इहविधसीतहिसोलैंगयऊ॥ वनअशोक
 महंराखतभयऊ॥ ॥ दोहा॥ ॥ हारिपराखलवहुतविध॥
 भयअरुमीतिदेखाई॥ नवअशोकपादपतरे॥ राखेसिय
 तनकराई॥ ६१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ उहांविधातामनअनुमा
 ना॥ करपतिबोलिमंत्रअगदाना॥ नातजनकतनयापहि

जाहु॥ सुधिन पावजिमिनिशिचरनाहु॥ अस कहि बिधि
संदरह बिआनी॥ सौपि बहुरि बोले मृदु बाणी॥ इहि म
क्षण कृत क्षुधान पिआसा॥ वर्ष सहस एक संशय नासा॥
सौ प्रसाद लैं आय संपाई॥ च ल्यो हिय सुमिरत रघुराई
॥ कछु वासव माया निज होई॥ रक्ष करहे गत हं सोई॥ त
द पिडरत सीता पहं आयौ॥ करि प्रणाम निज नाम सुना
यौ॥ निश्चय जानि करेश सुजाना॥ पिता जनक दशरथ
सम माना॥ करि मरि तोष दूरि करि शोका॥ हव्य खंवाइ ग
योनि जलोका॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेहि विध कपट कुरंग स-
ग॥ धाइ चले श्रीराम॥ सो छबिसी तारा खिउर॥ रटति र
हति हरि नाम॥ ६२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ रघुपति अनुज
हि आवत देषा॥ मनमहु चिंता कीन्ह विशेषा॥ जनक सु
ता परि हरेउ अकेली॥ आये हुतात बचन मम पेरी॥ नि
रफिरहि बन माहीं॥ मम मन सीता आश्रम
नाहीं॥ अह हतात भल कीन्ह हुनाहीं॥ सिया बिहीन मम
जीवन नाहीं॥ एहि तेक बन विपति बड माई॥ खोएउं सी
य कानन ही आई॥ गहि पद कमल अनुज कर जोरी॥ क
हेउ नाथ कछु मोहि नखोरी॥ अनुज समेत गए प्रभु तहवा
॥ गोदावरितंटा आश्रम जहवां॥ आश्रम देखि जान कीही
ना॥ भए बिकल जस प्राकृत दीना॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कानन
रहेउ तडागइव॥ चकचकई सिय राम॥ रावण निशि बिछु
रन भये॥ दुरव बीतें चहुं याम॥ ६३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ पर
दुरव हरण शोक दुरव ताई॥ भाविषाद तिन्ह कै मन माहीं॥
हागुण खानि जान की सीता॥ रूप शील व्रत नेम पुनीता॥
लक्ष्मण ससुजा एवहु भांती॥ पूछत चले लतातरूपांती॥

हेरवगमृगहेमधुकरश्रेणी॥ तुमदेखीसीतामृगनयनी॥ खं
 जनशुककपोतमृगमीना॥ मधुपनिकरकोकिलाप्रबीणा॥
 कुंदकलीदाडिमदामिनी॥ शरदकमलशशिअहिभामिनी
 ॥ वरुणपाशमनोजधनुहंसा॥ गजकेहरिनिजकरप्रशंसा
 ॥ श्रीफलकनककदलिहर्षाही॥ नेकुनशंकसकुचमनमा
 ही॥ सलुजानकीतोहिविलुआजू॥ हर्षेसकलपाईजलु
 राजू॥ किमिसहिजातअनखतोहिपाहीं॥ प्रियाबेगिप्र
 गटसिकसनाही॥ ॥ दोहा ॥ ॥ फणिमणिहीनदीन-
 जिमि॥ मीनहीनजिमिवारि॥ तिमिव्याकुलभएलषण
 नहं॥ रघुवरदशानिहारि॥ ६४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ धरि-
 उरधीरबुजावहिरामहिं॥ तजहिंनशोकअधिकस्वरवधा
 महिं॥ इहिविधखोजतविलपतस्वामी॥ मनुहुमहाविर
 हीअतिकामी॥ पूरणकामरामस्वरराशी॥ मनुजचरित
 करअजअविनाशी॥ स्वरवरअमितनदीगिरिखोहा॥
 बहुविधरामलषणतहंजोहा॥ शोचहृदयकछुकहिनहि
 आवा॥ टूटधनुषशरआगेपावा॥ कहुंकहुंशोणितदेखि
 यकैसे॥ आवणजलभादौरजजैसे॥ कहतरामलक्ष्मिहिवु
 जाई॥ काहूकीन्हसुखएहिंठार्ई॥ आगेपराश्रुपतिदेखा
 ॥ समिरतरामचरणजिन्हपेखा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करसरो
 जगिरपरसेऊ॥ लुपासिंधुरघुवीर॥ निरखिरामछविधा
 मसुख॥ विगतभईसवपीर॥ ६५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ तवा
 कहश्रुवचनधरिधीरा॥ सनहुरामभंजनभवभंरा॥ ना
 यदज्ञाननयहगतिकान्दी॥ तेहिरवलजनकसुताहरि-
 लान्दी॥ लैदक्षिणादिशिगयेउगोसांडे॥ विलपतिअतिकु
 रीकीनाडे॥ दरगलागिप्रभुराखेंउप्राणा॥ चलनचलन

अबहुपानिधाना ॥ राम कहत नुराख हुताता ॥ सुखसु
 काइ कही तेहि बाता ॥ जाकर नाम भरत सुख आवा ॥ अध
 मउमुक्त होइ श्रुति गावा ॥ सोममलोचन गोचर आगे ॥ रा-
 खौं देहनाथ के हिलागे ॥ जलभरिनयन कहार घुराई ॥ ता
 तकर्मनिज ते गति पाई ॥ परहित वस जिन्ह के मन माहीं ॥
 तिन्ह कहं जग दुर्लभ कहु नाहीं ॥ तनु तजिता तजाहु मम
 धामा ॥ देउ कहा तुम पूरण कामा ॥ गृध्र देहत जिधरि हरि
 रूपा ॥ भूषण बहु पट पीत अनूपा ॥ श्यामगात विशाल भु
 जचारी ॥ अस्तीति करत नयन भरि वारी ॥ ॥ दोहा ॥
 सीता हर एन तात जिमि ॥ कहहु पितासन जाई ॥ जोमें
 रावण कुल सहित ॥ कहहिंद शानन जाई ॥ ६६ ॥ ॥ छंद
 ॥ जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक सही ॥ द
 शशी सबाहु प्रचंड खंडन चाप शर मंडन मही ॥ ४२ ॥ पाथो
 जगात सरोज सुख राजीव आयतलोचन ॥ नित नौ मिरा
 म कृपालु बाहु विशाल भवभय मोचन ॥ ४३ ॥ बलम प्रमे
 यमनादि मजम व्यक्त मेकम गोचर ॥ गोविंद गोपर दंड ह
 र बिज्ञान धन धरणी धर ॥ ४४ ॥ जै राम मंत्र जपंत सत अ
 नंत जन मन रंजन ॥ नित नौ मिराम अकाम प्रिय कामादि
 खल दल गंजन ॥ ४५ ॥ जै हि श्रुति निरंतर ब्रह्म व्यापक वि
 रज अज कहि गावहीं ॥ करि ध्यान ज्ञान बिराग योग अने
 क मुनि जेहि पावहीं ॥ ४६ ॥ सो प्रगट करुणा कंद शोभा व
 द अगजग मोहई ॥ मम हृदय पंकज भृग अगल नंग बहु
 छबिसोहई ॥ ४७ ॥ जो अगम सगम स्वभाव निर्मल अ-
 सम सम शीतल सदा ॥ पश्यंति ये योगिय तन करि करत
 मन गोबशयदा ॥ ४८ ॥ सो राम रमानिवासंतत दास वशनि

भुवनधनी ॥ मम उर बसहु सो शमन संसृति जासु कीरति
 पावनी ॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अविरल भक्ति मांगिवर
 ॥ गृध्र गय उ हरि धाम ॥ तेहि की क्रिया यथोचित ॥ निज क
 र कीन्ही राम ॥ ६७ ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ कोमल चित अनिदी
 न दयाला ॥ कारण विनु रघुनाथ कृपाला ॥ गृध्र अधम रव
 ग आभिष भोगी ॥ सति तेहि दीन्ह जो याचत योगी ॥ सु
 नहु उमा ते लोक अभागी ॥ हरि तजि होहि विषय अनुरा
 गी ॥ पुनि सीतहिं खोजत दोउ भाई ॥ चले विलो गत बन
 बहु ताई ॥ संकुल लता बिटप घन कानन ॥ बहु रव गमृग
 तह गज पंचानन ॥ आचत पंथ कबंध निपाता ॥ तेइ सब
 कहो शाप की बाता ॥ दुर्जासा मोहि दीन्ही शापा ॥ प्रभु पद
 देरि मिटा सो पापा ॥ सुनु गंधर्व कहौ मैं तो हो ॥ मोहि न
 सुहाई ब्रह्म कुल दोही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मन कमवचन
 कपट तजि ॥ जो कर भूकर सेव ॥ मोहि समेत विरचि शि
 व ॥ वशता के सब देव ॥ ६८ ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ शाप तता
 उत परूप कहंता ॥ विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥ प्रजिय
 विप्र शील गुण हीना ॥ भूदन गुण गण जान प्रवीणा ॥ क
 हि निज धर्म ताहि ससुजावा ॥ निज पद श्रीति देखि मन
 भावा ॥ रघुपति चरण कमल शिर नाई ॥ गएउ गवन आ
 पनि गति पाई ॥ ताहि देइ गति राम उदारा ॥ शवरी देखि आ
 यम पगु धारा ॥ शवरी देखि राम गृह आ ॥ सुनि केवच
 न ससुजि जय भाए ॥ सरसि जलोचन बाहु विशाला ॥
 जटा मुकुट शिर उर बन माला ॥ अयम गौर सुंदर दोउ भा
 ई ॥ शवरी परी चरण लपटाई ॥ प्रेम मगन मुख दयन मन आ
 वा ॥ पुनि पुनि पद संगे जगि रसि नावा ॥ आदर जल लें चर

एपरवारी॥ पुनिसुंदरआसनबैठारी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कं
 दमूलफलसरसअति॥ दिएरामकहंआनि॥ प्रेमसहित
 प्रभुरवाएउ॥ बारहिंबारबरवानि॥ ६६॥ ॥ चौपाई॥
 पाणिजोरिआगेभईठाटी॥ प्रभुहिबिलोकिप्रीतिअति
 बाटी॥ केहिबिधिअस्कृतिकरौतुह्मारी॥ अधमजातिमे
 जडमतिभारी॥ अधमतेअधमअधमअतिनारी॥ तिन
 महंमैअतिमंदआधारी॥ कहरघुपतिस्फुभाभिनिबा
 ता॥ मानौएकभक्तिकौनाता॥ जातिपांतिकुलधर्मबडाई
 ॥ धनबलपरिजनगुणचतुराई॥ भक्तिहीननरसोहेकैसे
 ॥ बिनुजलबारिददेखियजैसे॥ नवधाभक्तिकहौंतोहीपा
 ही॥ सावधानस्फुधरुमनमांही॥ प्रथमभक्तिसंतनकर
 संग॥ दूसरिरतिममकथाप्रसंगा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरूप
 दपंकजसेवा॥ तीसरिभक्तिअमान॥ चौथिभक्तिममगु
 णगण॥ करैकपटतजिगान॥ ७०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ मंत्र
 जापममहदबिश्वासा॥ पंचमभजनसोबेदप्रकाशा॥ छठे
 दमशीलविरतिबहुकर्मा॥ निरतनिरंतरसज्जनधर्मा॥ स
 समसवमोहिमयजगदेखै॥ मातेसंतअधिककरिलेखै
 ॥ अष्टमयथालाभसंतोषा॥ सपनेहुनहिदेखैपरदोषा॥
 नवमसरलसबसोंछलहीना॥ ममभरोसजिहर्षनदीना
 ॥ नवमहंएकौजिन्हकेहोई॥ नारिपुरुषसचराचरकोई॥
 सोअतिशयप्रियभाभिनिमोरे॥ सकलप्रकारभक्तिदद
 तोरे॥ योगिघुंदहुलभगतिजोई॥ तोकहंआजुस्फुलभ
 भईसोई॥ ममदरशनफलपरमअनूपा॥ जीवपावनि
 जसहजस्वरूपा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सबप्रकारतबभागव
 ड॥ ममचरणन्हअनुराग॥ तबमहिमाजेहिउरबसिंहि॥

तासु परमवडभाग ॥ ७१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिशुभवच
 नहर्षकहंपाई ॥ मुनिबोले प्रभुगिरा सहार्ई ॥ जनकसक्ता
 कैसाधिकहु भामिनि ॥ जानहिं कहु करिगइ वरगामिनी ॥
 पंपासरहिं जाहुरघुराई ॥ मुनिवरबिपुलरहे जहछाई ॥
 अषिमतंग महिमा गुण भारी ॥ जीवचराचर रहत सरवा-
 शे ॥ बैरनकर काहुसनकोई ॥ जासन बैर प्रीतिकरुसोई
 ॥ शिरवर सहव न कानन फूले ॥ खगमृगजीवजंतु अनु-
 कूले ॥ करहु सफल आश्रम सब जाई ॥ तहं होइ हिंसायी
 वमिताई ॥ सो सब कहहिं देवरघुबीरा ॥ जानतहूं पूछत म-
 तिधीरा ॥ बारबार प्रभुपद शिर नाई ॥ प्रेम सहित सब क-
 था सुनाई ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कहि कथा सकल बिलो हरि मुख
 हृदय पद पंकज धरे ॥ तजियोग पावक देह हरि पद लीन भ-
 ई जहं नहिं फिरे ॥ ५० ॥ नरविविध कर्म अधर्म बहु मत शो-
 क प्रद सब त्यागहु ॥ विश्वास करि कह दास तुलसी राम प-
 द अनुरागहु ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जातिहीन अधजन्म म-
 हिं ॥ मुक्तकीन्ह असनारि ॥ महामंद मन सरव चहसि ॥ ऐ-
 से प्रभुहिं विसारि ॥ ७२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चलउ राम त्या-
 गावन सोऊ ॥ अतुलित बल नव के हरि दोऊ ॥ विरहोइव
 प्रभु करत विषादा ॥ कहत कथा अनेक संवादा ॥ लक्ष्मण
 देखहु कानन शोभा ॥ देखत केहि कर मनहि न क्षोभा ॥ ना-
 रिसहित सब रवग मृग चंदा ॥ मानहु मोरि करत हहिं निंदा
 ॥ हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं ॥ मृगो कहहिं तुम कह भ-
 यनाही ॥ तुम आनंद करहु मृग जाए ॥ कंचन मृगरवोजन
 एआए ॥ संगलाइ करिणी करिलं हो ॥ मानहु मोहि सिरव
 न नंदेही ॥ शास्त्र सांचित त पुनि पुनि देखिय ॥ भूपसमे ॥

बशनहिलेरिवध॥ सरिवयनारियदपिउरमाहीं॥
 वतीशारुन्नृपतिवशनाहीं॥ देखहुतातबसंतसहावा॥
 याहीनमोहिभयउपजावा॥ ॥दोहा॥ ॥बिरहबि-
 कलबलहीनमोहि॥ जानेसिनिपटअकेल॥ सहितबिपि
 नमधुकरखगन्ह॥ मदनकीन्हबगमेल॥ ७३॥ देखिगएउ
 भ्रातसहित॥ तासुदूतसुनिबात॥ डेरादीन्हेउमनहुतीन्ह
 ॥ कटकहटकिमनजात॥ ७४॥ ॥चौपाई॥ ॥बिटपबि
 शाललताअरुजानी॥ बिबिधवितानदिऐजनुतानी॥ क
 दलितालबरध्वजापताका॥ देखिनमोहधीरमनजाका॥
 बिबिधभांतिफूलेतरुनाना॥ जनुबानेतबनेबहुवाना॥
 कहुंकहुंसुंदरबिटपसुहाए॥ जनुभटबिलगबिलगहोइ
 छए॥ कूजतपिकमानहुगजमाते॥ टेकमहिषउंटबिसरा
 ते॥ मोरचकोरकीरबरबाजी॥ पारावतमरालसबताजी
 ॥ तीतरलावापदचरयूथा॥ बरणिनजाइमनोजबरूथा
 ॥ रथगिरिशिलादुदभीजरणा॥ चातकबंदीगुणगणबर
 णा॥ मधुकरसुरवभेरीसहनई॥ त्रिविधवयारिबसीठी
 आई॥ चतुरंगिनीसेनसंगलीन्हे॥ बिचरतसबहिक्षुनी-
 तीदीन्हे॥ लक्ष्मणदेखहुकामअनीका॥ रहहिधीरतिन्ह
 कैजगलीका॥ एहिकेएकपरमबलनारी॥ तेहितउबरेस
 भटसोभारी॥ ॥दोहा॥ ॥ ताततीनिअतिप्रबलख-
 ल॥ कामक्रोधअरुलोभ॥ मुनिबिज्ञाननिधानमम॥ क
 रहिनिमिषिमहंक्षोभ॥ ७५॥ लोभकेइच्छादंभवल॥ का
 मकेकेवलनारि॥ क्रोधकेपुरुषबचनबल॥ मुनिबरकरहि
 बिचारि॥ ७६॥ ॥चौपाई॥ ॥ गुणातीतसचराचरखा
 मी॥ रामउमासबअंतरजामी॥ कामिन्हकीदीन

ई ॥ धीरन्ह केमनदिरतिहृदाई ॥ क्रोधमनोजमहांमंदमा-
 या ॥ छूटहिंसकलरामकीदाया ॥ सोनरइंद्रजालनहिभूला
 ॥ जापरेहोइसोनदअनुकूला ॥ उमाकहौंमैअनुभवअप-
 ना ॥ सत्यहरिभजनजगतसबसपना ॥ पुनिप्रभुगएसरो
 वरनीरा ॥ पंषानामसुभगगंभीरा ॥ संतहृदयजसनिर्मल
 वारी ॥ बांधेघांटमनोहरचारी ॥ जहंतहंपिअहिविविध
 मृगनीरा ॥ जनुउदारगृहयाचकभीरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुर
 इनिसघनिओटजल ॥ बेगिनपाइयमर्म ॥ मायाअछत
 नदीखजिमि ॥ केवलनिर्गुणब्रह्म ॥ ७७ ॥ सुखीमीनस
 बंकरस ॥ अतिअगाधजलमांहि ॥ यथाधर्मशीलहि
 के ॥ दिनसुखसंयुताजाहिं ॥ ७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बि
 कसेसरसिजनानारंगा ॥ मधुरमखरगुंजतबहुभृंगा ॥
 बोलतजलकुछुटकलहंसा ॥ प्रभुबिलोकिजनुकरतप्र-
 शंसा ॥ चक्रवाकवकरवगसमुदाई ॥ देवतचनैवरणिन
 हिजाई ॥ सुंदरखगगणगिरासुहाई ॥ जातपथिकजनुले
 तबुलाई ॥ तालसमीपमुनिन्हगृहछाए ॥ चहुंदिशिकान
 नबिटपसुहाए ॥ चंपकवकुलकदंबतमाला ॥ पाटलपत्र
 सपलाशरसाला ॥ नवपल्लवकुसुमिततरुनाना ॥ चंचरी
 कपटलीकरगाना ॥ शीतलमंदसुगंधसुभाऊ ॥ संततव
 हेंमनोहरवाऊ ॥ कहुंकहुंकोकिलपिकध्वनिकरहीं ॥ सुनि
 रवसरसध्यानसुनिटरहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ फूलेफलेबिट
 पसव ॥ रहेंभूमिनिअराइ ॥ परउपकारीपुरुषजिमि ॥
 नमस्सुसंपतिपाइ ॥ ७९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखिरामअ
 तिरुचिरतलावा ॥ मज्जनकांन्हपरमस्वरुपावा ॥ देखेंउं
 सुंदरतरुवरछाया ॥ वेंदंअनुजसदितरघुराया ॥ नहंपु

निसकलदेवमुनिआए ॥ अस्तुतिकरिनिजधामसिधाए ॥
 ॥ बैठेपरमप्रसन्नरूपाए ॥ कहतअनुजसनकथारसा-
 ला ॥ बिरहवंतभगवंतहिदेवी ॥ नारदमनभाशोचबिशेषी ॥
 ॥ मोरशापकरिअंगीकारा ॥ सहतरामनानादुरवभारा ॥ अ-
 सेप्रभुहिबिलोकौंजाई ॥ पुनिनवनहिअसअवसरआई ॥
 ॥ यहविचारिनारदकरबीणा ॥ गएजहांप्रभुकरवआसी



ना ॥ गावतरामचरितमृदुबाणी ॥ प्रेमसहितबहुभांतिबरखा-
 नी ॥ करतदंडवतलिएउठाई ॥ राखेबडीवारउरलाई ॥ स्वा-
 गतपूछिनिकटबैठारे ॥ लक्ष्मणसादरचरणपरवारे ॥ ॥
 दोहा ॥ ॥ नानाविधिविनतीकरि ॥ प्रभुप्रसन्नजियजा-
 नि ॥ नारदबोलेबचनतब ॥ जोरिसरोरुहपाणि ॥ ॥
 ॥ बौपाई ॥ ॥ सुनहुउदारपरमरघुनायक ॥ सुंदरअग-
 मसुगमबरदायक ॥ देहुएकबरमागौंस्वामी ॥ यद्यपिजा-
 नतअंतरजामी ॥ जानहुसुनितुममोरसभाऊ ॥ जनस-
 नकबहुनकरोहुंराऊं ॥ कबनबस्तुअसप्रियमो ॥
 ॥ जोसुनिवरनशकहुतुममागी ॥

हिंमोरे॥ असबिश्वासतजहुजनिभोरे॥ तबनारद
 पाई॥ असबरमागों करों टि ठाई॥ यद्यपि प्रभुकेनाम अने
 का॥ श्रुतिकह अधिक एकते एका॥ रामसकलनाम न्हते
 अधिका॥ होउनाथ अधरवगगणबधिका॥ ॥ दोहा॥

॥ राजारजनी भक्तितब ॥ रामनाम सोइ सोम ॥ अपरना
 म उडुगणविमल ॥ वशहु भक्तउरव्योम ॥ ८१ ॥ एवमस्त
 सुनिसनकहेउ ॥ कृपासिंधुरघुनाथ ॥ तबनारदमनह
 र्षअति ॥ प्रभुपदनाएउमानाथ ॥ ८२ ॥ ॥ चौपाई॥

अतिप्रसन्नरघुनाथहिजानी ॥ पुनिनारदबोलेमृदुबा
 णी ॥ रामजबप्रेरेहुनिजमाया ॥ मोहेहुमोहिसनहुरघु
 राया ॥ तबबिबाहचाहोंमैंकीन्हा ॥ प्रभुकेकारणकरेनदी
 न्हा ॥ सुनिसुनितोहिकहोंसहरोषा ॥ भजहिंमोहितजि
 सकलभरोसा ॥ करोंसदातिन्हकीरखवारी ॥ जिमिबाल
 कहिराखुमहतारी ॥ गहिशिशुवत्सअनलअहिधाई ॥
 तहंरारेंजननीअरुगाई ॥ प्रौढभएतेहिसुतपरमाता ॥

प्रीतिकरैनहिंपाछिलवाता ॥ मोरेप्रौढतनयसमजानी
 ॥ बालकसुतसमदासअमानी ॥ जिनहिमोरबलनिज
 बलताही ॥ ताकहंकांमक्रोधरिपुआही ॥ यहविचारि
 पंडितमोहिभजहीं ॥ पाएहुंज्ञानभक्तिनहिंतजहीं ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ कामक्रोधलोभादिमद ॥ प्रबलमोहकैधारि
 ॥ तिन्हमहंअतिदारुणदुखद ॥ मायारूपीनारि ॥ ८३ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ सुनसुनिकहपुराणश्रुतिसंता ॥ मो
 हविपिनकहनारिवसंता ॥ जपतपनेमजलाशयजारी
 ॥ होउग्रीयमशोधेंसचवारी ॥ कामक्रोधमदमत्सरभेका
 ॥ इन्हदिहर्षप्रदवरपाएका ॥ दुर्वोसनाकुसुदसमुदाई ॥

तिन्हकहंशरदसदासरवदाई॥धर्मसकलसरसीरुहघंदा
 ॥होइहिमतिनहिदेतिदुरवमंदा॥पुनिममताजबासबहुता
 ई॥बाढहिनारिशिशिरऋतुपाई॥पापउल्कनिकरसरव
 कारी॥नारिनिबिडरजनीअंधिआरी॥बुधिवलशीलस
 त्यसबमीना॥बडशीसमत्रियकहहिंप्रवीणा॥ ॥दोहा॥
 ॥ ॥अवगुणमूलमूलप्रद॥प्रमदासबदुरवरवानि॥तातें
 कीन्हनिवारण॥मुनिमनयहजियजानि॥८४॥ ॥चौपा
 ई॥ ॥सुनिरघुपतिकेबचनसहाए॥मुनितनुपुलकि-
 नयनभरिआए॥कहहुकवनप्रभुकीअसरीती॥सेव
 कपरममताअतिप्रीती॥जेनभजहिअसप्रभुभ्रमत्या
 गी॥ज्ञानरंकनरमंदअभागी॥पुनिसादरबोलेमुनिना
 रद॥सुनहुसामविज्ञानविशारद॥संतन्हकेलक्ष्मणार
 धुबीरा॥कहहुसामभंजनभवभीरा॥सुनिसुनिसंतन
 केगुणकहऊ॥जेहितेंमैउन्हकेबशरहऊ॥षटविकारजि
 तअनघअकामा॥अकलअकिंचनभुचिसरवधामा॥
 अमितबोधपरमारथभोगी॥सत्यसारकबिकोबिदयो
 गी॥सावधानमानदमदहीना॥धीरधर्मगतिपरमप्रवी
 णा॥ ॥दोहा॥ ॥गुणागारससारदुरव॥रहितबिग
 तसंदेह॥तजिममचरणसरोजप्रिय॥तिन्हकहंदेह-
 नगेह॥८५॥ ॥चौपाई॥ ॥निजगुणसुनतअवण
 सकुचाहीं॥परगुणसुनतअधिकहर्षाहीं॥समशीत
 लनहित्यागहिनीती॥सरलसुभावसबहिसनप्रीती॥
 जपतपव्रतदमसंयमनेमा॥गुरुगोविंदविप्रप्रदप्रेमा॥
 अदाक्षमामइत्रीदाया॥मुदिताममपदप्रीतिअमाया॥
 विरतिविवेकविनयविज्ञाना॥बोधजथारथबेदपुगणा॥

दंभमानमदकरहिनकाऊ॥भूलिनदेहिंकुमारगपाऊं॥गा
 वहिंकनहिंसदाममलीला॥हेतुरहितपरहितरतशीला॥
 सुनुमुनिसाधुन्हकेगुणजेते॥कहिनसकहिंशारदश्रुतिते
 ते॥ ॥छंद॥ ॥कहिशकनशारददेषनारदसुनतप
 दपंकजगहे॥असदीनबंधुक्कपालुअपनेभक्तगुणनिज
 मुखकहे॥५२॥ शिरनाइबारहिबारचरणन्हब्रह्मपुर
 नारगये॥तेधन्यतुलसीदासआशाविहाइजेहरिरंगये
 ॥५३॥ ॥दोहा॥ ॥रावणारियशपावन॥गावहिंसु
 नहिजेलोग॥रामभक्तिहृदपावहीं॥विनुबिरागजपयो
 ग॥८६॥दीपशिरवासमयुवतिजन॥मनजनिहोसिप
 तंग॥भजहिंरामतजिकाममद॥करहिसदासतसंग॥
 ॥८७॥ ॥इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलि
 कलुपविश्वंसनेविमलवैराग्यसंपादनोनामतृतीयःसो
 पानः अरण्यकांडःसमाप्तः॥ ॥श्रीसीतारामचंद्रा
 र्पणमस्तु॥ ॥दोहा॥ ॥अतिअरण्यसीताहरण
 ॥गृध्रगयेउनिजधाम॥श्रीधरशिवरीपरमपद॥पायेउ
 प्रभुगुणग्राम॥१॥ ॥श्रीराम॥ ॥छ॥ ॥
 ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥

इति तुलसीदासकृत रामायण अ
 रण्यकांडं समाप्तम् ७

श्री
अथ.
तुलसिदासकृत.
रामायणकिष्किंधाका
इप्रारंभः

श्रीगणेशायनमः
अथ किष्किंधाकांडं लिख्यते.
श्लोकः.

कुंदेंदीवरसुंदरावतिवलौविज्ञानधामाबुभौशोभाद्यौवर
धन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृंदप्रियो ॥ मायामानुषरूपिणौ
रघुवरोसद्धर्मवर्मौहितौसीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभ
क्तिप्रदौदेहिनः ॥ १ ॥ ब्रह्मांभोधिससुद्धवंकलिमलप्रध्वं स
नंचाव्ययं श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरं संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनंधन्यासोह
निनः पिबंतिसततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥ ॥ सौरठा ॥
॥ मुक्तिजन्ममहिजानि ॥ ज्ञानखानिअघहानिकर ॥ जहौ
यसुशंभुभवानि ॥ सोकाशीसेइयनकिन ॥ १ ॥ जरतसक
लसरवृंद ॥ विषमगरलजेहिपानकिय ॥ तेहिनभजसि
रुतिमंद ॥ सोरुपालुशंकरसरिस ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥
आगेंचलेबहुरिरघुराई ॥ अख्यमूकपर्वतगयेनियराई
॥ तहंरहसचिवसहितसुग्रीवा ॥ आवतदेखिंअतुलब
लसीवा ॥ अतिसभीतकहसुनुहनुमाना ॥ पुरुषयुगल
वलरूपनिधाना ॥ धरिवडुरूपदेखुतैंजाई ॥ कहेसिमोहि
जयसैनबुजाई ॥ पढवावालिहोइमनमैला ॥ भागोंतुरत
जोंयहशैला ॥ विप्ररूपधरिकपितहंगएऊ ॥ माथनाइ
पुल्लतअसभएऊ ॥ कोतुमइयामलगौरशरीरा ॥ क्षत्री
रूपफिरहुवनवीरा ॥ कटिनभूमिकोमलपदगामी ॥ क
वनहेतुविचरहुवनस्वामी ॥ मृदुलमनोहरसुंदरगाता
॥ सहतदुसहवनआतपवाता ॥ कैतुमर्नानिदेवमहकोऊ
॥ नरनारायणकैतुमदाऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जगकारणता
रागभवहिं ॥ भंजनधरणीभार ॥ कैतुमअखिलभुवन ॥

पति॥ लोन्हमनुजअवतार॥३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ कोशले
 शदशरथकेजाए॥ हसुपितुबचनमानिबनआए॥ नास-
 रामलक्ष्मणदोउभाई॥ सगनारिसुकुमारिसहार्दे॥ इहां
 हरीनिशिचरबैदेही॥ खोजतविप्रफिरहिंहमतेही॥ आ-
 पनचरितकहाहमगार्दे॥ कहहुविप्रनिजकथाबुजार्दे॥ प्र-
 भुपहिचानिपरेगहिचरण॥ सोसरवउपमाजार्देनहि
 वरणा॥ पुलकिततनुमुखआवनवचना॥ देखतरुचि-
 रबेषकैरचना॥ पुनिधीरजधरिअस्कृतिकीन्हा॥ हर्ष-
 हृदयनिजनाथहिंचीन्हा॥ मैअजानहोयपूछासांई॥
 तुमकसपूछहुनरकीनार्दे॥ तबमायाबशफिरौंभुलाना
 ॥ तातैनहिप्रभुपदपहिचाना॥ ॥ दोहा॥ ॥ एकमंद
 मैमोहबश॥ कुटिलहृदयअज्ञान॥ पुनिप्रभुमोहिवि-
 सारेउ॥ दीनबंधुभगवान॥४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ यद्य-
 पिनाथबहुअवगुणामोरे॥ सेवकप्रभुहिंपरैनहिभोरे
 ॥ नाथजीवतबमायामोहा॥ सोनिस्तरैतुह्मारेहिछोहा
 ॥ तोपरमैरघुवीरदोहार्दे॥ जानौकछुनहिभजनउपाई
 ॥ सेवकसुतपितुमातुभरोसैं॥ रहैअशोचबनैप्रभुपे-
 सैं॥ असकहिचरणपरेअकुलार्दे॥ निजतनुप्रगटप्री-
 तिउरछार्दे॥ तबरघुपतिउठाइउरलाए॥ निजलोचन
 जलसींचिजुडाए॥ सनुकपिजियजनिमानेसिऊना॥ तै-
 मप्रियलक्ष्मणतेदूना॥ समदरशीमोहिकहसबको-
 र्दे॥ सेवकप्रियअनन्यगतिहोई॥ ॥ दोहा॥
 नन्यअसजाहिके॥ मतिनदरैहनुमंत॥ मैसेवकसच-
 ५॥ रूपराशिभगवत॥५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ देखि
 पवनसुतपतिअनुकूला॥ हृदयहर्षबीतासबभूला॥

नाथशैलपरकपिपतिरहई ॥ सोसुग्रीवदासतबअहई ॥
 ॥ तासननाथसुमैत्रीकीजे ॥ दीनजानितेहिअभयकरीजे ॥
 ॥ सोसीताकरखोजकराइहिं ॥ तहतहंमरकटकोटिपग
 इहिं ॥ इहिविधिसकलकथासमुजाई ॥ लिएदोउजनपी
 ठचढाई ॥ जबसुग्रीवरामकहंदेखा ॥ अतिशयजन्मधा
 न्यकरिलेखा ॥ सादरमिलेनाइपदमाया ॥ भेटेअनुज
 सहितरघुनाथा ॥ कपिकेमनविचारयहरीती ॥ करिह
 हिंविधिमोसनयेप्रीती ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबहनुमंतउ
 भयदिशि ॥ कहिसबकथाबुजाई ॥ पावकसाक्षीदेइक
 रि ॥ जोरीप्रीतिट्टदाई ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कीन्हप्रीति
 कलुबीचनराषा ॥ लक्ष्मणरामचरितसबभाषा ॥ कह
 सुग्रीवनयनभरिवारी ॥ मिलहिंनाथमिथिलेशकुमा
 री ॥ मंत्रिनसहितइहांएकवारा ॥ बैठरहुउमैकरतविचा
 रा ॥ गगनपंथदेरवीमैजाता ॥ परबशपरीबहुतविलपा
 ता ॥ रामरामहारामपुकारी ॥ ममदिशिदेखिदीन्हपटडा
 री ॥ मागरामतुरतसोदीन्हा ॥ पटउरलाइशोचअतिकी
 न्हा ॥ कहसुग्रीवसुनहुंरघुवीरा ॥ तजहुशोचमनआ
 नहुधीरा ॥ सबप्रकारकरिहोंसेवकाई ॥ जोहिंविधिमि
 लहिंजानकीआई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरवाबचनसु
 निहर्षेहिं ॥ कृपासिंधुबलसीव ॥ कारणकवनबसहुब
 न ॥ मोसनकहहुसुग्रीव ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नाथ
 बालिअरुमेंहोंभाई ॥ प्रीतिरहीकलुवरणिनजाई ॥
 मयसुतमायावीतेहिनाऊ ॥ आवासाप्रभुहमरेगाऊ ॥
 अइरातिपुरद्वारप्रकारी ॥ बालिहरिपुबलसहेनपारा ॥
 ॥ धावाबालिदेखिसाभागा ॥ मैपुनिगएउबंधुसंगलागा ॥

गिरिबरगुहापैठसोधाई॥ बालिमोहितबकहाबुजाई॥ प
 रषेहुमोहिएकपरवारा॥ नहिआवौतौजानेहुमारा॥ मास
 दिवसतहेरहेउखरासी॥ निसरीरुधिरधारतहं भारी॥ तबमैं
 निजमनकीन्हविचारा॥ जानातिन्हबंधुकहंमारा॥ बालिहते
 सिमोहिमारिहिंआई॥ शिलाद्वारदेचलेउपराई॥ मंत्रिन्हपु
 रदेखाबिनुसांई॥ दीन्हैउराजमोहिवरिआई॥ बालिताहिमा
 रीगृहआवा॥ देखिमोहिजियभेदबदावा॥ रिपुसमानमोहि
 मारसिभारी॥ हरिलीन्हैसिसर्वस्वअरुनारी॥ ताकेभयरघु
 बीरकृपाला॥ सकलभुवनमेंफिरेउबिहाला॥ इहांशापबश
 आवतनाहीं॥ तदपिसभीतरहौंमनमाहीं॥ सुनिसेवकदुख
 दीनदयाला॥ परकिउठेदोउभुजाबिशाला॥ ॥दोहा॥ ॥
 सुनिसुग्रीवमैंमारिहौं॥ बालिहिंएकहिंबाण॥ ब्रह्मरुद्रशर
 एागतहु॥ गएनउबरहिंप्राण॥ ॥८॥ ॥चौपाई॥ ॥जेनमि
 त्रदुरवहोहिंदुरवारी॥ तिन्हैबिलोकतपातकभारी॥ निजदु
 खगिरिसमरजकैजाना॥ मित्रकेदुरवरजमेरुसमाना॥ जि
 नकेअसमतिसहजनआई॥ तेशठहठकतकरतमिताई॥
 कुपथनिवारिसुपथचलावा॥ गुणप्रगटेअवगुणहि
 ॥देतलेतमनशंकनधरहीं॥ बलअनुमानसदाहितकरहीं॥
 ॥विपतिकालकरशतगुणनेहा॥
 ॥आगैंकहमृदुबचनबनाई॥ पाछेंअनहितमनकु
 ॥जाकरचितअहिगतिसमभाई॥
 ॥सेवकशठचूपकृपणकुनारी॥
 ॥सुखाशोचत्यागहुबलमारे॥ सबविधिकर
 ॥कहसुग्रीवसुनहु रघुबीरा॥ बालिमहाबलअतिरण
 धीरा॥ दुंदुभिअस्थितालदिखराए॥ ५

हृदाए॥ देखि अमित बलवादी प्रीती॥ बालि बधन कर भइ पर
 तीती॥ बारहिं बारनाइ पद शीसा॥ प्रभुहिं जासि मन हर्ष कपीशा
 ॥ उपजा ज्ञान बचन तब बोला॥ नाथ कृपा मन भए उअ लोला॥
 सरव संपति परिवार बडाई॥ सब परिहरि करि हौं सेव काई॥
 यह सब राम भक्ति के बाधक॥ कहहिं संत तब पद अवधारक॥
 ॥ शत्रु मित्र सरव दुख जग माहीं॥ माया कृत परमारथ नाहीं॥
 बालि परमहित जासु प्रसादा॥ मिले हुराम तुम शमन विषा-
 दा॥ सपने जेहि सन होइ लराही॥ जागे समुजत मन सकुचाई
 ॥ अब प्रभु कृपा करहु यहि भांती॥ सब तजि भजन करौं दिन रा-
 ती॥ सुनि बिराग संसृत कपि बाणी॥ बोले विहसि समधनु-
 पाणी॥ जो कछु कहै उ सत्य सब सोई॥ सरवा बचन मम मृषा
 न होई॥ नट मर कट इव सब हिनचावत॥ राम खगेश बेद अ-
 स गावत॥ लै सुग्रीव संगरघुनाथा॥ चले चाप सायक गहि हा-
 था॥ तबरघुपनि सुग्रीव पठावा॥ गर्ज सिजाइ निकट बल पा-
 वा॥ सुनत बालि क्रोधातुर धांवा॥ गहिकर चरण नारिस मुजा-
 वा॥ सुनुपति जिनहिं मिला सुग्रीवा॥ ते दोउ बंधु तेज बल सी-
 वा॥ कोशलेश सुत लक्ष्मण रामा॥ कालहु जीति शकहिं संग्रा-
 मा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहा बालि सुनु भीरु प्रिय॥ सम दरशीरघु
 नाथ॥ जौं कदापि मारि मारि हों॥ तौ पुनि होव मनाथ॥ ॥ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ अस कहि चला महा अभिमानी॥ तृण समान सु-
 ग्रीवहिं जानी॥ भिरे उभय बालि अति नजी॥ सुष्टि कमारि महा
 ध्वनि गजा॥ नव सुग्रीव विकल होइ भागा॥ सुष्टि प्रहार बज्र
 समानागा॥ मै जों कहारघु वीर कृपाला॥ बंधु न होइ मार यह
 काला॥ एकरूप सुम भ्राता दोउ॥ नेहि भ्रम तेनहि मारें उसा-
 ऊ॥ कर परशा सुग्रीव शरीरा॥ तनु भाकुलि शगई सव पांरा॥

मेलीकंठसुमनकैमाला॥पठवापुनिबलदेइविशाला॥पुनि
 नानाविधिभईलराई॥विटपओददेखहिरघुराई॥॥दोहा
 ॥॥बहुछलबलसुग्रीवकरि॥हृदयहारिभयमानि॥माराब
 लिहिंरामतब॥हियेमांऊशरतानि॥१०॥॥चौपाई॥॥प
 राबिकलमहिशरकेलागे॥पुनिउदिबैठदेखिप्रभुआगे॥
 श्यामगातशिरजटाबनाए॥अरुणनयनशरत्चापचटाए
 ॥पुनिपुनिचितैचरणचितदीन्हे॥सफलजन्ममानाप्रभुची
 न्हे॥हृदयप्रीतिसुखबचनकठोरा॥बोलाचितैरामकीओ
 रा॥धर्महेतुअवतरेहुगोसांई॥मारेहुमोहिव्याधकीनाई॥
 मैबैरीसुग्रीवपिआरा॥कारणकवननाथमोहिमांरा॥अ
 लुजबधूभगिनीसुतनारी॥सलुशठएकन्यासमचारी॥इ
 न्हेकुदृष्टिबिलोकैजोई॥ताहिवधेकछुपापनहोई॥मूढनोहि
 अतिशयअभिमाना॥नारिशिरवावनकरेसिनकाना॥म
 मभुजबलआश्रिततेहिजानी॥माराचहसिअधमअभि
 मानी॥॥दोहा॥॥सुनदुरामस्वामीसुभग॥चलनचालु
 मोरि॥प्रभुअजहुंमैंपातकी॥अंतकालगतितोरि॥११॥
 चौपाई॥॥सुनतरामअतिकोमलबाणी॥बालिशोस
 ॥अचलकरैंतलुराखहुआना॥बालिक
 नधाना॥जन्मजन्मसुनियतनकराही॥अंत
 हआवतनाहीं॥जासुनामबलशंकरकाशी॥देतस
 बहिसमगतिअविनाशी॥ममलोचनगोचरसोइआवा॥
 बहुरिकिप्रभुअसबनहिबनावा॥॥छंद॥सोनयनगोच
 रजासुगुणनितनेतिकहिंश्रुतिगावहीं॥जीतिपवनमन
 गोनिरसकरिमुनिध्यानकबहुंकपावहीं॥१॥मोहिजानि
 ॥असकवन

शठहठिकादिसरतरुवारिकरहिंकरहीं ॥२॥ अवनथक
 रिकरुणाविलोकहुंदेहुं यहवरमांगहुं ॥ जेहियोनिजनमौ-
 कर्मवशतहंरामपदअनुरागहुं ॥३॥ यहतनयममसमवि-
 नयवलकल्याणप्रदप्रभुदीजियै ॥ गहिंबांहसरनरनारअ-
 गददासआपनकीजियै ॥४॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामचरणदृ-
 ढप्रीतिकरि ॥ बालिकीन्हतनुत्याग ॥ समनमालजिमिकं
 ठतैं ॥ गिरतनजानैनाग ॥१२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामबालि
 निजधामपठावा ॥ नगरलोगसबव्याकुलधांवा ॥ नानाविध
 बिलापकरनारा ॥ छूटेकेशनदेहसंभारा ॥ ताराबिकलदेखि
 रघुराया ॥ दीन्हज्ञानहरिलीन्हीमाया ॥ क्षितिजलपावक
 गगनसमीरा ॥ पंचरचितयहअधमशरीरा ॥ प्रगटसोतनु
 तवआगेसीवा ॥ जीवनीतकेहिलगितुमरोवा ॥ उपजाज्ञा-
 नचरणतबलागी ॥ लीन्हेसिपरमभक्तिवरमागी ॥ उमादा
 रुयोधितकीनाई ॥ सबहिंनचांवतरामगोसांई ॥ तवसुग्री-
 वहिंआयसुदीन्हा ॥ मृतककर्मविधिवतसबकीन्हा ॥ राम
 कहाअनुजहिंसमुझाई ॥ राजदेहुसुग्रीवहिंजाई ॥ रघुप-
 तिचरणनाइकरिमाथा ॥ चलेसकलप्रेरितरघुनाथा ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ लक्षणतुरतबुलाएहु ॥ पुरजनविप्रसमाज
 ॥ राजदीन्हसुग्रीवकहें ॥ अंगदकहेंयुवराज ॥१३॥ ॥ चौपा-
 ई ॥ ॥ उमारामसमहितजगमाही ॥ गुरुपितुमातुबंधुको
 उनाहीं ॥ सरनरमुनिसबकेंयहरीती ॥ स्वारथलागिकरें
 सबप्रीती ॥ बालिआसव्याकुलदिनराती ॥ तनुविवरणचिं-
 ताजरछाती ॥ सांसुग्रीवकीन्हकपिराऊ ॥ अतिकोमलरघु-
 वीरसभाऊ ॥ ऐसेप्रभुकहंजां परिहरहीं ॥ काहेनविपति-
 जालनरपरहीं ॥ मुनिसुग्रीवहिंलीन्हबुलाई ॥ बहुप्रकार

नृपनीतिशिरवाई ॥ कह प्रभु सुस्तु सुग्रीवहरीशा ॥ पुरनजाउं
दशचारिबरीषा ॥ गतग्रीषमबरषा न्तु आई ॥ रहिहौं नि क
टशलपरछाई ॥ अंगद सहित करहु तुमराजू ॥ सतत हृदय ध
रेहु ममकाजू ॥ तब सुग्रीव भवन फिरि आए ॥ राम प्रवर्ष एगि
रि परछाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रथम हिंदेवन गिरिगुहा ॥ राखीरु
चिरबनाइ ॥ राम लपानिधिक लुकदिन ॥ वास करहिं गे आ
इ ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुंदर बन कसुमित तरुशोभा ॥ गुं
जत चंचरी कमधुलोभा ॥ कंदमूल फल पत्र सहहाए ॥ भए बा
हुत जब ते प्रभु आए ॥ देखि मनोहर शैल अनूपा ॥ रहेत हां-
अनुज सहित सरभूपा ॥ मंगल रूप भए बनत बतें ॥ कीन्ह
निवासर मापति जबतें ॥ मधुकर रवगमृगतनु धरि देवा ॥ क
रहिं सिद्ध सुनि प्रभु के सेवा ॥ स्फटिक शिला अति शुभ्र सह
ई ॥ सरव आसीन तहां दोउ भाई ॥ कहत अनुज सनक या-
अनेका ॥ भक्ति बिरति नृपनीति बिबेका ॥ बरषा काल मेघ-
न भछाए ॥ गरजत लागत परम सहहाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लक्ष्म-
ण देखहु मोरगण ॥ नाचत वारिद पेखि ॥ गृही विरति रत हर्ष
जश ॥ विष्णु भक्त कहं देखि ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ घन घमं
डन भगरजत घोरा ॥ प्रीया हीन डर पत मन मोरा ॥ दामिनि द
मकिरहे घन माहीं ॥ खल कै प्रीति यथाधिर नाही ॥ बरषहिं
जल द भूमि निअराये ॥ यथानमहिं बुध विद्या पाये ॥ बिंदु अ
धात तसहै गिरि कैसे ॥ खल के बचन संत सहै जैसे ॥ क्षुद्र नदी भा
रि चलि उतराई ॥ जश थोरे घन खल बौराई ॥ भूमि परत भावा
वर पानी ॥ जिमि जीवहि माया लपटानी ॥ सिमिटि सिमिटि-
जल भरें तलावा ॥ जिमि सदगुण सज्जन पह आवा ॥ सरित
जल जल निधि मह जाई ॥ होइ अचल जिमि जन हरि पाई ॥

॥ दोहा ॥ ॥ हरितभूमितृणसंकुल ॥ समुद्रिपरै नहि पंथ ॥ जि
मिपाषंडविवादतें ॥ गुसभएसदग्रंथ ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
दादुरध्वनिचहुं और सहार्ई ॥ वेदपदै जनु बहु समुदाई ॥ नव
पल्लवभए बिटपअनेका ॥ साधकमनजशहोइ विवेका ॥ अ
र्कजबासपातबिनुभएऊ ॥ जस सराज्यखल उद्यमगएऊ ॥
खोजत कहहुं मिलै नहि धूरी ॥ करै क्रोधजिमि धर्महि दूरी ॥
शस्य संपन्न सोह महि कैसैं ॥ उपकारी की संपति जैसैं ॥ निशि
तमघनखद्योतबिराजा ॥ जनु दंभिनकरमिला समाजा ॥ म
हावृष्टिचलि फूटि कीयारी ॥ जिमि स्वतंत्र होइ विगरहि नारी ॥
कृषी निरावहि चतुर कृशाना ॥ जिमि दुधतजहि मोहमदमा
ना ॥ देखिय चक्रवाकरवगनाही ॥ कलिहिं पाइ जिमि धर्मपरा
ही ॥ उसरवर पै तृण नहि जामा ॥ संत हृदय जश उपजनका
मा ॥ विविधजंतु संकुल महि भ्राजा ॥ बदै प्रजा जिमि पाई सु
राजा ॥ जहैं तहैं पथिक रहे थकि नाना ॥ जिमि इंद्रियगण उप
जै जाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कबहुं प्रबल चलमारुत ॥ जहंत
हं मेघविलाहि ॥ जिमि कुपुत्रकुल उपजे ॥ संपति धर्मनशाहि
॥ १७ ॥ कबहुं दिवस महं निविडतम ॥ कबहुं कप्रगटपतंग ॥ उ
पजै बिनशे ज्ञानजिमि ॥ पाइ सकसंगकुसंग ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई
॥ वर्षाविगत शरद ऋतु आई ॥ देखहु लक्ष्मण परमसु
हाई ॥ फूलेकाश सकल महि छाई ॥ जनु वर्षा कृत प्रगटबुदा
ई ॥ उदित अगस्त्य पंथ जलशोषा ॥ जिमि लोभहि शोषै संतो
षा ॥ सरितासरजलनिर्मल सोहा ॥ संत हृदय जसगत मद
मोहा ॥ रसरस शोषसरितसरपानी ॥ ममता त्याग करहिं जि
मि जानी ॥ जानि शरद ऋतु खंजन आए ॥ पाइ समय जिमि
सुकृति सुहाए ॥ पंकनरेणु सोह अशधरणी ॥ नीतिनिपुण

नृपकेजशकरणी॥ जलसंकोचविकलभैमीना॥ अबुधकुटुं
 बीजिमिधनहीना॥ विनुधननिर्मलसोहअकाशा॥ जिमिह
 जनपरिहरसबआशा॥ कहुंकहुंवृष्टिशारदीथोरी॥ को
 कपावभक्तिजिमिमोरी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चलेतजिनगर
 ॥ तापसबणिकभिरवारि॥ जिमिहरिभक्तीपाइअम॥ त
 आअमीचारि॥ १९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सरसीमीनजहं
 अगाधा॥ जिमिहरिशरणनएकौबाधा॥ फूलेकमलसोह
 कैसे॥ निर्गुणब्रह्मसगुणभएजैसे॥ गुंजतमधुकरनि
 रअनूपा॥ सुंदरखगरवनानारूपा॥ चक्रबाकमनदु
 शिपैखी॥ जिमिहुर्जनपरसंपतिदेखी॥ चातकरदततृषा
 ओही॥ जिमिसरवलहैनशंकरद्रोही॥ शरदातपनिशि-
 शशिअपहरई॥ संतदरशजिमिपातकटरई॥ देखहिंबि
 धुचकोरसमुदाई॥ चितवहिंहरिजनहरिजिमिपाई॥ म
 शकदंशबीतेहिमत्रासा॥ जिमिहिजद्रोहकीयेकुलनाशा॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ भूमिजीवसंकुलरहे॥ गएशरदक्रतुपाइ॥ स
 तगुरुमिलेजाहिंजिमि॥ संशयअमसमुदाई॥ २०॥ ॥ चौ
 पाई॥ ॥ वर्षागतनिर्मलक्रतुआई॥ श्राधिनतातसीताकी
 पाई॥ एकबारकैसेउंशुधिपावौं॥ कालहुजीतिनिमिषमह-
 ल्यावौं॥ कतहुंरहीजोजीवतहोई॥ तातयतनकरिआनौ
 सोई॥ सग्रीवहुंशुधिमोरिविसारी॥ पावाराजकोसपुरना
 री॥ जेहिशायकमैमाराबाली॥ तेहिशरहतौंमूटकहकाली
 ॥ जासुकृपाछुटैमदमोहा॥ ताकहुंउमाकिसपनेहुकोहा॥
 नहियहचरित्रसुनिजानी॥ जिन्हंरघुबीरचरणरतिमा
 नी॥ लक्ष्मणक्रोधवतप्रभुजाना॥ धनुषचढाइगहेकरबा
 णा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवअनुजहिंससुजावा॥

सीव ॥ भयदेखाइलै आवहु ॥ तात सरवा सग्रीव ॥ २१ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ इहां पवन सुत हृदय विचारा ॥ राम काज सग्रीव वि
 सारा ॥ निकट जाइ चरण न शिर नावा ॥ चारिहु विधितेहि क
 हिस सुजावा ॥ सुनि सग्रीव परम भयमाना ॥ विषय मोर हरि
 लीन्ह उजाना ॥ अवमारुत सुत दूत समूहा ॥ पठवहुं जहंतहां
 वानर यूहा ॥ कहैहु पाष्यमह आवन जोई ॥ मोरें करता करव
 ध होई ॥ तब हनुमंत बुलाए दूता ॥ सब कर करि सनमानवा
 हुता ॥ भय अरु पीति नीति दिखवाई ॥ चले सकल चरणहि
 शिर नाई ॥ तेहि अवसर लक्ष्मण पुर आण ॥ क्रोध देखि जहं
 तहं कपि धाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धनुष चढाइ कहात वै ॥ जारि
 करौं पुर क्षार ॥ व्याकुल नगर देखित वै ॥ आए उवालि कुमा
 रा ॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चरण नाइ शिर विनती कीन्हा ॥
 लक्ष्मण अभय वां हतेहि दीन्हा ॥ क्रोध वंत लक्ष्मण सुनिका
 ना ॥ कह कपीश अति भय अकुलाना ॥ सुनु हनुमंत संग
 लै तारा ॥ करि विनती समुजाउ कुमारा ॥ तारा सहित जाइ ह
 नुमाना ॥ चरण बंदि प्रभु सकय शबर वा ना ॥ करि विनती मंदि
 रलै आए ॥ चरण परवारि पलंग वैवाए ॥ तब कपीश चरणों
 शिर नावा ॥ गहि भुजलक्ष्मण कंठ लगादा ॥ नाथ विषय समम
 द कछु नाहीं ॥ सुनि मन मोह करे क्षण माहीं ॥ सुनत विनीत वच
 न सुख पावा ॥ लक्ष्मण तेहि बह विध समुजावा ॥ पवन तनय स
 वक्या सुनाई ॥ जेहि विध गये दूत समुदाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ह
 पि नने सग्रीव नव ॥ अंग दादिको पिसाथ ॥ राम अनुज आगे
 किये ॥ आए जहर मुनाथ ॥ २३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नाइ चरण शि
 र कह कर जोरा ॥ नाथ मोहि कछु नादिन खोरी ॥ अति गय प्र
 यत्न देवनव माया ॥ छुटै न वहि करहु ज चदाया ॥ विषय विव

शसुरनरसुनिस्वामी ॥ मैपामरपशुकपिअतिकामी ॥ नारि
नयनशरजाहिनलागा ॥ महाघोरनिशिसोवतजागा ॥ लोभपा
शजेहिगरनबंधाया ॥ सोनरतुमसमानरघुराया ॥ वहगुण-
साधनतेहिहोई ॥ तुहरीरूपापावकोइकोई ॥ तवरघुपति
बोलेसुसुकाई ॥ तुमप्रियमोहिभरतजिमिभाई ॥ अबसो
इयतनकरहुमनलाई ॥ तेहिविधसीताकीसुधिपाई ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ इहिविधहोतबतकही ॥ आएवानरयूथ ॥ नाना
वरणअतुलबल ॥ देखियकीशिवरूथ ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई
॥ वानरकटकउमामेंदेखा ॥ सोसूरखजोकियचहलेखा ॥
आइरामपदनावहिमाथा ॥ निरखिवदनसबहोहिसनाथा ॥
॥ असकपिएकनसेनामाहीं ॥ रामकुशलपूछाजेहिनाहीं ॥ य
हनकछुकप्रभुकेअधिकाई ॥ विश्वरूपव्यापकरघुशई ॥ ठा
टेजहंतहंआयसुपाई ॥ कहिसुग्रीवसबहिसमुझाई ॥ रा
मकाजअरुमोरनिहोरा ॥ वानरयूथजाहुचहुंआरा ॥ जन
कसुताकहरबीजहुजाई ॥ मासदिवसमहंआयेहुभाई ॥
अबधिमेढिजोबिनुशुधिपाये ॥ अबशिमरिहिंसोममकर
आये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बचनसुनतसबवानर ॥ जहंतहंचले
तुरंत ॥ तबसुग्रीवबुलाएहु ॥ अंगदादिहनुमंत ॥ २५ ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ सुनहुनीलअंगदहनुमाना ॥ जामवंतमति
धीरसुजाना ॥ सकलसुभटमिलिदक्षिणजाहु ॥ सीताशु
द्धिपूछहुसबकाहु ॥ मनवचक्रमसोयतनविचारेहु ॥ राम
चंद्रकरकाजसह्यारैहु ॥ भानुपीठसैइयउरआगी ॥ स्वा-
मीसैइयसबछलत्यागी ॥ तजिमायासैइयपरलोका ॥ मि
दैसकलभवसंभवशोका ॥ देहधरेकरयहफलभाई ॥ भजि
यरामसबकामबिहाई ॥ पाछेपवनतनयशिरनावा ॥ जा

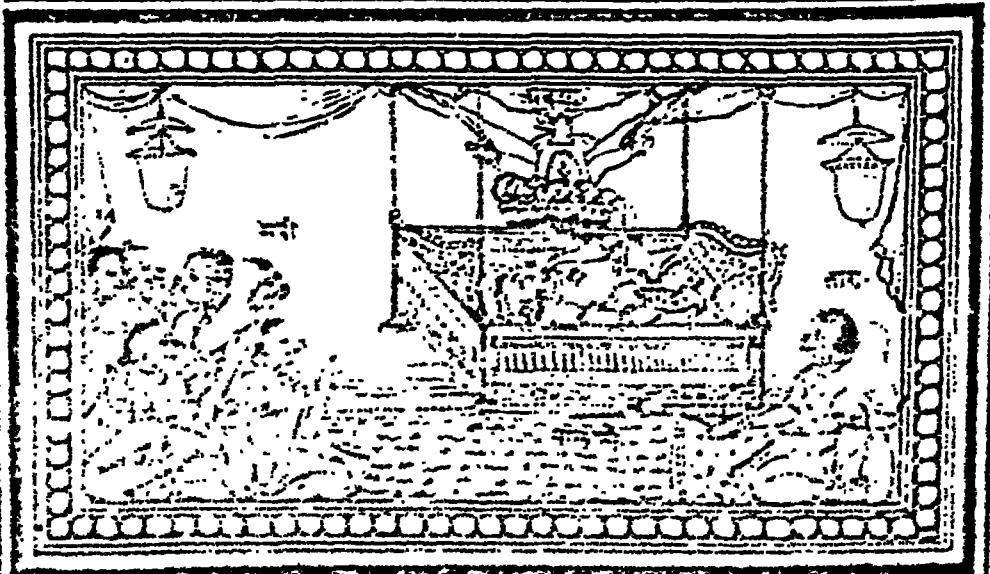
निकाजप्रभुनिकटबुलावा ॥ आयसुमांगिचरणशिरनाई
 ॥ चलेहर्षिसमिरतरघुराई ॥ स्पर्शशीससरोरुहपाणी ॥
 करमुद्रिकादीन्हजनिजानी ॥ बहुप्रकारसीतहिसमुजाये
 हु ॥ कहिबलवीर्यवेगितुमआयेहु ॥ हनुमंतजन्मसफलक
 रिजाना ॥ चलेहृदयधरिहृपानिधाना ॥ यद्यपिप्रभुजानत
 सबवाता ॥ राजनीतिराखतसरनाता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चले
 सकलवनरवोजंत ॥ सरितासरगिरिरवोह ॥ रामकाजल
 यलीनमन ॥ विसरतनकरछाह ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 कतहुंहोइनिशिचरसनभेटा ॥ प्राणलेंहिं एकएकचपेटा ॥
 बहुप्रकारगिरिकाननहेरहिं ॥ कोउसुनिमिलैताहिसव-
 घेरहिं ॥ लागितृषाअतिशयअकुलाने ॥ मिलेनजलवन
 गहनभुलाने ॥ तबहनुमानकीन्हअनुमाना ॥ मरणचह
 तसबविसुजलपाना ॥ चटिगिरिशिरवरचहुंदिशिदेखा
 ॥ भूमिविवरएककौतुकपेरवा ॥ चक्रवाकवकहंसउडाहीं
 ॥ बहुतेकरवगप्रविशहिंतहिंमाहीं ॥ गिरितेउतरपवनस
 तआवा ॥ सबकहलेंसोविवरदिरवावा ॥ आगेकरिहनुमं
 तहिलीन्हा ॥ पैटविचरविलंबनकीन्हा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दे
 रिवंजाइउपवनसभग ॥ सरविकसेवहुकंज ॥ मंदिरएकरु
 चिरतहां ॥ बैटिनारितपपुंज ॥ २७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दूर
 हितेंतेहिसवशिरनावा ॥ पूछेंसिनिजवृत्तांतसनावा ॥ तब
 नेइकहाकरहुजलपाना ॥ खाहुसरससुंदरफलनाना ॥ मा
 ज्जनकीन्हमधुरफलखाए ॥ तासुनिकटमुनिसबचलिआ
 ए ॥ नेइसबआपनिकआसुनाई ॥ मेंअवजावजहांरघुरा
 ई ॥ सुंदरनयनदिवरतजिजाह ॥ पैहहुमानहिजनिनिकद
 राहु ॥ नयनमृदितवदेखहिदीरा ॥ गदेंसकलसिंधुकेंतीरा

॥ सोपुनिगई जहां रघुनाथा ॥ जाइ कमल पदना एसि माथा ॥
 ॥ नाना भांति बिनय तेइ कीन्हो ॥ अनपावनि भक्ति प्रभु दीन्ह
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बदरी वन कहं सो गई ॥ प्रभु आजा धरि शी
 स ॥ उर धरि राम चरण युग ॥ जो वंदित अजई श ॥ २८ ॥
 चौपाई ॥ ॥ इहां बिचार कपिन्ह मन माहीं ॥ बीती अवधिका
 ज कछु नाहीं ॥ सब मिलि कहहि परस्पर गाता ॥ बिनुशुधि न
 लिये करव का भ्राता ॥ कह अंगद लोचन भरि वारी ॥ दुहु प्र
 कार भइ मृत्यु हमारी ॥ इहां न सुधि सीता कर पाई ॥ उहाग
 ये मारिहि कपिराई ॥ पिता वधे परमार तमोही ॥ राखाराम
 निहोरन बोही ॥ पुनि पुनि अंगद कह सब याही ॥ मरण भयो
 कछु संशय नाहीं ॥ ॥ क्षेपक ॥ अंगद बचन सुनत कपि बी
 रा ॥ बोलिन सकहिन यन भरि नीरा ॥ छिनइ कशोक मगन हैं
 रंत्यो ॥ पुनि सब कपि निवचन अस कह्यो ॥ हम सीता की सु
 धिहु बिहीना ॥ नहि जेहहि जुगं राज प्रवीना ॥ ॥ अस कहि
 लवण सिंधु तट जाई ॥ बैठ कपि सब दर्भ डसाई ॥ जांवंत अ
 गद दुरव देरवी ॥ कही कथा उपदेश वि शेरवी ॥ तात राम कहं
 नरजनि मानहु ॥ निर्गुण ब्रह्म अजित अज जानहु ॥ हम
 सब सेवक अति बड भागी ॥ संतत सगुण ब्रह्म अनुरागी
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निज इच्छा अवतरे उ प्रभु ॥ सरहि जगो
 महिलागि ॥ सगुण उपास करहिं सब ॥ मोक्ष सकल सु
 ख त्यागि ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इहि विधिकहत भए बहु
 भांती ॥ गिरि कंदरा सुना संपाती ॥ बाहिर होइ देखे सब की
 शा ॥ मोहि आहार दीन्ह जगदीश ॥ आजु सबन्ह कहं भ
 क्षण करूं ॥ दीन बहु चले आहार बिनु मरूं ॥ कबहुं न
 मिले भरि उदर आहार ॥ आज दीन्ह विधि एकहि वारा ॥

उरपेगृधवचनसूनि काना॥ अवभासरणसत्यहमजाना॥
 कपिसवउदेयघकहंदेखी॥ जांववंतमनशोचविशेषी॥ कह
 विचारअंगदमनमाहीं॥ धन्यजटासुसरिसकोउनाहीं॥ रा
 मकाजकारणतनुत्यागी॥ हरिसुरगयेउपरमबडभागी॥ सु
 निखगहर्षशोकयुतबाणी॥ आवानिकटकपिन्हभयमानी॥
 ताहिंदेखिसवचलेपराई॥ ठाटकीन्हतेइशपयदिवाई॥ ति
 न्हैअभयकरिपूछेसजाई॥ कथासकलतिन्हताइसनाई
 ॥ सूनिसंपातिबंधुकीकरणी॥ रघुपतिमहिमाबहुविध
 बरणी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मोहिलेचलहुसिंधुतटा॥ देउतिलां
 जलिताहि॥ वचनसहायककरवमै॥ पैहहुरवोजहुजाहि॥
 ॥ ३५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अनुजक्रियाकरिसागरतीरा॥ कह
 निजकथासुनहुकपिवीरा॥ हर्मदोउबंधुप्रथमतुरुगाई
 ॥ गगनगयेउरविनिकटउडाई॥ तेजनसहिशकसोंफिरि
 आवा॥ मैअभिमानिरविनिहिअरावा॥ जरेपरवरवितेज
 अपारा॥ परेउभूमिकरिघोरचिकारा॥ सुनिएकनामचंद्र
 मावोही॥ लागीदयादेखिकरिमोही॥ बहुप्रकारतिन्हजा
 नशिरवावा॥ देहजनितअभिमानछुडावा॥ बेताब्रह्ममनु
 जतनुधरिहैं॥ तासुनाशिनिशिचरपतीहारेहैं॥ ताहिखोज
 पढवउप्रभुदूना॥ तिन्हैमिलेतुमहोचपुनीना॥ जाभिहिपरव
 करसिजनिचिता॥ तिन्हैदेखाइदेवतैंसीना॥ सुनिकैगिरा
 मत्यभाईआजू॥ सूनिममवचनकरहुप्रभुकाजू॥ ॥ ॥ क्षे
 पक॥ यहकहिमुनिनिजआथमगयों॥ तिहिछिनहृदय
 जानकछुभयों॥ इहिविधिमराजोवतमैरहहुं॥ सेंदारा
 कांस्तमिरणकरहुं॥ ॥ ॥ गिरिचिकुटउपरवसलंक॥ त
 दंरहरावणसहजअशंका॥ तहांअशोकवाटिकाअहई॥

सीताबैठितहंशोचतिरहई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैदेखौं तुमनाहि
न॥ गृधहीदृष्टिअपार॥ बूढभएउनतोकरितेउं॥ कछुकस-
हायतुह्यार॥ ३१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोलांघेशतयोजनसाग-
र॥ करैरामकाजमतिआगर॥ जोकोइकरैरामकरकाजू॥ ते
हिसमधन्यआननहिआजू॥ मोहिबिलोकिधरहुमनधी-
रा॥ रामरूपाकसभयेउशरीरा॥ पापिउजाकरनामैसुमिर
हीं॥ अतिअपारभवसागरतरहीं॥ तासुदूततुमतजिक
दराई॥ रामहृदयधरिकरहुउपाई॥ असकहिउमागृध
जबगयेऊ॥ सबकेमनअतिविस्मयभयेऊ॥ निजनिजब-
लसबकाहुभाषा॥ पारजानकरसंशयराखा॥ जरठभये
उंअबकहेउअपेशा॥ नहितनुरहाप्रथमबललेशा॥ जब
हित्रिविक्रमभयेउखरारी॥ तबमैतरुएरहाबलभारी॥
॥ दोहा ॥ ॥ बलिबांधतप्रभुबाढेऊ॥ सोतनबरणिनजाइ
॥ उभयंघरीमहदीहमै॥ सातप्रदक्षिणधाई॥ ३२॥ ॥ चौ-
पाई ॥ ॥ अंगदकहाजाउंमैंपारा॥ जियसंशयकछुफिर
तीवारा॥ जांबवंतकहतुमसबलायक॥ किमिपठवोंसब
हिकरनायक॥ कहाअक्षपतिसुनुहनुमाना॥ कानुपसाधि-
रहाबलवाना॥ पवनतनयबलपवनसमाना॥ बुद्धिविवेक
विज्ञानविधाना॥ कौनसोकाजकठिनजगमाहीं॥ जोनहि-
तातहोइतुमपाहीं॥ रामकाजलगितबअवतारा॥ सानिकपि
भएउपर्वताकारा॥ कनकवरणतनुतेजविराजा॥ मानहुआ-
परगिरन्हकरराजा॥ सिंहनादकरिबारहिबारा॥ लीलहिल-
घोंजलनिधिरवारा॥ सहितसहायरावणहिंमारी॥ आनौ
इहांत्रिकूटउषारी॥ जांबवंतमैंपूछौंतीही॥ उचितशिखाव-
नदीजैमोही॥ इतनाकरहुताततुमजाई॥ सीतहिंदेखिक-

होशुधिआई॥ तबनिजभुजबलराजीवनयना॥ कौतुकला
 गिसंगकपिसयना॥ ॥ छंद॥ ॥ कपिसेनसंगसघारिनि
 शिचररामसीतहीआनिहैं॥ त्रैलोक्यपावनसुयशसुरसु
 निनारदादिवरानिहैं॥ ५॥ जोसुनतगावतकहतसमुजत
 परमपदनरपावहीं॥ रघुबीरपदपाथोजमधुकरदासतुल
 सीगावही॥ ६॥ ॥ दोहा॥ ॥ भवभेषजरघुनाथयश॥ सुनै
 जोनरअरुनारि॥ तिनकरसकलमनोरथ॥ सिद्धकरहिंनि
 पुरारि॥ ३३॥ ॥ सोरठा॥ ॥ नीलोत्पलतनुश्याम॥ काम-
 कोटिशोभाअधिक॥ सुनियतासुगुणग्राम॥ जासुनामअ
 धरवगवधिक॥ ३४॥ ॥ इति श्रीरामचरितमानसेसक
 लकलिकलुषविध्वंसिनेविमलवैराग्यसंपादनोनामचतुर्थः
 सोपानः किष्किंधाकांडः समाप्तः ॥ ४॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पण
 मस्तु॥ ॥ थ॥ ॥ ध॥ ॥ ध॥ ॥ ध॥ ॥ ध॥ ॥ ॥



॥ इति किष्किंधाकांडं समाप्तम् ॥

श्री
अथ
तुलसिदासकृत
रामायणसुंदरकांड
प्रारंभः

॥अथ सुंदरकांडं लिख्यते ॥

श्लोकः

शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वीणं शांतिप्रदं ब्रह्माशुभु-
 णींद्रसेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुम् ॥ रामारव्यं जगदीश्वरं सु-
 रगुरुं मायामनुष्यं हरिं वंदे हं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडा-
 मणिम् ॥ १ ॥ नान्यास्पृहारघुपते हृदये स्मरीये सत्यं वदामि-
 च भवानखिलांतरात्मा ॥ भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरामे-
 कामादिदोषरहितं कुरुमानसं च ॥ २ ॥ अतुलितबलधामं
 स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशालुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥
 सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वान-
 जातं नमामि ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जामवंतके वचनसह-
 ये ॥ सुनिहनुमानहृदयअतिभाये ॥ तब लगि मोही परे ख-
 हु भाई ॥ सहिदुख कंदमूलफलखाई ॥ जवल गि आवौं सी-
 तहि देषी ॥ होइ काज मन हर्ष विशेषी ॥ अस कहि नाइ पवन
 कहं माथा ॥ चले उहर्षि हिय धरि रघुनाथा ॥ सिंधु तीर एक
 सुंदर भूधर ॥ कौतुक कूदि च देते हि ऊपर ॥ बार बार रघुबीर
 संभारी ॥ तर के उपवन तनय बल भारी ॥ जेहि गिरि चरण दे-
 इ हनुमंता ॥ सो चलि गये उपताल तुरंता ॥ जिमि अमोघ रघु-
 पति के वाणा ॥ एहि भांति चला हनुमाना ॥ जलनिधिर रघुप-
 ति दूत विचारी ॥ तैमै नाक हां उअ महारी ॥ ॥ ॥ क्षेप कहै ॥ ॥
 कह मो कौं प्रभु जानिय दासा ॥ पंथ अमनिकौ कीजै नासा ॥
 ॥ सोरठा ॥ ॥ सिंधु वचन उर आनि ॥ तुरत उठे उमै नाक
 तब ॥ कपिकहु कीन्ह प्रमाण ॥ पुलकित तनु कर जोरि करि ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ हनुमान तेहि परसि कर ॥ पुनि तेहि कीन्ह प्रण-
 म ॥ राम काज कीन्ह विना ॥ नाहि कदा विद्याम ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ जात पवनसुत देवन देषा ॥ जाने चह बल बुद्धि
विशेषा ॥ सरसानाम अहिन कै माता ॥ पठई न्हि आइ कही
तेहि बाता ॥ आसु सरन मोहि दीन्ह अहारा ॥ सुनि हंसि बो
ला पवन कुमारा ॥ राम काज करि फिरि मै आवौ ॥ सीता कर
शुधि प्रभुहि सुनावौ ॥ तब तब बदन बैठि हौं आई ॥ सत्य क
हौं मोहि जान दे माई ॥ कब निहुय तन देइ नहि जाना ॥ अस-
सिन मोहि कहा हनुमाना ॥ योजन भरितेहि बदन पसारा
॥ कपितन कीन्हि गुण बिस्तारा ॥ सौरह योजन मुख तेइ ठ
एऊ ॥ तुरत पवनसुत बतिस भएऊ ॥ जस जस सुरसा बदन
न बदावा ॥ तासुहि गुण कपि रूप दिखावा ॥ शत योजन तेइ
आनन कीन्हा ॥ अतिलघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥ बदन पै
ठि पुनि बाहर आवा ॥ मांगी बिदा ताहि शिर नावा ॥ मोहि
सरन्ह जे हिला गि पठावा ॥ बुधि बल मर्म तोर मै पावा ॥
॥ दोहा ॥ ॥ राम काज सब करि हहु ॥ तुम बल बुद्धि निधान
॥ आशिष दे सरसा गई ॥ हर्षि चले हनुमान ॥ २ ॥ ॥ चौपा
ई ॥ ॥ निशि चरी एक सिंधु महर हई ॥ करि मायान भकै रव
ग गहई ॥ जीव जंतु जे गगन उडाहि ॥ जल बिलोकित न की
परि छाहीं ॥ गहै छाह शक शोन उडाई ॥ इहि बिध सदा ग
गन चर रवाई ॥ सौ इछल हनुमान ते कीन्हा ॥ तासु कपटक
पितुरत हि चीन्हा ॥ ताहि मारि मारुत सुत बीरा ॥ वारिधि
पारग एउ मति धीरा ॥ ताहां जाइ देखि बन शोभा ॥ गुंजत चं
चरी कमधुलोभा ॥ नाना तरु फल फूल सहये ॥ रवग मृग
वृंद देखि मन भाये ॥ शैल विशाल देखि एक आगे ॥ तापर
कूदि चढे उभय त्यागे ॥ उमान कछु कपि की अधिक आई ॥ प्र
भु प्रताप जो काल हिखाई ॥ गिरि पर चढि लंका तेइ देषी ॥

कहिनजाइअतिदुर्गविशेषी॥अतिउत्तंगजलधिचहुंपाशा
 ॥कनककोटकरपरमप्रकाशा॥ ॥छंद॥ ॥कनककोट
 विचित्रमणिकृतसुंदरायतनअतिधना॥चौहट्टचौहट्टसुब
 हट्टवीथिसुचारुपुरबहुविधवना॥१॥गजवाजिरवचरनिक
 रपदचररथवरूथनिकोगनै॥बहुरूपनिशिचरयूथअति
 बलसेनवरणतनहिलै॥२॥वनवागउपवनवाटिकास
 रकूपवापीसोहही॥नरनागसरगंधर्वकन्यारूपमुनिमन
 मोहही॥३॥कहुंमल्लदेहविशालशैलसमानअतिबल
 गर्जही॥नानाअस्वारन्हभिरहिवहुविधएकएकन्हित-
 र्जहिं॥४॥करियतनभटकोटिन्हविकटतनुनगरचहुंदि-
 शिरक्षही॥कहुंसहिषमानुषधेनुरवरअजरवलनिशाच
 रभक्षही॥५॥इहिलागितुलसिदासइनकीकथासंक्षेप
 हिकही॥रघुबीरशततीरथसरिततनुल्यागिगतिपैहैस
 ही॥६॥ ॥दोहा॥ ॥पुररखवारेदेखिबहु॥कपिमन
 कीन्हविचार॥अतिलघुरूपधरौनिशि॥नगरंकरौपैसा
 र॥३॥ ॥चौपाई॥ ॥मशकसमानरूपकपिधरी॥लंका
 चलेसुभिरिनरहरी॥नामलंकिनीएकनिशिचरी॥सोक
 हचलेसिसोहिनिरदारी॥जानसिनाहिंभर्मशठमोरा॥मो
 रआहारलंककरचोरा॥सुष्टिकाएकताहिकपिहनी॥रु
 धिरवमतधरणीदनमनी॥पुनिसंभारिउटीसोलंका॥जो
 रिपाणिकरिविनयसशंका॥जवरावणहिंअह्नवरदोहा
 ॥चलतविरंचिकहामोहिचोन्हा॥विकलहोसिजवकपि
 केमारे॥तवजानेसिनिशिचरसंहारे॥तानमोरअतिपु-
 ण्यबहूना॥दंडवेउनयनरामकरदूता॥ ॥दोहा॥ ॥तान
 स्वगेअपवर्गकरव॥धारियतुल्यएकअंग॥तुलैनताहिस

कलमिलि ॥ जो सरखल बसत संग ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 प्रविशिनगर कीजै सब काजा ॥ हृदय राखि कोशल पुररा
 जा ॥ गरल सुधारि युकरै मिताई ॥ गोपद सिंधु अनल शि
 तलाई ॥ गुरु अक्षमेरु रेणु समता ही ॥ राम कृपा करि चि
 तव ही जाही ॥ अतिलघु रूप धरे उहनु माना ॥ पैठानगर सु
 मिरि भगवाना ॥ मंदिर मंदर प्रतिकरि शोधा ॥ देखा जहंत
 हं अगणित योधा ॥ गये उदशान नमंदिर माही ॥ अति वि
 चित्र कहि जात सोनाही ॥ शयन किए देखा कपिते ही ॥ मं
 दिर महं नदी खबै देही ॥ भवन एक युनि दीख सुहावा ॥ ह
 रि मंदिर तहं भिन्न बनावा ॥ राम नाम अंकित गृह शोहा ॥
 बरणिन जाइ देखि सन मोहा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामा सुध-
 अंकित गृह ॥ शोभा बरणिन जाइ ॥ नवलुलसिके हृदवहु
 ॥ देखि हर्ष कपिराइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लंकानि शिच
 रनिकर निवासा ॥ इहां कहां सज्जन करवासा ॥ मन महं
 तर्क करण कपिलागे ॥ ताही समय बिभीषण जागे ॥ राम रा
 म तेहि समिरण कीन्हा ॥ हृदय हर्षिकपि सज्जन चीन्हा ॥
 इहि सन हठि करि हौं पहि चानी ॥ साधु ते होइन कारज हा
 नी ॥ विप्र रूप धरि बचन सुनावा ॥ सुनत बिभीषण उठित
 हं आवा ॥ करि प्रणाम पूछी कुशलाई ॥ विप्र कहहु निज
 कथा बुझाई ॥ कींतु महरि दासन मे कोई ॥ मोरे हृदय प्रीति
 अति होई ॥ कींतु मराम दीन अनुरागी ॥ आयेहु मोहि क
 रण बड भागी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तब हनुमंत कही सब ॥ रा
 म कथा निज नाम ॥ सुनत युगलतनु पुलक अति ॥ मगन
 सुमिरि गुण ग्राम ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनहु पवन सुत
 रहनि हमारी ॥ जिमि दशन न्हमहं जी भवि चारी ॥ तात क

बहुमोहिजानिअनाथा॥करिहहिंकृपाभासुकुलनाथा॥ता
 मसतनुकछुसाधननाहीं॥प्रीतिनपदसरोजमनमाहीं॥अ
 वमोहिभाभरोसहनुमता॥बिनुहरिकृपामिलहिनहिंसा
 ता॥जौरघुवीरअनुग्रहकीन्हा॥तौतुममोहिदरशहठिदी
 न्हा॥सुनहुबिभीषणप्रभुकैरीती॥करहिंसदासेवकपर
 प्रीती॥कहहुकवनमेंपरमकुलीना॥कपिचंचलसबहि
 विधिहीना॥प्रातलेइजोनामहमारा॥तादिनताहिनमिले
 अहारा॥ ॥दोहा॥ ॥असमैअधमसरवासुनु॥मोहूप
 ररघुवीर॥कीन्हीकृपासुभिरिगुण॥भरेबिलोचननीर॥
 ॥७॥ ॥चौपाई॥ ॥जानतहुअसरचामीबिसारी॥फि
 रतेकाहेनहोहिंदुरवारी॥इहिविधिकहतसमगुणया
 मा॥पावनअवणसरवदविश्रामा॥पुनिसबकथादिभी
 षणकही॥जेहिविधजनकसुताजहंरही॥तदहनुमंत
 कहासुनुआता॥देखाचहोंजानकीमाता॥श्रुतिविभी
 षणसकलसुनाई॥चलउपवनसुतविदाकराई॥करि
 सोरूपगयेउंपुनितहंवा॥बनअशोकसीतारहिजहंवा॥
 देखिसनहिमनकीन्हप्रणामा॥बैठेबीतिजातनिशियासा
 ॥रुशतनुशीसजटाएकवेणी॥जपतिहृदयरघुपतिगु
 णश्रेणी॥ ॥दोहा॥ ॥निजपदनथनदियेभन॥सखच
 रणमहंलोन॥परमदुखीभापवनसुत॥निरखिजान
 कीदीन॥८॥ ॥चौपाई॥ ॥तरुपल्लवमहंरहालुकाई
 ॥करैविचारकरोंकाभाई॥तेहिअवसररावणतहंआवा॥
 संगनारिवहुकिणचनावा॥बहुविधखलसीतहिंससु
 जावा॥सामदामअग्रभेदादखावा॥कहरावणसुनुस
 मुखिसयाना॥मंदोदरीआदिसवराणी॥तवअनुचरी

करौं पणमोरा ॥ एकबार बिलोकु मम आरा ॥ तृणधरि ओढ
 कहति बैदेही ॥ सुमिरि अवध पति परम सनेही ॥ सुनुदश सु
 ख रवद्योत प्रकाशा ॥ कबहु किनलिनी करहिं बिकासा ॥ अ
 समनस मुजुतिक कहति जानकी ॥ खलशुधिन हिरघुबीर-
 बाणकी ॥ शठसने हरि आने सिमोही ॥ अधमनिलज्जला
 जनहितोही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आपुहि पुनि खद्योत सम ॥
 रामहि भानु समान ॥ पुरुष बचन सुनिकादि असि ॥ बो
 ला अतिरिसि आन ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सीता तैं मम
 कृत अपमाना ॥ काठैं तव शिर कठिन कृपाणा ॥ नाहित स
 पदि मानु मम बाणी ॥ सुसुरि होत न तु जीवन हानी ॥ श्या
 म सरोज दास सम सुंदर ॥ प्रभु भुज करि कर सम दशकंध
 र ॥ सो भुज कंठ कित बअसि घोरा ॥ सुनु शठ अस प्र मा
 ण पणमोरा ॥ चंद्रहासरुमम परितापा ॥ रघुपति बिर
 ह अनल संतापा ॥ शीतल निशित बअसि वरधारा ॥ क
 ह सीता हरुमम दुरवभारा ॥ सुनत बचन पुनि मारणधा
 वा ॥ मयतन या कहिनीति बुजावा ॥ कहेसि सकल निशि च
 रन्हि बुलाई ॥ सीतहि बहुविध आसहु जाई ॥ मासदिवस
 महं कहान माना ॥ तौ मै मार बकठिन कृपाणा ॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ भवन गये उदशकंधतव ॥ इहां निशाचरि वृंद ॥ सी-
 तहिं आसदिरवावहीं ॥ धरिहिरूप बहु मंद ॥ १० ॥ ॥ च
 ई ॥ ॥ त्रिजटाना मराक्षसी एका ॥ राम चरण रतनि पुर्णा
 वेका ॥ सबहि बुलाइ सुनायेसि सपना ॥ सीतहि सेइ कसौ
 हित अपना ॥ सपने वानर लंका जारी ॥ यातु धाम सेना सा
 ब मारी ॥ खर आरूढ नगन दशशीसा ॥ सुंडित शिर खं
 त भुज वीशा ॥ एहि विध सो दक्षिण दिशि जाई ॥

हुंविभीषणपाई॥नगरफिरीरघुबीरदोहाई॥तबप्रभुसी
 ताबोलिपठाई॥इहसपनामेंकहोंविचारी॥होइहैसत्यग
 ऐंदिनचारी॥तासबचनसुनितेंसबडरी॥जनकसुताके
 चरणान्हिपरी॥॥दोहा॥॥जहांतहांगईतुरितसब॥
 सीताकेमनशोच॥मासदिवसबीतेजुमोहि॥मारिहिंनि
 शाचरपोच॥११॥॥चौपाई॥॥भ्रिजदासनबोलीकर
 जोरी॥मातुविपतिसंगिनिनितेंमोरी॥तजौदेहकरुवेगिउ
 पाई॥दुसहविरहअवनहिंसहिजाई॥आनुकठरचुचि
 ताबनाई॥मातअनलतुमदेहुलगाई॥सत्यकरहुममप्री
 तिसयानी॥सुनैकोअवणभूलसमवाणी॥सुनतबचन
 पदगहिसमुजावा॥प्रभुप्रतापबलसुखशसुनावा॥निशि
 नअनलमिलुराजकुरी॥असकहिसोनिजभवनसिधा
 री॥कहसीताविधिभाप्रतिकूला॥मिलैनपावकमिटैनभू
 ला॥देखियनप्रगटगगनअंगाश॥अवनिनआवतएकौ
 तारा॥पावकमयशशिस्वयतनआगी॥मानहुंमोहिजा
 निहतभागी॥सुनहुंविनयममविटपअशोका॥सत्यना
 मकरुहरुममशोका॥नूतनकिसलयअनलसमाना॥दे
 हुअग्निममकरहुनिदाना॥देखिपरमविरहाकुलसीता
 ॥सोक्षणकपिहिकल्पसमवाता॥॥सोरठा॥॥कपिक
 रिहृदयविचार॥दीन्हसुद्रिकाडारितव॥जनुअशोकअ
 गार॥दीन्हदुर्षिउठकरगहेंड॥१२॥॥चौपाई॥॥तब
 देखिसुद्रिकामनोहर॥रामनामअंकितअतिसांहर॥च
 कितचितेंसुद्रिकपहिचाना॥दुर्षिदियादहृदयअकुलानी
 ॥जनिंकौशिकेंअजयरघुराई॥मायानेंअसरचानजा
 ई॥सीतामनविचारकरनाना॥मधुरबचनवालेहनुमा

ना॥ रामचंद्रगुणवरणनलागे॥ सुनतहि सीताकरदुरवभा-
गे॥ लागी सुने अवणमनलई॥ आदिहिते सब कथा सुना-
ई॥ तव हनुमंत निकटचलि गयेउ॥ फिरि वैठी मनबिस्मय
भयेऊ॥ रामदूतमै मातुजानकी॥ सत्यशपथकरुणानि-
धानकी॥ यह सुद्रिकामातुमै आनी॥ दीन्ह राम तुम कहंस
हि दानी॥ नरवानरहिंसंग कहुं कैसे॥ कही कथा संगति भ-
ई जैसे॥ ॥ दोहा॥ ॥ कपि बरबचन सप्रेम सुनि॥ उपजा
मन बिश्वास॥ जाना मन कम बचन यह॥ कृपा सिंधु कर
दास॥ १३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ हरि जन जानि प्रीति अति बा-
दी॥ स जल नयन पुलकावलि टाटी॥ बूडत विरह जल-
धि हनुमाना॥ भये हुतात मो कहं जल याना॥ अब कहु कु-
शल जाउ बलिहारी॥ अनुज सहित सुरव भवन स्वरासी॥
कोमल चित्त कृपालु रघुराई॥ कपि केहि हेतु धरी निरु-
राई॥ सहज बानि सेवक सरवदायक॥ कबहु मोहि सुमि-
रतरघु नायक॥ कबहु नयन सम शीतल ताता॥ होइ हि-
निरखि श्याम मृदु गाता॥ वचन न आवन नयन भरि वारी॥
अहो नाथ मोहि निपट बिसारी॥ देखि विरह व्याकुल अ-
तिसीता॥ बोलेउ कपि मृदु बचन विनीता॥ मातु कुशल प्र-
भु अनुज समेता॥ तव दुरवदुरवी सो कृपानिकेता॥ जननी
जनि मानहु मन ऊना॥ तुम ते प्रेम राम कहं दूना॥ ॥ दोहा
॥ ॥ रघुपतिके संदेश अब॥ सुनु जननी धरि धीर॥ अ-
स कहि कपि गद्गद भए॥ भरे विलोचन नीर॥ १४॥ ॥ चौ-
पाई॥ ॥ राम वियोग कहा सुनु सीता॥ मो कहं सकल भ-
एउ बिपरीता॥ नूतन किसलय मनहु कशानू॥ काल नि-
शा समनि शिशि भानू॥ कुवलय विपिन कुतबन सरिसा

॥ वारिदतसतेलजनुवरिषा ॥ जेहितरुरहों करतसोपीरा ॥
 उरगश्वाससमत्रिविधसमीरा ॥ कहेहुतेदुरवघटिकलुहो
 ई ॥ काहिकहों यहजाननकोई ॥ तत्वप्रेमकरमसंरुतोरा
 ॥ जानतप्रियाएकमनमोरा ॥ सोमनसदारहततोहिपाहीं ॥
 जानुप्रीतिरसइतनेहिमाहीं ॥ प्रभुसंदेशसुनतबैदेही ॥
 मगनप्रेमतनुसुधिनहितेही ॥ कहकपितृदयधीरधरु-
 माता ॥ सुमिरिरामसेवकसरवदाता ॥ उरआनहुरधुप
 तिप्रभुताई ॥ सुनिममवचनतजहुविकलाई ॥ ॥ दोहा ॥

॥ निशिचरनिकरपतंगसम ॥ रघुपतिबाणकृशालु ॥ ज
 ननीहृदयेधीरधरे ॥ जरेनिशाचरजालु ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ जोरघुबीरहोतशुधिपाई ॥ करतेनहिविलंबरघु
 राई ॥ रामबाणरविउदयजानकी ॥ तमवरूथकहजातु
 धानकी ॥ अबहिमातुसेजानुलेवाई ॥ प्रभुआयसुनहि
 रामदोहाई ॥ कलुकदिवसजननीधरुधारा ॥ कपिन्हसहि
 तऐहैं रघुवीरा ॥ निशिचरमारितुमहिलेजैहैं ॥ तिहुंपुर
 नारदादियशगैहैं ॥ हैसुतकपिसबतुमहिसमाना ॥ या
 तुधानभटअतिबलवाना ॥ मोरेहृदयपरमसंदेहा ॥ सु
 निकपिप्रगटकीन्हनिजेदेहा ॥ कनकभूधराकारशरीरा ॥
 समरभयंकरअतिबलधीरा ॥ सीतामनभरोसतबभए
 ऊ ॥ पुनिलघुरूपपवनसुतलएऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनुमा
 ताशारवामृगाहिं ॥ नहिवलबुद्धिविशाल ॥ प्रभुप्रतापतेग
 रुडहिं ॥ खाइपरमलघुव्याल ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 मनसंतोषसुनतकपिवाणी ॥ तनुअतिपुलकनयनदरु
 पानी ॥ भक्तिप्रतापतेजबलसानी ॥ आशिषदान्दरामप्रि
 यजानी ॥ अजरअमरगुणनिधिसुतहोइ ॥ करहुसदार

कछे हू॥ करिहिं कृपा मभुअस सुनिकाना॥ निर्भर
 प्रेममगन हनुमाना॥ बारबार नावहिं पदशीसा॥ बोले बच
 नजोरि कर कीशा॥ अब कृत कृत्य मएउमै माता॥ आशिष
 तब अमोघ विख्याता॥ सुनिय मातु मोहि अति शय भूखा
 ॥ लागि देखि सुंदर फल रूखा॥ सुन सुत करहिं विपिन रखा
 वारी॥ परम सुभट रजनीचर भारी॥ तिन कर भय माता मो
 ही नाहीं॥ जौ तुम सुख मानहु मन माहीं॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दे
 रिव बुद्धि बल विपुल कपि॥ कहा जान की जाहु॥ रघुपति च
 रण हृदय धरि॥ तात मधुर फल खाहु॥ १७॥ ॥ चौपाई॥
 ॥ चलाना इशिर पैठे उबागा॥ फल खाएत रुतोरन लागा॥
 रहेत हां बहु भट रखा वारे॥ कछु मारे कछु जाइ पुकारे॥ ना
 थ एक आवा कफि भारी॥ तेइ अशोक वाटिका उजारी॥ खा
 एसि फल अरु विट पउ पारेसि॥ जहंत हं पठकि पठकि भट
 मारेसि॥ सुनिरावण पठए भट नाना॥ तिन्हहिं देखि गर
 जा हनुमाना॥ सब रजनीचर कपि संधारे॥ गए पुकारत
 कछु अधमारे॥ पुनि पठवातेइ अक्ष कुमारा॥ चला संगलै
 सुभट अपारा॥ आवत देखि विट पंगहित जी॥ ताहि नि
 पाति महा ध्वनि गजी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कछु मारेसि कछु मरे
 सि॥ कछु कमिला एसि धूरि॥ कछु पुनि जाइ पुकार मभु॥
 मर्कट भट बल भूरि॥ १८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुन सुत वध
 लंकेश रिशाना॥ पठवा मेघनाद बलवाना॥ मारेसि जिनि
 सुत बांधेसि ताही॥ देखौं की शक हां कर आही॥ चलाइ द्र
 जीत अतुलित योधा॥ बंधुनि धन सुनि उपजा क्रोधा॥ क
 पि देखि दारुण भट आवा॥ कटकटाइ गजी अरु धावा॥ अ
 त विशाल तरु एक उषारा॥ विरथ कीन्ह लंकेश कुमारा॥ र

हेमहाभटताकेसंगा॥ गहिगहिकपिमर्देसिनिजअंगा॥
 तिन्हेनिपातिताहिसनवाजा॥ भिरेयुगुलमानहुंगजराजा
 ॥ सुष्टिकमारिचढातरुजाई॥ ताहिएकक्षणमूर्छाआई॥
 उठिवहोरिकीन्हेसिवहुमाथा॥ जोतिनजाइप्रभंजनजा
 था॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेहिसांधाब्रह्मास्त्रतब॥ कपिमनकी
 न्हविचार॥ जौनमानिहौब्रह्मशर॥ महिमासिदैअपार॥
 ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ब्रह्मबाणतेहिकपिकहंमारा॥
 परतेहुबारकटकसंधारा॥ तेहिजानाकपिमूर्छितभए
 ऊ॥ नागपाशबांधततबरएऊ॥ जासनामजपिस्तनहुभ
 वानी॥ भवबंधनकाटहिंनरजानी॥ तासुदूतकिबंधनत
 रआवा॥ प्रभुकारजलगिआपुबंधावा॥ कपिवंधनसुनि
 निशिचरआए॥ कौतुकलागिसभालैआए॥ दशसुरवस
 भादीखकपिजाई॥ कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई॥ कर
 जौरेसरदिशिपविनीता॥ भृकुटिविलोकहिसकलसभी
 ता॥ देखिप्रतापनकपिउरशंका॥ जिमिअहिगणमहंग
 रुडअशंका॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपिहिविलोकितज्ञानन॥ वि
 हंसाकाहुदुबोद॥ स्तनवधसरतिवैल्हपुनि॥ उपजाह
 दयविपाद॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहंलंकेशकवनतै
 काशा॥ केहिंकैवलघालंहिनखीशा॥ कींधीअवणसु
 नेहिनहिमोहा॥ देखींअतिअशंकशरतोहा॥ मारेसिनि
 शिचरकेहिअपराधा॥ कहुशरतोहिनप्राणकीवाधा॥ सु
 नरावणब्रह्मांडनिकाया॥ पाइजासवलविरचितमाया॥
 ॥ जाकेवलविरंचिहरिईशा॥ पालतहरतसृजतदशजी
 सा॥ जावलजीसधरसहसानन॥ अंडकोशसमेतगिरि
 कानन॥ धरजाविविधदेहसरनाता॥ तुममेशदशिरवा-

वनदाता ॥ हरको दंडकठिन जेइ भंजा ॥ तोहि समेत नृषदल
मदगंजा ॥ स्वरदूषण त्रिशिरा अरुवाली ॥ वधे सकल अतु
लित बलशाली ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाके बल लवले शते ॥ जिते
उचरा चरजारि ॥ तासु दूत हों जाहि की ॥ हरि आनेहु प्रियनारि ॥ २५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जानौ मै तुह्यारि प्रभुताई ॥ सहस
बाहुसन परी लराई ॥ समर बालि सन करि जशपावा ॥ सुनि
कपि वचन बिहंसि बहलावा ॥ स्वाये उफल मोही लागी भू
रवा ॥ कपि शुभावतें तोरे उरूखा ॥ सब के देह परम प्रिय स्वा
मी ॥ मारहि मोहि कुमारगगामी ॥ जिन्ह मोहि मारा तेहि मै
मारा ॥ तेहि पर बाधे उत नय तुह्यारा ॥ मोहिन कुछ बांधे क
रलाजा ॥ कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा ॥ बिन ती करौ जो
रि कर रावण ॥ सुनहु मानत जि मोर शिषा वण ॥ देखहु तु
मनि जह दय विचारी ॥ भ्रमत जि भजहु भक्त भयहारी ॥
जाके डर अति काल डराई ॥ जो सर असुर चराचर खाई
॥ तासों बैर कबहु नहि कीजै ॥ मोरे कहे जान की दीजै ॥
॥ दोहा ॥ ॥ प्रणत पालरघु वंशमणि ॥ करुणा सिंधु खरा
रि ॥ गए शरण प्रभु शरिवहे ॥ तब अपराध बिसारि ॥ २६ ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ राम चरण पंकज उर धरू ॥ लंका अचल रा
ज तुम करू ॥ ऋषि सुलस्य यश बिमल मयंका ॥ तेहि कु
लमहंजनि होसि कलंका ॥ राम नाम विबु गिरान सोहा ॥ दे
खु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥ सब भूषण भूषित वरनारी ॥
वसन हीन नहि सोह करारी ॥ राम विमुख संपति प्रभुता
ई ॥ जाइर ही पाइ बिनु पाई ॥ सजल मूल जेहि सरिताना
ही ॥ बरषि गए पुनित बहिसुखा ही ॥ सुख दशकंठ कहौ प
ण रोपी ॥ राम विमुख तानहि कोपी ॥ शंकर सहविष्णु-

अजतोही ॥ शकहिन राखिराम करदोही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मो
 हमूल बहुमूल प्रद ॥ त्यागहुतम अभिमान ॥ भजहु रामरघु
 नाय कहि ॥ कृपासिंधु भगवान ॥ २३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यद्य
 पिकहिकपि अतिहित बाणी ॥ भक्तिविवेकविरतिनयसा
 नी ॥ बोलाविहसि अधम अभिमानी ॥ मिलाहमहिं कपि
 गुरु बडजानी ॥ मृत्युनिकट आइखल तोही ॥ लागेसि अ
 धम शिरवावन मोही ॥ उलटाहोइ कहा हनुमाना ॥ मति-
 भ्रम तोहि प्रगटमै जाना ॥ सुनिकपि वचन बहुतरिसि आ
 ना ॥ वेगिन हरहु मूढ कर प्राणा ॥ सुनतनिशाचर मारणा
 धाए ॥ सचिवन्ह सहित बिभीषण आए ॥ नाइशी सकरि
 विनय बहूता ॥ नीतिबिरोधन मारिय मदूता ॥ आनदंडक
 छु करिय गोसाई ॥ सबहिं कहत मंत्री भल भाई ॥ सुनतवि
 हसि बोला दशकंधर ॥ अंगभंग करि पठवहु बंदर ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ कपि करममता पूछ कर ॥ सबहिं कहा समु
 जाई ॥ तेलबोरि पठबांधि पुनि ॥ पावक देहु लगाई ॥ २४
 ॥ चौपाई ॥ ॥ पूछहीन बंदर जब जाइहि ॥ तब शठनि
 जनाथ हिले आइहि ॥ जिन्ह कै कीन्हे सिअमित बडाई ॥
 देरवों धौतिन्ह कै प्रभुताई ॥ वचन सुनत कपि मन मुसका
 ना ॥ भइ सहाय शारद मै जाना ॥ यातु धान सुनिरावण व-
 चना ॥ लागे चरन मूढ सोइ रचना ॥ रहान नगर वसन घृ-
 ततेला ॥ वादि पृछ कीन्ह कपि रवेला ॥ कौतुक कहं आए पु-
 रवासी ॥ मारहि चरण कहिं बहु हांसी ॥ वाजहि दोल दे-
 हि सब नारी ॥ नगर फारि पुनि पृछ प्रजारी ॥ पावक जरत
 देखि हनुमंता ॥ भयउ परमल घुरूपतुरंता ॥ निबुकि च-
 टेउ कपि कनक अदारी ॥ भये सभीत निशाचर भारी ॥ ।

॥ दोहा ॥ ॥ हरि प्रेरत तेहि अ वसर ॥ बहे पवन उन चाश ॥ अ
 दुहास करि गर्जहि ॥ कपि बटिला गुआ काश ॥ २५ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ देह विशाल परम हरु आई ॥ मंदिर ते मंदिर चटि जा
 ई ॥ जरे नगर भेलो गवे हाला ॥ लपट ऊपठ बहु कोटि कराला
 ॥ तात मात सब करहिं पुकारा ॥ एहि अ वसर को हम हिं उ
 बारा ॥ हम जो कहाय कपि नहि होई ॥ बानर रूप धरे सुर को
 ई ॥ साधु अ वज्ञा कर फल ऐसा ॥ जरे नगर अनाथ कर जौ
 सा ॥ जारानगर निमिषि एक माहीं ॥ एक बिभीषण को गृ
 ह नाहीं ॥ ताकर दूत अनल जेई सिरजा ॥ जरान सो तेहि का
 रण गिरिजा ॥ उलटि पलटि लंका सब जारी ॥ कूदि परात ब
 धुम जारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बूछ बुजाई रवोई अम ॥ धरि
 लघु रूप बहोरि ॥ जनक सुता के आगे ॥ ठाटे भय उ कर जो
 री ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा ॥ जौ
 सें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥ चूडामणि उतारित बदेऊ ॥ ह
 समेत पवन सुत लएऊ ॥ कहे हुतात तुम मोर प्रणामा ॥ स
 व प्रकार प्रभु पूरण कामा ॥ दीन दयालु बिरंद संभारी ॥ हर
 नाथ मम संकट भारी ॥ तात शक्र सुत कथा सुनायेहु ॥ बा
 ए प्रताप प्रभु हि समुजायेहु ॥ मास दिवस मह नाथ न आए
 ॥ तौ पुनि मोहि जियत नहि पायेहु ॥ कहु कपि केहि विध न
 राखौं प्राणा ॥ तुम हुतात कहत अ बजाना ॥ तुम हि देखि शी
 तल भइ छाती ॥ पुनि मो कहं सोइ दिन सोइ राती ॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ जनक सुत हिं समुजाइ करि ॥ बहु विध धीर ज दीन्ह
 ॥ चरण कमल शिर नाइ कपि ॥ गमन रोम पहं कीन्ह ॥ २७ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ चलत महा ध्वनि गिर जेउ भारी ॥ गर्भ स्त्रवेउ
 सुनि निशि चर नारी ॥ लांघि सिंधु एहि पार हि आवा ॥ शब्द

किल किला कपिन्ह सुनावा ॥ हर्षे सब बिलोकि हनुमाना ॥
 नूतन जन्म कपिन तब जानी ॥ सुख प्रसन्न तनु तेज बिराजा ॥
 ॥ कीन्है सिराम चंद्र कर काजा ॥ मिले सकल अति भये सुखा
 री ॥ तल फत सीन पाव जनु पारी ॥ चले हर्षि रघुनाथ कपाशा ॥
 ॥ पूछत कहत नवल इतिहासा ॥ तब मधुवन भीतर सब आ
 ए ॥ अंगद सहित मधुर फल खाए ॥ रख वारे तब बरज
 न लागे ॥ सुष्टि प्रहार करत सब भागे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाइ
 पुकारे सकल ने ॥ बन उजारु युव राज ॥ सुनि सुग्रीव हर्ष
 कपि ॥ करि आये प्रभु काज ॥ २८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जौन
 होत सीता शुधि पाई ॥ मधुवन के फल शकहिं कै खाई ॥ ए
 हिविध मन विचार करु राजा ॥ आइ गए कपि सहित समा
 जा ॥ आइ सबहिं नावा पद सीसा ॥ मिले सबहिं अति प्रे
 म कपीशा ॥ पुछे उकुशल कुशल पद देषी ॥ राम कृपा भाका
 ज विशेषी ॥ नाथ काज कीन्है हनुमाना ॥ राखे सकल कपि
 न्ह कर प्राणा ॥ सुनि सुग्रीव बहुरि उठि मिले ऊ ॥ कपिन्ह
 सहित रघुपति पहंचले ऊ ॥ राम कपिन्ह जब आवत देष ॥
 किये काज उर हर्ष विशेषी ॥ स्फटिक शिला बैठे दोउ भाई ॥
 परं सकल कपि चरण न जाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रीति सहि
 त भेटे सकल ॥ रघुपति करुणा पुंज ॥ पूछे उकुशल नाथ
 अब ॥ कुशल देखि पद कंज ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जांव
 वंत कह सुनुरघुराय ॥ जा परनाथ करहु तुम दाया ॥ नाहि
 सदा शुभ कुशल निरंतर ॥ करनर सुनि प्रसन्न तहि उपर ॥
 सो विनया विनया गुण सागर ॥ तासु सय शत्रु लोख्य उजा
 गर ॥ प्रभु की कृपा भयउ सब काज ॥ जन्म हमार सफल भा
 आज ॥ नाथ पवन सत कीन्है जां के रणी ॥ रां सुगल क्षहं

जाईनवरणी॥ सुनिकुपालु उठित्दयलगाये॥ जानिसुभ
हरघुपतिमनभाये॥ कहहुं तात केहि भांति जानकी॥ रह
तिकरतिरक्षास्वप्राणकी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नामपाहसूदिव
सनिशि॥ ध्यानतु ह्मारकपाट॥ लोचननिजपदयंत्रिका॥
प्राणजाहिकेहि वाट॥ ३०॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चलतमोहिचू
डामणिदीन्हा॥ रघुपतिलदयल्ला इतंहिलीन्हा॥ नाथगुण
ललोचनभरि बारी॥ वननकहेउकछुजनककुमारी॥ अ
नुजसमेतगहंहुप्रभुचरणा॥ दीनबंधुप्रणतारतिहरणा॥
मनक्रमबचनचरणअनुरागी॥ केहिअपराधनाथमोहि
त्यागी॥ अवगुणएकमोरमैजाना॥ विछुरतप्राणनकीन्ह
प्रयाना॥ नाथसोनयनन्हकरअपराधा॥ निसरतप्राणक
रहिं हठिवाधा॥ विरहअनलतनुतूलसमीरा॥ श्वासज
रेक्षणमाहशरीरा॥ नयनअवैजलनिजहितलागी॥ जरै
नपावदेहविरहागी॥ सीताकेअतिबिपतिबिशाला॥ बि
नहिंकहेभलदीनदयाला॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निमिषनिमिष
करुणायतन॥ जाहिकल्पशतबीति॥ बेगिचलियप्रभुआ
नये॥ भुजबलखलदलजीति॥ ३१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सु
नसीतादुखप्रभुसरखअयना॥ भरिआयेजलराजीव
यना॥ बचनकायमनममगतिजाही॥ सपनेहुंबिपतिकि
चाहियताहीं॥ कहहुनुमानविपतिप्रभुसोई॥ जबतब
रणभजननहोई॥ केतिकवातप्रभुयातुधानकी॥ बेगि
लियआनि यैजानकी॥ सनुकपितोहिसमानउपकारी॥
नहिंकोउसरनरसुनितनुधारी॥ प्रत्यपकारक
रा॥ सनसुखहोईनशकतमनमोरा॥ सनुकपितोहिउ
णमेंनाहीं॥ देखेउंकरिबिचारमनमाहीं॥ पुनिपुनिकपि

हिंचितवस्सरआता॥ लोचननीरपुलकअतिगाता॥ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ स्तनिप्रभुबचनबिलोकीमुख॥ हृदयहर्षहनु
 मंत॥ चरणपरेउपेमाकुल॥ आहिआहिभगवंत॥ ३२॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ बारबारप्रभुचहतउठावा॥ प्रेममगनतेहि
 उठवनभावा॥ प्रभुपदपंकजकपिकरशीशा॥ स्तमिरिसो
 दशामगनगौरीशा॥ सावधानमनकरिपुनिशंकर॥ लागे
 कहनकथाअतिसुंदर॥ कपिउठावप्रभुहृदयलगावा॥ क
 रगहिपरमनिकटबैठावा॥ कहुकपिरावणपालितलंका
 ॥ केहिविधदहेउदुर्गगतिबंका॥ प्रभुप्रसन्नजानाहनुमा
 ना॥ बोलैबचनविगतअभिमाना॥ शारवामृगकैबडिमनु
 साई॥ शारवानेंशारवापरजाई॥ लांधिसिंधुहाटकपुर-
 जारा॥ निशिचरणवधिविपिनउजारा॥ सोसबतबप्र
 तापरधुराई॥ नाथनकलुकमोरप्रभुताई॥ ॥ दोहा ॥
 ताकहंप्रभुकलुअगमनहि॥ जापरतुमअनुकूल॥ तब
 प्रतापवडवानलहिं॥ जारिशकैखलुतूल॥ ३३॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ नाथभक्तितबअतिअनपावनि॥ देहकृपाक
 रिशिवमनभावनि॥ स्तनिप्रभुपरमसरलकपिवाणी॥
 एवमस्ततबकहेउभवानी॥ उमाशमस्तभावजिन्हजा
 ना॥ ताहिभजनतजिभावनआना॥ यहसंवादजासुउ
 रआवा॥ रघुपतिचरणभक्तितेंइपावा॥ स्तनिप्रभुबच
 नकहहिकपिचंदा॥ जयजयजयकृपालुसरखकंदा॥ त
 वरघुपतिकपिपतिहिंबुलावा॥ कहाचलकरकरहुव
 नावा॥ अबविलंबकोहिकारणकाजें॥ नुरतकपिनकहं
 आयसुदीजें॥ कौतुकदंरिस्तमनवहुवर्षे॥ नभतंभवा
 नचलेंसुरदपें॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपिपतिवंगिबुलाएउ॥

आएयूथपयूथ॥ नानावरणअतुलबल॥ बानरभालुव
 रूथ॥ ३४॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुपदपंकजनावहिंशीशा
 ॥ गरजहिंभालुमहाबलकीशा॥ देवारासकलकपि-
 सेना॥ चितैकपावरिराजीवनयना॥ रामरूपाबलपाइक
 पिन्दा॥ भएपक्षयुतमनहुगिरीन्दा॥ हर्षिरामतबकीन्ह
 प्रयाणा॥ सगुणभएसुंदरशुभनाना॥ जाससकलमंग
 लमयकीर्ती॥ तासपयानसगुणयहनीती॥ प्रभुपया
 नजानाबैदेही॥ फरकेवामअंगजनुतेही॥ जोजोसगुण
 जानकिहिंहोई॥ अशगुनभएउरावणहिंसोई॥ चलाक
 टककोबरणैपारा॥ गरजहिंबानरभालुअपारा॥
 युधगिरिपाटपधारी॥ चलेगगनमहिइच्छाचारी॥
 रिनादभालुकपिकरहीं॥ डगमगमहिदिग्गजचिक्कर
 ॥ ॥ छंद॥ ॥ चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिरिलोलसा
 गरखरभरे॥ मनहरषदिनकरसोमसरमुनि
 रदुरवटरे॥ ७॥ कटकहिंसरकटविकटभटबहुको
 टिन्हधावहि॥ जयरामप्रबलप्रतापकोशल
 एगावहीं॥ ८॥ सहिशंकनभारअपारअहिपति
 रविमोहई॥ गहिदशनपुनिपुनिकमठपृष्ठकठोरसो
 मिसोहई॥ ९॥ रघुबीररुचिरपयानप्रस्थितिजानिपर
 मसहावनी॥ जनुकमठरव
 बिचलपावनी॥ १०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ २ ॥
 धि॥ उतरेसागरतीर॥ जहंतहंलागेरवानफल॥ भालुबिपु
 लकपिबीर॥ ३५॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उहांनिशाचररहा
 तंका॥ जबतेंजारिगएउकपिलंका॥
 । नहिनिशिचरकुलकेरउवारा॥

लवरणिनजाई॥तेहिआएपुरकवनभलाई॥अतिसभी
 तिस्तनिपुरजनबाणी॥मंदोदरीहृदयअकुलानी॥रहसि
 जोरि करपतिपदलागी॥बोलीबचननीतिरसपागी॥कां
 तकर्षहरिसनपरिहरहु॥मोरकहाअतिहितचितधरहु॥
 समुजतजासुदूतकीकरणी॥सबहिंगभैरजनीचरधरणी
 ॥तासुनारिनिजसचिवबुलाई॥पठबहुकातजोचहुहुभ
 लाई॥तवकुलकमलविपिनदुरवदाई॥सीतासीतनिशा
 समआई॥सुनहुनाथसीताविनुदीन्हे॥हितनतुह्मारश
 भुअजकीन्हे॥॥दोहा॥॥रामबाणअहिगणसरिस
 ॥निकरनिशाचरभेक॥जबलगित्रसतनतवहिलगि॥य
 तनकरहुतजिटेक॥३६॥॥चौपाई॥॥अचणसुनत
 शठताकरिबाणी॥विहसाजगतविदितअभिमानी॥सभ
 यसुभावनारिकहंसांचा॥मंगलमाहअमंगलराचा॥जो-
 आवैमरकटकटकाई॥जिहहिंविचारेनिशिचरखाई॥कं
 पहिलोकपजाकेवासा॥तासुनारिसभीतिबडिहासा॥अ
 सकहिंविहंसिताहिउरलाई॥चलेउसभाममताअधिका
 ई॥मंदोदरीहृदयकरुचिंता॥भएकांतपरविधिविपरीता
 ॥वैठेउसभारववरिअसपाई॥सिंधुपारसेनासबआई
 ॥बूजेसिसचिवउचितमतकहुहु॥तेसबहंसेमुष्टकरिर
 हहु॥जितहुसुरासरतवअमनाही॥नरवानरकेहिले
 रवामही॥॥दोहा॥॥सचिववैद्यगुरुनीनिजो॥बोली
 हिंअयप्रभुआज्ञा॥राजधर्मतनुनीनिकर॥होइवेगहोना
 शा॥३७॥॥चौपाई॥॥सोइरावणकहवर्नासहाई॥अ
 स्तनिकरहिंसुनाइसुनाई॥अवसरजानिविभीषणआ
 वा॥आताचरणशीमंतहिंनाव॥प्रनिशिरनाईवैठिनि

जआसन॥ बोलाबचनपाई अनुशासन॥ जौ कृपालु पूछेहु
मोहि वाता॥ मतिअनुरूप कहहु मै ताता॥ जौ आपन चाह
हु कल्याणा॥ सुयशसुमति शुभगति सरवनाना॥ तौ पर
नारिनिवारिगोसाई॥ तजो चौथि चंदा कीनाई॥ चौदहभु
वन एकपति होई॥ भूतद्रोहति छैनहि कोई॥ गुणसागरना
॥ अल्पलोभभल कहै न कोऊ॥ ॥ दोहा॥

कामक्रोधमदलोभसब॥ नाथनरक करपंथ॥ सब परिह
बीरपद॥ भजहु कहहिं सदग्रंथ॥ ३८॥ ॥ चौपाई॥

॥ तातरामनहिनरभूपाळा॥ भुवनेश्वर कालहुकर काला
॥ ब्रह्मअनामयअजभगवंता॥ व्यापकअजितअनादिअ
नंता॥ गोहिजधेनुदेवहितकारी॥ कृपासिंधुमानुषतनुधा
री॥ जनरंजनभंजनरवलवाता॥ देवधर्मरक्षकसरचाता
॥ ताहिबैरतजिनाइयमाथा॥ प्रणतारतिभंजनरघुनाथा॥
॥ देहुनाथप्रसुकहं बैदेही॥ भजहुरामविनुकामसनेही॥
शरणागतप्रभुकाहुन त्यागा॥ विश्वद्रोहकृतअघजोहिला

॥ जासुनामत्रयतापनशावन॥ सोप्रभुप्रगटसमुजहजि
यरावण॥ ॥ दोहा॥ ॥ बारबारपदलागउं॥ बिनयकरीं
दशशीश॥ परिहरिमानरुमोहमद॥ भजहुकोशलाधीश
॥ ३९॥ मुनिपुलस्त्यनिजशिष्यसन॥ कहिपठईयहवात॥
तुरतसोमैतुमसनकही॥ पाइसुअवसरतात॥ ४०॥ ॥ चौ
॥ ॥ माल्यवंत एकसचिवसयाना॥ तासबचनसुनि
अतिसरवमाना॥ तातअनुजतबनीतिविभूषण॥ सोउर
धरियजोकहहिंविभूषण॥ रिपुउत्कर्षकहतशठदोऊ॥ दू
॥ माल्यवंतगृहगएउब

ई॥ नाथपुराणनिगमअसकहई॥ जहांसुमति तहंसपति
 जाना॥ जहांकुमति तहंविपतिनिदाना॥ तबउरकुमतिबसी
 विपरीती॥ हितअनहितमानहुरिपुप्रीती॥ कालरात्रिनिशि
 चरकुलकेरी॥ तेहि सीतापरप्रीतिघनेरी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ता
 तचरणगहिमागउं॥ राखहुंमोरदुलार॥ सीतादेहराकह
 ॥ अतिहितहोइतुहमार॥ ४१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बुधपुराण
 श्रुतिसंमतवाणी॥ कहीबिभीषणनीतिबरवानी॥ सुनत
 दशाननउठारीसाई॥ खल तोहिमृत्युनिकटचलिआई॥
 जिअसिसदाशठमोरजिआवा॥ रिपुकरपक्षंसदातोहि
 भावा॥ कहेसिनखलअसकोजगमाही॥ भुजबलजेहिंजि
 तेहमनाहीं॥ ममपुरवसितपस्वीसनप्रीती॥ शठमिलुजा
 इताहिकहुनीती॥ असकहि कीन्हैसिचरणप्रहारा॥ अ
 नुजगहेपदबारहिंबारा॥ उमासंतवैइहैबडाई॥ मंदक
 रतजोकरैभलाई॥ तुमपितुसरिसभलेमोहिमारा॥ रा
 मभजेहितहोइतुलारा॥ सचिवसंगलैनभपथगएऊ॥
 सबहिंसनाइकहतअसभएऊ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामसत्य
 संकल्पप्रभु॥ सभाकालवशतोरि॥ मैरघुनायकशरणा
 अव॥ जाऊंदेहुनिजरवोरि॥ ४२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अस
 कहिचलाविभीषणजवहीं॥ आयुहीनभएनिशिचरत
 वहीं॥ साधुअवज्ञातुरतभवानी॥ करकल्याणअरिव
 लकैहानी॥ रावणजवहिंविभीषणत्यागा॥ भएउविभव
 बितुनवहिअभागा॥ चलेउहपिरघुनायकपाहो॥ करत
 मनोरथबहुमनमाही॥ देखिहोजाइचरणजलजाता॥
 अरुणमृदुलसेवकसुखदाता॥ जेपदपरसितरीकपि
 नारी॥ दंडककाननपावनकारी॥ जेपदजनकसुताउर-

लाए॥ कपटकुरंगसंगधरधाए॥ हरउरसरसरोजपदजोई
 ॥ अहोभाग्यमैदेखबसोई॥ ॥ दोहा॥ ॥ जिनपायनकर
 पादुका॥ भरतरहेमनलाए॥ तेपदआजिविलोकिहौं॥ इन
 नयननअवजाइ॥ ४३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ इहिविधिकरतस
 प्रेमविचारा॥ आएउसपदिसिंधुकेपारा॥ कपिन्हबिभीषण
 आवतदेखा॥ जानेउकोउरिपुदूतविशेषा॥ ताहिरारिक्पी
 शपहिआए॥ समान्वारसबजाइसुनाए॥ कहसुग्रीवसुनि
 यरघुराई॥ आवा मिलनदशाननभाई॥ कहप्रभुसखाबू
 जियेकाहा॥ कहेकपीशसुनहुनरनाहा॥ जानिनजाइनि
 शाचरमाया॥ कामरूपकेहिकारणआया॥ भेदहमारले
 नशठआवा॥ रारिवयबांधिमोहिअसभावा॥ सरवानीति
 तुमनीकविचारी॥ ममपणशरणागतभयहारी॥ सुनिप्र
 भुबचनहर्षहनुमाना॥ शरणागतवत्सलभगवाना॥ ॥
 दोहा॥ ॥ शरणागतकहजेतजहिं॥ निजअनहितअनु
 मानि॥ तेनरपामरपापमय॥ तिनहिंबिलोकतहानि॥ ४४
 ॥ चौपाई॥ ॥ कोटिविप्रवधलागहिजाही॥ आएशरण
 तजौंनहिताही॥ संसुरवहोइजीवमोहिजबही॥ जन्मको
 टिअघनाशोतबही॥ पापवतकरसहजसभाऊ॥ भजन
 मोरतेहिभावनकाऊ॥ जोपैंदुष्टहृदयसोहोई॥ मोरेसं
 खआवकिसोई॥ निर्मलमनजनसोमोहिपावा॥ मोहिक
 पटलुलछिद्रनभावा॥ भेदलेनपठवादशशीशा॥ तबहुन
 कछुभयहानिकपीशा॥ जगमहसरवनिशरजेते॥ लक्ष्म
 णहनहिंनिमिषमहंतेते॥ जौसभीतआवाशरणाई॥ ररि
 हौंताहिप्राणकीनाई॥ ॥ दोहा॥ ॥
 ॥ हसिकहकृपानिधान॥ जयकृपालुकहिकपिचले॥

लुप्रथमवासनारहेऊ॥ प्रभुपदप्रीतिसरितसोवहेऊ॥
 बहूपालुनिजभक्तिजोपावनि॥ देहुदयाका॥ ३
 वनि॥ एवमस्तुप्रभुकहिरणधीरा॥ मांगातुरतसिंधुके
 नीरा॥ यद्यपिसखातोहिइच्छानाहीं॥ ममदर्शनअमो-
 यजगमाहीं॥ असकहिरामतिलकतेहिंसारा॥ सुमनह
 धिनभभएउअपारा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावणक्रोधअनल
 निज॥ श्वाससमीरप्रचंड॥ जरतविभीषणराखेउ॥ दीन्हे
 उराजअखंड॥ ५०॥ जोसंपत्तिशिवरावणहि॥ दीन्हदि
 एदशमाथ॥ सोसंपदाविभीषणहि॥ सकुचिदीन्हरघुना
 थ॥ ५१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अराप्रभुछांडिभजहिजेआना
 ॥ तेनरपशुबिलुपूछविषाणा॥ निजजनजानिताहिअप
 नावा॥ प्रभुसुभावकपिकुलमनभावा॥ पुनिसरवजसर्व
 उरवासी॥ सर्वरूपसवरहितउदासी॥ बोलेबचननीतिप्र
 तिपालक॥ कारणमनुजदनुजकुलघालक॥ सुकुपी
 शलंकप्रतिवीरा॥ केहिबिधिउत्तरीयजलधिगंभीरा॥
 संकुलउरगमकरऊपजाती॥ अतिअगाधदुस्तरसबभा
 ती॥ कहलंकेशसनहुरघुनाथक॥ कोटिसिंधुशोषकत-
 वसायक॥ यद्यपितदपिनीतिअसगाई॥ विनयकरिय
 सागरपहंजाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुतुल्लारकुलगुरुजल
 धि॥ कहहिंउपायविचारि॥ बिलुप्रयाससागरतरहिं॥ स
 कलभालुकापिधारि॥ ५२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सरवाकहित
 मनीकउपाई॥ करबदेवजोहोइसहाई॥ मंत्रनयहलस्य
 एमनभावा॥ रामवचनसुनिअतिदुखपावा॥ नाथदेव
 करकवनभरोसा॥ शोपियसिंधुकरियमनरोषा॥ कादर
 मनकरएकअधारा॥ देवदेवआलसीपुकारा॥ सुनतवि

हंसिबोले रघुवीरा ॥ ऐसे इकर बधरहु मनधीरा ॥ असक
 अचुइहि समुजाई ॥ सिंधु समीप गए रघुराई ॥ प्रथ
 मप्रणाम कीन्ह प्रभुजाई ॥ बैठे तटपुनि दर्भंडसाई ॥ जबहि
 भीषण प्रभु पहिं आए ॥ पाछे रावण दूत पठाए ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ सकल चरित देखे वातिन्ह ॥ धरे कपटकपि देह ॥ प्र
 भु गुण हृदय सराहि अति ॥ शरणागत परनेह ॥ ५३ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रगट बरवान तराम सकभाऊ ॥ अतिस प्रेम
 गावि शरि दुशऊ ॥ रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने ॥ ताहि बा
 कपिपति पहं आने ॥ कह सकुं श्रीवसनहु सब बनचर
 ॥ अंगभंग करि पठबहु निशिचर ॥ सुनि सकुं श्रीवचन क
 धाए ॥ बांधि कटकचहुं पाशफिराए ॥ बहु प्रकार मारण
 कपिलागे ॥ दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥ जोह मारहरना
 साकाना ॥ तेहि को शलधी शकर आना ॥ सुनिलक्ष्मण ते
 कट बुलाए ॥ दयालागि हंसि दीन्ह छुड़ाए ॥ रावण
 कर दीन्हें हुयह पाती ॥ लक्ष्मण बचन बांचु कुलघाती ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ कहेहु सुखागर मूढसन ॥ ममसंदेश उद्वर ॥
 सीता देई मिलहु न तु ॥ आवाकाल तु हमार ॥ ५४ ॥ ॥ चौ
 ई ॥ ॥ तुरत नाइ लक्ष्मण पदमाथा ॥ चले दूत वरणत
 गुण गाथा ॥ कहतराम यशलंका आए ॥ रावण चरणशी
 सति न्हाए ॥ विहसि दशानन पूछे सिवाता ॥ कह शिनभु
 क आपुनि कुशलाता ॥ पुनिकहु कुशल बिभीषण केरी ॥
 जा सकमुत्क आई अति नेरी ॥ करतराज लंका शठ त्यागा
 ॥ होइ हिजब कर कीट अभागा ॥ पुनिकहु भालु की सक
 टकाई ॥ कठिन काल प्रेरत चलि आई ॥ तीन्ह के जीवन क
 ररख वारा ॥ भए उमृदुलचित सिंधु बिचारा ॥ कहत पसि

न्हकरवातबहोरी॥ जिन्हकेहृदयआसअतिमोरी॥ ॥ दो
 हा॥ ॥ किभइभेटकिफिरिगए॥ श्रवणसुखशसुनिमोरी॥
 कहसिनरिपुदलतेजबल॥ बहुतचकितचिततोर॥ ५५॥
 चौपाई॥ ॥ नाथरूपाकरिपूछेहुजैसें॥ मानेहुबचनक्रो
 धतजितैसैं॥ मिलाजाइजबअनुजतुहारा॥ जातहिरामति
 लकतेहिसारा॥ रावणदतहमहिसानिकाना॥ कपिन्हवा
 धिदीन्हेउदुखनाना॥ श्रवणनासिकाकाटनलागे॥ रामश
 पथदीन्होहमत्यागे॥ पूछेहुनाथकीशकटकाई॥ बदनको
 टिशतबरणीनजाई॥ नानावरणभालुकपिधारी॥ विक
 टाननविशालभयकारी॥ जेइपुरदहेउबधेउसुततोर॥
 सकलकपिन्हमहतेहिवलयोरा॥ अमितनामभटकठिन
 कराला॥ विपुलवरणतनुतेजविशाला॥ ॥ दोहा॥ ॥ हि
 विदमयंदनीलनल॥ अंगदादिविकटास्य॥ दधिसुखकेस
 रिकुसुदगव॥ जामवंतवलराशि॥ ५६॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 एकपिसवसुग्रीवसमाना॥ इन्हसमकोटिगणैकोआना
 ॥ रामरूपाअतुलितवनतिनहीं॥ तृणसमानत्रयलोकहि
 जगहीं॥ असमैश्रवणसुनादशकंधर॥ पद्मअठारहयू
 थपचंदर॥ नाथकटकमहंसोकपिनाहीं॥ जोनतुमहिजी
 तैरणमाहीं॥ परमक्रोधमीजहिंसवहाथा॥ आयसुपेन
 देहिंरघुनाथा॥ शोषहिंसिधुसहितऊखव्याला॥ पूरहिंन
 तौभरिंकुधरविशाला॥ मदिगर्दमिलबहिदसशाशा॥ ए
 संचननकहहिंसवकीशा॥ गर्जहिंतर्जहिंसहजअशंका
 ॥ मानहुंयसनचहतहहिलंका॥ ॥ दोहा॥ ॥ सहजभृ
 रकापेभालुसव॥ पुनिशिरपरआराम॥ रावणकालको
 टिकह॥ जोतिशकहिंसंग्राम॥ ५७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ राम

तेजबलबुधिविपुलाई॥ शेषसहस्रशतशकहोनगाई॥ श
 कशरएकशोषिशतसागर॥ तबभ्रातहिपूछेउनयनागर
 ॥ तासबचनसुनिसागरपाहीं॥ मागतपंथरूपामनमाहीं
 ॥ सुनतबचनविहंसादशशीसा॥ जोअसमतिसहायक
 तकीशा॥ सहजभीरुकरबचनहटाई॥ सागरसनठानीम
 चलाई॥ मूढमृषाकाकरसिबडाई॥ रिपुबलबुद्धियाहमै
 पाई॥ सचिवसभीतबिभीषणजाके॥ विजयविभूतिक-
 हालगिताके॥ सुनिखलबचनदूतरिसिबाटी॥ समयबि
 चारिपत्रिकाकाटी॥ रामअनुजदौन्हीयहपांती॥ नाथबं
 चाइजुडाबहुछाती॥ विहंसिवामकरलीन्हैसिरावण॥ स
 चिवबोलिशठलागुबचावन॥ ॥ दोहा॥ ॥ बातन्हमन
 हिरिजाइशठ॥ जनिघालसिकुलरवीश॥ रामविरोधनउ
 बरिहुहु॥ शरणबिष्णुअजईश॥ ५८॥ होउमानतजिअ
 नुजइव॥ प्रभुपदपंकजभृंग॥ होहिरामशरअनलखल॥
 जनिकुलसहितपतंग॥ ५९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुनतस
 भयमनसुरवसुसकाई॥ कहतदशाननसबहिंसनाई॥
 भूमिपराकरगहतअकाशा॥ लघुतापसकरबागबिला
 सा॥ कहभुकनाथसत्यसबवाणी॥ समुझहुछांडिप्रक
 तिअभिमानी॥ सुनहुबचनममपरिहरिक्रीधा॥ नाथ
 रामसनतजहुविरोधा॥ अतिकोमलरघुबीरसभाऊ॥
 यद्यपिअखिललोककरराऊ॥ मिलतकृपाप्रभुतुमपरक
 रिहैं॥ उरअपराधनएकौधरिहैं॥ जनकसुतारघुनाथहिदीजै
 ॥ एतनाकहामोरप्रभुकीजै॥ जबतेइदेनकहेउबैदेही॥ चरणप्रहा
 रकीन्हशठतेही॥ चरणनाइशिरचलासोतहंवा॥ कृपासिंधुरघुना
 थकजहवा॥ करिप्रणामनिजकथासुनाई॥ रामकृपाआपन

गतिपाई॥ अषिअगस्त्यकरशापभवानी॥ राक्षसभएउ
 रहासुनिजानी॥ बंदिरामपदबारहिंबारा॥ पुनिनिजआ
 अमकहंपगुधारा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बिनयनमानतजलधि
 जड॥ गएतीनदिनबीती॥ बोलेरामसकोपतब॥ भयविनु
 होइनप्रीति॥ ६०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ लक्ष्मणबाएशरास
 नआनू॥ शोषौवारिधिविशिखकृशानू॥ शठसनबिनय
 कुटिलसनप्रीती॥ सहजछपणसनसुंदरनीती॥ ममता
 रतसनज्ञानकहानी॥ अतिलोभीसनबिरतिबरवानी॥
 ओधिहिंशमकामिहिहरिकथा॥ उरषबीजवयेफलया
 ॥ असकहिरघुपतिचापचढावा॥ यहमतलक्ष्मणकेमन
 भावा॥ सधानेउधनुविशिखकराला॥ उठीउदधिउरअंत
 रज्वाला॥ मकरउरगरूपगणअकुलाने॥ जरतजंतुजल
 निधिपहिचाने॥ कनकंधारभरिमणिगणनाना॥ विप्ररू
 पआएउतजिमाना॥ ॥ दोहा ॥ ॥ काटेपैकदलिफले॥
 कोटियतनकोउसीच॥ बिनयनमानस्वगेशसुनु॥ डाटेहिं
 पेनमनीच॥ ६१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सभयसिंधुगहिपदप्र
 भुकेरे॥ क्षमहुनाथसवअवगुणमेरे॥ गगनसमीरअन
 लजलधरणी॥ इनकैनाथसहजजडकरणी॥ तवपेरित
 मायाउपजाए॥ सृष्टिहेतुसवग्रंथनगाए॥ प्रभुआयसु
 जेहिंकहंजसअहहीं॥ सोनेहिंभांतिअहैसरवलहहीं॥
 प्रभुभलकीन्हमोहिशिखदीन्हा॥ मर्यादासवतुहरीकी
 न्हा॥ दोलगंवारकदपशुनारी॥ येसवताडनकेअधिकारी
 ॥ प्रभुप्रतापमेजावसरवाई॥ उतरहिकटकनमोहिवडाई
 ॥ प्रभुआज्ञापेलश्रुतिगाई॥ करहुवंगिजोतुमहिसोहाई
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनतविनीतवचनअति॥ कहकृपालुमु-

सकाड्॥ जेहि विधि उतरै कपिकटक॥ तात सो करहु उपाड्॥
 ॥ ६२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ नाथ नील नल कपि दोउ भाई॥ लरि
 काइ ऋषि आशिष पाई॥ तिन के परस किए गिरि भारे॥ त
 हहिं जलधि प्रताप तुह्यारे॥ मै पुनि उर धरि प्रभु प्रभु ताई॥
 करि हौं बल अनुमान सहाई॥ इहि बि
 ए॥ जेहि एक यश लोक तिहु गाइए॥ इहि शरम मउत्तर तट
 वासी॥ रहहु नाथ नर खल अघ नाशी॥ सुनि कृपालु साग
 र मन पीरा॥ तुरत हि हरी राम रणधीरा॥ देखि राम बल अ
 तुलित भारी॥ हर्षि ययोनिधि भएउ सरवारी॥ सकल चरि
 त कहि प्रभु हि सुनावा॥ चरण वंदि पाथो धिसि यावा॥ ॥
 छंद॥ ॥ निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुबीर हि यमत भाए
 ऊ॥ यह चरित कलि मल हरण जशमति दास तुलसी गाए
 ऊ॥ ११॥ सुख भवन संशय शमन दमन
 एगए॥ तजि आश सकल भरोस गावहिं सुनहिं सज्ज
 न सुठि मना॥ १२॥ ॥ दोहा॥ ॥
 ॥ रघुनाथ कणुण गान॥ सादर सुनहिं ते तरहि भव
 बिना जल यान॥ ६३॥ ॥ इति श्रीरामचरित मानसे सा
 कल कलिकलुष विध्वंसने विमल विज्ञान वैराग्य
 नाम पंचमः सोपानः॥ सुंदरकांडः समाप्तः॥ ५॥
 ॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु॥ ॥ शुभं भवतु॥
 ॥ श्रीमज्जगदीश्वरार्पणमस्तु॥ ॥ ॥ ॥ ॥



श्री
अथतुलसिदास
कृतरामायणलंका
कांड प्रारंभः

अथतुलसिदासकृतसामायणलंकाकाण्डं लिख्यते. ६

श्लोकः

शंखेद्वाभमतीवसंदरतनुंशादूलचर्मोवरं कालव्यालकरा
लभूषणधरंगंगाशशांकप्रियम् ॥

शमनं कल्याणकल्पद्रुमं नीमीड्यंगिरिजापतिगुणनिधिं
श्रीशंकरं कामहम् ॥ १ ॥ यो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमतिदु
र्लभम् ॥ खलानां दंडकृद्योसौ शंकरः शंतनो तु मे ॥ २ ॥ रामं

कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहयोगींद्रं
गव्यंगुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ॥ मायातीतं सु
रेशं खलवधनिरतब्रह्महृदं देववंदेकुंदावदांतं
नयनं देवसुर्वीशरूपम् ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लवनिमेषण

रमाणुयुग ॥ वर्षकल्पशरचंड ॥ भजसिनमनते हिरामक
हं ॥ कालजासुकोदंड ॥ १ ॥ ॥ सौरठा ॥ ॥ सिंधुवच

नसुनिराम ॥ सचिवबोलिप्रभुअसकहेउ ॥ अबविलंब
केहिकाम ॥ करहुसेतुउतरैकटक ॥ २ ॥ सुनहुभाजुकुलके

तु ॥ जांबवंतकरजोरिकह ॥ नाथनामतबसेतु ॥ नर
भवसागरतरहिं ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यहलघुजलधित

रतकतिवारा ॥ अससुनिपुनिकहपवनकुमारा ॥ प्रभुप्र-
तापबडवानलभारी ॥ शोषेउप्रथमपयोनिधिबारी ॥ तव

रिपुनारिरुदनजलधारा ॥ भख्यौवहोरिभयोतेहिंरवारा
॥ सुनिअसउक्तिपवनसुतकेरी ॥ बिहंसेरघुपा

नहेरी ॥ जांबवंतबोलेहोभाई ॥ नलनी
नाई ॥ रामप्रतापसुमिरिमनमांही ॥ करहुसेतुप्रयास

छुनाही ॥ बोलिलियेकपिनिकरवहोरी ॥ सकल
विननिएकमोरी ॥ रामचरणपंकजउरधरहु ॥

भालुकपिकरहू॥ धावहुमर्कटबिकटवरूथा॥ आनहुविट
गिरिन्हकेयूथा॥ सुनिकपिभालुचलेकरिहूहा॥ जयरघुबी
रप्रतापसमूहा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अतिउतंगगिरिपादपा॥ ली
लहिलेहिंउठाइ॥ आनिदेहिंनलनीलकहं॥ बिरचहिंसेतुब
नाइ॥ ४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ शैलविशालआनिकपिदेहीं॥ कं
दुकइवनलनीलसोलेहीं॥ देखिसेतुअतिसुंदररचना॥

सिंहपानिधिबोलेबचना॥ परमरम्यउत्तमयहधर
णी॥ महिमाअमितजाइनहिंबरणी॥ करिहौंइहांशंभुथा
पना॥ मोरैहृदयपरमकल्पना॥ सुनिकपीशबहुदूतपठा
ये॥ मुनिवरसकलबोलिलैआये॥ लिंगथापिविधिवतक

॥ शिवसमानप्रियमोहिनदूजा॥ शिवद्रोहीममभा
क्तकहावै॥ सोनरस्वपनेहुमोहिनपावै॥ शंकरबिसुरवभ
क्तिचहमोरी॥ सोनरमूढमंदमतिथोरी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शं
करप्रियममद्रोही॥ शिवद्रोहीममदास॥ तेनरकरहिंकल्प
भरि॥ घोरनरकमहंबास॥ ५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जेरामेश्व

रदरशनकरिहहिं॥ तेननुतजिममधामसिधरिहहिं॥
जोगंगाजलआनिचढाइहिं॥ सोसायुज्यमुक्तिनरपइहीं
॥ भक्तिमोरतेहिंसंकरदेइहिं॥ ममकृतसेतुजोदरशनक
रहिं॥ सोबिनुअमभवसागरतरहीं॥ रामबचनसबकेम
नभाये॥ मुनिवरनिजनिजआश्रमआये॥ गिरिजारघुप

कीयहरीती॥ संततकरहिंप्रणतपरप्रीती॥ बांधेउसे
नीलनलनागर॥ रामकृपाजशभएउउजागर॥ बूडहिं-
आनहिबोरहिजेइ॥ भयेउपलबोहितसमतेई॥ महिमाक
छुनजलधिकीबरणी॥ पाहनगुणनकपिनकीकरणी॥
॥ दोहा ॥ ॥ श्रीरघुबीरप्रतापते॥ सिंधुतरेपाषाण॥ तेमति

मंदजेरामतजि॥ भजहिजाइप्रभुआन॥६॥ ॥चौपाई॥ ॥
 बांधिसेतुअतिसुदृढबनाव॥ देखिहुपानिधिकैमनभावा॥
 चलीसैनकलुबरणिनजाई॥ गर्जहिंमर्कटभटसमुदाई॥से
 तुबंधुदिगचहिरघुराई॥चितवहुपालुसिंधुवहताई॥देख
 नकहप्रभुकुणाकंदा॥प्रगटभयेसबजलचरवृंदा॥मक
 रनक्रनानाऊपव्याला॥शतयोजनतनुपरमंविशाला॥ऐसे
 एकहिंतिनजेरवाहीं॥एकनिकेडरएकपराहीं॥प्रभुहिविलो
 कहिंटरहिंनटारे॥मनहर्षितसबभएसरवारे॥तिनकीओ
 टनदेखियवारी॥मगनभयेहरिरूपनिहारी॥चलाकटक
 प्रभुआयसुपाई॥कोकहिशककपिदलविपुलाई॥॥दो
 हा॥ ॥सेतुबंधभइभीरअति॥कपिनभपंथउडाहिं॥अ
 परजलचरन्हिउपरचदि॥बिलुअमपारहिंजाहीं॥७॥
 ॥चौपाई॥ ॥असकौतुकविलोकिहोंभाई॥विहंसिचले
 कपालुरघुराई॥सैनसहितउतरेरघुवीरा॥कहिनजाइक
 लुचूथपभीरा॥सिंधुपारप्रभुडैराकीन्हा॥सकलकपिनक
 हेंआयसुदीन्हा॥खहुजाइफलमूलसुहाये॥सुनतभालु
 कपिजहंतहंधाये॥सबतरुफरेरामहितलागी॥ऋतुअरु
 कुऋतुकालगतित्यागी॥खाहिंमधुरफलविटपहिंलीवहिं
 ॥लंकासंसुखशिरवरचलावहिं॥जहंकहुंफिरतनिशान
 रपावहिं॥घेरिसकलबहुनाचनचावहिं॥दशननकाटि
 नासिकाकाना॥कहिप्रभुसुखशदेहिंतवजाना॥जिनक
 रनासाकाननिपाना॥तेइंरावणहिंकहीसबवाता॥सुन
 तअवणवारिधिवंधाना॥दशमुखबोलिउठाअकुलाना
 ॥॥दोहा॥ ॥बांधंउजलनिधिनीरनिधि॥जलधिंसिंधु
 वार्गश॥सुन्यतोयनिधिपंकनिधि॥उदधिपयांधिनदोश

॥८॥ ॥चौपाई॥ ॥निजब्याकुलतासमुज्ज्वली॥बिहं
 सिचलागृहकरिभयभोरी॥मंदोदरीसुनामभुआये॥कौ
 तुकहींपाथोधिबंधाये॥करगहिंपतिहिंभवननिजआनी
 ॥बोलीपरममनोहरबाणी॥चरणनाइशिरअंचलरोपा
 सुनहुबचनप्रियपरिहरिकोपा॥नाथबैरकीजैताहीसों
 ॥बुधिवलजीतिशकियजाहीसों॥तुमरघुपतिहिंअंतर
 कैसा॥खलुखद्योतहिंदिनकरजैसा॥अतिबलमधुकैठ
 भजिनमारे॥महाबीरदितिसुतसंहारे॥जैइबलिबांधि
 सहसभुजमारा॥सोअवतरेउहरणमहिभारा॥तासुबि
 रोधनकीजियनाथा॥कालकर्मगुणजिनकैहाथा॥॥दो
 हा॥ ॥रामहिंसोंपहुजानकी॥नाइकमलपदमाथ॥सु
 तकहंराजसमर्पिबन॥जाइभजहुननाथ॥६॥ ॥चौपा
 ई॥ ॥नाथदीनदयालुरघुराई॥वाघउसंसुखगयेनखा
 ई॥चाहियकरणसोसबकरबीते॥तुमसरअसरचरा
 चरजीते॥बेदकहहिअसनीतिदशानन॥चौथेपनजाई
 यनूपकानन॥तासुभजनकीजैतहंभर्ता॥जोकर्तापाल
 कसंहर्ता॥सोइरघुबीरप्रणतअनुरांगी॥भजहुनाथम
 मतामदत्यागी॥सुनिवरयतनकरहिंजेहिंलगी॥भूप
 राजतजिहोहिबिरागी॥सोइकोशलाधीशरघुराया॥आ
 येकरणतोहिपरदाया॥जोप्रियमानहुमोरशिरवावन॥
 सुयशहोइतिहूपुरअतिपावन॥॥दोहा॥ ॥असकहि
 लोचनबारिभरि॥गहिपदकंपितगात॥नाथभजहुनरघु
 नाथपद॥समअहिबातनजात॥१०॥ ॥चौपाई॥ ॥तव
 रावणमथसुताउठाई॥कहैलागुखलनिजप्रभुताई॥सु
 नतैप्रियामृषाभयमाना॥जगयोधाकोमोहिसमाना॥ब

रुणकुबेरपवनयमकाला॥ भुजबलजिते सकलदिगपाला॥
 देवदलुजनर सब बश मोरे॥ कवन हेतु उपजा भय तोरे॥ नाना
 विध तेहि कहि समुजाई॥ सभा बहोरि बैठु सो जाई॥ मंदोदरी
 हृदय अस जाना॥ काल बिबश उपजा अभिमाना॥ सभाज
 ई मन्त्रिन तेहि बूजा॥ करिय कवन बिधिरि सुसन जूजा॥ कह
 हिं सचिव सलु निशिचरनाहा॥ बार बार प्रभु पूछहु काहा॥
 कहहु कवन भय करिय बिचारा॥ नर कपि भालु आहार ह
 मारा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सब के बचन कान कर॥ कह प्रहस्त क
 र जोरि॥ नीति बिरोधन करिय प्रभु॥ मन्त्रिन भति अति थो
 रि॥ ११॥ ॥ चौपाई॥ ॥ कह हिं सचिव सब ठकुर सोहाती
 ॥ नाथन पूर आइ हि भांती॥ बारि धिलां धि एक कपि आ
 वा॥ तासु चरित मन महं सब गावा॥ सुधानर हितु महित ब
 काहु॥ जारत नगरन कस धरि ब्याहु॥ सुनत नीक आगे दु
 रूपावा॥ सचिवन्ह असमत प्रभु हिं सुनावा॥ जो बारीश
 बंधा एउहेला॥ उत्तरे कपि दल सहित सबेला॥ सो जनम
 लुज रवा वहम भाई॥ बचन कहहु सब गाल फुलाई॥ सुनिम
 म बचन तात अति आदर॥ जनि मन गुणहु मोहि करिकाद
 र॥ प्रिय बाणी जे सुन हिं जे कह हिं॥ ऐसे जगनि कांय नर अ
 हहीं॥ बचन पर महित सुनत कठोरे॥ कह हिं सुन हिं ते नर
 प्रभु थोरे॥ प्रथम वशीठ पठाइ यनीती॥ सीताहि देखि करि
 य सुनि प्रीती॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाइ पाई फिरि जाहि जौं॥ तौ न
 बटाइ यरार॥ नाहितो संसुख समर महं॥ नाथ करिय हठ
 मार॥ १२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ यह मत जौ मानहु प्रभु मोरा॥ उ
 भय प्रकार सुयश जगतोरा॥ सुत सन कह दशकंठरि साई
 ॥ असमनि शठ तोहि कवन शिरवांई॥ अब ही ते उर संशय

होई॥ वेणुमूलसुतभएउधसोई॥ सुनिपितुगिरापरुशआ
तिघोरा॥ चलाभवनकहिबचनकठोरा॥ हितमतितोहिनल
गतकैसे॥ कालबिबशकहंभेषजजैसे॥ संध्यासमयजानि
दशशीसा॥ भवनचलानिरखतभुजबोशा॥ लंकाशिरवर
रुचिरआगारा॥ अतिविचित्रतहंहोईअरवारा॥ बैठजाइ
तेहिमंदिररावण॥ लागेकिन्नरगुणगणगावन॥ बाजैताल
परवाउजबीणा॥ नृत्यकरहिंअपसराप्रवीणा॥ ॥दोहा॥
॥ ॥ सुनासीरशतसरिससो॥ संततकरैबिलास॥ परम-
प्रचलरिपुशीसपर॥ तदपिनमनकलुआस॥ १३॥ ॥ चौ-
पाई॥ ॥ इहांसुवेलशीलरघुबीरा॥ उत्तरेसेनसहितअ-
तिभीरा॥ शैलअंगएकसंदरदेषी॥ परमरम्यममशुभ्रवि-
शेषी॥ तहत रुकिशलयसुमनसहाये॥ लक्ष्मणरचिनि-
जहाथडसाये॥ तापररुचिरमृदुलमृगछाला॥ तेहिआ-
सनआसीनकृपाला॥ प्रभुछतशीसकपीशउत्संगा॥ वा-
मदहिनदिशिचापनिषंगा॥ दुहुकरकमलसुधारतवाना॥
कहलंकेशमंत्रिलगिकाना॥ बडभागीअंगदहनुमाना॥ च-
रणकमलचांपतविधिनाना॥ प्रभुपाछेलक्ष्मणबीरासन॥
कटिनिषगकरधरेशरासन॥ ॥दोहा॥ ॥ इहिविधकृपा
रूपगुण॥ धामरामआसीन॥ धन्यसोनरयहध्यानरत॥
रहतसदालवलीन॥ १४॥ पूरबदिशाबिलोकिप्रभु॥ देखा
उदितमयंक॥ कहेउसबहिंदेखहुशशिहिं॥ मृगपतिसरिस
अशंक॥ १५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ पूरबदिशिगिरिगुहानिहा-
सी॥ परमप्रतापतेजबलराशी॥ मत्त । ३ ।
शशिकेसरीगगनवनचारी॥ बिषरेनमसुकुताहलतारा॥
॥ कहप्रभुशशिमहमेचकताई॥

कहहु कहानिजनिजमति भाई ॥ कहसु ग्रीवसुनहुरधुराई ॥
 ॥ शशिमहं प्रगटभूमिकीजाई ॥ मारेउराहु शशिहिकहको
 ई ॥ उरमहं परीश्यामतासोई ॥ कोउ कहविधिरतिमुखकी
 न्हा ॥ सारभागशशिकरहरिलीन्हा ॥ छिद्रसो प्रगटइंदुर
 माहीं ॥ तेहिमगदेरिखनभपरिछाहीं ॥ गहप्रभुगरलबंधु
 शशिकेरा ॥ अतिप्रियतमउरदीन्हबसेरा ॥ विषसंयुतक
 रनिकरपसारी ॥ जारतविरहबंतनरनारी ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ कहहुचुमंतसुनहुप्रभु ॥ शशितुह्यारप्रियदास ॥ तवमू
 रतितेहिउरबसत ॥ सोइश्यामताभास ॥ १६ ॥ पवनतनय
 केबचनसुनि ॥ बिहंसैरामसुजान ॥ दक्षिणदिशाबिलोकि
 प्रभु ॥ बोलेकृपानिधान ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखुबिभी
 षणदक्षिणआशा ॥ धनधमंडदामिनीबिलासा ॥ मधुरम
 धुरगर्जतनभयोरां ॥ होइदृष्टिजनउपलकठोरा ॥ कहहिं
 बिभीषणसुनहुकृपाला ॥ होइनतडितनवारिदमाला ॥
 लंकाशिरवरऊपरआगारा ॥ तहदंदशकंधरकेरआरवा
 रा ॥ छत्रमेघडंबरसिरधारी ॥ सोप्रभुजलदधटाअतिका
 री ॥ मंदोदरीअवणताटंका ॥ सोप्रभुजनुदामिनीदमंका ॥
 बाजहिंतालमृदंगअनूपा ॥ सोइरवमधुरसुनहुस्वरभूषा
 ॥ प्रभुसुसुकानससुखिअभिमाना ॥ चापचटाइवाणसंधा
 ना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ छत्रमुकुटताटंकसब ॥ हतेएकहीवाण
 ॥ सबकेदेरवतमहिगिरं ॥ मर्मनकोऊजान ॥ १८ ॥ यहकौतु
 ककरिरामशर ॥ प्रविशेआइनिधंग ॥ रावणसभासशंक
 सब ॥ देखिमहारसभंग ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कंपनभूमि
 नमरुनविशंपा ॥ अरुशरुनकोउनयनदेपा ॥ सोचहिंसव
 निजन्दयविचारा ॥ अशगुणभयउभयंकरभारी ॥ रावण

दीरवसभाभयपाई॥विहंसिबचनकहयुक्तिबनाई॥शीस
 गिरेंसंततशभजाही॥मुकुटगिरेंकसअशगुणताही॥श
 यनकरहुनिजनिजगृहजाई॥गवनेभवनसकलशिरना
 ई॥मंदोदरीशोचउरबसेऊ॥जबतेअवणफूलमहिरवसे
 ऊ॥सजलनयनकहयुगकरजोरी॥सुनहुप्राणपतिविन
 तीमोरी॥कांतरामविरोधपरिहरहु॥जानिमनुजजनि
 हठउरधरहु॥॥दोहा॥॥विश्वरूपरघुवंशमणि॥क
 रहुबचनबिश्वास॥लोककल्पनाबेदकह॥अंगअंगप्रति
 जास॥२०॥॥चौपाई॥॥पदपातालशीसअजधामा॥
 अपरलोकअंगअंगबिश्वामा॥भृकुटिविलासभयंकर
 काला॥नयनदिवाकरकचधनमाला॥जासुप्राणअश्वि
 नीकुमारा॥निशिअरुदिवसनिमेषअपारा॥अवणदिशा
 दशबेदबरवानी॥मारुतश्वासनिगमनिजबाणी॥अधर
 लोभयमदशनकराला॥मायाहासबाहुदिगपाला॥अन
 नअनलअंबुपतिजीहा॥उतपतिपालनप्रलयसमीहा॥
 रोमराजिअष्टादशभारा॥अस्थिशैलसरितानसजारा॥
 उदरउदधिअधगोजातना॥जगमयप्रभुकीबहुकल्पना
 ॥॥दोहा॥॥अहंकारशिवबुद्धिअज॥मनशशिवित्त
 महान॥मनुजवाससचराचर॥रूपराशिभगवान॥२१॥अ
 सविचारिसक्तुप्राणपति॥प्रभुसनबैरबिहाइ॥प्रीतिकरहु
 रघुबीरपद॥ममअहिबातनजाइ॥२२॥॥चौपाई॥॥
 विहंसानारिबचनसुनिकाना॥अहोमोहमहिमाबलवाना
 ॥नारिसुभावसत्यकविकहई॥अवगुणआठसदाउरर
 हई॥साहसअनृतचपलतामाया॥भयअबिवेकअशोच
 अदाया॥रिपूकररूपसकलतैंगावा॥अतिविशालभयमो

हिस्सनावा॥ सो सब प्रिया सहज बश मोरे॥ समुजि
 द अच तोरे॥ जाने उ प्रिया तोरि चतुराई॥ यह भिस्स कहें हु-
 मोरि प्रभुताई॥ तब बत कही गूढ मृगलोचनि॥ समुजत सु-
 ख दस्तनत भय मोचनि॥ मंदोदरि मन महं यह ठयऊ॥ प्रि-
 य हि काल बश मति भ्रम मयऊ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुविध
 जल्पेसि सकल निशि॥ प्रात भये दशकंध॥ सहज अ संक-
 सोलंक पति॥ सभाग यो मद अंध॥ २३॥ ॥ सौरठा ॥ ॥
 फूलै फरै न वेत॥ यद्यपि सुधावर षे जल द॥ मूर खह दय न
 चेत॥ जो गुरु मिलहि विरंचि शत॥ २४॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मंत्रि
 न सहित दशानन॥ चढे उधौर हर जाइ॥ शुक सारन कह
 राज सब॥ देखहु दल समुदाई॥ २५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ यह-
 जो सिंह नाद किल काई॥ तरु बरस स समान उचाई॥ सहस्र
 कोटि शत संकुसमाना॥ एहि के संग बानर परिमाना॥ रण
 अजीत अरु सहज अशंका॥ नांद सुने कां पै गढ लंका॥ अ-
 गि अकाश वन चरलंगूरा॥ जनु अतु पाव सधनु न भफूरा॥
 विश्व कर्मा के सत अभिमानी॥ इन सांगर बांधे उ अनुमानी॥
 ॥ वसहिता म्रगिरि कंदर माहा॥ गोदावरी विमल जल पाही
 ॥ अति बल आगे धां वहि बीरा॥ इन पर कृपा करहिं रघु बी-
 रा॥ इन के पर सकिये गिरि शीला॥ जल मे तरहिना मन लनी
 ला॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पद्म अठराह कपिकटक॥ चले इन के भु-
 ज छांह॥ अपने हाथ सुपुष्प लै॥ रघु पति पूजी वांह॥ २६॥
 ॥ चौपाई॥ ॥ यह जो आवत अचल समाना॥ चौदह ता-
 रऊ च परमाना॥ वास पुलिंदा के तट करई॥ अबु दऊ पर य-
 ह संचरई॥ रक्त कमल के सर सम देहा॥ जनु आकाश सं-
 ध्या कर मेहा॥ हंतै मेदिनी पृष्ठ भ्रमाई॥ लंका सो हचि ते ज-

नुरवाई ॥ नारास अन्न बालिको जायो ॥ अति जु आर रघुपति
 मन मायो ॥ मन मे जपै राम करनाऊं ॥ निशि दिन ये कर यह सु
 भाऊ ॥ करै बज्र बास बकर मंगा ॥ उदया चल कहं लेइ उत सें
 गा ॥ सैना पति यह सब के आगे ॥ रघुपति कृपा करत बड भा
 गे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पांच भुमि जो चापहि ॥ पन्नग होहि अका
 ज ॥ पांच पद्म वानर लिये ॥ यह अंगद युवराज ॥ २७ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ यह जो श्वेत लसै तु नुरे पा ॥ जंतु रूपे कर भृंग सु
 वेषा ॥ दीर्घ केश दारुण भुज दंडा ॥ पाय चपल पूर्व ग बुद्धि प्र
 चंडा ॥ बास करै जल निधि के तीरा ॥ पावन करै गोमती स्त
 नीरा ॥ नृप सखी व केर अधिकारी ॥ सब लब्ध हय हर चैं स
 बारी ॥ बल अरु बुद्धि न इन सम आना ॥ इन कर पुषी रथ
 जग जाना ॥ जेहि दिन जन मे उबल अधिकारि ॥ चंदे उगग
 न शशि देखि ललाई ॥ चंद्रहि धरे गगन उछरेहु ॥ सतरि
 जो जन ते पुनि फिरेउ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मरकट कोटि पचा
 श सैं ॥ रहै सर्वदा साथ ॥ काल हुतै रण ने जु जै ॥ कुसुदना
 म कपि नाथ ॥ २८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यह देखहु जो घटा सो
 हाई ॥ मानो भर भादों बहु ताई ॥ आगे पाछे दश दिशि धा
 वहि ॥ शिला भृंग तरु तोरत आवहि ॥ सहस नाग बल अ
 कुसमाना ॥ सप्त पद्म इन कर परमाना ॥ ये ऋक्ष पकाशी
 के बासी ॥ अजर अजित अचल अविनाशी ॥ तीक्ष्ण दं
 त नखा सुध धारी ॥ गहि मारहि गज दंत उपासी ॥ इन ऋक्ष
 न कर यूथ अपारा ॥ धूम केतु यह पालन हारा ॥ इन्ह कर
 ज्येष्ठ बंधु जो बवंता ॥ जिहि के बल कर अह हिन अंता ॥
 तीनि लोक सो जूजै पारै ॥ सकट परै सत्मे रुखारै ॥
 शंकन मदातीरा ॥ बज्र समान अभेद शरीरा ॥ ॥ दोहा ॥

राजाकरयहमेंतरी॥ रघुपतिकेप्रियदास॥ कालहुवेजूँ
समर॥ नेकनलेइउश्वास॥ २६॥ ॥ चौपाई॥ ॥

हुयहयूथअपारा॥ पीतवरणहोइगएउपहारा॥ बालअ
रुणरविकिरणसछूटी॥ कुंकुममाटदिशाजनुफूटी॥ चौ
विसअर्बुदइनकरयूहा॥ सहसबृंदसौकोटिसमूहा॥ शि
लाभृंगजेआगेपरही॥ पायनमींडिकिरकिराकरही॥ कंच
नगिरिकंदरकेवासी॥ इनकरयूथनाथअबिनाशी॥ अति
बलवासवकरहितकारी॥ सखासुकंठकेरशुभकारी॥ पा
नकरैगंगाकरनीरा॥ पर्वतभृंगसमानशरीरा॥ क्षणक्षण-
सिंहनादजोहोई॥ यहगरजतआवनहैसोई॥ ॥ दोहा॥
॥ यशतिहुगंडगलितगज॥ बलकरनाहिनअंत॥ यहक-
पिराजाकेसरी॥ जिहिकरसुतहनुमंत॥ ३०॥ ॥ चौपाई॥
॥ घटाएकआवनहैजूटी॥ जनुमधुसिंधुबलैनिशिफूटी॥
भूमिआकाशअचलअवसाने॥ उत्तरतैजनुसलभउडाने
॥ यहिमहयूथनाथजोअहई॥ अतिबलराजाकेसंगरह
ई॥ कपिकेरूपअनलअबिनासी॥ येदोउपारिपत्रकेवा
सी॥ अतिस्फंदरअरुसमरविपक्षी॥ महावीरदोऊगवय
गवाक्षी॥ पीवहितुंगभद्रकरनीरा॥ मर्दनगंधमादनदोऊ
वीरा॥ सातिसदृशनागबलजाही॥ इनमहएककहोमैता
ही॥ भेरीनादसिंहकरठाना॥ विक्रमशादूलअनुमाना॥
॥ दोहा॥ ॥ देवनमंजसकरपति॥ तेजनमेजसभानु॥

पनसनामयहवानर॥ अतिबलनीतिनिधानु॥ ३१॥

॥ चौपाई॥ ॥ यहजोकमलपत्रसमदेहा॥ जनुकैलासभृं
गकीरहा॥ लंचनमधुपिंगलअतिलोण॥ कामरूपचितव
नचहुंकोण॥ लंकामेंदलंगूरअवाइ॥ गर्जनआवबज्ज-

कीनाई ॥ स्फुरपतिसंग युद्ध कह गयऊ ॥ तब ते कामरूप यह
 भयऊ ॥ एहि सो बासब सो जु मित्राई ॥ ता ते यह देवन को भा
 ई ॥ सहस्र कोटि कपि एहि के संग ॥ राते पीत श्वेत बहुरंगा ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ गिरिवर लंघत आवही ॥ चलत उडावै रेणु ॥ त
 रणि तेज यह रुंधेउ ॥ तारा तनय रूपेणु ॥ ३२ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ यह कपि को देखत नु फेरा ॥ जनु सपक्ष उड चलेउ सुमे
 रा ॥ एक बार लंका एहि जारी ॥ पुनि गर्जत अवत एहि पारी ॥
 जिहि दिन गर्भ अंजनी जायो ॥ बाल अरु नलील न कह धा
 यो ॥ जो जननीन सहस उडि गयउ ॥ उदया चल ऊपर व्हे ग
 ऊ ॥ सब देव न्ह मिलि अस्तुति कीन्हा ॥ तब रबि छांडि पवन
 सुत दीन्हा ॥ कामरूप अतुलित बल येही ॥ काल दंड कुलि
 श सम देही ॥ बेगवंत जस गरुड उडाही ॥ बुद्धिवंत दूसर अ
 सनाही ॥ बिद्या पटन भानु पहजां ही ॥ उलटे गति रबि संग
 उडाही ॥ नाक नाग नर पुर गति करी ॥ महा अबधित पतेज
 पुरारी ॥ बारि धिलांघेउ गोपद जैसे ॥ यह कपी शसन जूऊ ब
 कैसे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेज तरणि इब पावक ॥ पवन ते बेग अ
 पार ॥ कंधलिये दोउ बंधुकों ॥ श्रीरघुवंश कुमार ॥ ३३ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ अत सीवरण कुसुमत नुरे पा ॥ पुरुष पुराण
 धरे नर वेषा ॥ मत्त गजेंद्र भुं ड भुज दंडा ॥ धनुष बाण असि
 धरणि मचंडा ॥ उर बिशाल अति उन्नत कंधर ॥ कंबुकंठ
 रेषा प्रसन्न वर ॥ सुख छबि की उपमा कवि जो हैं ॥ शशिस
 रोज सम कहें न सो हैं ॥ दशन पांति की कांति कहें को ॥ लल
 त मनः पटन रहिलैं है को ॥ देखत अधरन कां अरुणाई ॥
 बिंबा फल बंधु कल जाई ॥ शुक तुंड हि नाशिका लजावें ॥
 थके सक बिनाहि पटन रावें ॥ शीर्ष जटा के सुकुट बनाये ॥

भालविशालतिलकअतिभाये॥ दक्षिणदिशिलक्ष्मणबल
 वीरा॥ रामबाहुअरुप्राणसमीरा॥ ॥ दोहा॥ ॥ वामभाग
 विभीषण॥ सिरअभिषेकाराज॥ बीजमंत्रसबजानही॥
 अवकसकरहिअकाज॥ ३४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ अवदेख
 हुयहसैनाआई॥ जसभरभादोंकीमेघवाई॥ रक्तपीतअ
 रुश्वेतशीआहा॥ शिलाभृंगतरुवरकीछाहा॥ कन्याएक
 ब्रह्मउपजाई॥ नैनभूरिअरुरूपलोणाई॥ वालिभायदि
 नकरबलदीन्हा॥ अतुजानैवासवरतिकीन्हा॥ जातकज
 मेलवीरदोउजाये॥ देवअंशवानरहोयआये॥ किष्किंधा
 पुरिइनकरअस्थाना॥ देवसरिसमधुवनउद्याना॥ अ-
 प्यमूकइनकरविआमा॥ चातुर्मास्यवसेजहंरामा॥ वाली
 ज्येष्ठरामरणमारा॥ यहिंकराजतिलकप्रभुसारा॥ तारा
 तासुपाटकीराणी॥ जिहिंकरसुतअंगदअभिमानी॥ स
 हसशंकुकरअबुंदएका॥ अबुंदसहसकीचंदविशेका॥
 सहसचंदजोहोइअमाना॥ महापद्मतेहिंकरपरमाना॥
 ऐसेपद्मअठारहसाजा॥ विग्रहबदेउरामकेकाजा॥ वी
 रवेषअरुनयनविशाला॥ कंबुकंठमोतिनकीमाला॥
 ॥ दोहा॥ ॥ हस्तीसाठिसहस्रबल॥ सदाधर्मकीसींव॥ अ-
 तछत्रशिरशोभित॥ यहराजासुग्रीव॥ ३५॥ इहिविधस
 कलदेखाएउ॥ शारनकपिदलचूह॥ गणैनरावणकाल
 वश॥ अतिशयगर्वसमूह॥ ३६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ इहांप्र
 तजागेरघुराई॥ पृच्छामतसबसचिवबुलाई॥ कहहुवैगि
 काकारियउपाई॥ जांववंतकहपदशिरनाई॥ सुनुसर्व
 जसकलउरवासी॥ बुद्धिबलतेजधर्मगुणगसी॥ मंत्रक
 नननिजमतिअनुसारा॥ दूतपठाइयवालिकुमारा॥ नाक

मंत्रसबके मनमाना ॥ अंगदसनकह रूपानिधाना ॥ बालि
तनयबुधिवलगुणधामा ॥ लंकाजाहुतातममकामा ॥ बहु
तबुजाइतुमहिकाकहउ ॥ परमचतुरमैजानतअहउ ॥ का
जहमारतासहितहोई ॥ रिपुसनकरहुवतकहीसोई ॥
सीरठा ॥ ॥ प्रभुआज्ञाधरिशीस ॥ चरणबंदिअंगदकहे
उ ॥ सोइगुणसागरईश ॥ रामरुपाजापरकरहू ॥ ३७ ॥ स्व
यंसिंहसबकाज ॥ नाथमोहिआदरदयउ ॥ असविचारि
युवराज ॥ तनुपुलकितहर्षितहिपेउ ॥ ३८ ॥ ॥ चौपाई ॥
बंदिचरणउरधरिप्रभुताई ॥ अंगदचलेउसबहिशिरना
ई ॥ प्रभुप्रतापउरसहजअशंका ॥ रणबांकुराबालिसक्तव
का ॥ पुरफेटतरावणकरबेठा ॥ रवेलतरहासोइहोइगइभेंटा
॥ बातहिंबातकर्षबदिआई ॥ युगलअतुलबलअरुतरु
णाई ॥ तेहिअंगदकहंलातउवाई ॥ गहिपदपटकेउभूमिभ
माई ॥ निशिचरनिकरदेंरिवभटभारी ॥ जहतहंचलेनश
कहिंपुकारी ॥ एकएकसनमर्मनकहहीं ॥ समुजितास
बधचुपहोइरहीं ॥ भयउकोलाहलनगरमजारी ॥ आवाक
पिलंकजैइजारी ॥ अबधोंकहाकरहिंकरतारा ॥ अतिसभी
तसबकरहिंबिचारा ॥ बिनुपूछेमगुदेहिंबताई ॥ जिहिंचि
तवहिंसोजाइसरवाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गएउसभादरबा
रतब ॥ समिरिरामपदकंज ॥ सिंहठबनिइतउतचितै ॥ धी
रबीरबलपुंज ॥ ३९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तुरितनिशाचरएक
पठावा ॥ समाचाररावणहिजनावा ॥ स्तनतबचनबोलेउद
शशीशा ॥ आनहुबोलिकहांकरकीशा ॥ आयसुपाइदूतब
हुधायै ॥ कपिकुंजरहिबोलिलैआये ॥ अंगददीस्वदशान
नबैसा ॥ सहितप्राणकज्जलगिरिजैसा ॥ भुजाबिटपशिरभू

गसमाना॥ रोमावलीलतातरुनाना॥ मुखनासिकानयन
 अरुक्कना॥ गिरिकंदराखोहअनुमाना॥ गयउसभामन
 नेकुनसुरा॥ बालितनयअतिबलवांकुरा॥ उठेसभासद
 कपिकहंदेखी॥ रावणउरभाओधविशेषी॥ ॥दोहा॥
 यधामंजगजयूथमहं॥ पंचाननचलिजाय॥ रामप्रतापसं
 भारिउर॥ बैतुसभहिशिरनाय॥ ४०॥ ॥चौपाई॥ ॥कह
 दशकंधकरनतैवंदर॥ मैरघुवीरदूतदशकंधर॥ ममजन
 कहितोहिरहोमिताई॥ तवहितकारणआएउंभाई॥ उत्त-
 मकुलपुलस्त्यकरनाती॥ शिवविरंचिपूजेहुबहुभांती॥ वर
 पायेउकीन्हैउसबकाजा॥ जीतेहुलोकपालसरराजा॥ नृप
 अभिमानमोहवशकिंवा॥ हरिआनेहुसीताजगदंवा॥ अ-
 वशुभकहाकरहुतुममोरा॥ सबअपराधक्षमहिप्रभुतोरा॥
 दशनगहहुतृणकंठकुठारी॥ पुरजनसंगसहितनिजनारी॥
 सादरजनकसुताकरिआगे॥ इहिविधिचलहुसकलभय
 त्यागे॥ ॥दोहा॥ ॥विश्वरूपरघुवंशमणि॥ आहिआहि
 अवमोहि॥ सुनतहिआरतवचनप्रभु॥ अभयकरहिगै-
 तोहि॥ ४१॥ ॥चौपाई॥ ॥रेकपिपोचबोलुसह्यारी॥ मूढ
 नजानसिमोहिसरारी॥ कहुनिजनामजनककरभाई॥ के-
 हिनातेमानियेमिताई॥ अंगदनामबालिकरदेठा॥ तासोक
 बहूँभइतोहिभेंटा॥ अंगदवचनसुनतसकुचाना॥ रहैंवा-
 लिवानरमेंजाना॥ अंगदतेहिबालिकरबालक॥ उपजेहु
 वंशअनलकुलयालक॥ गर्भनरवसेहुवृथातुमजाए॥ नि-
 जमुखनापसदूतकहाए॥ अवकहंकुशलबालिकहंअह-
 ई॥ बिदंसिबचनअंगदअसकहई॥ दिनदशगएबालि
 पहजाई॥ पूछेहुकुशलसखाउरनाई॥ रामविरोधकुशल

जशहोई॥सोसबतुमहिंसनाइहिंसाई॥सनुशठभेदहोइ
मनजाके॥श्रीरघुवीरहृदयनहिताके॥॥दोहा॥॥हमकु
लपालकसत्यतुम॥कुलपालकदशशीश॥अंधोबधिरन
कहाहिंअस॥अवणनयनतोहिबीश॥४२॥॥चौपाई॥
शिवबिरंचिसरमुनिसमुदाई॥चाहतजासुचरणसेवका
ई॥तासुदूतहोइहमकुलबोरा॥ऐसीमि ६
॥सुनिकठोरबाणीकपिकेरी॥कहतदशानननयनतरैरी
॥खलतबचनकठिनमेंसहऊं॥नीतिधर्मसबजानतअ
हऊं॥कहकपिधर्मशीलतातोरी॥हमहुसनाकृतपरतीय
चोरी॥देखेहुनयनदूतरखवारी॥बूडिनमरहुधर्मवतधा
री॥नाककानबिनुभगिनीनिहारी॥क्षमाकीन्हतुमधर्मबि
चारी॥धर्मशीलतातबजगजागी॥पावादरशहमहुंबड-
भागी॥॥दोहा॥॥जनिजल्पसिजडजंतुकपि॥शठबि
लोकुममबाहु॥लोकपालबलबिपुलशशि॥असनहेतुजि
मिराहु॥४३॥पुनिनभशरममकरनिकर॥करकमलनप
रवास॥शोभितभएउरामलइव॥शंभुसहितकैलास॥
॥४४॥॥चौपाई॥॥तुहारेकटकमांऊसनुअंगद॥सो
सनभिरहिकवनयोधावद॥तबप्रभुनारिबिरहबलहीना
॥अनुजतासुदुरवदुखितमलीना॥तुमसुग्रीवकुलद्रुम
दोऊ॥अनुजहमारभीरुअतिसोऊ॥जांबवंतमंत्रिअति
गूढा॥सोकिमिहोइसमरआरूढा॥शिल्पकर्मजानतन-
लनीला॥हैंकपि एकमहाबलशीला॥आवाप्रथमनगरजें
हिंजाय॥सुनिहंसिबोलेउबालिकुमारा॥सत्यबचनकह
निशिचरनाहा॥सांचहंकीशकीन्हपुरदाहा॥रावणनग
रअल्पकपिदहई॥सुनिअसबचनसत्यकोकहई॥जो

अतिसुभदसराहेहुरावण॥सोसुग्रीवकेरलधुधावन॥च
 लेबहुतसोवीरनहोई॥पठवारववरिलेनहमसोई॥॥दोहा
 ॥सत्यनगरकपिजारेउ॥बिनुप्रभुआचसुपाई॥फिरि
 नगएउसुग्रीवपहं॥तेहिमयरहेउलुकाइ॥४५॥सत्यकह
 सिदशकंठसब॥मोहिनसुनेकछुकोह॥केरोउनहमरेक
 टकअस॥तुमसनलरतजोसोह॥४६॥प्रीतिबिरोधसमा
 नसन॥करियनीतिअसिआहि॥जौभृगुपतिबधमेडुक
 हि॥भलोकहिकोताहि॥४७॥यद्यपिलघुतारामकहं॥तो
 हिबधेबडदोष॥तदपिकठिनदशकंठसुनु॥क्षत्रिजातिक
 ररोष॥४८॥हंसिबोलेउदशमौलितब॥कपिकरबडगु
 णएक॥जौप्रतिपालीतासुहित॥करैउपाइअनेक॥४९
 ॥चौपाई॥॥धन्यकीशजोनिजप्रभुकाजा॥जहंतहंन
 चहिंपरिहरिलाजा॥नाचिकूदिकरिलोगरिजाई॥पतिहि
 तकरहिंधर्मनिपुणाई॥अंगदस्वामिभक्ततबजाती॥प्रभु
 गुणकसनकहसिएहिभांती॥मैगुणगाहकपरमसुजाना
 ॥तबकदुबचनकरोनहिकाना॥कहकपितबगुणगाहक
 ताई॥सत्यपवनसुतमोहिसुनाई॥वनविध्वंसिसुतब-
 धिपुरजारा॥तदपिनतेहिकलुकृतअपकारा॥सोइविच
 रितबप्रकृतिसुहाई॥दशकंधरमैकीन्हूदीठाई॥देरवेउ
 आइजोकलुकपिभाया॥तुहरेलाजनरोपनमारवा॥
 दोहा॥॥बक्रउक्तिधनुवचनशर॥हृदयदहेउरिपुकीश
 ॥प्रतिउत्तरसनसिन्हमनहुं॥कादनभठदशशीशा॥५०॥
 चौपाई॥॥जौअसमतिपितुरवायेहुकीशा॥कहिअस-
 वचनहंसादशशीशा॥पितुहिंस्वाइस्वातेउअवतोही॥अ
 वहिंसमुझिपराकलुमोही॥बालिविमलयशभाजनजानी॥

हतौन तोहि अथम अभिमानी ॥ कहूं रावण रावण जग के ते ॥
 मैनि जश्रवण सुने सुनि ते ते ॥ रावण एक महा बल गर्वी ॥ जी
 तेन चले उ सरा सरा सर्वा ॥ सागर उत्तरि पार साग एउ ॥ नारि
 बृद सो देखत भएउ ॥ तिन सन कह सि पतिन पहि जाहू ॥ कहूं
 एक आ एउ निशि चरनाहू ॥ तब पतिन हि जीति संग्रामा ॥ लै
 जै हौं त हन कौनि ज धामा ॥ सुनत बचन एक जर ठरि सानी ॥
 धाइ चरण गहि गगन उडानी ॥ गई दूरि धरि धरि ऊक जोरा ॥
 डारे सि सिंधु मध्य अति जोरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गएउ अगाध
 अचेत होइ ॥ मरै न विप्र प्रसाद ॥ सावधान उठि चले पुनि ॥ हि
 ॥ ५१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकरावण के कहै उक
 हानी ॥ जीतई चले उ शशी अभिमानी ॥ गएउ निकट अति
 शीतन भरेउ ॥ कंपित गात्र बिकल भय फिरेउ ॥ बलि जीतन
 एक गएउ पताला ॥ राखा बांधि शिशु नय हशाला ॥ खेलेहि
 बालक मारहि जाई ॥ दया लागि बल दीन्ह छुडाई ॥ एक ब
 होरि सहस भुज देखा ॥ धाइ धराजनु जंतु वि शेरवा ॥ कौतु
 क लागि भवन लै आवा ॥ सो पुलस्त्य सुनि जाइ छुडावा ॥
 बहु प्रकार सुनि ताहि सिरवावा ॥ गएउ सो पुर परिलान आ
 वा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एक कहत मोहि सकुच अति ॥ रहा वा
 के कांख ॥ इन्ह महं रावण तैं कवन ॥ सत्य कहहु तजि
 ॥ ५२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनु शठ सोइ रावण बल शीला ॥
 हर गिरि जा जाना सुभुज लीला ॥ जानउ मापति जा सुभूराई
 ॥ पूजे जेहिं शिर समन चढाई ॥ शिर सरोजनि जकर नहु उता
 ॥ पूजेउ अमित बार त्रिपुरारी ॥ भुज विक्रम जानहि दिग
 ॥ शठ अजहु जिन के उर शाला ॥ जानहि दिग्गज उर
 कठिनाई ॥ जब जब भिरेउ जाइ बरि आई ॥ जिन के दशन

करालनफूटे॥ उरलागतमूलकइवटूटे॥ जासुचलतडोलत
 इमिधरणी॥ चढतमत्तगजजिमिलघुतरणी॥ सोइरावण
 जगबिदितप्रतापी॥ सुनेनअवणअलीकप्रलापी॥ ॥ दो
 हा॥ ॥ तेहिरावणकहलघुकहसि॥ नरकरकरसिबरवा
 न॥ रेकपिचर्वरखर्वखल॥ तबनजानअवजान॥ ५३॥
 ॥ चौपाई॥ ॥ सुनिअंगदसकोपकहवाणी॥ बोलुसंभारि
 अधमअभिमानी॥ सहसबाहुभुजगहनअपारा॥ दह
 नअनलकुलजासुकुठारा॥ जासुपरशुसागररवरधारा
 ॥ बूडेनृपअगणितबहुवारा॥ तासुगर्वजेहिदेखतभागा॥
 सोनरकिसिदशकंठअभागा॥ राममनुजकसरेशठवंगा॥
 ॥ धन्वीकामनदीसुनिगंगा॥ पशुसुरधेनुअल्पतरुसूषा॥
 अन्नदानअरुरसकिपीयूषा॥ बैनतेयरवगअहिसहसा
 नन॥ विंतामणिकीउपलदशानन॥ सनुमतिमंदलोकवै
 कुंठा॥ लाभकिरघुपतिभक्तिअकुंठा॥ ॥ दोहा॥ ॥ सेन
 सहिततवमानमधि॥ वनउजारिपुरजारि॥ कसरेशठह
 नुमानकपि॥ गयउजीतवसुतमारि॥ ५४॥ ॥ चौपाई॥
 ॥ सनुरावणपरिहरिचतुराई॥ भजसिनरूपासिंधुरघु
 राई॥ जौरखलभयेसिरामकरदोही॥ ब्रह्मरुद्रशंकरारि
 नतोही॥ मूढमृयाजनिमारसिगाला॥ रामवैरहोइहिअस
 हला॥ तवशिरनिकरकपिनकेआगे॥ परिहैधरणीराम
 शरलागे॥ तेतवशिरकंदुकइवनाना॥ खेलहिंभालुकीश
 चौंगाना॥ जचहिंसमरकोपहिंरघुनायक॥ छुटिहिअतिक
 गालबहुशायक॥ तबकिचलिहिअसगालतुहारा॥ अस
 विचारिभजरामउदारा॥ सनतवचनरावणपरजरा॥ जर
 तमहानलमदधृतपरा॥ ॥ दोहा॥ ॥ कुंभकर्णसमबंधु-

मम॥ सतप्रसिद्धशक्रारि॥ ममबलप्रवणसुनेसिशठ॥ जि
 तेउचराचरजारि॥ ५५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ शठशारवामृगजो
 रिसहाई॥ बांध्यासिंधुअहैप्रभुताई॥ लांघहिखगअनेक-
 बारीशा॥ शूरनहोहिनेसुनुशठकीशा॥ ममभुजसागरज
 लबलपूरा॥ जहबूडेसरनरबहुशूरा॥ बीशपयोधिअगा
 धअपारा॥ कोअसंबीरजोपावहिपारा॥ दिक्पालनपर
 नीरभरावा॥ भूपसयशखलमोहिसुनावा॥ जौपैसमर
 सुभटतबनाया॥ पुनिपुनिकहसिजासुगुणगाथा॥ तौ
 वशीठपठबाकेहिकाजा॥ रिपुसनप्रीतिकरतनहिलाजा
 हरगिरिमथननिरखिममबाहु॥ पुनिशठकपिनिजप्र-
 भुहिसराहु॥ ॥ दोहा॥ ॥ शूरकवनरावणसरिस॥ स्व
 करकादिनिजशीश॥ हुतेअनलमहंबारबहु॥ हर्षितसा
 रिवगिरीश॥ ५६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जरतविलोकेउंजब
 हिंकपाला॥ विधिकेलिरवेअंकनिजभाला॥ नरकेकर-
 आपनबधवांची॥ हंसेउज्जानिविधिगिराअसांची॥ सो
 मनसमुजिआसनहिमोरै॥ लिरवाविरंचिजरठमतिभोरै॥
 आनबीरबलशठममआगे॥ पुनिपुनिकहसिलाजपरि
 त्यागे॥ कहअंगदसलज्जजगमांहीं॥ रावणतीहिसमा
 नकोउनाहीं॥ लाजवंततबसहजसुभाऊ॥ निजगुणनि
 जसुखकहसिनकाऊ॥ शिरअरुशीलकथाचितरहही॥
 तातेबारबीशतेकहही॥ सोभुजबलराखेउउरघाली॥
 जीतेउसहसबाहुबलिबाली॥ सुनुमतिमंददेहीअबश
 रा॥ फाटिसीसनहोइहिशूरा॥ इंद्रजालिकहंकहियनवी
 ॥ काटेनिजकरसकलशरीरा॥ ॥ दोहा॥ ॥ जरहिपा
 भारवहहिंरवरहंद॥ तेनहिशूरकहावहीं॥

समुज्जिदेखुमतिमंद॥५७॥ ॥चौपाई॥ ॥अबजनिबात
 बढावरवलकरहीं॥सनुममबचनमानपरिहरहीं॥दशमु
 खमैनबशीठीआयेहु॥असबिचारिरघुबीरपठायेऊ॥
 बारबारअसकहेकृपाला॥नहिगजारियशबधेभृगाला॥
 मनमहंसमुज्जिबचनप्रभुकेरे॥सहेउकठोरबचनशरतेरे
 ॥नाहितकरिसुरवभंजनतोरा॥लैंजातौसीनहिबरजोरा॥
 जानातबबलअधमसरारी॥भूनेहरिआनिहिपरनारी॥
 तैनिशिचरपतिगर्वबहुता॥मैरघुपतिसेवककरदूता॥जौ
 नरामअपमानहिडरउं॥तोहिदेखतअसकौतुककरउं॥
 ॥दोहा॥ ॥तोहिपटकिमहिसेनहत॥
 ऊं॥तवयुवतिन्हसमेतशठ॥जनकसुतहिलैंजाउं॥५८॥
 ॥चौपाई॥ ॥जौअसकरउंतदपिनबडाई॥सुयेबधे
 कछुनहिंमनुशाई॥कौलकामबशरूपणविसूदा॥अतिद
 रिहअयशीअतिबूदा॥सदारोगबशसंततक्रोधी॥
 बिसुरवभुतिसंतविरोधी॥तनुपोषकनिंदकअघरवानी॥
 जीवतशवसमचौदहप्राणी॥असबिचारिरवलबधौंनतो
 ही॥अबजनिरिसिउपजावसिमोही॥सुनिसकोपकह
 निशिचरनाथा॥अधरदशनडसिमींजतहाथा॥रेकपि
 अधममरणअबचहसी॥छोटेबदनवानबडकहसी॥क
 हुजल्पसिशठबुधिवलजाके॥बलप्रतापबुधि
 के॥ ॥दोहा॥ ॥अगुणअमानबिचारितेहिं॥पीतार्द
 न्दवनवास॥सोदुरवअरुयुवतीविरह॥पुनिनिशिदिन
 ममआस॥५९॥ ॥जिनकेबलकरगर्वनोहि॥ऐसेमनुजअ
 नेक॥खादिनिशाचरदिवसनिशि॥मूढसमुज्जजितेक॥
 ॥६०॥ ॥चौपाई॥ ॥जबनेहिंकीन्हरामकरनिंदा॥क्रोध

वंततवभयेउ कपींदा ॥ हरिहरनिंदासुनहिजेकाना ॥ होइ
पापगोघातसमाना ॥ कटकटाइकपिकुंजरभारी ॥ ह्रीभुज-
दंडतमकिमहिमारी ॥ डोलतधरणि सभासदखसे ॥ चले
भागिभयमारुतग्रसे ॥ गिरतदशाननउठेउसंभारी ॥ भूतल
परेउमुकुटषटचारी ॥ कछुतेहिंलैनिजशिरनिसमारे ॥ क
छुअंगदप्रभुपासपवारे ॥ आवतमुकुटदेषिकपिभागो ॥ दि
नहिलूकपरनविधिलागे ॥ केरावणकरिकोपचलाए ॥ कु
लिशचारिआवतअतिधाए ॥ कहप्रभुहंसिजि
हु ॥ लूकनअशनितेनहिराहु ॥ एकरीटदशकंधरकेरे ॥
आवतबालितनयकेप्रेरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तरकिपवनस
तकरगृहे ॥ आनिधरेप्रभुपाश ॥ कौतुकदेखहिंभालुक
पि ॥ दिनकरसरिसप्रकाश ॥ ६१ ॥ उहांकोपिदशानन
बसनकहतरिसाय ॥ धरहु कपिहिं धरिमारऊं ॥ सनिअं
गदसुसकाय ॥ ६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उहाकहनदशकंध
रिसाई ॥ धरिमारहु कपिभागिनजाई ॥ इहिविधबेगिसु-
भटसबधावहु ॥ खाहुभालुकपिजहंजहंपावहु ॥
नकरहुमहिजाई ॥ जिअतधरहुतपसीदोउभाई ॥ पुनि
सकोपबोलेउयुवराजा ॥ गालबजावततोहिनलाजा

॥ बलबिलोकिविदरा

॥ ॥ ऐतियचौरकुमारगगामी ॥ खलमलराशिमंदमतिका
सन्निपातजल्पसिद्धुर्बादा ॥ भएसिकालवशखलम
नुजादा ॥ याकोफलपावहुगेआगे ॥ बानरभालुचपेटनला
॥ राममनुजबोलतअसबाए

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सोनरकदशकंध ॥

उजेहि एक शर ॥ बीशहु लोचन अंध ॥ धुकत बज न्यकुजाति
जड ॥ ६३ ॥ तब शोणित की प्यास ॥ तृषित राम शायक निकर
॥ तजे उंतोहिते हि त्रास ॥ कहु जल्पसि निशि चर अधम ॥ ६४ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ मै तब दशन तोरि वेलायक ॥ आएस मोहि
नदी नहर घुनायक ॥ असिरिसि होत दशौ मुख तोरी ॥ लंक
गहिस सुद्रम ह बोरों ॥ गूलर फल समान तब लंका ॥ बसहि
मध्य जनु जंतु अशंका ॥ मै बानर फल खात न वारा ॥ आ
उस दीन्हन राम उदारा ॥ युक्तिसून तरावण सुस काई ॥ मू
दशिर वेसि कहं बहुत जुगुआई ॥ बालिक बहु अस गाल न मारा
॥ मिलित पसिन तै भए शिल वारा ॥ सांचेहु मैल बार भुजवी
हा ॥ जौ न उपा रौं तब दश जीहा ॥ राम प्रताप समुझि कपि को
पा ॥ सभा माऊ प्रण करि पद रोपा ॥ जौ मम चरण शक सिश
ठहारी ॥ फिरहि राम सीता मै हारी ॥ सनहु सभट सब कह
दशशीशा ॥ पद गहि धरणि पछारहु कीशा ॥ इंद्र जीत आ
दिक बलवाना ॥ हर्षि उठे जहंत हं भटनाना ॥ ऊपटहिं करि ब
ल विपुल उपाई ॥ पदन टरै बैठहिं शिर नाई ॥ पुनि उठि ऊपट
हिं सर आरती ॥ टरहीन कीश चरण यहि भांती ॥ पुरुषं कु
योगी जिमि उरगारी ॥ मोह बिटपना शकहिं उपासी ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ भूमि न छाडत कपि चरण ॥ देखत रिपु मद भाग ॥
कोटि बिघन जिमि संत कहं ॥ तदपि नीति न हित्याग ॥ ६५ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ कपि बल देखि सकल हिय हारे ॥ उठा आ
पु सुवराज प्रचारे ॥ महन चरण कह बालिकु मारा ॥ मम पद
गहे न तोर उवारा ॥ गहसिन राम चरण शठ जाई ॥ सनत कि
गमन अति सकुचाई ॥ भयं उने जहत श्री सब गई ॥ मध्य
दिवस जिमि शशि सोई ॥ सिंहासन बेंटा शिर नाई ॥ या

नहसंपतिसकलगंचाई ॥ जगदाधारप्रणतपतिरामा ॥ ता
 स्तबिसुरवकिमिलहविश्रामा ॥ उमारामकरभृकुटिविलास
 ॥ होईविश्वपुनिपावैनाशा ॥ तृणतेंकुलिशकुलीशतृणकर
 हीं ॥ तास्तदूतप्रणकहुंकिमिटरहीं ॥ पुनिकपिकहानीति
 विधिनाना ॥ मानतनाहिंकालनिअराना ॥ रिपुमदमधि-
 यशस्तनायेऊ ॥ यहकपिचलाबालिनृपजायेऊ ॥ स
 बहीसुरवकाकरोंचडाई ॥ हतेंहोंखेतखेलाइखेलाई ॥ अथ
 महितास्तनयनकपिमारा ॥ सोस्तनिरावणभयेउदुरवा
 रा ॥ यातुधानअंगदबलदेखी ॥ भयव्याकुलसबहृदयवि
 शेयी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रिपुबलहर्षिहर्षिहिय ॥ बालितनअ
 बलपुंज ॥ सजलनयनतनुपुलकअति ॥ गहेरामपदकंज
 ॥ ६६ ॥ सांजजानिदशकंधतब ॥ भवनगयेउबिलखाइ ॥
 अनेकविध ॥ बहुरिकहाससुजाई ॥ ६७ ॥ ॥ चौ
 ॥ ॥ कांतसमुझिमनतजहुकुमतिहीं ॥ सोहनसमर
 रघुपतिहीं ॥ रामअनुजलघुरेखखचाई ॥ सोनहि
 लांघेहुअसमनुसाई ॥ प्रियतेहितेंजीतवसंग्रामा ॥ जाके
 दूतकेअसकामा ॥ कौतुकसिंधुलांघितबलंका ॥ आणउ
 कपिकेसरीअशंका ॥ रखवारेहतिबिपिनउजारा ॥ देख
 तनुमहिअक्षयजिन्हमारा ॥ जारनगरजेंइकीन्हेंसिहारा
 ॥ कहांरहाबलगर्बतुहारा ॥ अबपतिवृथागालजनिमार
 ॥ मोरकहाकछुहृदयविचारहु ॥ पतिरघुपतिहिंनृपति
 जनिजानहु ॥ अगजगनाथअतुलबलमानहु ॥ बाणप्रता
 जानमारीचा ॥ तास्तकहानहिमानेहुनीचा ॥ जनकसभा
 अगणितमहिपाला ॥ रहेउतहांतुमगर्बविशाला ॥ भंजिध
 नृपजानकीबिवाही ॥ तवसंग्रामजितेहुनहिताही ॥ करप

तिस्तजानाबलघोरा॥ राखजिअतआरिवगहिफेरा॥ भू
र्षनखाकीगतितुमदेखी॥ तदपिहृदयनहिलाजविशेषी॥

॥ दोहा ॥ ॥ बधिविराधरवरदूषणहिं॥ लीलाहतेउक
बंध॥ बालिएकशरमारेउ॥ तेहिनरकहृदशकंध॥ ६८॥
चौपाई॥ ॥ जेहिजलनाथबंधयेउहेला॥ उतरेउकपिद
लसहितसबेला॥ कारुणीकदिनकरकुलकेतू॥ दूतपग
एउतबहितहेतू॥ सभामांऊजेइतबमदमथा॥ करिबरू
थमहंभृगपतियथा॥ अंगदहनुमतअनुचरजाके॥ रण
बांकुरेबोरअतिबांके॥ तेहिकहंप्रियपुनिपुनिनरकह
हू॥ सुधामानममतामदबहहू॥ अहहकान्तकृतरामवि
रोधा॥ कालबिबशमनहोयनबोधा॥ कालदंडगहिका
हुनमारा॥ हरैधर्मबलबुद्धिविचारा॥ निकटकालजेहिंआ
वतसांई॥ तेहिभ्रमहोइतुस्मारिहिंनई॥ ॥ दोहा ॥ ॥
दुइस्ततमारेउनगरजरा॥ अजहूंपरतियदेहु॥ कृपासिं
धुरधुवीरभजि॥ नाथबिमलयशलेहु॥ ६९॥ ॥ चौपाई

॥ नारिबचनसुनिविशिषसमाना॥ सभागएउउठि-
होतबिहाना॥ बैठाजाइसिंहासनफूली॥ अतिअभिमान
आसगाभूली॥ इहांरामअंगदहिबुलावा॥ आइचरणपं
कजशिरनावा॥ अतिआदरसमीपबैठारी॥ बोलेबिहंसि
कृपालुरवरासी॥ बालितनयअतिकौतुकमोही॥ तातस-
त्यकहेपूछोंतोही॥ रावणयातुधानकुलदीका॥ भुजबल
अतुलजासजगलीका॥ तासमुकुटतुमचारिचलाए॥
कहहुतातकवनेविधिपाए॥ कहाबालिस्ततस्तनहुरवरा
सी॥ मुकुटनहोइभूषणगुणचारी॥ सामदामअरुदंडवि
भेदा॥ नृपउरबसहिनाथकहवेदा॥ नीतिधर्मकेचरणसु

हाए॥ असजियजानिनाथपहंआए॥ ॥दोहा॥ ॥धर्म
 हीनप्रभुपदविमुख॥ कालबिबशदशशीश॥ आएगुणत
 जिरावणहिं॥ सुनहुकोशलाधीश॥ ७०॥ परमचतुरताअ
 वणसुनि॥ बिहंसेरामउदार॥ समाचारतबसबकहे॥ गद
 केबालिकुमार॥ ७१॥ ॥चौपाई॥ ॥रिपुकेसमाचारज
 वपाए॥ रामसचिवसबनिकटबुलाए॥ लंकाबंकाचारिहु
 आरा॥ केहिविधिलागियकरहुबिचारा॥ तबकपीशक्रु
 वभीषण॥ सुमिरिहृदयदिनकरकुलभूषण॥ करिविचा
 ४ ॥ चारीअनीककपिकटकबनावा॥ यथा
 योगसेनापतिकीन्हे॥ यूथपसकलबोलितिन्हलीन्हे॥ प्रभु
 ५ ॥ ॥सिंहनादकरिसबकपिधाए॥ ग
 र्जहिंतर्जहिंभालुकपीशा॥ जयरघुबीरकोशलाधीशा॥
 जानतपरमदुर्गातिलंका॥ प्रभुप्रतापकपिचलेअशंका॥
 करिचहुंदिशघेरी॥ सुखहिंनिसानबजावहिंभेरी
 ॥ ॥दोहा॥ ॥जयतिरामभ्रातासहित॥ जयकपीशसुयी
 ॥ गर्जहिंकेहरिनादकपि॥ भालुमहाबलसीव॥ ७२॥
 चौपाई॥ ॥लंकाभएउकोलाहलभारी॥ सुनेउदशाननअ
 तहहकारी॥ देखहुवानरकेरिदिवाई॥ बिहंसिनिशाचर
 ॥ ॥आयेकोशकालकेपेरे॥ क्षधावंतरजनीचरमे
 ॥ असकहिअट्टहासशठकीन्हा॥ गृहबैठेअहारविधिदी
 न्हा॥ सुभटसकलचारिहुदिशिजाहू॥ धरिधरिभालुकीश
 सबकाहू॥ उमारावणहिअसप्रभिमाना॥ जिमिटिटिहीरव
 तउताना॥ चलेनिशाचरआयसुमागी॥ गहिकरभिं
 सांगी॥ तोमरसुझरपरिघप्रचंडा॥ भूलरुपाण
 खंडा॥ जिमिअरुणोपलनिकरनिहारी॥

खगशंठमांसअहारी॥चौचभंगदुखतिनहिंससूजा॥ति
 धायेमनुजादअबूजा॥॥दोहा॥॥नानासुधशरचापध
 ॥यातुधानवरवीर॥कोटकंगूरनचढिगये॥कोटिकोटिरण
 धीर॥७३॥॥चौपाई॥॥कोटकंगूरनसोहहिंकैसे॥मेरु
 भुंगपरजनुघनबैसे॥बाजहिंदोलनिसानबुजाऊ॥सुनिसु
 निस्तभटनकेमनचाऊ॥बाजहिंभेरिनफीरिअधारा॥सु
 निकादरउरहोइदराश॥देखिनजाइकपिनकैठडा॥अति
 विशालतनुभालुस्तभडा॥कटकदाईकोटिनभटगर्जहिं॥
 दशननओंठकाटिअतितर्जहिं॥उतरावणउतरामदोहा
 ई॥जयतिजयतिकरिपरिलराई॥निशिचरशिरवरसमूह
 दहावहिं॥कूदिधरहिंकपिफेरिचलावहिं॥॥छंद॥॥
 धरिकुधरखंडप्रचंडमर्कटभालुगदपरडारहीं॥ऊपटहिंच
 रणगदियटकमहिमहंवारवारप्रचारहीं॥१॥अतितरु
 एतरलप्रतापतर्जहितमकिंगदपरचढिगये॥कपिभालु
 चढिमंदिरनजहंतहंरामचशगावतभये॥॥दोहा॥॥
 एकएकनिशिचरगदि॥सुनिकपिचलेपराइ॥ऊपरआपु
 नतरअसुर॥गिरहिंधरगियहंआइ॥७४॥॥चौपाई॥
 रामप्रतापप्रबलकपियुधा॥मर्दहिंनिशिचरस्तभटवरू
 धा॥चंदेदुर्गसुनिजहंतहंवानर॥जयरघुवीरप्रतापदिवा
 कर॥चलेनिशान्नगनिकरपराई॥प्रबलपवनजिमिघन
 समुदाई॥हाहाकारअयेउपुरभारी॥रोवहिंआरतवाल
 कनारी॥सदमितदेईरावणहिंगारी॥राजकरतजेइमृ
 त्युकहंकारी॥निजदलबिचलस्तनाजवकाना॥फिरेस्तभट
 लंकेशरिशाना॥जोरएनिमुखफिरामैंजाना॥नेहिमारि
 वींकचलहुवाणा॥सर्वस्वस्ताइभोगकरिनाना॥समर

भूमिभादुर्लभप्राणा॥ उग्रवचनसर्प
 वीरकरिक्रोधलजाने॥ सत्सुरवमरणवीरकीशोभा॥ तबति
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुआयुधधरिधरि
 सभट॥ भिरहिं प्रचारि प्रचारि॥ कीये व्याकुल भालुकपि॥
 नमारि॥ ७५॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भयआतुरा
 ॥ यद्यपि उमाजीति है आगे॥ कोउ कह कह
 ॥ कहं न लनील दुविद बलवन्ता॥ निज दलवि
 ॥ पश्चिम द्वार रहा बलवाना॥ मेघनाद
 तहं करै लराई॥ दूटन द्वार परम कठिनाई॥ पवन तनय मन
 भा अति क्रोधा॥ गर्जे उग्रबल काल समयोधा॥ कूदिलंकग
 ॥ गहिगिरि मेघनाद परधावा॥ भजे उरथसा
 ॥ तासु हृदय महं मारे उंलाता॥ दूसर सुत विक
 तेहि जाना॥ स्यंदन घालि तुरत घर आना॥ ॥ दोहा ॥
 अंगद सुने उकि पवन सुत॥ गढ परगए उअकेल॥ समरवा
 कुरा बालि सुत॥ तरकि चढे उकरि खेल॥ ७६॥ ॥ चौपाई ॥
 युद्ध विरुद्ध कुद्ध दोउ बंदर॥ राम प्रताप सुमिरि उर अंतर
 रावण भवन चढे दोउ धाई॥ करहि कोशलाधीश दोहाई॥
 शसहित गहि भवन दहावा॥ देखि निशाचर अति भय
 नारि बृंद कर पीटहि छाती॥ अब हौ कपि आये उत
 ॥ कपिलीला करि सवहिं डरावहिं॥ राम चंद्र कर सु
 वहिं॥ पुन कर गहि कंचन कर खंभा॥ करहि रण
 पात अरंभा॥ गर्जि परेरि पु कटक मजारी॥ लागे मर्दन
 भारी॥ काहु हिलात चपेटन केहु॥ भजे हुन राम
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एक एक सनम दीहि॥ तोरि
 ॥ रावण आगे परहिंते॥ जनु फूटहि दधिकुं

७७॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ महामहामुखि आज्ञे पावहिं ॥ ते प
 दगहि प्रभु पास चलावहिं ॥ कहहिं विभीषण तिन के नामा ॥
 देहिरामतिन्ह कौनिज धामा ॥ खल मनुजा दहि जा भिषभो
 गी ॥ पावहिं गति जो चाचत योगी ॥ उमारा मसूदु चित करुणा
 कर ॥ वयर भाव मोहि सुमिरत निशिचर ॥ देहिं परम गति
 असजिय जानी ॥ को कृपालु अस अहै भवानी ॥ जे अस प्र
 भु न भजहिं भ्रम त्यागी ॥ ते मति मंद सो परम अभागी ॥ अं
 गद अरु हनु मंत प्रवेशा ॥ कीन्ह दुर्ग अस कहि अवधेशा
 ॥ लंका महं कपि सोहिं कैसे ॥ मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसे ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ मुज बल रिपु दल दलि मलेउ ॥ देखि दिवस न
 को अंत ॥ कूदियुगल विगत अमहु ॥ आये जहं भगवंत ॥ ७८
 ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभु पद कमल शीस तिन नाये ॥ देखि सु
 भटरघु पति मन भाये ॥ राम कृपा करि युगल निहारे ॥ भये
 विगत अम परम सुखारे ॥ गये जानि अंगद हनु माना ॥ फि
 रे भालु मर्कट भटनाना ॥ यातु धान प्रदोष बल पाई ॥ धाये
 करि दश शीश दोहाई ॥ निशिचर अनी देखि कपि फिरे ॥ क
 टकटा इजहंत हं भट फिरे ॥ दोउ दल भिरहिं प्रबल प्रचारी ॥
 लरहिं सुभट नहिं मानहिं हारी ॥ वीर निशाचर सब अति
 कारे ॥ नाना वरण वली सुरव भारे ॥ सबल युगल दल सब
 अनियोधा ॥ विविध प्रकार लरहि करि कोधा ॥ ग्राह्य दश
 रद पयोदघनेरे ॥ लरत मनहुं मारुत के पेरे ॥ अनी अकंपन
 अरु अतिकाया ॥ विचलत संनर्कान तिन माया ॥ भएउनि
 मिष महं अति अंधि आरा ॥ दृष्टि होइ रुधिरोपल साग ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ देखि निबिड तम दस हृदिशा ॥ कपि दल भएउरव
 भार ॥ एकादि एक न देख जव ॥ जहं नहं करहि पुकार ॥ ७९ ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ यह सब मर्म बिभीषण जाना ॥ लिये बोलि अंग
 दहनु माना ॥ समाचार सब कहि समुझाये ॥ सुनत को पिक
 पि कुंजर धाये ॥ पुनि कृपालु हंसि चाप चढ़ावा ॥ पावक
 सपदि चलावा ॥ भयउ प्रकाशकत हुंत मना हीं ॥ ज्ञान उदय
 जिमि संशय जा हीं ॥ भालु बली मुख पाइ प्रकाशा ॥ धा
 पि विगत अमत्रासा ॥ हचू मान अंग दर एगाजे ॥ हांक सुनतर
 जनी चर भाजे ॥ भागत भटपटक हिं धरि धरणी ॥ करहिं भालुक
 पि अदभुत करणी ॥ गहि पद डारहिं सागर मा हीं ॥ मकर आह
 ऊष धरि धरि स्वां ही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कछु धायल कछु रण परे
 ॥ कछु गद चले पराई ॥ गर्जहि मर्कट भालु भट ॥ रिपु दल बल
 बिचलाई ॥ ८० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ निशा जानिक पि चारि उअ
 नी ॥ आये सब जहं कोशल धनी ॥ राम कृपा करि चितये जब ही
 ॥ भये विगत अमवानर तब ही ॥ उहां दशानन सचिब हंकारे ॥
 सब सनक हेसि सुभट जे मारे ॥ आधा कटक कापन संहारा ॥
 कहहु बेगिका करिय बिचारा ॥ माल्यवंत एक जर ठनि शांवर
 ॥ रावण मातु पिता मंत्री वर ॥ बोला बचन नीति अति पावन ॥
 तात सुनहु कछु मोर शिरावन ॥ जब ते तुम सीता हरि आनी ॥
 अस गुण होहि न जात बरवानी ॥ वेद पुराण जास्य शगावा ॥
 राम विमुख सुख काहुन पावा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हिरण्याक्ष आ
 ता सहित ॥ मधु कैटभ बलवान ॥ जें इमारे सोइ अबत रेउ ॥
 कृपा सिंधु भगवान ॥ ८१ ॥ काल रूप खल बल दहन ॥ गुणाग
 ॥ शिव विरंचि जेंहिं सेवहिं ॥ तासों कबन विरोध
 ॥ ८२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परि हरि बैर देहु वैदेही ॥ भजहु कृ
 पानिधि परम सने ही ॥ ताके बचन बाण सम लागे ॥
 ॥ बुड भएसि न तुमार तों तो ही ॥

वजनिवदनदेपावसिमीही ॥ नेंइअपनेमनअसअनुमाना ॥
 ॥ बंधैचहतएहि कृपानिधाना ॥ सोउठिगएउकहतदुबोदा ॥
 तवसकोपबोलेंउघननादा ॥ कौतुकप्रातदेखियेहुमोरा ॥
 रिहोंबहुतकहतहोंथोरा ॥ सुनिस्तवचनभरोसाआवा ॥
 प्रीतिसमेतनिकटबैठावा ॥ करतविचारभयउभितुसारा ॥
 लगेभालुकपिचारिहुद्वारा ॥ कोपिकपिनहुगंमगदयेरा ॥ न
 गरकोलाहलभयउघनेरो ॥ विविधअस्त्रगहिनिशिचरधा
 ये ॥ गदतेपर्वतशिरवरदहाये ॥ ॥ छंदा ॥ ॥ दाहेमहीधरशि
 खरकोटिनबिबिधविधिगोलाचले ॥ घहरातजिमिपविपात
 गर्जतप्रलयकेजनुवादले ॥ ३ ॥ मर्कटविकटभटजुटतलरत
 कटततेतनुजर्जरभये ॥ गहिशीलतेइगदपरचलावहिंजहं
 सोहतहंनिशिचरहये ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मेघनादसुनिअ
 वणअस ॥ गदपुनिछेकआइ ॥ उत्तरिदुर्गतेवीरवर ॥ सन
 सुरबचलावजाइ ॥ ८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहांकोशलाधीश
 दौउभाता ॥ धन्वीसकललोकविरव्याता ॥ कहंनलनीलदु
 बिदसुग्रीवा ॥ कहंहनुमंतअंगदबलसींवा ॥ कहांविभीष
 णभातादोही ॥ आजुशठहिंदुमारउओही ॥ असकहि
 कटिनचाणसंधाने ॥ अतिशयकोपिअवणलगिताने ॥ शर
 समूहसोछाडैलागा ॥ जनुसपक्षधांवेवहुनागा ॥ जहंतहं
 परतदगियेवानर ॥ सनसुरवहोइनशकततेहिअवसर ॥
 भागैअयव्याकुलकपिकक्षा ॥ विशरीसबहींबुझकीडछा
 ॥ सोकपिभालुनरलमहदेया ॥ कीन्हैसिजेहिनमाणअव
 शेवा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दशदशशरसबमानंसि ॥ परेभूमि
 कपिदीर ॥ सिंहनादकरिगजैतव ॥ मेघनादरणधीर ॥ ८४
 ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखियवनसुतकटकाविहाल ॥ अथर्व

तथावाजनु काला॥ महामही धरतुरतउपारा॥ अतिरिसि
 मेघनाद परडारा॥ आवतदेरिवगयेउनभसोई॥ रथसार
 थीतुरंग सबखाई॥ बारबार प्रचार हनुमाना॥ निकटन
 आवमरमसोजाना॥ रामसभीपगएउघननादा॥ नानाभां
 तिकहतदुर्बादा॥ अरुशरुनबहुआयुधडारे॥ कौतुकहीं
 प्रभुकाटिनिवारे॥ देरिवप्रभावमूढरिवसियाना॥ करैलागु
 मायाविधिनाना॥ जिमिकोउ करैगरुडसनखेला॥ डरपाव
 हिंमहिस्वल्पसपेला॥ ॥ दोहा॥ ॥ जासप्रबलमायावि
 वश॥ शिबविरंचिवडछोट॥ ताहिदेखावैनिशिचर॥ निज
 मायामतिरखोट॥ ८५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ नभचटिबरषै-
 विपुलअंगारा॥ महितेप्रकटहोइजलधारा॥ नानाभांति
 पिशाचपिशान्ची॥ मारुकादुधनिबोलहिंनान्ची॥ कीन्हसि
 दृष्टिरुधिरकचहाडा॥ वर्षैकबहुंउपलबहुअछा॥ वर्षि-
 धूरि कीन्हसिअंधियारा॥ सूजनआवनहाथपसारा॥
 अकुलानेकपिमायादेखे॥ सबकरमरणबनायहले
 खे॥ कौतुकदेरिवरामसुसुकाने॥ भयेसभीतसकलक
 पिजाने॥ एकबाणकाटीसबमाया॥ जिमिदिनकरहर-
 तिमिरनिकाया॥ कृपादृष्टिकपिभालुबिलोके॥ भयेप्रब
 लरणरहहिंनरोके॥ ॥ दोहा॥ ॥ अरुसमांगारामप
 हिं॥ अंगदादिकपिसाथ॥ लक्ष्मणचलेसकोपतब॥ बा
 णशरासनहाथ॥ ८६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जलजनयनउ
 रबाहुविशाला॥ हिमगिरिनिभतनुकछुएकलाला॥ उहां
 दशाननसुभटपठाये॥ नानाअरुनशरुनगहिधाये॥ धू
 धरबिटपआयुधधरिभासी॥ धाएकपिजयरामपुकारी
 ॥ भिरेसकलजोरीसनजोरी॥ इतउतजयइच्छानहिंथो

शी॥ सुष्टिनलातनदांतनकाटहीं॥ कपिगिरिशिलामारिषु
 निडांटहीं॥ मारुमारुधरुधरुमारु॥ शीसतोहिगहिभुजा
 उपाऊ॥ असिध्वनिपूरिरहीनवरखंडा॥ धावहिंजहंतहसं
 डप्रचंडा॥ देरवहिं कौतुकनभसुरचंडा॥ कबहुंकविस्मय
 कबहुंअनंदा॥ ॥ दोहा॥ ॥ रुधिरगाढभरिभरिजम्यो
 ॥ ऊपरधूरिउडाइ॥ जिमिअंगारराशिनिपर॥ मृतकधूमि
 रहिछाड॥ ८७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ घायलबीरविराजहिं कै-
 से॥ कुसमितकिंशुककेतरुजैसे॥ लक्ष्मणमेघनाददोउयो
 घा॥ भिरहिंपरस्परकरिअतिक्रोधा॥ एकहि एकशकैन
 हिंजीती॥ निशिचरछलबलकरैअनीती॥ क्रोधवंततब
 भएउअनंता॥ भंजेउरथसारथितुरंता॥ नानासुधप्रहार
 करिदेखा॥ राक्षसभएउप्राणअवशेषा॥ तेहिअपनेमन-
 असअनुमा॥ संकटभयेहरिहिममप्राणा॥ वीरघातिनी
 छाडेसिसांगी॥ तेजपुंजलक्ष्मणउरलागी॥ मूर्च्छाभईश
 किकेलागै॥ तवचलियेउनिकटभयत्यागे॥ ॥ दोहा॥
 मेघनादसमकोटिशत॥ योधारहेउठाइ॥ जगदाधारअ
 नंतसो॥ उठहिंनचलालजाइ॥ ८८॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सु-
 निगिरिजाक्रोधानलजासू॥ जारैभुवनचारिदिशआभू
 ॥ सकैसंग्रामजीतिकोताही॥ सेवहिस्तरनरअगजगजा
 ही॥ यहकौतुकजानहिंजनसोई॥ जेहिपरकृपारामकी-
 होई॥ संध्याभईफिरीदोउवानी॥ लगेसंभारणनिजनिज
 आनी॥ व्यापकब्रह्मअजितभुवनेश्वर॥ लक्ष्मणकहंदू
 जाकरुणाकर॥ तबलगिलैआयेहनुमाना॥ अलुजदेरिव
 प्रभुअतिदुरवमाना॥ जांबवंतकहबैद्यरूपेणा॥ लंकार
 हपठइयकोउलेना॥ धरिलघुरूपगयेहनुमंता॥ आनेउभ

बनसमेततुरंता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रघुपतिचरणसरोजशि
 ॥ नायउआइसुषेण ॥ कहानामगिरिओषधी ॥ जाहुपवन
 सुतलेन ॥ ८६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामचरणसरसिजउररा
 धी ॥ चलउप्रभंजनसुतबलभाषी ॥ उहांदूतएकमरमजना
 वा ॥ रावणकालनेमिगृहआवा ॥ दशसुरवकहामरमतेइसु
 नेऊ ॥ पुनिपुनिकालनेमिशिरधुनेऊ ॥ देरवतनुमहिंनग
 रजहिंजारा ॥ तासुपंथकोरोकनहारा ॥ भजिरघुपतिहि
 करहुहितअपना ॥ तजहुनाथअबवृथाकल्पना ॥ नील
 कंजतनुसंदरश्यामा ॥ हृदयसारखुलोचनअभिरामा ॥ अ
 हंकारममतामदत्यागू ॥ महामोहनिशिसोबतजागू ॥ का
 लब्यालकरभक्षकजोई ॥ सपनेहुंसमरकिजीतियसोई
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिदशकंठरिसानअति ॥ तेंइमनकी
 न्हबिचार ॥ रामदूतकरमरणभल ॥ यहरवलनतुमोहिमा
 रा ॥ ८७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ असकहिचलारचसिमगमाया
 ॥ सरमंदिरबरबागबनाया ॥ मारुतसुतदेरवाशुभअ
 थम ॥ सुनिहिंबूजिजलपियोजाइअम ॥ राक्षसकपटभे
 सोहा ॥ मायापतिदूतहिंचहमोहा ॥ जाइपवनसुत
 नाएउमाथा ॥ लागाकहनरामगुणगाथा ॥ होतमहारण
 रामरावणहिं ॥ जीतहिंरामनसंशययामहि ॥ इहांभयेमैं
 देरवोंभाई ॥ ज्ञानदृष्टिबलमोहिअधिकार्ई ॥ मांगाजल
 तेंइदीन्हकमंडल ॥ कहकपिनहिअघाउंथोरेजल ॥ स
 रमज्जनकरिआतुरआवहु ॥ दोक्षादेउंज्ञानजेहिपाव
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सरपैठतकपिपदगहा ॥ सकरीतबअ
 न ॥ मारीसोधरिदिव्यतनु ॥ चलीगगनचटियान ॥
 ॥ ८८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कपितबदरशभेइनिष्पापा ॥

दीतातसुनिवर की शापा ॥ सुनिन होइ यह निशि चरघोरा ॥
 मानहु सत्य बचन कपि मोरा ॥ अस कहि गई अपसराज ब
 हीं ॥ निशि चरनिकट गएउ कपित बहीं ॥ कह कपि सुनिगु
 रुदक्षिणालेहू ॥ पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ॥ शिरलंगूर लप्यो
 पछारा ॥ निजतनु प्रकटै सिमरती बारा ॥ रामराम कहि छा
 डै सि प्राणा ॥ सुनि मन हर्षि चले हनु माना ॥ देखी शैल न-
 श्रौषधि चीन्हा ॥ सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥ गहि गि
 रिन भय धावत भएउ ॥ अवध पुरी ऊपर कपि गएउ ॥
 दोहा ॥ ॥ देखा भरत बिशाल अति ॥ निशि चर मन अनुमा
 नि ॥ बीन फर शर तेहि मारेउ ॥ चाप अवण लगितानि ॥ ६२ ॥
 ॥ चौ पाई ॥ ॥ परेउ मूर्छि महिलागत शायक ॥ सुमिरत
 रामराम रघुनाथक ॥ सुनि प्रिय बचन भरत उठि धाये ॥ क
 पिस मोप अति आतुर आये ॥ बिकल बिलोकिकी शउर
 लावा ॥ जागत नहिं बहु भांति जगावा ॥ सुख मलीन तन भ
 एउ दुरवारी ॥ कहत बचन भरिलोचन वारी ॥ जेहि विधिरा
 म बि सुख मोहि कीन्हा ॥ तेहि पुनिय हृदरुण दुरव दीन्हा ॥
 जौं मोरे मन बच अरु काया ॥ प्रीति राम पद कमल अमाया
 ॥ तौ कपि होउ बिगत अम अस्त्र ॥ जौं मो पर रघु पति अनुकू
 ला ॥ बचन सुनत उठि बैठुं कपी शा ॥ कहि जय जयति को
 शलाघी शा ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ लीन्हा कपि हि उर लाइ ॥ पु
 लक गात लोचन सजल ॥ प्रीति न हृदय समाइ ॥ सुमिरि रा
 म रघु कुल निलक ॥ ६३ ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ तान कुशल कहु
 सुख निधान की ॥ सहित अनुज अरु मातु जान की ॥ क
 पिस वचरित समासु वरवाने ॥ भये दुखित मन महं पछि-
 ताने ॥ अहं देव मे कत जग जा एउ ॥ प्रभु के एकौ का जन आ

एउ॥ जानिकुअवसरमनधरिधीरा॥ पुनिकपिसूनबोले
बलवीरा॥ तातगहरुहोइहि तोहिजाता॥ काजनशरहिहोत
प्रभाता॥ चढममशायकशीलसमेता॥ पठबौतोहिजहंकृपा
निकेता॥ सुनिकपिमनउपजाअभिमाना॥ मोरभारचल
हिकिमिबाणा॥ रामप्रतापबिचारिवहोरी॥ बंदिचरणबो
लेउकरजोरी॥ तबप्रतापउरराखिगोसांई॥ जैहों
एकीनाई॥ हर्षिभरततबआयसुदीन्हा॥ पदशिरनाइग
मनकपिकीन्हा॥ ॥ दोहा॥ ॥ ॥ क्षेयकहैं॥ तबप्रतापउर
राखिप्रभु॥ जैहोंनाथतुरंत॥ असकहिंआयसुपाइपद॥
बंदिचलेहनुमंत॥ ॥ छंद॥ ॥ मनहिमनधनधन्यगाव
तपवनतनुनभयथचले॥ धरिध्यानहरिपदकमलहिय
जियजासरघुपतिअतिभले॥ ५॥ जैहिहेतजपतपकर
तकुशासनजटाशिरजूटहैं॥ जयजयसदारघुबीरकी
यहिसत्यअरुसबजूटहैं॥ ६॥ ॥ दोहा॥ ॥ भरतबाहु
बलशीलगुण॥ प्रभुपदप्रीतिअपार॥ जातसराहतमन-



हिंमन॥ पुनिपुनिपवनकुमार॥ ६५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ उहांरा
मलक्ष्मणहिनिहारी॥ बोलेबचनमनुजअनुसारी॥ अईरा
तिभइकपिनहिआवा॥ रामउवाईअनुजउरलावा॥ शकहु
नदुरिवतदेखिमोहिकरु॥ बंधुसदातबमृदुलसुभाऊ॥ गम

हितलागितजेहुपितुमाता॥ सहेउबिपिनहिमआतपवाता
 ॥ सोअतुरागकहाअबभाई॥ उठहुबिलोकिमोरिबिकलाई
 ॥ जौजाननवनबंधुबिछोहू॥ पिताबचननहिंमनतेंउओहू
 ॥ सुतबितनारिभवनपरिवारा॥ होहिंजाहिंजगबारहिंबारा
 ॥ असबिचारिजियजागहुताता॥ मिलहिनजगतसहोदर-
 आता॥ यथापंखविसुरवगअतिदीना॥ मणिबिनुफणिक
 रिदरकरहीना॥ असममजीवनबंधुबिनुतोही॥ जोजडदै
 वजिआवैमोही॥ जैहौंअवधकवनसुरवलाई॥ नारिहेतु
 प्रियबंधुगंवाई॥ बरुअपयशसहतेउजगमाहीं॥ नारिहा
 निविशेषक्षतिनाहीं॥ अवअपलोकशोकसुततोर॥ सहे
 कठोरनिठुरउरमोरा॥ निजजननीकेएककुमारा॥ ताततासु
 तुमप्राणअधारा॥ सौंपेसिमोहितुमहिंगहिपाणी॥ सबवि
 धिसरवदपरमहितजानी॥ उत्तरताहिदैहौंकाजाई॥ उठि
 किनमोहिससुजावहुभाई॥ बहुविधशोचतशोचविमोच
 न॥ अचतसलिलराजोवदललोचन॥ उमाअरवंडएकरधु
 राई॥ नरगतिभक्तिकृपालुदेखाई॥ ॥ सोरठा॥ ॥ प्रभुवि
 लापसुनिकान॥ विकलभयेउवानरनिकर॥ आईगएउह
 तुमान॥ जिमिकरुणामहंबीररस॥ ॥ ६६॥ ॥ चौपाई॥
 हृषिरामभेटेहनुमाना॥ अनिकुतज्ञप्रभुपरमसुजाना॥
 तुरतवैद्यनवकीन्हउपाई॥ उठिवैटेउलक्ष्मणहृपाई॥ हृ
 दयलाईभेटेप्रभुआता॥ हयैसकलभालुकपिब्राना॥ पुनि
 कहिवैद्यनहांपहुंचावा॥ जेहिद्विधनवाहिंताहिलैआवा॥
 यहृत्तांतदशाननसुनेऊ॥ अतिविषादपुनिपुनिशिर-
 धुनेऊ॥ व्याकुलकुंभकर्णपहगएऊ॥ करिवहुयतनजगा
 वनभएऊ॥ जागानिशिचरदेखियकैसा॥ मानहुंकालदे

हृधरि बैसा ॥ कुंभकर्ण पूछा सन्नु भाई ॥ काहेत बसुखर
 हा सुखाई ॥ कथा कही सब तेहि अभिमानी ॥ जेहि प्रकार
 रसीता हरि आनी ॥ तात कपिन निशिचर संहारे ॥ महाम
 हायो धासब मारे ॥ दुर्मुख सररि पुमनुज अहारी ॥ भट
 अतिकाय अकंपन भारी ॥ अपरम होदर आदिक वीरा ॥
 परे समरम हंसवरण धीरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिदशकं
 धर के बचन ॥ कुंभकर्ण बिलखान ॥ जगदंबा हरि अनि
 शठ ॥ अब चाहसि कल्याण ॥ ६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भ
 लन कीन्ह तैं निशिचर नाहा ॥ अब मोहि अनि जगायेहु
 काहा ॥ अजहू तात त्यागू अभिमाना ॥ भजहु राम होइ हि
 कल्याण ॥ हेदशशीशमनुजरघुनाथक ॥ जाके हनुमान
 सेपायक ॥ अहह बंधु तैं कीन्ह कोटाई ॥ प्रथमहि मोहिं सु
 नायेहु आई ॥ कीन्हहु प्रभु विरोध तेहि देवक ॥ शिव विरंचि
 सरजाके सेवक ॥ नारद सुनि मोहि ज्ञानजोकहा ॥ कहते
 उतोहि समय निर्विहा ॥ अब भरि अंक में दुमोहि भाई ॥
 लोचन सुफल करौं मै जाई ॥ श्यामगात सरसी रुहलोच
 न ॥ देखौं जाइता पत्रय मोचन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामरूपगु
 ण समिरि मन ॥ भगन भएउ क्षण एक ॥ रावण पै मागे को
 टिघट ॥ मद अरु महिष अनेक ॥ ६८ ॥ ॥ चौपाई ॥
 महिष खाइ करि मदि रापाना ॥ गर्जेउ बज्जाघात समाना
 ॥ कुंभकर्ण दुर्मद रणरंगा ॥ चलेउ दुर्गात जिसे नन संग ॥
 देखि बिभीषण आगे आएउ ॥ पुनि पद गहिनि जनामस्त
 नाएउ ॥ अनुज उठाइ हृदय तैं हिलावा ॥ रघुपति भक्तजा
 न मन भावा ॥ तात लात मोहि रावण मारा ॥
 तमत्र बिचारा ॥ तेहि गलानि रघुपति पहिं आयेउ ॥ दीन

जानि प्रभुके मन भायेउं ॥ सनु सुत भएउ काल बश रावण ॥
 सो किमि मानै तौर शिरवावन ॥ धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण ॥
 ॥ भय हुतातनि शिचर कुल भूषण ॥ बंधु बंश तैं कीन्ह उजाण ॥
 र ॥ भजे हुराम शोभा सुख सागर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बचन क
 र्म मन कपट तजि ॥ भजे हुतातर घुबीर ॥ जाहुन निज पर
 सूख सोहि ॥ भयेउ काल बश बीर ॥ ६६ ॥ ॥ चौपाई ॥
 बंधु बचन सनि चला विभीषण ॥ आएउ जहं त्रैलोक्य वि
 भूषण ॥ नाथ भूधरा कोर शरीरा ॥ कुंभ करण आवतरण
 धीरा ॥ इतना कपिन सुनाज बकाना ॥ किल किला इधारे
 बलवाना ॥ लियेउ डाइ विटप अरु भूधर ॥ कटकटाइ डार
 हिंता ऊपर ॥ कोटि कोटि गिरि शिखर प्रहारा ॥ डारहिं तेहि
 पर एकहि वारा ॥ सुरेन मन तनु टरै नहि टारे ॥ जिमि जग अ
 क फलन्हि के मारे ॥ तब मारुत सुत सुष्टि काहनेउ ॥ परेउ ध
 रणि व्याकुल शिर धुनेऊ ॥ पुनि उठतैं इमारे उहनु मंता ॥ घु
 रित भूतल परेउ तुरंता ॥ पुनि नल नीलहि अबनि पछारे
 सि ॥ जहंत हं पटिकि पटिकि भट मारे सि ॥ चली बली सुरव
 सेन पराई ॥ अति भय असित न कोउ समुहाई ॥ ॥ दोहा ॥
 अंगदादि कपि मूर्छित ॥ करि समेत सुग्रीव ॥ कांरवदा वि
 कपि राज कहं ॥ चला अमित बल सीव ॥ १०० ॥ ॥ चौपाई ॥

॥ उमा करतर घुपति नर लीला ॥ खेल गरुड जिअहि ग
 एमीला ॥ भूकुटि विलास जो काल हिरवाई ॥ ताहि किऐसी
 सोहल राई ॥ जग पावन कीरनि बिस्तर हीं ॥ गाइ गाई नर
 भवनि धितर हीं ॥ मूर्छा गई मारुत सुजीगा ॥ सुग्रीव हित
 बरवांजन लागा ॥ कपि सजहु कर मूर्छी धीनी ॥ निबुकि गये
 निहि मृत कप्रतीती ॥ कादे सिंदशन नमसिका काना ॥ गर्जिअ

काशचलातेंहिजाना॥गहसिचरणधरिधरणिपछारा॥अ
 तिलाघवपुनिउठितेहिमारा॥पुनिआएउप्रभुपहंबलवा
 ना॥जयतिजयतिजयकृपानिधाना॥नाककानकाटेतेंहि
 जानी॥फिराकोधकरिमानिगलानी॥सहजभीमपुनिबि
 लुश्रुतिनासा॥देखतकपिदलउपजीआसा॥ ॥दोहा॥
 जयजयजयरघुवंशमणि॥धायेकपिकरहूह॥एकहीबा
 रजीतासुपर॥छाडेगिरितरूजूह॥१०१॥ ॥चौपाई॥
 कुंभकर्णरणरंगविरुद्धा॥सनसुखचलाकालजिमिक्रु
 द्हा॥कोटिकोटिकपिधरिधरिखाई॥जनुटिडीगिरिगुहा
 समाई॥कोटिन्हगइशरीरसनमदी॥कोटिनमीजिमिला
 येसिगदी॥सुखनासिकाश्रवणकीबाटा॥निकसिपराही
 भालुकपिठाटा॥रणमदमत्तनिशाचरदपी॥मानहुविश्व
 प्रसनकहंअर्पा॥सुरेसुभटरणफिरहिंनफेरे॥सुजनन
 यनसुनैनहिदेरे॥कुंभकरणकपिफौजबिदारी॥सुनि
 धायेरजनीचरजारी॥देखारामबिकलकटकाई॥रिपु
 अनीकनानाविधिआई॥ ॥दोहा॥ ॥सुनुसौमित्रबि
 भीषण॥सकलसंभारहुसयन॥मैंदेखौखलबलदलहिं॥
 बोलेराजीवनयन॥१०२॥ ॥चौपाई॥ ॥करशरधनुष
 साजिकटिभाथा॥अरिदलदलनचलेरघुनाथा॥प्रथम
 कीन्हप्रभुधनुषटंकोरा॥रिपुदलबधिरभयेसुनिसोरा॥
 धनुसंधानिछांडेशरलक्षा॥कालसर्पजनुचलेसपक्षा॥
 जहतहंबिपुलचलेनाराचा॥लगेकटनभटबिकटपिशाचा
 ॥काटहिचरणउरशिरभुजदंडा॥बहुतेकवीरहोहिंशत
 खेडा॥धूमिधूमिधायलमहिपरहिं॥उठहिंसंभारिसुभट
 फिरिलरहों॥लागतबाणजलदजिमिगाजहिं॥बहुतेकदे

रिवंकठिनशरभाजहिं॥ कंडप्रचंडमुंडविनुधावहिं॥ धरुधा
 रुमारुमारुगोहरावहिं॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्षणमहंप्रभुकेश
 यकन्हि॥ काटेविकटपिशाच॥ पुनिरघुपतिकेतूणमहं
 प्रविशेसवनाराच॥ १०३॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कुंभकर्णमन
 दीखविचारी॥ क्षणमहंहतेनिशाचरभारी॥ भएउक्रोध
 दारुणबलवीरा॥ करिसृगनायकनादगभीरा॥
 धरलियेउउपारी॥ डारेसिजहंमर्कटभटभारी॥ आवत
 देरिवशैलप्रभुभारे॥ शरनिकाटिरजसमकरिडारे॥ पुनि
 धनुतानिकोपिरघुनायक॥ छोडेअतिकरालबहुशायक
 ॥ तनुमहप्रविशिनिसरिशरजाहीं॥ जिमिदामिनिघन
 माहसमाहीं॥ शोणितस्त्रवतसोहतनुकारे॥ जिमिकज्ज
 लंगिरिगेरुपनारे॥ बिकलविलोकिभालुकपिधाए॥ बिहं
 साजबहिंनिकटचलिआए॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गर्जतधायै
 उवेगअति॥ कोटिकोटिगहिकीश॥ महिपटकैगजराज
 इव॥ शपथकरैदशशीश॥ १०४॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भागेभा
 लुकपिनकेयूथा॥ प्रबलपवनजिमिमैघवरूथा॥ चलेभा
 लुकपिभागिभवानी॥ बिकलपुकारतआरतवाणी॥ य
 हनिशिचरदुकालसमअहई॥ कपिकुलदेशपरनअबच
 हई॥ कृपावारिधररामखरासी॥ पाहिपाहिप्रणतारतिहा
 री॥ सकरुणवचनसुनतभगवाना॥ चलेसुधारिशरास
 नवाणा॥ रामसेननिजपाछेंयाली॥ चलेसकोपिमहाब
 लशाली॥ खैंचिधनुपशरशतसंधाने॥ छुटेतीरशरीर
 समाने॥ लागतशरधावारिसभरा॥ कुधरडगमगेउडो
 लतीधरा॥ लीन्हातेंइएकशैलउपादी॥ रघुकुलतिलक
 भुजासांडकाटी॥ धावाचामवाहुगिरिधारी॥ प्रभुसांड

भुजाकाटिमहिदारी॥ काटैभुजसोहैखलकैसे॥ पक्षहीनमं
 दरगिरिजेसे॥ उग्रबिलोकनिप्रभुहिंविलोका॥ मानहुअस
 नचहतत्रैलोका॥ ॥ दोहा॥ ॥ करिविकारअतिघोरख
 ॥ धावाबदनपसारि॥ गमनसकलसरआसअति॥ हाहाक
 रतपुकारि॥ १०५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सभसदेवकरुणानिधि
 जाने॥ अवणपर्यंतशरासनताने॥ छोडेविशिरवनिकरसु
 खभरेऊ॥ तदपिमहाबलभूमिनपरेऊ॥ शरनिभरासुख
 सनसुखधावा॥ कालतूएसजीवजनुआवा॥ तबप्रभु-
 कोपितानशरलीन्हा॥ धरतेंभिन्नतासुशिरकीन्हा॥ सो
 शिरपरादशाननआगे॥ विकलभएउजिमिफणिमणित्य
 गे॥ धरणिधसैंधरधावप्रचंडा॥ तबप्रभुकाटिकीन्हदुइ
 खंडा॥ पर्योभूमिजिमिनभतेंभूधर॥ हेठदाविकपिभालु
 निशाचर॥ तासुतेजप्रभुबदनसमाना॥ सरसुनिसबहि
 अचंभामाना॥ नभहुंदुभिबजावहिंहर्षहिं॥ जयजयक
 रिप्रसूनसरवर्षहिं॥ करिविनतीसरसकलसिधाए॥ त
 बतेहिसमयदेवअपिआए॥ गगनोपरिहरिगुणगणगा
 ये॥ रुचिरबीररसप्रभुमनभाये॥ वेगिहतहुखलसुनिक
 हिगएऊ॥ रामसमरमहिंशोभितभएऊ॥ ॥ छंद॥ ॥
 संग्रामभूमिविराजरघुपतिअतुलबलकोशलधनी॥ अ
 मबिंदुसुखराजीवलोचनरुचिरतनुशोणितकणी॥ ७॥
 भुजयुगलफेरतशरसरासनभालुकपिचहुंदिशिवने॥ क
 हदासतुलसीकहिनशकछविशेषजेहिआननघने॥ ८॥
 ॥ दोहा॥ ॥ निशिचरअधममलायतन॥ ताहिदीन्ह-
 निजधाम॥ गिरिजातेनरमंदमति॥ जैनभजहिंश्रीराम॥
 ॥ १०६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ दिनकेअंतफिरीदीउअनी

मरभएउसभदनश्रमघनी ॥ रामकृपाकपिदलबलवादा ॥
 जिमितृणपाइअनलअतिठाटा ॥ छीजहिंनिशिचरदि-
 नअरुराती ॥ निजसुरवधर्मकहेजेहिभांती ॥ बहुबिला
 पदशकंधरकरई ॥ पुनिपुनिबंधुशीसउरधरई ॥ रोव
 हिंनारित्दयहतिपाणी ॥ तासुतेजबलविपुलबरवानी ॥
 मेघनादतेहिअवसरआवा ॥ कहिबहुकथापितहिंसमु
 जावा ॥ देखिबहुकालमोरिमनुषाई ॥ अबहिंबहुतकाक
 रौबडाई ॥ दृष्टदेवसनजोबरपाएउं ॥ सोबलतातनतुमहिंसनाए
 उं ॥ एहिबिधजलपतभएउविहाना ॥ लगेभालुकपिचहुंदिशिना
 ना ॥ इतकपिभालुकालसमवीरा ॥ उतरजनीचरअतिरणधी
 रा ॥ लरहिनिशाचरनिजजयहेतू ॥ बरणिनजाइसमररवग
 केतू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मेघनादमायामय ॥ रथचढिगये
 उअकाश ॥ गर्जेउअहुहासकरि ॥ भइकपिदलअति-
 आस ॥ १०७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शक्तिभूलशरपरिघकृपा
 एा ॥ अरुअशरकुलिशाशुधनाना ॥ डारेपरशुप्रचंड
 पाषाणा ॥ लागेउदृष्टिकरैविधनाना ॥ दशदिशिरहेउबा
 एनभछाई ॥ मानहुंमघामेघऊरिलाई ॥ धरुधरुमारु
 सुनहिंकपिकाना ॥ जोमारेतेहिकोउनजाना ॥ गहिगि
 रितरुआकाशकापिधावहिं ॥ देखहिंतेहिनदुरिवतफि
 रिआवहिं ॥ अवघटघाटघाटगिरिकंदर ॥ मायाबलकी
 न्हेसिशरपंजर ॥ जाहिकहांआकुलभएबंदर ॥ स्तरपति
 वंदिपरेजनुमदिर ॥ पुनिलक्ष्मणसुग्रीवविभीषण ॥ श
 रन्दिमारिकान्हेसिजर्जरतन ॥ पुनिरघुपतिसनजुजेला
 गा ॥ शरछांडतहोईलागहिंनागा ॥ व्यालपाशवशभएउ
 रतरारो ॥ अविगतअजितरकअनिकारी ॥ नटइवचरि

तकरतविधनाना॥ सदास्वतंत्ररामभगवाना॥ रणशोभा
 लगिआपुबंधावा॥ देखिदशादेवनभयपावा॥ ॥ दोहा॥
 गिरिजाजाकरनामजपि॥ मुनिकाटहिंभवपाश॥ सोकि
 आवैंबंधनतरे॥ व्यापकविश्वनिवास॥ १०८॥ ॥ चौपाई
 ॥ ॥ चरितरामकेसुनहुभवानी॥ तरकिनजाइबुद्धिमन-
 बाणी॥ असबिचारिजौपरमबिरागी॥ रामहिंभजहिंतके
 सबत्यागी॥ व्याकुलकटककीन्हधननादा॥ पुनिभाप्रग
 टकहतदुर्बोदा॥ जांबवंतकहखलरहुठादा॥ सुनिकेता
 हि क्रोधअतिबादा॥ बूढजानिशठछाडेउतोही॥ लगेसि
 अधमप्रचारणमोही॥ असकहितरलत्रिशूलचलावा॥
 जांबवंतसोकरगहिधावा॥ मारेसीमेतनादकैछाती॥
 पराधरणिघूर्णितसरघाती॥ पुनिरिसाइगहिचरणफि
 रावा॥ महिपछारिनिजबलहिदेखावा॥ वरप्रसादसोम
 रैनमारा॥ तवपदगहिलंकापरडारा॥ इहांदेवअपिगरु
 डपठावा॥ प्रभुसमीपअतितुरतआवा॥ ॥ दोहा॥
 स्वगपतिसबधरिखाएउ॥ मायानागबरूथ॥ मायावि
 गतभएउसब॥ हर्षवानरयूथ॥ १०९॥ गहिंगिरिपादपउ
 पलनख॥ धायेकीशरिसाइ॥ चलेतमीचरबिकलअति
 ॥ गदपरचढेपराइ॥ ११०॥ ॥ चौपाई॥ ॥ मेघनादकै
 मूर्छाजागी॥ पिनहिविलोकिलाजअतिलागी॥ तुरत
 गएउगिरिवरकंदरा॥ करहुंअजयमखअसमनधरा
 सोश्रुधिपाइबिभीषणकहई॥ सुनुप्रभुसमाचारअस
 अहई॥ मेघनादमखकरैअपावन॥ खलमायावीदेवसु
 तावन॥ सोप्रभुसिद्धहोइजौपाइहिं॥ नाथबेगिरिपुजी
 तिनजाइहि॥ सुनिरघुपतिअतिशयसरवमाना॥

लिये अंगद हनुमाना ॥ लक्ष्मण संग जाहुं सब भाई ॥
 विध्वंस करहु तुम जाई ॥ तुम लक्ष्मण रण मारेहु ओही ॥
 देखि समय सरब डहुरव मोही ॥ जांबवंत कपिराज बिभ
 षण ॥ सेन समेतरहुहुतीनौ जन ॥ जबरघुवीर दीन्ह अ
 नुशासन ॥ काटिनिषंग करवाए शरासन ॥ प्रभुपताप उर ध
 रिराए धीरा ॥ बोले उधनइ बगिराग भीरा ॥ जौं तेहि आजू
 वध बिनु आवा ॥ तौरघुपति सेवक न कहावा ॥ जौ शत शं
 कर करहि सहाई ॥ तदपि हतौं रघुवीर दोहाई ॥ ॥ दोहा
 ॥ बंदिराम पद कमल युग ॥ चलेतुरंत अनंत ॥ अंगदनी
 ल मयंदनल ॥ संग सुभट हनुमंत ॥ १११ ॥ ॥ चौपाई ॥
 जाइ कपिन्ह देखा सो बैसा ॥ आहुति देत रुधिर अरु ह्यै
 सा ॥ तब कीशन कृत यज्ञ विध्वंसा ॥ जबन उठै तब करहि
 प्रशंसा ॥ तदपि न उठै धरहिंकच जाई ॥ लात न हति हति
 चलहिंपराई ॥ लै त्रिशूल धावा कपि भागे ॥ आवारा म अ
 नुज के आगे ॥ आवत परम क्रोध करि मारा ॥ गर्जिघोर
 रब वारहि चारा ॥ कोपि मरुत सुत अंगद धाये ॥ हति त्रि
 शूल उर धरि गिराये ॥ प्रभु परछाडे सिशूल प्रचंडा ॥ शर
 हति कृत अनंत युग खंडा ॥ उठि बहोरि मारुत युवराजा ॥
 ॥ हते उ कोपितेहि घाउन वाजा ॥ फिरे वीर रिपु मरै न मारा ॥
 पुनि धावा करि घोर चिकारा ॥ आवत देखि कुहू जनु काला ॥ ल
 क्ष्मण छाडे विशिख कराला ॥ आवत देखि वज्र समवाणा ॥ तु
 रत भयो खल अतर धाना ॥ विविध वेपथि करै लराई ॥ कब
 हुं प्रकट प्रकहु डुरि जाई ॥ तदत्रिशूल डारे सिलक्ष्मण परा ॥ काटि
 केन्ह शत खंड धरणि धर ॥ शिखर एकले पुनिसो धायो ॥ राम अ
 नुज सो काटिं खिरायो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आयुध विविध प्रकार किया

रजसमकीन्हफणीशा॥ बिस्मयहर्षक्षणहिंक्षण॥ विबुधसहित
 करईश॥११२॥ ॥चौपाई॥ ॥विविधायुधसौछांडनलागा॥रण
 काननछूटहिजिभिनागा॥रामअनुजशरगरुडसमाना॥उमा-
 यसतछूटतअभिमाना॥देखिअजयरिपुडरमेकीशा॥परम-
 कुडतबभएउअहीशा॥लक्ष्मणमनअसमब्रह्मदावा॥
 एहिपापीमैंबहुतरखेलावा॥सुमिरिकोशलाधीशप्रताप
 ॥शरसंधानकीन्हकरिदापा॥देखियजिमिरविउदयस
 माना॥फुंकरमनहुंब्यालअनुमाना॥छाडेउबाणमाऊ
 उरलागा॥मरतीवारकपटसबत्यागा॥शीसपरेउधर-
 णीपरजवई॥भुजादाहिनीनभसोगवई॥घनसमान
 सोगर्जिअभागा॥शीसभुजाकाटेनृपनागा॥ ॥दोहा॥
 रामअनुजकहिरामकहि॥असंकहिछाडेसिप्राण॥ध
 ॥कहअंगदहनुमान॥११३॥
 चौपाई॥ ॥जोजगकहदंडकयमदंडा॥हरिद्रोहीसुत
 ॥महिमाअमितमहाबलसीवा॥जासुप्र
 तापअभयदशग्रीवा॥भुजबलसरनायकबशकीन्हा॥
 चौदहभुवनजीतियशलोन्हा॥



गंजउ॥जिमिगजकमलनालगहिभंजेउ॥जिमिवासवग
 हिकुलिशकराला॥कीन्हविकलगिरिपक्षबिहाला॥रण
 सागरमंहपरेउशरीरा॥तरैदारुजिमिरुधिरसुनीरा॥दं
 तविकटसुखपरमभयावन॥चिकुरसधनचरवअशुभ
 अपावन॥रसनालालरंगजनुजावक॥दबकिशिरवा
 सोहजनुपावक॥पाइसुआयसुअषभकपीशा॥क
 रगहिलीन्हदुष्टकरशीशा॥ ॥दोहा॥ ॥करिअममा
 रेउमहारिपुहिं॥रामानुजरणधीर॥विडरसुमनबर्ष
 हिंविबुधकहि॥जयगिरागंभीर॥११४॥ ॥चौपाई॥
 बिनुप्रयासहनुमानउठावा॥लंकाद्वारराखिपुनिआ
 वा॥तासुमरणसुनिसुरगंधर्वा॥चट्टिविमानआएन
 भसवी॥वर्षिसुमनदुंदुभिबजावहिं॥श्रीरघुवीरबिम
 लयशगावहिं॥जयअनंतजयजयजगदाधारा॥प्रभुतु
 मसबदेवन्हनिस्तारा॥अस्तुतिकरिसुरसिद्धसिधाए
 ॥लक्ष्मणकुपासिंधुपहिंआए॥सुतबधसुनादशान
 नजबहीं॥मूर्च्छितभएउपरेउमहितबहीं॥मंदोदरी
 रुदनकरिभारी॥उरताडतबहुभांतिपुकारी॥नगरलो
 कसबब्याकुलशोचा॥सकलकहहिंदशकंधरपोचा॥
 ॥दोहा॥ ॥तबदशकंटविविधविधि॥समुझाइसब
 नारि॥नश्वररूपजगतसब॥देखहुहृदयविचारि॥११५॥
 ॥चौपाई॥ ॥तिन्हहिज्ञानउपदेशारावण॥आपु
 नमंदकथाशुभपावन॥परउपदेशकुशलबहुतेरे॥जे
 आचरहिंतेनरनघनेरे॥प्रभुहिविलोकिसीशपदनाए
 उ॥उटिप्रभुहर्षिअनुजउरलाएउ॥रुपादृष्टिअनुज
 हिप्रभुहेरा॥विगतघायकीन्हेंउंकरकेरा॥बाणबंधदेरि

यतनुकैसे ॥ कनकतूणशरपूरितजैसे ॥ सुखप्रसन्नतादेखि
 मिले सब ॥ रिपुबधकहेउबिभीषणहीतब ॥ धरतेंहि सीस
 आनु प्रभुआगे ॥ बानरभालुबिलोकनलागे ॥ प्रभुकौतु
 कीबिलोकेउशीशा ॥ राखनकहेउकोशलाधीशा ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ प्रभुआयसुसुनिकीशपति ॥ राखेउयतनकराइ
 ॥ कटकसहितरघुवंशमणि ॥ सोभितदोनोभाइ ॥ ११६ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कृपादृष्टिकपिभालुनिहारे ॥ भएथमरहि
 तयमबैठारे ॥ सुनहुउमाएहिविधरिपुमारे ॥ सरनरसु
 निसबभयेसरवारै ॥ अबसोसुनहुबाहतिहिंकेरी ॥ ख
 गज्यौलंकागईशरप्रेरी ॥ मेघनादआंगनमहिपरी ॥ बा
 णिबिद्धिशोणितसोंभरी ॥ राजतितहांसलोचनाबैसी ॥
 रतितेंरुचिररूपगुणजैसी ॥ नागसुतादशकंठपतोइ ॥
 वासबरिपुतियछबिमयजोइ ॥ हेमसिंहासनसोहतिबा
 ला ॥ सेवहिविद्याधरितियमाला ॥ पूजहिबिबुधबिनय
 करिताही ॥ सुखप्रमेदकोशकहिसराहि ॥ तहंपतिभुजा
 परीएहिभाती ॥ मनहुंसकलसुखतरुकीकांती ॥ ॥
 दोहा ॥ ॥ तिहिंदिशिदासीदेखिकह ॥ शोणितसुखभुज
 दंड ॥ भएउसमरआश्रयमय ॥ मनहुंअखंडलखंड ॥
 ॥ ११७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिकेसकलसखीसुखवय
 ना ॥ तजिसिंहानउठीसुनयना ॥ नारिसुभावधकधकी
 धरकी ॥ सूचकअशुभदक्षिणभुजफरकी ॥ होतमहार
 एरावणरामहिं ॥ वीरधुरीणमोरप्रियतामहिं ॥ सकल
 सुरासुरशकहिनजूझी ॥ बिधिकोमतौपरैनहिबूझी ॥ इ
 तनाकहतिगईचलिआपू ॥ पतिभुजलखिकरिकोटि
 बिलापू ॥ कंकणमणिगणभूषणसोई ॥ महाबिटपसम

आनन होई ॥ देरवति मनहिन आवत ते ही ॥ तासु प्रभाव
 सुना पहिले ही ॥ नीदनारि भोजन परिहरई ॥ बार हवरष
 तासु कर मरई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करि बिचार मन की कदै
 में पति दैवत नारि ॥ सुंजलिखि मेढहु दुचितई ॥ सु
 रदीन्ह पसारि ॥ ११८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लखि रूखता सुस
 रवी सरवी उठि धाई ॥ तुरत हिरवोजि स्वरी लै आई ॥ दीन्ह
 हाथ परमणि अंग नाई ॥ लखति लखण की रति रुचि रा
 ई ॥ नीदनारि भोजन शत कोटिका ॥ तजैं तासु महिमा य
 ह छोटिका ॥ अक्षय अव्यय अज अविनाशी ॥ अतुल अ
 मित घट घट के बासी ॥ प्रकट हिं पालहि पुनि जग हर ही ॥
 त्रिगुण रूप त्रय मूरति कर हीं ॥ जो कालहु कर काल भयं
 कर ॥ वरणत सुयश शारदा शंकर ॥ धरहिं विविध तनु
 सेवक हेतू ॥ जासु नाम भव सागर सेतू ॥ सुनी मन पुंडरीक
 जाके घर ॥ बचन बिबेक बिचार बुद्धि पर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 कोटिक लय वरणत निगम ॥ अगम जासु गुण नाथ ॥ तम
 शरीर जड जीह बिनु ॥ किमि वरणो लिखि हाथ ॥ ११९ ॥
 चौपाई ॥ ॥ मम शिरग एउ जहां रघुराई ॥ तब बचन नि
 ल गि भुजा पठाई ॥ एहि विध लखी सकल भुज वाता ॥ प
 री भूमि तल अति विलपाता ॥ बांचि सकल भुज लिखव
 ज थारथ ॥ लक्ष्मण राम जानि परमारथ ॥ नारि स्वभाव
 तदपि बहु भांती ॥ विलपहिं मिलि सरवीयनि की पांती ॥
 गुण गण साहस शील नाहको ॥ कहि रोबहि बल विजय
 बांहको ॥ जिहि भुज बल कर नाथ विगोए ॥ सो प्रभु आ
 नु समर महिं सोए ॥ मणि गण भूषण बसन बिसारहिं ॥
 महिलो टहिं करतल सिरमारहिं ॥ मगन शोक सरित न सु

धिनाहीं ॥ दारुणविपतिकहों किहि पाही ॥ क्षणकप्रबोध
 सरखी को उकरई ॥ बहुरि शोकदावानलजरई ॥ क्षणक्षण
 उठति परति धरणी तल ॥ पुनि रोवहिस राहि पतिकर बल
 ॥ दोहा ॥ ॥ तिन्हूमह सरखी सयानी एक ॥ कहिस मुखा
 इवेन ॥ शोक छांडि पति देवता ॥ समति करिय जिय चैन
 १२० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनिकह सहसानन तनुजाता ॥ स
 त्य कहातु ह्य सरखी सुवाता ॥ विधिनिर्मित मो कह दुखला
 हू ॥ सरख परिभूरि भुवन सब काहू ॥ विजय राम लक्ष्मण
 कहं आएउ ॥ सयश सकल मर्कट कुल पाएउ ॥ कुल कलं
 क बडल हेउ बिभीषण ॥ कुल कुठार अस सनेउन दीषण
 ॥ छूटि बंदि अवसर गण केरी ॥
 री ॥ मुनि पुलस्त्य कर भाकुल नाश ॥ अबर विशशि सरख
 रहि प्रकाशा ॥ तेजवंत पावक परि हरि दुख ॥ वहहिस मीर
 आजु अपने सरख ॥ सलिल गगन भूनिर्मल आजू ॥ सब स
 ब सहिं सरनाय कर आजू ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यम कुबेरे दिक्पाल
 सब ॥ प्रमुदित सरनर नाग ॥ ॥ पा
 य सयज्ञ विभाग ॥ १२१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 ॥ देखति मणिगण धन बहु नाई ॥ सरपति भव
 न पाटनर नाई ॥ कहिसिद्धि जहं सकल कमाई ॥
 षयन मन अनु रागेउ ॥ पति पदने हनि पुण मन लागेउ
 न्है मणिगण भूषण चीरा ॥ धनुधर गिगज ह्यटक हीरा
 एमय शिबिकार चेउ बनाई ॥
 ॥ आपुनु चढति भई तहं आई ॥ सर दुर्लभ सरख सदन वि
 हाई ॥ वीतराग जिमित जहिं विषय गण ॥
 ॥ शुकसारिका सुलोचन आए ॥ कनक पि

जरन्हिरारिव पदाए॥ व्याकुल कहहिते कहा सुनयना॥ सुनि
 धीरज परिहरिय सुवयना॥ भये विकल रवग मृग एहि भांते॥
 ॥ अपर देशा कैसे कहि जाती॥ प्रजालोग आतुर संग लागे॥
 प्रेम उमगिलोचन जल पागे॥ ॥ दोहा॥ ॥ बाजन लगे नि
 सान गण॥ दोल दुंदुभी भेरि॥ पुरजन परिजन संग सब॥ च
 ले पालकी घेरि॥ १२२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ देखि भीर दशकं
 धर द्वारे॥ सजग होउ सब बीर प्रचारे॥ जाना कंट करि पुहि
 कर आई॥ अस्त्र शस्त्र कर धर हुवनाई॥ धनुष चढाय तू
 एकटि बांधहिं॥ गहि असि चर्म वीर वर साजहिं॥ तोमर प
 र शय चंडगदा गहि॥ तीक्ष्ण चोरखे शूल शक्तिलहि॥ मारु
 मारु धरु धरु कहि थावहिं॥ प्रगट दशानन विजय सुनाव
 हिं॥ गर्जित जिकहि गिरागंभीरा॥ समर भयंकर निशिचर
 वीरा॥ निपट हिंनिकट पालिकी आई॥ चीन्ह सकल मटर
 हेल जाई॥ देखि जुहारि नाग पति कन्या॥ सती शिरोमणि
 त्रिभुवन धन्या॥ ॥ दोहा॥ ॥ द्वारपाल दशकंधर कह॥
 समय सुनाए उजाड॥ भई रजाय सवंगिहिं॥ लेहु सुताहि
 बुलाइ॥ १२३॥ ॥ तिहीं अवसर हीं सुलोचना॥ गहं चरण शि
 रनाइ॥ राखि भुजा धन नाद की॥ करुणा वचन सुनाई॥
 १२४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ तुमहि अलत असहाल हमारी॥
 सुख नजि भएउ शोक अधिकारी॥ नभ मारग भुज मम गृ
 ह परो॥ संशय जानि दान्द कर रवरी॥ लिरवी राम लक्ष्मण
 महिमा इन्ह॥ क्रम सीं सब विध कथा कहि तिन्ह॥ टगि सी
 रहि वांनि गुण गाथा॥ जसु संग जो पाऊं माथा॥ रण के म
 ध्य भुज मम गृह आई॥ शिर न हंज हं नरे स हो भाई॥ करिय
 सीं जमन मिले सोहि जांशा॥ तुम सब जे चराचर देशा॥ सु

नतकुलिशसमगिरावधूकी॥जीवनआशदशाननमूकी॥
तदपिधीरधरिकरतप्रबोधा॥कहुजगमोहिसमानकोजोधा॥
॥दोहा॥ ॥रामलक्ष्मणसुयोवनल॥मौलहिविदहनु
॥माथविभीषणऋषभको॥आनौमारितुरंत॥१२५॥
॥चौपाई॥ ॥अवलगिरहाभरोसाभारी॥कुंभकर्णधनना
दसुरारी॥मेहआजुलुगिकीन्हनजूजा॥इन्हसबकरपुरुषा
रथबूजा॥मरतेनरबानरकेमारे॥

मारे॥गणतीकवनबीरमहितिन्हकी॥अतिदुर्देशाकीन्ह
कपिजिन्हकी॥छाडिशोचकुलवधुपतोह॥॥
मानजिन्हमोहू॥पुत्रिविलंबकरहुघटचारी॥देखहुमोरि
भयंकरमारी॥आनिहुशीशसबशत्रुन्हकेरा॥बितुप्रया
सनहिलागहिबेरा॥भुगवहिजंतुपुराकृतभोगा॥तनुकत
निशिचरवनचरयोगा॥ ॥दोहा॥ ॥मेरुउपारनहार
जे॥धराधरहिकरबीच॥तेभटरवाएमशकशिशु॥काल
कुटिलतानीच॥१२६॥ ॥चौपाई॥ ॥क्रोधाबेशघम
डबलबोलहि॥हृदयशोकतरुअचलनडोलहि॥समाधा
ननहिमानतिसोई॥सुनिप्रलापपरितोषनहोई॥नरबा
नरपुरुषारथदेखत॥बडौप्रपंचछोटकरिलेखत॥

पजारी॥लघुकरिमानतताहिसुरारी

तकायमहोदर॥ममपतिगिरेउसंशयनसहोदर

॥तैंहिरिपुचहंहिदशाननजीती॥

ती॥उत्तरदेउतीपातकहोई॥करिविबाद

ई॥फिरेउंराजतोमोहिनकाजू॥

॥दोहा॥ ॥तुरहीउठिसलोचना॥गइमय

॥पदगहिरोवतिसबकही॥

हास ॥ १२७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आदिहितें सब कथा बरवानी ॥
 ॥ सुनि सुनि रोवहि रावण रानी ॥ कही सो पति भुजलिखित
 बहोरी ॥ राम लक्ष्मण महिमानहि थोरी ॥ कहे उबहुरि दश
 कंधर क्रोधा ॥ मरेहु बिडंबन कीन्ह सो जोधा ॥ सुनि सो पु
 त्र बंधु की बाणी ॥ बोलि दुखित मंदोदरि रानी ॥ कहौ सो मा
 नव सत्य सयानी ॥ सुनि जो नारद मुख की बाणी ॥ पाछि
 लिबान भई सब सांची ॥ अनुभव कीन्ह न एकौ वांची ॥ दे
 खिन होइ दृष्टा ऋषि भाषित ॥ अपने महा मोह मन माखि
 त ॥ अगिली कथा समाज समेता ॥ सुनहु पुत्रि ऋषि बर्णे
 उजेता ॥ वीर भाष दशकंधर जूझहि ॥ प्राण हुंगये नीति न
 हि बूझहि ॥ बंधु भेद लंका गढ दूटहि ॥ सरनर नाग बंदितें
 छूटहि ॥ सिया शोक संकट तें छूटहि ॥ बानर भालु राजगृ
 ह लूटहि ॥ धनमणि भूषण वसन विमाना ॥ भोग करहि म
 र्कट कुल नाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजविभीषण पाइ है ॥ अम
 रे कल्पनि बौहि ॥ भावी वश सरव दुरव जगत ॥ उपदेशिय
 कहु काहि ॥ १२८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मुनि चंचन की मो
 हि मतीती ॥ अनुभव सदाहारि अरु जीती ॥ तें पुत्री परिह
 रि अवशोका ॥ पति संग तुरित साधि परलोका ॥ जाहिराम
 पहि पति शिर लागी ॥ तजि संकोच आनहि शिर मांगी ॥ हो
 वन लाज आनु को भूषण ॥ समय हीन गुण गणी यन दूष
 ण ॥ एक नारि वतर पुपति केरा ॥ लक्ष्मण सज शनै सुनाध
 नेरा ॥ है पुनिस सरविभीषण तोरा ॥ बालि सबन है बाल
 कमोरा ॥ मंत्री जांव वंत सुग्रीवा ॥ दुविद मयंद पन सब ल
 सींवा ॥ जानि ब्रह्म चर्य हनु संजा ॥ शिव स्वरूप भय हर भ
 गवंता ॥ सदा नीति रत राम न रेभू ॥ तहां जात कहु कवन क

लेम् ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विदित तोहि पति भुजलिरिवत ॥ लक्ष्म
 णराम प्रभाऊ ॥ महासूक्त पि भाषित भएउ ॥ अब विलंब न हिला
 ऊ ॥ १२६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनत सासु सुख की हित बाणी
 ॥ जाहु राम पहिय हउर आनी ॥ बार बार चरण निशिर ना
 ई ॥ चली जहां लक्ष्मण रघुराई ॥ देखि कटक भालु कपिके
 री ॥ सिंधु सूखे लमही धर घेरी ॥ उमगे उमनहु म हो दधि दू
 सर ॥ हरित पिंग कपि धूमिल धूसर ॥ लूमिलाल माश की
 न हेरी ॥ मनहुं लपट बड बान ल केरी ॥ स्ववत रुधिर भुज स
 हज भयंकर ॥ जहंत हं प्रगट होत जनु जल धर ॥ लक्ष्मण शो
 ष सूक्त अंक शी सधरि ॥ कटक जल धि सो बतरा घव हरि ॥
 अक्षय वट तहै बैठ बिभीषण ॥ अस सूक्त तीज ग सुनान
 दीषण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देखति हर्ष सुलोचना ॥ धीरज
 धरति बहोरि ॥ महाराज रघु बीर कह ॥ बिजय सुनाय हि
 मोरि ॥ १३० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बानर स कल उठे अस बो
 ली ॥ अरि पुरतें आवत एक डोली ॥ इह जान
 ब बूजा ॥ भयि मति मेघनाद ज बजूजा ॥ दूठ तजि सीत ह
 न्ह पठाई ॥ तजहुं शोच अब मिटी लराई ॥ जे हिल गि प्रगट
 कीन्ह पुर आगी ॥ बांधेउ सेतु हेतु जि हिल गी ॥ सो स
 ब बिनु अम पाई ॥ जानहु विधि अनुकूल अघाई ॥ विजय
 राम सूत्री वहि आएउ ॥ सुयश स कल बानर कुल पाएउ ॥
 विरह राम लक्ष्मण कर छुटेउ ॥ बिनु प्रयास लंका गटहु टेउ
 ॥ युग युग की रति रहहि हमारी ॥
 चारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एहि विधि चारु विचार करि ॥
 कमन माहि ॥ भएउ काजर रघु राज कर ॥ बात दूसरी नाहि ॥
 १३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पैठत कटक अति शय सकुचाई ॥

आनचिन्हारिजिमिपरधरजाई ॥ आगेजाइदीखरघुबी
 रहिं ॥ छविमयश्यामलगौरशरीरहिं ॥ मर्कतकनकछवि
 हिंजनुनिंदक ॥ सोजनधन्यउमाजेबंदक ॥ मत्तमयंदशुंड
 भुजदंडा ॥ धनुषबाणअसिधरैप्रचंडा ॥ उरबिशालअति
 उन्नतकंधर ॥ कंबुकंठरैखाप्रसन्नतर ॥ मुखछविकीउप
 माकबिजोहहिं ॥ शशिसरोजसमकहैनसोहहिं ॥ दशन
 पांतिकीकांतिकहैको ॥ ललकतमनपटतरहिलहैको ॥
 देखतअधरनिकीअरुणाई ॥ बिंबाफलबंधूकलजाई ॥
 शुकतुंडहिंनासिकालजाबहिं ॥ थकेसुकबिनहिपटतर
 पावहि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ छविमयगुणमयतेजमय ॥ राम
 उदधिअबगाह ॥ जहांनपावतपारसर ॥ कोबरएकबि
 थाह ॥ १३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भृकुटीविकटकपोलसु
 हाये ॥ शीशजटाकेसुकुटबनाये ॥ भालबिशालतिलकसु
 तसोहइ ॥ ध्यानसमयलखिसुनिमनगोहइ ॥ बल्कलब
 सनतूणकटिबांधे ॥ करशरसुभगशरासनकांधे ॥ बीरा
 सनआसनमृगछाला ॥ नवपल्लवप्रसूनकीमाला ॥ च
 रणसरोजवरणिनहिजाई ॥ रहंसुनिमधुकरसदालो-
 भाई ॥ प्रगटभईजेहिथलतैगंगा ॥ श्रुतिपुराणकहिक-
 थाप्रसंगा ॥ तबहिमहेशविरंचिजाहिकहुं ॥ लोचनगोच
 रहोईकहीकहुं ॥ भज्जनआरतभज्जनजोहित ॥ भवसा
 गरतारणकहंवोहित ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रणतपालविर
 दावली ॥ जिन्हचरणानिकीचानि ॥ शोचहरणसंशयदर
 ण ॥ सकलसुमंगलखानि ॥ १३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 करजोरैअंगदहनुमाना ॥ दुविदमयंदकुमुदबलवाना
 ॥ जाववंतकपिपतिवलशीला ॥ अथभसुषेणसहितन

लनीला ॥ महावीरबानरसबराजहिं ॥ लक्ष्मणविभीषणदु
 हुंदिशिआजहिं ॥ मितभाषितसर्वज्ञसुसेवक ॥ चितबहिरु
 खरघुनंदनदेवक ॥ सभामध्यशोभितरघुनंदन ॥ कीन्हैसि
 सुफलनिरखिनिजअंजन ॥ करतिदंडवतशिरधरिध
 रणी ॥ तबसबकथाविभीषणवरणी ॥ पुत्रबंधुदशक
 धरकीहै ॥ पतिदेवतासुलोचनातीहै ॥ मेघनादकीनारी
 सुशीला ॥ यहगतितबविरोधकीलीला ॥ ॥ दोहा ॥
 सुयेंज्ञानपतिभुजलिरिवत ॥ कहिसमुजाहिबोहि ॥ महा
 राजरघुवंशगणि ॥ जाचनआइतोहि ॥ १३४ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ करिप्रणामआदरनहींथोरे ॥
 तकरजोरे ॥ अतिअस्तुतिकीन्हाबहुभांती ॥ तूदै
 नादिनराती ॥ अस्तुतिकीन्हअहोप्रभुदेवा ॥ कृपाअनु
 ग्रहअद्भुतसेवा ॥ नितसुमिरौमैतुहैगोसाई ॥ जेहिचि
 धिमोहीहोउसरवदाई ॥ दयाकरहुदेवन्हकैदेवा ॥ रामना
 मरहऐहकेसेवा ॥ दीनदयालअनुग्रहकारी ॥ मोहिपति
 तप्रभुलेहुउधारी ॥ पतीतहुमहजेपतितकहाई ॥ ताहुग
 तिदीन्हीरघुराई ॥ जुहविभुवनपतिसकलबिस्वामी ॥ क
 रोदयाप्रभुगरुडागामी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ बिनतीप्रभुमोर
 मैमतिभोरीनाथनवरभागौआना ॥ पदकमलपरागारस
 अनुरागामनमधुपकरणाना ॥ ६ ॥ ऐहिभांतिसुमैनाअ
 स्तुतिबैनाबारबारचरनन्हीपरी ॥ जोअतिमन
 रपावाचरननाइभुइसीसधरी ॥ १० ॥ मैनारी
 जगपावनत्रिभुवनजनसुखदाइ ॥ मैदासीप्रभुचरनन्ह
 वासीअलखलखेनहिकाइ ॥ ११ ॥

स्रक्कपालापावों भगति अनूपहरी ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥
 अस प्रभु दीन बंधु हरि ॥ कारन रहित कपाल ॥ तुलसीदास
 सठ ताहि भजु ॥ छाडी कपट जंजाल ॥ १३ ॥ तुलसी भुव
 नत्री लोक कै ॥ दुसर अवरन कोइ ॥ काहें पुकारो तु है छोडि
 ॥ प्रभु नाम सत होइ ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तुलसी अंतर
 जांमी भगवाना ॥ प्रभुता अदि मध्य अवसाना ॥ करुणा ब
 चन सुनतर सु बीरा ॥ पुलकाराम भए शिथिल शरीरा ॥ दे
 उजि वाय तोर पति आजू ॥ भुजहुं लंक कल्प शतराजू ॥ छां
 डि शोच मन अति हरषाई ॥ तुरित भवन अपने फिरि जाई
 ॥ सुनि अस सत्य सिंधु की बाणी ॥ मन मह बानर चमु डेरा
 नी ॥ कहिन स कै कछु प्रभु रुरव देखी ॥ कहा करिय करतार
 अलेखी ॥ सीय शोच कर फल नहि होइ हि ॥ जो करि कृपा
 राम येहि जोइ हि ॥ अस विचार धरो मन आसा ॥ जेहि ते पा
 वो प्रभु कै बिलासा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राज विभीषण लंक क
 र ॥ केहि विध करि हिं भाइ ॥ संसुजि वैर घन नाद जब ॥ ग
 ह हि शरा सब जाइ ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुरवर रव
 लरि ब कपी श सब जाना ॥ प्रणत पाल भगवान समाना ॥
 देखि बहुतर घुपति कर छोडू ॥ विनय करति दशकंठ पतोह
 ॥ आपु उदार देव सब लायक ॥ करुणामय देखे उंर घुनाय
 क ॥ मेहुं विचार कीन्ह मन माही ॥ जीवन ते अस मरण सरा
 ही ॥ भुजबल जीति लोक सब कीन्ह ॥ चौदह भुवन भोग क
 रि लीन्ह ॥ रण तीर थजा चतुर्भल बिन्हें ॥ पाण सोधन ल
 क्ष्मण कर दीन्हें ॥ अवन उचित वित दे अपहारा ॥ तिहिं प
 र अधिक सुद शंतु ह्मारा ॥ जानिय हमहुं मरव सत साधी
 ॥ मिलवतु हमहि जिमि मिलें समाधी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नि

॥ सनियसत्यरघुबीर ॥ तुह्य
 लैनहोइभव ॥ यथासिंधुगतिनीर ॥ १३८ ॥ ॥ चौपाई ॥
 देवा ॥ भवसागरनाथहिइहिस्वेवा ॥
 लोन्हेंउक्कषभकपीशबुलाइ ॥ मेघनादशिरदोन्हमगाई ॥
 । मेटाबिरहसंभवपरितापू ॥

अंचलपोछतियसुखकीधूरी ॥

। देखिकरतसंशयसुग्रीवा ॥

॥ हसौबदनतौतीययसांची ॥ नाहितोनिशिच

॥ कहयहज्ञानमृतकभुजगावै ॥ जोसुनिब

॥ प्रभुयहकहेउहसहियहसीशा ॥ किये

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शिरसोकहति

सलोचना ॥ हसहुवेगिममनाथ ॥ नतरुप्रतीतिनमानिहै

॥ लिरवाजोतुहारेहाथ ॥ १३९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ क्षणैक

ला ॥ मृतकसोसुखसुंदितनहिस्वो-

॥ पुनिपुनिकहतिसोनागकुमारी ॥ अभितभएउरण

हकरिभारी ॥ लगेउलखणशरक्षोभबटावहि ॥ प्रभुस

मीपकतमोहिलजाबहि ॥ जौमनबचनकर्मयहदेही ॥ प

तदेवतानआनसनेही ॥ तौप्रभुसभाबीचसिरबोलहि ॥

ह ॥ जौजानतितबयह

॥ बोलियठावतिपितहिसहाई ॥ सनितियबच

नहसेउतबसीशा ॥ चौकिउठेउसबभालुकपीशा ॥ हसेउ

देरवत ॥ बिस्मयभएउसंकलजनपेरव

॥ कोटिमेधसमसुनिनहिजाई ॥ रहेउसोबदनबहुरिआ

॥ सकुचकपीशहितोषेउनारिहि ॥

॥ कहसुग्रीवचरणशिरनाई ॥ कारण

वनहसाशिरसाई॥ इहसुनिविहसिकहारघुराई॥ सुनुसु
 ग्रीवकुतर्केविहाई॥ पतिव्रततीयजिनकेगृहमाही॥ यह
 बडिवाततिन्हहिकलुनाही॥ पुनितबसंशयभएउकपी
 शा॥ तिहिकारणतेंहसायहशीसा॥ ॥ दोहा॥ ॥ शीस
 पाइप्रभुचरणगहि॥ बंधुबिधबिनयसुनाइ॥ आजुकेदि
 नरणपरिहरहु॥ ममहितकोशलराइ॥ १४०॥ ॥ चौपाई

॥ वहुरिबिभीषणपदहिनमतिसो॥ रघुवरगुणगण
 हृदयभएतिसो॥ तुमपितुसमदशकंधरभाई॥ यहिकुल
 कीतोहिलाजबडाई॥ सुनिपुलेंस्त्यपरिबारकेदीपक॥ पा
 एउफलरघुबीरसमीपक॥ प्रथममोहवशअनहितमाने
 उ॥ ज्ञानभयेंतबगुणपहिचानेउ॥ युगयुगकरबअकंटक
 राजू॥ सहितसुकीरतिसुकृतसमाजू॥ सुमिरततुह्न
 हिस्सयशजनपैंहै॥ रघुवरचरितसंगकरगैंहै॥ सुनत
 विभीषणकरुणाभारी॥ प्रगटनकरतसमयअनुहारी॥
 कालकर्मगतिकहिसमुझाई॥ चलीतुरितगुरुआयसुपाई

॥ दोहा॥ ॥ बाहिरकरिकपिकटकतें॥ फिरेबिभीषण
 आपु॥ बिसरेउदशकंधरवयर॥ निरखिहोतसंतापु॥
 १४१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ शिरचटाइपालिकीचढीसो॥ रघु
 पतिकृपाप्रभावचढीसो॥ हृदयराखिमूरतिघनश्यामाहिं
 ॥ रसनारदतिनिरंतररामहिं॥ सरितसिंधुसंगमजहपा
 वन॥ यहसुधिपाइगयेतहंरावण॥ संगमंदोदरिसवरनि
 वासु॥ मनहुंशोकरविकीन्हप्रवाभू॥ पाइरजायसुसेवा
 कथाये॥ चंदनअगरभारबहुल्याये॥ रत्नीदारुमयचिता
 वनाई॥ जनुसरलोकनसेंनलाई॥ करिप्रणामसबजन
 परितोपे॥ धीरजधरिसुमिरतसतचांये॥ शिरभुजधरि

बैठी करि आसन ॥ भई जनु योग सिद्धि कौ बासन ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ दीन्ह अग्नि ज्वाला बदी ॥ लपट गगन लगी जाई ॥ ल
 रवीन काहू जात सो ॥ सुरपुर पहुंची धाई ॥ १४२ ॥ ॥ चौपाई ॥
 ॥ सुत वध दीख दशानन जबहीं ॥ संभ्रम मूर्च्छि परे उम
 हत बहीं ॥ दुरि वत हृदय नयन भरि आवा ॥ जनु सिरमणि
 अहिराज गवावा ॥ हासत संतत आजाकारी ॥ करि विलाप
 दशकंध पुकारी ॥ शक्र आदि जीतेहु सब देवा ॥ सरसुनिना
 ग करहि सब सेवा ॥ दुसर रहान भुजबल दापा ॥ स्वर्ग भूमि
 तले तपे उपतापा ॥ इहि बिध करि विलाप लंकेशा ॥ भएउ
 तेजहत शत्रु उर गेशा ॥ मंदोदरी रुदन करि भारी ॥ उरता
 डहि बहु भांति पुकारी ॥ नगर लोक सब व्याकुल शोचा ॥ स
 कल कहहि दशकंधर पोचा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तब लंकेश
 अनेक बिध ॥ समुझाई सब नारि ॥ नश्वर रूप प्रपंच यह
 ॥ देखहु हृदय बिचारि ॥ १४३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तिन्ह
 हि ज्ञान उपदेश हिरावण ॥ आपुन मंद कथा अति पावन ॥
 पर उपदेश कुशल बहु तेरे ॥ जे आचरहि ते नर नयनेरे ॥ दो
 खि चरित पुनित सरगावहि ॥ वर्षि समन दुंदुभी बजावहि
 ॥ तासु क्रिया करि निशि चरनाहा ॥ भएउ शोच बश अति
 उर दाहा ॥ सचिव आइ सब लगे बुझावन ॥ बादि बिषाद
 करिय जिन रावण ॥ सुत बित नारि बिबिध सरव कैसे ॥
 उपजहि घटा जाहि उडि जैसे ॥ तडित दमक देखिय घन
 माही ॥ रहइ न स्थिर ते बहुरि छिपाही ॥ असजिय जानि
 सुनिय दशभाला ॥ बचहि न कोउ जग आए काला ॥ अब प्र
 भुजतन बिचारहु सोई ॥ रिपु करनाशक बन बिंध होई ॥ व
 चन सुनत तेहि कछु सरव माना ॥ कौल बिबश जिमि तीरथ

ज्ञाना॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लागेउ करणविचारमुनि॥ बहुप्र
 कारदशशीश॥ समुजिहृदयअहिरावणाहिं॥ आएउज
 गिरीश॥ १४४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ दंडचारितवतहंनिशि
 वीती॥ संध्यावंदनकीन्हसप्रीती॥ लागेउ करणध्यानद
 शशीशा॥ बहुरिहर्षिजोरेउकरबीशा॥ शिवसेवकसो
 अतिअनुरागी॥ सुतुरवगेशतिहितेवडभागी॥ आकर्ष
 णमंत्रजपेउदशभाला॥ अहिरावणचितडोलपताला॥
 लगेउ करणसोमनअनुमाना॥ केहिकारणदशमुखअ
 कुलाना॥ निशिचरनाहभुवनवशजाके॥ जीतनकहनबी
 रकोऊताके॥ मनक्रमवचनआननहिसेवी॥ धरेउध्या
 नउरकामदादेवी॥ चलेउबहुरिआएउसोतहवा॥ शिव
 मंडपदशमुखरहजहंवा॥ निशिचरपतिकहितेहिशिर-
 नाएउ॥ करकरगहिनिजआसनवैठाएउ॥ ॥ दोहा ॥
 अहिरावणतवरावणाहि॥ पूछैउकुशलसप्रीति॥ प्रथम
 कंहीतेहिंसोकथा॥ भगिनीकीन्हअनीति॥ १४५॥ ॥ चौ
 पाई॥ ॥ वधरवरदूषणजिमिस्तुधिपाई॥ मारीचकपटमृ
 गकथासुनाई॥ कहैसिवहुरिसीताकरहरणा॥ यवनत
 नयवललंकादहना॥ सेतुवांधिजिमिप्रभुचलिआएउ॥
 बालितनयसंवाटसुनाएउ॥ अनीचअकंपनअरुअति
 काया॥ परेसमरमहसुनुअहिराया॥ तातकुशलअवअ
 डशिरानी॥ कटकनिशाचरसकलनशानी॥ कुंभकरणध
 ननादोमारें॥ रामलक्ष्मणतेमनुजविचारे॥ आनेउबोली
 नोहिनिजपाशा॥ कहुसोदजननहोयारिपुनाशा॥ सुनत
 वचनकहिकेतिकबाता॥ हरिलेंजेहोदोनींआता॥ लेंपा
 नालटांविद्विबलिदेहों॥ यशपूगणनिशिचरकुललेहों॥

लैंजबजाउजानेउतुमतबही॥रविसमतैजहोयनिशिज
बही॥ ॥दोहा॥ ॥कहिअसबचनप्रबोधकरि॥शी
र्षनाइबलभाषि॥आएउरघुपतिकटकतब
उरराषि॥१४६॥ ॥चौपाई॥ ॥

तिअंधियारी॥मर्कटभजजागहितहंभारी॥कहहि
यतिजयजयति कृपाला॥अतिहि
काला॥तहंमारुतसुतरचाउपाई॥निजलंगूरकीको
टबनाई॥सोशोभाकलुबरणिनजाई॥जनुभुजंगपा
रहेतहांआई॥अरुजिमिदेखियशैलसमाना॥दरबा
जेंकृतसुखहनुमाना॥देखिहृदयअहिरावणहारा॥
जिमिरबिउदयनतिमिरप्रसारा॥

रानी॥कपटवेषतिहिकीन्हभवानी॥बेषबिभीषणस
बअनुहारी॥पवनतनयपहगौछलकारी॥ ॥दोहा॥
सहजप्रतापीपवनसुत॥पुनिसुरपतिपतिदास॥ति
न्हहिनिदरिचल्यौरामपहिं॥मूढहृदयनहिचास॥१४७
॥चौपाई॥ ॥ २

भीषणकैसोगवना॥ठाढहोहुबोलेउसनुभाता॥चले
उजहांकृपालजनचाता॥मैरघुपतिसनआयसुपाई॥
संध्याकरणगएउशनुभाई॥तेहितेतुरितचलेउप्रभुपा
हीं॥भईबिलंबजनिरामरिसांही॥सत्यबचनकपिनि
जमनमाना॥सुनुखगेशभावीबलवाना॥कपटचतुर
गतिजानिनजाई॥परमनहरैहरैधनभाई॥
ईगएउसोतहंवा॥फणिपतिप्रभुदोनौरहजहंवा॥क
पिपतिजांबवंतनलनीला॥बालितनयसुषेणबलश
ला॥ ॥दोहा॥ ॥दुबिदमयंदकपीशगण॥गवय

नुवारिदुरवारी॥तैसेहमसबबिनाखरारी॥रविबिनुपंक
 जहोइकुहलाना॥तैसेहमसबहैहनुमाना॥सीतासुधि
 जिमिअपौषधिआनी॥तेहिप्रकारआनहुगुणरवानी॥य
 हसुनिबहुरिपवनसुतबोला॥चित्तकरहुस्थिरसेननडो
 ला॥भुवनचारिदशतीनिहलोका॥आनीप्रभुहितजहु
 तुहलशोका॥अबतैसेजगरहेउसबभाई॥लरेहुकालसो
 जोचढिआई॥यहिकहिगर्जिचलेउहनुमाना॥प्रलय-
 कालकेमेघसमाना॥चलेजातएकतरुतरगएऊ॥गृध्र
 निगृध्रकहतअसभएऊ॥॥दोहा॥॥गृध्रनारिहीगु
 विणी॥बोलीपतिसौबैन॥आनहुआमिषमनुजकरा
 रवांडहोइजीयचैन॥१५३॥॥चौपाई॥॥तासुबचन
 सुनिखगअसकहेऊ॥अहिरावणरामहिलैगएऊ॥दे
 इहिलिदेविहिंसोजाई॥बडेभाग्यआमिषजोपाई॥क
 वनेहुजतनदेविमेंआनी॥असकहिगृध्रनारीसनमानी
 ॥जबहिपवनसुतयहसुधिपाई॥चलेउहदयसुमिरत
 रघुराई॥तुरतपतालहितिहिंसुगएऊ॥अहिरावणपु
 रप्रबिशतभएऊ॥द्वारपालमकरध्वजकीशा॥कपिसन
 डाटिकहतबहुरीशा॥निदरहिमोहितोहिडरनाही॥जि
 मिदीपहीनपतंगडेराही॥मारुतसुतकरहौमेंबालक॥
 स्वामिभक्तभंजनसुरवकालक॥॥सोरठा॥॥सुनत
 वचनहनुमाना॥विस्मयबशबोलतभएउ॥अरेरेमूढअ
 ज्ञान॥मोरेंसुतस्वपनेनही॥१५४॥॥चौपाई॥॥कहा
 तवचनशठतोहिनखोरी॥कामविचशकवमतिमैभोरी॥
 ममसुतहोसिमूढकेहकाजा॥इतनाकहततोहिनहिला
 जा॥किहिप्रकारतैममसुतभएसी॥भिजउत्पत्तिमोसन

किन कहे सी ॥ सुनत कहहिं मकरध्वज बचना ॥ कीन्ह ता
 तज बलंकादहना ॥ जब आ एउ चलिउ दधिस सी पा ॥ भए
 उम स्वेद तुमहिक पिदीया ॥ छटीय स्वेद सागर महगएउ ॥
 सोऊष पीयेउ तहां मे भएउ ॥ इहि प्रकार मैं तब सुत ताता ॥
 गोवहुं नहिं निज पितान माता ॥ अहिरावण सेवा मैं करऊ ॥
 प्रभु आ य स इहिं द्वारे रहऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सत्य बचन ह
 तु मान कहि ॥ पुनि पूछेउ सब बात ॥ आनेउ लक्ष्मण राम
 कहं ॥ कहा करत है तात ॥ १५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहहु
 तात तिहिं स्थल को नाऊं ॥ जान चहौ मैं निज प्रभु ठाऊं ॥ य
 ह वृत्तांत न जानहु ताता ॥ अस मैं अवण सुना कछु बाता ॥
 सीतापति अरु फणिपति साथ ॥ सोलैं आ एउनि शिचर ना
 था ॥ करत सो अहै होम धौं आजू ॥ देबिहि बलि देइहि नृप
 राजू ॥ जो कछु निज अवण सुनि पाएउ ॥ तात सकल मैं तु
 हमहिं सुनाएउ ॥ निज प्रभु काज लागि दुख सहेउ ॥ तुह स
 न सत्य मरम मैं कहैऊ ॥ जान कहौ पजान न देऊं ॥ प्रभु आ
 ज्ञात जिअ यशन लेऊं ॥ सुनि अस पैलि चलेउ हनुमाना ॥
 भयउ क्रोध मकरध्वज जाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपिक हंहने
 सि एक मुष्टिका ॥ कपि पुनि भारताहि ॥ एकहि एक हनेउ त
 ब ॥ बल युग सम घटि नाहि ॥ १५६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एक
 हि एक सकैं नहि पायी ॥ मारुत सुत सुत दोउ भट भारी ॥ सुन
 की पूछ सुत बांधि भवानी ॥ चलेउ बहु रिविलंब बडि जानी
 ॥ धरिल घुरूप होम गृह देखा ॥ जीवस जीव परै नहिले
 खा ॥ तहं देबी कर मंड परहई ॥ शोणित घट बहु को कहिस
 कई ॥ विविध भांति मेवापकवाना ॥ धरे आनि देवी अस्था
 ना ॥ मालिनि तहां सुमनलै आई ॥ सुमन मध्य प्रविशे क

पिराई॥सुमनहुतेअतिहृतहलुकाई॥सोलैसुमनमंड
 पमहिआई॥सुमनसकलदेवीपरचढेऊ॥विकटरूपत
 वतहंकपिबढेऊ॥ ॥दोहा॥ ॥लुबतचरणदेवीतबै॥
 धरणीगईसमाई॥सुखपसारिठाढेभयेउ॥कपिलुबिब
 रणिनजाई॥१५७॥ ॥चौपाई॥ ॥रूपदेखभाआनंदजा
 री॥करहिबिचारनिशान्चरभारी॥कहहिंकिदेविप्रगटभ
 ईआजू॥बडभागीभानिशिचरराजू॥करिप्रणामपुनिपू
 जाकरहिं॥जोकलुआवसोकपिसुखपरहीं॥रहीजोस
 कलवस्त्रसमुदाई॥बचीनएकोसबकपिरवाई॥कपि-
 रिलारकौतुकविस्तारा॥भयोचहनिशिचरकुलसंधा
 रा॥अहिरावणउरभासरवकैसें॥चढैकाधपरबलिपशु
 जैसें॥जबहीहोमसिद्धतबजाना॥लक्ष्मणरामतुरिततह
 आना॥ठडकीन्हतहंप्रभुकहंआनी॥निशिचरबहुआ
 युधधरिपाणी॥धरेंगदाकोउअरुधनुबाणा॥शक्तिशू
 लतरवारिकुपाणा॥ ॥दोहा॥ ॥तोसरसुद्धरपरशुअ
 सि॥पाशफासिअरुवेत॥ओडनरवडगधनुषशर॥देख
 तरहहिनचेत॥१५८॥ ॥चौपाई॥ ॥मायाबलतेसक
 लविचक्षण॥अतिविकरालसोइजनुलक्षण॥इहिविधा
 सकलवीरतहंरहही॥अहिरावणआज्ञाअनुसरहीं॥आ
 यसुपाईरवडगतिन्हकाढे॥मारनकहंप्रभुपरभेठाढे॥को
 उकहांराजनीतिअनुसरहु॥तीनिदंडविलंबअवकरहु
 ॥सुनिअसवचनमूढइमिकहई॥सुमिरोजोतुह्मरेंकोउ
 अहई॥नाहिनकालअवपहुंचाआई॥निशिस्वपनास
 महोउहोभाई॥कहहिमूढप्रभुकहंवहुवाणी॥कहतसकु
 चमोहिअनिहिंभवानी॥ ॥दोहा॥ ॥फणिपतिचित

बहिराम कहं ॥ रामचितव अहिराज ॥ प्रभु कर कौतुक कहिय
 किमि ॥ सुनहु गरुड स्वगराज ॥ १५१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पु
 नि प्रभु मन महं कीन्ह बिचारा ॥ जपै सकल सब नाम हमारा ॥
 इहि अवसर समिरिय हनुमाना ॥ निकटहि अहहि बीर
 बलवाना ॥ यह बिचारि प्रभु समिरन कीन्हा ॥ होइ हि सो
 जो बिधिलिखि दीन्हा ॥ तब मारण कह उद्यत भयेऊ ॥ धन
 समान कपि गर्जत भएऊ ॥ निशिचर सकल तृषित में भारी
 ॥ कहहि बचन निज हृदय बिचारी ॥ अहिरावण भल कीन्ह
 न काजू ॥ आनेउ कपट वेष सरराजू ॥ तिहितें देवि कुह भ
 ई आजू ॥ अब भा सब कर परम अकाजू ॥ सभय भयेत ब
 निशिचर जारी ॥ दुसरें कपि गर्जेउ अति भारी ॥ ॥ दोहा
 ॥ प्रकट रूप करि पवन सुत ॥ अट्टहास गंभीर ॥ अति
 भय असित निशाचर ॥ सुनहु उमा मति धीर ॥ १६० ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ डगमग भेनिशिचर अभिमानी ॥ मारुत बहैं जि
 मि सागर पानी ॥ तिन क्षण कपिलीन्हे दोउ भाई ॥ हतें लागि
 निशिचर सु दाई ॥ खडग छुडाइ लीन्ह हनुमाना ॥ काटें
 लाग भुजा शिर नाना ॥ काहुहि नाक अवण बिनु कीन्हा ॥ ध
 रि पद डारि अनल महं दीन्हा ॥ निज लंगूर की कोट बनाई ॥
 जिहितें कोउ भागिनहि जाई ॥ इहि बिध सब निशिचर सं
 घारे ॥ अहिरावण तब बचन उचारे ॥ रे कपि दीठ त्रासनहि
 तोही ॥ अहिरावण मै जानन मोही ॥ जंबु मालिके हिंजि मि
 तु हमारा ॥ अरु रावण सुत हतेउ बिचारा ॥ ॥ दोहा ॥
 काल नेमि सम मैं न हों ॥ सुनहु बचन हनुमान ॥ अस कहि
 खडग प्रहार किय ॥ कपितनु बज्र समनि ॥ १६१ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ लैं असि नाहि पवन सुत मारा ॥ काटा शीश अनल

महडारा॥ पूर्णाहुतिकरितबसोशीशा॥ पुनिप्रभुकहलैंच
 लेउकपीशा॥ मकरध्वजतबविनतीकीन्हा॥ बंधनछोरि
 राजतेंहिदीन्हा॥ इहांकरराजकरहुतुमताता॥ भजहुसदा
 ममप्रभुदोउभाता॥ असकहिकपिनिजदलमहंआवा॥
 हर्षेउकटकसमरसरवपावा॥ मृतकशरीरप्राणफिरिआ
 वै॥ गईमणिफणिकमनहुंफिरिआवै॥ बिछुरामिलैवहु
 रिजिमिआई॥ तिमिसबभयेनिरखिदोउभाई॥ मिलेउ
 कपीशचरणधरिमाथा॥ पुनिपदधरेउनिशाचरनाथा॥

॥ दोहा ॥ ॥ जांबवंतअंगदसहित॥ मिलेभालुअरु
 कीश॥ सनमानेप्रियवचनकहि॥ लक्ष्मणकोशलधीश
 ॥ १६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बहुरिसबन्हिमेटेहनुमानां॥ क
 हहिंताततुह्नसारवेउप्राणा॥ देवन्हिसमनवृष्टितबकी
 न्ही॥ प्रसुदितहृदयदुंदुभीदीन्ही॥ अतुजसहितहर्षेर
 घुबीरा॥ कहेउवचनशक्तुतनयसमीरा॥ तोहिसमान
 नहिकोउहितकारी॥ सरमुनिसिद्धजोकोउतनुधारी॥
 यशतुह्यारत्रिभुवनमेंभयेऊ॥ सनिअसबचनचरण
 कपिनयेऊ॥ नाथकरोतुह्नमैकेहिलेरवें॥ तरणीचलैअ
 गमजलदेखें॥ नैंसैंसवप्रतापतवनाथा॥ सनिअसकपि
 हिंमिलेरघुनाथा॥ कटकसहितहर्षेदोउभाई॥ तेहिअव
 सरसरवकहिकिमिजाई॥ उहांदशाननसबशुधिपाई॥
 दूतनकहीरवरीसब्रजाई॥ अहिरावणकरबधसनिका
 ना॥ भएउतेजहतअतिदुरवमाना॥ वचनवाणसमलागे
 उताही॥ संभ्रममृच्छिंपरेउमहिमाही॥ मुखसरवानलो
 चनजलबहई॥ वचननआवपुनिपुनिशिरधुनिई॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ मयतनयातवआउकरि॥ वह्नमकारसमज

च॥माननमूढकालबश॥परमक्रोधमहंपाव॥१६३॥ ॥
 चौपाई॥ ॥रावणउरअबरैकलुठएउ॥मेदिकोसकेजो
 विधिनिर्मएउ॥प्रभुबिरोधकरिचहेकल्याणा॥मूढमोह
 बशअतिअज्ञाना॥कृपासिंधुसेवकभयहारी॥तेहिबिरो
 धमुखचहेसरारी॥एहिविधजल्पतभाभिनिसारा॥ल
 गेभालुकपिचारिहुद्वारा॥सुभटबुलाइदशाननबोला॥
 रणसनमुखजाकरमनडोला॥सौअवहीअरुजाइपरा
 ई॥रणसनमुखभागैनभलाई॥निजभुजबलमैबैरब
 दावा॥दैहोंउतरजोरिपुचदिआवा॥असकहिमारुत-
 बैगरथसाजा॥बाजहिंसकलजूआउबाजा॥चलैबीरस
 बअतुलितबली॥जनुकज्जलगिरिआंधीचली॥अशगु
 एअमितहोहिंतेहिंकाला॥गणेनभुजबलगर्वविशाला॥
 ॥छंद॥ ॥अतिगर्वगणइनशगुएअसगुएस्त्रविहिं
 आयुधहाथतें॥भटगिरहिंरथतेंबाजिगजचिक्करहिंभा
 जहिंसाथतें॥१३॥गोमायुगृधकरालखररवश्वानबोल
 हिंअतिघनें॥जनुकालदूतउलूकबोलहिंबचनपरमभ
 यावने॥१४॥ ॥दोहो॥ ॥ताहिकिसंपतिशगुएशुभ
 ॥सपनेहुमनविआम॥भूतद्रोहरतमोहबश॥रामबिमु
 खरतकाम॥१६४॥ ॥चौपाई॥ ॥चलीनिशाचरअ
 नीअपारा॥चतुरंगिनीचमूबहुधारा॥विविधभांतिवाह
 नरथजाना॥विपुलवरणपताकध्वजनाना॥चलेमत्तग
 जयूथघनेरे॥आवृटजलदमारुतकेपेरे॥वरणवरणब
 रदैत्यनिकाया॥समरभूरजानहिंबहुमाया॥अतिविचि
 त्रवाहिनीबिराजी॥बीरबसंतसेनजनुसाजी॥चलतक
 टकदिगसिंधुरडगहीं॥क्षभितपयोधिकुधरडगमगहीं॥

उद्यरेणुरविगणउच्छिपाई॥पवनथकितवस्तथाअकुला
 ई॥पणवनिशानधोररबबाजहिं॥महामलयकेजनुयन
 गाजहिं॥भेरिनफिरिबाजुसहनाई॥मारुरागभूरसरव
 दाई॥केहरिनादबीरसबकरहीं॥निजनिजबलपौरुष
 उच्चरहीं॥कहैदशाननसुनहुसुभइ॥मर्दहुभालुकपि
 नकरठइ॥हौमारिहौभूपदौउभाई॥असकहिसनसु
 खफौजचलाई॥यहशुधिसकलकपिनजबपाई॥धाए
 करिरघुबीरदुहाई॥ ॥छंद॥ ॥धाएविशालकरा
 लमर्कटभालकालसमानते॥मानहुंसपक्षउडाहिभूध
 रचंदनानावरणते॥१५॥नखदशनशैलकरदुमायुधसा
 बलशंकनमानहिं॥जयरामरावणमत्तंगजमृगराजसु
 यशसुनावहिं॥१६॥ ॥दोहा॥ ॥दुहुदिशिजय-
 जयकारकरि॥निजनिजजोरीजानि॥भिरबीरइतरयु
 पतिहि॥उतरावणहिवरवानि॥१६५॥ ॥चौपाई॥
 रावणरथीविरथरघुबीरा॥देखिविभीषणभयउअधी
 रा॥अधिकप्रीतिउरभासंदेहा॥बंदिचरणकहसहित
 सनेहा॥नाथनरथपदनहिपदत्राणा॥केहिविधजीत
 वबीरवलवाना॥सुनहुसरवाकहकृपानिधाना॥जेहि
 जयहोईसोस्यंदनआना॥शोरजधीरजाहिरधन्वाका॥
 सत्यशीलहृदधजापनाका॥बलविवेकदमपरहितयो
 रे॥क्षमादयासमतारजुजोर॥इंशभजनसारथीसुजा
 ना॥विरतिचर्मसंतोषकृपाणा॥दानपरशुबुधिशक्तिम
 चंडा॥चरविज्ञानकटिनकोदंडा॥संयमनियमशिलीमु
 न्वनाना॥अमलअचलमननृणिसमाना॥कवचअभे
 दविप्रपदपूजा॥गहिसर्माविजयउपायनदजा॥सरवा

धर्ममय असरथ जाके ॥ जीतन कहन कत हुरि पुताके ॥
 दोहा ॥ ॥ महा अजय संसार रिपु ॥ जीति शकै सो बीर ॥ जा
 के असरथ होइ दृढ ॥ सनहु सरवामति धीर ॥ १६६ ॥ स
 नत बिभीषण प्रभु बचन ॥ हरषि गए पद कंज ॥ इहि बिध
 मोहि उपदेशोउ ॥ राम कृपा सरवपुंज ॥ १६७ ॥ उत प्रचार द
 शकंधर ॥ इत अंगद हनुमान ॥ लरत निशाचर भालुक पि
 ॥ करि निज निज प्रभु आन ॥ १६८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुर
 अह्मादिसिद्ध सुनिनाना ॥ देखहिं रण नभ चढे विमाना ॥
 हमहु उमारहेउं तेहि संग ॥ देखत राम चरित रण रंगा ॥
 सभट समर सहुहु दिशि माते ॥ कपि जय शील राम बल
 ताते ॥ एक एक सनभिरहिं प्रचारहिं ॥ एक एक मर्दहिं म
 हि पारहिं ॥ मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं ॥ शीस तोरि
 गहि भुजा उपारहिं ॥ उदर बिदारहिं भुजा उपाटहिं ॥ गहि
 पद अवनि पटक भट डांटाहि ॥ निशि चर भट महि गाडहिं
 भालू ॥ ऊपर डारि देहि बहू बालू ॥ वीर बली मुख युद्ध विरु
 द्हे ॥ देखिय बिपुल काल जनु कुद्दे ॥ ॥ छंद ॥ ॥ ३०६
 तांत समान कपितनु खवत शोणित राज हीं ॥ मर्दहिं नि
 शाचर कटक भट बल बंत घन जिमि गाज हीं ॥ १७ ॥ मार
 हिं चपेट निदाटि दांत निकाटिला तन मीज हीं ॥ चिकरहिं
 मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीज हीं ॥ १८ ॥ ध
 रि गाल फारहिं उर बिदारहिं बल अंत्रा बलि मेल हीं ॥ मह
 लाद पति जनु बीबिध तनु धरि समर अंगन खेल हीं ॥ १९ ॥
 धरुमारुकाटु पछारु घोर गिरा गगन महि मरि रही ॥ ज
 राम जो तृण ते कर कुलिश कुलिस ते तृण कर सही ॥ २० ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ निज दल विचल बिलोकित ब ॥ बीश भुजा

दशचाप ॥ चला दशानन कोप करि ॥ फिरहु फिरहु कहि दा
 प ॥ १६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ धाएउ परम क्रोध दशकंधर ॥
 सनमुख चलेहु हाकदै वंदर ॥ गहिकर पाद पउपल पहारा ॥
 ॥ डारहिं तोहि पर एकहि चारा ॥ लागहिं शैल बज्रतनु नासु
 ॥ खंड खंड होइ फूटहि आभू ॥ चलान अचल रहारय
 रोपी ॥ रणदुर्मदरावण अति कोपी ॥ इतउत ऊपटि दपटि
 कपियो धा ॥ मदन लागु भयो अति क्रोधा ॥ चले पराइ भा
 लुक पिनाना ॥ आहि आहि अंगद हनुमाना ॥ पाहि पाहि
 रघु वीर गोसांई ॥ यह खल रवाइ काल कोनाई ॥ नेहि देखे
 कपि सकल पराने ॥ दशहु चाप शायक संधाने ॥ ॥ छंद

॥ संधानिधनु शरनि कर छांडे सिउरग जिमि उडिलाग
 हीं ॥ रहे पूरि शर धरणी गगन दिशि विदिशि कहे कपि भा
 ग हीं ॥ २१ ॥ भा अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोल
 हिं आतुरे ॥ रघु वीर करुणा सिंधु आरत बंधु जन रक्षक
 हरे ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निज दल विचल देखि कटक ॥
 कटिनि पंगधनु हाथ ॥ लक्ष्मण चले सकोप तव ॥ नाइ गम
 पद माथ ॥ २७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रेखल कामारसिक
 पि भाल ॥ मां हि विलोकु तोर मैं काल ॥ खोजत रहे उनां हि
 सत धानी ॥ आजु निपानि जु डावों छानी ॥ अस कहि छांडे
 सिचाण प्रचंडा ॥ लक्ष्मण किण सकल शन खंडा ॥ कोटि न
 गति विमल पवार ॥ तृण समान मधु काटि निवार ॥ पुनि
 निज याग नृका न्द्र प्रहार ॥ खं दन भंजि सारथी मारा ॥ श
 न शन शर मारें दश भाला ॥ गरि मृग निजनु मवि गाहिं व्या
 न्द्रा ॥ पुनि शन शर मारें दश माही ॥ परे उ अवनित नु सुद्धि क
 छनाही ॥ उदाय बल पुनि मृच्छां जागी ॥ छांडे सिचाण दन जं

सांगी॥ ॥छंद॥ ॥सोबह्मदत्तप्रचंडशक्तिअनंतउर
 लागीसही॥पर्योविकलबीरउठावदशमुखअतुलब
 लमाहिमारही॥२३॥ब्रह्मांडभुवनविराजजाकेएकशिर
 जिमिरजकणी॥सोचहउठावनमूढरावणजाननहिभिभु
 वनधनी॥२४॥ ॥दोहा॥ ॥देखतधावापवनसुत॥बो
 लतबचनकठोर॥आवततेहिउरमहंहनेउ॥मुष्टिप्रहा
 रप्रघोर॥१७१॥ ॥चौपाई॥ ॥जानुटेकिकपिभूमिन
 परेऊ॥उठासंभारिबहुरिरिसिभरेऊ॥मुष्टिकाएकता
 हिकपिमास॥परेउशैलजिमिब्रजप्रहारा॥मूर्छाबिगत
 बहुरिसोजागा॥कपिबलविपुलसराहनलागा॥धिकधि
 क्कममबालपौरुषमोही॥जौतौजियतेउठासरदोही॥
 असकहिकपिलक्ष्मणकहंल्यावा॥देखिदशाननविस्म
 यपावा॥कहरघुबीरसमुजिजियभाता॥तुमकृतांतभ
 क्षकसरभाता॥सनतबचनउठिबैतुक्कपाला॥गगन-
 गईसोशक्तिकराला॥धरिशरचापचलतपुनिभएऊ॥
 सिधुसमीपआतुरअतिगएऊ॥ ॥छंद॥ ॥आतुरब
 होरिविभंजिस्यंदनमारितेहिव्याकुलकियो॥गिस्वोध
 रणिदशकंधरविकलतबबाणशतवेध्योंहियो॥२५॥
 सारथीदूसरघालिरथतेहितुरतलंकालैगयो॥रघुवीर
 बंधुपतापपुंजबहोरिप्रभुचरणन्हिनयो॥२६॥ ॥दो
 हा॥ ॥उहांदशाननजागिकरि॥करणलागुकलुयज्ञ॥
 रामविरोधीविजयचहै॥शठहठबशअतिअज्ञ॥१७२॥
 ॥चौपाई॥ ॥इहांविभीषणसबशुधिपाई॥सपदि
 जोइरघुपतिहिसुनाई॥नाथकरैरावणएकयागा॥सिद्ध
 भयेनहिमरहिअभागा॥पठबहुनाथवेगिभटबंदर॥क

रहिविध्वंसश्चावदशकंधर ॥ प्रातहोतप्रभुसुभटपठाये ॥
 हनुमंतादिवंदरसबधाये ॥ कौतुककूदिचदेकपिलंका ॥
 पैठेरावणभवनअशंका ॥ जबहियज्ञकरतजैहिदेवा ॥
 सकलकपिन्हभाक्रोधविशेषा ॥ रणतेंभाजिनिलजगृह
 आवा ॥ इहांआइबकध्यानलगावा ॥ असकाहिअंगदमा
 रेउलाता ॥ चितवनशठसारथमनराता ॥ ॥ छंद ॥
 नहिचितवजबकपिकोपितवगहिदशनलातन्हमारहीं ॥
 ॥ धरिकेशनारिनिकारिवाहिरतेअतिदीनपुकारहिं ॥ १७
 ॥ तबउठाकोपिकृतांतसमगहिचरणबानरडारहीं ॥ यहि
 बीचयज्ञविध्वंसकरिकपिदेखिमनमहहारहीं ॥ १८ ॥
 ॥ दोहां ॥ ॥ मरवविध्वंसकरिकपिसकल ॥ आएरघुपति
 पाश ॥ चलादशाननक्रोधकरि ॥ छाडीजियकीआश ॥
 ॥ १७३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चलतहोहितेहिअशुभभयंकर
 ॥ वैठहिंगृध्रउडहिंशिरन्हिपर ॥ भयउकालवशकाहनु
 माना ॥ कहेसिबजाबहुसुद्धनिसाना ॥ चलीतमीचरअ
 नीअपारा ॥ बहुगजरथपदचरअसवारा ॥ प्रभुसंसुख
 खलधावहिंकैसे ॥ शलभसमूहअनलकहुंजैसे ॥ इहां
 देवसबचिनतीकीन्हा ॥ दारुणविपतिहमाहिइन्हदीन्हा
 ॥ अबजनिनाथखेलाबहुएही ॥ अतिशयदुखितहोति
 वैदेही ॥ देववचनसुनिप्रभुसुसुकाना ॥ उठिरघुवीरस
 धारेउवाणा ॥ जटाजूटददवांधीमाथे ॥ सोहतसुमन-
 नीचविचगाथें ॥ अरुणनयनवारिदतनुझ्यामा ॥ असि
 ललोकलोचनअभिगमा ॥ कटितदपरिकरकसेनियंगा
 ॥ करकांदंडकटिनभारंगा ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सारंगकरसुं
 दरनियंगशिलासुखाकरकटिकर्यों ॥ भुजदंडपीनमनो

हरायतउरधरासरपदलस्यौ ॥२९॥ कहदासतु
 हिंमभुशरचापकरफेरनलगे ॥ ब्रह्मांडदिरजकमठअ
 हिमहिंसिंधुभूधरडगमगे ॥३०॥ ॥ दोहा ॥
 शोभादेखिहर्षेसर ॥ वर्षहिंसुमनअपार ॥ जयजय
 जयकरुणानिधि ॥ छविबलगुणआगार ॥ १७४ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ एहि के बीचनिशाचरअनी ॥
 ॥ कसमसातिआईअतिघनी ॥ देखिचलेसनसुरवकपि
 भट्टा ॥ प्रलयकालकेजिमिघनघट्टा ॥ बहुकृपाएतरबा
 रिचमक्कहिं ॥ जनुदशदिशिदामिनीदमकहिं ॥ गजरअतु
 रंगचिक्कारकठोरा ॥ गर्जतमनहुंबलाहकघोरा ॥ कपिलंगू
 रविपुलनभछाये ॥ मनहुइंद्रधनुउगेउसहाये ॥ उगीरे
 गुमानहुंजलधारा ॥ बाणबुंदभईदृष्टिअपारा ॥ दुहुदि
 शिपर्वतकरहिंप्रहारा ॥ वज्रपातजनुबारहिबारा ॥ रघु
 पतिकोपिबाणजरलाई ॥ घायलभेनिशिचरसमुदाई ॥
 लागतबाणबीरचिक्करही ॥ घुर्मिघुर्मिअगणितमहिप
 रही ॥ स्ववहिशैलजनुनिर्जरबारी ॥ शोणितसरिकादर
 भयकारी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कादरभयंकररुधिरसरिताब
 दीपरमअपावनी ॥ दोउकूलदलरथरेतचक्रावर्तबहती
 भयावनी ॥ ३१ ॥ जलजंतुगजपदचरतुरगरवरबिबिध
 बाहनकोगणे ॥ शरशक्तितोमरपरशुचापतरंगचर्मकम
 ठघने ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बीरपरेजनुतीरतरु ॥ मज्जा
 वहजनुफैन ॥ कादिरदेखतडरहिंजिय ॥ सुभटनकेमन
 चैन ॥ १७५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मज्जहिंभूतपिशाचबेता
 ला ॥ प्रथममहायोगिनीकराला ॥ काककंकलैभुजाउडा
 हीं ॥ एकतेएकछानिधरिखाहीं ॥ एककहहिंऐसीउसौघा

ई॥ शठतुह्यारदारिद्र्यनजाई॥ कहरतभटघायलतदगिरे
 ॥ जहंतहंमनहुंअर्धजलपरे॥ खैचहिंआंतंगृध्रतदगये॥
 जनुवनशीखेलतचित्तदये॥ बहुभटबहहिंचटेखगजा-
 हीं॥ जिमिनावरिखेलहिंसरिमाहीं॥ योगिनिभरिभरि
 खर्परिसंचहिं॥ भूतपिशाचविविधविधनांचहिं॥ भटक
 पालकरतालवजावहिं॥ चासुंडानानाविधगावहिं॥ जों
 लुकनिकरदंतकटकट्टहीं॥ खाहिंअघाहिंइवठट्टहीं॥
 कोंटिनरुंडसुंडविनुडोलहिं॥ शीर्षेपरेमहिजयजयबो-
 लहिं॥ ॥ छंद॥ ॥ बोलहिंजोजयजयसुंडरुंडप्रचंड-
 शिरविनुधावहीं॥ खगगणपरस्परअरुजियूजहिंसुभा-
 टसरपुरपावहीं॥ ३३॥ बानरनिशाचरनिकरमर्दहिराम
 वलदर्पितभये॥ संग्रामआंगनसुभटसोवहिंरामशरनि-
 करन्हिहये॥ ३४॥ ॥ दोहा॥ ॥ हृदयविचारेसिदशव-
 दन॥ भानिशिचरसंहार॥ मैअकेलकपिभालुबहु॥ मा-
 याकरींअपार॥ १७६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ देवहिंप्रभुहिं
 पयादांहिंदेखा॥ उपजाउरअतिक्षोभविशेषा॥ सरपति
 निजरथतुरतपठावा॥ हर्षसहितमातलिलैआवा॥ तेज
 पुंजरथदिव्यअनूपा॥ विहंसिचटेकोशलपुरभूपा॥ चं-
 चलनुरगमनोहरचारी॥ अजरअमरमनसमगतिकारी
 ॥ रथारुदरघुनाथहिंदेखी॥ धायेकपिवलपाइविशेषी
 ॥ सदानजाइकपिन्हकीमारी॥ तवरावणमायाविस्मारी
 ॥ सोमायारघुबीरहिंवाची॥ लखिसबकपिन्हनमानी-
 रानी॥ देखीकपिन्हानिशाचरअनी॥ बहुअंगदलक्ष्मण
 कपिचनी॥ ॥ छंद॥ ॥ बहुबालिस्तनलक्ष्मणकपीश
 विनांकिमकंदअपडर॥ जनुनिअलिखिनसमेतलक्ष्मण

जहं सोत हंचित वतर खरे ॥ ३५ ॥ निज सेन चकित बिलोकि
 हसि धनु तानि शर कोशल धनी ॥ माया हरी हरि निमिषम
 ह हर्षे सकल मर्कट अनी ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिरा
 म सब तन चितय ॥ बोले बचन गंभीर ॥ इंदु युद्ध देखहु सकल
 ॥ अमित भये कपि वीर ॥ १७७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अस
 कहिर थर धुनाथ चलावा ॥ विप्र चरण पंकज शिर नावा ॥
 तब लंकेश क्रोध करि धावा ॥ गर्जत र्ज प्रभु सन सुरव आ
 वा ॥ जीतेहु जो भट शंयुग माहीं ॥ सुनता पसमै तिन सम
 नाहीं ॥ रावण नाम जगत यश जाना ॥ लोक पजा के बंदी रा
 ना ॥ स्वर दूषण कबंध तु म मारा ॥ वधेहु व्याध इब बालि
 बिचारा ॥ निशि चर सुभट सकल संहारे ॥ कुंभकर्ण घन
 नाद हु मारे ॥ आजु बैर सब लेउनि बाही ॥ जौरण भूमि
 भागिनहि जाही ॥ आजु करौं रव लु काल ह बाले ॥ परेहु क
 कठिन रावण के पाले ॥ सुनि दुर्बचन काल बश जाना ॥ बि
 हसि बचन कहं कृपानिधाना ॥ सत्य सत्य तब सब प्रभु ना
 इ ॥ जनि जल पसि दिरवाउ मनुषाई ॥ ॥ छंद ॥ ॥ ज
 निज लपना करि सुप्रशना शहि नीति सुनि शठ करु क्षमा ॥
 संसार मह पुरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा ॥ ३७ ॥
 एक समन प्रद एक समन फल एक फलै केवल लागहीं ॥ ए
 क कहहिं करहिं न करि कहहि एक न कहि करि कर वागहीं ॥
 ॥ ३८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम बचन सुनि बिहंसि कह ॥ मोहि
 शिर बाबहु जान ॥ बैर करत न हित बड रेहु ॥ अब लागे प्रि
 य प्राण ॥ १७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहि दुर्बचन कुह दश
 कंधर ॥ कुलिश समान लागु छाडैं शर ॥ नाना कार शिली सु
 दिशि अरु बिदिशि गगन महि छाये ॥ अनल बा

एछाडेरघुबीरा॥ क्षणमहंजरेनिशाचरतीरा॥ छाडेसि
 तीव्रशक्तिरिवसिआई॥ बाणसंगप्रभुपेरिपठाई॥ कोटि
 नचक्रत्रिभूलपवारइ॥ बिसुप्रयासप्रभुकाटिनिवारइ॥
 विफलहोहिरावणशरकैसे॥ खलकेसकलमनोरथजै
 से॥ तबशतबाणसारथिहिमारेसि॥ परेउभूमिजयराम
 पुकारेसि॥ रामकृपाकरताहिउठावा॥ तबप्रभुपरमक्रो
 धउरछावा॥ ॥छंद॥ ॥भयेकुहूकुहूविरुद्धरघुपति
 तूणशायककसमसै॥ कोदंडध्वनिअतिचंडस्तनिमनु
 जादसबमारुतग्रसे॥ ३६॥ मंदोदरीउरकंपकंपितकमठ
 भूभूधरत्रसे॥ चिक्करहिंदिगगजदशनगहिमहिदेखिकौ
 तुकसरहंसे॥ ४०॥ ॥दोहा॥ ॥तानिशरासनभव
 एलगि॥ छांडेविशिरवकराल॥ नभमारगशरगएचले
 लहलहातजनुव्याल॥ १७६॥ ॥चौपाई॥ ॥चलेबा
 णसपक्षजनुउरगा॥ प्रथमहिहतेसारथीतुरगा॥ रथवि
 भंजिहतिकेतुपताका॥ गर्जोअतिअंतरबलथाका॥ तुरि
 तआपरथचटिरिवसिआना॥ अरुशरुछाडेसिवि
 धनाना॥ विफलहोइसबउद्यमनाके॥ जिमिपरद्रोहनि
 रतमनसाके॥ तबरावणदशभूलचलावा॥ बाजिचारिम
 हिमागिरिरावा॥ तुरितउठाइकोपिरघुनायक॥ छाडेअ
 तिकरालचहुशायक॥ रावणशिरसरोजबनचारी॥ च
 लेरघुनाथशिलीसुरवधारी॥ दशदशबाणभालदशमा
 रे॥ निसरिगयेचलेरुधिरपनारे॥ स्मवतरुधिरधावाबल
 वाना॥ प्रभुपुनिकृतधनुशरसंधाना॥ तीशतीररघुवार
 पवारे॥ भुजनिस्मेनशीसमहिपारे॥ काटनदांघुनिभये
 नवाने॥ रामचहोरिभुजाशिरलीणे॥ प्रभुबहुबारबाहु

शिरहये ॥ कटितजटितिपुनिचूतनभये ॥ पुनिपुनिप्रभुका
 दहिंभुजशीशा ॥ अतिकौतुकीकोशलाधीशा ॥ रहेछाड
 नभशिरअरुबाहु ॥ मानहुंअमितकेतुअरुगहु ॥ ॥ छं
 द ॥ ॥ जनुराहुकेतुअनेकनभपथस्त्रवतशोणितधाव
 हीं ॥ रघुबीरतीरप्रचंडधावहिंभूमिगिरननपावहीं ॥ ४१
 एकएकशिरशिरनिकरछेदेनभउडतइमिसोहहीं ॥ ज
 नुकोटिदिनकरकोपिजहंतहंबिधुंतुदयोहहीं ॥ ४२ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ जिमिजिमिप्रभुहरतासुशिर ॥ तिमितिमि
 होहिंअपार ॥ सेवतविषयबिबर्धजिमि ॥ नितनितनूत
 नमार ॥ १८० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दशसुरवदीरवशिरनि
 कीबादी ॥ बिसरामरणभईरिसगादी ॥ गर्जेउमूढमहा
 अभिमानी ॥ धाएहुदशहुशरासनतानी ॥ समरभूमिद
 शकंधरकोपा ॥ वर्षिबाणरघुपतिरथतोपा ॥ दंडएक
 रथदेखिनपरेऊ ॥ जनुनिहारमहंदिनकरदुरेऊ ॥ हाहा
 कारकरन्हजबकीन्हा ॥ तबप्रभुकोपिधनुषकरलीन्हा
 ॥ शरनिवारिरिपुकेशिरकाटे ॥ तेदिशिबिदिशिगगनम
 हिपाटे ॥ काटेशिरनभमारगधावहिं ॥ जयजयध्वनिक
 रिभयउपजावहिं ॥ कहलक्ष्मणसुग्रीवकपीशा ॥ कह
 रघुबीरकोशलाधीशा ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कहरामकहि-
 शिरनिकरधावहिंदेरिवमर्कटभजिचले ॥ संधानिशर
 रघुवंशमणितबशरनिशिरवेधेभले ॥ ४३ ॥ शिरमालि
 कागहिकालिकाजनुवृंदवृंदनिबहुमिली ॥ करिरुधिर
 सरिमज्जनमनहुंसंग्रामबटपूजनचली ॥ ४४ ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ पुनिरावणअतिकोषकरि ॥ छांडीशक्तिप्र
 चंड ॥ सनसुरवचलीबिभीषणहिं ॥ मनहुंकालकीदंड ॥

भालुकपिधाये ॥ तरलतमकिसंयुगमहप्राये ॥ अस्तुति
 करतदेवतेहिंदेखे ॥ भएउएकमैइनकेलेखे ॥ शठहुसदा
 मरामरणमनाये ॥ असकहिगगनपंथकहंधाये ॥ हाहा
 कारकरतसरभागे ॥ खलहुजाहुकहंमोरेआगे ॥ देखिवि
 कलसरअंगदधावा ॥ कूदिचरणगहिभूमिगिरावा ॥
 ॥ छंद ॥ ॥ गहिभूमिपाख्यौलातमाख्यौबालिस्तप्रभु
 पहिगयो ॥ संभारिउठिदशकंठघोरकठोररवगर्जतभयो ॥
 ॥ ५१ ॥ करिदापधनुषचटाइदशसंधानिशरबहुवर्षई ॥
 कियसकलभटघायलभयाकुलदेखिनिजबलहर्षई ५२
 ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवरधुपतिलंकेशके ॥ वीशभुजादश
 चाप ॥ काटेभयेवहोरिवहु ॥ जिमितीरथकेपाप ॥ १८५ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ शिरभुजवाटिदेखिरिपुकेरी ॥ भालुक
 पिन्हिरिसभईघनेरी ॥ मरतनमूढकटेंहुभुजसीशा ॥ धा
 येकोपिभालुभटकीशा ॥ बालितनयमारुतनलनीला ॥
 द्विवदमयंदमहाबलशीला ॥ विटपमहीधरकरहिंप्रहा
 रा ॥ सोडगिरितरुगाहिकपिन्हसोमारा ॥ एकनखन्हिरि
 पुवपुपविदारी ॥ भागिचलहिंएकलातन्निमारी ॥ तवन
 लनीलगिरनिचटिगयेऊ ॥ नखनिललाटविदारतभयेऊ
 ॥ रुधिरविलोकिसकोपसरारी ॥ तिनहिंधरनकहंभुजाप्र
 सारी ॥ गयेनजादिशिरनिपरफिरही ॥ जनुयुगमधुपक
 मलचन्दनचरही ॥ कोपिकूदिहोंधरंसिचहारी ॥ महिपट
 कभजेभुजामगेरी ॥ पुनिसकोपिदशधनुकरलीन्हा ॥ श
 रनिमारिघायलकपिकीन्हा ॥ हनुमदादिमूर्छितकरिवंद
 र ॥ पाइप्रदापद्वयदशकंधर ॥ मूर्छितदंष्ट्रिसकलकपि
 गारा ॥ जांचवतंधानारणगंधारा ॥ संगभालुभृधरनरुधारा ॥

मारणलगेप्रचारिप्रचारी॥भयोक्रोधरावणबलवाना॥गहि
 पदमहिपटकेभटनाना॥देखिभालुपतिनिजदलघाता॥
 कोपिमांऊउरमारेउलाता॥॥छंद॥॥उरलातघात
 प्रचंडलागतविकलरथतेमहिपरा॥गहिभालुवीशहुक
 रनिमानहुकमलनिशिवसिमधुकरा॥५३॥मूर्छितबहो
 रिविलोकिपदहतिभालुपतिप्रभुपहिंगयो॥निशिजानि
 स्यंदनघालितेहितबसूतयतनकरतभयो॥५४॥॥
 दोहा॥॥मूर्च्छाबिगतभालुकपि॥सबआयेप्रभुपास
 ॥सकलनिशाचररावणहिं॥घेरिरहेअतित्रास॥१८६॥
 ॥बोपाई॥॥तेहिनिशिमहंसीतापहंजाई॥त्रिजटा
 कहिसबकथाबुजाई॥शिरभुजबाढिसनतरिपुकेरी॥
 सीताउरभइआसघनेरी॥मुखमलीनउपजिमनचिंता॥
 त्रिजटासनबोलीतबसीता॥होहहिकहाकहसिकिनमा
 ता॥केहिविधमरिहिविश्वदुरवदाता॥रघुपतिशरशिर
 कटेहुनमरई॥विधिविपरीतचरितसबकरई॥मोरअ
 भाग्यजिआवतओही॥जेहिहोहरिपदकमलबिछोही
 ॥जेइकृतकनककपटमृगजूठा॥अजहुंसोदैवमोहिपर
 रूठा॥जेहिविधिमोहिदुरवदुसहसहाए॥लक्ष्मणकहं
 कदुबचनकहाए॥रघुपतिविरहसबिषशरभारी॥तकि
 तकिबारबारमोहिमारी॥ऐसेहुदुरवजोराखहिप्राणा
 ॥सोइविधिताहिजिआवनआना॥बहुविधकरतिबि
 लापजानकी॥करिकरिसरतिछुपानिधानकी॥कहि
 त्रिजटाशुचुराजकुमारी॥उरशरलागतमरहिंसरारी॥
 तातेप्रभुउरहतहिंनतेहि॥एहिकेहदयबसतीबैदही॥
 ॥छंद॥॥इहिकेहदयबसजानकीममजानकीउ

रवासहै॥ ममउदरभुवनअनेकलागतबाणसबकोना
 सहै॥५५॥ अससुकनतहर्षविषादउरअतिदेखिपुनिगि
 जटाकहा॥ अवमरहिंरिपुसुंदरिसुकनहुयहतजहुतुम
 संशयमहा॥५६॥ ॥दोहा॥ ॥काटतशिरहोइहिंवि
 कल॥ छुटिजाइतवध्यान॥ तवरावणहिंदुदयमहुं॥ मार
 हिंरामसुजान॥१८७॥ ॥चौपाई॥ ॥असकहिवहु
 प्रकारसमुझाई॥ पुनिनिजटानिजभवनसिधाई॥ राम
 स्वभावसुमिरिबैदेही॥ उपजीविरहव्यथाअतितेही
 ॥निशिहिंशशिहिंनिंदतिबहुभांती॥ युगसमभईसिरा
 तिनराती॥ करतिविलापमनहींमनभारी॥ रामविरहजा
 नकीदुरवारी॥ जवअतिभयेउविरहउरदाहु॥ फरकेउ
 वामनयनअरुवाहु॥ सगुणविचारिधरामनधीरा॥ अ
 वमिलहहिंहुपालुरघुवारा॥ इहांअर्धनिशिरावणजा
 गा॥ निजसारथीसनरबीजनलागा॥ शठरणभूमिलुडा
 चेहुमोहां॥ धिकधिकमंदमतिअधमतोही॥ तेंइपदगहि
 वहुविधसमुझावा॥ भोरभयेंरथचटिपुनिआवा॥ सुनि
 आगमनदशाननकेरा॥ कपिदलखरभरभएउघनेरा॥ ज
 हंतहंभूधरचिटपउपारी॥ धायेकटकटाइभटभारी॥
 छंद॥ ॥धायेजोमर्कटविकटभालुकणलकरभूधरध
 रा॥ अतिकोपिकर्णद्विप्रहारसारतभजिचलेरजनीचरा॥
 ॥५७॥ विचलाइदलवलवंतकीशशभयेंरिपुनिवारण
 नियो॥ दशदिशचपेटन्दमारिनरखनिविदारितेहिब्याकु
 लिकियो॥५८॥ ॥दोहा॥ ॥देखिमहामर्कटमवल॥ रा
 जगकीन्दविचार॥ अंतराहतभानिमियमहं॥ कृतमाया
 विस्मार॥१८८॥ ॥तामरछंद॥ ॥जवकीन्दतेंइपाय

ड॥ भयेप्रगटजंतुप्रचंड॥ बैतालभूतपिशाच॥ करधरेधनु
 नाराचा॥ ५६॥ योगिनिगहेकरबाल॥ एकहाथमनुजकपा
 ॥ करिसद्यशोणितपान॥ नाचहिंकरहिंबहुगान॥ ६०॥ ध
 रुमारुबोलहिंघोर॥ रहिपूरध्वनिचहुंओर॥ मुखवायधा
 वहिंखान॥ तबलगेकीशपरान॥ ६१॥ जहजाइमर्कटभा
 गि॥ तहंबरषतदेखहिंआगि॥ भयविकलबानरभालु॥ पु
 निलागुवर्षणबालु॥ ६२॥ जहतहंथकितकरिकीश॥ गर्ज
 उबहुरिदशशीश॥ लक्ष्मणकपीशसमेत॥ भएसकलबी
 रअचेत॥ ६३॥ हारामहारघुनाथ॥ कहिसुभटमीजहिंहा
 थ॥ यहिविधसकलबलतोरि॥ तेहिकीन्हकाटबहोरि॥
 ॥ ६४॥ प्रगटेसिबिपुलहनुमान॥ धायेंगहेंपाषाण॥ ति
 निघेरिरामहिंजाइ॥ चहुदिशिबरूथबनाइ॥ ६५॥ मार
 हुधरहुजनिजाइ॥ कटकटहिंपूछउठाइ॥ दशदिशिलंगू
 रविराज॥ तेहिमध्यकोशलराज॥ ६६॥ ॥ छंद॥ ॥
 तेहिमध्यकोशलराजसुंदरश्यामतनुशोभालही॥ जनुइं
 द्रधनुषअनेककीबरबारितुंगतमालही॥ ६७॥ प्रभुदेखि
 हर्षविषादसरउरबंदिजयजयजयकरी॥ रघुबीरएकदि
 तोरकोपिसोनिमिषमहंमायाहरी॥ ६८॥ मायाविगतकपि
 भालुहर्षेबिटपगिरिगहिसबफिरे॥ शरनिकरछाडेरामरा
 वणबाहुशिरमहिमहंगिरे॥ ६९॥ श्रीरामरावणसमरच
 रितअनेककल्यजेगावहीं॥ शतशेषशारदनिगमआगम
 तदपिपारनपावहीं॥ ७०॥ ॥ दोहा॥ ॥ कहेतासुगुण
 ॥ जडमनितुलसीदास॥ जिमिनिजबलअनु
 ॥ मेशकउडहिंआकाश॥ १६६॥ प्रसुचितयेसरसि
 ॥ व्याकुलदेखिकलेश॥ काटेशरभुजबारबहु॥ म

रैनभटलंकेश॥१६०॥ ॥चौपाई॥ ॥काटेशिरपुनिहो
 हिंअपारा॥भोगकरतजिमिवाटैमारा॥मरैनरिपुअमभय
 उविशेषा॥रामबिभीषणतनतवदेषा॥उमाकालमरुजाकी
 इच्छा॥सोप्रभुजिनकरप्रोतिपरीक्षा॥शुनुसर्वज्ञचराच
 रनायक॥प्रणतपालसरसुनिसरवदायक॥नाभीकुंडपी
 यूपवसयाके॥नाथजिअतरावणबलताके॥शूनतविभी
 षणबचनरुपाला॥हर्षिगहेकरवाणकराला॥अशुभहो
 नलगोविधनाना॥रोवहिंवहुखगालखरभाना॥बोलहिं
 खगजगआरतहेतु॥प्रगटभयेजहंतहंनभकेतु॥दशदि-
 शिदाहहोनतबलागा॥भयेउपर्वबिनुरविउपरागा॥मंदो
 दरिउरकांपतभारी॥प्रतिमास्त्रवहिनयनमगवारी॥
 ॥छंद॥ ॥प्रतिमारुदहिंपविपातनभअतिवातवहडो
 लतिमही॥वर्षहिबलाहकरुधिरकचरजअशुभअति
 शककोकहि॥७१॥उतपातअमितविलोकिसरनरवि
 कलबोलहिंजयजये॥सरसमयजानिरुपालुरघुपति
 चापशरजोरतभये॥७२॥ ॥दोहा॥ ॥आकर्षैउधनु
 अवणलगि॥छाडेशरएकतीश॥रघुनायकशायकचले
 ॥मानहुकालफणीश॥१६१॥ ॥चौपाई॥ ॥शायक
 एकनाभशिरशोषा॥अपरलगेशरभुजकरिरोषा॥लेंशि
 रवाहुचलेनाराचा॥शिरभुजहीनरुंदमहिनाचा॥धर
 गिधसेधरधावमचंडा॥तवशरहतिप्रभुहृतयुगरवंडा॥
 गर्जैउमरतघोररचभारी॥कहांरामरणहंतोंप्रचारी॥डों
 लाभूमिगिरतदशकंधर॥धुभितसिंधुसगिदिगजभू
 धर॥परैउभूमियुगरवंदचटाई॥चापिभालुमकंदससु
 दाई॥मंदोदरिआगेभुजशीशा॥धरिशरचलेजहांजग

दीशा॥प्रविशेसबनिषंगमहजाई॥देखिस्तरन्हदुंदुभीब-
जाई॥तासुतेजप्रविशेउप्रभुआनन॥हर्षेदेखिशंभुच-
तुरानन॥जयध्वनिपूरिरहीब्रह्मांडा॥जयरघुबीरप्रबल
भुजदंडा॥वर्षेहिंसमनदेवमुनिचुंदा॥जयरुपालुजय-
जयतिसुकुंदा॥ ॥छंद॥ ॥जयरुपाकंदसुकुंदहरि
मर्दननिशाचरमदप्रभो॥खलदलविदारणपरमकारण
करुणीकसदाविभो॥७३॥स्तरसिद्धमुनिगंधर्वहर्षेबा-
जदुंदुभिगहगही॥संग्रामअंगनरामअंगअनंगबहुशो-
भालही॥७४॥शिरजटामुकुटप्रसूनबिचिविचिअतिम-
नोहरराजहीं॥जसुनीलगिरिपरतडितपटलसमेतउडु-
गणआजहीं॥७५॥भुजदंडशरकोदंडफेरतरुधिरक-
णतनअतिबने॥जिमिराजमुनिअतमालरुपरबैठिवि-
पुलसुखआपने॥७६॥ ॥दोहा॥ ॥रुपादृष्टिकरि
दृष्टिप्रभु॥अभयकियेस्तरचंद॥हर्षेबानरभालुकपि॥
जयस्तरवधामसुकुंद॥१६२॥ ॥चौपाई॥ ॥पतिशिर
दीखजबहिमंदोदरि॥मूर्च्छितविकलधरणिमैस्व-
॥सुबतिचंदरोवतिउठिधाई॥तेहिउहाइरावणपहिल्या



ई॥ पतिगतिदेखति करति पुकारा॥ छूटे केशनदेहसंभारा॥
 उरताडनों करहिं विधनाना॥ रोदन करहिं प्रतापवरवाना॥
 ॥ तव बलनाथ डोलनि तधरणी॥ तेजहीन पावक शशित
 रणी॥ शेष कमठ सहि शकहिं नभारा॥ सोतनु आजु परा-
 जरि छारा॥ वरुण कुवेर करेश समीरा॥ रणसन सुख-
 धर काहुन धीरा॥ नौज बल जीतेहु काल यम सांई॥ आजु
 सो परेऊ अनाथ कीनाई॥ जगत विदित तु ह्यार प्रभुताई
 ॥ सुत परिजन बल वरणि न जाई॥ राम विमुख असहा
 ल तु ह्यारा॥ रहान कुल कोउ रोवन हारा॥ तव वश विधि
 प्रपंच सब नाथा॥ सब दिग पति तोहि नावहि माथा॥
 अवत वशिर भुज जंचु करवाहीं॥ राम विमुख यह अतु-
 चित नाहीं॥ काल विवश पति कहान माना॥ अगजगना
 थ मनुज करि जाना॥ ॥ यह छंद लेप कहै॥ ॥ छंद॥
 ॥ जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्व-
 यम्॥ जंहीन मत शिव ब्रह्मादि सर प्रिय भजे हुन हि करु
 णामयं॥ आजन्म ते पर द्रोहरत पापों यम यत वतनु अयं
 ॥ तुम हृदियोनि ज धाम राम न मा मि ब्रह्म निरामयं॥ ॥
 ॥ दोहा॥ ॥ अहं हनाथ रघुनाथ सम॥ रूपा सिंधु को
 आन॥ मुनि दुलै भजो परम गति॥ तुम हिंदी न भगवान॥
 ॥ १२३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ मंदोदरी वचन सुनिकाना॥ सु-
 र मुनि सिद्ध सब हि सरन माना॥ अज महेश नारद सनका
 दा॥ जे मुनिवर परमार थवादा॥ भारिलोचन रघु पति हिं
 निदारा॥ प्रेम मगन सब भयें उ करवारी॥ रोदन करित बि-
 लोने उ नारी॥ भयें उ विभीषण मन दुरव भारी॥ बंधु दश-
 दान दुरव भयें उ॥ नव मधु अन्न जिहि आय सुदय उ॥ ल

क्ष्मणतेहिबहुविधसमुजाये॥ सहितबिभीषणप्रभुपहिं-
 आये॥ कृपादृष्टिप्रभुताहिविलोका॥ करहुक्रियापरिहरि
 सबशोका॥ कीन्हक्रियाप्रभुआयसुमानी॥ विधिवतदेश
 कालजियआनी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मयतनयादिकनारिस
 ब॥ देइतिलांजलिताहि॥ भवनगईरघुबीरगुण॥ गणवर
 एतिमनमाहि॥ १९४॥ ॥ चौपाई॥ ॥ आइबिभीषण
 पुनिशिरनावा॥ कृपासिंधुतबअनुजबुलावा॥ तुमकपी
 शअंगदनलनीला॥ जांबवंतमारुतिगयशीला॥ सबमि
 लिजाहुबिभीषणसाथा॥ सारेहुतिलककहेउरघुनाथा
 ॥ पिताबचनमैनगरनआऊं॥ आपुसरिसकपिअनुज
 पठाऊं॥ तुरतचलेकपिस्तनिप्रभुबचना॥ कीन्हीजाइति
 लककीरचना॥ सादरसिंहासनबैठारी॥ तिलकसारिअ
 स्ततिअनुसारी॥ जोरिपाणिसबहींशिरनाये॥ सहित
 बिभीषणप्रभुपहिंआये॥ तबरघुबीरबोलिकपिलीन्हे
 ॥ कहप्रियबचनसरवीसबकीन्हे॥ ॥ छंद॥ ॥ किन्हे
 उसरवीसबकहिसुबाणीबलतुह्मारेरिपुहयो॥ पायो
 बिभीषणराजतिहुंपुरयशतुह्मारौनितनयो॥ ७७॥ मो-
 हिसहितसबकीरतितुह्मारीपरमपीतिजेगाइहै॥ संसा
 रसिंधुअपारपारप्रयासबिनुनरपाइहै॥ ७८॥ ॥ दोहा
 ॥ ॥ प्रभुकेबचनअवणस्तनि॥ नहिअघातकपिपुंज॥
 बारहिंबारशिरनावहिं॥ गहेरामपदकंज॥ १९५॥ ॥ चौपा
 ई॥ ॥ पुनिप्रभुबोलिलियेहनुमाना॥ लंकाजाहुकहेउ
 भगवाना॥ समाचारजानकिहिसुनावहु॥ तासुकुशल
 लेतुमचलिआबहु॥ तबहनुमंतनगरमहंआये॥ सुनि-
 निशिचरीनिशाचरधाये॥ पूजावहुप्रकारतिन्हकीन्हा॥

जनकसुतादिरवाईसवदीन्हा॥दूरहितेंप्रणामकपिकीन्हा॥
 ॥रघुपतिदूतजानकीचीन्हा॥कहहुतातप्रभुहृपानिकेता॥
 ॥कुशलअनुजकपिसेनसमेता॥सवविधकुशलकोशलप्र
 धीशा॥मातुसमरजीतेउदशशीशा॥अविचलराजविभी
 षणपावा॥सुनिकपिवचनहर्षउरछावा॥ ॥छंद॥ ॥
 अतिहर्षमनतनुपुलकलोचनसजलपुनिपुनिकहरमा॥
 कादेंतोहित्रैलोक्यमहंकपिकिमपिनहिवाणीसमा॥७६॥
 ॥शुभुमातमैपाएउंअरिवलजगराजआजुनसंशयं॥रण
 जीतिरिपुदलबंधुयुतपश्यामिरामनमामयं॥८०॥ ॥
 दोहा॥ ॥शुभुसुतसदगुणसकलतब॥हृदयबसोहनु
 मंत॥सानुकूलरघुवंशमणि॥रहहिसमेतअनंत॥१६६॥
 ॥चौपाई॥ ॥अवसोइयतनकरहुतुमताता॥देखौन
 यनइयाममृदुगाता॥तबहनुमंतसमपहिंआएउ॥जनक
 सुताकरकुशलसुनाएउ॥सुनिसंदेशपतंगकुलभूषण
 ॥वांलिलियंकपिराजविभीषण॥मारुतसुतकेसंगसि-
 धाचहु॥सादरजनकसुतालेआवहु॥तुरतहिंसकल-



गयेजहंसीता॥सेवहिंसबनिशिचरीविनीता॥वेगिबिभी
 षएतिन्हहिंशिखावा॥तिन्हबहुविधमज्जनकरवावा॥ब
 हुप्रकारभूषणपहिराए॥शिविकारुचिरसाजियुनिल्याए
 तहिपरहर्षिचटीबैदेही॥सुमिरिरामसुखधामसनेही॥
 देखनभालुकीशबहुधाए॥रक्षककोपिनिवारणआए॥
 बेतपाणिरक्षकचहुंपासा॥चलेसकलमनपरमहुलासा
 ॥कहरघुबीरकहामममानहु॥सीतहिसखापयादेहिंआ
 नहु॥देखहिंकपिजननीकीनाई॥बिहंसिकहारघुबीर
 गोसांई॥सुनिप्रभुबचनभालुकपिहर्षे॥नभतेसरन्ह
 समनबहुवर्षे॥सीताप्रथमअग्निमहंराखी॥प्रकटकी
 न्हचहंअंतरसाक्षी॥ ॥दोहा॥ ॥तेहिंकारणकरुणा
 यतन॥कहेकछुकदुर्बाद॥सनतजातुधानीसकल॥ला
 गीकरणविषाद॥१२७॥ ॥चौपाई॥ ॥प्रभुकेबचन
 शीर्षधरिसीता॥बोलीमनक्रमबचनपुनीता॥लक्ष्मण
 होहुधर्मकेनेगी॥पावकप्रगटकरहुतुमबेगी॥सुनिल
 क्ष्मणसीताकीबाणी॥बिरहबिबेकधर्मनयसानी॥लो
 चनसजलजोरिकरदोऊ॥प्रभुसनकछुकहिशकतनओ
 ऊ॥देखिरामरुखलक्ष्मणधाए॥प्रगटहुताशदारुबहुला
 ए॥प्रबलअनलबिलीकिबैदेही॥हृदयहर्षकछुभयन
 हितेही॥जोमनकर्मबचनउरमाही॥तजिरघुबीरआ
 नगतिनाही॥तौकृशानुसबकीगतिजाना॥मोकहुंहोहु
 श्रीखंडसमाना॥ ॥छंद॥ ॥श्रीखंडसमपावकप्र
 विशाकियसुमिरिप्रभुपदमैथिली॥जयकोशलेशमहे
 शबंदितचरणरजअतिनिर्मली॥६१॥प्रतिबिंबअरु
 लौकिककलंकप्रचंडपावकमहंजरे॥प्रभुचरितकाहुन



लखेउ स्फुरमुनिसिद्ध सबदेखहिंखरे ॥ ८२ ॥ तवअनलभू
 स्फुररूपकरगहिसत्यश्रीश्रुतिविदितसो ॥ जिमिक्षीरसा
 गरइंदिरागमहिंसमर्पिअनि सो ॥ ८३ ॥ सोइरामवामवि-
 भागराजनिरुचिरअतिशोभाभली ॥ नवनीलनीरजनिक
 टमानहुंकनकपंकजकीकली ॥ ८४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ह
 रिसुमनवर्षहिंविबुध ॥ वाजहिंगगननिसान ॥ गावहिं-
 किन्नरअपसरा ॥ नाचहिंचटीविमान ॥ ९६ ॥ ॥ चौपा
 डे ॥ ॥ तवरघुपतिअनुशासनपाई ॥ मातलिचलेउचर
 णशिरनाई ॥ आएदेवसदास्वारथी ॥ वचनकहहिंजनु
 परमारथी ॥ दानबंधुदयालरघुगया ॥ देवकीन्हदेवन
 परदाया ॥ विन्वटोहरनखलअतिकामी ॥ निजअघगए
 उकुमारगगामी ॥ तुमसर्वजब्रह्मअविनाशी ॥ सदाएक
 रमसहजउदासी ॥ अकलअगुणअजअनघअनाम
 य ॥ अजितअमांयशक्तिकरुणामय ॥ मीनकमटभृक
 रनरहरी ॥ वामनपरशुगमवपुधरि ॥ जवजवनाथरु
 रन्हदुरतपावा ॥ नानानलुधरितुमहिंनशावा ॥ दहरव-

लमलिनसदा स्फुरद्रोही ॥ कामलोभमदरतञ्चतिकोही ॥
 अधमशिरोमणितवपदपावा ॥ यहहमरेमनञ्चरजञ्चा
 वा ॥ हमदेवतापरमञ्चधिकारी ॥ स्वारतरतप्रभुभक्तिवि
 सारी ॥ भवसागरसंततहमपरे ॥ अबप्रभुपाहिशरणञ्च
 नुसरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करिविनतीस्फुरसिद्धसब ॥ रहे
 बिरंचिकरजोरि ॥ अतिसप्रेमतनुपुलकित ॥ अस्ततिक
 रतबहोरि ॥ १६६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जयरामसदास्फुरवधा
 महरे ॥ रघुनायकसायकचापधरे ॥ भवबारणदारणसिं
 हप्रभो ॥ गुणसागरनागरनाथविभो ॥ ८५ ॥ तनुकामञ्च
 नेकअनूपछबी ॥ गुणगावतसिद्धमुनींद्रकबी ॥ जशपा
 वनरावणनागमहा ॥ स्वगनाथयथाकरिकोपगहा ॥ ८६ ॥
 जनरंजनभंजनशोकभयं ॥ गतक्रोधसदाप्रभुबोधमयं
 ॥ अवतारउदारअपारगुणं ॥ महिभारविभंजननानघ
 नं ॥ ८७ ॥ अजव्यापकएकअनादिसदा ॥ करुणाकरराम
 नमामिसुदा ॥ रघुवंशविभूषणदूषणहा ॥ कृतभूषविभीष
 णदीनरहा ॥ ८८ ॥ गुणज्ञाननिधानअमानमजं ॥ नितिग
 मनमामिविभुंविरजं ॥ भुजदंडप्रचंडप्रतापबलं ॥ खलवृ
 दनिकंदमहाकुशलं ॥ ८९ ॥ बिनुकारणदीनदयालुहितं ॥
 छविधामनमामिरमासहितं ॥ भवतारणकारणकार्यपरं
 ॥ मनसंभवदारुणदोषहरं ॥ ९० ॥ शरचापमनोहरतूणिध
 रं ॥ जलजारुणलोचनभूषवरं ॥ स्फुरवमंदिरसुंदरश्रीरम
 णं ॥ मदमारमहाममताशमनं ॥ ९१ ॥ अनबद्यअखंडन
 गोचरसो ॥ सबरूपसदासबहोयनसो ॥ इतिवेदवदंति
 नदंतिकथा ॥ रविआतपभिन्नमभिन्नयथा ॥ ९२ ॥ कृत
 कृत्यविभोसबबानरए ॥ निरखतितबानरसादरए ॥ धि

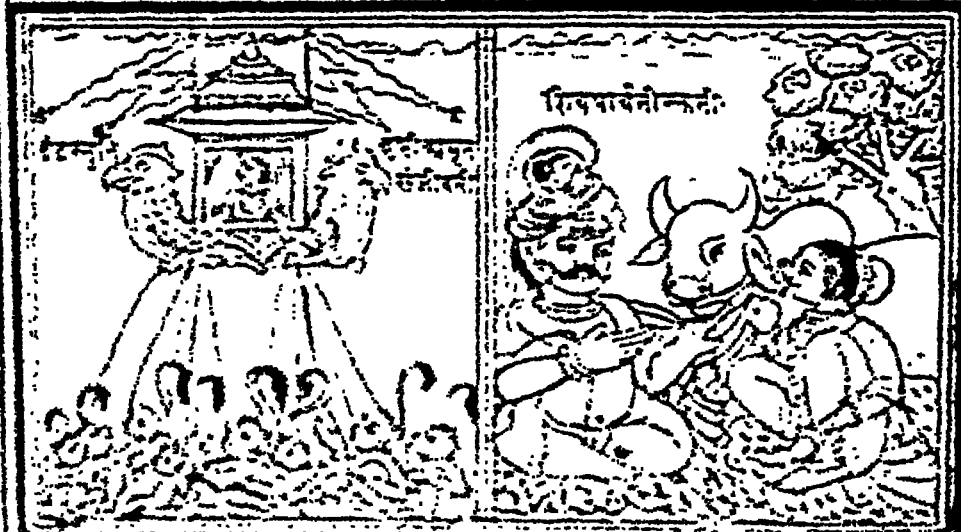
कजीवनदेवशरीरहरे ॥ सबभक्तिविनाभवभूलिपरे ॥ ६३ ॥
 अबदीनदयालुदयाकरिए ॥ मतिमोरिविभेदकरीहरिए ॥
 ॥ जेहितेंविपरीतकृपाकरिए ॥ दुरवसोस्तरवमानिस्तरवी-
 चरिए ॥ ६४ ॥ खलखंडनमंडनरम्यक्षमा ॥ पदपंकजसे-
 वितशंभुउमा ॥ नृपनायकदेवरदानमिदं ॥ चरणांबुजमे-
 मसदाशुभदं ॥ ६५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विनयकीन्हचतुरान-
 न ॥ प्रेमसुलकअतिगात ॥ शोभासिंधुविलोकत ॥ लोचन-
 नहीअघात ॥ २०० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेहिअवसरदश-
 रथतहंआए ॥ तनयविलोकिननयजलछाये ॥ अनुजस-
 हितप्रभुबंदनकीन्हा ॥ आशिर्वादपितातबदीन्हा ॥ तातस-
 कलतवपुएयप्रभाऊ ॥ जीत्योअजयनिशाचरराऊ ॥ सुनि-
 स्तनवचनप्रीतिअतिवादी ॥ नयनसलिलरोमावलिठा-
 दी ॥ रघुपतिप्रथमप्रेमअनुमाना ॥ चितपितहिंदीन्हेंउद-
 दज्ञाना ॥ तातेंउमामोक्षनहिपावो ॥ दशरथभेदभक्तिमन



आवो ॥ नगुणोपासकमोक्षनलेंदी ॥ तिन्हकहरामभक्तिनि-
 जदेंदी ॥ बारबारकारप्रभुदिप्रणामा ॥ दशरथहरायगग-
 नकरधामा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अनुजजानकीसहितप्रभु ॥

कुशलकोशलाधीश॥ शोमादेखिहरषमन॥ अस्तुतिकर
 सरईश॥ २०१॥ ॥ लघुछंद॥ ॥ जयरामशोभाधाम
 ॥ दायकप्रणतविश्राम॥ धृततूणीवरशरचाप॥ भुजदंडप्र
 बलप्रताप॥ २०२॥ जयदूषणरिखरारि॥ मर्दननिशाचरधा
 रि॥ इहदुष्टमारेहुनाथ॥ भएदेवसकलसनाथ॥ २०३॥ ज
 यहरणधरणीभार॥ महिमाअपारउदार॥ जयरावणा
 रिखरारि॥ मर्दननिशाचरधारि॥ २०४॥ जयरावणारिह
 पाल॥ कियेजातुधानविहाल॥ लंकेशअतिबलगर्व॥ कि
 येवश्यसरगंधर्व॥ २०५॥ सुनिसिद्धनरखगनाग॥ हठिपं
 थसबकेलाग॥ परद्रोहरतिअतिदुष्ट॥ पायोसोफलपापि
 ष्ट॥ २०६॥ अबसनहुदीनदयालु॥ राजीवनयनविशालु
 ॥ मोहिरहाअतिअभिमान॥ नहिकोऊमोहिसमान॥ २०७
 अबदेखिप्रभुपदकंज॥ गतमानप्रददुखपुंज॥ कोउब्र
 ह्मनिर्गुणध्याव॥ अव्यक्तजेहिश्रुतिगाव॥ २०८॥ मोहिभा
 वकोशलभूष॥ श्रीरामसगुणस्वरूप॥ वैदेहीअनुजसमे
 त॥ ममहृदयकरहुनिकेत॥ २०९॥ मोहिजानियेनिजदा
 स॥ दैभक्तिरमानिवास॥ ॥ छंद॥ ॥ दैभक्तिरमानि
 वासत्रासहरणशरणक्षयदायकं॥ सरवधामरामनमा
 मिकामअनेकछबिरघुनायकं॥ २१०॥ सरहृंदरंजनहृद
 भंजनमनुजतनुअतुलितबलं॥ ब्रह्मादिशकरसेव्यराम
 नमामिकरुणाकोमलं॥ २११॥ ॥ दोहा॥ ॥ अबकरि
 कृपाविलोकिमोहि॥ आयसुदेहुकृपालु॥ कहाकरींसुनि
 प्रियवचन॥ बोलेदीनदयालु॥ २१२॥ ॥ चौपाई॥ ॥
 शृणुसरपतिकपिभालुहमारे॥ परेभूमिनिशिचरन्हजे
 मारे॥ ममहितलागितजेईन्हमाणा॥ सकलजिआउस

रेशसुजाना॥ शृणुखगेशप्रभुकेइहबाणी॥ अतिअगाध
 जानहिमुनिजानी॥ प्रभुशक्रत्रिभुवनमारिजिआई॥ के
 वलशक्रहिदीन्हवडाई॥ सुधावरषिकपिभालुजिआए॥
 हरषिउदेसवप्रभुपहंआए॥ सुधावृष्टिभईदुहुंदलऊप
 र॥ जिएभालुकपिनहिरजनीचर॥ रामाकारभएतिन्हके
 मन॥ मुक्तभएछूटेभवबंधन॥ सरअंसिकसवकपिअ
 रुरुक्षा॥ जिएसकलरघुपतिकीइच्छा॥ रामसकोपदीन
 हितकारी॥ कीन्हमुक्तनिशाचरजारी॥ रवलमलधामका
 मरतरावण॥ गतिपाईजोमुनिवरपावन॥ ॥दोहा॥ ॥
 सुमनवरषिसवसरचले॥ चदिचदिरुचिरविमान॥
 देखिसुअवसरप्रभुपहिं॥ आएशंभुसुजान॥ २०३॥ पर
 मप्रातिकरजोरियुग॥ नलिननयनभरिवारि॥ पुलकि
 नतनुगदगदगिरा॥ विनयकरतत्रिपुरारि॥ २०४॥ ॥



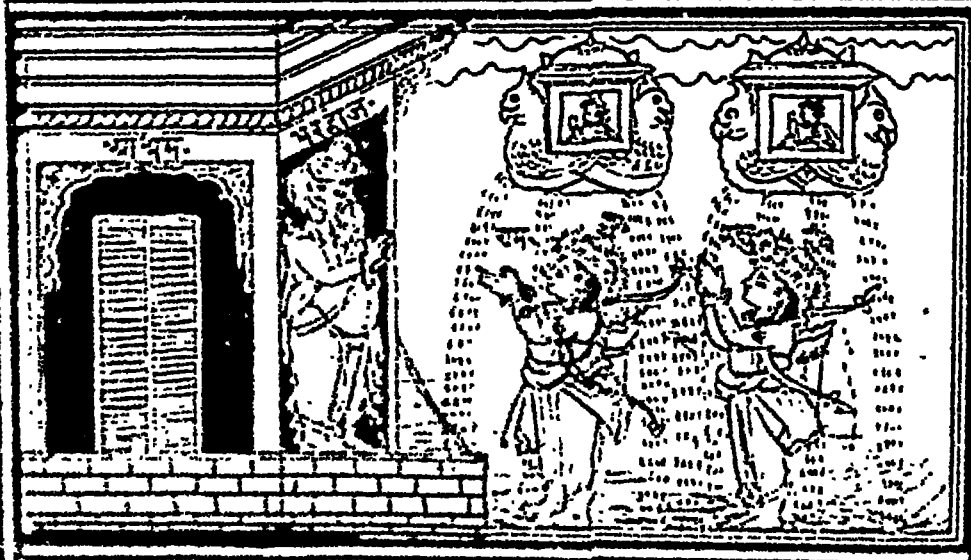
॥नीपाई॥ ॥नंदीचंदेमहागणमंगा॥ गोभितमानगो
 धेअरधंगा॥ जलकगंगशिरचंद्रनिलारा॥ नीलकंदलुधि
 गनलकीआरा॥ करखपुनगरेनरशिरमाला॥ अहिकुल

पतिश्रुतिगरेविशाला॥तीननयनपिंगलशिरजूटा॥श्वेत
विभूतिदेहअतिछूटा॥डिमिडिमिडिमिडमरूकरबाजै॥
शृंगीगरेमृगछालविराजै॥तरुणअरुणअंबुजसमचर
णा॥मयदुतिभक्तहृदयतमहरणा॥मणिविभूतिभूषण
त्रिपुरारी॥आननशरदचंद्रछबिहारी॥इहिविधिसौह-
कामरिपुकैसे॥धरेशरीरशांतरसजैसे॥ ॥दोहा॥ ॥
नाशिलंकपतिसपनसब॥बैठेकोशलाधीश॥संगचारि
गंधर्बगण॥गएउतहांगिरीश॥२०५॥परमप्रीतिकरजोरि
जुग॥कमलनयनभरिवारि॥पुलकगातगदगदगिरा॥वि
नयकरतत्रिपुरारि॥२०६॥ ॥छंद॥ ॥मामभिरक्षय
रघुकुलनायक॥धृतबरचापरुचिरकरसायक॥मोहम
हाघनपटलप्रभंजन॥संशयविपिनअनलस्कररंजन॥
॥१०६॥अगुणसगुणगुणमंदिरसुंदर॥भ्रमतमप्रब
लप्रतापदिवाकर॥कामक्रोधमदगजपंचानन॥वसहु
निरंतरममयनकानन॥१०७॥विषयमनोरथपुंजकंज
वन॥प्रबलतुषारउदारपारमन॥भववारिधिमंदरपर
मंदर॥वारयतारयसंस्तुतिदुस्तर॥१०८॥श्यामगात्ररा
जीवबिलोचन॥दीनबंधुप्रणतारतमोचन॥
कीसहितनिरंतर॥वसहुरामनृपममउरअंतर॥मुनिरं
जनमहिमंडलमंडन॥तुलसिदासप्रभुत्रासविस्वंडन॥
॥१०९॥ ॥दोहा॥ ॥नाथजबहीकोशलपुरी॥होइ
हितिलकतुह्यार॥कृपासिंधुमैआउब॥देखनचरितउ
दार॥२०७॥ ॥चौपाई॥ ॥करिविनतीजबशंभुसि
धाए॥तबप्रभुनिकटबिभीषणआए॥नाइचरणशिर
कहिमृदुबाणी॥बिनयसनहुप्रभुशारंगपाणी॥कुश

लसदनप्रभुरावणमारा॥ पावनजशत्रिभुवनविस्तारा॥
 दीनमलीनहीनमतिजाती॥ मोपरकृपाकीन्हबहुभांती॥
 अवजनगृहपुनीतप्रभुकीजै॥ मज्जनकरियसमरअम
 छीजै॥ देखिकोशमंदिरसंपदा॥ देहुकृपालुकपिन्हकहां
 मुदा॥ सबविधनाथमोहिअपनाये॥ पुनिमोहिसहित
 अवधप्रभुजाये॥ सुनतबचनमृदुदीनदयाला॥ सज
 लभयेदोउनयनबिशाला॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तोरकोश
 गृहमोरसब॥ सत्यबचनशृणुआत॥ भरतदशासुमिरा
 तमोहि॥ निमिषकल्पसमजात॥ २०८॥ तापसवेषगात्रकृ
 श॥ जपतनिरंतरमोहि॥ देखौवेगिसोजतनकरु॥ सरखा
 निहोरौतोहि॥ २०९॥ बीतेअवधिजाउंजौ॥ जिअतनपा
 औवीर॥ सुमिरतअनुजप्रीतिप्रभु॥ पुनिपुनिपुलकश
 रीर॥ २१०॥ करहुकल्पभरिराजतुह्म॥ मोहिसुमिरहुम
 नमांहीं॥ पुनिममधामपाइहुहु॥ जहांसंतसबजाहिं॥
 ॥ २११॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनतविभीषणवचनरामके
 ॥ हरषिगहेपदकृपाधामके॥ वानरभालुसकलहरषाने॥
 गहिप्रभुपदगुणविमलबरवाने॥ वहुरिविभीषणभवन
 सिधावा॥ मणिगणवसनविभानभरावा॥ लैपुण्यकप्रभु
 आगैगया॥ हंसिकेकृपासिंधुतबभाषा॥ चटिविमानशृ
 णुसखाविभीषण॥ गगनजाइवर्षहुपटभूषण॥ नभपर
 जाइविभीषणनवहीं॥ वर्षिदियेमणिभूषणसबहीं॥ जो
 जेहिमनभावेसोलेई॥ मणिसुरवमेलिडारिकपिदेई॥
 हसतरामसियअनुजसमेता॥ परमकौतुकीकृपानिके
 ना॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुनिजहिंअ्याननपावहिं॥ नेतिने
 ति कहबेद॥ ह्यासिंधुरांडकपिनसों॥ करतअनेकवि

नोद ॥ २१२ ॥ उमायोगजपदानतप ॥ नानाव्रतमरवनेम ॥ रा
 मकृपानहिकरहिंतसि ॥ जसिनिःकेवलप्रेम ॥ २१३ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ भालुकपिनपटभूषणपाये ॥ पहिरिपहिरि
 रघुपतिपहिंआये ॥ नानाजिनिसदेखिप्रभुकीशा ॥ पुनि
 पुनिहंसतकोशलाधीशा ॥ चितैसबनिपरकीन्हीदाया ॥
 बोलेमधुरबचनसरराया ॥ तुह्मरेबलमैरावणमारा ॥ ति
 लकविभीषणकहंपुनिसारा ॥ निजनिजगृहअबतुमसा
 बजाहू ॥ सुमिरेहुमोहिडरपेहुजनिकाहू ॥ सुनतबचन
 परमाकुलवानर ॥ जोरिपाणिबोलेसबसादर ॥ प्रभुजो
 करहुतुमहिंसबशोहा ॥ हमरेहोतबचनसुनिमोहा ॥ दी
 नजानिकपिकियेसनाथा ॥ तुमत्रैलोक्यईशरघुनाथा ॥
 सुनिप्रभुबचनलाजहममरहीं ॥ मशककबहुंरवगपति
 हितकरहीं ॥ देखिरामरुषवानरअक्षा ॥ प्रेममगननहिंगृ
 हकीइच्छा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुपेरितकपिभालुसब ॥
 रामरूपउरराषि ॥ हर्षविषादसमेतसब ॥ चलेबिनयबहु
 भांषि ॥ २१४ ॥ कपिपतिनीलअक्षपति ॥ अंगदनलहनुमा
 न ॥ सहितविभीषणअपरजे ॥ यूथपकपिबलवान ॥ २१५
 कहिनशकहिंकछुप्रेमबश ॥ भरिभरिलोचनबारि ॥
 रवचितवहिरामतन ॥ नयननिमेषनिवारि ॥ २१६ ॥ ॥
 चौपाई ॥ ॥ अतिशयप्रीतिदेखिरघुराई ॥ लीन्हेसक
 लविमानचढाई ॥ मनमहंविप्रचरणशिरनावा
 शहिंबिमानचलावा ॥ चलतविमानकोलाहलहोई ॥ जय
 रघुबीरकहैसबकोई ॥ सिंहासनअतिउच्चमनोहर ॥
 सियसमेतबैठेप्रभुतापर ॥ राजतरामसहितभाभिनी ॥
 मेरुभृंगजनुघनदामिनी ॥ रुचिरविमानचलाअतिआ

तुर॥ कीन्हीसमनवृष्टिहर्षेस्तर॥ परमस्तरवदचलित्रिवि
 धवयारी॥ सागरसरनिर्मलभईवारी॥ शगुणहोहींसंद
 रचहुं पाशा॥ मनप्रसन्ननिर्मलआकाशा॥ कहरघुबीर
 देवरणसीता॥ लक्ष्मणहतेउड्हांइंद्रजीता॥ अंगदहनू
 मानकेमारे॥ रणमहंपरेनिशाचरभारे॥ कुंभकर्णरावण
 दौभाई॥ इहांहतेउंस्तरमुनिदुरवदाई॥ ॥दोहा॥ ॥इ
 हांसेतुवांध्योअरु॥ थापेउंशिवस्तरवधाम॥ सीतासहित
 कृपायतन॥ शंभुहि कीन्हप्रणाम॥ २१७॥ जहंजहंकृपासिं
 धुवचन॥ कीन्हवांसविआम॥ सकलदेखाएजानकिहिं॥
 कहिकहिसबकेनाम॥ २१८॥ ॥चौपाई॥ ॥सपदिवि



माननहांचनिआवा॥ दंडकवनजहंपरमसहावा॥ कुंभजा
 जादिमुनिनायकनाना॥ गयेगमसबकेअस्थाना॥ सक
 लअपिन्हसोंपाइआशीपा॥ आयेचित्रकूटजगदाशा॥
 नहंकरिअपिन्हकरिमंतापा॥ चन्दाविमाननहांतेचोपा॥ ब
 हुरिगमजानकीहिदेखाई॥ यमुनाकलमलहरणिसुहा
 ई॥ मुनिदेखीस्तरसरीपुनीता॥ रामकहाप्रणामकरुसी

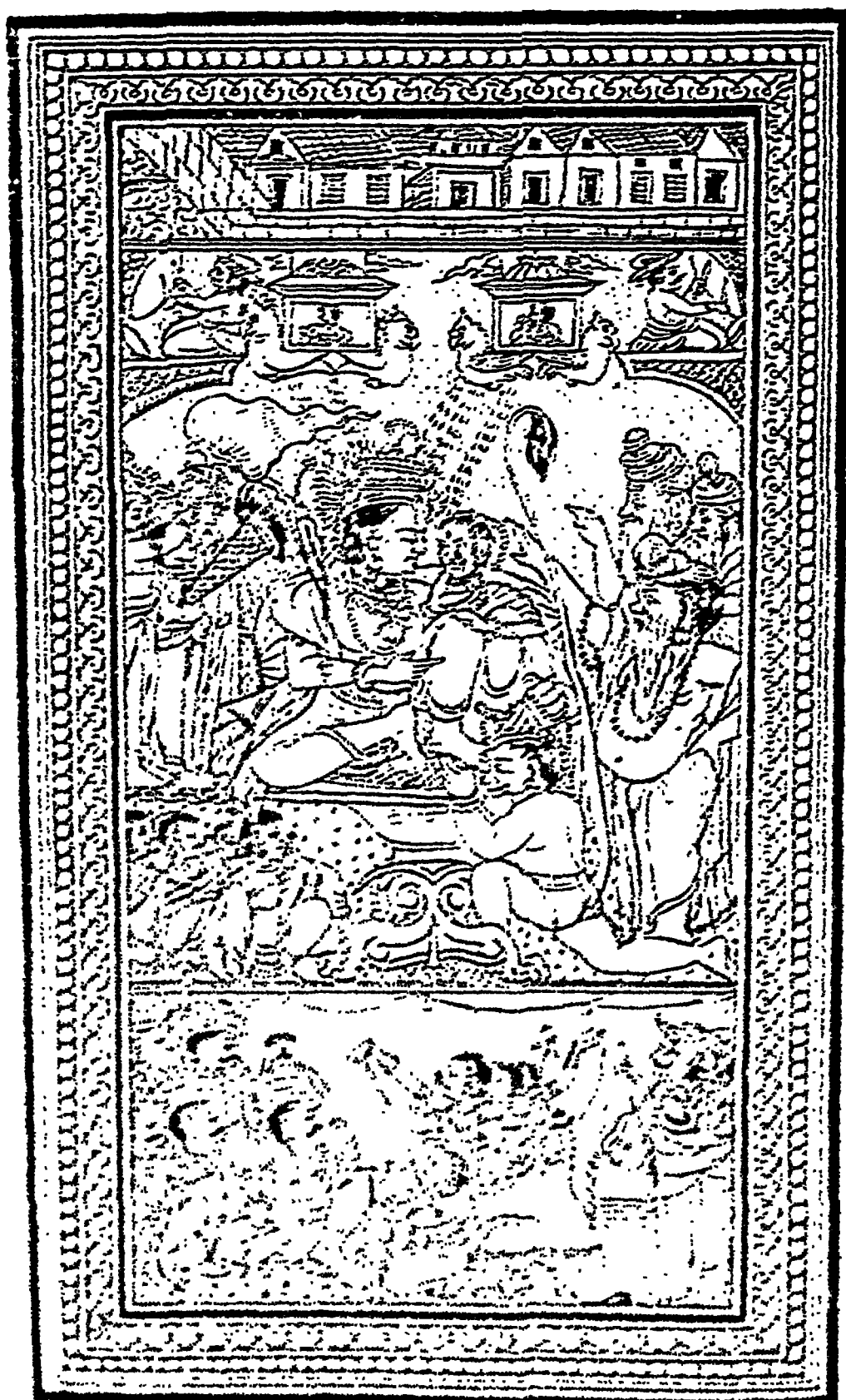
ता ॥ तीरथपतिपुनिदीखप्रयागा ॥ देखतजाहिपापसब-
भागा ॥ देखिरामपावनपुनिवेणी ॥ हरणशोकसुरलोक-
निसेनी ॥ देखहुअवधपुरीअतिपावनि ॥ त्रिविधतापभ-
वरोगनशावनी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सीतासहितअवधकहं
॥ कीन्हकृपालुप्रणाम ॥ सजलविलोचनपुलकतनु ॥ पुनि
पुनिहर्षितराम ॥ २१६ ॥ पुनिप्रभुआइत्रिवेणिमहं ॥ हर्षित
मज्जनकीन्ह ॥ कपिन्हसमेतमहीसरन्हि ॥ दानविविधवि-
धदीन्ह ॥ २२० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुहनुमंतहिकहाबुजा
ई ॥ धरिबहुसूपअवधपुरजाई ॥ भरतहिकुशलहमार-
सनाहु ॥ समाचारलैपुनिचलिआवहु ॥ तुरंतपवनसुत
गवनतभएऊ ॥ तबप्रभुभरद्वाजपहिगएऊ ॥ नानाविधिपू-
जासुनिकीन्ही ॥ अस्तनिकरिपुनिआशिषदीन्ही ॥ सुनि
पदबंदियुगलकरजोरी ॥ चटिबिमानप्रभुचलेबहोरी ॥ इ-
हानिषादसुनाप्रभुआए ॥ नावनावकहिलोकबुलाए ॥
सरसरिलांधिजानचटिआवा ॥ उतरेतहंप्रभुआयस-
पावा ॥ तबसीतापूजीसरसरी ॥ बहुप्रकारपुनिचरण-
न्हिपरी ॥ दीन्हअशीषमुदितमनगंगा ॥ सुंदरितबअहि-
वातअभंगा ॥ सुनतहिंगुहधावाप्रेमाकुल ॥ आवानिक
टपरमसरवसंकुल ॥ प्रभुहिविलोकिसहितबैदेही ॥ परे
उअवनितनुशुधिनहितेही ॥ परमप्रीतिविलोकिरघुरा-
ई ॥ हर्षिउठाइलीन्हउरलाई ॥ ॥ छंद ॥ ॥ लियहृद-
यलाइकृपानिधानसुजानरामरमापति ॥ बैठारिपरम
समीपपूछीकुशलसोंकरिबिनती ॥ १११ ॥ अबकुशल
बलोकिबिरंचिशंकरसेव्यजे ॥ सरवधामपू-
रणकामरामनमामिरामनमामिते ॥ ११२ ॥

धमनिषादसोहरिभरतज्यौउरलाइयो॥मतिमंदतुलसी
 दाससोप्रभुमोहबशविसराइयो॥११३॥यहरावणारिच
 रित्रपावनरामपदरतिप्रदसदा॥कामादिहरविज्ञानकर
 स्तरसिद्धमुनिगावहिसुदा॥११४॥ ॥दोहा॥ ॥सम
 रविजयरघुवीरके॥जेसुनहिंसंतसुजान॥विजयवि
 बेकविभूतिनित॥नितहिदेहिभगवान॥२२१॥यहकलि
 कालमलायतन॥मनकरिदेखुविचार॥श्रीरघुनायक
 नामतजि॥नहिकलुआनअधार॥२२२॥ ॥इति
 श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविम
 लवैराग्यसंपादनोनामषष्ठःसोपानःसमाप्तः॥ ॥
 श्रुभंभवतु॥ ॥सिद्धिरस्तु॥ ॥श्रीसीतारामचंद्रार्प
 णमस्तु॥ ॥दोहा॥ ॥सुग्रीवादिकभालुकपि॥रहेरा
 महितपूरि॥श्रीधररघुवरआसरे॥भयेविभीषणभूरि॥
 ॥१॥ ॥ध॥ ॥इतिलंकाकांडःसमाप्तः॥ ॥



॥इतिलंकाकांडसमाप्तम्॥

श्री
अथ
तुलसिदास
कृतरामायण
उत्तरकांड
प्रारंभः



॥ श्रीसीतारामचंद्राभ्यां नमः ॥

॥ अथ उत्तरकाण्डं लिख्यते ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥

केकीग्रीवाभनीलसरवरविलसद्भिप्रपादाब्जचिन्हं शो
भाद्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा स्तुप्रसन्नम् ॥ पा
णौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं नौ मीढ्यं
जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ १ ॥ कौशलेन्द्र
पदकंजमंजुलौ कमलयोनिमहेश्वरबन्दिनौ ॥ जानकीकर
सरोजलालितौ चिंतकस्य हृदया लिसंगिनौ ॥ २ ॥ कुंदइंदुदं
गौरसुंदरमंबिकापतिमभीष्टमंदिरम् ॥ कारुणीककलकं
जलोचनं नौ मिशंकरमनंगमोचनम् ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥
रहा एक दिन अबधिकर ॥ अति आरत पुरलोग ॥ जहंत हं
शोचहिं मारिनर ॥ कृशतनुरामवियोग ॥ १ ॥ सगुण हीहिं सु
दर सकल ॥ मन प्रसन्न सब केर ।

नु ॥ नगर रम्य चहुं फेर ॥ २ ॥ क ॥
आनंद अस होई ॥ आये प्रभुसिय अनुज युत ॥
त अस कोई ॥ ३ ॥ भरत नयन भुजदक्षिण ॥ हं
हिं बार ॥ जानि सगुण मन हर्ष अति ॥ लागे करण विचार ॥
॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रहा एक दिन अबधि अधारा ॥

जत मन दुरवभये उ अपारा ।
उ ॥ जानि कुटिल प्रभु मोहि बिसरा एउ ॥
एब डभागी ॥ राम पदारविंद अनुरागी ॥ कपटी कुटिल मो
हि प्रभु चीन्हा ॥ ताते नाथ संग नहिलीन्हा क
ऊँ प्रभु मोरी ॥ नहिनि स्तार कल्प शत कोरी ।

प्रभुमाननकाऊ॥दीनबंधुअतिमृदुलस्तभाऊ॥मोरेजि
 यभरोसदृढसोई॥मिलहहिंरामशगुणशुभहोई॥बीतेअ
 वधिरहेंजौपाणा॥अधमकवनजगमोहिसमाना॥ ॥
 दोहा॥ ॥रामविरहसागरमहं॥भरनमंगनमनहोत॥बि
 प्ररूपधरिपवनस्त॥आएगएउजिमिपोत॥५॥वैठेदेखि
 कुशासननि॥जटासुकुटकुशगात॥रामरामरघुपतिजप
 त॥स्ववतनयनजलजात॥६॥ ॥चौपाई॥ ॥देखत
 हनुमानअतिहर्षैउ॥पुलकगातलोचनजलवर्षैउ॥मन
 महं बहुतभांतिस्वरवमानी॥बोलेउअवणसुधासमवाणी
 ॥जासुविरहशोचहुदिनराती॥रटहुनिरंतरगुणगणपा
 ती॥रघुकुलतिलकस्वरवनस्वरदाता॥आयेकुशलदेव
 सुनिवाता॥रिपुरणजीतिसुयशस्वरगात॥सीताअनुज
 सहितप्रभुआवत॥श्रुएतवचनविसरेसबदुखा॥तृषा
 वंतजनुपावपिचूपा॥कोतुमतातकहांतेआए॥मोहिपरमा
 प्रियवचनस्तनाए॥मारुतस्तमेकपिहनुमाना॥नाममो
 रमृगुकृपानिधाना॥दीनबंधुरघुपतिकरकिंकर॥श्रुनत
 भक्तभेटेउठिस्तादर॥मिलनयेमनहिहृदयसमाता॥नय
 नअवतजलपुलकिनगाता॥कपितवदरशसकलदुरव
 वानं॥मिलेअनुमोदिरामपिरीते॥वारवारपूजाकुशला
 ता॥नोकहंकहादेउंशृगुआता॥यहसंदेशसरिसजगमा
 हीं॥कर्गिवचारदखेउंकलुनाहीं॥नाहिनउरिननातमेंता
 हीं॥अवप्रभुचरितजनाबहुमोदी॥नवहनुमाननाइपा
 वसाथा॥कहोसकलरघुपतिगुणगाथा॥कहुकपिकव
 रंरूपानुगोसाई॥कर्मितमोहिदाराकानाई॥ ॥छं
 दा॥ ॥नितदाजन्मयेरिखुदेजभूषणबलहुममलारगस्त

रस्यौ ॥ शुनिभरतबचनबिनीतअतिकपिपुलकितनुचर
 णन्हियस्यौ ॥ १॥ रघुबीरनिजमुखजासगुणगणकहत
 अगजगनाथसो ॥ काहेनहोउबिनीतपरमपुनीतसदगु
 णसिंधुसो ॥ २॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामप्राणप्रियनाथतुम ॥
 सत्यवचनममतात ॥ पुनिपुनिमिलितभरतसन ॥ प्रेमन
 हृदयसमात ॥ ७॥ ॥ सौरठा ॥ ॥ भरतचरणशिरनाइ
 ॥ तुरितगएउकपिरामपहं ॥ कहीकुशलसबजाइ ॥ हर्षिच
 लेप्रभुयानचढि ॥ ८॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हर्षिभरतकोशल
 पुरआये ॥ समाचारसबगुरुहिंशुनाए ॥ पुनिमंदिरमह
 बातजनाई ॥ आवतनगरकुशलरघुराई ॥ श्रुणतसकल
 जननीउठिधाई ॥ कहिप्रभुकुशलभरतसमुजाई ॥ समा
 चारपुरबासिन्हपाए ॥ नरअरुनारिहर्षिउठिधाए ॥ दधि
 दर्बारेचनफलफूला ॥ नवतुलसीदलमंगलमूला ॥ भरि
 भरिहेमथारबरभामिनि ॥ गावतिचलींसिंधुसुरगामि
 नि ॥ जोजैसहिंसोतैसहिधावहिं ॥ बालघृहकोउसंगन
 लावहिं ॥ एकएकसनपूछहिधाई ॥ तुमदेखेदयालुरघु
 राई ॥ अवधपुरीप्रभुआवतजानी ॥ भईसकलशोभाकी
 खानी ॥ भईसरजुअतिनिर्मलनीरा ॥ बहैसोबाहनत्रि
 विधसमीरा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हर्षितगुरुपरिजनअनुज
 ॥ भूसरहुंदसमेत ॥ चलेभरतअतिप्रेममन ॥ सखुरव
 कृपानिकेत ॥ ९॥ बहुतकचदीअटारिन्ह ॥ निरखहिगग
 नविमान ॥ देखिमधुरस्वरहर्षित ॥ करहिसुमंगलगा
 न ॥ १०॥ राकाशशिरघुपतिपुरी ॥ सिंधुदेखिहर्षनि ॥
 बढेउकोलाहलकरतजनु ॥ नारितरंगसमान ॥ ११॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ रविकुलकमलदिवाकरआवत ॥ नगर

मनोहरकपिन्हदेखावत ॥ शृणुकपीशअंगदलंकेशा ॥ पा
 वनिपुनिरुचिरयहदेशा ॥ यद्यपिसबबैकुंठवरवाना ॥ वे
 दपुराणविदितजगजाना ॥ अवधसरिसप्रियमोहिनसो
 ऊ ॥ यहप्रसंगजानेकोउऊ ॥ जन्मभूमिममपुरीसोहावनी
 ॥ उत्तरदिशिसरजुवहपावनि ॥ जेमज्जहिंसोबिनहिप्र-
 यासा ॥ ममसमीपनरपावहिंवासा ॥ अतिप्रियमोहिइ
 हांकेवासी ॥ ममधामदापुरीसरवराशी ॥ हर्षेकपिशुनिप्र
 भुकीबाणी ॥ धन्यअवधजेहिरामवरवानी ॥ ॥ दोहा ॥

॥ आवतदेखेलोगसब ॥ रूपासिंधुभगवान ॥ नगरनि
 कटप्रभुआयेउ ॥ उतरेउभूमिविमान ॥ १२ ॥ उतरिकहेउप्र
 भुपुष्पकहि ॥ तुमकुवेरपहेजाहु ॥ प्रेरितरामचलेउसो ॥ हा
 र्षेविरहअतिताहु ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आएभरतसंग
 सबलोगा ॥ कुशतनुश्रीरघुचीरवियोगा ॥ वामदेववसिष्ठ
 सुनिनायक ॥ देखेप्रभुमहिधरिधनुसायक ॥ धाइधरेगुरु
 चरणसरोरुह ॥ अनुजसहितअतिपुलकतनूरुह ॥ भेटे
 कुशलपूछिसुनिराया ॥ हमरेंकुशलतुह्मारिहिंदाया ॥ सक
 लहिजन्मिकहंनयेउमाथा ॥ धर्मधुरंधररघुकुलनाथा ॥ ग
 हंभरतपुनिप्रभुपदपंकज ॥ नमहिंजिनहिंशंकरसरसुनि-
 अज ॥ परिभूमिनहिउठतउठाये ॥ बलकरिरूपासिंधुउरला
 ये ॥ श्यामलगातरोमभएठादे ॥ नवराजीवनयनजलबाटे
 ॥ ॥ छंद ॥ ॥ राजावलांचनस्ववतजलतनुललितपुल
 कावलिवनी ॥ अतिमेमहृदयलगाउअनुजहिमिलेप्रभुप्रि
 भुवनधनी ॥ ३ ॥ प्रभुमिलतअनुजहिमोहमोपहिजातनहि
 उपमाकहा ॥ जनुमेमअरुअंगारतनुधरिमिलतवरसरवमा
 लहा ॥ ४ ॥ प्रखनरूपानिधिकुशलभरतदिवचनचंगिनआ

बई ॥ शृणु शिवा सो सर बचन मन ते भिन्न जो जन पावई ॥
 ॥ ५ ॥ अब कुशल को शलनाथ आरत जानि जन दरशन दियो
 ॥ बूडत बिरह वारिधि कृपानिधिका ठि मोहि कर गहिलियो ॥
 ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मुनि प्रभु हर्षि शत्रु हन ॥ भेटे हृदय लगाइ
 ॥ लक्ष्मण भेटे भरत पुनि ॥ प्रेम न हृदय समाइ ॥ १४ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ भरत अनुज लक्ष्मण तव भेटे ॥ दुसह बिरह संभव दु-
 ख भेटे ॥ सीता चरण भरत शिर नावा ॥ अनुज समेत परम सु-
 ख पावा ॥ प्रभु बिलोकि हर्षे पुरवासी ॥ जनित वियोग विपति
 सब नाशी ॥ प्रेमातुर सब लोग निहारी ॥ कौतुक कीन्ह कृपालु
 खरारी ॥ अमित रूप प्रगटे तेहि काला ॥ यथा योग्य मिलि स-
 बहि कृपाला ॥ कृपा दृष्टि सब लोग बिलोकी ॥ किये सकल न-
 रनारि विशोकी ॥ क्षण महं सबहि मिले भगवाना ॥ उमा मर्म
 यह काहुन जाना ॥ इहिविधि सबहि सरवी करि रामा ॥ आ-
 गै चले शील गुण धामा ॥ कौशल्यदि मातु सब धाई ॥ निरखि
 बच्छ जनु धेनु लवाई ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जनु धेनु बालक बच्छ
 तजि गृह चरण वन परव शगई ॥ दिन अंत पुरुरूप स्ववत थ-
 न हुंकार करि धावति भई ॥ ७ ॥ अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटी-
 बचन मृदु बहु विध कहै ॥ गई विषम विपति वियोग भवति न्ह
 हर्ष सरव अगणित लहै ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भेटे उत्तनय सु-
 मित्रा ॥ राम चरण रत जानि ॥ रामहि मिलत के कयी ॥ हृदय
 बहुत सकुचानि ॥ १५ ॥ लक्ष्मण सब मातु न्हि मिले ॥ हर्षे आ-
 शिष पाइ ॥ केकड़ कहं पुनि पुनि मिले ॥ मन कर क्षोभ न जाइ
 ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सासु न्हि सब न्हि मिलि वैदेही ॥ च-
 रण न्हिल गिहर्षि अति तेही ॥ दैहिं अशिष बूजि कुशलांता
 होहु अचल तु हमार अहि वाता ॥ सब रघुपति पद कमल-

विलोकहिं ॥ मंगलजातिनयनजलरोकहिं ॥ कनकधारआ
 रतीउतारहिं ॥ बारबारप्रभुगातनिहारहिं ॥ नानाभांतिनि-
 छावरिकरहों ॥ परमानंदहर्षउरभरहीं ॥ कौशल्यापुनिपु
 निरघुवीरहिं ॥ चितवतिरूपासिंधुरणधीरहिं ॥ हृदयविचार
 रतिवारहिं ॥ कवनिभांतिलंकापतिमारा ॥ अतिसुकुमा
 रयुगलममवारे ॥ निशिचरसुभटमहाबलभारे ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ लक्ष्मणअरुसीतासहित ॥ प्रभुहिबिलोकतिंमात ॥ प
 रमानंदमगनमन ॥ पुनिपुनिपुलकितगात ॥ १७ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ लंकापतिकपीशनलनीला ॥ जांववंतअंगदसुभशी
 ला ॥ हनुमदादिसवबानरवीरा ॥ धरेंमनोहरमनुजशरीरा
 ॥ भरतसनेहशीलयुतनेमा ॥ सादरसवबरहिंअतिप्रेमा ॥
 देखिनगरवासिन्हिकैरीति ॥ सकलसराहहिंप्रभुपदप्रीति
 ॥ पुनिरघुपतिसवसरवाबुलाए ॥ सुनिपदलागहुसबन्हि
 शिरवाए ॥ गुरुवसिष्ठकुलपूज्यहमारे ॥ इनकीरूपादनुज
 रणमारे ॥ एसवसरवासुनहुसुनिमेरे ॥ भयेसमरसागरक
 हुबेरे ॥ ममहितलागिजन्मइन्हहारे ॥ भरतहुंतेमोहिअधि
 कपिआरे ॥ सुनिप्रभुवचनमगनसवभएउ ॥ निमिषनिमि
 षउपजतसरवनएउ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौशल्याकंचरणन
 हि ॥ पुनितिन्हनायेंउमाथ ॥ आशिषदीन्होहर्षिहिय ॥ तुम
 प्रियजिमिरघुनाथ ॥ १८ ॥ सुमनवृष्टिनभसंकुल ॥ भवन
 चलेसरवकंद ॥ चंदोअटारिन्हदेखहिं ॥ नगरनारिनरचंद
 ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कंचनकलशविचित्रसवारं ॥ सव
 हिंधरसजिनिजनिजहारं ॥ वंदनवारपनाकाकेनू ॥ सवन्हि
 चनायेंउमंगलहेनू ॥ वीचोसंकलसगंधसिंचाई ॥ गजमा
 गिनचिचहुचौकपुराई ॥ नानाभांतिसुभंगलसाजं ॥ हर्षिनि

साननगरबहुवाजे॥ जहंतहंनारिनिछावरिकरहिं॥ देहि-
 अशीषहर्षउरभरहीं॥ कंचनथारआरतीनाना॥ युवतीसा
 जि करहिंकलगाना॥ करहिंआरतीआरतिहरकी॥ रघुकु
 लकमलविपिनदिनकरकी॥ पुरशोभासंपतिकल्याणा॥
 निगमशेषशारदाबखाना॥ तेयहचरितदेखिठगिरहहीं
 ॥ उमातासुगुणनरकिमिकहहीं॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नारिकुमु
 दिनीअवधसर॥ रघुपतिविरहदिनेश॥ अस्तभयेंविक
 सितभई॥ निरखिरामराकेश॥ २०॥ होहिंसगुणशुभविवि
 धविध॥ बाजहिंनाकनिसान॥ पुरनरनारिसनाथकरि॥
 भवनचलेभगवान॥ २१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुजानीके
 कयीलजानी॥ प्रथमतासुगृहमयेभवानी॥ ताहिप्रबोधि
 बहुतरकरवदीन्हा॥ पुनिनिजभवनगमनप्रभुकीन्हा॥ कृपा
 सिंधुजबमंदिरगयेउ॥ पुरनरनारिस्वरवीसबभयेउ॥ गु
 रुवसिष्ठद्विजलियेबुलाई॥ आजुसुधरीसुदिनस्वरवदा
 ई॥ सबद्विजदेहुहर्षिअनुशासन॥ रामचंद्रबैठहिंसिंहा
 सन॥ सुनिवसिष्ठकेबचनसुहाए॥ सुनतसकलविप्रन्हि
 अतिभाये॥ कहहिंबचनमृदुविप्रअनेका॥ जगअभिरा
 मरामअभिषेका॥ अबसुनिवरविलंबनहिंकीजै॥ महारा
 जकहंतिलककरीजै॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबसुनिकहेउसु
 मंत्रसन॥ सुनतचलेउशिरनाइ॥ रथअनेकबहुवाजि
 गज॥ तुरतसमूहारेजाइ॥ २२॥ जहंतहंधावनपठयसुनि॥
 संगलद्रव्यमगाई॥ हर्षसमेतवशिष्टपद॥ सुनिशिरनायेउ
 आइ॥ २३॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबधपुरीअतिरुचिरबना
 ई॥ देवन्हिसुमनवृष्टिफरिलाई॥ रामकहासेनकन्हबुला
 ई॥ प्रथमसरबन्हअन्हवाबहुजाई॥ श्रुणतबचनजहंतहं

जनधाए॥सुग्रीवादितुरतरन्हवाए॥पुनिकरुणानिधिभ
 रतहंकारे॥निजकरजटारामनिरवारे॥अन्हवाएपुनितीन
 हुभाई॥भक्तवच्छलकृपालुरघुराई॥भरतभाग्यप्रभुकोम
 लनाई॥शेषकोटिशतशकहिनगाई॥पुनिनिजजटाराम
 विवराये॥गुरुअनुशासनमागिअन्हाये॥करिमज्जनभू
 षणप्रभुसाजे॥अंगअनंगकोटिछबिछाजे॥॥दोहा॥
 सासुन्हिसादरजानकिहं॥मज्जनतुरतकराई॥दिव्यवसा
 नमणिभूषण॥साजेअंगबनाई॥२४॥रामवामदिशि शोभि
 त॥रमारूपगुणरवानि॥देखिमातुसबहर्षित॥जन्मसु-
 फलकरिजानि॥२५॥शृणुखगेशतेहिअवसर॥ब्रह्माशि
 वमुनिचंद॥चटिविमानआएसवै॥सरदेखनसरखकंद॥
 ॥२६॥॥चौपाई॥॥प्रभुविलोकिसुनिमनअनुरागा॥
 तुरितदिव्यसिंहासनमांगा॥रविसमतेजवरणिनहिंजा
 ई॥बैठेरामहिजन्हिशिरनाई॥जनकसुतासमेतरघुराई
 ॥देखिप्रहर्षेमुनिससुदाई॥वेदमंत्रतबहिजन्हिउचारे॥न
 भसरमुनिजयजयतिपुकारे॥प्रथमतिलकवशिष्ठमुनि
 कीन्हा॥पुनिसबविप्रन्हिआयसुदोन्हा॥सुतविलोकिह
 रपीमहतारी॥बारबारआरतीउतारी॥विप्रन्हदानबिबि
 धबिधदोन्हा॥याचकसकलअयाचककीन्हा॥सिंहास
 नपरत्रिभुवनसांई॥देखिसरन्हिहुंदुभीवजाई॥॥
 उंद॥॥नभहुंदुभीवाजहिंविपुलगंधर्वकिन्नरगावहिं॥
 नाचहिंअपसराचंदपरमानंदसरमुनिपावहिं॥६॥भरता
 दिअनुजबिभीषणांगदहनुमदादिसमेतते॥गहंछचचाम
 रव्यजनधनुअसिचमेशक्तिविराजते॥१०॥सियसहिनिदि
 नकरवंगभूषणकामबहुछबिसोहहीं॥नवअंबुधरवरगा

तत्र्यंबरपीतमुनिमनमोहहीं ॥११॥ सुकटांगदादिविचित्रभूष
 णत्र्यंगत्र्यंगनिप्रतिसजे ॥ अंभोजनयनविशालउरभुजधन्य
 नरनिररवतिजे ॥१२॥ ॥दोहा॥ ॥वहशोभासमाजस्वर
 ॥कहतनवनैखगेश॥बरऐशारदशेषश्रुति॥सोरसजानम
 हेश॥२७॥भिन्नभिन्नअस्तुति करि॥गएसुरनिजनिजधाम॥वे
 दीवेषधरिवेदतव॥आएजहंश्रीराम॥२८॥प्रभुसर्वज्ञकीन्ह
 अति॥आदरकृपानिधान॥लखेउनकाहूमर्मकछु॥लगेकर
 णगुणगान॥२९॥ ॥छंद॥ ॥लवाई॥ ॥जयसगुणनि
 गुणरूपरामअनूपभूपशिरामणे॥दशकंधरादिप्रचंडनिशि
 चरप्रबलखलभुजबलहने॥१३॥अवतारनरसंसारभार
 विभंजिदारुणदुखदहे॥जयप्रणतपालदयालुप्रभुसंयुक्त
 शक्तिनमामहे॥१४॥तवविषममायाबशसुरासुरनागनर
 अगजगहरे॥भवपंथभ्रमितस्तुभ्रमितदिननिशिकालकर्म
 स्वगुणभरे॥१५॥जोनाथकरिकरुणाबिलोकितत्रिविधदुख
 तेनिर्वहे॥भवरवेदछेदनदक्षहमकहंरक्षरामनमामहे॥१६॥
 जेज्ञानमानविमत्ततवभवहरणिभक्तिनआदरी॥तेपाइसु
 रदुर्लभपदादपिपरतहमदेखतहरी॥१७॥विश्वासकरिस
 बआशपरिहरिदासतबजेहोइरहे॥जपिनामतबबिनुअ
 मतबहिंभवनाथसोसमरामहे॥१८॥जेचरणशिवअजपु
 ज्यरजशुभपरशिसुनिपतनीतरी॥नखनिर्गतास्वरवंदिता
 नैलोक्यपावनिसुरसरी॥१९॥ध्वजकुलिशअंकुशकंज
 युतबनफिरतकंटककिन्हलहे॥पदकंजदंडसुकुंदरामरमे
 शनित्यभजामहे॥२०॥अव्यक्तमूलमनादितरुत्वचचानिग
 मागमभणे॥षट्कंधशारवापंचविंशअनेकपर्णसुमनघने
 ॥२१॥फलसुमलविधिकदुरमधुरबेलिअकेलिजेहिआशि

तरहे ॥ पल्लवित फूलतनवलनित संसारविटपनमामहे ॥ २२ ॥
 जैब्रह्म अज अद्वैत अनुभवगम्य मनपरध्यावहीं ॥ ते कह
 हिं जानहिं नाथ हमतवस गुणयशनित गावहीं ॥ २३ ॥ करु
 णायतन प्रभु सदगुणा कर देवयहं वर मांग ही ॥ मन कर्म बच
 न विकारतजित वचरण हम अनुराग हीं ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥
 सब के देखत बेद सब ॥ विनती कीन्ह उदार ॥ अंतर ध्यान भ
 ये पुनि ॥ गये ब्रह्म आगार ॥ ३० ॥ बैन तेय शृणु शंभु तब ॥ आ
 एज हं रघुवीर ॥ विनय करत गदगद गिरा ॥ पूरित पुलक श
 रीर ॥ ३१ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जय राम रमानें समनं ॥ भवताप भ
 या कुल पाहि जनं ॥ अवधेश सरें शरमेश विंभो ॥ शरणाग
 त मागत पाहि प्रभो ॥ २५ ॥ दश शीर्ष बिनाशन वी श भूजा ॥ क
 त दूरि महामहि भूरि रुजा ॥ रजनी चर वृंद पतंग रहै ॥ शरपा
 व कते ज प्रचंड दहै ॥ २६ ॥ महि मंडल मंडन चारु तरंग ॥ धृत शा
 य कचाप निषंग वरं ॥ मद मोह महाममतारजनी ॥ तम पुंज
 दिवा कर तेज अनी ॥ २७ ॥ मनुजात किरात निपात किये ॥ मृ
 गलोक कुभोग सरे नहिये ॥ हति नाथ अनाथ निपाहि हरे ॥
 विषयावन पामर भूलि परे ॥ २८ ॥ बहु रोग विद्योग न्हलोग ह
 ये ॥ भवदंघ्रि निरादर के फल ये ॥ भव सिंधु अगाध परे नर
 ते ॥ पद पंकज प्रेम मन जे कर ते ॥ २९ ॥ अति दीन मलीन दुरवीनि
 त हीं ॥ जिन के पद पंकज प्रीति न हीं ॥ अवलंब भवत कथा जि
 न्ह के ॥ प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥ ३० ॥ नहिरागन रोष न
 मान मुदा ॥ तिन्ह के सम वै भव वादि पदा ॥ यहितें तब सेवक
 होत मुदा ॥ सुनित्या गहिं योग भरो समदा ॥ ३१ ॥ करि प्रेम नि
 रंतर नेम नयें ॥ पद पंकज सेवत सुख हियें ॥ मम मान निराद
 र आदर हिं ॥ सब संत मुग्धा विन रंति मही ॥ ३२ ॥ मुनि मान स

पंकजभृगभजे ॥ रघुबीरमहारणधीरअजे ॥ तबनामजपा
 मिनमामिहरी ॥ भवरोगमहामदमानअरी ॥ ३३ ॥ गुणशील
 कृपापरमायतन ॥ प्रणमामिनिरंतरश्रीरमण ॥ रघुनंदनिक
 दयदंडधन ॥ महिपालविलोकियदीनभज ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ बारबारबरमांगिहौ ॥ हर्षिदेहुश्रीरंग ॥ पदसरोजअन
 पायिनी ॥ भक्तिसदासतसंग ॥ ३२ ॥ बरणिउमापतिरामगु
 ण ॥ हर्षिगयेंकैलास ॥ तबप्रभुकपिन्हदिवाएउ ॥ सबविध
 करवप्रदवास ॥ ३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शृणुखगपतियहु
 कथासुपावनि ॥ त्रिविधतापभवदोषनशावनि ॥ महाराजक
 रभुभअभिषेका ॥ सनतलहहिंनरविरतिविवेका ॥ जेस-
 कामनरसनहिंजेगावहीं ॥ करवसंपतिनानाविधपावहिं
 ॥ करदुर्लभकरवकरिजगमाहीं ॥ अंतकालरघुपतिपुर
 जाहीं ॥ सनहिंबिसुक्तविरक्तअरुविषई ॥ लहहिंभक्तिग
 तिसंपतिनितई ॥ खगपतिरामकथामैबरणी ॥ स्वमतिवि
 लासत्रासदुखहरणी ॥ विरतिविवेकभक्तिदृढकरणी ॥ मो
 हनदीकहंसंदरतरणी ॥ नितनवमंगलकोशलपुरी ॥ हर्षित
 रहंहीलोगसबकुरी ॥ नितिनवप्रीतिरामपदपंकज ॥ सेवत
 जिन्हहिंनमतशिवमुनिअज ॥ मंगनबहुप्रकारपहिराए ॥
 दिजन्हिदाननानाविधपाए ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मानंदमग
 नकपि ॥ सबकहंप्रभुपदप्रीति ॥ जातनजानेउदिवसनिशि ॥
 गयेंमासपटवीति ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विसरेगृहसपने
 शुधिनाहीं ॥ जिमिपरद्रोहसंतमनमाहीं ॥ तबरघुपतिसब
 सरवाबुलाए ॥ आइसबहिसादरशिरनाए ॥ परमप्रीतिस
 मीपबैठारे ॥ भक्तकरवदमृदुबचनउचारे ॥ तुम्हअतिकिन्ह
 मोरसेवकाई ॥ मुरवपरकेहिबिधकरौंबडाई ॥ तातेंमोहितु-

ह्यतिप्रियलागे ॥ ममहितलागि भवन सरवत्यागे ॥ अनु
 जराज संपति बैदेही ॥ देहगेह परिवार सनेही ॥ सब मम प्रि
 यन हितुमहि समाना ॥ मृषान कहौ मोर यह वाना ॥ सब कह
 प्रिय सेवक यह नीती ॥ मोरें अधिक दास पर प्रीती ॥ ॥ दोहा ॥
 ॥ अब गृह जाहु सरवा सब ॥ भजहु मोहि दृढ नेम ॥ सदा स
 र्वगत सर्वहित ॥ जानि करेहु अति प्रेम ॥ ३५ ॥ ॥ चौपाई ॥
 सुनि प्रभु वचन मगन सब भयेऊ ॥ कोहम कहाँ बिसरित लुग
 येऊ ॥ एकटक रहे जोरि कर आगे ॥ कहिन शकहि कछु अति
 अनुरागे ॥ परम प्रेमतिन्ह कर प्रभु देषा ॥ कहा विविध विध ज्ञा
 न विशेषा ॥ प्रभु संमुख कछु कहैं न पारहिं ॥ पुनि पुनि चरण
 सरोज निहारहिं ॥ तब प्रभु भूषण बसन मंगाए ॥ नाना रंग अ
 नूप सह्याए ॥ सो सुग्रीवहिं प्रथम पहिराये ॥ बसन भरतनि
 ज हाथ बनाये ॥ प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये ॥ लंका पतिरघु
 पति मन भाये ॥ अंगद वैठि रहान हिंडोलां ॥ प्रीति देखि प्रभु
 ताहि न बोला ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जांबवंत नीलादिसव ॥ पहि
 राए रघुनाथ ॥ हिय धरि राम स्वरूप सब ॥ चलेना इपद मा
 थ ॥ ३६ ॥ तब अंगद उठि नाइ गिर ॥ सजल नयन कर जोरि
 ॥ अति विनीति वाले उवचन ॥ मनहु प्रेम रत बोरि ॥ ३७ ॥
 चौपाई ॥ ॥ शृणु सर्व जलपा सरव सिंधी ॥ दीन दया कर
 आरत बंधा ॥ मरती चार नाथ मोहि वाली ॥ गयेतु हमारे पग
 तर घाली ॥ अशरण शरण विरद स भारी ॥ मोहि जनित ज
 हु भक्ता हित कारी ॥ मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता ॥ जाउ कहां त
 नि पद जल जाना ॥ तुझहिं विचारि कहहु नर नाहा ॥ प्रभु त
 नि भवन काज मम काहा ॥ बालक अबुध ज्ञान बल हीना ॥
 वाग्य ह शरण नाथ जन दीना ॥ नीच दहल गृह के सब करि हीं ॥

पदपंकजबिलोकिभवतरहौ॥ अस कहि चरण परेउ प्रभुपाही
 ॥ अबजनिनाथ कहहु गृहजाही॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अंगदबच
 नविनीतसुनि॥ रघुपतिकरुणासीव॥ प्रभुउठाइउरलायेउ
 ॥ सजलनयनराजीव॥ ३८॥ निजउरमालाबसनमणि॥ बालि
 तनयपहिराइ॥ बिदाकीन्ह भगवानतब॥ बहुप्रकारसमुझा
 ई॥ ३९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ भरतअनुजसौमित्रसमेता॥ पठ
 वनचलेभक्तकृतचेता॥ अंगदहृदयप्रेमनहिथोरा॥ फिरिफि
 रिचितवतप्रभुकीआरा॥ बारबारकरिदंडप्रणामा॥ मनअ
 सरहनकहहिंमोहिरामा॥ रामविलोकनिबोलनिचलनी॥
 सुमिरिसुमिरिशोचतहसिमिलनी॥ प्रभुरखदेखिविनय
 बहुभाषी॥ चलेउहृदयपदपंकजरारवी॥ अतिआदरसब
 कपिपहुंचाए॥ भाइन्हसहितभरतपुनिआए॥ तबसुग्रीव
 चरणगहिनाना॥ भांतिबिनयकीन्हीहनुमाना॥ दिनदश
 करिरघुपतिपदसेवा॥ तबफिरिचरणदेखिहैंदेवा॥ पुण्य
 पुजतुह्यपवनकुमारा॥ सेवहुजाइकृपाआगारा॥ असकहि
 कपिसबचलेतुरंता॥ अंगदकहेउसुनहुहनुमंता॥ ॥ दोहा
 ॥ कहेहुदंडवतप्रभुसन॥ तुह्महिंकहौंकरजोरि॥ बारबार
 रघुनाथकहि॥ सरति कराएहुमोरि॥ ४०॥ असकहिचले
 उबालिस्त॥ फिरिआयेउहनुमंत॥ तासुग्रीतिप्रभुसन
 कही॥ मगनभयेभगवंत॥ ४१॥ कुलिशहुचाहिकठोरअति
 ॥ कोमलकसमहुचाहि॥ चितखगेशअसरामकर॥ समुझि
 परैकहुकाहि॥ ४२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ पुनिरूपाललियबो
 लिनिषादा॥ दीन्हैउभूषणबसनप्रसादा॥ जाहुभवनमम
 सुमिरणकरेहु॥ मनकमबचनधर्मअनुसरेहु॥ तुह्मम
 मसरवाभरतजिआता॥ सदारहेहुपुरआवतजाता॥ बच

नस्तनतउपजास्करवभासी ॥ परेउच्चरणलोचनभरिवारी ॥
 चरणकमलउरधरिगृहआवा ॥ प्रभुसुभावपरिजनहिं
 स्तनावा ॥ रघुपतिचरितदेखिपुरवासी ॥ पुनिपुनिकह
 हिं धन्यस्करवभासी ॥ रामराजबैठेअथलोका ॥ हर्षितभये
 उगयेउसबशोका ॥ बैरनकरहिकाहुंसनकोई ॥ रामप्रता
 पविषमतारवोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वर्णाश्रमनिजनिजधर
 म ॥ निरतबेदपथलोका ॥ चलहिंसदापावहिंस्करवहिं ॥ नहि
 भयशोकनरोग ॥ ४३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दैहिकदैविकभौ
 तिकतापा ॥ रामराजनहिकाहुहिआपा ॥ सबनरकरहिं
 परस्परप्रीती ॥ चलहिंस्सधर्मनिरतश्रुतिनीती ॥ चरिउ
 वरणधर्मजगमांहीं ॥ पूरिरहासपनेहुअघनाही ॥ राम
 भक्तिरतनरअरुनारी ॥ सकलपरमगतिकेअधिकारी ॥
 अपमृत्यनहिकवनिउपीरा ॥ सबसुंदरसबनिरुजशरी
 रा ॥ नहिदरिद्रकोउदुरवीनदीना ॥ नहिकोउअबुधनल
 क्षणहीना ॥ सबनिदैंभधर्मरतधरणी ॥ नरअरुनारिच
 तुरशुभकरणी ॥ सबगुणसुसवपंडितज्ञानी ॥ सबकृतज्ञ
 नहिकपटसयानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामराज्यविहगेश
 शृणु ॥ सचराचरजगमांहीं ॥ कालकर्मस्वभावगुण ॥
 कृतदुरवकाहुहिनाहिं ॥ ४४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूमिसप्त
 सागरमेखला ॥ एकभूपरघुपतिकौशला ॥ भवनअनेक
 रोममतिजास ॥ यहप्रभुताकलुबहुतनतास ॥ सोमहि
 मासमुकतप्रभुकेरी ॥ यहवर्णतहीनताघनेरी ॥ यहमहि
 मारवगेशजिन्हजानी ॥ फिरियहचरिततिन्हहुंरतिमा
 नी ॥ सोजानेकरफल्यहलाला ॥ कहहिमहासुनिसुमति
 नुगोला ॥ गमराज्यकरस्करवसंपदा ॥ वरणिनशकहिंफ

शारदा॥ सबउदारसबपरउपकारी॥ द्विजसेवकसब
 नरअरुनारी॥ एकनारिव्रतरतनरजारी॥ तेमनबचक्रमप
 तहितकारी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दडयतिनकरभेदजहं॥ नर्तक
 नृत्यसमाज॥ जीतेउमनजगसुनियअस॥ रामचंद्रकेराज॥
 ॥ ४५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ फूलहिंफलहिंसदातरुकानन॥ रह
 हि एकसंगजगपंचानन॥ रवगमृगबैरसहजबिसराई॥ सा
 बनिपरस्परप्रीतिबदाई॥ कूजहिंरवगमृगनानाचुंदा॥ अ
 भयचरहिंवनकरहिंअनंदा॥ शीतलसरभिपवनबहमंदा
 ॥ गुंजतअलिलैचलुमकरंदा॥ लताबिटपमागेमधुच्यव
 हीं॥ मनभावतेधेनुपयस्वहीं॥ शस्यसंपन्नसदारहधर
 णी॥ त्रेताभासंतयुगकीकरणी॥ प्रगटीगिरिन्हविविधम
 णिरवानी॥ जगदातमाभूषणहिचानी॥ सरितासकलबहे
 बरबारी॥ शीतलअमलस्वादुसरवकारी॥ सागरनिजम
 र्यादारहही॥ डारहिंरत्नतटन्हिनरलहहीं॥ सरसिजसंकु
 लसकलतडागा॥ अतिप्रसन्नदशदिशाविभागा॥ ॥ दोहा
 विधुमहिपुरपियूषनित॥ रवितपजितनहिकाज॥ मार्गे
 बारिददंदिजल॥ रामचंद्रकेराज॥ ४६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 कोटिन्हवाजिमधप्रभुकीन्हा॥ अमितदानविप्रन्हिकहंदी
 न्हा॥ श्रुतिपथपालकधर्मधुरंधर॥ गुणातीतअरुभोगपु
 रंदर॥ पतिअनुकूलसदारहसीता॥ शोभारवानिस्सशील
 विनीता॥ जानतिरूपासिंधुप्रभुताई॥ सेवतिचरणकमल
 ॥ यद्यपिगृहसेवकसेवकिनी॥ विपुलसकलसे
 वाविधिगुनी॥ निजकरगृहपरिचर्याकरहीं॥ रामचंद्र
 ॥ जेहिबिधरूपासिंधुसरवमानहीं॥
 कौशल्यादिसासुगृह

माहीं ॥ सेवहिं सकल मानमदनाहीं ॥ उमारमा ब्रह्माणिवं
 दिता ॥ जगदंबा संततमनिंदिता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जासक
 पाकटाक्षकर ॥ चाहतचितवनिसोई ॥ रामपदारविंदरत
 ॥ करति स्वभावहिरखोई ॥ ४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सेवहि
 सानुकूल सब भाई ॥ रामचरणरत प्रीतिसुहाई ॥ प्रभुपदक
 मलविलोकतरहहीं ॥ कबहि कृपालु हमहिं कछुकहहीं ॥
 रामकरहिं भ्रातान्ह पर प्रीती ॥ नाना भांति शिखावहिनी-
 ती ॥ हर्षितरहिं नगरकेलोगा ॥ करहिं सकल करदुर्लभभो
 गा ॥ अहनि शिवधिहिमनावतरहहीं ॥ श्रीरघुवीरचरण
 रतिचहहीं ॥ दुइ सुत सुंदर सीता जाये ॥ लवकुशवेदपुरा
 एन्हि गाये ॥ द्वाविजयी विनयी गुणमंदिर ॥ हरि प्रतिविंब
 मनहुं अति सुंदर ॥ दुइ दुइ सुत सब भ्रातान्ह केरे ॥ भयेरू
 प गुणशील घनेरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ज्ञानगिरा गोतीत अज
 ॥ माया गुणगोपार ॥ सोइ सच्चिदानंद धन ॥ करन रचरि
 उदार ॥ ४८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रातः काल सरजू करि मज्ज
 न ॥ बैठहिं सभासंगहिं जसज्जन ॥ वेदपुराण वसिष्ठव
 खानहिं ॥ सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं ॥ अनुजन्म सं
 युत भोजन करहीं ॥ देखि सकल जंननी सरखभरहीं ॥ भ
 रत शत्रु हनदोनों भाई ॥ सहित पवन रक्त उपवन जाई ॥
 वृज्जहिं बैठ राम गुण गाहा ॥ कह हनुमान सुमति अवगाहा
 ॥ सुनत विमल गुण अति सरवपावहिं ॥ बहुरि बहुरि क
 रि विनय कहावहीं ॥ सब के गृह गृह कोई पुराणा ॥ रामच
 रि न पावन विधनाना ॥ नर अरु नारि राम गुण गावहिं ॥ क
 रहिं दिवसनिशि जानन जानहिं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अवधपु
 गंवा सिद्ध कर ॥ रक्त संपदा समाज ॥ सहस्र शोषन दिव

हिशकहीं ॥ जहंनू परामविराज ॥ ४२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ना
रदादिसनकादिसुनीशा ॥ दरशनलागिकौशलाधीशा ॥ हि
नप्रतिसकलअयोध्याअवहिं ॥ देखिनगरविरागविसरा
बहिं ॥ रत्नजटितमणिकनकअटारी ॥ नानारंगरुचिरंगच
टारी ॥ पुरचहुं पाशकोटअतिसुंदर ॥ रचे कंगुरारंगरंग
बर ॥ नवग्रहसुंदरनिकरवनाई ॥ जनुदुसरीअमरावति
आई ॥ महिबहु रंगरचितगचकांचा ॥ जोविलोकि सुनि
वरमनरांचा ॥ धबल धामऊपरनभचुंबत ॥ कलशमनहुं
शशिरविद्युतिनिंदित ॥ बहुमणिरचितऊरोरवाभाजहिं
गृहगृहप्रतिमणिसीपविराजहिं ॥ ॥ छंद ॥ ॥ मणिकी

ग हं देहरीविदुमरची ॥ सुंदरममोहा
रमंदिरायतअजिरअतिफटिकन्हरवची ॥ ३५ ॥ मणिरव
भभित्तिनविरिचिविचविचकनकमणिमरकतरचे ॥ प्र
नाइबहुबजनरवचे ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ चारुचित्रशालाअमित ॥ गृहगृहरचेवनाई
॥ रामधामजोनिरखत ॥ सुनिमनलेतचोराई ॥ ५० ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ सुमनवाटिकासबहिलगाई ॥ विविधभां
तकरियतनबनाई ॥ लताललितबहुभांति सोहाई ॥ फू
लतसदाबसंतकीनाई ॥ गुंजतमधुकरसुखरमनोहर ॥ मा
त्रेविधसदावहसुंदर ॥ नानारवगबालकन्हजिआए ॥

धुरउडातसहाए ॥ मोरहंससारसपारावत ॥ भा
वनहिपरशोभाअतिपावत ॥ जहंतहं देखहिं निजपरिछ
हीं ॥ बहुविधकूजहिंनृत्यकराहीं ॥ शुकशारिकापदावहिं
बालक ॥ कहहुरामरघुपतिजनपालक ॥ राजद्वारसबही
विधचारू ॥ बीथीचौहटरुचिरबजारू ॥ ॥ छंद ॥ ॥ वा

जारुचारुनवनाईवरणतवस्तुवितुग्रंथपाईयौ ॥ जहं
 भूपरमानिवासतहंकीसपदाकिंमिगाइयौ ॥ ३७ ॥ बैठेव
 जाजसराफवणिकअनेकमनहुकुबेरते ॥ सवसरवीस
 वस्तुचरित्रसुंदरनारिनरशिभुजरठते ॥ ३८ ॥ ॥ दोहा ॥
 उत्तरदिशि शरयूवहैं ॥ निर्मलजलगंभीर ॥ बाधेघाटमनो
 हर ॥ स्वल्पपंकनहितीर ॥ ५१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दूरिफरा
 करुचिरसोघाटा ॥ जहंजलपिवहिं बाजिगजठाटा ॥ पुनि
 घटपरममनोहरनाना ॥ तहांनपुरुषकरहिं अरुमाना ॥ रा
 जघाटसबहीविधसुंदर ॥ मज्जहिंतहांवरणचारिउन
 र ॥ तीरतीरदेवन्हकरमंदिर ॥ चहुंदिशितेहि केउपवनसुं
 दर ॥ कहुंकहुंसरितातीरउदासी ॥ वसहिंज्ञानरतसुनिस
 न्यासी ॥ जहतहंतुलसीबृंदसहाये ॥ बहुप्रकारसबसुनि
 हलगाये ॥ परशोभाकछुवरणिनजाई ॥ बाहिरनगरपर
 मरुचिराई ॥ देखतपुरीअखिलअवभागा ॥ वनउपवन
 वापिकातडागा ॥ ॥ छंद ॥ ॥ वापीतडागअनूपकूपम
 नोहरायतशोहई ॥ सोपानसुंदरनीरनिर्मलदेखिसुरमु
 निमाहई ॥ ३९ ॥ चहुरंगकंजअनेकरवगकूजहिंमधुपगुं
 जारहीं ॥ आरामरम्यपिकादिश्वगरवमनहुपथिकहंका
 रहीं ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रमानाथजहंराज्यपति ॥ सोपुर
 वरणिकजाई ॥ अणिमादिकसरवसंपदा ॥ रहांअवधा
 पुरछाई ॥ ४१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जहतहंनररघुपतिगुण
 गावहिं ॥ बैठेपरस्परइहेशिरवावहिं ॥ भजहुप्रणतप्रति
 नालकरामहिं ॥ शोभाशीलरूपगुणधामहिं ॥ जलजवि
 लोचनअ्यामलगानहिं ॥ पुलकनयनइवसेवकआतहिं
 ॥ धृतशररुचिरचापनृणांरहिं ॥ संतकंजवनरविरण

धीरही॥ कालकरालब्यालखगराजहि॥ नमितरामअका
मममताजहि॥ लोभमोहमृगयूथकिरातहिं॥ मनसिज
करिहरिजनकरवदातहिं॥ संशयशोकनिविडतमभानु
हि॥ दनुजगहनवनदहनरुशानुहिं॥ जनकसुतासमेत
रघुवीरहि॥ कसनभजहुभंजनभवभीरही॥ बहुबासना
मशकहिमराशिहि॥ सदाएकरसअजअबिनाशिहि॥ मु
निरंजनभंजनमहिभारहि॥ तुलसिदासकेप्रभुहिउदारा
हि॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एहिबिधनगरनारिनर॥ करहिंरामगु
णगान॥ सानुकूलसबपररहत॥ संततकृपानिधान॥ ५३
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जबतेरामप्रतापरवगेशा॥ उदितभएउ
अतिप्रबलदिनेशा॥ पूरिप्रकाशरहेउतिहुंलोका॥ बहुत
न्हकरवबहुतन्हमनशोका॥ जिनहिशोकतेहिकहोंबरवा
नी॥ प्रथमअविद्यानिशानशानी॥ अधउलुकजहांतहां
लुकाने॥ कामओधकैरवसंकुंचाने॥ विविधकर्मगुणका
लसुभाऊ॥ येचकोरकरवलहहिंनकाऊ॥ मत्सरमानमो
हमदचोरा॥ इनहिंनिबाहनकवनिहुंओरा॥ धर्मतडागयो
गविज्ञाना॥ येपंकजबिकशोबिधनाना॥ करवसंतोषविरा
गविवेका॥ बिगतशोकयेकोकअनेका॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यह
प्रतापरविजाहिंके॥ उरजबकरीप्रकाश॥ पाछिलवाढहि
प्रथमजे॥ कहतेपावहिनाश॥ ५४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आ
तन्हिसहितरामएकवारा॥ संगपरमप्रियपवनकुमारा॥
सुंदरउपवनदेखतगएऊ॥ सबतरुकुसुमितपल्लवनएऊ
॥ जानिसमयसनकादिकआए॥ तेजपुंजगुणशीलसुहा
ए॥ ब्रह्मानंदसदालयलीना॥ ॥ व ॥ व ॥
धरेदेहजनुचारिउबेदा॥ समदर्श ॥ ॥ ६ ॥

आशावसनव्यसननहितिनहीं ॥ रघुपतिचरितहोइतह
 स्तनहीं ॥ तहांरहेसनकादिभवानी ॥ जहंघटसंभवमुनिव
 रजानी ॥ रामकथासुनिबहुबिधबरणी ॥ ज्ञानयोनिपावक
 कहअरणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देखिराममुनिआवत ॥ हर्षिदं
 डवतकीन्ह ॥ स्वागतपूछीपीतपट ॥ प्रभुबैठनकहंदीन्ह ॥ ५५
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कीन्हिदंडवततीनिऊभाई ॥ सहितपवनसुत
 स्तरवअधिकई ॥ सुनिरघुपतिछविअतुलबिलोकी ॥ भये
 मगनमनशकेनरोकी ॥ श्यामलगातसरोरुहलोचन ॥ सुंद
 रतामंदिरभवमोचन ॥ एकटकरहेनिमेषनलावहिं ॥ प्रभु
 करजोरेशीसनवावहिं ॥ तिन्हकीदशादेखिरघुबीरा ॥ स्त्र
 वतनयनजलपुलकशरीरा ॥ करगहिप्रभुमुनिवरबैठारे ॥
 परममनोहरबचनउचारे ॥ आजुधन्यमैस्तनहुसुनीशा ॥
 तुम्हरेदरशजांहिअघरवीशा ॥ बडेभाग्यपाइयसत्तसंगा
 ॥ बिनिहिंप्रयासहोइभवभंगा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संतपंथअप
 वर्गके ॥ कामीभवकरपंथ ॥ कहहिंसंतकविकोविद ॥ श्रुति
 पुराणसदग्रंथ ॥ ५६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ श्रुतिप्रभुवचनह
 र्षिसुनिचारी ॥ पुलकगातअस्तुतिअनुसारी ॥ भयभगवं
 तअनंतअनामय ॥ अनघअनेकएककरुणामय ॥ जय
 निर्गुणजयजयगुणसागर ॥ स्तरवमंदिरतिहुंलोकउजाग
 र ॥ जयईंदिरमणजयभूधर ॥ अनुपमअजयअनादि
 श्रभाकर ॥ ज्ञाननिधानअमानमानप्रद ॥ पावनसुयशपु
 राणवेदवद ॥ तजकृतजअजताभंजन ॥ नामअनेकअना
 मनिरंजन ॥ सर्वसर्वगतसर्वउगलय ॥ वसहुसदाहमंकहं
 पारपालय ॥ इंद्रविपनिभयफंदविभंजन ॥ ह्रीवस्तुगमका
 ममदगंजन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परमानंदरुपायतन ॥ मनपरि

पूरणकाम॥ प्रेमभक्तिअनपायिनी॥ देहुहमहिं श्रीराम॥
 ॥५७॥ ॥चौपाई॥ ॥देहुभक्तिरघुपतिअतिपावनी॥ वि
 विधतापभवदापनशावनि॥ प्रणतपालसरधेनुकल्पतरु
 ॥होइप्रसन्नप्रभुदोजैयहवरु॥ भववारिधिकुंभजरघुना
 यक॥ सेवकसुलभसकलसरवदायक॥ मनसंभवदारुण
 दुखदारक॥ दीनबंधुसमताविस्तारक॥ आशत्रासईर्षादिनिवा
 रक॥ विनयविवेकविरतिविस्तारक॥ भूममौलिमणिमंडनधर
 णी॥ देहुभक्तिसंसृतिसरितरणी॥ मुनिमनमानसहंसनिरंतर
 ॥चरणकमलबंदितअजशंकर॥ रघुकुलकेतुसेतुश्रुतिरक्षक
 ॥कालकर्मस्वभावगुणभक्षक॥ तारकतरणहरणसबदूषण
 ॥तुलसिदासप्रभुत्रिभुवनभूषण॥ ॥दोहा॥ ॥बारबारअ
 स्तुतिकरि॥ प्रेमसहितशिरनाइ॥ ब्रह्मभवनसनकादिगे॥
 अतिअभीष्टवरपाइ॥५८॥ ॥चौपाई॥ ॥सनकादिकविधिलो
 कसिधाये॥ भ्रातन्हरामचरणशिरनाये॥ पूछतप्रभुहिसकल
 सकुचाहीं॥ चितवहिंसबमारुतसुतपाहीं॥ सुनाचहिंप्रभुसुख
 कीबाणी॥ जोसुनिहोइसकलअमहानी॥ अंतरजामीप्रभु
 सबजाना॥ बूझतकहहुकहाहनुमाना॥ जोरिपाणितबकहहु
 लुमंता॥ सुनुहुदीनदयालुभगवंता॥ नाथभरतकछुपूछन
 चहहीं॥ प्रश्नकरतमनसकुचतअहहीं॥ तुम्हजानहुक
 पिमोरसभाऊ॥ भरतहिमोहिनकछुदुराऊ॥ सुनिप्रभुब
 चनभरतगहिचरणा॥ सुनहुनाथप्रणतारतिहरणा॥
 ॥दोहा॥ ॥नाथनमोहिसंदेहकछु॥ सपनेहुशोकनमोह॥
 केवलरूपातुह्मारिप्रभु॥ चिदानंदसंदोह॥५९॥ ॥चौ
 पाई॥ ॥करोरूपातिथिएकदहाई॥ मैसेवकतुह्मजनसु
 खदाई॥ संतनकीमहिमारघुराई॥ बहुविधबेदपुराणह

गाई॥ श्रीसुखतुल्यपुनिकीन्हबडाई॥ तिन्हपरप्रभुहिप्री
 तिअधिकारै॥ सुनाचहौप्रभुतिन्हकरलक्षण॥ कृपासिं
 धुगुणज्ञानबिचक्षण॥ संतअसंतभेदबिलगाई॥ प्रणत
 पालमोहिकहियबुझाई॥ संतनकेलक्षणसुनुआता॥
 अगणितश्रुतिपुराणविरव्याता॥ संतअसंतनकीअस
 करणी॥ जिमिकुठारचंदनआचरणी॥ काटेपरशुमलय
 सुनुभाई॥ निजगुणदेईसगंधवसाई॥ ॥ दोहा ॥
 तातेसरशीसहिचहत॥ जगवल्लभश्रीखंड॥ अनलदा
 हिपीढतघनहिं॥ परुषबदनयहदंड॥ ६०॥ ॥ चौपाई॥
 विषयअलंपटशीलगुणाकर॥ परदुरवदुरवीसरवीदेखै
 पर॥ समअभूतरिपुविमदविरागी॥ लोभामर्षहर्षभयत्या
 गी॥ कोमलचितदीनहिपरदाया॥ मनबचकर्मममभक्ति
 अमाया॥ सबहिमानप्रदआपुअमानी॥ भरतप्राणसम
 ममतेप्राणी॥ विगतकामसनामपरायण॥ शांतविरतिबि
 नीतसुदितायन॥ शीतलताससरलतामैत्री॥ द्विजपदप्रे
 मधर्मजनयित्री॥ यहसबलक्षणबसहिंजासुउर॥ जाने
 हुतानसंतसंततफुर॥ शमदमनियमनीतिनहिंडोलहिं॥ पु
 रुपवचनकवहुंनहिवोलहिं॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निंदाअस्तुति
 उभयसम॥ ममताममपदकंज॥ तेसज्जनममप्राणप्रिय
 ॥ गुणमंदिरसरवपुंज॥ ६१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुनहुअ
 संतनकरसभाऊ॥ भूलेहुसंगतिकरियनकाऊ॥ तिन्हक
 रसंगसदादुरवदाई॥ जिमिकपिलहिघालैहरहाई॥ ख
 लन्हदयअनितापविशेषी॥ जरहिसदापरसंपतिदेपी
 ॥ जदंकहुंनिंदासुनदिंपराई॥ द्वयहिमनहुपरिनिधिपाई
 ॥ कामक्रोधमदलाभपरायण॥ निंदयकपटाकुटिलमला

यन ॥ बैर अकारण सब काहूं सों ॥ जों करुहित अनहितता
 हूं सों ॥ जूठै इलैना जूठै इदेना ॥ जूठै भोजन जूठ च बेना ॥ बो
 लहिं बचन मधुर जिमि मोरा ॥ स्वाहिं महा अहित दय कठो
 रा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परद्रोही परदार रत ॥ परधन परअप
 वाद ॥ तेनर पा मर पाप मय ॥ देह धरें मनु जाद ॥ ६२ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ लोभै ओढन लोभै डासन ॥ शिओदर परय मपु
 र आसन ॥ काहू कीजौ सुनहिं बडाई ॥ श्वास लेंहि जनु जुडी
 आई ॥ जब काहू के देर वहिं विपती ॥ सुखी होइ मानहु जग नृ
 पती ॥ स्वारथ रत परिवार विरोधी ॥ लंपट काम लोभ अतिक्रो
 धी ॥ मातु पिता गुरु बिप्र न मानहिं ॥ आपुगए अरु घालहि
 आनहिं ॥ करहिं मोह बश द्रोह परावा ॥ सत संगति हरि भ
 क्ति न भावा ॥ अवगुण सिंधु मंद मति कामी ॥ बेद बिदूषक
 परधन स्वामी ॥ विप्र द्रोह परद्रोह विशेषा ॥ दंभ कपट जिय
 धरें सुवेषा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसे अधम मनुजर खल ॥ कृत
 युग त्रेतानाही ॥ द्वापर कछु कहुं बहु ॥ होइ है कलि युग मा
 हि ॥ ६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परहित सरिस धर्म नहि भाई ॥
 परपीडा समनहि अधमाई ॥ निर्णय सकल पुराण बेद क
 र ॥ कहे उतात जानहिं को बिदनर ॥ नर शरीर धरिजे पर
 पीरा ॥ करहिं ते सहहिं महा भवभीरा ॥ करहिं मोह वशनर
 अयनाना ॥ स्वारथ रत परलोक न शाना ॥ काल रूप मै तिन्ह
 कहं ताता ॥ शुभ अरु अशुभ कर्म फल दाता ॥ अस बिचा
 रि जो परम सयाने ॥ भजहि मोहि संसृति दुख जाने ॥ त्या
 गहिं कर्म शुभाशुभ दायक ॥ भजहिं मोहि सरनर मुनि ना
 यक ॥ संत असंतन के गुण भाषे ॥ तेन परहिं भव जिन्ह लि
 खि वराखे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनहु तात माया कृत ॥ गुण अ

रुदोषश्चनेक ॥ गुणइहउभयनदेरिवअहि ॥ देरिवयसो-
 अविवेक ॥ ६४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ श्रीसुरवचनसुनतस
 बभाई ॥ हर्षप्रेमनहिहृदयसमाई ॥ करहिबिनयअतिवा
 रहिवारा ॥ हनूमानहियहर्षअपारा ॥ पुनिरघुपतिनिजमं
 दिरगए ॥ इहिविधचरितकरतनितनए ॥ बारबारनारद
 सुनिआवहिं ॥ चरितपुनीतरामकरगावहिं ॥ नितनवच
 रितदेरिवसुनिजाहीं ॥ ब्रह्मलोकसवकथाकहाहीं ॥ सुनि
 विरंचिअतिशहसुरवमानहिं ॥ पुनिपुनितांतकरहुगुण
 गानहिं ॥ सनकादिकनारदहिंसिहाहीं ॥ यद्यपिब्रह्मनि
 रतसुनिआही ॥ सुनिगुणगानसमाधिविसारी ॥ स्नादय
 सुनहिंप्रेमअधिकारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जीबनसुक्तब्रह्मप
 रचरित ॥ सुनहिंतजिध्यान ॥ जेहरिकथानकरहिंरति ॥
 तिनकेहृदयपषान ॥ ६५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकवाररघु
 नाथबुलाए ॥ गुरुद्विजपुरवासीसवआए ॥ बैठेगुरुद्विज
 वरसुनिसज्जन ॥ बोलेवचनभक्तभयभंजन ॥ सुनहुंसक
 लपुरजनममावाणी ॥ कहौंनकछुममताउरआनी ॥ न
 हिअर्नातिनहिकछुमभुंताई ॥ सुनहुकरहुजौतुमहिसु-
 हाई ॥ सोईसंवकमियतमममसोई ॥ ममअनुशासनमा
 नैजाई ॥ जोअनीतिकछुभायोभाई ॥ तैमोहिवरजहुभ-
 यविसराई ॥ बडेभार्यमानुषतनुपावा ॥ करदुर्लभसदय
 यनगावा ॥ साधननाममोक्षकरहारा ॥ पाइनजोंईपर-
 लोकसंचारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सोपरचदुरवपावदे ॥ शिर
 धुनिधुनिपुछताई ॥ कालदिकनेहिदेअरहि ॥ भिअ्यादोष
 रुगाई ॥ ६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गहिननुकरफलविषयमभा
 ॥ ॥ अंग ॥ अंतहुदुखदाई ॥ नरतनुपाईविषयमनदे-

हीं ॥ पलटि सुधाते शठ बिषले हीं ॥ ताहि कबहुं भल कहें न को
 ई ॥ गुंजा गह पार समणि खोई ॥ आकर चारि लाख चौ रूपा
 शी ॥ योनि निभमत जीव अविनाशी ॥ फिरत सदा माया के
 भेरे ॥ काल कर्म सु भाव गुण धेरे ॥ कबहु करि करुणानर दे
 हो ॥ देत ईश बिनु हेतु सने ही ॥ नरतनु भव बारि धि कह वेरा
 ॥ संमुख मरुत अनुग्रह मेरा ॥ कर्णधार सदगुरु दृढ नावा ॥
 दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जो न तरै भव
 सागर हिं ॥ नर सभाज अस पाई ॥ सो छत निंदक मंद मति ॥
 आत महा गति जाई ॥ ६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जो परलोक इ
 हां सरख चहू ॥ सुनि मम वचन हृदय दृढ गहू ॥ सुलभ सु
 ख दमार गयह भाई ॥ भक्ति मोर पुराण श्रुति गाई ॥ ज्ञान अ
 गम प्रत्यूह अनेका ॥ साधन कठिन न मन कहं टेका ॥ करत
 कष्ट बहु पावई कोऊ ॥ भक्ति हीन प्रिय मोहि न सोऊ ॥ भक्ति
 स्वतंत्र सकल सरवरानी ॥ बिनु सत संग न पावहिं प्राणी ॥
 पुण्य पुंज बिनु मिलहि न संता ॥ सत संगति संसृति कर अं
 ता ॥ पुण्य एक जगमहुं नहि दूजा ॥
 पूजा ॥ सानुकूल तेहि परमुनि देवा ॥
 सेवा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ औरौ एक गुसमत ॥ सर्वा
 जोरि ॥ शंकर भजन विना नर ॥ भक्ति न पावै मोरि ॥ ६८ ॥
 ॥ चौपाई ॥ ॥ कहूहु भक्ति पथ कवन प्रयासा ॥
 जपत पउप वासा ॥ सरल सुभावन मन कुटिलाई ॥ यथा
 लाभ संतोष सदाई ॥ मोर दास कहाइ नर आशा ॥ करै कह
 हु तो कहा विश्वासा ॥ बहुत कहां का कथा बडाई ॥ एहि
 चरण बश्य मै भाई ॥ बैर न विग्रह आशन त्रासा ॥ सरख मय
 ताहि सदा सब आशा ॥ अनारंभ अनिकेत अमानी ॥

नयश्चरोषदक्षविज्ञानी ॥ प्रीतिसदासज्जनसंसर्गा ॥ तृ
 णसमविषयस्वर्ग्यपवर्गा ॥ भक्तिपक्षहठनहिशठताई ॥
 दुष्टकर्मसबदूरिविहाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मम गुणग्रामना
 मरत ॥ गतममतामदमोह ॥ ताकरसुरवसोई जानै ॥ परा
 नंदसंदोह ॥ ६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ स्तनतस्तथासमबचन
 रामके ॥ सबन्हिगहेपदकृपाधामके ॥ जननिजनकगुरु
 बंधुहमारे ॥ कृपानिधानप्राणतेंप्यारे ॥ तनुधनुधामराम
 हितकारी ॥ सबविधतुमप्रणतारतिहारी ॥ असशिरवतु
 म्हविनुदेइनकोऊ ॥ मानुपितास्वारथरतओऊ ॥ हेतुरहि
 तयुगयुगउपकारी ॥ हमतुहमारसेवकअसरारी ॥ स्वार
 थभिन्नसकलजगमाहीं ॥ सपनेहुप्रभुपरमारथिनाही ॥
 सबकेबचनप्रेमरससाने ॥ स्तनिरघुनाथहृदयहषाने ॥
 निजनिजगृहगएआयस्तपाई ॥ बरणतप्रभुवतकहिक
 हाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उमाअवधवासीनर ॥ नारिकृतारथ
 रूप ॥ ब्रह्मसच्चिदानंदधन ॥ रघुनाथकजहंभूप ॥ ७० ॥
 चौपाई ॥ ॥ एकबारवशिष्टमुनिआए ॥ जहांरामसुरवधा
 मसुहाए ॥ अतिआदररघुनाथकीन्हा ॥ पदपरवारिच
 रणोदकलीन्हा ॥ रामस्तनहुमुनिकहकरजोरि ॥ कृपासिं
 धुनिनतीकलुमोरि ॥ देखिदेखिआचरणतुम्हारा ॥ होतमो
 हममहृदयअपारा ॥ महिमाअमितवेदनहिजाना ॥ मैके
 हिभांतिकहोभगवाना ॥ उपरोहितीकर्मअतिमंदा ॥ वेदपुरा
 णस्तस्मृतिकरुनिंदा ॥ जयनलेंउंमैतवहिविधिमोही ॥ कहा
 लाभआगेसुननोही ॥ परमात्माब्रह्मनररूपा ॥ होइहिरघु
 कुलभूपणभूपा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवमैहृदयविचारकिय ॥
 आगयअजपदान ॥ जेहिहितकरियसोपाइयै ॥ धर्मनहि

समन्त्रान ॥७१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जपतपनियमयोगव्रतध-
र्मा ॥ श्रुतिसंभवनानाविधिकर्मा ॥ ज्ञानदयामतीतीरथमज्ज-
न ॥ जहलुगिधर्मकहै श्रुतिसज्जन ॥ आगमनिगमपुराण-
अनेका ॥ पढे सुनै कर फलप्रभु एका ॥ तव पद पंकज प्रीति-
निरंतर ॥ सब साधन कर फल यह संदर ॥ छूटै मल किमल
हिके धोए ॥ घृत कि पाव को उवारि बिलाए ॥ प्रेम भक्ति जल
बिनु रघु राई ॥ अभ्यंतर मल कबहुं कि जाई ॥ सोइ सर्वज्ञ
तज्ञ सोइ पंडित ॥ सोइ गुणज्ञ बिज्ञान अखंडित ॥ दक्ष स-
कल लक्षण युत सोई ॥ जाके पद सरोजरति होई ॥ ॥ दो-
हा ॥ ॥ नाथ एक वर मांगी ॥ राम कृपा करि देहु ॥ जन्म जन्म
प्रभु पद कमल ॥ कबहुं घटै जनिनेहु ॥७२॥ ॥ चौपाई ॥
अस कहि सुनि बसिष्ठ गृह आए ॥ कृपा सिंधु के मन अति
भाए ॥ हनुमान भरतादिक भ्राता ॥ संगलिये सेवक सरखदा-
ता ॥ पुनि कृपालु पुर बाहिर गये ॥ गजरथ तुरग मंगावत भ-
ये ॥ देखि कृपा करि सकल सराहे ॥ दिए उचित जिन्ह जिन्ह-
जो चाहे ॥ हरण सकल अम प्रभु अम पाई ॥ गए जहां शीतल
अम राई ॥ भरत दीन्ह निज बसन डसाई ॥ बैठे प्रभु सेवहिं
सब भाई ॥ मारुत सुत तब मारुत करई ॥ पुलक गात लोच-
न जल भरई ॥ हनुमान समान बड भागी ॥ नहि कोउ राम च-
रण अनु रागी ॥ गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ॥ बार बार प्र-
भु निज मुख गाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेहि अवसर मुनि नारद
॥ आए करतल बीन ॥ गावन लागै राम कल ॥ की रति सदा
नबीन ॥७३॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ माम बलोक य पंकज लोचन
॥ कृपा विलोकनि सोच विशोचन ॥ नीलतामर श्याम काम अ-
रि ॥ हृदय कंज मकरंद मधु पहरि ॥ जातु धान बरूथ बल भंज

न॥ मुनिसज्जनरंजनअधगंजन॥ भूस्तरशशिनववृंदव
 लाहक॥ अशरणशरणदीनजनगाहक॥ भुजबलविपुल
 भारमहिमंडित॥ खरदूषणविराधवधपंडित॥ रावणारि
 स्वरवरूपभूपवर॥ जयदशरथकुलकुसुदस्तथाकर॥ सुय
 शपुराणविदितनिगमागम॥ गावतसुरमुनिसंतसमागम
 ॥ कारुणीकवालीमदरवंडन॥ सबविधकुशलकोशलामें
 डन॥ कलिमलमथननामममताहन॥ तुलसिदासप्रभुपा
 हिप्रणतजन॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रेमसहितमुनिनारद॥ बरणि
 रामगुणग्राम॥ शोभासिंधुहृदयधरि॥ गणजहांविधिधाम
 ॥ ७४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गिरिजासुनहुविशदयहकथा॥
 मैसबकहीमोरिमतियथा॥ रामचरितशतकोटिअपारा
 ॥ श्रुतिशारदानवरणैपारा॥ रामअनंतअनंतगुणानि॥ ज
 न्यकर्मअनंतअमानि॥ जलसीकरमहिरजगणिजाहीं॥ र
 घुपतिचरितनवरणिसिराहिं॥ विमलकथाचहहरिपददा
 यिनि॥ भक्तिसोइसुनिप्रभुअनपायिनि॥ उमाकहेउंसो
 कथासुहाई॥ जोभुअंडिरवगपतिहिंसुनाई॥ कछुकरामगु
 णकहेउंवरवानी॥ अवकाकहोंसोकहुहुभवानी॥ सुनिभु
 भकथाउमाहर्षिनी॥ बोलीअतिविनीतमृदुवाणी॥ धन्यध
 न्यमैधन्यपुरारी॥ सुनेउरामगुणभवभयहारी॥ ॥ दोहा ॥
 तुम्हरीरूपाकृपायतन॥ अवकृतकृत्यनमोह॥ जानेउराम
 यतापप्रभु॥ चिदानंदसंदोह॥ ७५ ॥ नाथनवाननशशिस्र
 वत॥ कथासुधारसुवीर॥ अरण्यपुटन्हिमनपानकरि॥ नहि
 अवातमतिधीर॥ ७६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामचरितजेसुन
 तअघादीं॥ रसविशंपजानानिन्दनाहीं॥ जीवनमुक्तमहा
 मुनिजंड॥ हरिगुणसुनतनिरंतरतंड॥ भवसागरचढ़पा

रजोपावा ॥ रामकथा ता कहु हट नावा ॥ विषयिन कहं पुनि ह
रि गुण ग्रामा ॥ श्रवण सुख द अरु मन बिश्रामा ॥ श्रवण वंत
अस को जग मांहीं ॥ जाहि नरघुपतिकथा सुहाहीं ॥ तेज डजी
वनि जात मघाती ॥ जिनहिं नरघुपतिकथा सोहाती ॥ हरि च
रित्र मान स तुम गावा ॥ सुनि मै नाथ परम सुख पावा ॥ तुम
जो कहाय ह कथा सुहाई ॥ काक भुभुंडी गरुड प्रतिगाई ॥
॥ दोहा ॥ ॥ विरत ज्ञान विज्ञान हट ॥ राम चरण अति नेह ॥
वाय सत नुरघुपति भगति ॥ मोहि परम संदेह ॥ ७७ ॥
चौपाई ॥ ॥ नर सहस्र मह सुनहु पुरारी ॥ कोउ एक होइ ध
र्म ब्रत धारी ॥ धर्म शील कोटिक मह कोई ॥ बिषय बिमुख बि
रागरत होई ॥ कोटि विरक्त मध्यश्रुति कहई ॥ सम्यक ज्ञान
सकत कोउ लहई ॥ ज्ञान वंत कोटिक मह कोई ॥ जीवन सु
क्त सकल जग सोई ॥ तिन सहस्र मह सब सरव स्वानी ॥ दु
र्लभ ब्रह्म निरत बिज्ञानी ॥ धर्म शील विरक्त अरु ज्ञानी ॥ जी
वन सुक्त ब्रह्म पर प्राणी ॥ सब ते सों दुर्लभ सुर राया ॥ राम भ
क्ति रत गत मद माया ॥ सो हरि भक्तिका क किमि पाई ॥ बिश्व
नाथ मोहि कहहु बुझाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राम परायण ज्ञान
नरत ॥ गुणा गार मति धीर ॥ नाथ कहहु केहि कारण ॥ पाय
उका क शरीर ॥ ७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यह प्रभु चरित्र पवि
त्र सुहावा ॥ सुनहु कृपालु का कह पावा ॥ तुम्ह केहि भांति
सुना मदनारी ॥ कहहु मोहि अति कौतुक भारी ॥ गरुड महा
ज्ञानी गुण राशी ॥ हरि सेवक अति निकट निवासी ॥ तिहि के
हेतु का कसन जाई ॥ सुनि कथा सुनि निकर बिहाई ॥ कहहु
कबनि बिध भास बादा ॥ दूही हरि भक्त का कउर गादा ॥ गौरि
गिरा सुनि सरल सुहाई ॥ बोले शिव सादर सरव पाई ॥ धन्य

सतीपावनिमतितोरी ॥ रघुपतिचरणपीतिनहिथोरी ॥ सु
 नहुपरमपुनीतइतिहासा ॥ जोसुनसकलशोकभ्रमनाशा
 ॥ उपजहिरामचरणविश्वासा ॥ भवनिधितरुकरविनहिप्र
 यासा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसेइप्रअविहंगपति ॥ कीन्हकाकस
 नजाइ ॥ सोसबसादरकहहुमैं ॥ सनहुउमाचितलाइ ॥
 ॥ ७६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मैजिमिकथासुनिभवमोचनि ॥
 सोप्रसंगसुखसुखीसुलोचनि ॥ प्रथमदक्षगृहतबअ
 वतारा ॥ सतीनामतबरहातुहारा ॥ दक्षयज्ञममभाअप
 माना ॥ तुमअतिक्रोधजहांतहंप्राणा ॥ ममअनुचरन्ह
 कीन्हमरवभंगा ॥ जानहुंसोतुमसकलप्रसंगा ॥ तबअतिशो
 चभएउमनमोरे ॥ दुखितभएउबियोगप्रियतोरे ॥ सुंदरबन
 गिरिसरिततडागा ॥ कौतुकदेखितफिरौंबिरागा ॥ गिरिसुमे
 रुउत्तरदिशिदूरी ॥ नीलशैलएकसुंदरभूरी ॥ तासुकनकम
 यशिरवरसहाए ॥ चारिचारुमोरैमनभाए ॥ तेहिपरएकए
 कबिटपविशाला ॥ वटपीपरपाकरीरसाला ॥ शैलोपरिसर
 सुंदरसोहा ॥ मणिसोपानदेखिमनमोहा ॥ ॥ दोहा ॥
 शीतलअमलमधुरजल ॥ जलजबिपुलबहुरंग ॥ कूजत
 कलरवहंसगण ॥ गुंजतमंजुलभृंग ॥ ८० ॥ ॥ चौपाई ॥
 तिहिंगिरिरुचिरवसैरवगसोई ॥ तासुनाशकल्पांतनहोई
 ॥ मायाकृतगुणदोषअनेका ॥ मोहमनोजआदिअविवेक
 ॥ रहेआपिसमस्तजगमाहीं ॥ तिहिगिरिनिकटकवहुंन
 हिजाहीं ॥ तहंवसिहरिहिंभजैजिमिकागा ॥ सोसुणुउमा
 सहितअनुरागा ॥ पीपरतरुतरध्यानसोधरई ॥ जापयज्ञ
 पाकरितरकरई ॥ आअछाहकरुमानसपूजा ॥ तजिहरिभ
 जनकाजनहिदूजा ॥ वटतरकरुहरिकथाप्रसंगा ॥ आव

॥रामचरित्रविचित्रविधनाना॥ प्रेमसहि
तकरुसादरगाना॥ सनहिसकलमतिविमलमराला॥ वसहि
निरंतरजेतेहिताला॥ तबमैंजाइसोकौतुकदेरवा॥ उरउपजा
आनंदविशेषा॥ ॥दोहा॥ ॥तबकछुकालमरालतनु॥ ध
रितहंकीन्हनिवास॥ सादरसुनिरघुपतिचरित॥ पुनिआए
उकैलास॥ ८१॥ ॥चौपाई॥ ॥गिरिजाकहेउंसोसबइति
हासा॥ मैजेहिंसमयगयेउखगपाशा॥ अवशोकथासुनहु
जहिंहेतू॥ गएउकाकषहिंरवगकुलकेतू॥ जबरघुनाथकीन्ह
रणक्रीडा॥ ससुजतचरितहोतिमोहिब्रीडा॥ इंद्रजीतकरआ
पुबंधावा॥ तबनारदसुनिगरुडपठावा॥ बंधनकाटिगएउउ
रगादा॥ उपजाहृदयप्रचंडविषादा॥ प्रभुबंधनससुजतबहु
भांती॥ करतबिचारउरगआराती॥ व्यापकब्रह्मबिरजबा
गीशा॥ मायामोहपारपरमीशा॥ सोअवतारसुनेउजग-
देरवेउसोप्रभावकछुनाहीं॥ ॥दोहा॥ ॥भवबंध
नतैंछूटहिं॥ नरजपिजाकरनाम॥ खर्वनिशाचरबांधेउ॥ ना
गपाशसोइराम॥ ८२॥ ॥चौपाई॥ ॥नानाभांतिमनहिस
॥प्रगटनज्ञानहृदयभ्रमछावा॥ स्वेदरिवन्मनत-
॥भएउमोहबशतुह्मरिहिनाई॥ व्याकुलगएउदेव
ऋषिपाहीं॥ कहेसिजोसंशयनिजमनमाहीं॥ सुनिनारद
॥शुणुरवगप्रबलरामकीमाया॥ जोज्ञा-
॥वरिआईबिमोहमनकरई॥ जेहि
बहुबारनचावामोही॥ सोइव्यापैंउविहंगपतितोही॥ महामो
हउपजामनतोरे॥ मिटिहिंनबेगिकहेखगमोरे॥ चतुरानन
॥सोइकरेहुजोदेहिंविदेशा॥ ॥दोहा॥
असकहिचलेदेवऋषि॥ करतरामगुणगान॥ हरिमायाबल

बरणत ॥ पुनिपुनिपरमस्वजान ॥ ८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तब रव
 गपति विरंचि पहंग एऊ ॥ निज संदेह सुनावत भएऊ ॥ सुनि वि
 रंचि राम हिं शिर नावा ॥ समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥ मन महं क
 रहिं विचार विधाता ॥ माया बश कविको विद ज्ञाता ॥ हरि माया
 कर अमित प्रभावा ॥ बिपुल बार जेहिं मोहि न चावा ॥ अगज
 गमय सब मम उपजाया ॥ नहि आश्चर्य मोहि रवग राया ॥ त
 ब बोले विधि गिरा सह आई ॥ जानु महेश राम प्रभु ताई ॥ बैन ते
 य शंकर पहि जाहू ॥ तात अनत पूछहु जनिकाहू ॥ तहं होई हिं
 सब संशय हानी ॥ चहु बिहंग पति सुनि विधि बाणी ॥ ॥ दो
 हा ॥ ॥ परमातुर बिहंग पति ॥ तब आएउ मम पास ॥ जातर
 हेउ कुवेर गृह ॥ रहेहु उमा कैलास ॥ ८४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेहि
 मम पद सादर शिर नावा ॥ पुनि आपन संदेह सुनावा ॥ सुनि
 ता कर विनीत मृदु बाणी ॥ प्रेम सहित मै कहै उभवानी ॥ मिले
 हु गरुड मारग महं मोही ॥ कवन भांति समुझावों तोही ॥ ज
 ब चहु काल करिय सत संग ॥ तब सबहि होई संशय भंगा ॥
 सुनियत हां हरि कथा सह आई ॥ नाना भांति सुनि न्हजो गई ॥
 जेहि महं आदि मध्य अवसाना ॥ प्रसु प्रति पाद्य राम भगवा
 ना ॥ निन हरि कथा होति जहं भाई ॥ पठवों तोहि सुनहु तहं
 जाई ॥ जाइ हिं सुनत सकल संदेहा ॥ होइ हिं राम चरण दृढ
 नेहा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विनु सत संग न हरि कथा ॥ तेहि विनु
 मोहन भाग ॥ मोइ गए विनु राम पद ॥ होइ न दृढ अनुराग ॥
 ॥ ८५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मिलहिं नरघु पति विनु अनुराग ॥
 किये योग जप ज्ञान विरांगा ॥ उत्तर दिशि सुंदर गिरि नीला ॥
 नहर ह काक भुंछिंडि सुगीला ॥ राम भक्ति पथ परम प्रवीणा
 ॥ जानी गुण गृह बहू कालीना ॥ राम कथा सोइ कहै निरंतर ॥

सादरसुनहिविविधविहंगवर॥ जाइसुनहुतहंहरिगुणभूरि॥
होइहिंमोहजनितदुरवदूरी॥ मैंसबजबतैंहिकहाबुजाई॥ चले
उहर्षिममपदशिरनाई॥ तातेंउमानमैंसमुझावा॥ रघुपतिकृपा
मर्ममैंपावा॥ होइहिंकिन्हकबहुंअभिमाना॥ सोरवौबैचहकृपा
निधाना॥ कछुतेहितेपुनिमैंनहिरारवा॥ समुझैखगखगहिंकी-
भाषा॥ प्रभुमायाबलवंतभवानी॥ जाहिनमोहकवनअसजानी
॥ दोहा ॥ ॥ ज्ञानीभक्तशिरोमणि॥ त्रिभुवनपतिकरयान॥
ताहिमोहमायाप्रबल॥ पामरकरहिंगुमान॥ ८६॥ शिववि-
रंचिकहंमोहै॥ कोहैबपुराआन॥ असजियजानिमजहिं
सुनि॥ मायापतिभगवान॥ ८७॥ ॥ चौपाई॥ ॥ गयेउग-
रुइजहंबसैभुसुंडी॥ मतिअकुंठहरिभक्तिअखडी॥ दे-
रिवशैलमसन्नमनभएऊ॥ मायामोहशोचअमगएऊ॥ क-
रितडागमज्जनजलपाना॥ बटतरगएउहृदयहरपाना॥
चुहचुहबिहंगतहंआए॥ सुनेरामकेचरितसुहाए॥ क-
थाआरंभकरेसोइचाहा॥ ताहीसमयगएउखगनाहा॥
आवतदेरिवसकलखगराजा॥ हर्षेउबायससहितस-
माजा॥ अतिआदरखगपतिकरकीन्हा॥ स्वागतपुछिसु-
आसनदीन्हा॥ करिपूजासमेतअनुरागा॥ मधुरबचन
तबबोलेउकागा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाथकृतारथभयेउं
मैं॥ तबदरशनखगराज॥ आयसुदेहुंसोकरींअब॥ प्र-
भुआयेहुंकेहिकाज॥ ८८॥ सदाकृतारथरूपतुम॥ कह-
सुदुबचनखगेश॥ जाकीअस्तुतिसादर॥ निजसुखकीन्ह
महेश॥ ८९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ सुनहुतातजेहिकारजआ-
येउ॥ सोसबभयेउदर्शितबपायेऊ॥ देरिवपरमपावनतब
आअम॥ गएउमोहसंशयनानाअम॥ अबअरीरामकथा

अतिपावनि ॥ सदा स्वरवददुरवपुंजनशावनि ॥ सांदरतात
 स्तनाबहुमोही ॥ बारबारविनवौ प्रभु तोही ॥ स्तनतगरुड-
 कीगिराविनिता ॥ सरलसप्रेमस्वरवदपुनीता ॥ भएउतासु
 मनपरमउछाहा ॥ कहैलागुरघुपतिगुणगाहा ॥ प्रथमहि
 अतिअनुरागभवानी ॥ रामचरितसरकहेसिबरवानी ॥ पु
 निनारदकरमोहअपारा ॥ कहेसिबहुरिरावणअवतारा ॥
 प्रभुअवतारकथापुनिगई ॥ पुनिशिशुचरितकहेसिमन
 लाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बालचरितकहिविविधविध ॥ मन
 महं परमउछाह ॥ ऋषिआगमनकहेसिपुनि ॥ श्रीरघुवी
 रविवाह ॥ ५० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बहुरिरामअभिषेकप्रसं
 गा ॥ पुनिचृपवचनराजरसभंगा ॥ पुरवासिनकरविरह
 विषादा ॥ करसिरामलक्ष्मणसंवादा ॥ बिपिनगमनकेबद
 अनुरागा ॥ स्वरसरितउतरिनिवासप्रयागा ॥ बालमीकप्रभु
 मिलनवरवाना ॥ चित्रकूटजिमिवसुभगवाना ॥ सचिवागं
 मननगरनृपमरणा ॥ भरतागमनप्रेमपुनिवरणा ॥ करिचृ
 पक्रियासंगपुरवासी ॥ भरतगएतहंप्रभुस्वरराशी ॥ पुनि
 रघुपतिबहुविधसमुजाए ॥ लंपादुकाअवधफिरिआए ॥
 भरतरहनिस्वरपतिस्तनकरणी ॥ प्रभुअरुअभिभेटपुनि
 वरणी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहिविराधबधजाहिविध ॥ देह
 तजीगिरभंग ॥ वरणि सुतीक्षणमंमपुनि ॥ प्रभुअगस्त्य-
 सतसंग ॥ ॥ रेश ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहिदंडकवनपावनताई
 ॥ गृध्रमंड्रीपुनिनंदिगाई ॥ पुनिप्रभुपंचवटीकृतवासा ॥
 भंजांमकलमुनिन्दकीवासा ॥ पुनिलक्ष्मणउपदेशअनू
 पा ॥ नृपेनरवाजिमिकीन्हकुन्दा ॥ स्वरदूषणवधबहुरिव
 रवाना ॥ निमिन्नवममंदगाननजाना ॥ दशकंधरमारीच

वत कहो ॥ जेहि बिध भई तेहि कहो ॥ पुनि माया सीता कर
हरणी ॥ श्रीरघुबीर बिरह कछु बरणी ॥ पुनि प्रभु गृध्र कि
या जिमि कीन्ही ॥ अधिक बंध शबरिहि गति दीन्ही ॥ बहु
बिरह वरण तरघुबीरा ॥ जेहि बिध गए उसरो वरतीरा ॥
॥ दोहा ॥ ॥ प्रभु नारद संवाद कहि ॥ मारुति मिलन प्रसंग
॥ पुनि सुग्रीव मिताई ॥ वालि प्राण कर भंग ॥ २२ ॥ कपि हिति
लक करि प्रभु कृत ॥ शैल प्रवर्षण वास ॥ बर्णत वर्षा शरद क
तु ॥ राम रोष कपि नास ॥ २३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जेहि बिधि
कपि पतिकी शपठए ॥ सीतारवोज सकल दिशि धाए ॥ विवर
प्रवेश कीन्ह जेहि भांती ॥ कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥ सु
निसब कथा समीर कुमार ॥ लाघत भए उपयोधि अपारा ॥
लंका कपि प्रवेश जिमि कीन्हा ॥ पुनि सीतहि धीरज जिमि
दीन्हा ॥ वन उजारि रावणहि प्रबोधी ॥ पुर दहिलांघे उबहु
रि पयोधी ॥ आए कपि सब जहं रघु राई ॥ वैदेही कै कुशल
सुनाई ॥ सेन समेत यथारघुबीरा ॥ उतरे जाई बारि निधि
तीरा ॥ मिला बिभीषण जेहि बिध आई ॥ सागर निग्रह क
था सुनाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेतु बाधिकपि सेन जिमि ॥ उ
तरे सागर पार ॥ गयो वशीठी बीरवर ॥ जेहि बिध बालि कु
मार ॥ २४ ॥ निशिचर कीशल राई बहु ॥ बरणि सिबि बिध
प्रकार ॥ कुंभ कर्ण घन नाद कर ॥ बल पौरुष संहार ॥ २५ ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ निशिचर निकर मरण विध नाना ॥ रघुपति रा
वण समर बरवाना ॥ रावण बध मंदोदरि शोका ॥ राज बिभी
षण देव अशोका ॥ सीतारघुपति मिलन बहोरी ॥ सरन्ह की
न्ह अस्तुति कर जोरी ॥ पुनि पुष्पक चटि कपिन्ह समेता ॥ अ
वध चले प्रभु कृपानिकेता ॥ जेहि बिध राम नगर निज आयी ॥

वायसविशदचरितसवगाये ॥ कहेसिबहोरिरामअभिषे
 का ॥ पुरवर्णननृपनीतिअनेका ॥ कथासंमस्तभुशुंडिव-
 खानी ॥ जोमैतुमसनकहीभवानी ॥ सुनिसबरामकथा
 रवगनाहा ॥ कहतबचनमनपरमउछाहा ॥ ॥ सोरठा ॥
 गएउमोरसंदेह ॥ सुनेउसकलरघुपतिचरित ॥ भएउग
 मपदनेह ॥ तवप्रसादवायसतिलक ॥ ६६ ॥ ॥ मोहिभएउ
 अतिमोह ॥ प्रभुबंधनरणमहंनिरखि ॥ चिदानंदसंदोह ॥
 रामविकलकारणकवन ॥ ६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देखिच-
 रितअतिनरअनुसारी ॥ भएउहृदयममसंशयभारी ॥
 सोभ्रमअवमैहितकरिजाना ॥ कीन्हअनुग्रहकृपानिधा
 ना ॥ जोअतिआतपव्याकुलहोई ॥ तरुछायासुरवजानै
 सोई ॥ जानहिहोतमोहअतिमोही ॥ मिलतेंउतातकवनि
 विधतोही ॥ सुनतेउंकिमिहरिकथासुहाई ॥ अतिविचि
 अवहुविधतुम्हगाई ॥ निगमागमपुराणमतएहा ॥ कहहिं
 सिद्धसुनिनहिसंदेहा ॥ संतविशुद्धमिलहिंपरितेही ॥ चि
 तवहिरामकृपाकरिजेही ॥ रामकृपातवदरशनभएऊ ॥
 तवप्रसादममसंशयगयेऊ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिविहंग
 पतिवाणी ॥ सहितविनयअनुराग ॥ पुलकगातलोचन
 सजल ॥ मनहर्षेउअतिकांग ॥ ६८ ॥ ॥ श्रोतासुमतिस्फील
 शक्ति ॥ कथारसिकहरिदास ॥ पाइउमाअतिगोप्यमत ॥
 सज्जनकरहिंप्रकाश ॥ ६९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बोलेउका
 गभुशुंडिवहोरी ॥ नभगनाथपरप्रीतिनयोरी ॥ सवविध
 नाथपुज्यतुम्हमेरे ॥ कृपापात्ररघुनाथककरे ॥ तुमहिंन
 संशयमोहनमाया ॥ मोपरनाथकीन्हतुमदाया ॥ पटेंमोह
 मिंसुरखगपतिनाई ॥ रघुपतिदीन्हवडाइमोहा ॥ तुमनि

जमोह कहां रवग सांई ॥ सो नहिं कछु आश्वर्य गो सांई ॥ नार
द शिव विरंचि सनका दी ॥ जे सुनि नाथ क आतम वादी ॥ मो
हन अंध कीन्ह केहि केही ॥ को जग कामन चावन जेही ॥ तृष्णा
केहिन कीन्ह बौरा हा ॥ केहि करह दय को धन हि दाहा ॥ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ जानीता मस भूर कवि ॥ को बिद गुण आगार ॥ के
हि कौलो भवि डंब ना ॥ कीन्ह न एहि संसार ॥ १०० ॥ श्रीमद ब
कन कीन्ह केहि ॥ प्रभुता वधिरन काहि ॥ मृग नयनी के नय
न शर ॥ के असला गुन जाहि ॥ १०१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गुण
कृत सन्निपात नहि केही ॥ को उन मान मदत जे उन बेही ॥ यौ
वन ज्वर केहिन हि बल कावा ॥ ममता केहि कर यशन न शा
वा ॥ मत्सर काहि कलं कन लावा ॥ काहिन शोक समीर डोला
वा ॥ चिंता सां पिनि को नहि रवाया ॥ को जग जाहिन व्यापी मा
या ॥ कीट मनोरथ दारु शरीरा ॥ जेहिन लागु घुण को असधी
रा ॥ कृत वित नारि ईषणा तीनी ॥ केहि की मति इन्ह कृत न म
लिनी ॥ यह सब माया कर परिवारा ॥ प्रबल अभित को वर
पौ पारा ॥ शिव चतुरानन जाहि डेरा हीं ॥ अपर जीव केहिले
खे माहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्यापिरहे उ संसार महं ॥ माया क
टक प्रचंड ॥ सेनापति कामादि भट ॥ दंभ कपट पाषंड ॥ १०२ ॥
सो दासी रघुबीर की ॥ समुजे मिथ्या सो पि ॥ छूटै न राम हृषा
बिनु ॥ नाथ कहौ पद रोपि ॥ १०३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जो माया
सब जगहि नचावा ॥ जासु चरित लखि काहुन पावा ॥ सोइ
प्रभु भूविलासरवगराजा ॥ नाचन दीइव सहित समाजा ॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनंता ॥ अखिल अमोघ शक्ति भग
वंता ॥ सोइ सच्चिदानंद धन रामा ॥ अज अभिज्ञान रूप ब
ल धामा ॥ अगुण अदंभ गिरा गोतीता ॥ सम दरशी अनवध

अजीता ॥ निर्मलनिराकारनिर्मोहा ॥ नित्यनिरजनसुख
 संदोहा ॥ प्रकृतिपारप्रभुसबउरबासी ॥ ब्रह्मनिरीहबिस्ज
 अविनाशी ॥ इहां मोहकरकारणनाहीं ॥ रविंसंमुखतमक
 बहूंकीजाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भक्तहेतुभगवानप्रभु ॥ रामध
 रेउतनुभूष ॥ कियेचरितपावनपरम ॥ प्राकृतनरअतुरूप
 ॥ १०४ ॥ यथाअनेकवेषधरि ॥ नृत्यकरैनटकोई ॥ सोइसोइ
 भावदेरवावै ॥ व्यापुनहोइनसोई ॥ १०५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
 असरघुपतिलीलाउरगारी ॥ दनुजविमोहनजनसुखका
 री ॥ जेमतिमलीनविषयवशकामी ॥ प्रभुपरमोहधरहिंइ
 मिस्वामी ॥ नयनदोषजाकहंजबहोई ॥ पीतवरणशशि-
 कहकुहुसोई ॥ जबजेहिदिशिभ्रमहोईरवगेशा ॥ सोकहि
 पश्चिमउगेउदिनेशा ॥ नौकारूढचलतजगदेरवा ॥ अचल
 मोहबसआपुहिलेरवा ॥ बालकभ्रमहिंनभ्रमहिंगृहादि
 ॥ कहहिं परस्परमिथ्यावादी ॥ हरिविषकेअसमोहिविहं
 गा ॥ स्वपनेहुनहिअज्ञानप्रसंगा ॥ मायाबशमतिमंदअ
 भागी ॥ हृदयजमनिकाबहुविधलागी ॥ तेशठहठबशसं
 शयकरहों ॥ निजअज्ञानरामपरधरहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 कामक्रोधमदलोभरत ॥ गृहासक्तदुखरूप ॥ तेकिमिजानहिं
 रघुपतिहिं ॥ मूढपरेतमकूप ॥ १०६ ॥ निर्गुणरूपसुलभअ
 ति ॥ सगुणनजानैकोई ॥ सगमअगमनानाचरित ॥ सुनिसु
 निमनभ्रमहोई ॥ १०७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शुणुरवगपतिरघु
 पतिप्रभुताई ॥ कहूं यथामतिकहासुहाई ॥ जेहिविधमोह-
 भएउप्रभुमोही ॥ सोसबचरितसुनावौतोही ॥ रामकृपाभा
 जनतुहनाता ॥ हरिगुणप्रीतिमोहिसुखदाता ॥ तातेनहि
 कछुतुमहिंदुरावों ॥ परमरहस्यमनोहरगावों ॥ सुनदुरा

मकर सहज सुभाऊ ॥ जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥ संसृति
मूल मूल प्रदनाना ॥ सकल शोक दायक अभिमाना ॥ ताते कर-
हिं कृपानिधि दूरी ॥ सेवक परम मता अति भूरी ॥ जिमिशिशु
तनु अण होई गोसांई ॥ मातु चिराव कठिन कीनाई ॥ ॥ दोहा ॥
॥ यद्यपि प्रथम दुरव पावै ॥ रोवै बाल अधीर ॥ व्याधि नाश
हित जननी ॥ गण इन सो शिशु पीर ॥ १०८ ॥ तिमिर घुपति निज
दास कर ॥ हरि मान हित लागि ॥ तुलसि दास ऐसे प्रभुहिं ॥ क
सन भज सि भ्रम त्यागि ॥ १०९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राम कृपा आ
पनि जड ताई ॥ कहौ रव गेश सुनहु मन लाई ॥ जब जबराम म
नुज तनु धर हीं ॥ भक्त हेतु लीला बहु कर हीं ॥ तब तब अबध
पुरी में जाऊं ॥ बाल चरित विलोकि हर्षाऊं ॥ जन्म महोत्सव
देखौं जाई ॥ वर्ष पांच तहं रहौ लोभाई ॥ इष्ट देव मम बाल क
रामा ॥ शोभाव पुषिकोटि शत कामा ॥ निज प्रभु बदन निहा
रि निहारि ॥ लोचन सफल करों उर गारी ॥ लघु वाय सब पु-
धरि हरि संग ॥ देखौं बाल चरित बहुरंगा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
लरि काई जहं जहं फिरहिं ॥ तहं तहं संग उडाऊं ॥ जूठन परै अ
जिर महं ॥ सो उठाइ करि खाऊं ॥ ११० ॥ एक बार अति शैशव
॥ चरित किएर घुवीर ॥ सुमिरत प्रभु लीला सोइ ॥ पुलकित
भए उशरीर ॥ १११ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहै भुभुंडि सुनहु
रवग नायक ॥ राम चरित सेवक सरव दायक ॥ नृप मंदिर सु
दर सब भांती ॥ खचित कनक मणि नाना जाती ॥ बरणिन-
जाई रुचिर अंग नाई ॥ जहं रवेलहिं नित चारि उभाई ॥ बा
ल विनोद करत रघु राई ॥ बिचरत अजिर जन नि सुरवदाई
॥ मरकत मृदुल कलेवर श्यामा ॥ अंग अंग प्रति छवि बहु
कामा ॥ नवराजीव अरुण मृदु चरणा ॥ पद जरुचिर नख

शशिदुतिहरणा॥ ललितअंककुलिशादिकचारी॥ नूपुर
 चारुमधुररवकारी॥ चारुपुरटमणिरचितबनाई॥ किं-
 किंकिणीकलसुरवरसुहाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रेखात्रयसुं-
 दरउदर॥ नामिरुचिरगंभीर॥ उरआयतभाजतविविध॥
 बालविभूषणवीर॥ ११२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अरुणपाणि
 नरवकरजमनोहर॥ बाहुविशालविभूषणसुंदर॥ स्कंधवा-
 लकेहरिदरग्रीवा॥ चारुचिबुकआननछविसींवा॥ कल-
 बलबचनअधरअरुनारे॥ दुईदुईदशनबिशदवरबारे॥
 ॥ ललितकपोलमनोहरनासा॥ सकलैसरखदशशिकरस
 महासा॥ नीलकंजलोचनभवमोचन॥ भाजतभालतिल-
 कगोरोचन॥ विकटभृकुटिसमश्रवणसुहाए॥ कुंचितक-
 चमेचकछविछाए॥ पीतजीनऊगलीतनुसोही॥ किलक-
 निचितवनिभावतिमोही॥ रूपराशिनुपअजिरविहारी॥
 नाचहिंनिजप्रतिविंबनिहारी॥ मोहिसनकरहिंविविध
 विधक्रीडा॥ वरणतचरितहोतिमनब्रीडा॥ किलकतमो-
 हिधरनजबधावहिं॥ चलौभाजितवपूपदिरवावहिं॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ आवतनिकटहसहिंप्रभु॥ भाजनरुदनकरा-
 हिं॥ जाउंसमीपगहनपद॥ फिरिफिरिचितैपराहिं॥ ११३॥
 प्राकृतशिशुइवलीला॥ देखिबभएउमोहिमोह॥ कवनच-
 रितकरतप्रभु॥ चिदानंदसंदोह॥ ११४॥ ॥ चौपाई ॥
 इतनामनआनतरखगराया॥ रघुपातिमेरितव्यापीमाया॥
 ॥ सोमायानदुरखदमोहिकाही॥ आनजीवइवसंस्तुतिना-
 ही॥ नाथइहोकरुकारणआना॥ सुनहुसोसावधानह-
 रियाना॥ जानअखंडएकसीतावर॥ मायावश्यजीवच-
 राचर॥ जोसबकेरहजानएकरस॥ इंचरजीवहिंभेदक

हहुकस॥मायावश्यजीवअभिमानि॥ईशवश्यमायागुण
लानी॥परबशजीवस्ववशभगवंता॥जीवअनेकएकश्रीकं
ता॥सुधामेदयद्यपिकृतमाया॥बिनुहरिजाइनकोटिउ
पाया॥ ॥दोहा॥ ॥रामचंद्रकेभजनबिनु॥जोचहपद
निर्वाण॥ज्ञानवंतअपिसोनर॥पशुबिनुपुंछबिषाण॥११५
राकापतिषोडशउगहिं॥तारागणसमुदाय॥सकलगिरि
न्हदबलाइये॥रविविनुरातिनजाय॥११६॥ ॥चौपाई॥
॥तैसहिंबिनुहरिभजनखगेशा॥मिटैनजीवनकेर
कलेशा॥हरिसेवकहिनव्यापअविद्या॥प्रभुमेरिततेहि
व्यापैविद्या॥तातेनाशनहोइदासकर॥भेदभक्तिवाटै
विहंगवर॥भ्रमतेचकितराममोहिदेखा॥बिहंसेसोभू
एचरितविशेषा॥तेहिकौतुककरमर्मनकाहू॥जानाअ
नुजनमातुपिताहू॥जानुपाणिधाएमोहिधरणा॥श्याम
लगातअरुणकरचरणा॥तबमैंभागिचलेउउरगारी॥रा
मगहनकहंभुजापसारी॥जिमिजिमिदूरिउडाऊंअका
शा॥तहंहरिभुजदेखौंनिजपाशा॥ ॥दोहा॥ ॥ब्रह्म
लोकलगिगएउमैं॥चितएऊंपाछुउडात॥युगअंगुलकर
बीचसब॥रामभुजहिंमोहितात॥११७॥ससाबरणभेद
करि॥जहंलगिगतिरहिमोरि॥गएउतहांप्रभुभुजनिर
खि॥व्याकुलभएउंबहोरि॥११८॥ ॥चौपाई॥ ॥सुंदे
उनयनचसितजबभएउं॥पुनिचितवतकोशलपुरगए
उं॥मोहिविलोकिराममुसकाहीं॥बिहंसततुरितगए
उसुरवमाहीं॥उदरमाऊशृणुअंडजराया॥देखेहुबहु
ब्रह्मांडनिकाया॥अतिबिचित्रतहंलोकअनेका॥रच
नाअधिकएकतेंएका॥कोटिनचतुराननगौरीशा॥अ-

गणितउडुगणरविरजनीशा ॥ अगणितलोकपालयम
 काला ॥ अगणितभूधरभूमिविशाला ॥ सागरसरिसर
 विपिनअपारा ॥ नानाभांतिस्त्विविस्तारा ॥ स्वरमुनि
 हूनागनरकिन्नर ॥ चारिप्रकारजीवचराचर ॥ ॥६॥
 जोनहिदेखानहिसना ॥ जोमनहुनसमाइ ॥ सो
 डुतदेखेउं ॥ बरणि कव निविधिजाइ ॥ ११९ ॥ एकएकब्र
 ह्मांडमहं ॥ रहेउ वर्षशतएक ॥ यहिविधदेखतफिरेउंमैं
 अंडकराहअनेक ॥ १२० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लोकलोक
 प्रतिभिन्नविधाता ॥ भिन्नविष्णुशिवमुनिदिशिआता ॥
 नरगंधर्वभूतबैताला ॥ किन्नरनि ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ देवदनुजगएनानाजाती ॥ सकलजीवतहं आनहिभां
 ती ॥ महिसरसागरसरिसिरिनाना ॥ सबप्रपंचतहं
 आना ॥ अंडकोषप्रतिप्रतिनिजरूपा ॥ देखेउंजिनिसअ
 नेकअनूपा ॥ अवधपुरीप्रतिभुवननिन्यारी ॥ शरजू
 नभिन्ननरनारी ॥ दशरथकौशल्याशृणुताता ॥ विवि
 रूपभरतादिकआता ॥ प्रतिब्रह्मांडरामअवतारा ॥ देखेउ
 वालविनोदउदारा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भिन्नभिन्नसबदीन
 रवमें ॥ अतिविचित्रहरियान ॥ अगणितभुवनफिरेउंप्रभु
 ॥ रामनदेखेउआन ॥ १२१ ॥ सोइशिशुपनसोइशोभा ॥ सो
 इंकृपालुरघुवीर ॥ भुवनभुवनदेखतफिरेउं ॥ मेरितमोह
 समीर ॥ १२२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भ्रमतमोहिब्रह्मांडअने
 का ॥ वीतेमनहुंकल्पशतएका ॥ फिरतफिरतनिजआआ
 मआएउं ॥ तहंपुनिरहिकलु कालगवाएउं ॥ निजप्रभुज
 न्यअवधसुनिपाएउं ॥ निर्भरमेमहपिउठिधाएउं ॥ दे
 खेउंजन्ममहोत्सवजाइ ॥ जेहिबिधप्रथमकहामैगाइ ॥

रामउदरदेखेजगनाना॥देखतबनैनजाइबरवाना॥तहंपु
 निदेखेउरामसजाना॥मायापतिकृपालुभगवाना॥करो
 विचारबहोरिबहोरी॥मोहकलिलव्यापितमतिमोरी॥उ
 भयधरीमहमेसबदेखा॥भएउंअमितमनमाहविशेषा॥
 ॥दोहा॥ ॥देखिहुंपालुबिकलमोहि॥बिहसेतबरघुबी
 र॥बिहंसतहींसुखबाहर॥आयउंशृणुमतिधीर॥१२३॥
 सोइलरिकार्ईमोसन॥लगेकरणपुनिराम॥कोटिभातिस
 मुझावों॥मननलहैबिआम॥१२४॥ ॥चौपाई॥ ॥देखि
 चरितइहसोप्रभुताई॥ससुऊतदेहदशाबिसराई॥धरणि
 परेउसुखआवनवाता॥आहिआहिआरतजनआता॥प
 रमाकुलप्रभुमोहिविलोकी॥निजमायाप्रभुतातवरोकी॥
 करसरोजप्रभुममशिरधरेऊ॥दीनदयालदुसहदुखहरे
 ऊ॥कीन्हराममोहिविगतबिमोहा॥सेवकसरवदकृपास
 दोहा॥प्रभुताप्रथमविचारिविचारी॥मनमहंहोइहर्षआ
 तभारी॥भक्तवत्सलताप्रभुकीदेखी॥उपजीममउरपी
 ॥वशेषी॥सजलनयनपुलकितकरजोरी॥कीन्हीबहु
 वधविनयबहोरी॥ ॥दोहा॥ ॥सुनिसप्रेमममबाणी
 ॥देखिदीननिजदास॥बचनसुखदगभीरमृदु॥बोलेरमा
 नवास॥१२५॥कागभुसुंडीमागुवर॥अतिप्रसन्नमोहि
 न॥अणिमादिकसिधिअपरअधि॥मोक्षसकलसु
 ॥१२६॥ ॥चौपाई॥ ॥ज्ञानविवेकविरतिबि
 जाना॥मुनिदुर्लभगतिजेजगजाना॥आजुदेउसबसंशय
 नाही॥मांगुंजोतोहिभावमनमाही॥कृनिप्रभुबचनअधि
 अनुरागेऊं॥मनअनुमानकरनतबलागेऊं॥प्रभुकहदें
 नसकलसुखमोही॥भक्तिआपनीदेइनकही॥भक्तिहीन

गुणस्वरसबऐसे ॥ लवणविना बहुव्यंजनजैसे ॥ भक्तिही
 न सुखकवनेकाजा ॥ असबिचारिबोलेउंखगराजा ॥ जौप्र
 भुहोईप्रसन्नवरदेहू ॥ मोपरकरहुकृपाअरुनेहू ॥ मनभाव
 तवरमागौंस्वामी ॥ तुमउदारउरअंतरजामी ॥ ॥ दोहा ॥
 अविरलभक्तिविशुद्धतब ॥ श्रुतिपुराणजोगाव ॥ जौहिरखो
 जतयोगीशमुनि ॥ प्रभुप्रसादकोउपाव ॥ १२७ ॥ भक्तकल्प
 तरुप्रणतहित ॥ कृपासिंधुस्वरवधाम ॥ सोइनिजभक्ति
 मोहिप्रभु ॥ देहुदयाकरिराम ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एवम-
 स्तकहिरघुकुलनायक ॥ बोलेवचनपरमस्वरदायक ॥
 शृणुवायसतेंसहजसयाना ॥ काहेनमांगसिअसवरदा
 ना ॥ सबसुखखानिभक्तितैमागी ॥ नहि कोउजगसमानव
 उभागी ॥ जेमुनिकोटियतननहिलहही ॥ जोजपजोगअ
 नलतनदहही ॥ रीजेउंदेखितोरिचतुराई ॥ मांगेहुभक्ति
 मोहिअतिभाई ॥ शृणुविहंगप्रसादअवमोरे ॥ सबशुभ
 गुणवसिहैउरतोरे ॥ भक्तिज्ञानविज्ञानविरागा ॥ जोसब
 चरितरहस्यविभागा ॥ जानवतेंसबहीकरभेदा ॥ ममप्र-
 सादनहिसाधनखेदा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मायासंभवभ्रमस
 वै ॥ अवनहिद्व्यापिहितोहि ॥ जानेसिब्रह्मअनादिअज
 ॥ अगुणगुणाकरमोहि ॥ १२८ ॥ मोहिभक्तप्रियसंतत ॥ अ
 सविचारिशृणुकाग ॥ कायवचनसनममपद ॥ करेसुअ
 चलअनुराग ॥ १२९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अचशृणुपरमवि
 मलममचारी ॥ सत्यरुगमनिगमादिवरवानी ॥ निजसि
 द्धानकृपाचोंतोही ॥ कृनिमनधरुसवतजिभजुमोही ॥ म
 गमायासंभवसंसार ॥ जीवचराचरविविधप्रकारा ॥ सा
 वममप्रियसचममउपजाग ॥ सबतेंअधिकमनुजमोही

भाए॥ तेहि महं द्विज द्विज महं अति धारी॥ तिन्ह महं निगम ध
 र्म अनुसारी॥ तिन्ह महं प्रिय बिरक्त सुनि ज्ञानी॥ ज्ञानि हुतें आ
 ति प्रिय बिज्ञानी॥ तिन्ह तें पुनि मोहि प्रिय निज दासा॥ तेहि गति
 मोर न दुसरि आशा॥ पुनि पुनि सत्य कहौ तोहि पाहीं॥ मोहि से
 वक सम प्रिय कोउ नाहीं॥ भक्ति हीन बिरंचिकि न होई॥ सब
 जीवन सम प्रिय मोहि सोई॥ भक्ति वंत अति नीचौ प्राणी॥ मो
 हि प्राण प्रिय असमम बाणी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रुति सुशील
 सेवक सुमति॥ प्रिय कहु काहिन लाग॥ श्रुति पुराण कहनीति
 अस॥ सावधान शृणु काग॥ १३१॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एक पि
 ता के विपुल कुमारा॥ होइ पृथक् गुण शील अचारा॥ कोउ पं
 डित कोउ ताप सज्ञाता॥ कोउ धन वंत भूर कोउ दाता॥ कोउ स
 र्वज्ञ धर्म रत कोई॥ सब पर पितहि प्रीति सम होई॥ कोउ पितु
 भक्त बचन मन कर्मा॥ सपने हु जानन दुसर धर्मा॥ सो प्रिय सु
 त पितु प्राण समाना॥ यद्यपि सो सब भांति अयाना॥ एहि बि
 ध जीव चराचर जेते॥ त्रिजग देवनर असुर समेते॥ अखिल
 विश्व यह मोर उपजाया॥ सब पर मोहि बरावरि दाया॥ तिन्ह
 महं जो परि हरि मद माया॥ भजहिं मोहि मन बच अरु काया
 ॥ दोहा ॥ ॥ पुरुष न पुंस कनारि वा॥ जीव चराचर कोई॥
 सर्व भाव भजु कपट तजि॥ मोहि परम प्रिय सोई॥ १३२॥
 सोरठा॥ ॥ सत्य कहौ खग तोहि॥
 य॥ अशु बिचारि भज मोहि॥ परि हरि आश भरोस सब॥
 ॥ १३३॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कबहुं काल नहिं व्यापि हितो ही॥
 सुमिरेहु भजेहु निरंतर मोही॥ प्रभु बचना मृत सु
 ऊ॥ तनु पुलकित मन अति हर्षाऊ॥
 काना॥ नहिर सनापहि जाइ बरवाना॥ ॥

हिनयना ॥ किमिकहि शकैति नैनहि बयना ॥ बहुविधमोहि
 प्रबोधसुखदेई ॥ लगे करणशिशुकौतुकतेई ॥ सजलनयन
 कछुसुखकरीरूपा ॥ चितैमातुलागीअतिभूषा ॥ देखिमातु
 आतुरउठिधाई ॥ कहिमृदुवचनलिएउरलाई ॥ गोदराखिक
 रावपयपाना ॥ रघुपतिचरितललिनकरिगाना ॥ ॥ सोर
 ठा ॥ ॥ जेहिस्वरवलागिपुरारि ॥ अशिववेषकृतशिवस्
 रवद ॥ अवधपुरीनरनारि ॥ तेहिस्वरवमहंसंततमगन ॥ १३४
 ॥ सोइस्वरकरलवलेश ॥ जिनवारेकसपनेहुलहेउ ॥ तेन
 हिगणहिस्वगेश ॥ ब्रह्मस्वरवहिसज्जनसुमति ॥ १३५ ॥
 चौपाई ॥ ॥ मैषुनिअवधरहेउंकछुकाला ॥ देखेउंबालवि
 नोदरसाला ॥ रामप्रसादभक्तिवरपाएउं ॥ मधुपदवंदि
 निजाअमआएउं ॥ तबतेमोहिनव्यापीमाया ॥ जबतैरघु
 नायकअपनाया ॥ यहसबगुंसचरितमैंगावा ॥ हरिमाया
 जिमिमोहिनचावा ॥ निजअनुभवअवकहौंस्वगेशा ॥ वि
 नुहरिभजननजाहिकलेशा ॥ रामरूपाविनुशृंगुरवगराई
 ॥ जानिनजाईरामप्रभुताई ॥ जानेविनुनहोइपरतीति ॥ वि
 नुपरतीतिहोइनहिप्रीति ॥ प्रीतिविनानहिभक्तिदटाई ॥ जि
 मिरवगेशजलकीचिकनाई ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ विनुगुरुहो
 इकिज्ञान ॥ ज्ञानकिहोइबिरागविनु ॥ गावहिंवेदपुराण ॥
 स्वरवकिलहहिंहरिभक्तिविनु ॥ १३६ ॥ कोउबिआमकिपा
 व ॥ तातसहजसंतोषविनु ॥ चलैकिजलविनुनाव ॥ कोटिय
 तनकारिपचिमरिय ॥ १३७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विनुसंतोष
 नकामनशाही ॥ कामअलतस्वरवसपनेहुनाही ॥ रामभ
 जनविनुमिटहिंकिकामा ॥ थलचिहीनतरुकवहुंकिकामा
 ॥ विनुविज्ञानकिसमनाआवै ॥ कांडअवकाशकिनभवि

नुपावै॥ अह्ना बिना धर्म नहि होई॥ बिनु महि गंध कि पावै को
 ई॥ बिनु तप तेज कि करु बिस्तारा॥ जल बिनु रस कि होई सं
 सारा॥ शील कि मिलु बिनु बुध सेव काई॥ जिमि बिनु तेजन
 रूप गोसाई॥ निज सुरव बिनु मन होई कि थीरा॥ स्पर्श कि हो
 इ बिहीन समीरा॥ कवनि उ सिद्धि कि बिनु विश्वासा॥ बिनु ह
 रि भजन न भव भय नाशा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बिन विश्वास भक्ति
 नहि॥ तेहि बिनु द्रवहि न राम॥ राम कृपा बिनु सपनेहु॥ जीव
 न किल है विश्वास॥ १३८॥ ॥ सोरठा॥ ॥ अस विचारि म
 ति धीर॥ तजि कुतर्क संशय सकल॥ भजहि राम रघु वीर॥
 करुणा कर सुंदर सरवद॥ १३९॥ ॥ चौपाई॥ ॥ निज मति
 सरिस नाथ मै गाई॥ प्रभु प्रताप महि मारव गराई॥ कहि उन
 कलु करि युक्ति विशेषी॥ यह सब मै निजन यन न्ह देरवी॥
 महि माना मरूप गुण गाथा॥ सकल अमित अनंतर घुनाथा
 ॥ निज निज मति सुनि हरि गुण गावहिं॥ निगम शेष शिव पार
 न पावहिं॥ तुहमहि आदि रवग मशक पर्यंता॥ न भउडाहि न
 हि पावहिं अंता॥ तिमि रघु पति महिमा अवगाहा॥ तात क
 बहु कोउ पाव किं थाहा॥ राम काम शत कोटि सभगतनु॥ दु
 र्ग कोटि अमित अरि मर्दननु॥ शक्र कोटि शत सरिस बिश्वा
 सा॥ नभ शत कोटि अमित अवकाशा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मरु
 त कोटि शत बिपुल बल॥ रवि शत कोटि प्रकाश॥ शशिशत
 कोटि सुशीतल॥ शमन सकल भव त्रास॥ १४०॥ काल कोटि
 शत सरिस अति॥ दुस्तर दुर्गतुरंत॥ धूम केतु शत कोटि स
 म॥ दुराधर्व भगवंत॥ १४१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ प्रभु अगा
 त कोटि पवाला॥ शमन कोटि शत सरिस कराला॥ तीरथ
 अमित शत कोटि शत पावन॥ नाम अखिल अधपुं

वन॥हिमगिरिकोटिअचलरघुवीरा॥सिंधुकोटिशतसम
 गभीरा॥कामधेनुशतकोटिसमाना॥सकलकामदायकभ
 गवाना॥शारदकोटिअमितचतुराई॥विधिंशतकोटिसृ
 ष्ठिनिपुणाई॥विष्णुकोटिशतपालनकर्त्ता॥रुद्रकोटिश
 तसमसंहर्त्ता॥धनदकोटिशतसमधनवाना॥मायाकोटि
 प्रपंचनिधाना॥भारधराशतकोटिअहीशा॥निरबधि
 निरूपमप्रभुजगदीशा॥ ॥छंद॥ ॥निरूपमनउपमाअ
 नरामसमाननिगमागमकहै॥जिमिकोटिशतरवद्योतर
 विसमकहतअतिलघुतालहै॥४१॥एहिभांतिनिजनिज
 मतिविलासमुनीशहरिहिवरवानहीं॥प्रभुभावग्राहकअ
 तिहृपालुसुप्रेमतैसरवमानहीं॥४२॥ ॥दोहा॥ ॥राम
 अमितगुणसागर॥थाहकिपावैकोइ॥संतन्हिसनयश
 कहुसुनेऊं॥तुमहिसुनायेउसोइ॥१४२॥ ॥सौरठा॥ ॥
 भाववश्यभगवान॥सरवनिधानकरुणाभवन॥तजिम
 मतामदमान॥भजियसदासीतारमण॥१४३॥ ॥चौपाई
 ॥सुनिभुखंडोकेवचनसुहाये॥हर्षितरवगपतिपरवफुल
 ये॥नयननीरमनअतिहर्षीना॥श्रीरघुपतिप्रतापउरआ
 ना॥पाछिलमोहसमुजिपछिताना॥ब्रह्मअनादिमनुज
 करिमाना॥पुनिपुनिकाकचरणशिरनावा॥जानिरामसा
 मप्रेमवदावा॥गुरुविनुभवनिधितरैकोई॥जौविरंचिशं
 करसमहोई॥संशयसर्पयसेउमोहिताता॥दुरवदलहरि
 कुनकैवहुवाता॥तवस्वरूपगारुडरघुनायक॥मोहिजि
 यायेहुजनसरवदायक॥तवप्रसादमममोहनशाना॥रा
 मरदस्यअनूपमजाना॥ ॥दोहा॥ ॥ताहिप्रशंसेउवि
 विधिविध॥शोसनाइकरजोर॥वचनसंप्रमविनीतमृदु॥

बोलेउगरुडबहोरि॥१४४॥प्रभुअपनेअविवेकते॥बूजोस्वा
 मीतोही॥रुपासिंधुसादरकहहु॥जानिदासनिजमोहि॥१४५
 ॥चौपाई॥ ॥तुमसर्वज्ञतज्ञतमपारा॥सुमति सुशील-
 सरलआचारा॥ज्ञानविरतिविनतिविज्ञाननिवासा॥रघुना
 दासा॥कारणकवनदेहयहपाई॥तातसक
 लमोहिकहहुबुझाई॥रामचरितसरसंदरस्वामी॥पायेहुं
 कहांकहुनभगामी॥नाथसनामैअसशिवपाहीं॥महाप्र
 लयहुनाशतवनाहीं॥मृषावचननहिशंकरकहहीं॥सोमो
 संशयअहहीं॥अबजगजीवनागनरदेवा॥नाथस
 कालकलेवा॥अंडकटाहअभितलयकारी॥का
 लसदादूरतिक्रमभारी॥ ॥सोरठा॥ ॥तुह्महि नव्याप
 तकालु॥अतिकरालकारणकवन॥सोमोहिकहहुकृपालु
 ॥ज्ञानप्रभावकियोगबल॥१४६॥ ॥दोहा॥ ॥प्रभुतबआ
 श्रमआएउं॥मोरमोहअमभाग॥कारणकवनसोनाथस
 ब॥कहहुसहितअनुराग॥१४७॥ ॥चौपाई॥ ॥गरुड-
 सुनिहर्षेउकागा॥बोलेउउमापरमअनुरागा॥धन्यध
 न्यतबमतिउरगारी॥प्रभुतुह्मारिमोहिअतिप्यारी॥सुनि
 तवप्रभसप्रेमसहाई॥बहुतजन्मकीशुद्धिमोहिआई॥स
 बनिजकथाकहोंमैगाई॥तातसुनहुसादरमनलाई॥जप
 तपमरवशमदमव्रतदाना॥विरतिविवेकयोगविज्ञाना॥सा
 बकरफलरघुपतिपदप्रेमा॥तेहिबिनुकोउनपावैक्षेमा॥ए
 नुरामभक्तिमैपाई॥तातेमोहिममताअधिकार्ई॥जे
 जस्वारथकलुहोई॥तेहिपरममताकरुसबकोई॥
 ॥सोरठा॥ ॥पन्नगारिअसनीति॥श्रुतिसंमतसज्जन
 कहहिं॥अतिनीचहुसनप्रीति॥करियजानिनिजपरम

हित॥१४६॥पाटकीटतेहोइ॥तेहितेंपाटांबररुचिर॥कृमिपा
 लेंसबकोइ॥परमअपावनप्राणसम॥१४६॥ ॥चौपाई॥
 स्वारथसत्यजीवकहंएहा॥मनक्रमवचनरामपदनेहा॥सो
 ईपावनसोइसुभगशरीरा॥जोतनुपाइभजियरघुवीरा॥रा
 मबिसुरखलहिविधिसमंदेही॥कविकोविदनप्रशंसहितेहि॥
 रामभक्तिएहितनुउरजामी॥तातेंमोहिपरमप्रियस्वामी॥त
 जोनतनुनिजइच्छामरणा॥तनुविनुभेदभजननहिवरणा
 ॥प्रथममोहमोहिवहुतबिगोवा॥रामबिसुरखरुखकवहुं
 नसोवा॥नानाजन्मकर्मपुनिनाना॥किएयोगजपतपम
 खदाना॥कवनयोनिजन्मेंउंजहंनहीं॥मैखगोसुभ्रमिभ्र
 मिजगमाहीं॥देखेउंसबकरिकर्मगोसांई॥सुरवीनभये
 उंअवहिंकीनाई॥शुद्धिमोहिनाथजन्मबहुकेरि॥शिवप्र
 सादमतिमोहनघेरी॥ ॥दोहा॥ ॥प्रथमजन्मकेचरित
 अव॥कहौंस्तनहुविहंगेश॥स्तनिप्रभुपदरतिउपजै॥जा
 तेंमिटैकलेश॥१५०॥पूरवकल्पएकप्रभु॥कलियुगमलक
 रमूल॥नरअरुनारिअधर्मरत॥सकलनिगमप्रतिकूल॥
 १५१॥ ॥चौपाई॥ ॥तेहिकलियुगकोशलपुरजाई॥जन
 मतभएउंशूद्रतनुपाई॥शिवसेवकमनक्रमअरुवाणी॥अ
 नदेवनिंदकअभिमानी॥धनमदमत्तपरमवाचाला॥उग्रबु
 धिउरदंभविशाला॥यदपिरहेउंरघुपतिरजधानी॥तदपिनक
 लुमहिमातवजानी॥अवजानामैअवधप्रभावा॥निगमाग
 मपुगणअसगावा॥कवनेहुजन्मअवधवसजोई॥रामपरा
 यणसोंपरिहोई॥अवधप्रभावजानजवप्राणी॥जवउरवस
 हिंरामधनुपाणी॥सोकलिकालकठिनउरगारी॥पापपराय
 णसवनरनारि॥ ॥दोहा॥ ॥कलिमलयसेउधर्मसब॥

लुसभएसदग्रंथ॥दंभिननिजमतकल्पिकरि॥प्रगटकीन्ह
 बहुपंथ॥१५२॥भएउलोगसबमोहवश॥लोभग्रसेउश्रुभ
 कर्म॥शृणुहरियानज्ञाननिधि॥कहोंकलुककलिधर्म॥
 ॥१५३॥ ॥चौपाई॥ ॥बणीधर्मनहिआश्रमचारी॥श्रु-
 तिबिरोधरतसबनरनारी॥हिजश्रुतिबंचकभूपप्रजाश
 न॥कोउनमानुनिगमअनुशासन॥मारगसोईजाकहंजो
 भावा॥पंडितसोइजोगालबजावा॥मिथ्यारंभदंभरत
 जोई॥ताकहंसंतकहैंसबकोई॥सोइसयानजोपरधन
 हारी॥जोकरुदंभसोवडआचारी॥जोकहकूटमखख
 रीजाना॥कलियुगसोइगुणवंतबरवाना॥निराचारजो-
 श्रुतिपथत्यागी॥कलियुगसोइज्ञानीबैरागी॥जाकोन
 खअरुजटाबिंशाला॥सोइतापसप्रसिद्धकलिकाला॥
 ॥दोहा॥ ॥अश्रुभवेष्टभूषणधरे॥भक्षाभक्षजोरवाहिं
 ॥तेयोगीतेसिद्धनर॥पूजितकलियुगमाहीं॥१५४॥
 सौरठा॥ ॥जैअपकारीचार॥तिन्हकरगौरवमान्यता॥
 मनक्रमबचनलबार॥तेवक्ताकलिकालमहं॥१५५॥
 ॥चौपाई॥ ॥नारिबिबशनरसकलगोसांई॥नाचहिंनट
 मरकटकीनाई॥शूद्रहिजन्हिउपदेशहिंज्ञाना॥मेलिज
 नेऊलेहिंकुदाना॥सबनरकामलोभरतक्रोधी॥देववि
 प्रश्रुतिसंतबिरोधी॥गुणमंदिरसंदरपतित्यागी॥भज
 हिंनारिपरपुरुषअभागी॥सौभागिनिविभूषणहीना॥
 विधवन्हिकैशृंगारनबीना॥गुरुशिषअंधबधिरज्यूल-
 रवा॥एकनसुनैएकनहिदेखा॥हरैशिष्यधनशोकनह
 रई॥सोगुरुघोरनरकमहंपरई॥मानुपिताबालकन्हिबो
 लाबहिं॥उदरभरैसोइधर्मशिरवावहिं॥ ॥दोहा॥ ॥

ब्रह्मज्ञानरत्नारिनर ॥ कहहिं न दुसरि वात ॥ कौडी उला-
 गी लोभवश ॥ करहि विप्र गुरुघात ॥ १५६ ॥ बारहिं भूद्रहि
 जन्ह सन ॥ हम तुम ते कलुघाटि ॥ जाने ब्रह्म सो विप्रवर ॥ आ-
 रिव दिखावहि डाटि ॥ १५७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परत्रिय लंपट
 कपट सयाने ॥ मोह द्रोह ममता लपटाने ॥ तेइ अभेदवादी
 ज्ञानी नर ॥ देखा मै चरित्र कलियुग कर ॥ आपु गये अरु आ-
 नहिं घालहिं ॥ जो कोइ श्रुति मारग प्रतिपालहिं ॥ कल्प क-
 ल्प भरि एक एक नर्का ॥ परहिं जे दूषहिं श्रुति नर्का ॥ जै वर्णा-
 धर्म ते लिकुम्हारा ॥ स्वपच किरात काल कल वारा ॥ नारि मुई
 गृह संपति नाशी ॥ सुंड सुडाइ भए सन्यासी ॥ ते विप्र न सन-
 आपु पूजा वहिं ॥ उभय लोक निज हाथ न शावहिं ॥ विप्र नि-
 रक्षर लोलुप कामी ॥ निराचार शठ वृषली स्वामी ॥ भूद्र कर-
 हिं जपत पत्रत नाना ॥ वैठि वरासन कहहिं पुराणा ॥ सब न-
 र कल्पित करहिं अचारा ॥ जाइन वरणि अनीति अपारा ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ भए वर्ण संकर कलिहिं ॥ भिन्न सेतु सब लो-
 ग ॥ करहिं पाप पावहिं दुरवहिं ॥ भजरु जशोक वियोग ॥ १५८ ॥
 श्रुति संमत हरि भक्त पथ ॥ संयुत विरति विवेक ॥ तेहिं न च-
 लहिं नर मोहवश ॥ कल्पहिं पंथ अनेक ॥ १५९ ॥ ॥ छंद ॥
 बहु दाम संवारहिं धाम जनी ॥ विषया हरि लीन्हि नही विर-
 नी ॥ तपसी धनवंत दरिद्र ग्रही ॥ कलि कौतुक तात न जान क-
 ही ॥ ३ ॥ कुल वंति नकारहिं नारि सती ॥ गृह आनहिं चेरि-
 नि चेरि मती ॥ सुत मानहिं मानुषिता न वलों ॥ अवलान न-
 दीखन हीं जवलों ॥ ४ ॥ ससुरारि पियारि लगि जवतें ॥ रिपु-
 रूप कटु वभयंत वतें ॥ नृप पाप पशयण धर्म न हीं ॥ करु दंड
 विदं च प्रजानि न हीं ॥ ५ ॥ धनवंत कुलान मलीन अर्पी ॥ द्विज

विन्हजनेउउधारतपी॥नहिमानपुराणहिवेदहिसो॥हरि
 सेवकसंतसहीकलिसो॥६॥कविचंदउधारध्वनीनसुनी॥
 गुणदूषकबातनकोपिगुणी॥कलिबारहिंबारदुकालपरें॥
 बिनुअन्नदुरवीसबलोगमरें॥७॥ ॥दोहा॥ ॥शृणुख
 गेशकलिकपटहठ॥दंभद्वेषपारवंड॥कामक्रोधलोभादिम
 द॥व्यापिरहेउब्रह्मंड॥१६०॥तापसधर्मकरिहिंनर॥जप
 तपमखव्रतदान॥देवनवरपैधरणिपर॥बोयेंनजामहिं
 धान॥१६१॥ ॥तोटकछंद॥ ॥अबलाकचभूषणभूरिस्तु
 धा॥धनहीनदुरवीममताबहुधा॥सुखचाहहिंमूढनधर्म
 रता॥मतिथोरिकठोरनकोमलता॥८॥नरपीडितरोगनभो
 गकहीं॥अभिमानविरोधअकारणहीं॥लघुजीवनसंब
 तपंचदशा॥कल्यांतननाशगुमानअसा॥९॥कलिकाल
 विहालकियेमनुजा॥नहिमानतकोअनुजातनुजा॥नहि
 तोषविचारिनशीतलता॥सबजातिकुजातिभएमगता॥
 ॥१०॥इरषापुरुषारवरलोलुपता॥भरिपूरिरहीसमतावि
 गता॥सबलोगवियोगविशोकहए॥वरणाअमधर्मअचा
 रगए॥११॥दमदानदयानहिजांनिपुनी॥जडतापरबंचक
 ताघसुनी॥तनुपोषकनारिनरासगरे॥परनिंदकजोजग
 मेंबगरे॥१२॥ ॥दोहा॥ ॥शृणुब्यालारिकरालकलि॥
 मलअवगुणआगार॥गुणौबहुतकलियुगकर॥बिनुम
 यासनिस्तार॥१६२॥कृतयुगत्रेतद्वारहु॥पूजामखअ
 रुयोग॥जोगतिहोइसोकलिहरि॥नामतेपावहिंलोग॥
 १६३॥ ॥चौपाई॥ ॥कृतयुगसबयोगीविज्ञानी॥करि
 रध्यानतरहिंभवप्राणी॥त्रेताविविधयज्ञनरकरहीं॥
 ॥द्वारपरकरिरघुपतिपदपू-

जा ॥ नरभवतरहिं उपायनदूजा ॥ कलिकेवलहरिगुणयुग
 गाहा ॥ गावतनरपावहिं भवथाहा ॥ कलियुगयोगयज्ञन-
 हिजाना ॥ एकअधाररामगुणगाना ॥ सबभरोसतजिजो
 भजुरामहिं ॥ प्रेमसमेतगावगुणग्रामहि ॥ सोभवतरुक
 छुसंशयनाहीं ॥ नामप्रतापप्रगटकलिमाहीं ॥ कलिकर
 एकपुनीतप्रतापा ॥ मानसपुण्यहोइ नहिं पापा ॥ ॥ दोहा
 ॥ कलियुगसमयुगआननहि ॥ जौनरकरोविश्वास ॥
 गाईरामगुणगणविमल ॥ भवतरुविनहि प्रयास ॥ १६४ ॥
 प्रगटचारिपदधर्मके ॥ कलिमहं एकप्रधान ॥ येनकेनविध
 दीन्हें ॥ दानकरै कल्याण ॥ १६५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नितयु
 मधर्महोहिं सबकरे ॥ हृदयराममायाकेपेरे ॥ शूढसत्वसा
 मताविज्ञाना ॥ कृतप्रभावप्रसन्नमनजाना ॥ सत्यबहुतक
 छुरजरतिकर्मा ॥ सबविधशुभत्रेताकरधर्मा ॥ बहुरजस्व
 ल्यसत्यकछुतामस ॥ हापरहर्षशोकभयमानस ॥ तामस
 बहुतरजोगुणयोरा ॥ कलिप्रभावविरोधचहुं ओरा ॥ बुध
 युगधर्मजानिमनमाही ॥ तजिअधर्मरतधर्मेकराहीं ॥ क
 लधर्मनहिव्यापहिं ताहीं ॥ रघुपतिचरणप्रीतिअतिजा
 हीं ॥ नटकृतकपटविटपरखगराया ॥ नटकृतकपटविटप-
 रखगराया ॥ नटसेवकहिनव्यापैमाया ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हरि
 मायाकृतदोषगुण ॥ विनुहरिभजननजाहिं ॥ भजियराम
 सबकामतजि ॥ असविचारिमनमाहिं ॥ १६६ ॥ तेहिकलि
 कालवपंचदह ॥ वसंतअवधविहगेश ॥ परेउदुकालविप
 तिबज ॥ तवमंगएउविदेश ॥ १६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गण
 उज्जैनिकनहुजरगारी ॥ दानमल्लानदरिद्रदुखवारी ॥ ग-
 णपुलकलसंपनिपाई ॥ तहंपुनिकरोशंभुसेवकाई ॥ वि

प्रएकवैदिकशिवपूजा॥ करै सदा तेहि काजन दूजा॥ प
 रमसाधुपरमारथबंदिक॥ शंभु उपासक नहि हरिनिंदक
 ॥ सेवौ मै तोहि कपट समेता॥ द्विज दयालु अतिनीतिनिके
 ता॥ बाहिर नम्र देखि मोहि सांई॥ विप्रपदावपुत्र कीनाई॥ शं
 भुमंत्रमोहि द्विजवर दीन्हा॥ शंभु उपदेश बिबिध विध कीन्हा॥
 जपौ मंत्र शिव मंदिर जाई॥ हृदय दंभ अहमिति अधिक आई॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ मैखलमलसंकुलमति॥ नीचजाति बश मोह॥ दि
 जहरिजन देखत जरौ॥ करौ विष्णु कर द्रोह॥ १६८॥ ॥ सोरठा॥
 गुरुनित मोहि प्रबोध॥ दुरित देखि आचरण मम॥ मो
 हि उपजै अति क्रोध॥ दंभिहि नीतिकि भावई॥ १६९॥
 चौपाई॥ ॥ एकबार गुरुलीन्ह बुलाई॥ मोहिनीति बहु
 भांति शिरवाई॥ शिवसेवा कर फल सुत सोई॥ अविरल
 भक्ति राम पद होई॥ रामहिं भजहिं तात शिवधाता॥ नरपा
 मर कर केतिक बाता॥ जासु चरण शिव अज अनुसगी
 ॥ तासु द्रोह करव चहसि अभागी॥ हर कहं हरि सेवक गुरु
 कहैऊ॥ सुनिरवगनाथ हृदय मम दहेऊ॥ अधमजाति मै
 विद्या पाए॥ भएउं जथा अहि दुग्ध पिआए॥ मानी कुटि
 ल कुभाग्य कुजाती॥ गुरु कर द्रोह करौं दिन राती॥ अति द
 यालु गुरु स्वल्प न क्रोधा॥ पुनि पुनि मोहि शिरवाव सुबोधा
 ॥ जेहि ते नीच बडाई पावा॥ सो प्रथम हि हठिताहि न शावा
 ॥ धूम अनल संभव शृणु भाई॥ तेहिं बुझाव धन पद वीपा
 ई॥ रजमगुपरी निरादर रहई॥ सब कर पद प्रहार नित सा
 हई॥ मरुत उडाव प्रथम तेहि भरई॥ पुनि नृप नयन किरी
 टनि परई॥ शृणु रवगपति अस ससुजि प्रसंगा॥ बुधन
 हिं करहिं अधम कर संगी॥ कबि को बिदगावहिं असनी

ति॥ खलसनकलहनभलहनिप्रीति॥ उदासीननितरहि
 यगोसाई॥ खलपरिहरियश्वानकीनाई॥ मैखलहृदय
 कपटकुटिलाई॥ गुरुहितकहेनमोहिसुहाई॥ ॥ दोहा॥
 एकवारहरमंदिर॥ जपंतरहेउंशिवनाम॥ गुरुआएउअ
 भिमानते॥ उठिनहि कीन्हप्रणाम॥ १७०॥ सोदयालुनहि
 कहेउकलु॥ उरनरोषलवलेश॥ अतिअधगुरुअपमान
 ता॥ सहिनहिशकेउमहेश॥ १७१॥ ॥ चौपाई॥ ॥ मंदि
 रमाऊभईनभवाणी॥ रहतअभाग्यअधमअभिमानी॥
 यद्यपितवगुरुकैनहिक्रोधा॥ अतिहृपांलुचितसम्यक्
 बोधा॥ तदपिशापदेहोंशठतोही॥ निति विरोधसोहाईन
 मोही॥ जौनहिकरोंदंडखलतोरा॥ भ्रष्टहोइअनुतिमारग
 मोरा॥ जेशठगुरुसनईर्षाकरहीं॥ रौरवनरककोटियुग
 परहीं॥ तिर्यकयोनिपुनिधरहिंशरीरा॥ अयुतजन्मभ
 रिपावहिपीरा॥ वैठिरहंसिअजगरइवपापी॥ होहिसर्प
 खलमलमतिव्यापी॥ महाबिटपकोटरमहजाई॥ रहुअ
 धमाधमअधगतिपाई॥ ॥ दोहा॥ ॥ हाहाकारकीन्ह
 गुरु॥ सनिदारुणशिवशाप॥ कंपितमोहिविलोकिअति
 ॥ उरउपजापरिताप॥ १७२॥ करिदंडवनसमेमहिजा॥ शिव
 सन्मुखकरजोरि॥ विनयकरतगद्गदगिरा॥ समुझिघोर
 गतिमोरि॥ १७३॥ ॥ छंदा॥ ॥ भुजंगप्रयातारुद्राष्टक
 स्तोत्रम्॥ ॥ नमामीशमीशाननिर्वाणरूपम्॥ विभुं-
 व्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपम्॥ निजनिर्गुणनिर्विकल्पनिरीह
 म्॥ दिदाकाशमाकाशवासंभजंहम्॥ १७४॥ निराकारमोंका
 रमूलंनुरीयम्॥ गिराज्ञानगोतीनमीगंगिरीशम्॥ करालं
 मदाकालकालहृषालुम्॥ गुणाकारसंसारपारंनतोहम्॥

॥१४॥ तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरम् ॥ मनोभूतकोटिप्रभा
 श्रीशरीरम् ॥ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा ॥ लसद्गाल
 बालेंदुकंठे भुजंगा ॥ १५ ॥ चलत्कुंडलंभूस्तनेत्रविशाल
 म् ॥ प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुम् ॥ मृगाधीशचर्मोबरं सु
 डमालंम् ॥ प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ १६ ॥ प्रचंडं प्रह
 षं प्रगल्भं परेशम् ॥ अखंडं अजंभानुकोटिप्रकाशम् ॥
 त्रिशूलानिनिर्मूलनं शूलपाणिम् ॥ भजेहंभवानीपतिं भाव
 गम्यम् ॥ १७ ॥ कलातीतकल्याणकल्यांतकारिम् ॥ सदास
 ज्जनानंददाता पुरारिम् ॥ चिदानंदसंदोहमोहापहारिम्
 ॥ प्रसीदप्रसीदप्रभो मन्मथारिम् ॥ १८ ॥ नयावद्गुमानाथ
 पादारविंदम् ॥ भजंती हलोके परेवानराणाम् ॥ नतावत्
 सुखं शांतिसंतापनाशम् ॥ प्रसीदप्रभो सर्वभूतार्थिवा
 सिन् ॥ १९ ॥ नजानामियोगं जपनैव पूजा ॥ नतोहं सदास
 र्वदाशंभुतुभ्यम् ॥ जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम् ॥ प्रभो
 पाहि आपन्नमामीशशंभो ॥ २० ॥ ॥ श्लोकः ॥ रुद्राष्ट
 कमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ॥ ये पठन्ति नराभक्त्या तेषां
 शंभुप्रसीदति ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ सुनिबिन्ती सर्वज्ञ
 शिव ॥ देखि विप्र अनुराग ॥ पुनि मंदिर न भवाणी ॥ भइहि
 जवरवर मांगु ॥ २२ ॥ जो प्रसन्न प्रभु मोहि पर ॥ नाथ दीन
 परनेहु ॥ निजपदभक्ति देहु प्रभु ॥ पुनि दुसरवर देहु ॥ २३ ॥
 तब माया बश जीव जड ॥ सतत फिरै भुलान ॥ तेहि परको
 धन करिय प्रभु ॥ कृपा सिंधु भगवान ॥ २४ ॥ शंकर दीन द
 यालु अब ॥ एहि पर होहु कृपालु ॥ शापालु ग्रह होहि जेहिं ॥
 नाथ थोर ही कालु ॥ २५ ॥ ॥ चौपाई ॥ एहि कर होइ
 परम कल्याण ॥ सोइ करहु अब कृपानिधान ॥ विप्रगिरा

सुनिपरहितसानी ॥ एवमस्तइति भइन भवाणी ॥ यदपि
 कीन्ह इहि दारुण पापा ॥ मै पुनि दीन्ह ओध करि शापा ॥ त
 दपितु हमारि साधुता देखी ॥ करि हौं एहि परकृपा विशेषी ॥
 क्षमाशील जे परउपकारी ॥ तेहि ज प्रिय मोहि यथाखरवारी ॥
 ॥ मोरशापहि ज व्यर्थ न जाइ हिं ॥ जन्म सहस्र अवश्य य
 ह पाइ हिं ॥ जनमत मरत दुसह दुरव होई ॥ एहि कह स्वल्प
 न व्यापि हिं सोई ॥ कबनेहु जन्म मिटि हिं नहि ज्ञाना ॥ शून
 हिं भूद्रमम वचन प्रमाणा ॥ रघुपतिपुरी जन्म तब भएऊ ॥
 पुनिते मम सेवामनद एऊ ॥ पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे ॥ रा
 मभक्ति उपजि हिं उर तोरे ॥ शृणु मम वचन सत्य अब भाई
 ॥ हरि तोषण ब्रतहि ज सेव काई ॥ अब जनि करे सि विप्र
 अब माना ॥ जानेसि संत अनंत समाना ॥ इंद्रकुलिशमम
 शूल विशाला ॥ काल दंड हरि चक्रकराला ॥ जोइन्ह करि मा
 रानहि मरई ॥ विप्रद्रोह पावक सोजरई ॥ अस विवेकरा
 खेहु मन माहीं ॥ तुम्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥ औरो ए
 क आशिषा मारी ॥ अव्याहत गति होइ हितोरी ॥ ॥ दोहा
 ॥ सुनि शिव वचन सहषं गुरु ॥ एवमस्तइति भाषि ॥
 मोहि प्रबोधि गएउ गृह ॥ शंभु चरण उर राषि ॥ १७८ ॥ प्रेरि
 त काल विंध्यगिरि ॥ जाइ भएउ मै व्याल ॥ पुनि प्रयास विनु
 सोतनु ॥ तजेउ गए कछु काल ॥ १७९ ॥ जौ तनु धरौं तजौ पुनि
 ॥ अनायास हरि चान ॥ जिमि नूतन पट पहिरै ॥ नर परिह
 र पुराण ॥ १८० ॥ शिव राखेउ श्रुति नीति अरु ॥ मै नहि पावा
 के ग ॥ इद्वि विध धरेउं विविध तनु ॥ ज्ञान न गयेउ रव गेश ॥
 १८१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तिर्यंक दवनर जोइत नु धरेउं ॥ त
 हं न हं नास भक्ति अनुसरें ॥ एक शूल मांदि विमरुन काउ ॥

गुरुकरकोमलशीलसुभाऊ॥ चरमदेहहिजकरमैपाई॥ सु
रदुर्लभपुराणश्रुतिगाई॥ रवेलोंतहांबालकन्हिमीला॥ क
रौंसकलरघुनायकलीला॥ प्रौढभयेंमोहिपितापदावा॥
समुजोंसुनोगुणौनहिभावा॥ मनतेंसकलवासनाभागी॥
केवलरामचरणलवलागी॥ कहुरवगेशअसकवनअभा
गी॥ खरीसेवसुरधेंनुहिल्यागी॥ प्रेममगनमोहिकछुनसो
हाई॥ हारेउपितापदाइपदाई॥ भएउकालबशजबपितु
माता॥ मैवनगएउंभजनजनत्राता॥ जहंजहंबिपिनमु
नीश्वरपावौं॥ आश्रमजाइजाईशिरनावौं॥ बुजौंतिनहिरा
मगुणगाहा॥ कहौंसुनौंहर्षितरवगनाहा॥ सुनतफिरौंह
रिगुणानुवादा॥ अव्याहतगतिशंभुप्रसादा॥ छूटीत्रिवि
धईषणागादी॥ एकलालसाउरअतिबादी॥ रामचरण
पंकजजबदेखौं॥ तबनिजजन्मसफलकरिलेरवौं॥ जोहि
पूछौंसोमुनिअसकहई॥ ईश्वरसर्वभूतमयअहई॥ नि
गुणमतनहिमोहिसोहाई॥ सगुणब्रह्मरतिउरअधिका
ई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुकेबचनसरतिकरि॥ रामचरण
मनलाग॥ रघुपतियशगावतफिरौं॥ क्षणक्षणनवअनु
राग॥ १८२॥ मेरुशिरवरबटछाया॥ मुनिलोमशआसीन
॥ देखिचरणशिरनाएउं॥ बचनकहेउंअतिदीन॥ १८३॥
सुनिममबचनबिनीतमृदु॥ मुनिकृपालुखगराज॥ मोहि
सादरपूछतभएउं॥ हिजआयेउकेहिकाज॥ १८४॥ तबमै
कहेउंकृपानिधि॥ तबसर्वज्ञसुजान॥ सगुणब्रह्मआरा
धना॥ मोहिकहहुभगवान॥ १८५॥ ॥ चौपाई॥ ॥ तब
मुनीशरघुपतिगुणगाथा॥ कहउकछुकसादरखगनाथा
॥ ब्रह्मज्ञानरतमुनिविज्ञानी॥ मोहिपरमअधिकारीजानी॥

लगे करण ब्रह्म उपदेशा ॥ अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
 अंकल अनीह अनामन रूपा ॥ अनुभव गम्य अखंड अनू
 पा ॥ मन गोतीत अमल अविनाशी ॥ निर्विकार निरवधि-
 स्तरवराशी ॥ सोतै तोहि ताहिन भेदा ॥ बारि वीचि इव गावहि
 बेदा ॥ विविध भांति मोहि मुनि समुजावा ॥ निर्गुण मत मम
 हृदय न आवा ॥ पुनि मै कहै उं नाइ पदशीशा ॥ सगुण उपा
 सन कहहु मुनीशा ॥ राम भक्ति जल मम मन मीना ॥ किमि
 विलगाइ मुनीश प्रवीना ॥ सोइ उपदेश करहु करि दाया ॥
 निजन यन न्हि देखौं रघुराया ॥ भरि लोचन बिलोकि अब
 धेशा ॥ तब सुनि हौं निर्गुण उपदेशा ॥ पुनि पुनि कहि मुनि
 कथा अनूपा ॥ खंडि सगुण मत अगुण निरूपा ॥ तब मै
 निर्गुण सत करि दूरी ॥ सगुण निरूपौं करि हठ भूरी ॥ उत्त
 र प्रत्युत्तर मै कीन्हा ॥ मुनि उर भए उक्रोध कर चीन्हा ॥ अ
 गुण प्रभु चहुत अवज्ञा किए ॥ उपजै क्रोध ज्ञानि हुके हिए ॥
 अति संघर्ष एकरै जो कोई ॥ अनल प्रगट चंदन ते होई ॥
 ॥ दोहा ॥ ॥ बार बार सकोपि मुनि ॥ करहिं निरूपण ज्ञा
 न ॥ मै अपने मन बैठित वं ॥ करौ विविध अनुमान ॥ १८६ ॥
 क्रोध कि है त बुद्धि विनु ॥ है त कि विनु अज्ञान ॥ माया वश
 प्रछं न जड ॥ जीव की ईश समान ॥ १८७ ॥ ॥ चौपाई ॥
 कच हुं कि दुरव सव कर हित नाके ॥ तेहि कि दरिद्र पार सम
 ण जाके ॥ कामी पुनि किर है अकलंका ॥ पर द्रोही किमि
 होइ निःशंका ॥ वंश किर हृद्विज अनहित कीन्हें ॥ कर्म कि
 होइ स्वरूप दिचीन्हें ॥ काहु समति कि हरवल संग जार्मी
 ॥ शुभ मति पाव कि पर त्रिय गार्मी ॥ राज किर हैं नीति विनु
 जाने ॥ अर्थ किर हैं हरि चरित वरवाने ॥ भव कि परहि पर-

मात्माविंदक॥ सरस्वीकिहोंहिंकबहुंपरनिंदक॥ पावनय
 शकिपुण्यबिनुहोइ॥ बिनुअधअयशकिपावैकोई॥
 लाभकिकलुहरिभक्तिसमाना॥ जिहिगावहिश्रुतिसंत
 पुराणा॥ हानिकिजगएहिसमकलुभाई॥ भजियनराम-
 हिनरतनुपाई॥ अधकिबिनातामसकलुआना॥ धर्म
 किदयासरिसहरिजाना॥ इहिंबिधअमितयुक्तिमनगु
 णेऊं॥ मुनिउपदेशनसादरसुनेऊं॥ पुनिपुनिसगुणप
 क्षमैरोपा॥ तवमुनिबोलेबचनसकोपा॥ मूढपरमशि
 खदेउंनमानेसी॥ उत्तरप्रत्युत्तरबहुआनेसि॥ सत्यब
 चनबिश्वासनकरही॥ वायसइवसबहीसनडरही॥ श
 ठसपक्षतबहुदयबिशाला॥ सपदिहोहिपक्षीचंडाला॥
 लोन्हशापमैशीसचढाई॥ नहिकलुभयनदीनताआई
 ॥ ॥ दोहा॥ ॥ तुरितभयैउमैकागतब॥ पुनिमुनिपद
 शिरनाइ॥ सुमिरिरामरघुवंशमणि॥ हर्षितचलेउउडा
 इ॥ १८८॥ उमाजेरामचरणरत॥ विगंतकाममदक्रोध॥
 निजप्रभुमयदेखहिंजगत॥ कासनकरहिंविरोध॥ १८९
 ॥ चौपाई॥ ॥ शृणुरवगेशनंहिकलुअपिदूषण॥ उर
 प्रेरकरघुवंशविभूषण॥ कृपासिंधुमुनिमतिकेरिभोरी॥
 लोन्हीप्रेमपरीक्षामोरी॥ मनबचकर्ममोहिनिजजनजा
 ना॥ मुनिमतिपुनिफेरीभगवाना॥ मुनिममसहनशील
 तादेपी॥ रामचरणविश्वासविशेषी॥ अतिविस्मयपुनि
 पुनिपछिताई॥ सादरमुनिमोहिलोन्हबुलाई॥ ममपरि
 तोषविविधविधकीन्हा॥ हर्षितराममंत्रतबदीन्हा॥ बाल
 करूपरामकरध्याना॥ कहेउमोहिमुनिकृपानिधाना॥ सु
 दरसरवदमोहिअतिभावा॥ सोप्रथमहिमैतुमहिंसना

वा ॥ मुनिमोहिकलुककालतहंरारवा ॥ रामचरितमानस
 तवभाषा ॥ सादरयहमोहिकथासुनाई ॥ पुनिबोलेमुनि
 गिरासुहाई ॥ रामचरितसरगुप्तसुहावा ॥ शंभुप्रसादता
 तमेंपावा ॥ तोहिनिजभक्तरामकरजानी ॥ तातेंमेंसबकहे
 उंवरवानी ॥ रामभक्तिजिनकेउरनाहीं ॥ कबहुंनतातक-
 हियतिन्हपाहीं ॥ मुनिमोहिविविधभांति समुजावा ॥ मैस
 प्रेममुनिपदशिरनावा ॥ निजकरकमलपरसिममशीशा
 ॥ हविंतआशिषदीन्हमुनीशा ॥ रामभक्तिअविरलउरतो
 रे ॥ वसिहिं प्रसादअबमोरे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सदाराम
 प्रियहोबतुह्म ॥ श्रुभगुणभवनअमान ॥ कामरूपइच्छा
 मरण ॥ ज्ञानविरागनिधान ॥ १९० ॥ जैहिआश्रमतुह्मव
 सहुपुनि ॥ सुमिरतश्रीभगवंत ॥ व्यापिहितहंनअविद्या
 ॥ योजनएकपर्यंत ॥ १९१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कालकर्मगु
 णदोषसुभाऊ ॥ कलुदुरवतुह्महिनव्यापिहिकाऊ ॥ राम
 रहस्यललितविधनाना ॥ गुप्तप्रगटइतिहासपुराणा ॥ वि
 नुअमतुह्मजानवसबसोई ॥ नितनवस्नेहरामपदहोऊ
 ॥ जोइच्छाकरहुहुमनमांहीं ॥ हरिप्रसादकलुदुर्लभनाही
 ॥ सुनिमुनिआशिषशृणुमतिधीरा ॥ ब्रह्मगिराभईगग
 नगंभीरा ॥ एवमस्तुतववचमुनिजानी ॥ यहममभक्त-
 कर्ममनवाणी ॥ सुनिनभगिराहर्षमनभयेऊ ॥ प्रेममग-
 नसवसंशयगएऊ ॥ करिविनतीमुनिआयसुपाई ॥ प
 दसरोजपुनिपुनिशिरनाई ॥ हर्षसहितएहिआश्रमआ
 एऊ ॥ प्रभुप्रसाददुर्लभवरपाएऊ ॥ इहांवसनमोहिशृणु
 स्वगइंशा ॥ वीनंकल्पसानअरुवीशा ॥ कर्गोसदारधुपति
 गुणगाना ॥ सादरसुनहिंविहंगसुजाना ॥ जवजवअदध

पुरीरघुबीरा ॥ धरहि भक्तहितमनुजशरीरा ॥ तब तबजा
 ईरामपुररहउं ॥ शिशुलीलाबिलोकि सरवलहउं ॥ पुनि
 उरराखिरामशिशुरूपा ॥ निजआश्रमआवौरवगभूपा
 कथासकलमैतुह्महि सनाई ॥ कागदे हजेहिकारणपा
 ई ॥ कहेउं तात सब प्रभुतुम्हारी ॥ रामभक्तिमहिमाअति
 भारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ताते यहतनुमोहिप्रिय ॥ भयेउरा
 मपदनेह ॥ निजप्रभुदरशनपाएउं ॥ गएउसकलसंदेह
 ॥ १९२ ॥ भक्तिपक्षहठकरिरहेउं ॥ दीन्हमहाभ्रषिशाप ॥
 मुनिदुर्लभवरपाएउ ॥ देखहुभजनप्रताप ॥ १९३ ॥ ॥ चौ
 पाई ॥ ॥ जेअसिभक्तिजानपरिहरहीं ॥ केवलज्ञानहेतु
 अमकरहीं ॥ तेजडकामधेनुगृहत्यागी ॥ रवोजतआक-
 फिरहिपयलागी ॥ शृणुखगेशहरिभक्तिबिहाई ॥ जेसुख
 चाहिआनउपाई ॥ तेशठमहासिंधुबिनुतरणी ॥ पैरि
 पारचाहतजडकरणी ॥ सनिभुशुंडिकेबचनभवानी ॥
 बोलेउगरुडहर्षिसृदुबाणी ॥ तबप्रसादप्रभुममउरमां
 हीं ॥ संशयशोकमोहभ्रमनाहीं ॥ सुनेउपुनीतरामगुण
 ग्रामा ॥ तुह्मरिक्कपालहेउबिआमा ॥ एकबातप्रभुपूछों
 तोही ॥ कहहुबुझाइकृपानिधिमांही ॥ कहहिसंतमुनिबे
 दपुराणा ॥ नहिकछुदुर्लभज्ञानसमाना ॥ सोमुनितुह्मस
 नकहेउगोसाई ॥ नहिआदरेउभक्तिकीनाई ॥ ज्ञानहिं
 भक्तिहिंअंतरकेता ॥ सकलकहहुप्रभुकृपानिकेता ॥ सु
 निउरगारिबचनसरवमाना ॥ सादरबोलेउकागसजा
 ना ॥ ज्ञानहिंभक्तिहिंनहिकछुभेदा ॥ उभयहरहिंभवसं
 भवरवेदा ॥ नाथसुनीशकहहुकछुअंतर ॥ सावधानसो
 उशृणुबिहंगवर ॥ ज्ञानविरागयोगविज्ञाना ॥ येसबपुरु

ये सुनहु हरियाना ॥ पुरुष प्रताप प्रबल सब भांति ॥
 लाअबल सहज जड जाति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुरुष त्यागि
 शकनारिहिं ॥ जो बिरक्त मति धीर ॥ नतु कामी विषये बिब
 श ॥ बिसुरख जे पद रघुवीर ॥ १९६४ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सोउ
 मुनि ज्ञान विधान ॥ मृग नयनी विधु सुख निररिव ॥ बिब
 श होहि हरियान ॥ नारि विष्णु माया प्रगट ॥ १९६५ ॥ ॥ चौपा
 ई ॥ ॥ इहां न पक्ष पात कछु राखीं ॥ वेद पुराण संत मत भा
 यीं ॥ मोहन नारि नारिके रूपा ॥ पन्न गारि य हनीति अनू
 पा ॥ माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ ॥ नारि वर्ग जानै सब कोऊ
 ॥ पुनिरघुवीरहिं भक्ति पिपारी ॥ माया रखु नर्तकी बिचा
 री ॥ भक्तिहिं सांख्य कूल रघु राया ॥ ताते तेहिं डर पति अति
 माया ॥ राम भक्ति निरुपम निरुपाधी ॥ बसै जा सुउर सदा
 अबाधी ॥ तेहिं वी लोकि माया सकुचाई ॥ करि न शकै कछु
 निज प्रभु ताई ॥ असि विचारि जो मुनि विजानी ॥ जाचै हिं
 भक्ति सकल करवरवानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यह रहस्य रघु
 नाथ कर ॥ वेगिन जानै कोई ॥ जानतें रघु पति कृपा ॥ सप
 नेहुं मोहन होइ ॥ १९६६ ॥ ॥ औरों ज्ञान भक्ति कर ॥ भेद सुनहु
 परवीण ॥ जो मुनि होहि राम पद ॥ प्रीति सदा अवक्षीण
 ॥ १९६७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनहु तात यह अकथ कहा
 नी ॥ समुजत वनै न जाइ वरवानी ॥ ईश्वर अंश जीव अवि
 नाशी ॥ चेतन अमल सहज करवराशी ॥ सो माया वश भए
 उगो सांई ॥ बंध्यो कीर मरकट की नाई ॥ जड चेतन हिं ग्रंथ
 परिगई ॥ यद्यपि मृषा छूटत कठिनई ॥ नवतें जीव भये उ
 मं सारी ॥ ग्रंथिन छूटन होइ करवारी ॥ श्रुति पुराण बहु क
 हें उपाई ॥ छूटन अधिक अधिक उरु जाई ॥ जीव तदय

तममोहविशेषी ॥ ग्रंथिछूटै किमिपरै न देखी ॥ अस संयो-
 ग ईशजब करई ॥ तबहुं कैदाचित सोनिर अरई ॥ सावि-
 की अक्षाधेनु सहार्ई ॥ जो हरि कृपा हृदय बश आई ॥ तप
 ब्रत संयम नियम अपारा ॥ जैश्रुतिक हश्रुभ धर्म अचारा ॥
 तेइ तृण हरित चरै जब गाई ॥ भाववत्स शिशु पाइ पेन्हाई ॥
 नोइति नीवृत्तियात्र विश्वासा ॥ निर्मल मन अहीर निज दा-
 सा ॥ परम धर्म मय पय दुहि भाई ॥ अवटै अनल अकाम
 बनाई ॥ तोष मरुत तब क्षमा जु डावै ॥ धृति समजावन दे-
 इ जमावै ॥ सुदिता मथै विचार मथानी ॥ दम अधार रजु
 सत्य सुबाणी ॥ तब मथिका टिलेइन बनीता ॥ विमल वि-
 राग सुभग सुपुनीता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ योग अग्निकरि
 प्रगटतब ॥ कर्मशुभाश्रुभलाइ ॥ बुद्धिसिता बैज्ञान घृत
 ममता मल जरि जाइ ॥ १९८ ॥ तब विज्ञान निरूपिणी ॥ बु-
 द्धिविशद घृत पाइ ॥ चित्तदिया भरि धरै हट ॥ समता दि-
 अट बनाइ ॥ १९९ ॥ तीन अवस्था तीनि गुण ॥ तिहिं कपा-
 सतें काटि ॥ तुलतुरीय संवारि पुनि ॥ बाती करै सुगाटि ॥
 ॥ २०० ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ एहि विधल सै दीप ॥ तेजराशि बिज्ञा-
 न मय ॥ जातहिं जासु समीप ॥ जरहिं मदादिक शलभ सब ॥
 ॥ २०१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सोहमस्मिइति वृत्ति अरवंडा ॥
 दीप शिरवा सोइ परम प्रचंडा ॥ आत्म अनुभव सरवस्व प्र-
 काशा ॥ तब भवमूल भेद भ्रमनाशा ॥ प्रबल अविद्या क-
 रि परिवारा ॥ मोह आदितम मिटै अपारा ॥ तब सोइ बुद्धि
 पाइ उजिआरा ॥ उरगृह बैठि ग्रंथि निरुआरा ॥ छोरन ग्रं-
 थि पाव जब सोई ॥ तब यह जीव कृतारथ होई ॥ छोरन ग्रं-
 थि जानि खग राया ॥ विघन अनेक करहिं तब माया ॥ ॥

द्विसिद्धिमेरैबहुभाई॥ बुद्धिहिलोभदेखावहिंआई॥ कल
 बलछलकरिजाइसमीपा॥ अचलजातबुजावहिंदीपा॥
 होइबुद्धिजौपरमसयानी॥ तिन्हतनचितवनअनहितजा
 नी॥ जौतेहिविषयबुद्धिनहिबाधी॥ तौबहोरिसुरकरहिं
 उपाधी॥ इंद्रियद्वारऊरोखानाना॥ तहंतहंसुरबैठिकरि
 थाना॥ आवतदेखहिविषयवचारी॥ तेहठिदेहिकपाटउ
 घारी॥ जबसोप्रभंजनउरगृहजाई॥ तबहिंदीपविज्ञान
 बुजाई॥ ग्रंथिनछूटिमिटस्वयकाशा॥ बुद्धिविकलभईवि
 षयबतासा॥ इंद्रियसुरन्हनज्ञानसुहाई॥ विषयभोगपर
 प्रीतिसदाई॥ विषयसमीरबुद्धिकृतभोरी॥ तेहिविधदीप
 कोज्वालबहोरी॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबभरिजीवविविधवि
 ध॥ पापैसंस्तृतिकलेश॥ हरिमायाअतिदुस्तर॥ तरिनजा
 इविहंगेश॥ २०२॥ कहतकठिनसमुक्तकठिन॥ साधनक
 ठिनविवेक॥ होइघुणाक्षरन्यायजो॥ पुण्यप्रत्युहअनेक
 ॥ २०३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ ज्ञानपंथरूपाणाकीधारा॥ पर
 तरवगेशनलागैवारा॥ जौनिर्विधनपंथनिर्बहई॥ सोकैव
 ल्यपरमपदलहई॥ अतिदुर्लभकैवल्यपरमपद॥ संतपु
 राणनिगमआगमवद॥ रामभजनसोइमुक्तिगोसांई॥ अ
 नइच्छितआवैवरिआई॥ जिमिथलविनुजलरहितसा
 काई॥ कोटिभांति कोउकरैउपाई॥ तथामोक्षसरवशृणु
 खगराई॥ रहिनशकैहरिभक्तिविहाई॥ असविचारिहारि
 भक्तसयाने॥ मुक्तिनिरादरिभक्तिलोभाने॥ भक्तिकरत-
 विनुयतनप्रयासा॥ संस्तुतिमूलअविद्यानाशा॥ भोजन
 करियनृमिहितनार्गा॥ जिमिसोअशनपचवेजदगर्गा॥
 अरिद्विभक्तिसगमसरवदाई॥ कांअसमृदनजादिसुदा

ई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेवकसेव्य भावबिनु ॥ भवनतरिय उरगारि ॥
 भज हुराम पदपंकज ॥ अससिद्धांत बिचारि ॥ २०४ ॥ जो
 चेतन कहं जड करै ॥ जडहि करि चैतन्य ॥ असा समर्थ रघु-
 नायकहिं ॥ भजहिं जीवते धन्य ॥ २०५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ क
 हेउ ज्ञानसिद्धांत बुझाई ॥ सुनहु भक्तिमणिकी प्रभुनाई ॥
 रामभक्तिचिंतामणि सुंदर ॥ वसै गरुडजाके उर अंतर ॥ प
 रमप्रकाशरूप दिन राती ॥ नहि कछु चहियदिया घृतवाती ॥
 ॥ मोह दरिद्र निकट नहि आवा ॥ लोभ बात नहि ताहि बुझा
 वा ॥ प्रबल अविद्यातम मिटि जाई ॥ हारहिं सकल शलभ-
 स सुदाई ॥ खल कामादि निकट नहि जाहीं ॥ बसै भक्तिमणि
 जाके उरमाहीं ॥ गरल सुधासम अरिहित होई ॥ तेहिमणि
 बिनु सरवपावन कोई ॥ आपहिं मानस रोगन भारी ॥ जोहि
 केवश सब जीव दुरवारी ॥ रामभक्तिमणि उर बस जाके ॥
 दुरखल वलेशन संपनेहुं ताके ॥ चतुरशिरोमणि तेइ जग
 माही ॥ जेमणिलागि सयतन करहीं ॥ सोमणि यद्यपि प्र
 गटजग अहई ॥ राम कृपाबिनु नहि कोउ लहई ॥ सुगम उपा
 य पाइये केरे ॥ नरहत भाग्य देत भेंट मेरे ॥ पावन पर्वत बेद प्र-
 सणा ॥ राम कथा रुचिराकरना ॥ मर्मसज्जन समति कु
 दारी ॥ ज्ञानबिरागनयन उरगारी ॥ भावसहित खोजै जेइ प्रा
 णी ॥ पाव भक्तिमणि सब सरवरवानी ॥ मोरे मन प्रभु अस बि
 श्वासा ॥ राम ते अधिक राम कै दासा ॥ रामसिंधु धनसज्जन
 धीरा ॥ चंदनतरु हरि संत समीरा ॥ सब कर फल हरि भक्ति
 सुदाई ॥ सो बिनु संतन काहुहिं पाई ॥ अस बिचारि जोइ क
 रुसत संग ॥ रामभक्ति तेहिं सुलभ बिहंगा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
 ब्रह्मपयोनिधि मंदर ॥ ज्ञान संत सुर आहि ॥ कथा सुधाम

थिकादहिं ॥ भक्तिमधुरताजाहि ॥ २०६ ॥ विरतिचर्मैश्वर्यसि
 ज्ञानमद ॥ लोभमोहरिपुमारि ॥ जयपाईचसोहरिभक्ति ॥
 देखुखगेशविचारि ॥ २०७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पुनिसमेमबोले
 उरखगराऊ ॥ जौकृपालुमोहिऊपरभाऊ ॥ नाथमोहिनिजसेव
 कजानी ॥ सप्तप्रभममकहहुबखानी ॥ प्रथमहिंकहहुनाथम
 तिधीरा ॥ सबतेंदुर्लभकवनशरीरा ॥ बडदुरखकवनकवनसुखभा
 री ॥ सोसंक्षेपहिंकहहुविचारी ॥ संतअसंतमर्मतुमजान
 हु ॥ तिन्हिकरसहजसुभावबरवानहु ॥ कवनपुण्यश्रुति
 विदितविशाला ॥ कहहुकवनअधपरमकराला ॥ मानस
 रोगकहहुसमुझाई ॥ तुमसर्वज्ञकृपाअधिकारि ॥ तातसु
 नहुसादरअतिप्रीती ॥ मैंसंक्षेपकहोंयहनीती ॥ नरतनु
 समनहिकवनिउदेही ॥ जीवचराचरजाचतजेही ॥ नरक
 स्वर्गअपवर्गनिजेनी ॥ ज्ञानविरागभक्तिसरवदेनी ॥ सो
 तनुधरिहरिभजहिंनजेनर ॥ होइविषयरतअंधमदंतर
 ॥ कांचकिरचबदलेशठलेही ॥ करतेंडारिपरसमणिदेहीं
 ॥ नहिदरिद्रसमदुरखजगमाहीं ॥ संतमिलनसमसरवक
 लुनाहीं ॥ परउपकारवचनमनकाया ॥ संतसहजसुभा
 वरखगराया ॥ संतसहहिंदुरखपरहितलागी ॥ परदुरखहेतु
 असंतअभागी ॥ भूर्जेतरुसमसंतकृपाला ॥ परहितसह
 नितविपतिविशाला ॥ शण्डवरखलपरबंधनकरई ॥ रवा
 लकदाईविपतिसहिमरई ॥ रवलविनम्वारथपरअपका
 री ॥ अहिमृषकडवमृणुउरगारी ॥ प ॥ पदाविनाशिनशा
 ही ॥ जिमिशिशहतहिमउपलविलाही ॥ दुष्टउदयजग
 आरतिहेतु ॥ यथाप्रसिद्धअधमग्रहकेतु ॥ संतउदयसं
 तनसरनकारी ॥ विश्वसरवोजिमिइंदुतमारी ॥ परमधर्म

श्रुतिविदित अहिंसा ॥ परनिंदा सम अधन गरिंसा ॥ हरिश्च
रुनिंदकदा दुर होई ॥ जन्म सहस्र पावत सु सोई ॥ हिजनिंद
क बहु नरक भोग करि ॥ जगजन्मै वायस शरीर धरि ॥ स्वर
श्रुतिनिंदक जे अभिमानी ॥ रौरवनरक परहितें प्राणी ॥ हो
हिं उलूक संतनिंदारत ॥ मोहनि शाप्रिय ज्ञान भागुगत ॥ स
र्व कीनिंदा जे जड कर हीं ॥ तेच मागा दुर होई अबतर हीं ॥
सुनहुतात अवमान स रोगा ॥ जिन्ह ते दुरव पावहिं संवलो
गा ॥ मोह सकल व्याधिन कर मूला ॥ तेहि तें पुनि उपजहिं
बहु भूला ॥ काम बात क फलोभ अपारा ॥ क्रोध पित्त नित
छाती जारा ॥ प्रीति करहिं जीतीनि उभाई ॥ उपजै सन्निपा
त दुरव दाई ॥ विषय मनोरथ दुर्ममनाना ॥ ते सब भूलना
म को जाना ॥ ममता दादु कंडु ईर्षाई ॥ हर्ष विषाद गरह ब
हुताई ॥ परस्वरव देखि जरनि सो छाई ॥ कुष्ट दुष्टता मन कु
दिलाई ॥ अहंकार अति दुरव दृढ हरु आ ॥ दंभ कपट मद
मान न हरु आ ॥ तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी ॥ त्रिविध ईष
णा तरुणतिजारी ॥ युगविध ज्वर मत्सर अविवेका ॥ कहं
लगिक हों कुरोग अनेका ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एक व्याधि बश
नर मरहिं ॥ ये असाध्य बहु व्याधि ॥ सतत पीडहिं जीव क
हं ॥ सो किमिलह हिं समाधि ॥ २०६ ॥ नेम धर्म आचारतया ॥
ज्ञान यज्ञ जपदान ॥ भेषक पुनि कोटिन्ह नहिं ॥ रुजन जाहिं
हरि यान ॥ २०६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ इहि बिधि सकल जीव
समरोगी ॥ शोक हर्ष भय प्रीति बियोगी ॥ मान स रोग कछु
कमै गाए ॥ है सब केलखि बिरल न्ह पाए ॥ जाने तें छीजहिं
कछु पापी ॥ नाशन पावहिं जन परितापी ॥ विषय कुपथ्य
पाइ अंकुरे ॥ सुनिन्ह दय कानर वापुरे ॥ राम कृपानाशहिं

सबरोगा॥ जोयतिभांतिबनैसंयोगा॥ सदगुरुबैद्यवचनवि
 श्वासा॥ संयमग्रहएविषयकरआशा॥ रघुपतिभंजिसंजी
 वनमूरी॥ अनुपानअद्वाअतिभूरी॥ इहिविधभलेकुरोग
 नशाहीं॥ नाहीतयतनकोटिनहिजाहीं॥ जातियतवमन-
 विरुजगोसाई॥ जबउरबलविरागअधिकई॥ समति
 क्षुधावादैनितनई॥ विषयआशदुर्बलतागई॥ विमल
 ज्ञानजलजबसोअन्हाई॥ तवरहरामभक्तिउरछाई॥
 शिवअजशुकसनकादिकनारद॥ जेमुनिब्रह्मविचारि
 विशारद॥ शिवकरमतखगनायकएहा॥ करियरामपद
 पंकजनेहा॥ श्रुतिपुराणसबग्रंथकहाहीं॥ रघुपतिभक्ति
 बिनास्वरवनाहीं॥ कमठपीठजामहिबरुबारा॥ बंध्यासु
 तबरुकाहुहिंमारा॥ फूलहिंनभवबहुविधफूला॥ जीव
 नलहस्वरहरिप्रतिकूला॥ तृषाजाइवरुमृगजलपाना॥ व
 रुजामहिशशशीशविषाणा॥ अंधकारवरुरविहिनशावै
 ॥ रामविमुखस्वरवजीवनपावै॥ हिमतेअनलप्रगटवरुहो
 ई॥ रामविमुखस्वरवपावनकोई॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वारिमये
 चरुहोइष्ट॥ सिकतातेवरुतेल॥ विनुहरिभजननभवत
 रिय॥ यहसिद्धांतअपेल॥ २१०॥ मशकहिकरहिचिरंचिप्र
 भु॥ अजहिमशकतेहीन॥ असविचारितजिसंशय॥ रा
 महिंभजहिंमबीन॥ २११॥ ॥ छंद॥ ॥ विनिश्चितेवदामि
 तेनअन्यथावचांसिमै॥ हरिनराभजंतियेतिदुस्तरंतरंति
 ते॥ २२॥ ॥ चौपाई॥ ॥ कहेउनाथहरिचरितअनूपा॥
 व्याससमासस्वमतिअनुरूपा॥ श्रुतिसिद्धान्तइहेउरगारी
 ॥ रामभजियसबकामविसारी॥ प्रभुरघुपतितजिसंदेय
 कही॥ मोहिसेशठपरममताजाही॥ तुह्यविज्ञानरूपनहि

मोहा ॥ कीन्हनाथ मोपर अति छोहा ॥ पूछेहु राम कथा अ
ति पावनि ॥ शुकसनकादि शंभु मन भावनि ॥ सत संगति
दुर्लभ संसारा ॥ निमिष दंड भरि एको वारा ॥ देखु गरुड नि
ज हृदय बिचारी ॥ मैरघु बीर भजन अधिकारी ॥ शकुना
धम सब भांति अपावन ॥ प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जग पाव
न ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आजु धन्य मै धन्य अति ॥ यद्यपि सब
विधि हीन ॥ निज जन जानि हिराम मोहि ॥ संत समागम दी
न ॥ २१२ ॥ नाथ यथा मति भाषेऊ ॥ राखेऊ कछु नहि गोइ ॥
चरित सिंधुरघु नाथ कर ॥ थाह कि पावै कोइ ॥ २१३ ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ सुमिरि राम के गुण गणना ना ॥ पुनि पुनि हर्षे
उभु श्रुं डी सजाना ॥ महिमानि गमनेति करि गाई ॥ अतुलि
त बल प्रताप प्रभु ताई ॥ शिव अज पूज्य चरण रघु राई ॥
मोपर कृपा परम मृदु लाई ॥ अस स्वभाव कहु सुनौ न दे
खौ ॥ केहिरव गेश रघु पति सम लेखौ ॥ साधक सिद्ध विमु
क्त उदासी ॥ कबि कोविद कृतज्ञ सन्यासी ॥ यागीश्वर अ
रुताप सजानी ॥ धर्म निरत पंडित विजानी ॥ तरहि न बिनु
सेये मम स्वामी ॥ राम नमामि नमामि नमामी ॥ शरण गए
मोसे अघ राशी ॥ होहि शुद्ध नमामि अविनाशी ॥ ॥ दोहा
॥ जासुनाम भव भेषज ॥ हरण घोर त्रय शूल ॥ सो कृपालु
मोहितो हियर ॥ सदा रहहि अनुकूल ॥ २१४ ॥ सुनि भुशुं डि
के बचन शुभ ॥ देखि राम पद नेह ॥ बोले प्रेम सहित गिरा ॥
गरुड बिगत संदेह ॥ २१५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मै कृत कृत्य भ
एउत बबाणी ॥ सुनिरघु बीर भक्ति रसासानि ॥ राम चरण
नूतन रति भई ॥ माया जनित बिपति सब गई ॥ मोह जलधि
वोहित तुम भएऊ ॥ मोकहं नाथ विविध सुख दएऊ ॥ मोस

नहोइनप्रत्युपकारा ॥ बंदौतबपदबारहिं बारा ॥ पूरणका
 मरामअनुरागी ॥ तुहसमताननकोउबडभागी ॥ संत-
 विटपसरितागिरिधरणी ॥ परहितहेतुसबन्हकरकरणी
 ॥ संतहृदयनवनीतसमाना ॥ कहाकविनपैंकहैनजाना
 ॥ निजपरितापद्रवैनवनीता ॥ परदुरवद्रवहिंसंतपुनीता
 ॥ जीवनजन्मसुफलममभएऊ ॥ तबप्रसादसबसंशय
 गएऊ ॥ जानेहुसदामोहिनिजकिंकर ॥ पुनिपुनिउमाकहै
 विहंगवर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तासुचरणशिरनाइकरि ॥
 प्रेमसहितमतिधीर ॥ गरुडगएउबैकुंठतव ॥ हृदयरारिव
 रघुवीर ॥ २१६ ॥ ॥ गिरजासंतसमागम ॥ समनलाभक
 छुआन ॥ बिनुहरिकृपासोहोइनहि ॥ गावहिवेदपुराण ॥
 ॥ २१७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कहेउपरमपुनीतइतिहासा ॥ सु-
 नतश्रवणछूटहिंभवपाशा ॥ प्रणतकल्पतरुकुरुणापुंजा
 उपजैप्रीतिरामपदकंजा ॥ मनवचकर्मजनितअघजाई
 ॥ सुनैजोकथाश्रवणमनलाई ॥ तीर्यादनसाधनसमुदा-
 ई ॥ योगविरागज्ञाननिपुणआई ॥ नानाकर्मधर्मव्रतदाना ॥
 संयमनियमयज्ञजपनाना ॥ भूतदयाहिजगुरुसेवकाई ॥
 विद्याविनयविवेकवडाई ॥ जहंलगिसाधनवेदवरवानी
 ॥ सबकरफलहरिभक्तिभवानी ॥ सोइरघुनाथभक्तिशु-
 तिगाई ॥ रामकृपाकाहुंएकपाई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मुनिदुर्ल-
 भहरिभक्तनर ॥ पावहिंविनहिंप्रयास ॥ जोयहकथानिरं-
 तर ॥ सुनहिंमानिविश्वास ॥ २१८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सो-
 इसर्वज्ञगुणीसोइज्ञाना ॥ सोइमहिमांडनपंडितदाता ॥
 धर्मपरायणसोइआता ॥ रामचरणजाकरमनराता ॥ नीति-
 निपुणसोइपरमसयाना ॥ शुनिसिद्धांतनीकतेहिजाना ॥

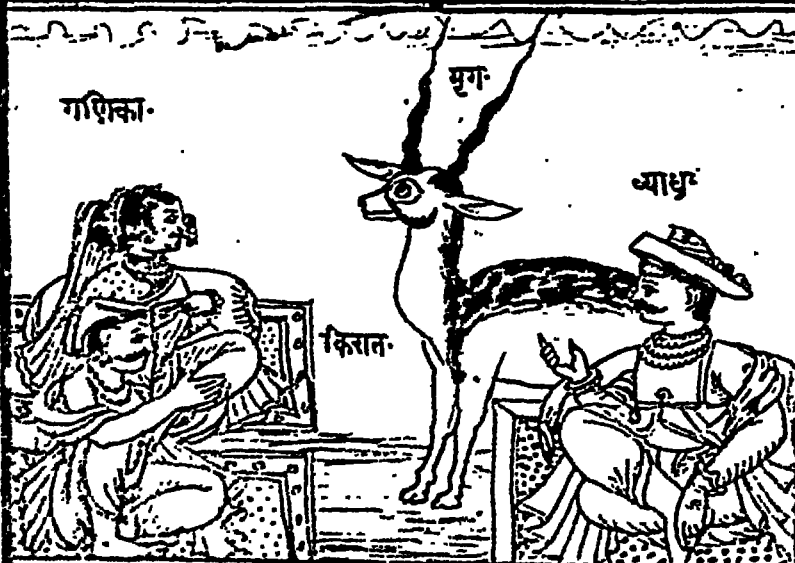
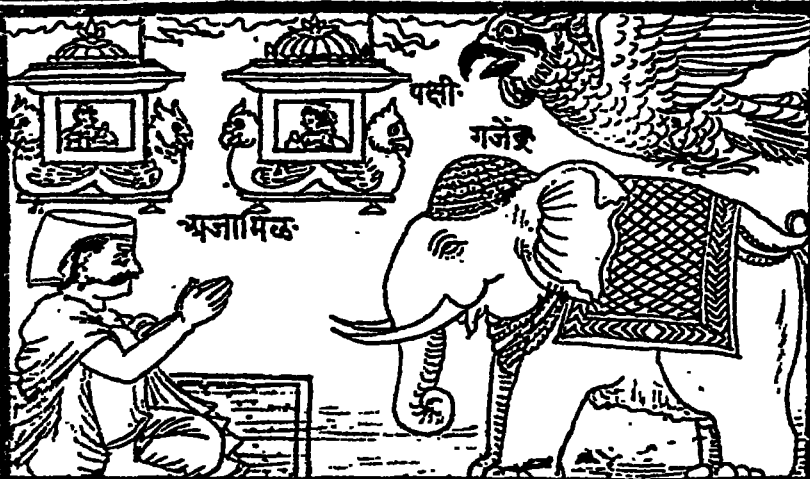
सोइकविकोविदसोइरणधीरा॥जोछलछाडिभजैरघुवीरा
 ॥धन्यनारिपतिव्रतअनुसरी॥धन्यसोदेशजहांसुरसरी॥
 धन्यसोभूपनीतिजोकरई॥धन्यसोहिजनिजधर्मनटरई॥
 सोधनधन्यप्रथमगतिजाकी॥धन्यपुण्यरतमतिसोइपाकी
 ॥धन्यघरीसोइजबसतसंगा॥धन्यजन्महिजमंक्तअभंगा॥
 ॥दोहा॥ ॥सोकुलधन्यउमाशृणु॥जगतपूज्यरूपुजीत॥
 श्रीरघुवीरपरायण॥जेहिनरउपजबिनीत॥२१६॥ ॥चौपाई
 ॥मतिअनुरूपकथामैभाषी॥यद्यपिप्रथमगुप्तकरिराषी
 ॥तबमनप्रीतिदेखिअधिकारई॥तबमैरघुपतिकथासुनाई
 ॥यहनहिंकहियशठहिंहठशीलहिं॥जोमनलाइनरुनुहरि
 लीलहिं॥कहोयनलोभिहिंक्रोधिहिकामिहिं॥जौनभजैसच
 राचरस्वामिहिं॥हिजद्रोहिहिंनसनाइयकबहूं॥सरपतिस
 रिसहोइनृपजबहूं॥रामकथाकेतेअधिकारी॥जिनकेसत
 संगतिअतिप्यारी॥गुरुपदप्रीतिनीतिरतजोई॥हिजसेवक
 अधिकारीसोई॥ताकहंयहंविशेषकरबदाई॥जाहिआण-
 प्रियश्रीरघुराई॥ ॥दोहा॥ ॥रामचरणरतिजोचहै॥अथ
 वापदनिर्वाण॥भावसहितसोअहिकथा॥करैअवणपुट्यान
 ॥२२०॥ ॥चौपाई॥ ॥रामकथागिरिजामैबरणी॥कलिमल
 शमनमनोमलहरणी॥संसृतिरोगसजीवनसूरी॥रामकथा
 गावहिंश्रुतिसूरी॥यहिमंरुचिरससोपाना॥रघुपतिभा
 क्तिकेरपंथाना॥अतिहरिकृपाजाहिपरहोई॥पांवदेइयहमा
 रंगसोई॥मनकामनासिद्धिनरसावै॥जोयहकथाकपटतजि
 गावै॥कहहिंसनहिंअनुमोदनकरही॥तेगोपदइवभवनिधि
 तरही॥सुनिसबकथाहृदयअतिभाई॥गिरिजाबोलीगिरा
 सुहाई॥नाथकृपाममगतसंदेहा॥रामचरणउपजेनवनेहा॥

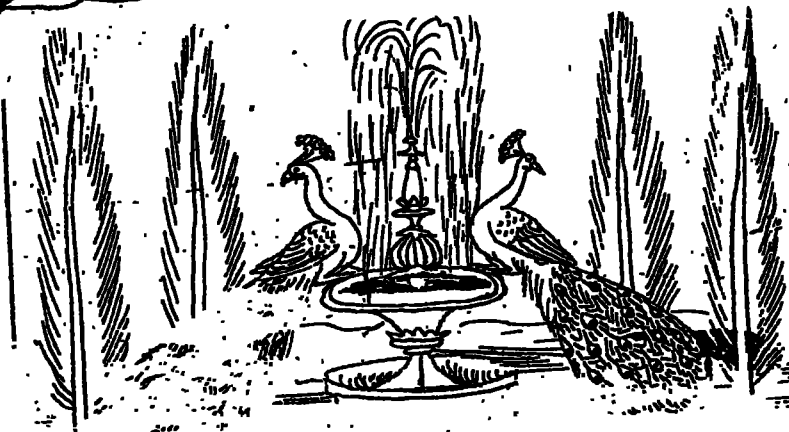
॥दोहा॥ ॥मैकृतकृत्यभयिउअव॥तवप्रसादविश्वेश॥उप
 जीरामभक्तिहृद॥बीतेसकलकलेश॥२२१॥ ॥चौपाई॥ ॥
 यहशुभशंभुउमासंवादा॥सरवसंपादनशमनविषादा॥भ
 वभंजनगंजनसंदेहा॥जनरंजनसज्जनप्रियएहा॥रामउपा
 सकजेजगमाहीं॥यहसमप्रियतिनकहुंकछुनाही॥रघुपति
 रुपायथामतिगावा॥मैयहपावनचरितसहावा॥एहिक
 लिकालनसाधनदूजा॥योगयज्ञजपतपव्रतपूजा॥रामहिं
 सुमिरियइयरामहिं॥सततसुनियरामगुणग्रामहिं॥जासु
 पतितपावनबडवाना॥गावहिंकविश्रुतिसंतपुराणा॥जा
 हिभजियतजिमनकुटिलाई॥रामभजेगतिकेहिनहिपाई॥
 ॥छंद॥ ॥पाईनैकेहिगतिपतितपावनरामभजुशृणुशठम
 ना॥गणिकाअजामिलगृध्रव्याधगजादिरवलतारेउधना॥
 २३॥आभीरजवनकिरांतरवसश्वपचादिअतिअघरूपजे॥
 कहिनामचारकतेपिपावनहोतरामनमामिते॥२४॥रघुवंश
 भूपणचरितयहनरकहहिंसनहिंजेगावहिं॥कलिमलमनो
 मलधोइबिनुअमरामधामसिधावहीं॥२५॥शुभछंदचौपा
 ईमनोहरजानिजोनरउरधरै॥दारुणअविद्यापंचमनितवि
 कारथोरघुपतिहरै॥२६॥संदरसज्जानरूपानिधानअनाथ
 परकरुप्रीतिजो॥सोएकरामअकामनितनिर्वाणप्रदसमआ
 नको॥२७॥जाकीरूपालवलेशतेमतिमंदतुलसीदासहूं॥पा
 योपरमविश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूं॥२८॥ ॥दोहा॥
 सोसमदीननदीनहित॥तुमसमानरघुवीर॥असविचारिर
 घुवंशमणि॥दुरहुविपमभवभीर॥२३२॥कामिहिनारिपि
 यारिनिमि॥लोभिहिंप्रियनिमिदाम॥निमिरघुनाथनिरंतर
 ॥प्रयत्नलगहुमोहिराम॥२३३॥ ॥छंदको॥ ॥यत्यूर्वप्रभुणा

कृतं सुकविना श्रीशंभुना दुर्गमं श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं
 प्रास्यैतुरामायणम् ॥ मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वांतस्तमः
 शांतये भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥ १
 पुण्यं पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ॥ मायामोहमला
 पहंस्तु विमलप्रेमांबुपूरं शुभम् ॥ श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं
 भक्त्या वगाहंति ये ते संसारपतंगघोरकिरणैर्देह्यंति नो मानवाः
 ॥ २ ॥ ॥ इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
 विमलबैराग्यसंपादनो नाम सप्तमः सोपानः समाप्तः ॥ ७ ॥
 ॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहि गिरीश गिरिजापती ॥
 खगभुञ्जि उरगाद ॥ भरद्वाजसनरामयश ॥ याज्ञवल्क्यसं
 वाद ॥ १ ॥ संतसभास्तरसरिजहां ॥ बरणी तुलसीदास ॥ सोप
 संगनितप्रतिरहो ॥ श्रीधरहृदयनिवास ॥ २ ॥ ॥ सौरठा ॥
 जहां पुष्करनिजधाम ॥ परसरामपावनपुरी ॥ श्रीधरकविता
 नाम ॥ ग्रंथशिलांकितसुबई ॥ ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ श्रीसीताराम
 चंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥

इति तुलसीदासकृत रामायण उत्तर
 कांड समाप्तम्

यह पुस्तक मंमई मे महादेव गोपाळ शास्त्री अमरापुरकर
 इन्होने आपके ज्ञानदर्पण छापखाने मे छपाके प्रसिद्ध कि
 या है सो ठेकाणा मारकीट बजार मे खाराकुवा के पास ॥





इति
तुलसिदास
कृतरामायण
उत्तरकांडं
समाप्तम्.

